UNIVERSAL LIBRARY
OU_178805
UNIVERSAL LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83 D88T Accession No. G.H.888

Author डयूमा, अलेक्जानडर

Title तीन तिलंगे 1937

This book should be returned on or before the date last marked below.

"इन्दु" स्मृति-माला का दसवाँ पुष्प—

तीन तिलंगे

[विश्व-विख्यात फ्रेंच औपन्यासिक अलेक्ज़ान्डर ड्यूमा के THREE MUSKETEERS का हिन्दी अनुवाद]

संसार के सर्वश्रेष्ठ १२ उपन्यासों में से एक

अनुवादक

श्रीजयनारायण कपूर

बी० ए०, एल-एल० बी० वकील

प्रकाशक

सरस्वती पुस्तक भण्डार

आर्यनगर, लखनऊ.

प्रथमावृत्ति १००० | जौलाई सन् १९३७ ई० | मूल्य ३)

प्रकाशक
श्रीरामविलास पांडेय
अध्यक्ष—सरस्वती पुस्तक भंडार
आर्यनगर, लखनऊ.

सर्वाधिकार सुरक्षित

मुद्रक
पण्डित मन्नालाल तिवा
शुक्ला प्रिंटिंग प्रेस,
नजीराबाद, लखनऊ

दो शब्द

"तीन तिलंगे" नामक यह उपन्यास फ्रांस के सर्वश्रेष्ठ न्यासकार अलेक्ज़ेन्डर ड्यूमा की सर्वश्रेष्ठ रचना Three Mus- eers का अनुवाद है। ऐतिहासिक होने पर भी इसमें माजिक एवं जासूसी उपन्यास का पूरा आनंद है। यही इसकी षता है। कहना न होगा कि संसार के सर्वश्रेष्ठ बारह उपन्यासों इसकी मुख्य गणना है और इस उपन्यास का लगभग सभी ाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

ड्यूमा के कई उपन्यासों के हिंदी अनुवाद प्रकाशित हो चु जिनका हिंदी-संसार में यथेष्ट आदर हुआ है। इस उपन्यास ा कथानक इतना मनोरंजक है कि एक बार पुस्तक हाथ में लेने फिर बिना समाप्त किये जी नहीं मानता और पढ़कर भी पुनः ढ़ने की लालसा बनी रहती है। इस उपन्यास में प्रेम और रता का अच्छा दिग्दर्शन कराया गया है, साथ ही मित्रता का नुपम उदाहरण है।

आशा है, हमारे उपन्यास-प्रेमी पाठक-गण इसे अवश्य अपना- र अनुगृहीत करेंगे।

—प्रकाशक

तीन तिलंगे

१

सन् १६२६ ईसवी की बात है। अप्रैल का महीना है और चंद्रवार का दिन। फ्रांस देश के मियूंग नगर के बाज़ार में अगणित मनुष्यों की एक बड़ी-भारी भीड़ लगी है। प्रशांत नगर में थोड़ी ही देर में क्रांति के पूरे लक्षण दिखलाई देने लगे। लोग अपने-अपने स्त्री-बच्चों को रोते छोड़, अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित हो बाज़ार की ओर चल पड़े। मनुष्य-समूह का यह अबाधित प्रवाह जाली मिलर के पथिकाश्रम के निकट आकर ठहर गया।

इस समय विप्लव और युद्ध के कारण फ्रांस अशांति का घर बन था। साधारण-सा मन-मुटाव एक भीषण कलह का रूप धारण लेता था। प्रत्येक नगर शस्त्रधारी सैनिकों का आगार बना हुआ विप्लव और क्रांति के चिह्न सब स्थानों में पाए जाते थे। दलबंदी बड़े वेग से चल रही थी। कुलीन अकुलीनों से लड़ते थे। राजा

धर्माध्यक्ष से वैर रखता था। स्पेन राजा का शत्रु था। इन प्र
शत्रुओं के अतिरिक्त देश-भर में विप्लवकारी, चोर, डाकू, लुटेरे
बटमार और दस्यु-दलों का एक विशालकाय जाल-सा बिछा था।
प्रजा राजा से स्वत्रंस्त थी और राजा प्रजा से। बड़े-बड़े आपसी झगड़े
परस्पर ही की ख़ूनख़राबी से निपटा लिए जाते थे। न्यायालय, पुलिस
और राज-नियम को हस्तक्षेप करने की आवश्यकता ही न पड़ती थी।
साधारण घटनाओं पर लोग युद्ध-कौशल, शस्त्र-प्रयोग और संग्राम-
प्रियता दिखलाने के लिये उत्सुक रहते थे।

यही कारण था कि एक ज़रा-सा ही शोर ग़ुल सुनकर बिना किसी पूर्व विचार के लोगों का एक विशाल समूह जाली मिलर के पथिकाश्रम के सामने एकत्रित हो गया। परंतु जब लोगों ने यहाँ आकर देखा तो कारण अत्यंत साधारण था। रण-मद से मतवाले, रक्त-पिपासु लोग अत्यंत क्षुब्ध और लज्जित होकर लौटने लगे। बात केवल इतनी ही थी कि एक तेजस्वी वीर नवयुवक पीले रंग के एक अत्यंत मज़बूत और सुन्दर घोड़े पर अपनी भुजा टेके खड़ा था। इस घोड़े की दृढ़, माँसल, स्फूर्ति-व्यंजक स्निग्ध देह, उसकी मनोहारिणी गति और विचित्र पीत वर्ण ही इस असाधारण कुतूहल के मुख्य कारण थे। लोग विस्मित होकर अश्वारोही और उसके विचित्र घोड़े को संदिग्ध दृष्टि से देख रहे थे।

अश्वारोही लगभग बीस वर्ष का नवयुवक था। लम्बा, भूरा चेहरा, अत्यंत तेज और वीरता का द्योतक था, विशाल नेत्रों से विचित्र ज्योति निकल रही थी। उच्च मस्तक और दीर्घायत वक्षस्थल, साहस, शौर्य और अपूर्व विक्रम के परिचायक थे। दृढांग, उन्नत पेशियाँ, वीरता द्योतक लंबी मूंछें और सन्नद्ध शरीर उसकी प्रांतीय विशेषता की सूचना दे रहे थे। युवक सैनिक वस्त्र और युद्धकालीन शस्त्रों से सुसज्जित था। एक लंबी तलवार चमड़े के म्यान में लटक का

तीन चरण का चुंबन कर रही थी। वीर युवक की निर्भय चेष्टा, शारीरिक स्फूर्ति, अद्भुत तेजस्विता स्पष्ट रूप से यह बतला रही थी कि यह शूरवीर युवा सैनिक फ्रांस की सुप्रसिद्ध वीर-प्रसवा-भूमि गैस्कनी का निवासी है। फ्रांस देश में गैस्कनी प्रांत वीर सेनानियों, निर्भीक योद्धाओं और पराक्रमी सैनिकों के लिये प्रसिद्ध था। यहाँ का साधारण-सा युवक अपूर्व वीरता और साहस की प्रतिमा समझा जाता था। उक्त युवक भी केवल इस ही प्रांत का होने के कारण इतनी भीड़ के बीच में निर्भयता पूर्वक खड़ा हुआ लोगों के संदिग्ध और कुतूहल-पूर्ण नेत्रों का सामना कर रहा था।

लंबी यात्रा के कारण युवक थका हुआ मालूम होता था, श्रांत अश्व की संपूर्ण देह पसीने से तर थी। जाली मिलर के पथिकाश्रम में रात-भर विश्राम करने के लिये यात्री ने अपनी कमर खोल दी। घोड़े से उतरते ही लोगों की भीड़ ने उसे आ घेरा। घोड़े के अपूर्व वर्ण और उसकी विचित्र गति ने वीर आरोही को उपहास और व्यंग का लक्ष्य बनाने के लिये लोगों को सामग्री उपस्थित कर दी। लोगों का यह भाव युवक को बहुत बुरा लगा। उसका मन अत्यंत खिन्न हुआ। युवक की इस खिन्नता का एक कारण और भी था। यह घोड़ा उसके पिता की वह पूज्य तथा पवित्र भेंट थी, जो पुत्र ने अपनी यात्रा के लिये श्रद्धेय पिता से विदा होते समय प्राप्त की थी। पूज्य पिता के स्मृति-चिह्न-स्वरूप अश्व को इस उपहासास्पद स्थिति में देखकर नवयुवक को इस बहुमूल्य भेंट की आदरणीयता की तथा पिता के उन आश्वासन-पूर्ण, प्रेम-रस प्लावित, पवित्र वचनों की जो उन्होंने गद्गद कंठ से पुत्र को अंतिम विदा देते समय कहे थे, याद आ गई।

पिता ने कहा था—"बेटा! यह घोड़ा १३ वर्ष पूर्व इसी पैतृक घर में पैदा हुआ था और तब से एक पल के लिये भी इसका मुझसे

विछोह नहीं हुआ। अपने हार्दिक वात्सल्य-भाव की स्मृति के मैं इसको तुम्हें देता हूँ। मेरी इस पवित्र भेंट को आदर के साथ ग्रहण करो। इसको सदा अपने पास रखना, बेचना कभी मत। इसको अपनी अंतिम वृद्धावस्था में शांति और सम्मान के साथ मर जाने देना, परन्तु अपने पास से क्षण-भर के लिये भी इसको पृथक् न करना। युद्ध में, पुराने भृत्य की भाँति बहुत प्रयत्न और सावधानी से इसकी रक्षा करना। यदि सौभाग्य से कभी तुम राज-सभा में पहुँच सको—जहाँ पहुँचने का स्वत्व तुमको तुम्हारे प्राचीन कुल के पैतृक गौरव से प्राप्त है, तो वहाँ जाकर अपने कौटुंबिक सौजन्य को सार्थक करना और अपने कुल की मान-मर्यादा तथा प्रतिष्ठा को वीरता तथा सम्मान के साथ सुरक्षित रखना। यह वह गौरव है जिसको तुम्हारे पूर्व पुरुषों ने अत्यंत साहस और शौर्य के साथ लगातार पाँच सौ वर्षों से सुरक्षित रक्खा है। इस कीर्ति और गौरव की रक्षा में यदि जीवन का उत्सर्ग करना पड़े तो लोभ न करना। धर्माध्यक्ष और राजा को छोड़कर किसी भी व्यक्ति के आक्षेप को कभी सहन न करना। आजकल निर्भीक और साहसी पुरुष उन्नति के उच्च शिखर पर शीघ्र और निर्विघ्न पहुँच सकता है। इस मार्ग पर अग्रसर होने के लिये यदि मनुष्य किंचितमात्र भी ठिठका तो उसके दृढ़ चंगुल से वह आशा-पूर्ण स्वर्ण अवसर निकल जाता है, जो उसके भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये उस क्षण उसके सामने प्रस्तुत होता हो। तुम वीर नवयुवक हो, तुम्हारी वीरता के दो कारण हैं—प्रथम यह कि तुम गैस्कनी प्रांत के हो, दूसरा यह कि तुम मेरे पुत्र हो। युद्ध से कभी भयभीत न होना और सदा संकट-पूर्ण साहस के कार्यों का दायित्व ग्रहण करना। मैंने तुमको स्वयं तलवार चलाना सिखाया है। अस्त्र-शस्त्र के प्रहार में तुम कुशल हो, युद्ध विद्या में तुम अद्वितीय हो। तुम्हारा शरीर लोहे जैसा है, तुम्हारी कलाई फ़ौलाद

की है। अपने शौर्य और साहस का सदैव परिचय देना। सब अवसरों पर युद्ध के लिये भिड़ जाना। मेरे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो मैं तुम्हें दूँ तिस पर भी तुम ख़ाली हाथ नहीं जाओगे। तुम्हें देने के लिये मेरे पास ये १५ क्राउन हैं, मेरा घोड़ा है और ये उपदेश हैं, जिनको तुम सुन चुके हो। अब केवल मुझे एक शब्द और कहना है और वह है आदर्श उस निर्भयता, वीरता तथा असीम साहस का, जिसके विषय में मैं अभी कह चुका हूँ। यह आदर्श मेरा नहीं है क्योंकि मैं स्वयं कभी राज-सभा में नहीं गया। मेरा संकेत महाशय त्रिवली की ओर है, जो पिछले काल में कभी मेरा पड़ोसी था। यह राजा १३वें लुई का बाल-सहचर रह चुका है। ये दोनों आपस में समभाव से खेले हैं। कभी-कभी इनके खेल युद्ध में भी परिणित हो जाते थे और इन सब संग्रामों में राजा सदा विजयी नहीं रहता था। इन युद्धों में परस्पर की खाई हुई चोटें एक दूसरे के सौहार्द तथा स्नेह को बढ़ाती थीं। इन दोनों की मैत्री एक अमर भावना है, जिसकी रक्षा दोनों अतीव गौरव तथा सम्मान के साथ करते हैं। आजकल त्रिवली एक प्रतिष्ठित पद पर नियुक्त है। वह राजा के आग्नेयास्त्र-धारी वीर तिलंगों का प्रधान नायक है। इन तिलंगों को राजा बड़े समान की दृष्टि देखते हैं। परंतु धर्माध्यक्ष, जो सुना जाता है संसार में किसी से भी नहीं डरता इनसे अत्यंत भय खाता है। त्रिवली दश सहस्र क्राउन वार्षिक वेतन पाता है। अतः वह एक बड़ा आदमी है। उसने भी जीवन का आरंभ इसी भाँति किया था जिस भाँति अब तुम कर रहे हो। इस पत्र को लेकर उसके पास जाना और अपने जीवन के सत्कार्य में उसे अपना आदर्श बनाना। मेरे सब उपदेशों को स्मरण रक्खो, और उनके अनुसार आचरण करते हुये जीवन में विजयी और यशस्वी होकर कुल की कीर्ति का विस्तार करो। बेटा! जाओ! विजयी होओ! और चिरकाल

तक आनंदमय जीवन व्यतीत करो। तुम्हारे पिता का यह आशीर्वाद तुम्हारा पथ-प्रदर्शक बने।"

पिता के इस प्रोत्साहन तथा उपदेशामृत से प्रभावित होकर युवक पितृ-प्रदानित पवित्र तीन वस्तुओं को आदर-पूर्वक ग्रहण करके अपनी यात्रा पर चल पड़ा, और शीघ्र ही टारवीज़ से मियूंग तक की लम्बी यात्रा पार कर ली। वह जालीमिलर के होटल में विश्राम के लिये उतरा। इस वीर के वाह्यवेश, तेजपूर्ण आकृति और असीम-शौर्य-सूचक चेष्टा तथा घोड़े की द्रुतगति और उसके विचित्र रंग द्वारा आकर्षित होकर जो मनुष्यों की भीड़ एकत्रित हो गई थी वह धीरे-धीरे खिसक गई।

पथिकाश्रम में प्रवेश करने पर युवक ने निकट की एक खुली हुई खिड़की से देखा कि एक भद्र-पुरुष बैठा हुआ दो मनुष्यों से बहुत धीरे-धीरे बातें कर रहा है। भद्रपुरुष का क़द लंबा, शरीर सब प्रकार से पुष्ट और आकृति तेजपूर्ण थी। दोनों मनुष्य उसकी बातचीत को बहुत ही श्रद्धा तथा भक्ति के साथ सुन रहे थे, जिससे मालूम होता था कि वह कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं।

मियूंग में प्रवेश करते ही युवक ने यह अनुभव किया कि वहाँ के लोग उसको अत्यंत संदिग्ध दृष्टि से देखते और सब उसी की चर्चा करते हैं। अतः इस एकान्त स्थान में तीन व्यक्तियों को धीमे स्वर में बातें करते देखकर हमारा युवक स्वभावतः यह समझा कि कदाचित् ये मेरी ही निंदा कर रहे हैं, इनकी इस गुप्त विवेचना का विषय मैं ही हूँ। इस संदेह के कारण वह और निकट जाकर उनकी बातें सुनने लगा। वे लोग उसके अश्व के विषय में बातें कर रहे थे। वार्तालाप के ढंग से ऐसा विदित होता था कि भद्रपुरुष उसके घोड़े के गुणों पर टीका टिप्पणी कर रहा है और उसके दोनों साथी उसकी प्रत्येक बात पर ठट्ठा मार-मारकर हँस

रहे हैं। व्यंग्य और उपहास से परिपूर्ण अनियंत्रित हास्य का यह प्रवाह युवक की क्रोधाग्नि को भड़काने के लिये पर्याप्त था। युवक उत्तेजित हो उठा और उस अपरिचित भद्रपुरुष को बहुत ही प्रखर, सगर्व और रोषपूर्ण दृष्टि से उसने देखा। उसने देखा कि भद्रपुरुष लगभग ४० या ५० वर्ष की अवस्था का है। उसके काले चमकीले नेत्र, उसके चेहरे का पीतवर्ण, और बहुत ही सुंदरता से कटी हुई मूछें, बढ़िया नीले रंग की पोशाक और पैरों तक लटकती हुई लंबी तलवार आदि यह सूचित करते थे कि वह कोई राज-सम्मानित प्रतिष्ठित व्यक्ति है। ठीक इसी समय जब युवक तीव्रदृष्टि से उस भद्रपुरुष को देख रहा था उसके संगी विचित्र रूप से ठट्ठा मारकर हँस पड़े। युवक ने इसे अपना असह्य अपमान समझा। क्रोध से नेत्र रक्त-वर्ण हो गये, हाथ तलवार पर स्वयं जा पहुँचा। अपने टोप को नेत्रों की ओर और आगे खींचता हुआ वह आगे बढ़ा और घृणा-व्यंक दृष्टि से उनको देखकर आवेश पूर्ण शब्दों में कहने लगा, "महाशय! आह! आप खिड़की की आड़ में क्यों छिप रहे हैं? मैं आप से ही पूछता हूँ, बतलाइये इस अनावश्यक हँसी का क्या कारण है? मैं स्वयं भी इस अभद्र हँसी में भाग लेना चाहता हूँ।"

अपरिचित भद्र-पुरुष ने तीक्ष्ण दृष्टि से किंतु अत्यंत शांति के साथ युवक को नीचे से ऊपर तक देखा और यह समझकर कि कदाचित् आरोही है जिसका अश्व हमारे हास्य-शर का बेध-लक्ष्य बना है, उपालभ्य और दर्पपूर्ण स्वर में युवक से कहा, महाशय! आप इतने अशांत क्यों हैं? विश्वास रखिये, मेरे वार्तालाप का आप से कोई संबंध नहीं। मैं आप से बात नहीं कर रहा।"

सौजन्य तथा अवहेलना के इस विचित्र व्यवहार द्वारा और भी

उत्तेजित होकर युवक ने उत्तर दिया, "परंतु मैं तो आपसे बातचीत कर रहा हूँ, आप मेरी बात का उत्तर दीजिये।"

युवक के इस साहस को देखकर अपरिचित के मुख पर तिरस्कार-व्यन्जक हास्य की एक धीमी रेखा दिखाई दी। खिड़की के पास से अलग हटकर उसने कमरे के बाहर धीरे से पग रक्खा और युवक के घोड़े के निकट आकर खड़ा हो गया। उसके गंभीर मुख पर तिरस्कार के चिह्न देखकर युवक भी निकट आ गया और क्रोध के आवेष में अपनी म्यान से आधी तलवार खींच ली।

अपरिचित सज्जन ने अपनी बातचीत के परिहास-पूर्ण ढंग को स्थिर रखते हुये कहा, "मैं यह निश्चितरूप से कह सकता हूँ कि यह घोड़ा वास्तव में अद्भुत है। इसका वर्ण तो अत्यंत विचित्र है। वर्ण का ज्ञान केवल प्राणि-शास्त्र के अध्ययन ही से हो सकता है किंतु आजतक यह रंग घोड़ों में नहीं पाया गया। मैं नहीं कह सकता कि ऐसे घोड़े का रखना सौभाग्य का सूचक है अथवा दुर्भाग्य का।"

शूरवीर युवक ने तैश में आकर कहा, "किंतु कुछ लोग ऐसे हैं जो अश्व पर हँसते हैं, परंतु अश्व के स्वामी पर हँसने का साहस नहीं करते।"

"आह! महाशय! मैं सदा नहीं हँसा करता; इसका उचित प्रमाण मेरी मुखाकृति से मिलेगा। तिस पर भी इच्छानुसार जब चाहूँ तब हँसूँ। इस स्वत्व का अधिकार केवल मुझे ही है, और किसी को नहीं।" "परंतु इतना मेरे भी अधिकार में है कि मैं उस हँसी को हँसने दूँ या नहीं जो मुझे किंचिमात्र भी रुचिकर प्रतीत नहीं होती।"

"ठीक! बिल्कुल ठीक! और यही सर्वथा उचित भी है।" अपरिचित व्यक्ति घृणासूचक स्वर में यह कहकर लौट पड़ा और

अपने घोड़े की ओर बढ़ा, जिसे एक साईस लगभग दस गज़ की दूरी पर लगाम पकड़े खड़ा था।

क्रोध में भरा युवक भला यह कब सहन कर सकता था कि उसका अपमान करके कोई व्यक्ति इस प्रकार उसके चंगुल से निकल जाय उसने म्यान से पूरी तलवार निकाल ली, और अपने विपक्षी को ललकार कर कहा—"परिहासक महाशय! आप जाते कहाँ हैं? ज़रा इधर आइये, नहीं तो आपकी पीठ ही मेरी तलवार का लक्ष्य बनेगी।"

"तलवार!" अपरिचित सुनते ही ठहाका मारकर हँसा, और तत्क्षण लौट पड़ा, फिर सामने आकर अत्यंत आश्चर्य से भरी किंतु घृणा व्यञ्जक दृष्टि से युवक को नीचे से ऊपर तक देखते हुए कहा—"तलवार! मेरे ऊपर! मित्र! तुम कहीं पागल तो नहीं हो गये! तलवार को म्यान में बंद करो और लौट जाओ!"

ये अंतिम शब्द उसके मुख से निकल भी न पाये थे कि युवक ने अत्यंत फुर्ती से झपटकर उसके ऊपर तलवार चला दी। यदि वह कौशल-पूर्वक पीछे हट जाता तो संभव था कि उपरोक्त वाक्य उसका अंतिम परिहास होता। उसने समझ लिया कि अब बात सीमा से बाहर हो गई, अतः वह भी शीघ्र ही संभल गया और पैतरा बदलकर शत्रु के प्रतिघात से अपनी रक्षा करने लगा।

इतने ही में अपरिचित व्यक्ति के उक्त दोनों साथी लाठी और डंडे लेले कर निकल पड़े और युवक के ऊपर टूट पड़े। क्षण-भर में एक छोटा-सा भीषण संग्राम प्रारंभ हो गया। भद्र-पुरुष ने इस सुअवसर का लाभ उठाया। वह शांति से एक दर्शक की भाँति इस युद्ध को देखने लगा। युवक बड़ी वीरता से लाठियों के आघात बचा रहा था। उसके रण-कौशल ने भद्र-पुरुष को चकित और स्तम्भित कर दिया। उसके मुख से सहसा स्वयं निकल पड़ा, "आह

गैस्कन लोग यथार्थ में अत्यंत वीर होते हैं। उसने अपने साथियों को उत्साहित करते हुये कहा—"इस वीर गैस्कन को पकड़ कर सम्मान सहित अश्व पर बैठा दो और कह दो कि अपनी वीरता का गुणानुवाद करता हुआ अपना मार्ग पकड़े।"

युवक ने अपने शत्रु पर प्रहार करते हुये अपरिचित व्यक्ति की इस परिहासोक्ति के उत्तर में कहा—"अरे पामर! तेरी समाप्ति किये बिना मेरा लौटना असम्भव है।"

यह संग्राम कुछ देर तक चलता रह [illegible] बड़े साहस से अपनी दृढ़ता का परिचय देता रहा। परन्तु अन्त में उसकी कृपाण लाठी के आघात से दो टूक होकर गिर पड़ी। तिसपर भी वह हताश नहीं हुआ। निःशस्त्र वीर ने लपक कर एक शत्रु को पकड़ लिया परंतु इसी बीच में अवसर पाकर दूसरे शत्रु ने एक लाठी का भरपूर हाथ उसके शिर पर मारा। इस चोट से युवक का शिर भन्ना गया। वह चेतनारहित होकर भूमि पर आ गिरा। युद्ध समाप्त हो गया।

वह भद्र पुरुष अपने संगियों सहित फिर उसी सीढ़ी के निकट आकर खड़ा हो गया। होटल के भयभीत स्वामी ने अपने नौकरों की सहाता से आहत युवक को एक कमरे में पहुँचा दिया और उसकी सेवा-शुश्रूषा का प्रबन्ध करके स्वयं भद्र-पुरुष के समीप लौट आया।

भद्र-पुरुष ने अत्यंत व्यग्रता से पूछा—"क्यों! उस मदांध युवक की अब क्या दशा है? कहीं गहरी चोट तो नहीं आई?"

होटल स्वामी ने श्रद्धापूर्वक विनीत स्वर में कहा—"नहीं, हुज़ूर वह अब अच्छा है। हाँ! उसकी मूर्छा पूर्णरूप से दूर नहीं हुई है, परन्तु हुज़ूर के तो कहीं चोट नहीं आई?"

"नहीं! मैं अच्छा हूँ। ओह! वह युवक तो अत्यन्त

दीर्घकाय व्यक्ति है, उसके शरीर में अपार बल है, वह सचमुच एक देव है।"

होटल स्वामी ने मुँह बिचका कर कहा—वह छोकड़ा देव है? वह तो अत्यन्त निर्धन है। मैंने मूर्छित अवस्था में उसके बेग की तलाशी ली थी, उसमें केवल एक क़मीज़ और १५ क्राउन थे। परंतु यह निर्धनता उसकी इस वीरता में कोई भी बाधा न डाल सकी जो मूर्छित होते समय उसके मुख से निकली कि "यदि यह घटना आज पेरिस में हुई होती तो शीघ्र ही इस दुष्ट को इसका फल मिल जाता, परन्तु ख़ैर! भविष्य में इसे अपने किये पर पश्चात्ताप करना पड़ेगा।"

"वह कोई छद्मवेशी राजकुमार तो नहीं है?" भद्र-पुरुष ने चिंतित होकर पूछा।

होटल स्वामी ने कहा—"यह मैं नहीं कह सकता। मैंने आपसे केवल इसलिये प्रकट कर दिया जिससे कि आप भविष्य के लिये सावधान हो जायँ।"

भद्र-पुरुष ने चिंतित होकर पूछा—"उसने क्रोधावेश में किसी व्यक्ति का नाम तो नहीं लिया?"

"हाँ उसने अपनी जेब में हाथ डालते हुये यह कहा था, "देखूं त्रिवली इस अपमान का किस प्रकार बदला लेता है।"

"त्रिवली" अपरिचित ने चौंक कर इस शब्द को बार-बार दोहरा कर कहा—"त्रिवली क्या इसका त्रिवली से कुछ संबंध है? परन्तु क्या तुमने पता लगाया कि उसने जेब में क्यों हाथ डाला था?"

"हाँ! त्रिवली के नाम का एक पत्र उसकी जेब में मिला। परन्तु उसमें क्या लिखा है यह मुझे नहीं मालूम।"

इस पत्रवाली बात ने अपरिचित की आकृति में एक विचित्र

परिवर्तन उत्पन्न कर दिया। वह कुछ क्षण तक विचार-मग्न रहा, फिर भौं को संकुचित करके दाँत पीसते हुये उसने बरबरा कर कहा, "आह! मालूम होता है यह सब त्रिवली की चाल है। हमारा पीछा करने और हमारे इस महत्कार्य में विघ्न डालने के लिये ही उसने इस छोकरे को हमारे पीछे लगा रक्खा है। किसी भी पूर्ण आयुवाले मनुष्य की अपेक्षा एक साधारण युवक व्याघात पहुँचाने में अधिक सफल हो सकता है। यह शठता अवश्य उसी धूर्त की है।"

सहसा कोई नई बात याद आजाने के कारण वह रुक गया और प्रकट में अपने स्वर को कुछ ऊँचा करते हुये होटल स्वामी को सम्बोधन करके कहा—"क्या तुम किसी उपाय से इस युवक को निश्चेष्ट नहीं रख सकते? मैं नहीं चाहता कि इस छोटी अवस्था में ही उसकी संसार-यात्रा समाप्त कर दूँ। परन्तु अभी कुछ समय के लिये मैं उससे निवृत्त होना चाहता हूँ। मुझे इसके द्वारा कुछ अनिष्ट की सम्भावना है। इस समय वह है कहाँ?"

"मेरी पत्नी के ऊपरी कमरे में है। वहाँ उसकी शुश्रूषा का प्रयत्न हो रहा है।"

"क्या उसका सामान भी उसी के पास है।"

"नहीं! वह सब मैंने लाकर नीचे रख दिया है, परन्तु यदि उस मूर्ख द्वारा आपको कुछ क्लेश हो तो......।"

"निस्सन्देह! वह पथिकाश्रम की शान्ति को भंग करता है, इसे कोई भी प्रतिष्ठित सज्जन सहन नहीं कर सकता। अच्छा, जाओ, मेरे भोजन-व्यय का हिसाब तैयार करके नौकर को दे दो।"

"तो क्या हुज़ूर यहाँ से अभी प्रस्थान करेंगे?"

"हाँ! मुझे शीघ्र ही रवाना हो जाना है। तुम जाओ।"

होटल स्वामी के चले जाने पर अपरिचित कहने लगा—"म्लैडी

अभी तक क्यों नहीं आई ? अधिक देरी हमारे कार्य में कहीं बाधा उपस्थित न कर दे। परंतु हाँ! कहीं ऐसा न हो कि इस युवक से लैडी का सामना हो जाय। मैं स्वयं ही आगे बढ़कर उसकी प्रतीक्षा करता हूँ। परन्तु सबसे पहले यह आवश्यक है कि युवक के उस पत्र को हस्तगत कर लिया जाय।"

यह कहकर वह अपरिचित व्यक्ति उस स्थान की ओर गया जहाँ युवक का सामान रक्खा हुआ था।

होटल स्वामी को यह विश्वास हो गया कि युवक से भयभीत होकर ही यह भद्र-पुरुष इतनी शीघ्रता से चला जा रहा है। अपनी आजीविका में व्याघात पहुँचता हुआ देखकर उसको भी नवागन्तुक युवक के रहने से अनिष्ट की आशंका होने लगी। वह दौड़ा हुआ शीघ्र ही ऊपर कोठे पर गया और अपनी स्त्री से सब बातें समझाकर कहीं। स्त्री ने चेहरे को अत्यंत गम्भीर बनाकर कहा—"इस युवक को जितना शीघ्र हो सके यहाँ से अलग कर दो। एक उच्च कुलीन रईस से झगड़ा ठान लेना सहज नहीं है, पुलिस के हाथ में पड़कर न मालूम कितनी यातनायें सहन करनी पड़ें। धन-हानि के साथ ही साथ सम्मान-हानि भी सहन करनी होगी। अतः इस उद्धत-स्वभाव-वाले युवक को इसी अवस्था में यहाँ से हटा देना चाहिये।"

युवक इन बातों को सुन रहा था। शीघ्र ही बिस्तरे पर से उठ खड़ा हुआ, कमज़ोरी पर तनिक भी ध्यान न देकर कुपित होकर नीचे उतर आया। उसके शिर पर पट्टी बँधी हुई थी, ताज़े घाव से बहुत-सा लहू निकल जाने के कारण युवक कुछ अशक्त-सा हो गया था। परन्तु इस पर भी उसने कुछ ध्यान न दिया। नीचे उतर कर सीधे उस ओर गया जहाँ उसका सामान रक्खा था। परन्तु यहाँ आते ही उसकी पहली दृष्टि उस भद्र-पुरुष पर पड़ी जो एक भारी गाड़ी के निकट खड़ा हुआ किसी व्यक्ति से बड़ी-बड़ी शांति के साथ बातचीत

कर रहा था वह व्यक्ति एक स्त्री थी जो गाड़ी की खिड़की से शिर निकालकर उस भद्र-पुरुष से हँसती हुई वार्तालाप कर रही थी युवक ने देखा कि वह २० या २२ वर्ष की सुन्दर युवती है, बड़े-बड़े प्रभामय नीलवर्ण के गुलाबी ओठ, सुंदर सुडौल अत्यंत कोमल भुजायें और पीठ पर पड़े हुये, भूरे, लहराते हुये अकुञ्चित अलक-समूह उसके अपूर्व लावण्य की शोभा को द्विगुणित कर रहे थे वह निस्संकोच होकर भद्र सज्जन से बड़ी स्वच्छन्दता के साथ वार्तालाप कर रही थी।

युवती कह रही थी, "तो आप मुझको यह आज्ञा देते हैं कि..."

"कि तुम शीघ्र ही इंगलैंड लौट जाओ और जब ड्यूक लंदन से रवाना हो तो शीघ्र ही उनको इसकी सूचना दो।"

"और उन वस्तुओं के विषय में मुझे क्या आज्ञा होती है।"

'वे सब इस पिटारी में सुरक्षित हैं। इनको जब तक तुम इंगलिश चैनल के उस पार न हो जाओ, तब तक कदापि न खोलना।"

"बहुत अच्छा, परंतु अब आप क्या करेंगे ?"

"मैं ! मैं पेरिस लौट जाऊँगा।"

"क्या ? पेरिस ! इस उद्धत छोकड़े को बिना दंड दिये ही ?"

अपरिचित इसका उत्तर देने ही वाला था कि इसी बीच में युवक जिसने इन सब बातों को सुन लिया था तेज़ी से दर्वाज़े के बाहर निकल आया और क्रोध के आवेश में कहने लगा—"यह उद्धत छोकड़ा दूसरों को स्वयं दंड देता है और मुझे आशा है कि अब की बार जिसको वह दंड देनेवाला है वह पहले की भाँति बचकर भाग नहीं सकता।"

अपरिचित ने चकित होकर तीव्र दृष्टि से युवक की ओर घूरा।

युवक ने इसकी उपेक्षा करते हुये अधिक क्रुद्ध होकर कहा—"नहीं ! इस बार तुम कदापि नहीं भाग सकते। आज मेरे ही हाथों

से तुम्हारी जीवन-लीला समाप्त होगी।" ग्लैडी ने अपरिचित का हाथ तलवार की ओर जाते देखकर कहा—"सावधान ! तनिक-सी भी देर हमारी कार्यवाही को व्यर्थ कर देगी। इस छोकड़े से पिंड छुड़ाना ही इस समय हमारा कर्त्तव्य है।"

"तुम ठीक कहती हो। तुम शीघ्रता करो। मैं यह चला" यह कहकर अपरिचित शीघ्र ही छलाँग मारकर अपने घोड़े पर सवार हो गया और एँड़ लगाकर घोड़े को एक ओर दौड़ा दिया। घोड़ा हवा से बातें करने लगा। उसी समय गाड़ी भी दूसरी ओर घड़घड़ाती हुई चली गई।

एक क्षण में यह दृश्य समाप्त हो गया। युवक चकित और स्तम्भित होकर खड़ा देखता रह गया। उसने क्रोध से भरकर दाँत पीसते हुये कहा, "नीच ! पामर ! डरपोक ! यह अभद्रता है। असज्जनता है, और वीरता के निपट विरुद्ध है।"

"उद्वेग और प्रचंड क्रोध के कारण युवक की निर्बलता बढ़ गई और वह क्षीणबल होकर पृथ्वी पर गिर पड़ा। होटल-स्वामी ने देखा कि वह भद्र-पुरुष से अधिक धन प्राप्त न कर सका। अतः उसके प्रति उसके हृदय में आदर और सत्कार का जो भाव था वह शीघ्र ही लुप्त हो गया। अब उसके होटल में यह युवक ही पथिकरूप में शेष रह गया था। उसको यह भी मालूम था कि इसकी थैली में अभी १५ क्राउन शेष हैं। युवक अभी अशक्त है। कुछ दिनों यहाँ विश्राम अवश्य करेगा। इस विचार ने उसके मस्तिष्क में प्रवेश करते ही उसको युवक की ओर सहृदय बना दिया। अत्यंत सहानुभूति के भाव से दयार्द्र होकर वह भद्र-पुरुष को बुरा भला कहता हुआ युवक को आश्वासन करने के लिये उसके निकट आया और कहने लगा—"निस्संदेह वह अत्यंत क्षुद्र है, नीच है, निर्लज्ज है और कायर है। ऐसे भद्र-पुरुष को यह भीरुता शोभा नहीं देती। भविष्य

में मुझे ऐसे भीरु मनुष्यों से अत्यंत सावधान रहना पड़ेगा। यदि सप्ताह में दो एक ऐसे नीच पुरुष आजायें तो मेरी तो सारी आजीविका ही नष्ट हो जाय। महाशय! आइये आप बहुत शीघ्र ही इसका पुरुष को दंड देने योग्य स्वास्थ्य लाभ करेंगे।"

युवक ने होटल के स्वामी के लालसामय मनोरथ को ताड़ लिया। क्षण-भर में उसके भावपरिवर्तन को देखकर प्रकट में उसके सांत्वना-पूर्ण वचनों के लिए उसे धन्यवाद दिया।

रात-भर के विश्राम ने युवक को चंगा बना दिया। आगामी यात्रा के योग्य स्वास्थ्य लाभ करके वह चलने की तैयारी करने लगा। उसने देखा कि होटल का हिसाब चुकता कर देने पर उसके पास एक पाई भी शेष नहीं रह जाती। परंतु इससे वह कुछ भी हताश नहीं हुआ। तलवार के टूट जाने का उसे दुःख था; क्योंकि निःशस्त्र यात्रा करना उस युग में आपदाओं में भ्रमण करना था। परंतु अपनी अतुल वीरता तथा दैहिक शक्ति पर उसे पूर्ण विश्वास था। अतः धनहीन और निःशस्त्र होकर भी युवक पहिले की ही भाँति निर्भय बना रहा।

परंतु जब उसने अपने वस्त्राच्छादन को ठीक किया तो उसने देखा कि उसका पत्र लापता है। उसने आश्चर्य से प्रत्येक वस्तु को सावधानी से देखा। कई बार अच्छी प्रकार देखने पर भी पत्र न मिला। उसे असीम दुख हुआ। पत्र का न मिलना उसके लिये एक असह्य हानि थी। वह अतीव दुःखी हुआ। इतना उसे अच्छी प्रकार स्मरण था कि होटल में प्रवेश करते समय तक वह पत्र उसकी जेब में था, पत्र क्या हो गया? किसने चुरा लिया? यह उसकी समझ में न आया। उसने अंतिम प्रयत्न किया और बहुत ध्यान से प्रत्येक कपड़े की एक-एक तह को ढूँढ़ डाला; परंतु फिर भी वह पत्र न मिला। इस बार हताश होने पर क्रोध की प्रचंड ज्वाला से उसका सरल चेहरा भयानक हो उठा। होटल-स्वामी तथा उसकी पत्नी भयभीत होकर

सतर्क दृष्टि से उसकी ओर देखने लगे और उसके क्रोध का लक्ष्य अपने आपको पाकर अपनी-अपनी रक्षा की चिंता करने लगे। युवक का संदेह होटल-स्वामी पर हुआ।

उसने ज़ोर से चिल्लाकर पूछा—"क्योंबे धूर्त! मेरा पत्र कहाँ है? शीघ्र ही पत्र निकालकर यहाँ रख दे, अन्यथा इसका परिणाम तेरी मृत्यु है!"

होटल-स्वामी ने समझ लिया कि उस भद्र-पुरुष का आना उसके हित के लिये सबसे अधिक अनिष्टकारी सिद्ध हुआ। धन-हानि, मान-मर्यादा का नाश और सबके ऊपर यह जीवन-नाश। वह मनौतियाँ मनाने लगा कि हे ईश्वर! किसी प्रकार इस भीषण आपदा से छुड़ाओ! युवक को जाते देखकर जो धन-प्राप्ति की आशा थी और जिसके कारण उसको सहानुभूति प्रकट करने का ढोंग रचना पड़ा था उसपर तो पानी पड़ ही गया। वह पहले अत्यंत कुपित दृष्टि से युवक को देख रहा था। वह किसी ऐसी बात की चिंता कर रहा था जो युवक के यात्रा-गमन में विघ्न डालकर उसको वहाँ रहने पर विवश करे। परंतु उसी युवक के मुख से 'मृत्युदंड' का फ़ैसला सुनकर उसके प्राण सूख गये। उसकी स्त्री भी संत्रस्त और भयभीत होकर उसके निकट आ गई। वे दोनों मनाने लगे कि बिना हिसाब चुकता किये भी यदि वह इसी क्षण चला जाय तो उनके सारे पुण्य उदय हों। उनका क्रोध अब दीनता में परिणित हो गया। प्राण-नाश के भय ने उनको अत्यंत कातर बना दिया।

पत्र की चोरी के विषय में वे दोनों इतना जानते थे कि यह दुष्टता उसी धूर्त की है जो उनकी इस दुरावस्था का आदि कारण है। होटल-स्वामी ने घुटने टेककर अत्यंत विनीत शब्दों में, युवक के क्रोध को शांत करने का प्रयास करते हुये अत्यंत साहस से कहा—"महाशय! आप अपने क्रोध को शांत कीजिये। विश्वास करिये

वह काम हमारा नहीं है। मैं आपका दास ऐसे कुकृत्य को करने का साहस नहीं कर सकता। मैं जानता हूँ और मुझे विश्वास है कि आपका पत्र वही कापुरुष आपका शत्रु उड़ाकर ले गया है। मैंने अज्ञान में उससे कह डाला था कि आप त्रिवली के स्नेह-भाजन हैं और आपके पास उनके नाम का सम्भवतः एक पत्र भी है। इस पर वह भीरु अत्यंत चिंतित और व्यग्र दिखलाई पड़ा था। उसने मुझसे पूछा कि वह पत्र कहाँ है? मैं निश्चित् रूप से कह सकता हूँ कि वह अवश्य आपके वस्त्रों के पास आया और आपका पत्र चुरा ले गया। यह उस नीच का ही काम है।"

होटल-स्वामी के दीन-वचन और उसकी कातर दृष्टि ने युवक को उसके शब्दों की सत्यता पर विश्वास उत्पन्न कर दिया। वह समझ गया कि यह नीचता वास्तव में उसी भद्र-पुरुष की है। उसके क्रोध की ज्वाला उस अपरिचित व्यक्ति के ऊपर भभक उठी। उसने प्रण किया कि जीवन भर मैं इस शत्रु की खोज करूँगा और बिना बदला लिये शांति लाभ नहीं करूँगा। उसने शीघ्र ही होटल का हिसाब चुकता किया और बाहर आकर घोड़े पर सवार हो उसको दंड देने का उपाय सोचता हुआ पेरिस की सड़क पर रवाना हो गया।

२

हम जिस समय का वर्णन कर रहे हैं उस समय फ्रांस में सुप्रसिद्ध राजा तेरहवें लुई का शासन था। इस समय योरोप भर में पोप की पादरी-शाही की तूती बोलती थी। शासन कार्य से पृथक् रहते हुए भी वास्तविक शासन-सत्ता पोप के प्रतिनिधि रूप धर्माध्यक्षों की रुचि के प्रतिकूल नहीं चल सकती थी। फ्रांस में भी रिचलू नामक धर्माचार्य के प्रचंड प्रताप का आतंक जमा हुआ था। रिचलू फ्रांस का प्रधान धर्माचार्य भी था और फ्रेंच-साम्राज्य का महामंत्री भी। शासन-कार्य में उसी का बोलबाला था। १३वाँ लूई यद्यपि सम्राट् था तथापि रिचलू के विरुद्ध चलने का साहस उसमें न था।

बाहरी दिखावे में रिचलू और सम्राट् गंभीर प्रेम और मैत्री का दम भरते थे; परंतु आंतरिक व्यवहार में वे एक दूसरे के कट्टर शत्रु थे। सम्राट् सदैव रिचलू को नीचा दिखाने में सचेष्ट रहता था और रिचलू भी सम्राट् को अपमानित करने के किसी अवसर को हाथ से न जाने देता था। दोनों एक दूसरे के दाँव-पेच से सचेत रहते थे। परंतु बाहरी व्यवहार में आंतरिक द्वेष की

चिनगारियाँ सदा प्रच्छन्न रक्खी जाती थीं, तिस पर भी कभी-कभी शतरंज खेलते समय जो वादाविवाद उठ खड़ा होता था उसमें दोनों अपने हृदय की वास्तविक स्थिति का परिचय देने से न रुकते थे। हृदय की प्रच्छन्न अग्नि तीव्र ज्वाला में भड़क उठती थी; परंतु यह सब वार्त्तालाप कूट-नीति के अनुरोध-वश शिष्टाचार की सीमा से भीतर ही बंद रक्खा जाता था।

इस आंतरिक मनमुटाव का अधिक स्पष्ट परिचय राजा और धर्माध्यक्ष की निजी अंग-रक्षक सेनाओं के पारस्परिक संबंध में दिखलाई पड़ता था। ये सेनायें अपने-अपने स्वामियों की हृद्‌गत भावनाओं का अनुकरण करके साधारण-सी बातों पर उलझ पड़ती थीं। दोनों में युद्ध छिड़ जाता था। ऐसी दशाओं में प्रत्येक सैनिक यह भली भाँति समझता था कि अपने-अपने पृष्ठ-पोषक के सम्मान की रक्षा करने में पीछे पग हटाना कायरता है। परंतु जब कभी राजा और धर्माध्यक्ष के सामने ये झगड़े प्रस्तुत किये जाते थे तब दोनों अपने-अपने तिलंगों को बुरा-भला कहकर आये दिन होनेवाली ख़ून-ख़राबी पर पर्दा डाल देते थे। राख से ढक दी जाने पर सुलगती हुई अग्नि कुछ समय के लिये दब जाती थी; परंतु अपनी-अपनी विजय के लिये दोनों यह प्रयत्न करते थे कि विपक्षी के तिलंगों को सदा मुँह की खानी पड़े। इसी अभिप्राय से दोनों ओर की अंग-रक्षक सेनाओं में रणकुशल, अनुभवी वीर बाँकुरे तिलंगे भर्ती किये जाते थे। जो तिलंगा इन दैनिक संग्रामों में हारकर आता था, उसे भीषण दंड मिलता था। विजयी सैनिक की परोक्ष में स्वामी स्वयं पीठ ठोकता था और उसकी वीरता इनाम की विभूतियों से सम्मानित की जाती थी।

राजा और धर्माध्यक्ष गुप्त रीति से अपने-अपने अंग-रक्षक वीरों को प्रोत्साहित करते थे। यही कारण था कि अंग-रक्षक भी प्रत्येक

समय परस्पर भिड़ जाने के लिये प्रस्तुत रहते थे। छोटी-छोटी बात पर भीषण संग्राम की तैयारियाँ होने लगती थीं। फ्रांस का यह युग मार-काट का युग था। इस युग में व्यक्तिगत शौर्य, साहस और आत्म-बलिदान की भावनाओं का बहुत मान था। जो सैनिक द्वंद्व-युद्ध में अपने वीर शत्रु का मान मर्दन करने में सफल होता था विजयश्री उसी के गले में जयमाल डालती थी। शारीरिक पुष्टता और संग्राम के कौशल ही मानव जीवन की सफलता के एकमात्र चिह्न थे। अपने गौरव और आत्म-सम्मान की भावना को यदि किसी भी प्रकार से ठेस पहुँचती तो विपक्षी को तत्क्षण द्वंद्व-युद्ध के लिये ललकारना प्रत्येक सम्भ्रांत व्यक्ति का अनिवार्य धर्म समझा जाता था। इन युद्धों में प्राण-नाश ही गौरव-लाभ का साधन था। युद्ध का कारण चाहे कितना ही छोटा हो, परंतु उसमें निर्भय होकर कूद पड़ना वीरत्व का एकमात्र चिह्न समझा जाता था।

राजा और धर्माध्यक्ष के अंग-रक्षक सैनिक भी प्रतिदिन विपक्षी को द्वंद्व-युद्धों के लिये ललकारने का अवसर ढूंढ़ा करते थे। इसी कारण आये दिन एक-न-एक नया झगड़ा खड़ा रहता था। इन युद्धों में कभी राजा के पक्ष की जीत होती थी और कभी धर्माध्यक्ष के पक्ष की।

राजा की अंग-रक्षक सेना का अध्यक्ष एक मँजा हुआ अनुभवी वीर सैनिक त्रिवली था। गैस्कन प्रांत की वीर प्रसवा भूमि के एक निर्धन कुटुम्ब में जन्म लेकर भी इस अस्वावलंबी वीर ने अपने व्यक्तिगत अध्यवसाय, शौर्य तथा बुद्धि चातुर्य के सहारे इस महत्त्वशाली पद को प्राप्त किया था। यह वीर भी असहाय अवस्था में जीविका के लिये उसी प्रकार घर से निकल पड़ा था जिस प्रकार वह युवक जिसका निर्देश हम पूर्व परिच्छेद में कर चुके हैं। अगणित भयावह आपदाओं का सामना करता हुआ जब त्रिवली पेरिस में आया था तब केवल अद्भुत साहस तथा प्रचंड शारीरिक बल के अतिरिक्त

उसके पास अपना कहने को कुछ भी न था। कुछ दिन इधर-उधर भटकने पर लुई के पिता की कृपा दृष्टि इसपर पड़ गई। युवराज के सहचर का पद त्रिबली को दिया गया। १३वें लूई ने सम्राट् होने पर उसके पराक्रम पर मुग्ध होकर उसे अपना प्रधान अंग-रक्षक चुन लिया। त्रिबली रण-कुशलता तथा हार्दिक उदारता के कारण अपने अधीनस्थ तिलंगों का सहज ही में प्रिय पात्र बन गया। राजा भी बचपन का साथी होने के कारण उसको मित्र की दृष्टि से देखते थे। यही कारण था कि त्रिबली की राज दरबार में प्रतिष्ठा थी, शत्रुओं के हृदयों में आतंक था, उसके मित्र उसको प्यार करते थे, अधीनस्थ सैनिकों के हृदयों में उसके लिये श्रद्धा थी, निर्बल तथा असहायों के लिये वह देवता था। उसकी कीर्ति-कौमुदी दूर-दूर तक फैली हुई थी।

फ्रांस के इस युग में उन्नत-पथ पर अग्रसर होने के लिये तीन ही प्रकार के व्यक्ति सफल मनोरथ हो सकते थे—सौंदर्यमयी युवती, पराक्रमशाली साहसी योद्धा और कुलीन वशंज। जान के साथ खेलनेवाले वीर अपने अद्भुत साहस के बल पर सांसारिक आपदाओं को जीत कर सदा कीर्ति के मार्ग पर चलते हुये देखे गये हैं; परंतु फ्रांस का यह युग शौर्य-प्रधान युग था। असीम साहस तथा शूरवीरता ही इसका प्रधान चिह्न था। इस काल में प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में विजयी होने के लिये बिकट संग्राम में संलग्न होना पड़ता था। इसमें सफल होने के लिये असाधारण विक्रम तथा अपूर्व प्रतिभा अपेक्षित थी। निर्धन तथा असहाय व्यक्ति इस संग्राम में नित्यप्रति कुचले जाते थे। जहाँ सभी के लिये वीर होना आवश्यक है वहाँ सफल जीवन प्राप्त करना टेढ़ी खीर हो जाती है। स्पर्धाशील संग्रामस्थली गर्म हो उठती है, आत्म-त्याग ही आत्म-सम्मान का साधन समझा जाने लगता है।

जिस वीर युवक का वर्णन हम पिछले परिच्छेद में कर चुके हैं वह जीविका के लिये निर्धन अवस्था में माता के सुखद अंग को छोड़कर संसार के बिकट क्षेत्र में निकल पड़ा था। वह संसार के ज्ञान से अनभिज्ञ था; परंतु जीवन में विजयश्री प्राप्त करने योग्य गुणों की कमी उसमें न थी। युग के अनुकूल शौर्य, पराक्रम और अद्भुत साहस उसके भविष्य को आशामय बनाए थे। अपनी गौरव-रक्षा के लिये उसमें मर-मिटने की साध मौजूद थी। जीवन की बिकट पहेलियों के कटु अनुभव से वंचित होने पर भी उसके नवीन मस्तिष्क में तीक्ष्ण-बुद्धि का वह अंकुर मौजूद था जो विकसित होकर विजयश्री को स्वयं आकर्षित कर लेता है।

सरल-हृदय युवक ने जब पेरिस में पदार्पण किया तो उसके साहस की भावना भय और संकोच से ढक गई। विलासिता की खान पेरिस उसके लिये अत्यंत कुतूहल वर्द्धक प्रतीत हुआ। विशाल भव्य-भवन, सुसज्जित उच्च अट्टालिकायें, जनसंकुल हाट की अनुपम शोभामयी दूकानों की नेत्ररंजक पंक्तियाँ आदि कुतूहल वर्द्धक वस्तुओं ने युवक के ग्रामीण नेत्रों को चकित कर दिया। स्थान-स्थान पर सुंदर रमणियों की अठ-खेलियाँ, सशस्त्र वीर सैनिकों का बाँकपन और रँगीले युवकों की चहल-पहल ने उसके मन पर अद्भुत प्रभाव डाला। एक ओर नगर की विलासमयी भव्यता थी तो दूसरी ओर वीर सैनिकों का उद्दंड साहस था। उस युग का पेरिस नग्न विलासिता और शूर-वीरता का विचित्र निकेतन था।

पेरिस जैसे अपरिचित स्थान में आकर वीर युवक का हृदय नवीन उमंगों से भर गया। इन्हीं सैनिकों तथा वीर पुरुषों के बीच में रहकर उसको ख्याति पैदा करनी है। इस भाव ने उसके हृदय में नूतन आवेश तथा स्पर्धा-शील उत्साह उत्पन्न कर दिया। उसके वीरत्व की भावना अधिक उत्तेजित हो गई; परंतु नगर के वायु-मंडल ने उसके सरल-

ग्रामीण-हृदय को सशंक भी बना दिया था। नागरिक सभ्यता से अनभिज्ञ होने के कारण कहीं उससे ऐसी कोई त्रुटि न हो जाय जो पेरिस के निवासियों के सामने उसे हास्यास्पद बनना पड़े। इस शंका ने उसके उद्दंड स्वभाव को अधिक विनम्र कर दिया। इसलिये वह अपनी समझ में बहुत फूँक-फूँककर क़दम रखता था।

युवक घूमता हुआ मार्ग की प्रत्येक वस्तु को आश्चर्य की दृष्टि से देखता चला जा रहा था कि सहसा एक स्थान में भीड़ देखकर रुक गया। बहुत से मनुष्य एक विशाल प्रासाद के सामने खड़े थे। बात यह थी कि कुछ तिलंगे सैनिक-क्रीड़ा में संलग्न थे। क्रीड़ा के विचित्र ढंग ने इतनी बड़ी भीड़ को एकत्रित कर लिया था। तिलगों की क्रीड़ा-विधि को देखकर ग्रामीण युवक स्तंभित हो गया। उसने सोचा कि जिन तिलंगों का विनोद इस प्रकार के खेलों से होता है वे कितने वीर और पराक्रमी होंगे। इसका अनुमान करना सहज नहीं है। इस खेल में तो प्राणों की बाज़ियाँ लग रही हैं। युवक ने देखा कि उस अट्टालिका से नीचे उतरने के लिये जो सीढ़ियाँ बनी हैं उनमें से नीचे-वाली अंतिम सीढ़ी पर दो विशालकाय वीर तिलंगे खड़े हैं और ऊपर-वाली सीढ़ी पर एक क्षीणकाय परंतु लंबा और तेजस्वी तिलंगा खड़ा है। नीचेवाले तिलंगे नंगी तलवारों के प्रहार ऊपरवाले तिलंगे पर लगा-तार कर रहे थे और वह अकेला इन प्रहारों से अपने शरीर की रक्षा कर रहा था। खेल यह था कि वे दोनों ऊपर पहुँचना चाहते थे और वह ऊपरवाला अकेला सैनिक चाहता था कि ये एक पग भी ऊपर न बढ़ सकें। ऊपर पहुँचने में ही उनकी जीत थी और इसकी हार। तलवारों के तीक्ष्ण प्रहार निर्बाध रूप से चल रहे थे, तीनों ज़ख़्मी थे, ख़ून बह रहा था, पसीने से सबके बदन तर थे, तिस पर भी न तो उनके शस्त्रों की रक्त-पिपासा ही शांत हुई थी और न हृदय तथा शरीर की उमंग ही कुछ घटी थी। हारने का कोई नाम तक न लेता था। दोनों पक्ष एक

दूसरे पर भरसक कठिन से कठिन प्रहार करते थे और जब किसी का भी वार ख़ाली जाता था तो तीनों युवा वीर ठहाका मार कर हँस पड़ते थे। ऊपरवाले युवक का शरीर लंबा और छरेरा था, परंतु नस-नस मज़बूत और अपूर्व ताक़त से भरी थी। उसके चेहरे की सुंदर कांति वीर-भाव को बढ़ा रही थी। नीचेवाले सेनानी उसकी अपेक्षा क़द और अवस्था में कम मालूम होते थे। पहला मँजा हुआ पहलवान था, तो दूसरे होनहार पट्ठे। तीनों पराक्रम, साहस और बल की जीवित मूर्ति थे। तीनों की मुखाकृति से अपूर्व तेज बरसता था और तीनों चुस्ती और चालाकी के अनुपम आगार थे। दर्शक उनकी वीरता से मुग्ध थे; परंतु कार्यों से भयभीत।

युवक यह दृश्य देखकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। तिलंगों की अद्भुत वीरता ने उसके हृदय में स्पर्धा उत्पन्न कर दी। उसका अंग-अंग नवीन उत्साह से फड़क उठा। स्वाभाविक कुतूहलवश उसने एक निकटवर्ती मनुष्य से पूछा कि ये वीर पुरुष कौन हैं? इस प्रश्न से चकित होकर उस मनुष्य ने युवक को नीचे से ऊपर तक देखते हुये कहा—"क्या तुम विदेशी हो? नहीं जानते ये त्रिबली के प्रधान तिलंगे हैं? राजा की अंगरक्षक सेना इन्हीं तीनों के बल पर इतनी प्रसिद्ध है? तुम किस देश के निवासी हो?"

इतना कहकर वह एकटक दृष्टि से युवक को घूरने लगा। त्रिबली का नाम सुनकर युवक चौंक पड़ा। उसने सोचा 'त्रिबली!' त्रिबली तो मेरे ही देश का वासी है। जिसकी खोज में अपने घर से चलकर मैं यहाँ तक आया हूँ, यह वही त्रिबली तो नहीं है? यह विचार कर अपने अनुमान को पुष्ट करने के लिए उसने उसी व्यक्ति से फिर पूछा—"महाशय! मैं वास्तव में विदेशी हूँ, मेरी धृष्टता को क्षमा कीजियेगा। कृपया यह बतलाइये कि यह त्रिबली गैस्कनी प्रान्त के निवासी हैं?"

"हाँ! इनका जन्मस्थान गैस्कनी प्रांत ही है। हमारे राजा के यह अत्यन्त प्रियपात्र हैं।"

युवक को यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि वह अपने ही देश-वासी व्यक्ति के प्रासाद के सामने खड़ा है। जिस व्यक्ति की वह खोज कर रहा था वह इतनी सरलता से मिल जायगा यह जान कर उसका हृदय आनंद से भर गया। हर्ष के आवेश में वह प्रासाद की ओर तेज़ी से चल पड़ा। उसको आशा थी कि त्रिवली उसको देखकर हर्ष से उछल पड़ेगा। परंतु उसकी आशा पर वज्रपात हुआ, फाटक के प्रहरी ने उसको डाटकर रोक दिया। युवक इस वाधा से ठिठक कर खड़ा हो गया। वह समझा था कि त्रिवली उसका देशवासी है, वह अपना है, उसके अत्यन्त निकट है; परंतु अब उसकी आँखें खुल गईं, उसने देखा कि त्रिवली उसकी पहुँच से अत्यंत दूर है, वह राजा का प्रधान प्रियपात्र राज्याधिकार से सम्मानित अगंरक्षक सेना का अध्यक्ष है। उसके और स्वदेशवासी त्रिवली के बीच में राज्यमद, अहंकार-जन्य राजसी गौरव और उच्चपद की प्रमत्त मर्यादा का दुर्लंध्य अन्तर पड़ गया है। युवक को यह धारणा निर्मूल हो गई कि वह त्रिवली से मित्र के नाते मिलने का अधिकारी है। राजपद ने स्वदेशवासी त्रिवली को घमंडी और विस्मृतिशील बना दिया होगा। यह शंका उसके नेत्रों के सामने आकर खड़ी हो गई। और यही आशंका अज्ञात पेरिस में उसकी असहाय अवस्था से मिलकर उसके सामने घर की निर्धनता के दयनीय चित्र खींच लाई। दारुण व्यथा ने उसकी वीरत्व-भावना को दबा दिया। वह दैन्य और नम्रता की मूर्ति बना हुआ प्रहरी के मुख को यकटक निहारने लगा। फिर ईश्वर की वन्दना करके धीरे-धीरे सहमा हुआ वह द्वारपाल के पास तक पहुँचा और अपना संदेश सेनाधिप के पास पहुँचाने की विनीत प्रार्थना की। द्वारपाल ने

नाक-भौं सिकोड़ कर घृणा-व्यंजक भाव से कहा—"उजड्ड गँवार ! सेनाधिप से मिलने का साहस करता है ! क्या काम है ? यहाँ से भाग, तेरा नाम क्या है ?"

युवक ने बहुत ही दबकर कहा—"मेरा नाम आर्तगान है, मैं आपके सेनाधिप का ही देशवासी हूँ । आप उनके पास सूचना भेज दीजिये, मैं आपका कृतज्ञ रहूँगा।"

द्वारपाल पर देशवासी होने का काफ़ी प्रभाव पड़ा। वह नम्र होकर सूचना देने चला गया।

द्वारपाल के चले जाने पर आर्तगान का ध्यान उन तीन तिलंगों की ओर आकृष्ट हुआ। खेल समाप्त करके वे विनोद-पूर्ण वार्तालाप द्वारा थकान को मिटा रहे थे। उनमें से एक तिलंगे ने अपने एक साथी से कहा—"अहा ! पार्थ ! यह चमकीली पेटी कहाँ से हथियाई ?"

आर्तगान ने देखा कि एक तिलंगे की कमर में एक अत्यन्त कांतिमयी रेशमी पेटी बँधी है। साधारण आय वाले सैनिक के पास इतनी बहुमूल्य रत्नजटित पेटी का होना वास्तव में आश्चर्य की बात थी। दोनों तिलंगे कुतूहल भरी दृष्टि से वैसे ही पेटी को देख रहे थे। दूसरे तिलंगे ने विनोदपूर्ण स्वर में कहा—"अहा ! मेरी भी दृष्टि इस ओर नहीं गई। क्यों भाई ! यह विचित्र पेटी किस प्रेमिका का उपहार है ?"

पार्थ ने ज़रा अकड़कर मूछों पर हाथ फेरते हुये कहा—"क्या इसका धारण करना आजकल के फ़ैशन के प्रतिकूल है ? अपनी पैतृक सम्पत्ति का इससे बढ़कर उपयोग और क्या हो सकता है ? ईर्षा होती है क्या ?"

ओफ़ ! पार्थ ! आँखों में धूल न झोंको ! यह उसी सुंदरी का उपहार है जिससे क़िले के बाहर उस रात को तुम गुप्त बातें कर रहे थे। ख़ूब छिपाया, और पैतृक सम्पत्ति की एक ही रही।"

पार्थ ने ठहाका मारकर उत्तर दिया—"झूठ! सरासर झूठ! इसे तो मैंने अपने संचित धन से ख़रीदा है लेकिन ख़ूब बात गढ़ते हो, यार।"

इस संचित धन की बात सुनकर सब सैनिक यकबारगी हंस पड़े। पार्थ अपना भेद खुल जाने पर लज्जित हो गया; परंतु अपनी दृढ़ता से वह हटनेवाला न था। लज्जा के भाव को छिपाकर उसने दूसरे सैनिक को संबोधन करके कहा—"क्यों भाई? अर्मस! क्या मेरी सत्यता में तुमको भी संदेह है?" अर्मस ने सिर हिलाकर अपनी असम्मति प्रकट की; परंतु उसने विषय को बदलने के लिये मुस्कुराकर कहा—"पार्थ! तुम्हारी पेटी ने सैनिकों की ईर्षा को उत्तेजित कर दिया है। आजकल पेरिस में ईर्षा और स्पर्धा बहुत बढ़ रही है। तुम निश्चिंत रहो, तुम्हारी पेटी वास्तव में एक बहुमूल्य निधि है। तुम्हारी सत्यता पर हमको कभी संदेह हो ही नहीं सकता। क्या तुम्हारी बताई हुई होटल की कथा सत्य नहीं निकली?" होटल की कथा का नाम सुनकर वह वीर युवक जो ऊपर की सीढ़ी पर खड़ा होकर आत्म-रक्षा कर रहा था पार्थ के पास खिसक आया और गंभीरता मिश्रित कुतूहलता से पूछा—"क्या राकफ्रोर्ट के विषय में यह बात यथार्थ में सत्य है?" "ओह! अथास! निस्संदेह! उस दुष्ट ने अब वेष बदलने में निपुणता प्राप्त कर ली है। आजकल धर्माचार्य का वह दाहिना हाथ हो रहा है।"

अथास—"और क्या यह बात तुमने नहीं सुनी कि इन्हीं धर्माचार्य महाशय ने राकफ्रोर्ट को एक भद्रपुरुष के पीछे उसके गुप्त कार्यों का पता लगाने के लिये जासूस बनाकर लगा दिया है। उस बेचारे की डाक खोलकर देख ली जाती है। अपने इस कार्य को उत्तम प्रमाणित करने के लिये धर्माचार्य ने यह ख़बर उड़ा दी है कि वह भद्रपुरुष राजा को मारकर रानी को हथिया लेना चाहता है। कितनी निर्मूल अफ़वाह है?"

अर्मस—"लेकिन यह जानते हो कि वह भद्रपुरुष कौन है ?"

सब लोग जिज्ञासा से चिल्ला पड़े—"हाँ ! हाँ ! बतलाओ, वह कौन है ?"

अर्मस ने गंभीर मुद्रा से कहा—"मेरा भी यही प्रश्न है। मैं स्वयं नहीं जानता।"

परंतु उसने अत्यंत गर्व के साथ अथास को अलग ले जाकर उसके कान में कुछ कहा। अथास चौंक पड़ा, आश्चर्य से उसने कहा—"एं ! तब तुम्हारी ख़बर असत्य नहीं है, यही कारण है कि वह आजकल फ़्रांस में ही है।"

इसी समय प्रासाद की ड्योढ़ी से कुछ पुकार हुई. पार्थ ने बातचीत बंद करने के लिये चिल्लाकर कहा—"सुनो ! सुनो !"

द्वारपाल पुकार रहा था—"अथास ! अर्मस ! पार्थ ! और नवागंतुक आर्तगान ! चलो, सेनाधिप की सेवा में उपस्थित हो।"

३

राजा की संरक्षक सेना का सेनापति त्रिबली अपने कमरे में बैठा हुआ कुछ उद्विग्न प्रतीत होता था। किसी चिंता में मग्न उसका चेहरा कभी रोष और कभी गंभीरता के भाव प्रकट कर रहा था। माथे पर पड़े हुये कई बल उसकी ध्यान मग्नता तथा क्रोधी स्वभाव की सूचना दे रहे थे। आर्तगान के कमरे के अंदर प्रवेश करने पर भी उसका ध्यान न टूटा। जब आर्तगान ने सादर अभिवादन किया तब अपने देश के परिचित स्वर ने उसकी दृष्टि युवक की ओर आकर्षित की। दृष्टि उठाकर ऊपर देखा। लिबास और चेहरे की आकृति ने यह शीघ्र ही प्रकट कर दिया कि यह युवक उसी देश का निवासी है, जिसमें उत्पन्न होने का गौरव त्रिबली को प्राप्त था। त्रिबली ने द्वार-रक्षक द्वारा अथास, पार्थ और अमंस को बुलवाया था। किसी विशेष कार्य-वश उनसे ही भेंट करने के लिये वह बहुत उत्सुक था। जिस चिंता ने उसकी आकृति को गंभीर तथा रोषमय बना दिया था वह इन्हीं तीन सेनानियों के संबंध में थी। अतः उनके स्थान में केवल आर्तगान को खड़ा देखकर उसके चेहरे का रूप और भी गंभीर बन गया। आर्तगान को हाथ के इशारे से

प्रतीक्षा करने की आज्ञा देकर उसने अथास आदि सैनिकों को दुबारा बुलाने का आदेश द्वारपाल को दिया।

पल भर में अर्मस और पार्थ ने आकर सैनिक ढंग से अभिवादन किया। त्रिवली उग्रता धारण किये हुये कमरे में टहल रहा था। निस्तब्ध कमरे की शांति केवल उसके टहलने से ही भंग हो रही थी। रह-रहकर हृदय को चुभने वाली किसी बात की याद करके उसका चेहरा क्रोध के आवेश में तमतमा उठता था। लंबी दुधारी तलवार की म्यान उसके टहलते समय जब इन सैनिकों के समीप से निकल जाती थी तब भय से इनके हृदय काँप उठते थे। क्रोध भरी दृष्टि से अर्मस और पार्थ और अथास को नीचे से ऊपर तक देखकर तेज़ आवाज़ से उसने कहा—"क्या तुम लोग जानते हो कि राजा ने मुझसे कल शाम को क्या कहा है ?"

दोनों सेनानियों ने सम्मान-सूचक स्वर में बहुत ही शांति के साथ कहा—"नहीं ! श्रीमान् ।"

त्रिवली ने कहा—"ओह ! उन्होंने कहा है कि आज से हम अपनी श्रम-रक्षक सेना की भर्ती धर्माचार्य के अंग-रक्षकों से करेंगे ! छि ! कितनी लज्जा की बात है ! यह बातें कहते हुये सेनापति का क्रोध और भी बढ़ गया। पार्थ ने चौंक कर आश्चर्य से पूछा—"धर्माचार्य की सेना से ? इसका क्या अभिप्राय है ?"

त्रिवली ने उत्तर दिया—"अभिप्रायः ! इसका अभिप्राय पूछते हो ? कारण स्पष्ट है। राजा ने हमको डरपोक और धर्माचार्य के सैनिकों को वीर सिद्ध किया है ?"

इस वाक्य को सुनकर दोनों सेनानियों के आँखों में ख़ून उतर आया। यह देखकर सेनापति ने अत्यंत शांति के साथ कहा—"और राजा की यह धारणा असत्य नहीं है। हमारे सेनानी राज-दरबार में अत्यंत पोच सिद्ध होते हैं। कल धर्माचार्य ने चौसर खेलते समय

अत्यंत गर्व के साथ राजा से यह कहा था कि—"इन्हीं शैतान, बुज़दिल और बकवादी सैनिकों ने—धर्माचार्य ने इन अंतिम शब्दों पर मुँह बिगाड़कर मेरी ओर घूरते हुये अधिक ज़ोर दिया था—परसों एक गली के होटल में विप्लव मचा दिया था। उपद्रव यहाँ तक बढ़ गया था कि मेरी सेना के अंग-रक्षकों को उन नालायक़ सैनिकों को गिरफ़्तार करना पड़ा।" धर्माचार्य की यह गर्वोक्ति मेरे हृदय को पार कर गई है। गिरफ़्तार! धर्माचार्य के अंग-रक्षक मेरे सेनानियों को गिरफ़्तार करें। जिस समय वह वाक्य धर्माचार्य ने हँसते हुये कहे थे, मेरा ख़ून खौल उठा था। यह प्रबल इच्छा हुई थी कि धर्माचार्य के सारे उल्लास का मज़ा उसी समय किरकिरा कर दूँ। राजा के सामने ख़ून का-सा घूँट पीकर रह गया।" सेनानियों की ओर क्रोध भरी दृष्टि करके घृणा के साथ कहा—"तुम! तुम इस घटना से अवश्य परिचित होगे, यह तुम इनकार नहीं कर सकते कि तुम वहाँ नहीं थे। धर्माचार्य ने तुम्हारा नाम विशेष रूप से लिया था। धिक्कार है!" अपने स्वर को कुछ धीमा करके कहा—"परंतु नहीं, यह मेरा ही अपराध है, क्योंकि मैंने ही तुम लोगों को भर्ती किया है।" अर्मस की पोशाक को ज़रा ग़ौर से देखकर कहा—"क्यों अर्मस! इतने भड़कीले वस्त्रों पर भी तुम नई वर्दी मुझसे किस आधार पर माँगते हो?" पार्थ की ओर संबोधन करके कहा—"क्या इस सुनहरी पेटी में फ़ौलाद के स्थान में रेशम की तलवार लटकाई जायगी? और अथास! एं! अथास कहाँ है?" अभी तक त्रिबली का ध्यान अथास की ओर नहीं गया था। धर्माचार्य की बात की चोट ने उसके हृदय में अत्यधिक पीड़ा पहुँचाई थी। अथास, पार्थ और आर्मस, यही तीन उसकी सेना के मुख्य अवलंब थे। इन तीनों की वीरता पर उसको गर्व था। धर्माचार्य ने उसके इसी गर्वस्थल पर चोट पहुँचाई थी। इसी कारण उसको मार्मिक व्यथा हो रही थी। ऐसे

समय पार्थ और अर्मस के भड़कीले वस्त्रों ने उसके क्रोध के पारे को और भी बढ़ा दिया। इन दोनों की विलास-प्रियता पर टिप्पणी करते हुए स्वाभाविक रूप से अथास की याद उसको हो आई। परंतु अथास को वहाँ न देखकर उसे अत्यंत आश्चर्य हुआ।

अर्मस ने समवेदना के स्वर में कहा—"श्रीमान् वह अत्यंत बीमार है।" इस उत्तर से सेनापति चौंक पड़ा, "बीमार! अत्यंत बीमार है? यह कैसे?"

पार्थ ने बहुत ही शोक पूर्ण स्वर में कहा—"अनुमान किया जाता है कि चेचक ने उस पर आक्रमण किया है।"

सेनापति ने कहा—"असंभव! चेचक और अथास को, इस अवस्था में! क्या तुम समझते हो कि मैं तुम्हारी इस बात पर विश्वास कर लूँगा। नहीं; कदापि नहीं! यथार्थ बात यह है कि वह आहत हो गया है और संभवतः मर भी गया हो।" अपने स्वर को और भी प्रचंड करते हुये उसने कहा—"मैं इन गलियों की मुठभेड़ों को, चौरस्ते की इस तलवार-बाज़ी को और होटलों के उपद्रवों को अधिक सहन नहीं कर सकता। तुम लोगों को अब ऐसा अवसर कभी न दूँगा कि तुम लोग होटलों में निर्लज्जता पूर्वक अपने मान और मर्यादा को इस प्रकार तिलांजली दो। धर्माचार्य के सेनानियों ने तुमको गिरफ़्तार करने का साहस किया। डूब मरना चाहिये था? धर्माचार्य के सैनिक वास्तव में युद्ध-कुशल हैं? वे कभी ऐसा अवसर नहीं देते कि तुम लोग उनको गिरफ़्तार कर सको। मुझे विश्वास है कि ऐसा अवसर पड़ने पर वे जान पर खेल जायेंगे। पीछे पैर हटाना वे लोग नहीं जानते। पीठ दिखाकर भाग आना और घरों में बीमारी का बहाना बताकर लुक रहना यह काम हमारे ही सैनिकों को शोभा देता है?"

ये वाक्य कहते हुये सेनापति का स्वर और भी तीव्र हो गया था। क्रोध, क्षोभ और ग्लानि से उसका चेहरा तमतमा उठा।

दोनों सैनिकों को ये वाक्य वज्र प्रहार के समान लगे। वे अब अधिक सहन न कर सके। उनकी नस-नस में अग्नि उत्पन्न हो गई। क्रोध से आँखें लाल हो गईं। चेहरे पर ख़ून दौड़ आया। हाथ तलवारों की मूँठ पर जा पड़े। क्रोध से होंठ काँपने लगे। यदि उनको यह ध्यान न होता कि सेनापति के हृदय में उनके प्रति जो अत्यंत अनुराग संचित है उसी से प्रेरित होकर ये असहनीय और अपमानजनक वाक्य कहे गये हैं तो वे उसी क्षण अपने जीवन का त्याग कर सेनापति पर आक्रमण कर देते और अपने अपमान का बदला चुकाते। परंतु उन्होंने समझदारी से काम लिया। पार्थ ने क्रोध को रोककर धैर्य और शांति के साथ कहा—श्रीमान् सेनापति! धर्माचार्य से जो कुछ आपने सुना है वह सब निर्मूल है। यथार्थ बात केवल इतनी है कि हमारी टोली में छै सैनिक थे और उनकी भी टोली में छै ही थे। उन लोगों ने धोखा दिया, सामने आकर लड़ने में वे अभ्यस्त नहीं हैं। हम लोग तलवारें भी न निकाल पाये थे कि धोखे से हमारे दो सैनिक मार डाले गये और अथास के गहरा ज़ख़्म लग गया। हमने आत्म-समर्पण नहीं किया। हम लड़े। बड़ी देर तक युद्ध होता रहा। अंत में जो कुछ हुआ उसको हम पराजय नहीं कह सकते। वे संख्या में अधिक थे, उन्होंने हमको घसीट ले जाना चाहा परंतु हम लड़भिड़कर स्वयं बचकर निकल आये। वे पीछे डींगें मार सकते हैं परंतु युद्ध में सामने चमचमानेवाली तलवारें वे नहीं सँभाल सकते।"

अर्मस ने कहा—"और श्रीमान् को मैं विश्वास दिलाकर कहता हूँ कि यद्यपि मेरी तलवार एक ही वार में टूट गई थी तथापि मैंने उनमें से एक को उसी की तलवार से मार डाला।"

सेनापति ने घटना के इस रूप को सच माना, क्योंकि उसके सैनिक

उससे कभी झूठ न बोलते थे, घृणा के साथ कहा—"आह ! अब मैं समझा । धर्माचार्य ने इस घटना को अपने अनुकूल अतिरञ्जित किया है ।"

इसी समय सहसा कमरे का द्वार खुला और एक सुंदर लंबे छरहरे बदन का युवक आता हुआ दिखाई दिया । युवक के सुंदर मुख की श्री इस समय कुछ मलिन पड़ गई थी, परंतु तिसपर भी उसके चेहरे से वीरता और दृढ़ता के भाव झलक रहे थे ।

दोनों सैनिक सहसा चिल्ला उठे—"अथास !"

सेनापति ने भी पुकारा—"अथास !"

अथास ने अत्यन्त क्षीण और शान्त स्वर में बहुत ही दृढ़ता के साथ कहा—"श्रीमान् ने मुझे बुलवाया था । सूचना मिलने पर मैं शीघ्र ही सेवा में उपस्थित हुआ हूँ । किस आदेश को मुझे पालन करना होगा ?"

सेनापति ने अनुमान किया था कि अथास आहत है वह पलंग पर पड़ा हुआ कराह रहा होगा ; परंतु जिस ढंग से अथास ने नियमानुकूल झुककर अभिवादन किया उससे उसको यह निश्चित हो गया कि गहरा ज़ख़्म लगने पर भी अथास अद्‌भुत साहसी व धैर्यशाली है, इसी कारण अत्यंत प्रसन्न होकर उसने उत्तर दिया—"मेरे सैनिक अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध हैं । राजा उनपर अत्यंत अनुराग रखता है । इसी कारण उनका कर्तव्य है कि वे अपनी शक्ति का दुरुपयोग अनावश्यक तथा व्यर्थ युद्धों में न करें । राजा ने इस शक्ति को किसी विशेष कार्य के निमित्त सञ्चित रक्खा है । कलवाली घटना की भाँति और कोई घटना अब न होनी चाहिये ।"

अथास के बहुत गहरा ज़ख़्म लगा था । उसके शरीर का सारा रक्त निकल गया था । मुख पर पीलापन छा गया था । अधिक निर्बलता पर भी केवल साहस के सहारे पर वह सेनापति के पास

चला तो आया परंतु अब उसके साहस ने अधिक काम न दिया। चेहरा और भी फीका पड़ गया। पैर लड़खड़ाने लगे। बेहोश होने ही वाला था। सेनापति की तीक्ष्ण दृष्टि ने यह सब देख लिया शीघ्र ही अन्य दो सैनियों को इशारा किया और कहा—"जाओ और अथास के ज़ख़्म का प्रबंध करो।" दोनों सैनिकों ने शीघ्र ही अथास को सहारा दिया और कमरे के बाहर चले गये।

युवक आर्तगान चुपचाप खड़ा हुआ यह सब दृश्य देख रहा था। ग्रामीण जीवन के व्यवहारों से पूर्ण उसकी बुद्धि इस दृश्य को देखकर चकित हो गई। कभी उसकी यह इच्छा होती थी कि वह धीरे से यहाँ से खिसक जाय, परंतु अभीप्सित कार्य की सिद्धि के लिये उसका रुकना वहाँ आवश्यक था। जो कुछ वार्तालाप सैनिकों और सेनापति के बीच हुआ उसके वास्तविक रहस्य को समझना उसकी शक्ति के बाहर की बात थी। परंतु उसकी जागृत नवीन तीक्ष्ण बुद्धि ने यह समझ लिया कि इन लोगों से लोहा लेना खेल की बात नहीं है। उसका सरल हृदय सैनिकों की वीरता पर मुग्ध हो गया। अथास के अद्भुत शौर्य ने उस पर अधिक प्रभाव डाला। परंतु इन विचारों के साथ ही उसके हृदय में स्पर्धा की भावना भी उत्पन्न हो गई, उसकी वीर भावनायें जागृत हो उठीं। उसकी इच्छा हुई कि एक बार इन सैनिकों की तलवार से अपनी तलवार की भी ज़ोर-आज़माई करै। इन्हीं विचारों में वह लीन था कि सहसा त्रिबली के ये शब्द उसके कान में पड़े—"ऐ युवक! तुम अपनी माँ की ममता छोड़कर यहाँ किस अभिप्राय से आये हो?"

आर्तगान ने आदरपूर्वक अपना नाम व पता बतलाया, और कहा—"श्रीमान् के पास मैं केवल इसीलिये आया हूँ कि मेरी इच्छा है कि श्रीमान् की सेवा में भर्ती होने का सौभाग्य मुझको भी मिल सके। परंतु जो घटना अभी घटित हुई है उससे मैं निरुत्साहित

हो गया हूँ, क्योंकि संभव है कि मैं इस गुरुतर कृपा के योग्य न समझा जाऊँ।"

सेनापति ने उत्तर में कहा,—"युवक! वास्तव में यह एक दुर्लभ पद है, तिस पर भी तुमको निराश न होना चाहिये। परंतु राजा की स्वीकृति इसके लिये आवश्यक है। तुम्हारे पिता मेरे परममित्र थे, उनके पुत्र के लिये मैं कुछ उठा न रक्खूंगा। परंतु एक बात मैं बतला देना चाहता हूँ कि इस सेना में वही भर्ती हो सकता है जिसने युद्ध संबंधी सब कठिन मार्गों को तय कर लिया हो, जो विशेष अवसरों पर ख्याति पा चुका हो और कठिन परीक्षा-स्थलों पर विजयश्री प्राप्त कर हो चुका हो।"

सेनापति ने थोड़ी देर रुक कर कहा—"मैं तुम्हारी सहायता अवश्य करूँगा, जिस प्रदेश से तुम आ रहे हो वहाँ से बहुत कम व्यक्ति अमीर घरानों से आते हैं। संभवतः तुम भी बहुत धन लेकर न आये होगे।" इस पर आर्तगान की भौंहें टेढ़ी पड़ गईं, गर्दन सीधी करके गर्व के साथ कहा—"परंतु जनाब, मैं किसी से भिक्षा नहीं माँगता।"

इस उत्तर को सुनकर सेनापति मुस्कराया और हँसकर कहा—आह! यह मैं सब जानता हूँ। मैं भी जब नौकरी के लिये घर से चला था, तब केवल चार मुद्रा पास थे और यदि उस समय कोई मुझसे कहता कि तुम निर्धन हो तो मैं उसका दुश्मन अवश्य बन जाता।" परंतु ख़ैर। मेरा अभिप्राय केवल इतना ही है कि बहुत ही मितव्ययता के साथ अपने धन का उपयोग करना। इस समय मैं तुमको एक पत्र राजशिक्षक के नाम दिये देता हूँ, जिसमें तुम कल से भर्ती कर लिये जाओगे। वहाँ तुमको घोड़े पर चढ़ना और अस्त्र-शस्त्र चलाना सिखलाया जायगा। वहाँ रहकर तुम इस नगर के निवासियों से भी परिचित हो जाओगे। फिर समय-समय

पर मुझसे मिलते रहना। अवसर पाकर तुमको किसी योग्य कार्य में नियुक्त कर दूँगा।"

आर्तगान राज-दरबार के व्यवहारों से अनभिज्ञ था। सेनापति के इस शुष्क व्यवहार से उसके हृदय में क्लेश हुआ। उसने अत्यंत दुःख के साथ कहा—"खेद है कि पिताजी के दिये हुये परिचय-पत्र को मैं श्रीमान् को दिखा न सका।"

सेनापति ने तुरंत ही कहा—"मुझे स्वयं आश्चर्य था कि बिना किसी परिचय-पत्र के तुम घर से किस साहस पर निकल पड़े।"

आर्तगान ने उत्तर में कहा—"मेरे पास एक ऐसा पत्र था और वह वैसा ही था जैसा कि मैं चाहता था, परंतु खेद है कि वह नीचतापूर्वक मेरे पास से चुरा लिया गया। तब आर्त्तगान ने निर्भीकता-पूर्वक होटल वाला पूर्ण वृत्तांत कह सुनाया। इसको सुनकर त्रिबली गंभीरता के साथ कुछ सोचता रहा। कुछ देर पश्चात् कहा—"आश्चर्य है। क्या तुमने मेरा नाम उसके सामने लिया था।"

"हाँ! श्रीमन्, अवश्य। मैं श्रीमान् के नाम ही द्वारा अपनी रक्षा यात्रा भर में कर सकता था?"

इस उत्तर से प्रसन्न होकर सेनापति ने युवक की ओर देखा। परंतु सेनापति ने फिर गंभीर होकर पूछा—"अच्छा! क्या उस पुरुष के एक गाल पर एक हलका सा ज़ख़्म का चिह्न था?"

"हाँ! ऐसा चिह्न एक अवश्य था?"

"क्या वह मनुष्य कुछ लंबा था?"

"हाँ!"

"उसके सर के बाल भूरे और मुख रंग का कुछ पीला था?"

"हाँ! श्रीमन् यह सब बातें उसमें थीं। ठीक यह वही था जिसका वर्णन अभी श्रीमान् ने किया है। परंतु क्या श्रीमान् इस मनुष्य से परिचित हैं? यदि मुझको यह व्यक्ति कहीं मिल

जाय और मुझे विश्वास है कि मैं उसे अवश्य ढूँढ लूँगा, तब उसकी नीचता का बदला उसके साथ चुकाऊँगा।"

सेनापति ने आर्तगान के इस प्रलाप पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया, वह जिस बात को सोच रहा था उसी को सोचते हुये उसने फिर पूछा—"क्या वह किसी स्त्री की प्रतीक्षा कर रहा था।"

"जिस स्त्री की प्रतीक्षा वह कर रहा था उसके साथ कुछ क्षण वार्तालाप करके वह शीघ्र ही वहाँ से चला गया।"

"क्या तुम बतला सकते हो कि उनके वार्तालाप का विषय क्या था ?"

"उसने उस सुंदर रमणी को एक छोटी संदूक़ची दी थी और क्या था कि उसमें उसके लिये जो आदेश हैं वे बंद हैं। लंदन पहुँचने के पूर्व वह उसको कहीं भी न खोले।

"क्या वह स्त्री इंगलैंड की मालूम होती थी ?"

"उस मनुष्य ने उसको 'म्लैडी' के नाम से पुकारा था।"

इस नाम को सुनकर सेनापति सहसा चिल्ला उठा—"ओह ! ठीक ! यह वही है, मेरा विचार था कि वह अभी ब्रूसल्स में होगा, परंतु वह शैतान वहाँ पहुँच गया !"

"आह ! यदि आप जानते हैं कि यह कौन मनुष्य है तो मुझे बतला दीजिये, मैं जीवन पर्यंत एहसान मानूँगा। फिर मुझको आप चाहे किसी प्रकार की नौकरी भी न दें, क्योंकि मैंने अपने जीवन का प्रथम कर्त्तव्य इस क्षुद्र मनुष्य से बदला चुकाना निश्चित कर रक्खा है।

सेनापति ने चिल्ला कर कहा—"ख़बरदार ! ऐसा व्यर्थ प्रण कभी न करना। यदि वह गली के एक ओर जा रहा हो तो तुम चुपके से दूसरी ओर से निकल जाना। वह चट्टान है, जिसमें हाथ मारकर तुम स्वयं अपने हाथों को आहत कर लोगे, उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते।"

आर्तगान ने अत्यंत दृढ़ता के साथ निडर होकर उत्तर दिया—"श्रीमान्, यदि वह चट्टान है तो मैं भी लोहे की गदा हूँ ? मैं उससे भिड़ने के लिये सदा तैयार हूँ।"

सेनापति ने शांति से कहा—"परंतु जहाँ तक तुमको सलाह देने का मेरा अधिकार है वहाँ तक मैं यही कहूँगा कि तुम कभी भी ऐसा करके अपने जीवन को ख़तरे में न डालना।"

युवक ने उसी निडरता से कहा—"जीवन, मैंने अपने जीवन का लक्ष्य यही बना रक्खा है।"

इस निर्भीकता और साहस पर सेनापति को आंतरिक आह्लाद हुआ। वह मुस्कराया और युवक के लिये पत्र लिखने लगा। आर्तगान तब तक कमरे में जो बाहर की ओर खिड़की लगी हुई थी उसके पास आकर खड़ा हो गया और कुतूहलवश बाहर की ओर देखने लगा। जब सेनापति पत्र लिख चुका तब स्वयं उठकर आया और आर्तगान को पत्र देने लगा। परंतु ज्योंही युवक ने पत्र लेने के लिये हाथ बढ़ाया त्योंही सेनापति ने देखा कि वह युवक एकबारगी उछल पड़ा, मुख लाल हो गया और विचित्र जोश में आकर तेज़ी के साथ बाहर की ओर यह बरबराते हुये भागा—"आह ! ख़ून ! वह भागा जाता है, परंतु अब बचकर नहीं जा सकता।"

सेनापति ने चौंककर आश्चर्य से पूछा—"कौन ?"

आर्तगान ने भागते हुये ही यह कहा—"वही नीच ! चोर ! देश-द्रोही !" और शीघ्र ही कमरे से बाहर हो गया। सेनापति अवाक् खड़ा रह गया। सहसा उसके मुख से निकल पड़ा !" विचित्र पागल युवक है। यह अच्छा ही किया कि अभी अपनी सेना में इसको भर्ती की आज्ञा नहीं दी।"

४

आर्तगान उत्तेजना-वश दो छलांगों ही में कमरे के बाहर हो गया और शीघ्रता से सीढ़ियों की ओर भागा। भागते समय सीढ़ियों से उतरते हुये एक सैनिक के कंधे से उसका सर टकरा गया। सैनिक के मुख से एक दर्द भरी आह निकल पड़ी। आर्तगान ने इसकी रत्ती भर की परवा नहीं की और केवल यह कहते हुए—'महाशयजी, क्षमा कीजियेगा। इस समय मैं जल्दी में हूँ, फिर दौड़कर आगे की ओर बढ़ गया। उसने कठिनता से पहली सीढ़ी लाँघी होगी कि पीछे से उसी सैनिक ने आर्तगान की पेटी पकड़ ली और उसको रोककर कहा—"तुम शीघ्रता में हो? क्या केवल इसी बहाने से तुम किसी को धक्का दे सकते हो? और तुम समझते हो कि "क्षमा कीजियेगा" केवल इतना ही इसके लिये काफ़ी है? शिष्टाचार के लिये पहले अपने आचार व्यवहार शिष्ट बनाओ!"

आर्तगान ने अथास को पहचानकर कहा—"ईश्वर साक्षी है मैंने जानबूझ कर आपके आहत-स्थान में चोट नहीं पहुँचाई है। इसी कारण मैंने पहले ही क्षमा-प्रार्थना की है, और मेरा अनुमान है कि इसके लिये इतना पर्याप्त है। मैं इस समय यथार्थ में बहुत शीघ्रता में

हूँ, अन्यथा ऐसी भूल मुझसे न हो सकती। कृपया मुझको जाने दीजिये।"

अथास ने टेढ़ी दृष्टि करके कहा—"महाशयजी! आप शिष्टता सीखिये। मालूम होता है कि आप इस नगर की सभ्यता से अनभिज्ञ हैं।"

आर्तगान अपना हाथ छुड़ाकर चल दिया था, परंतु अथास के इन अंतिम शब्दों ने उसको उत्तेजित कर दिया। उसने रुककर गर्व के साथ कहा—"महाशय मैं कितना ही अनभिज्ञ हूँ परंतु आपको अयाचित उपदेश का कोई अधिकार नहीं।"

अथास ने उत्तर दिया—"सम्भव है, क्योंकि तुम एक ग्राम के निवासी हो, नागरिक व्यवहारों की शिक्षा तुमको आवश्यक है।"

आर्तगान इस अपमान को सहन न कर सका, अत्यंत क्रुद्ध होकर उत्तर दिया—"यदि मैं इस शीघ्रता में न होता और थोड़ी देर के लिये भी रुक सकता तो आपको यह बतला देता कि आपको यह अधिकार है या नहीं।"

"इसके लिये मैं सदा तैयार हूँ। मैं तुम्हारे लौटने तक प्रतीक्षा करूँगा।"

"बहुत अच्छा! किस स्थान पर?"

"कार्मी डायना के निकट।"

"और किस समय?"

"तीसरे पहर।"

"बहुत ठीक! मैं अवश्य आऊँगा।" शीघ्रता से यह कहकर आर्तगान और भी तेज़ी के साथ आगे दौड़ गया। उसको विश्वास था कि वह अपने शत्रु को पालेगा, परंतु जिसका वह पीछा कर रहा था उसका कुछ भी पता न लगा कि वह किस ओर से खिसक गया।

जिस ओर से आर्तगान दौड़ा हुआ जा रहा था उसी मार्ग में

पार्थ खड़ा हुआ एक द्वारपाल से बातें कर रहा था। इन दोनों के बीच केवल एक मनुष्य के निकलने भर की जगह थी। आर्तगान उसी ओर से होकर सपाटे में दौड़ा चला आया, परंतु उसके दुर्भाग्य से उस समय एक हवा का झोंका आया जिसने पार्थ की चादर के एक भाग को उड़ा दिया। ठीक उसी समय आर्तगान इन दोनों के बीच में होकर दौड़ा। परिणाम यह हुआ कि वह उस चादर को अपने साथ लपेटता हुआ चला गया, किंतु पार्थ ने चादर के एक भाग को दृढ़ता से पकड़ लिया था, इस कारण आर्तगान चादर में लिपटकर गिर पड़ा। पार्थ ने जब चादर अपनी ओर खींची तब आर्तगान भी उसी के साथ लिपटा हुआ चला आया। ये सब काम पल भर में होगये। आर्तगान इससे बहुत परेशान हो गया, लज्जित भी हुआ और कुछ क्रोध भी आया। परंतु चादर के हट जाने से उसने यह देख लिया कि जो सुनहरी पेटी पार्थ लगाये था, उसका केवल आगे का ही हिस्सा सोने का था और शेष भाग सब काँसा था। जब तक पार्थ चादर लपेटे रहा तब तक सब लोग यही जानते रहे कि पार्थ एक सोने की पेटी लगाये है। चादर के हटने पर पार्थ की डींग की सारी पोल खुल गई। दर्शकों पर यह पूरी तौर से ज़ाहिर हो गया कि पार्थ सर्दी न होने पर भी चादर क्यों ओढ़े हुये था। चादर सामने के सोने के भाग को प्रकट करके पीछे के दोष को छिपा रही थी।

इस अनहोनी घटना से पार्थ बहुत लज्जित हुआ। आर्तगान ही इस सारी घटना का कारण था, अतः इस अपमान का बदला उससे चुकाने के लिये अत्यंत क्रोध करके पार्थ ने कहा—"क्या तुम्हारे आँखें नहीं हैं जो तुम अंधे होकर दौड़ते हो ?"

आर्तगान सारी स्थिति को समझ गया। उसने भी मन में हँसकर उत्तर दिया—"महाशयजी! यदि मेरे आँखें न होतीं तो मैं आपकी पेटी

को कदापि न देख सकता ; परंतु मैं अपनी आँखों को धन्यवाद देता हूँ कि इनके द्वार से न ; को देख सका हूँ ।"

आर्तगान का यह व्यंग पार्थ के हृदय में बाण के समान लगा । उसने और भी बिगड़कर कहा—"तुम मूर्ख हो ! तुमको मुझे दंड देना पड़ेगा ?

"महाशय ! गर्म न पड़िये । जो कुछ कहिये वह सोच समझकर ।"

"ये बहुत तुले हुये शब्द हैं, तुम इससे अधिक के योग्य नहीं हो ।" यह कहकर पार्थ आर्तगान की ओर लपका । आर्तगान ने चिल्लाकर कहा—"ठहरिये, अभी नहीं ! मैं लौटकर आऊँ तब ।"

"तब, ठीक एक बजे लक्सम्बर्ग के निकट ।"

"स्वीकृत ! मैं इसी निश्चित समय पर आऊँगा ।" यह कहता हुआ आर्तगान लपक कर आगे बढ़ गया ।

वह दौड़ता हुआ कई गलियों में घूम आया, परंतु शत्रु का चिह्न तक न मिला । दौड़ते-दौड़ते जब थक गया तब धीरे-धीरे एक गली में घुसा । मार्ग में जो कोई उससे मिलता उससे अपने शत्रु के विषय में पूछता जाता ; परंतु किसी से भी पता न चला । इस व्यर्थ की दौड़ से वह परेशान हो गया । पसीना बहने लगा । थकावट से अधिक चलना कठिन मालूम होने लगा । परंतु अब वह निरुद्देश की भाँति सीधे चला जा रहा था । इस निरर्थक परिश्रम से वह स्वयं अपने ऊपर खीजने लगा । पिछली सब घटनायें उसके मस्तिष्क में चक्कर मारने लगीं । उसने सोचा कि आज का प्रातःकाल मेरे लिये कितना अशुभ हुआ है । कितनी आशायें लेकर वह त्रिबली के पास नौकरी के लिये गया । उसको विश्वास था कि पिता के पुराने संबंधों पर ध्यान करके त्रिबली उसको अपनी सेना में भर्त्ती कर लेगा, परंतु वहाँ से इतना सूखा उत्तर मिला कि उसकी सब आशाओं पर पानी पड़ गया । वहाँ से भाग

आने के अपने असभ्य ढंग पर उसे सबसे अधिक लज्जा आ रही थी। अवश्य ही त्रिबली ने उसको उजड्ड समझा होगा। इसके अतिरिक्त आज उसने दो ऐसी आपदायें स्वयं मोल ले ली थीं जिनसे उसका जीवित बच रहना नितांत असंभव था। अथास और पार्थ-जैसे अनुभवी और कुशल योद्धाओं के हाथों से जान बचाना कठिन ही नहीं वरन् असंभव है। उनमें से कोई भी आर्तगान-जैसे तीन को सहज ही में मार सकता है। पार्थ से आर्तगान इतना भयभीत नहीं था क्योंकि वह जानता था कि अथास के हाथों वह अवश्य मार डाला जायगा, तब फिर पार्थ से द्वंद्वयुद्ध का अवसर ही कहाँ मिलेगा। इन सब विचारों ने अपने प्रति इतनी ग्लानि और पश्चात्ताप पैदा कर दिया कि वह समझने लगा कि वास्तव में मैं मूर्ख हूँ, नगर के व्यवहारों से अपरिचित होने के कारण ये सब विपत्तियाँ मेरे ऊपर टूटी हैं। नवीन उत्साह और वीरता के अभिमान में आकर मैंने जो अनुचित काम किये उनके ये फल मुझको भोगने होंगे। अथास ने यह उचित ही कहा था कि मैं शिष्टाचार के नियमों से अनभिज्ञ हूँ। वास्तव में मनुष्य जितना ही विनयशील और विनम्र होगा सभ्य समाज के लिये वह उतना ही उपयुक्त मनुष्य है। विनय-शील होना डरपोकपन का चिह्न नहीं है वरन् वीरता और शौर्य के ये आवश्यक आभूषण हैं। इन विचारों में मग्न होते हुये उसका ध्यान सहसा अर्मस के व्यवहार पर गया। उसने देखा था कि अर्मस अपने व्यवहार में अत्यंत विनयी और नम्र था, उसके प्रत्येक आचार से शिष्टता झलकती थी। अतः आर्तगान ने अपने मन में यह निश्चित किया कि अब भविष्य में अर्मस को अपने व्यवहार का आदर्श बनाऊँगा।

इस प्रकार अपने कार्यों की मीमांसा करता हुआ आर्तगान एक होटल के निकट आ पहुँचा। वहाँ देखा कि सामने अर्मस दो तीन सैनिकों के साथ खड़ा हुआ बातचीत कर रहा है। आर्तगान ने अपने

नवनिर्मित आदमी के अनुसार कार्य आरंभ करने का यह सबसे उत्तम अवसर पाया।

वह अत्यंत नम्रता के साथ मुस्कराता हुआ इन लोगों के निकट पहुँचा। उसने अपने विचार से शिष्टाचार के नियम का उल्लंघन नहीं किया था। अपने आदर्श का पूर्ण अनुसरण करने के विचार से हर्षित होकर आर्तगान ने बहुत झुककर अर्मस को प्रणाम किया। अर्मस ने गर्दन के इशारे से इस अप्रत्याशित प्रणाम का उत्तर दिया। उसके मित्रों ने एक अपरिचित व्यक्ति के इस प्रकार सहसा आ जाने पर वार्त्तालाप को बंद कर दिया। आर्तगान इस अरुचिकर स्थिति को ताड़ गया, परंतु सभ्य समाज के शिष्ट व्यवहारों से अनभिज्ञ होने के कारण इस स्थिति से अलग होने का कोई उपाय न सोच सका। अपरिचित व्यक्तियों के सामने उपस्थित होने पर किस ढंग से वार्त्तालाप प्रारंभ करना होता है यह उसको न मालूम था। प्रणाम आदि करने के पश्चात् शीघ्र ही बिना बात-चीत किए लौट पड़ना और भी अधिक मूर्खता का परिचय देना था, अतः वह वार्तालाप प्रारंभ करने के लिये कोई उपयुक्त विषय ढूँढ़ने लगा। सहसा उसकी दृष्टि एक रूमाल पर गई जो पृथ्वी पर पड़ा था और जिस पर पैर रक्खे अर्मस खड़ा था। आर्तगान ने विचार किया कि संभवत: अर्मस का रूमाल जेब से गिर गया है जोकि बिना जाने अर्मस के पैर के नीचे पड़ा हुआ है। आर्तगान ने झुककर रूमाल उठा लिया, यद्यपि अर्मस ने अपना पैर उस पर से न हटाने के लिये बहुत प्रयत्न किया। आर्तगान ने रूमाल उठाकर अत्यंत सौजन्य के साथ अर्मस को देते हुए कहा—"महाशयजी, संभवतः भूल से यह रूमाल आपकी जेब से गिर पड़ा है, ऐसी मूल्यवान् वस्तु के खो जाने से आपको दुःख होता।" यथार्थ में वह रूमाल अर्मस की प्रेमिका का दिया हुआ एक प्रेमोपहार

था। मित्रों की दृष्टि में वह न पड़े, इस विचार से अर्मस ने स्वयं उसको मित्रों की दृष्टि बचाकर गिरा दिया था और अपने पैर से उसको दाबे हुये था। उस रूमाल पर एक कोने में प्रेम-चिह्न बना हुआ था। आर्तगान द्वारा अपने अभीष्ट पर पानी फिरते देखकर अर्मस विचित्र स्थिति में फँस गया। अर्मस इस मूर्खता पर अत्यंत क्रुद्ध हुआ। अत्यंत खिन्न मन से उसने आर्तगान के हाथ से वह रूमाल झपट कर छीन लिया।

रूमाल के चिह्नित अंश पर दृष्टि पड़ते ही एक मित्र ने विनोद-पूर्वक चिल्लाकर कहा—"ओहो अर्मस! तुम बड़े धूर्त हो। क्या अब भी इनकार कर सकते हो कि मिस ट्रेसी से तुम्हारा कोई संबंध नहीं है? नहीं-नहीं, अब नहीं छिप सकते। यह रूमाल उसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।"

अर्मस ने आर्तगान की ओर घूरकर बात बनाकर शीघ्र कहा—"मित्रवर! तुम धोखा खाते हो, यह रूमाल मेरा नहीं है। मैं यह नहीं समझ सका कि इन महाशय ने आप में से किसी को न देकर मुझे ही क्यों दिया। मेरा रूमाल मेरे पास यह मौजूद है?" यह कहकर अपनी जेब से उसने रूमाल निकाल कर दिखाया। आर्तगान अब सारे रहस्य को समझ गया और अपनी भूल पर मन ही मन पछताने लगा। उसको सबसे अधिक खेद इस बात पर हुआ कि जिस बात को वह सबसे अधिक शिष्टाचारनुमोदित समझता था वही उसका सबसे अधिक मूर्खता का कार्य सिद्ध हुआ। उसको अपनी अयोग्यता पर बहुत ही दुःख हुआ।

रूमाल के विषय को उठाकर थोड़ी देर और अर्मस की मित्र-मंडली में वार्तालाप चलता रहा। उसके पश्चात् सब लोग अपने-अपने रस्ते चले गये। आर्तगान अलग एक स्थान पर खड़ा हुआ बातें सुनता रहा। जब अर्मस चलने लगा तो आर्तगान ने विचार किया कि

अर्मंस से अपनी भूल के लिये क्षमा माँग लेना आवश्यक है। इसी विचार से वह अर्मंस के निकट गया और बहुत ही नम्रता के साथ कहा—"महाशय, आशा है कि आप मुझे इस भूल के लिये क्षमा करेंगे।" अर्मंस पहले ही से आर्तगान के व्यवहार पर रुष्ट था, उसको अपनी भड़क निकालने का अवसर मिल गया। उसने कहा—"महाशय युवक! आपने अत्यंत मूर्खता का काम आज किया है। क्या तुम—यद्यपि अनुमान से एक ग्राम निवासी प्रतीत होते हो इतना भी ज्ञान नहीं रखते कि कोई भी व्यक्ति बिना किसी विशेष कारण के रूमाल पर पैर रखकर नहीं खड़ा होता और न पेरिस की सड़कों पर रूमाल बिखेरे जाते हैं।"

इन शब्दों ने आर्तगान के दबे हुये स्वाभाविक औद्धत्य को उभार दिया और आवेश में आकर उत्तर दिया—"महाशय, अब आप मर्यादा का उल्लंघन कर रहे हैं। यह सच है कि मैं ग्राम से आया हूँ, परंतु नगर के निवासियों ही के शिष्टाचार का तिलक नहीं होता। जब मैंने आप से स्वयं क्षमा की प्रार्थना कर ली तब आपको इससे अधिक की इच्छा करने का कोई अधिकार नहीं है। अब और अधिक कुछ कहकर सौजन्य की सीमा को आप उत्क्रान्त कर रहे हैं।"

अर्मंस ने स्वाभाविक शांति के साथ कहा—"गर्म न पड़िये। मैंने युद्ध करने की इच्छा से यह सब बातें नहीं कहीं। मैं यथासाध्य युद्ध के अवसरों को बचाने का प्रयत्न करता हूँ। परंतु यह एक स्त्री के अनापमान का प्रश्न है। आपको क्या आवश्यकता थी जो आपने मुझे रूमाल उठाकर दिया।"

"आपने क्यों उसको इस प्रकार गिरा दिया था?"

"मैं यह कई बेर बतला चुका हूँ वह मेरी जेब से कहीं गिरा।"

"तब आपने कई बेर झूठ बोला है, क्योंकि मैंने स्वयं अपनी आँखों से उसको आपकी जेब से गिरते देखा है।"

"आह ! मुझको तुम्हें बतलाना पड़ेगा कि तुम को किस प्रकार बातें करनी चाहिये ।"

आर्तगान ने तलवार निकालकर कहा—"मैं इसके लिये उद्यत हूँ, आओ इसी स्थान पर निपटारा हो जावे ।"

अर्मस ने हँसते हुये उत्तर दिया—"मैं तुमको इस सार्वजनिक स्थान पर मारना नहीं चाहता । वहाँ मारूँगा जहाँ तुम्हारी मृत-देह का कोई संवाद भी न पा सके ।"

"मुझे यह भी स्वीकृत है यद्यपि मैं युद्ध को टालना नीति युक्त नहीं समझता ।"

"अय युवक ! युद्ध होगा । भय न कर । मैं दो बजे त्रिबली के होटल के निकट के स्थान को नियत करता हूँ यहाँ पर न आने के लिये शायद तुम कोई बहाना नहीं बता सकते ।"

"ख़ैर यही सही ! मैं ठीक समय पर मौजूद मिलूँगा ।"

५

आर्तंगान के स्वभाव में वीरता और शौर्य कूट-कूटकर भरा था। उसमें शक्ति थी, उत्साह था और अपूर्व साहस था। पेरिस जैसे अपरिचित नवीन स्थान में बिना किसी सहायक के जिस प्रकार वह निकल पड़ा था वैसी ही स्थिति में यदि कोई साधारण मनुष्य आ पड़ता, तो उसका विचलित होकर निराश हो जाना स्वाभाविक था। परंतु आर्तंगान संसार के कठिन पथ से अनभिज्ञ होने पर भी अपने साहस पर दृढ़ रहा। आत्म-निर्भरता ही उसकी जीवन दायिनी शक्ति थी। पेरिस में पैर रखते ही विपत्तियाँ उसपर सहसा आ टूटीं। त्रिबली के व्यवहार ने उसके हृदय से वह आशा निकाल दी कि वह कभी भी राज-दरबार में सैनिक की हैसियत पर पहुँच सकता है। जीविका का प्रश्न अब उसके सामने नहीं था। जीवन की समस्या अब उसके सामने रक्खी हुई थी। उसकी दृष्टि के सामने अथास, पार्थ और अर्मस के त्रिरूप में काल खड़ा हुआ था। आर्तंगान के हृदय में जीवन के लिये मोह का भाव नहीं था। वह मरने से डरना जानता ही न था। परंतु चाहता था कि इस बड़ी भारी विपत्ति पर वह यदि किसी उपाय से विजय पा ले, तो भविष्य

में उसको अपने जीवन का पथ अपने मन के अनुकूल सुधारने का अवसर मिले। क्षमा माँगकर इस विपत्ति को टाल देना उसके जीवन के लिये घोर अपमान की बात थी। और उसको इस बात का भी निश्चय था कि अथास के साथ द्वंद-युद्ध करके उसका जीतना अति कठिन ही नहीं, असंभव है। वह ऐसी स्थिति में फँस गया था कि जिससे छुटकारा पाने का कोई उपाय उसके मनमें नहीं आया। अपने साहस पर उसको विश्वास था। द्वंद-युद्ध से पीछे हटने का विचार तो उसके मन में आता ही न था। उसको अपने पिता के वह वचन जो उन्होंने उसके चलते समय उससे कहे थे कि—"बेटा, राजा, धर्माचार्य और त्रिबली को छोड़कर अन्य किसी की भी बात कभी मत सहना।" याद आ गई, इन्हीं शब्दों से उसको इस समय साहस मिल रहा था। अतः उसने सोचा कि जब मरना ही है, तब उस ढंग से मरूँ कि मेरे शत्रु भी अचंभित रह जायँ। ईश्वर को नमस्कार करके और अपने परम पूज्य पिता की अंतिम शिक्षा का ध्यान धरकर वह अथास द्वारा नियत युद्ध-स्थल की ओर चल दिया।

अथास बहुत पहले से अपने शत्रु की प्रतीक्षा कर रहा था। आर्तगान को आते हुये देखकर वह अत्यंत सौजन्य के साथ आगे बढ़ा और उसको सम्मान पूर्वक अभिवादन किया। आर्तगान ने भी अत्यंत नम्रता से उत्तर दिया। अथास ने कहा—"महाशय! मैंने अपने दो मित्रों को इस द्वंद-युद्ध में साक्षी-रूप में आमंत्रित किया है। परंतु मुझे आश्चर्य है कि वे अभी तक नहीं आए? मुझे आशा है कि वे शीघ्र ही आते होंगे! आपके मित्र कितनी देर में आवेंगे।"

आर्तगान ने उत्तर दिया—"मुझे खेद है कि मैं किसी मित्र को साक्षी-रूप नहीं बुला सकता। मैं कल ही इस नगर में आया हूँ। त्रिबली को छोड़कर यहाँ मैं किसी को जानता ही नहीं।"

अथास ने कुछ क्षण सोचकर कहा—"तो आप त्रिवली को छोड़ अन्य किसी को नहीं जानते।"

"हाँ! मैं केवल उन्हीं को जानता हूँ।"

अथास ने तब कुछ गंभीर होकर कहा—"परंतु ऐसी दशा में यदि तुम मेरे हाथ से मारे गये, तो सब यही कहेंगे कि तुमने एक बालक को मारा है।"

आर्तगान ने अत्यंत साहस और गर्व के साथ कहा—"इस बात पर अधिक ध्यान देने का संभवतः उनको अवसर न मिलेगा। आपका एक हाथ ज़ख़्मी है, आपको युद्ध करने में कुछ कठिनाई अवश्य अनुभव होगी।"

"अवश्य होगी। और तुमने उस हाथ को दुःखाकर और भी पीड़ा पहुँचा दी है। परंतु मैं बायें हाथ से भी दाहने ही हाथ की भाँति शस्त्र प्रहार कर सकता हूँ।"

आर्तगान ने अत्यंत संवेदना के साथ कहा—"महाशय! मेरे पास एक विचित्र गुणकारी मरहम है। मेरी माता ने उसे मुझको चलते समय ऐसे ही अवसरों के लिये दिया था। इसको मैं सदा अपने पास रखता हूँ। यदि आप आज्ञा दें, तो मैं आपके ज़ख़्म पर उसे लगा सकता हूँ। परंतु इसका असर तीन दिन में होगा। इन तीन दिन के पश्चात् आप स्वस्थ होकर इस युद्ध में प्रवृत हो सकते हैं। तब तक मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।"

अथास के हृदय में आर्तगान के इन सहानुभूति सूचक भावों ने बहुत प्रभाव डाला। वह मन ही मन आर्तगान के सौजन्य की प्रशंसा करने लगा। उसने कहा—"मैं इन उच्च भावों के लिये कृतज्ञ हूँ। परंतु यह असंभव है। वह प्राचीन समय व्यतीत हो गया जबकि द्वंद-युद्ध राज नियम-विहित थे। अब धर्माचार्य का ज़माना है। उसने इन युद्धों के विरुद्ध दृढ़ नियम बना दिये हैं। इस समय

द्वंद-युद्ध को टाल देने पर संभव है, धर्माचार्य के सैनिक इसको सदा के लिये रोक दें।"

आर्तगान ने उस ही सरलता और नम्रता के साथ उत्तर दिया— "ऐसी दशा में अवश्य हमको शीघ्रता करनी चाहिये। मैं यथा साध्य चेष्टा करूँगा कि युद्ध में आपको अधिक पीड़ा न पहुँचे।"

अथास आर्तगान के धैर्य तथा नम्रता पर अत्यंत हर्षित हुआ। उसने प्रेमयुक्त भाव से कहा—"वास्तव में तुम मित्र बनाने योग्य हो। तुम्हारी उदारता और वीरता मिश्रित सौजन्य ने मेरे हृदय पर प्रभाव डाला है। यदि इस युद्ध में हम दोनों जीवित बच गये, तो परस्पर मित्र बन कर रहेंगे।" कुछ रुक कर सामने की ओर देखकर कहा— "आह! इन लोगों ने कहाँ विलंब लगाई, अभी तक नहीं आये। कहीं धर्माचार्य के प्रहरी इधर से न आ निकलें कि रंग में भंग हो जावे।"

अथास ने यह वाक्य कहे ही थे कि सामने से एक व्यक्ति आता हुआ दिखाई पड़ा। अथास ने हर्षित होकर चिल्लाकर कहा—"लो, मेरा एक मित्र आ गया—और ओह! वह दूसरा भी आ रहा है।" वास्तव में उसका दूसरा मित्र भी आ रहा था।

अथास के मित्रों को जब आर्तगान ने देखा तो वह चौंक पड़ा, क्योंकि वे वेही पार्थ और अर्मस थे जिन से उसका द्वंद-युद्ध नियत हो चुका था। उसने अत्यंत आश्चर्य के साथ अथास से पूछा—"क्या यही आपके वे मित्र हैं जो इस द्वंद-युद्ध में आपकी ओर से साक्षी रहेंगे?"

अथास ने उत्तर दिया—"हाँ! यही वह मित्र हैं! तुम इस नगर में नवागंतुक हो, अतः यह नहीं जानते कि हम तीनों मित्र प्रत्येक कार्य में साथ रहते हैं। इस नगर का बच्चा-बच्चा यह बात जानता है।"

पार्थ और अर्मस जब निकट आ गये, तब वह स्वयं भी यह देखकर अत्यंत अचंभित हुए कि अथास का प्रतिद्वंदी वही युवक है जिसको

उन दोनों ने पृथक्-पृथक् अभी कुछ घंटे पूर्व ही द्वंद-युद्ध के लिये आह्वान किया है।

अथास ने आर्तगान की ओर संकेत करके अपने मित्रों से कहा—"यही वह युवक है जिससे मैं युद्ध करने वाला हूँ।"

पार्थ ने आश्चर्य से कहा—"मित्र अथास! मैं भी इस युवक से युद्ध करने वाला हूँ।"

आर्तगान ने शीघ्र ही उत्तर दिया—परंतु अभी नहीं। मेरा आपसे एक बजे का समय नियत है।"

अर्मस ने भी चकित होकर कहा—"मित्र! मेरे साथ भी इसका द्वंद-युद्ध निश्चित हो चुका है।"

आर्तगान ने कहा—"परंतु दो बजे के लग-भग।"

तीनों मित्र अचंभित थे कि इस युवक को किन कारणों से तीनों के साथ यह द्वंद-युद्ध निश्चित करने पड़े। आर्तगान के साहस पर सबको आश्चर्य हुआ और मन ही मन उसकी प्रशंसा करने लगे।

अर्मस ने पूछा—"अथास! तुम किस बात पर इस युद्ध में प्रवृत्त हुए?

अथास ने उत्तर दिया—"ठीक-ठीक मुझे कारण तो याद नहीं। परंतु इसने अकारण ही मेरे आहत स्थान को पीड़ा पहुँचाई थी। तुमने इसको क्यों ललकारा? पार्थ ने सिर खुजलाते हुये लज्जा से कहा—"मुझे भी कारण ठीक-ठीक याद नहीं है। परंतु हाँ, मेरा इससे वस्त्र के विषय में कुछ वादाविवाद हुआ था।"

अर्मस ने देखा कि मुझको भी कारण बताना होगा। ऐसा न हो कि कहीं आर्तगान भेद खोल दे इसीलिये आर्तगान को आँख के इशारे से मना करते हुये वह स्वयं ही बिना प्रश्न की प्रतीक्षा किये हुए बोल उठा—"मेरे युद्ध का कारण एक धार्मिक वादाविवाद है।"

आर्तगान की साहस प्रियता पर प्रसन्न होकर अथास स्वयं कह उठा—"युवक! तुम वास्तव में विचित्र हो।"

आर्तगान ने नम्रता के साथ कहा—"महाशयगण ! इस स्थान पर अब आप तीनों एकत्रित हैं। अतः मैं सबसे क्षमा की प्रार्थना करता हूँ। परंतु मेरे शब्दों को समझने में शीघ्रता न कीजिये। मैं अपने उन कार्यों के लिये क्षमा नहीं माँगता जिनके कारण मुझे आप सब लोगों से युद्ध में प्रवृत्त होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। क्षमा माँगने का कारण यह है कि मैं आप सब लोगों के साथ बचन पूरा नहीं कर सकता, क्योंकि मुझे मार डालने का अधिकार प्रथम अथास को है। मुझे खेद है कि मैं आप सब लोगों की युद्ध-प्रवृत्ति को शायद संतुष्ट न कर सकूँ।" यह कहकर आर्तगान ने तलवार निकाल ली और अथास को ललकार कर कहा—"आ जाओ।"

इस समय आर्तगान के चेहरे पर ख़ून उतर आया था युद्ध की स्मृति ने उसके हृदय में अपूर्वबल और साहस भर दिया। यह युद्ध उसके लिये जीवन और मरण का प्रश्न था इसी कारण उसने अपनी पूरी शक्ति को व्यवहार में लाने का निश्चय कर लिया था। शूर वीरता उसके चेहरे से टपक रही थी। उसका चेहरा इतना भीषण हो गया था कि अथास उसकी ललकार पर सहसा चौंक पड़ा। अथास ने देखा कि उसका शत्रु युवक अवश्य है, परंतु जैसा उसने सोचा था उसके बिलकुल विपरीत साधारण शक्ति का मनुष्य नहीं है। ऐसे विचित्र युवक से युद्ध करने का उसको अब तक कोई भी अवसर नहीं मिला था। उसकी दृष्टि में वह युवक उन तीनों से सफलता के साथ युद्ध कर सकता था। अतः वह भी सँभल गया और पैंतरा बदलकर तलवार खींचकर आर्तगान के सन्मुख आ गया।

दोनों की तलवारें हवा में चमक उठीं और दोनों परस्पर वार करने ही वाले थे कि इसी बीच में धर्माचार्य की सेना की टुकड़ी घूमती हुई उधर से आ निकली। पार्थ और अर्मस इसको दूर ही से देखकर

चिल्ला पड़े—"धर्माचार्य की सेना। जल्दी से अपनी-अपनी तलवारें म्यान में करलो।"

परंतु इस संकेत के अनुसार कार्य होने के पूर्व ही धर्माचार्य के सैनिकों ने द्वंद-युद्ध के प्रयास को देख लिया और दौड़कर निकट आ गये। जत्थे के नायक जोज़ेक ने अधिकार पूर्ण स्वर में चिल्लाकर कहा—"राजसैनिको! यहाँ छिपकर लड़ते हो? क़ानून की इस प्रकार अवहेलना।" धर्माचार्य की सेना का यह वही जत्था था जिनके हाथों अथास, पार्थ और अर्मस को कल ही अपमानित होना पड़ा था। अतः इसको देखकर प्रतिकार की इच्छा इन तीनों में बलवान हो गई। अथास ने आगे बढ़कर उत्तर दिया—"सैनिको! अपने रास्ते चले जाओ। हमारे इस झगड़े के बीच में न पड़ो। यदि तुम इस प्रकार युद्ध में प्रवृत्त होते, तो हम कदापि तुमको रोकने का साहस न करते।"

जोज़ेक ने अत्यंत गर्व के साथ कहा—"महाशय! मुझे खेद है कि ऐसा होना नितांत असम्भव है। कर्तव्य की आज्ञा हमको माननी होगी। तलवारें म्यान में करलो। तुम लोगों को मेरे साथ चलना होगा। यदि तुम आज्ञा भंग करोगे तो धर्माचार्य के विद्रोही समझे जाओगे।"

अथास ने गर्म होकर उत्तर दिया—"यह असंभव है। यदि तुमको साहस है, तो इस युवक का स्थान ग्रहण कर सकते हो। यह तलवार म्यान में तभी जायगी जब कि अपनी पूरी प्यास ख़ून से बुझा लेगी। इतना कहकर पार्थ और अर्मस को संबोधन करके कहा—"आओ! आजकल के अपमान का बदला इनसे ले लें। यह यद्यपि चार हैं, परंतु हम तीनों के जब तक शरीर में जीवन है, इनका मुक़ाबला करेंगे!"

अब आर्तगान को अपना कर्त्तव्य निश्चित करना था। उसके

सम्मुख यह समस्या उपस्थित थी कि इन दो प्रतिद्वंदी दलों में से वह किसका साथ दे। उदासीन रहकर दर्शक की भाँति खड़े रहना उसके स्वभाव के विरुद्ध था। उसके लिये यह वह क्षण थे जिनमें उसके भावी जीवन का निर्णय होता था। ऐसा समय मनुष्य के जीवन में एक बार अवश्य आता है। इस समय जो निर्णय किया जाता है उसी के अनुकूल मनुष्य के जीवन का भावी दृश्य तैयार होता है। आर्तगान के पास सोचने के लिये केवल कुछ क्षण थे एक ओर जोज़ेक अपने तीन सैनिकों सहित युद्ध में प्रवृत होने के लिये खड़ा था दूसरी ओर अथास, पार्थ और अर्मस तलवारें निकाले हुये शत्रुदल के प्रथम आक्रमण की प्रतीक्षा कर रहे थे। जोज़ेक को सहायता देने का अर्थ धर्माचार्य के पक्ष को जीवन पर्यंत के लिये स्वीकार कर लेना था और अथास इत्यादि राजसैनिकों की ओर होने से राजा के पक्ष को स्वीकृत करना था। ऐसी स्थिति में प्रत्युत्पन्नमति से आर्तगान ने कुछ क्षण सोचा और शीघ्र ही अपने पक्ष को निश्चित कर लिया। उसने जोज़ेक को ललकार कर कहा—"यदि तुम चार हो, तो हम भी तीन नहीं हैं तुम्हारे बराबर हैं।" और पैतरा बदलकर अथास के बराबर आकर खड़ा हो गया।

पार्थ ने आश्चर्य से चकित होकर कहा—"युवक! तुम राजसैनिक नहीं हो।"

आर्तगान ने उत्तर दिया—"यह ठीक है कि मैं राजसैनिक की वर्दी में नहीं हूँ। परंतु मेरा हृदय एक राजसैनिक का है। अपने हृदय की इस प्रेरणा को मैं अनुभव करता हूँ।"

जोज़ेक, जिसको आर्तगान का विपक्ष में जाना बहुत बुरा मालूम हुआ, हतोत्साहित करता हुआ बोला—"युवक! हट जा, अभी से अपनी माता की गोद ख़ाली न कर।"

आर्तगान ने तैश में आकर कहा—"यही निश्चित होना है कि आज किसकी माता ने वीर-प्रसव किया है।"

अथास युवक के सौजन्य और वीरता पर पहले ही मुग्ध हो चुका था। युवक के इस अद्भुत शौर्य तथा साहसिकता से अत्यंत प्रसन्न होकर उसने युवक की पीठ ठोंकते हुये कहा—"शावाश! तुम वास्तव में एक वीर पुरुष हो। तुम्हारी मित्रता पर हमको अभिमान होगा। तुम्हारा नाम क्या है? युवक।"

"आर्तगान" आर्तगान ने अत्यंत उल्लासित होकर कहा।

अथास ने तब चिल्लाकर कहा—"बस अब आज से अथास, पार्थ, अर्मस के नाम के साथ आर्तगान का नाम जोड़ा जायगा। बढ़ जाओ वीरो! और सँभल कर शत्रुओं पर आक्रमण कर दो।" इस शब्द ने दोनों दलों को युद्ध प्रारंभ करने के संकेत का काम किया। तलवारें चमाचम उठीं। प्रत्येक सैनिक ने अपने जोड़ के लिये शत्रु निश्चित कर लिया। जोज़ेक का क्रोध सबसे अधिक आर्तगान पर था। उसकी टोली ने अपनी अधिक संख्या के कारण ही कल इन राज-सैनिकों को परास्त किया था। परंतु आज वे भी संख्या में इनके बराबर हो गये थे और इसका कारण केवल आर्तगान ही था। उसका ध्यान था कि आर्तगान यदि उदासीन न रहा तो अपराधियों की श्रेणी में न जाकर उसके ही दल का साथ देगा। इस आशा ने उसकी विजयेच्छा को सफल बना दिया था। परंतु आर्तगान के विपक्ष में चले जाने से उसकी सारी आशा मिट्टी में मिल गई। अब विजय में भी उसको संदेह हो गया। इसी कारण उसका सारा क्रोध आर्तगान पर था। अपने सैनिकों को उत्साहित करके वह आगे बढ़ा और उसने आर्तगान को स्वयं दंड देना निश्चित किया।

जोज़ेक अनुभवी और बलिष्ट योद्धा था। उसके सामने आर्तगान केवल एक नौसिखिया था। जोज़ेक ने अपने जोड़ के लिये उसे ही निश्चित किया है यह जानकर भी आर्तगान ज़रा भी विचलित नहीं हुआ। अथास की तरफ़ होकर वह अपने से दुगने वीर से भिड़ जाने

को उद्यत था। उसका हृदय इस विचार से उन्मत्त हो रहा था कि आज वह अपने नवीन मित्रों को अपने रण-कौशल दिखला सकेगा। अपने शत्रु के आक्रमण को विफल करके वह भूखे शेर की भाँति उसपर टूट पड़ा। जोज़ेक भी दाँत मीच-मीच कर आर्तगान को विचलित करने का प्रयत्न करने लगा। कुछ ही क्षणों में उसको यह विदित हो गया कि उसको किसी साधारण युवक से नहीं लड़ना पड़ रहा है। उसका प्रत्येक वार ख़ाली जाता था। आर्तगान की तलवार के कई ज़ख़्म उसके लग चुके थे। क्रोध से पागल होकर उसने आर्तगान पर पुनः प्रहार करने शुरू किये। परंतु आर्तगान पैतरे बदल जाता था और अपने शत्रु के वार को ख़ाली कर देता था। आध घंटे तक बराबर युद्ध होता रहा। जोज़ेक थक चुका था, उसका चेहरा निष्प्रभ पड़ गया, साहस ने जवाब दे दिया, परंतु उसके शत्रु का उत्साह वैसा ही बना था। आर्तगान अभी तक अपने बचाव ही में लगा था। जब उसने देखा कि शत्रु का हाथ ढीला पड़ रहा है, उसने दुगने उत्साह के साथ जोज़ेक पर प्रहार प्रारंभ किया। आर्तगान की फुर्ती ने शत्रु को घबड़ा दिया। उसके पैर डगमगाये। आर्तगन की तलवार उसके शरीर में घुस गई। जोज़ेक की मृत-देह पृथ्वी पर गिर पड़ी। आर्तगान ने तब विजयोल्लास के साथ युद्धक्षेत्र में अपने अन्य मित्रों पर दृष्टि डाली। अर्मस अपने शत्रु को मार कर गिरा चुका था। पार्थ अपने विपक्षी को परास्त करने के लिये सिर तोड़ कर कोशिश कर रहा था। अथास जो पहले ही से आहत था नवीन ज़ख़्म खाने पर पीला पड़ता चला जाता था और उसका शत्रु उसपर ज़बरदस्त पड़ रहा था। आर्तगान ने यह देखा और फुर्ती से उसकी मदद पर आ गया। अथास का शत्रु आर्तगान पर भी झपटा। इसी बीच में अथास को कुछ क्षण का विश्राम मिल गया। आर्तगान ने अपने नवीन शत्रु को गिरा दिया और उसके सीने पर चढ़कर उसकी गर्दन को तलवार के

घाट उतारने ही वाला था कि अथास ने चिल्लाकर कहा—"मित्र! इसको मार न डालना। मुझे अपने अपमान का बदला इसी से चुकाना है। मृत्यु-दंड इसके लिये पर्याप्त न होगा। इसको निःशस्त्र करके अपने साथ विजय-चिह्नस्वरूप लेते चलेंगे। हमारे सेनापति के लिये यह अच्छी भेंट होगी।" इस बात पर आर्तगान भी प्रसन्न हुआ। शत्रु के अस्त्र-शस्त्र छीन लिये गये। पार्थ भी अपने शत्रु को पराजित करके अपने विजयी मित्रों के पास आ पहुँचा। तीनों मित्रों ने आर्तगान को गोद में उठा लिया और कृतज्ञता-सूचक शब्दों में उसकी बहुत प्रशंसा की। अपने पराजित शत्रुओं की तलवारों को लेकर मृतप्राय शत्रुओं को घसीटते हुये और विजय शब्दों से पेरिस की गलियों को गुंजायमान करते हुये संग्राम-स्थल से चारों मित्र अपने निवास-स्थान की ओर चल पड़े।

६

पिछले परिच्छेद की घटना का समाचार शीघ्र ही तमाम शहर में फैल गया। त्रिबली को जब इसकी सूचना मिली तब वह बहुत प्रसन्न हुआ। विजय के मद से उसका चेहरा प्रदीप्त हो उठा। ज़ाहिर में उसने अपने तीनों सैनिकों को बहुत भला-बुरा कहा, परंतु गुप्त रूप से उनको धन्यवाद देते हुए अत्यंत प्रोत्साहित किया। अपनी इस सफलता की सूचना देने के लिये वह शीघ्र राजा के पास महल में गया, परंतु वहाँ जाकर मालूम हुआ कि राजा और धर्माचार्य चौसर में डटे हैं। प्रहरी ने आकर कहा कि राजा इस समय नहीं मिल सकते। इससे त्रिबली चौंक गया। वह समझ गया कि धर्माचार्य ने राजा के कान भर दिये हैं। राजा धर्माचार्य को प्रकट में प्रसन्न करने के लिये ही कदाचित मेरी भेंट स्वीकृत नहीं कर रहे हैं। वह भी उचित अवसर न समझकर लौट आया। परंतु राजा को सविस्तर घटना समझा देने के लिये उसका हृदय तिलमिला रहा था। सायंकाल को वह फिर राजमहल पहुँचा। इस समय राजा ने उसे बुलवाया। दूर ही से त्रिबली को आते देखकर राजा ने सास्मित-बदन कहा—"त्रिबली इधर आओ! आज मैं तुमको ख़ूब फटकारूँगा।

धर्माचार्य आज तुम्हारी बहुत शिकायत कर रहा था। उसके क्रुद्ध चेहरे से तो मालूम होता था कि तुमको यदि वह कहीं अकेले पा जाये, तो तुम्हारे जीवन को समाप्त कर दे। आज उसका मन चौसर खेलने में नहीं लगा। मालूम होता है कि आज तुम्हारे सैनिकों ने कहीं नया उपद्रव किया है। न्याय के नाम पर मैं उन्हें साधारण दंड दूँगा।"

राजा के अभिप्राय को ताड़कर त्रिबली ने बहुत ही नम्रता से कहा—"परंतु महाराज! यदि सत्य घटना श्रीमान् को मालूम हो जावे, तो श्रीमान् मेरे सैनिकों को दोषी न पावेंगे। यथार्थ में मेरे सैनिक अत्यंत सरल प्रकृति के हैं। अपने सीधेपने ही के कारण शत्रुओं को उन्हें बदनाम करने का इतना अवसर मिलता है। वे केवल श्रीमान् के गौरव की रक्षा के लिये ही तलवार का प्रयोग करते हैं। धर्माचार्य के सैनिक इसी गौरव को नष्ट करने के निमित्त उनसे लड़ने का अवसर सदा ढूँढ़ा करते हैं। आक्रांत होने पर श्रीमान् के सैनिकों को विवश होकर श्रीमान् के गौरव की रक्षा के लिये आत्मरक्षा करनी ही पड़ती है।"

राजा ने संतोषप्रद भाव से कहा—"तब तुम यह कहना चाहते हो कि धर्माचार्य के सैनिक दोषी हैं, राज-सैनिक निर्दोष हैं। परतु इस बात का ध्यान रहे कि मेरा नाम न्यायी लुई है। मुझे न्याय की रक्षा के लिये स्वयं अपने सैनिकों को भी दंड देना पड़ेगा।"

त्रिबल ने शीघ्र ही उत्तर दिया—"महाराज! मैं भी न्याय की ही आशा करके श्रीमान् के पास आया हूँ। श्रीमान् की न्यायप्रियता के कारण अपने अनुकूल निर्णय का मुझे विश्वास है।" यह कहकर त्रिबली ने आदि से अंत तक घटना कह सुनाई। परंतु यह छिपा दिया कि उसके सैनिक आर्तगान से द्वंद-युद्ध करने गये थे। उसके स्थान में यह कहा कि मेरे तीन सैनिक अथास, पार्थ और अर्मस अपने

एक नवीन युवक मित्र के साथ ख़ूब हँस-खेल रहे थे कि सहसा जोज़ेक अपने अधीनस्थ कई सैनिकों को लेकर, उस स्थान पर आया और इस विचार से कि इनको कल की ही भाँति फिर अपमानित करें और गिरफ़्तार करके ले चलें, जिससे धर्माचार्य यह सुनकर प्रसन्न हों कि उसके सैनिकों ने राज-सैनिकों को परास्त कर दिया उनसे झगड़ा करने लगा, परंतु जोज़ेक के इस विचार को मेरे तीन सैनिकों के नवीन मित्र युवक की अद्भुत वीरता व पराक्रम ने विफल कर दिया। सत्य घटना छिपाकर धर्माचार्य ने सारा दोष हमारे ही सैनिकों के मत्थे मढ़कर श्रीमान् के कान फूँके हैं।

राजा बड़ी दिलचस्पी के साथ इस घटना को सुनता रहा। राज सैनिकों ने धर्माचार्य के सैनिकों पर पूर्ण विजय प्राप्त करके उसके हृदय में चोट पहुँचाई। यह सुनकर राजा अत्यंत प्रसन्न हुआ। यह देखकर उसको और भी प्रसन्नता हुई कि घटना का यह वर्णन क़ानून की दृष्टि से भी धर्माचार्य ही के सैनिकों को लांछित करता है, अतः धर्माचार्य की दृष्टि में अपनी न्यायप्रियता प्रमाणित करने के लिये भी उसको अपने प्रिय सैनिकों को दंड न देना होगा। इस विचार से उसका चेहरा चमक उठा उसने उल्लास-पूर्ण स्वर में कहा—"ओह! यह तो न्यायानुमोदित-पूर्ण विजय है। मैं तुम्हारे सैनिकों से बहुत प्रसन्न हूँ और वह युवक—वह युवक तो अद्भुत साहसी प्रतीत होता है, उसके साहस की कथा ने तो मुझे मुग्ध कर दिया। जोज़ेक मेरे साम्राज्य के प्रसिद्ध योद्धाओं में से है। उसको अपनी शक्ति का बड़ा गर्व था। मुझे इससे बड़ी प्रसन्नता हुई कि जोज़ेक को अपने मुक़ाबले का—मुक़ाबले ही का क्यों—उससे कहीं बढ़कर वीर मिल गया। परंतु तुम तो उसकी बहुत कम अवस्था बतलाते हो। एक अनुभव-शून्य साधारण युवक जोज़ेक जैसे वीर को गिरा दे—नहीं! वह युवक असाधारण व्यक्ति मालूम होता है। तुम उसको

अपने सैनिक-त्रय के साथ कल प्रातःकल मेरे सामने उपस्थित करो मैं उसको देखना चाहता हूँ। उसको पुरस्कार मिलना चाहिये।"

राजा के इन शब्दों से त्रिबली बहुत प्रसन्न हुआ। राजा को अपने अनुकूल कर लेने की उसकी आशा सफल हुई। उसने आर्तगान को अपनी सेना में भर्ती कर लेने के लिये आज्ञा प्राप्त करने का यह उचित अवसर समझा। त्रिबली ने कहा—"श्रीमान् यदि मुझे आज्ञा दें तो मैं यह प्रार्थना करना चाहता हूँ कि यह युवक राजसेना में भर्ती कर लेने योग्य है।" राजा ने उत्तर दिया—"अच्छा! तुम उसको मेरे सामने उपस्थित करो, उसी समय इसकी भी याद दिलाना।"

"जो आज्ञा, श्रीमान्" कहकर त्रिबली वहाँ से चल दिया, परंतु राजा ने उसको फिर बुलाया और कहा—"देखो! जब उस युवक को और अपने सैनिकों को मेरे पास लाओ तो महल के पिछले भाग से आना।"

त्रिबली ने राजा के अभिप्राय को समझकर कहा—"श्रीमान्, ऐसाही होगा। हमारा आना कोई भी नहीं जान सकेगा।" त्रिबली ने बहुत झुककर अभिवादन किया और वापस लौट आया।

तीनों सैनिकों तथा आर्तगान को यह सूचना मिल गई कि राजा ने उनके लिये भेंट स्वीकृत की है। आर्तगान इस हर्ष-संवाद को सुनकर फूला न समाया, उसके लिये यह समाचार उसकी भावी उन्नति की प्रथम सूचना थी। अपने सौभाग्य-सूर्य को इस प्रकार उदय होता देख उसे रोमांच हो आया। रात भर हर्ष के कारण नींद न आई। प्रातःकाल झटपट निवृत्त होकर वह शीघ्र ही अथास के घर पहुँचा। तीनों राज-सैनिक भी शीघ्र ही राजा के दर्शनों के लिये तैयार हो गये। परंतु राजा की भेंट का समय बारह बजे निश्चित हुआ था अतः चारों मित्रों ने टेनिस खेल कर समय बिताना तय किया। क्रीड़ा-

भूमि पर चारों मित्र आगये। परंतु आर्तगान इस खेल से अनभिज्ञ था। अथास आहत होने के कारण खेलने में असमर्थ था। दो-एक हाथ खेलने से जब उसे यह प्रतीत हुआ कि उसके आहत-स्थान से रक्त-स्राव फिर जारी हो गया है, वह खेल से हट गया। अब केवल पार्थ अर्मस ही एक दूसरे की ओर बाल फेंक-फेंककर दिल बहला रहे थे। आर्तगान क्रीड़ा-भूमि में निकट ही खड़ा हुआ इस दृश्य को देख रहा था। बहुत से दर्शक भी क्रीड़ा-भूमि के बाहर खड़े हुये देख रहे थे। सहसा एक गेंद पार्थ की फेंकी हुई आर्तगान की ओर इस प्रकार आई कि यदि वह उस स्थान से हट न जाता, तो उसका चेहरा ज़ख़्मी हो जाता। किंतु केवल चेहरे के ज़ख़्मी होने के भय से वह नहीं हटा। उसने यह सोचा कि ज़ख़्मी हो जाने से वह इस योग्य न रहेगा कि राजा से भेंट कर सके। मुख की आकृति बिगड़ जाने पर उसके सारे अरमान ही नष्ट हो जायँगे।

किंतु आर्तगान के इस कार्य ने निकट ही खड़े हुये धर्माचार्य के एक सैनिक से जो अपने साथियों की दुर्दशा सुनकर आर्तगान तथा राज सैनिकों पर ईर्पा की अग्नि से जल रहा था और जिसको अपनी शक्ति पर घमंड था यह कहलाने का अवसर दिया, "छी! क्या यह वही युवक है। जिसने कल जोज़ेक को परास्त किया था। एक गेंद के वार से जो डर सकता है वह क्या खाकर तलवार के प्रहार सहेगा?"

इस व्यक्ति का नाम वर्नज था। पेरिस भर में यह अपनी अदम्य शक्ति के लिये प्रसिद्ध था। धर्माचार्य इसपर बहुत गर्व करता था। इसकी बलिष्ठ भुजाओं के प्रहार से पेरिस के सब सैनिक डरते थे। वर्नज ने अपने साथियों के परास्त होने की बात जब से सुनी, तब से ही वह राजसैनिकों को दंड देने के लिये उत्सुक हो रहा था। वह आर्तगान और पार्थ आदि सैनिकत्रय को युद्ध के लिये ललकारने

का अवसर ढूँढ़ रहा था। उसको इच्छित अवसर मिल गया। उसका निशाना ठीक बैठा। आर्तंगान को यह गर्वोक्ति ज़हर-सी लगी। तीक्ष्ण दृष्टि से उसने वर्नंज की ओर देखा और तीव्र स्वर से कहा—"यदि तुमको कुछ गर्व है, तो आओ! तुम्हारी शक्ति की भी परीक्षा हो जाय?"

वर्नंज ने अपनी मूछों को ऐंठते हुये दृढ़ता के साथ कहा—"छोकड़े! मुझको जानता है, मैं कौन हूँ। तू विदेशी है, इसी कारण तूने वर्नंज का नाम नहीं सुना। जिसने सुना है उसकी रूह थर्रा उठती है। मेरी शक्ति की परीक्षा में तेरे जैसे तीन मृत्यु का द्वार देखेंगे।"

आर्तंगान इन तीव्र शब्दों को भला कब सहन कर सकता था। तलवार पर हाथ जा पहुँचा। द्वंद-युद्ध के लिये आँखें तरेर कर ललकारा और शीघ्र ही वर्नंज को हाथ का इशारा देकर क्रीड़ा-भूमि के बाहर चलने को कहा। दोनों वीर बाहर हो गये और एकांत स्थान पाकर पैंतरे बदल कर खड़े हो गये। आर्तंगान ने कहा—"तेरे वाक्यों का उत्तर यह तलवार देगी, सावधान! रक्षा कर!" यह कहते हुये वर्नंज पर तीक्ष्ण तलवार का प्रहार किया। वर्नंज भी आर्तंगान पर झपटा। दोनों में युद्ध होने लगा। आर्तंगान नवीन विजय से उत्साहित होकर बड़ी स्फूर्ति के साथ शत्रु के वारों को खाली देकर प्रहार कर रहा था। युद्ध की गर्मी ने उसमें और भी बल पैदा कर दिया। उसने वर्नंज के कंधे पर एक प्रहार किया; यदि पूर्ण रूप से कंधे पर बैठ जाता, तो वर्नंज वहीं समाप्त हो चुका था। इस प्रहार के पश्चात् वह कुछ पीछे हट गया और तलवार खींचकर खड़ा हो गया। वर्नंज अवसर पाकर भूखे सिंह की भाँति उसपर झपटा परंतु वही तलवार उसके पेट में घुसी चली गई। वर्नंज एक आह करके वहीं गिर पड़ा। आर्तंगान सिंहनाद करके उसके सीने पर चढ़ बैठा। इसी समय सहसा युद्ध की आवाज़ सुनकर वर्नंज के कुछ मित्र क्रीड़ा-स्थान से मौक़े पर आ गये। सबों ने

मिलकर आर्तगान पर हमला कर दिया, परंतु इन लोगों के पीछे ही अथास, पार्थ और अर्मस भी दौड़ पड़े और वर्नज के साथियों को घेर लिया। शत्रु चिल्ला उठे—"दौड़ो ! बचाओ !! दौड़ो !!!" निकट ही त्रिमाली नामक प्रसिद्ध ड्यूक का होटल था। उसके अंदर के सब लोग इन आवाज़ों को सुन दौड़ पड़े और सहायता के लिये आ गये। अथास, अर्मस, पार्थ और आर्तगान ने जब अपने को इतने शत्रुओं से घिरा देखा, तो उनके भी ख़ून चढ़ आया और अपने शत्रुओं पर तलवारें ले-लेकर पिल पड़े। आर्तगान ने इस फुर्ती से हमला करना प्रारंभ कर दिया कि विपक्षी चकित रह गये। थोड़ी देर तक डटे रहे परंतु आर्तगान के पराक्रम को देखकर उनके छक्के छूट गये। बहुत से मरे, शेष भागकर होटल में घुस गये और भीतर से फाटक बंद कर दिया। वर्नज को उसके साथी अवसर पाकर पहले ही उठा ले गये थे। आर्तगान और उसके तीन साथियों ने फाटक तक अपने शत्रुओं का पीछा किया। वे फाटक पर बहुत देर तक पत्थरों की बौछार करते रहे। जब देखा कि फाटक के तोड़ने में अधिक समय लग जायगा, कहीं ऐसा न हो ; राजा की भेंट का समय ही निकल जावे, तब लौट आये।

त्रिबली को इस घटना का समाचार मिल चुका था। अपने सैनिकों को इस बार भी विजयी पाकर वह हर्ष से उन्मत्त हो गया। सैनिकों की पीठ ठोंकी और उनकी बहुत प्रशंसा की और कहा—"शीघ्र ही राजमहल चले जाओ। देर न करो। मैं राजा को इसके पहले ही इस घटना की सूचना दे देना चाहता हूँ, ताकि धर्माचार्य राजा के कान न भर सके। राजा से यही बतलाया जायगा कि आज की घटना कल की ही घटना का एक आवश्यक परिणाम है।" यह कहकर त्रिबली चारों को अपने साथ लेकर राजमहल चल दिया, परंतु वहाँ पहुँचकर मालूम हुआ कि राजा आज प्रातःकाल ही शिकार के लिये निकल गये हैं और अभी तक लौटकर नहीं आये। राजा के साथ

धर्माचार्य भी गये हैं। इस समाचार से त्रिबली चिंतित हुआ। राजमहल से वापस आकर गंभीर विचार में पड़ गया। उसने समझ लिया कि धर्माचार्य ने राजा को इस घटना के विषय में असत्य बातें मिलाकर सुना दी होंगी। राजा की प्रवृत्ति उसके विपक्ष में अवश्य हो गई होगी। राजा ने सोचा होगा कि ये सैनिक बड़े उपद्रवी हैं। अभी कल ही झगड़ा हो चुका है, आज फिर उपद्रव कर बैठे। ऐसी दशा में राजा मेरी बात को असत्य समझकर विश्वास न करेगा। इन्हीं विचारों से चिंतित होकर वह थोड़ी देर सोचता रहा। सहसा उसको एक उपाय सूझा। उसने शीघ्र ही त्रिमाली के नाम एक पत्र लिखा और नौकर के हाथ भेज दिया। त्रिमाली राजघराने का प्रसिद्ध प्रभावशाली ड्यूक था। नगर में उसका बहुत मान था। उसके विचार मध्य श्रेणी के थे। न वह राजा ही का पूरा भक्त था और न धर्माचार्य ही पर उसको कुछ अनुराग था। उसके विचार स्वतंत्र थे। आज की घटना ने उसके हृदय में राजसैनिकों के प्रति रोष उत्पन्न कर दिया था। धर्माचार्य के सैनिकों ने ड्यूक के रोष को उभारने में कोई कसर न रक्खी थी। त्रिबली ने ड्यूक को लिखा था कि आप धर्माचार्य के सैनिकों को अपने होटल से निकाल दीजिये। उन्होंने निरुद्देश्य हमारे सैनिकों पर आक्रमण किया है। इसमें प्रधान दोषी वर्नज है। घटना की सत्यता का अनुसंधान करके अपने सेवकों को भी पर्याप्त भर्त्सना दीजिये ताकि वे ऐसे अनुचित कार्य में धर्माचार्य के सैनिकों की सहायता भविष्य में न करें।

पत्र को पढ़कर त्रिमाली का रोष बढ़ गया उसने उत्तर में लिखा कि—"उलटा चोर कोतवाल को डाटे, जनाब, जो बात मुझको कहनी चाहिये थी सो उलटी आप मुझे सुना रहे हैं। आपके सैनिकों ने स्वयं बिना किसी उचित कारण के मेरे फाटक को घेर लिया, मेरे संबंधी वर्नज को आहत किया और मेरे सेवकों पर आक्रमण किया। आपको

स्वयं मुझसे क्षमा माँगनी चाहिये।" इस उत्तर को पाकर त्रिबली स्वयं ड्यूक के पास आया और सादर अभिवादन के बाद कहा—"आप सत्य घटना से अपरिचित हैं। यदि असली हाल आप जानना चाहते हैं, तो चलिये वर्नज ही से चलकर पूछलें।" ड्यूक इस बात पर राज़ी हो गया। दोनों वर्नज के पास गये।

त्रिबली ने यह चाल बहुत सोच-समझ कर खेली थी। उसको दृढ़ विश्वास था कि वर्नज मृत्यु-शय्या पर पड़ा है। परलोक के डर से वह किसी बात को छिपायेगा नहीं। जब त्रिमाली स्वयं सत्य घटना से परिचित हो जायेंगे, तो राजा के पास साक्षी स्वरूप उपस्थित किये जाने पर वह सच-सच कह देंगे। घटना उन्हीं के एक संबंधी के संबंध की है, यह जान कर राजा को त्रिमाली के बतलाये हुये वर्णन पर विश्वास करना होगा। और इस प्रकार इस बार भी राजा के सामने धर्माचार्य झूठा प्रमाणित होगा। हुआ भी ठीक ऐसा ही। वर्नज अपनी मृत्यु-शय्या पर पड़ा हुआ था। उसने ड्यूक को सच-सच घटना बतला दी और अपना अपराध स्वीकार कर लिया। ड्यूक का संशय मिट गया। वह त्रिबली की सत्यता पर बहुत प्रसन्न हुआ। रोष के स्थान में त्रिबली के प्रति उसके हृदय में आदर व प्रेम के भाव उत्पन्न हो गये।

इस कृत्य को समाप्त करके त्रिबली सायंकाल के समय आर्तगान व अपने सैनिकों को लेकर राजमहल पहुँचा। अपने साथियों को बाहरी कमरे में बिठाकर वह राजा के विश्रामगृह की ओर गया। द्वारपाल ने राजा का आदेश पाकर उसको राजा के सम्मुख उपस्थित किया। त्रिबली ने दृष्टिपात से ही यह जान लिया कि राजा की निगाह आज कुछ टेढ़ी है। वह सहम कर शांति से खड़ा हो गया। राजा ने तीव्र निगाह से त्रिबली की ओर देखा और कहा—"क्यों! क्या इसी प्रकार तुम अपने सैनिकों पर शासन करते हो? वे स्वेच्छा पूर्वक नगर में विप्लव मचावें, किसी निरपराधी को मार डालें, और बेचारे त्रिमाली के घर

में आग लगादें ! क्या वे निरीह प्रजा को सताने के लिये ही नियुक्त किये गये हैं ? राजदंड क्या उनके हृदय को भयभीत नहीं करता ? परंतु, नहीं ! संभवतः ये सब बातें केवल मेरा विचारमात्र ही प्रमाणित हों, क्योंकि मालूम होता है कि तुम यह कहने आये हो कि तुम्हारे सैनिक निर्दोष हैं और जो कुछ उन्होंने किया है वह आत्म-रक्षा के भाव से ही किया है और उनका कार्य न्यायानुमोदित है।" त्रिबली ने शांतिपूर्वक राजा के कथन को सुनकर कहा—"श्रीमान् ने जो घटना का विवरण दिया है वह सत्यता से बहुत दूर है। मैं न्याय की ही भिक्षा श्रीमान् से माँगने आया हूँ। मैं श्रीमान् से यह पूछने की धृष्टता करूँगा कि यह कथा श्रीमान् को किसके द्वारा प्राप्त हुई ?"

"यह समाचार उस व्यक्ति के अतिरिक्त और किससे मिल सकता है, जो सर्वदर्शी है और जो उस समय भी जागता रहता है जबकि मैं सोता हूँ ?"

"श्रीमान् का अभिप्राय कदाचित ईश्वर से है ; क्योंकि यह शक्ति ईश्वर के अतिरिक्त और किसी में संभव नहीं।"

"नहीं ! नहीं ! मेरा संकेत धर्माचार्य की ओर है। राज्य का वही आधार है और वही राज्य का शुभचिंतक है। वह पवित्र है और कभी भूल नहीं कर सकता।"

"नहीं ! श्रीमान् ! पवित्र तथा अभ्रांत होने की तो पोप के अतिरिक्त और किसी में क्षमता है ही नहीं।"

"तब क्या तुम यह कहना चाहते हो कि धर्माचार्य मुझे धोखा देता है और वह मेरा अशुभचिंतक है ? यदि तुम्हारा यही अभिप्राय है, तो स्पष्ट कहो ?"

"नहीं ! मेरा अभिप्राय इस समय केवल इतना ही है कि वह अपनी आत्मा को धोखा दे रहा है। उसको सूचना ग़लत मिली है। मेरे सैनिकों के विरुद्ध उसका अभियोग झूठा है। उसको जिसने

भी यह समाचार दिया है उसने घटना की सत्यता को जानकर छिपाया है ।"

"ओह ! ड्यूक त्रिमाली ने स्वयं धर्माचार्य से यह हाल कहा है। क्या तुम उसको भी झूठा क़रार देते हो ?"

"श्रीमान् ! मैं यह भी कह सकता हूँ कि त्रिमाली का संबंधी ही आहत हुआ है, अतः यह असंभव नहीं है कि वह सदा सत्य ही कहे ; परंतु नहीं ! मैं अपना निर्णय उन्हीं के मत पर छोड़ता हूँ। मुझे विश्वास है कि वह झूठ नहीं बोलेंगे। श्रीमान् स्वयं यहाँ बुलाकर उनसे पूछ लें ?"

राजा भी इस बात पर सहमत हो गया। शीघ्र ही त्रिमाली उपस्थित किये गये। उन्होंने सत्य घटना आदि से अंत तक कह सुनाई। त्रिमाली को विदा करके राजा ने अत्यंत प्रसन्नता के साथ कहा—"त्रिबली ! तुम्हारी सचाई पर मैं बहुत प्रसन्न हूँ। मुझको यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ कि धर्माचार्य द्वारा बताया हुआ समाचार असत्य निकला। तुम्हारे सैनिकों की न्यायप्रियता तथा सच्चे शौर्य ने मेरे ऊपर अमिट प्रभाव डाला है। आर्तगान की अद्भुत वीरता पर मैं मुग्ध हूँ। क्या तुम उसको अपने साथ नहीं लाये ?"

त्रिबली का हृदय आनंद से भर गया। उसने कहा—"श्रीमान् इसी कारण 'न्यायप्रिय' कहलाते हैं। श्रीमान् के न्याय पर मुझे अचल विश्वास है। वह युवक और हमारे सैनिक भी हाज़िर हैं। श्रीमान् के आदेश का पालन किया गया है।"

तीनों राज-सैनिकों ने बहुत सम्मान के साथ प्रवेश किया। आर्तगान भी इनके पीछे बहुत शांति के साथ आकर खड़ा हो गया। राजा के सम्मुख उपस्थित होने का यह उसका पहला ही अवसर था। एक ग्रामीण युवक के हृदय में ऐसे समय जो भाव उठ सकते हैं उन सबका तुमुल-युद्ध उसके हृदय में मच रहा था। आह्लाद और भय के

मिश्रण ने उसकी विचित्र अवस्था कर दी थी। राजा के सम्मुख उपस्थित होकर उससे वार्तालाप करते समय किन-किन नियमों तथा रीतियों का पालन करना पड़ता है, इससे वह अनभिज्ञ था। उसको भय था कि कहीं उससे अनजान में यह मर्यादा अतिक्रांत न हो जाये, इसी कारण वह अपने साथियों का अनुकरण कर रहा था।

राजा ने राज-सैनिकों को एक निगाह से नीचे से ऊपर तक देखा, तब हर्ष और आश्चय के साथ कहा—"आश्चर्य है, दो दिनों में इन सैनिकों ने धर्माचार्य के दो प्रसिद्ध रण-कुशल महारथियों को किस प्रकार मार लिया? मुझे स्वयं इसपर आश्चर्य है! प्रकट में यह इन सैनिकों के साहस के बाहर की बात है? और वह। वह छिपकर कौन खड़ा हुआ है?"

आर्तगान समझ गया कि संकेत मेरी ओर है। वह बहुत ही संकोच के साथ राजा के सम्मुख आया और बहुत ही झुककर अभिवादन किया। राजा ने देखते ही कहा—"ओह! यह तो निरा बच्चा है। त्रिवली तुमने मुझसे कहा था कि यह एक युवा पुरुष है, परंतु नहीं! यह तो अभी छोटा बालक है! ओह! क्या इसी ने वर्नज और जोज़ेक का मान-मर्दन किया है? तब वास्तव में, बालक! तुम असाधारण बालक हो! तुम्हारे अद्भुत कार्य्यों से मैं अतीव प्रसन्न हूँ। तुम्हारी वीरता की कथा को मैं फिर सुनना चाहता हूँ!"

आर्तगान ने दृढ़ता और स्वाभाविक निर्भीकता के साथ दोनों दिनों की घटनायें आद्योपांत कह सुनाईं।

राजा ने कहा—"त्रिवली! इस युवक को प्रतिष्ठा के साथ रखना। यह रत्न है, जिसके खो जाने से तुमको दुःख होगा। क्या अब भी तुमने अपने अपमान का बदला नहीं ले लिया! बिचारा धर्माचार्य क्यों न तुम्हारा विरोध करे। ओफ़! जोज़ेक और वर्नज के अपमान ने उसके हृदय में गहरी चोट पहुँचाई है?"

त्रिबली ने आनंद से पूर्ण होकर शिर झुकाकर अभिवादन किया।

राजा ने आर्तगान को अपने निकट बुलाया, उसकी पीठ ठोकी और बहुत से रत्न उसके हाथ में भर दिये और कहा—"वीर आर्तगान जाओ! मैं चाहता हूँ कि में सदा तुम्हारी वीरता को इसी प्रकार पुरस्कृत करता रहूँ।"

आनंद से गद्गद होकर आर्तगान ने झुककर राजा के चरण चूमे। चारों मित्र हर्ष से ओत-प्रोत होकर राजमहल से चल दिये और मार्ग में पुरस्कृत रत्नों को बाँटने लगे।

७

इन घटनाओं ने आर्तगान को तीनों राज-सैनिकों का परम मित्र बना दिया। तीन के थान में अब वे चार हो गये। प्रगाढ़ मैत्री ने चारों के हृदयों को एक सूत्र में पिरो दिया। सब एक दूसरे के साहस पर मुग्ध थे। अद्भुत पराक्रम और अपूर्व शौर्य सब में होने के कारण वे नवीन उत्साहवर्धक कार्यों में समान अभिरुचि प्रदर्शित करते थे। आर्तगान इस मंडली में प्रविष्ट होकर परम सुखी था। अपने प्रयत्नों में आशातीत सफलता प्राप्त होते देखकर उसका सरल हृदय आनंद की तीव्र धारा में प्रवाहित होने लगता था।

चारों मित्र एक से ही कार्य में प्रवृत्त होते, एक ही खेल से दिल बहलाते और अधिकतर एक ही साथ रहते थे। उन चारों की जीवन-धारा एक ही-सी थी। परंतु उनमें से प्रत्येक में कुछ पृथक्-पृथक् विशेषताएँ थीं। उनके चरित्र की विशेषताएँ मंडली के सौहार्द-भाव को और भी घनिष्ठ बनाये हुये थीं। एक दूसरे के विशिष्ट गुणों का परस्पर सब आदर करते थे। एक दूसरे के जीवन-ढंग पर सबको विशेष अभिरुचि थी।

राजा द्वारा आर्तगान के विशेष रूप से सम्मानित होने पर तीनों मित्रों को अत्यंत आनंद हुआ। उनके हृदयों में ईर्षा-द्वेष की गंध तक न आई। इस सम्मान को उन्होंने अपना ही गौरव समझा और ऐसे राज सम्मानित मित्र को अपनी मंडली में पाकर अपने भाग्य को सराहा। राजमहल से लौटकर ही आर्तगान को उसके मित्रों ने उसके लिये एक घर किराये पर ले लिया और पार्थ ने अपने दो सेवकों में से एक सेवक आर्तगान की सेवा में लगा दिया। घर के दुमंज़िले भाग में आर्तगान को दो अच्छे कमरे मिल गये। गृह-स्वामिनी एक बहुत ही सुशीला और हँसमुख रमणी थी। आर्तगान को अपना निवासगृह बहुत पसंद आया। जो सेवक पार्थ की कृपा से आर्तगान को मिला था; उसका स्वभाव भी सुंदर था। उसका नाम पार्थ ने प्लेंचेट रक्खा था। प्लेंचेट किसी अज्ञात कारण से जिसका पता आर्तगान को कभी भी न लग सका एक तालाब में डूबकर मुक्ति लाभ करने का प्रयत्न कर रहा था। कुछ लोग कहते थे कि भूख के कारण वह ऐसा अभ्यास कर रहा था। पार्थ ने प्लेंचेट की इस परीक्षा में उत्तीर्ण होने के प्रयास में बाधा डाल दी। घर लाकर उसे संसार-प्रवेश करने पर बाध्य किया। परंतु उसके स्वाभाविक अधिपत्य और उसकी इच्छा-शक्ति के अपूर्व कौशल को देखकर पार्थ को अपनी भूल मालूम हुई और अब पार्थ ने इस भूल की निवृत्ति उसको आर्तगान की संरक्षकता में रखकर की; तब उसके हृदय से एक बोझ-सा टल गया। आर्तगान ने अपने सेवक के स्वभाव को शीघ्र ही ताड़ लिया। उसको उपयोगी बनाने के प्रयत्न में आर्तगान को प्रारंभ में तो कुछ कठिनाई अवश्य हुई, परंतु मुद्रा की मधुर झंकार ने उसको आर्तगान का भक्त बना दिया।

अथास के सेवक का नाम ग्रीमांड था। लोगों ने ग्रीमांड को हँसते हुये कभी नहीं देखा। उसके हृदय की आनंद धारा मुस्कराहट

की मर्यादा के ही अंदर रहती थी। बहुत कम बोलता शब्दों की अपेक्षा सांकेतिक भाषा में बोलना उसे अधिक पसंद था। स्वामी भी ऐसे नौकर को पाकर बहुत प्रसन्न था। अपने स्वभाव का ही प्रतिबिंब अपने सेवक में देखकर अदृष्टि की करतूत पर अथास को कभी-कभी हँसी आ जाती थी। अथास यद्यपि यथार्थ में ३० वर्ष का भी न था, परंतु त्याग और विरक्ति विषयक विचारों में उसकी समता अन्य मित्र न कर सकते थे। संसार की अनुभवपूर्ण बातें और प्रत्येक विषय पर विवेक पूर्ण समालोचना ये उसके नवीन मस्तिष्क में न मालूम कहाँ से भर गई थीं। परंतु लोगों ने स्त्री के संबंध में उसको कभी बोलते हुये नहीं सुना। उसके मित्रों ने जब कभी भी इस विषय को छेड़ा तभी सदा वह वहाँ से खिसक जाता था। स्त्री के संबंध में इस घृणा का कारण कभी-कभी लोग यह बतलाते थे कि अथास भग्न-हृदय है। किसी प्रेमिका ने उसके प्रेम को अस्वीकार किया है।

अथास कुलीन और सुंदर युवा था, परंतु अभी तक अविवाहित था। उसके शील और स्वभाव को देखकर लोगों की यह भी धारणा थी कि अथास अवश्य किसी प्रसिद्ध कुलीन घराने का युवक है।

पार्थ का स्वभाव अथास से बिलकुल विपरीत था। पार्थ का अधिक समय अपने शरीर को सवाँरने में ही लग जाता था। चमकीले और भड़कदार वस्त्रों पर, तो वह जान देता था। वह सदा यही देखा करता कि उसके किस वस्त्र पर लोगों की निगाह अधिक पड़ती है। बातचीत करने में लोग उसकी समता नहीं कर सकते थे। अधिक देर तक ख़ूब ज़ोर से बोलने को वह एक गुण समझता था। लोगों ने पार्थ को प्रत्येक विषय पर बोलते हुये सुना था। आत्म-प्रशंसा उसकी दृष्टि में अवगुण न था। रसिकता और भावुकता, तो मानो उसी के भाग में पड़ी थी। सौंदर्य और प्रेम इन दो शब्दों पर, तो वह घंटों

वार्तालाप कर सकता था। सुंदर मणियों की कथायें, प्रेमरता कन्याओं के रोचक वर्णन उसके मस्तिष्क में असंख्यों भरे थे। एक विदेशी नवयुवती के वर्णन को वह जिस सरसता और अभिरुचि के साथ सुनाता था उतनी रुचि उसके मित्रों ने अन्य कथाओं में उसकी नहीं देखी। मित्रों का अनुमान था कि पार्थ की यही प्रेमिका है। पार्थ के दिये हुये वर्णन के अनुसार स्पेन देश की एक रईस कन्या बहुत दिनों से पेरिस में ठहरी भी हुई थी। पार्थ को किसी भी मित्र ने कभी उसके घर में रात को उसे नहीं पाया। इसी के आधार पर उनका विचार था कि पार्थ इसी प्रेमिका के पास जाया करता है।

पार्थ का नौकर मास्कटन भी छैला था। उसकी रँगीली तबियत को देखकर पार्थ अपने मित्रों से यह कहा करता था कि हमारा नौकर अनुकरण करने की विद्या में बड़ा कुशल है। इस अनुकरण प्रवृत्ति का विशेष कारण यह बतलाया जाता है कि मास्कटन जब पार्थ के यहाँ सेवा-कार्य में प्रविष्ट हुआ था उसने पहले ही अपने स्वामी से दो शर्तें कर ली थीं। पहली यह कि उम्दा खाना और बढ़िया वस्त्रों के अतिरिक्त और कभी कुछ न माँगेगा। दूसरी यह कि दो घंटे प्रति दिन वह अपनी इच्छानुसार छुट्टी मनायेगा। छुट्टी के इन घंटों में प्रति दिन वह कहाँ जाता था इसका पता किसी को न लग सका।

अर्मस एक धार्मिक व्यक्ति था। दया और सरल हृदयता ये उसके चरित्र के दो विशिष्ट गुण थे। अवकाशकाल में वह सदा धार्मिक ग्रंथों का अवलोकन करता था। अपने मित्रों से वार्तालाप में वह कहा करता था कि वह चर्च का पादरी होनेवाला है। राजसैनिक, तो वह केवल अपने मित्रों के आग्रह से ही कुछ समय के लिये हो गया है। अन्यथा इसमें उसकी विशेष अभिरुचि नहीं है। अर्मस का सेवक बैरीकान भी धार्मिक ही प्रवृत्ति का था। जब अर्मस कहीं घर से धर्म-पुस्तक को पढ़ते छोड़कर किसी कार्यवश चला जाता था, तो बैरीकान

महाशय अपने स्वामी के ही आसन पर जमकर अत्यंत गंभीरता के साथ उसी पुस्तक का अध्ययन करते थे।

यद्यपि चारों मित्रों के चरित्र भिन्न थे; तथापि उनके व्यवहारों में इस भिन्नता का कुछ भी प्रभाव न था। उनके आमोद-प्रमोद के मार्गों में कुछ भी भिन्नता न थी। वे एक ही खेल में संलग्न होते, एक ही काम में मन लगाते और एक ही साधन का अवलंबन करते। पेरिस नगर के एक ही मोहल्ले में थोड़ी-थोड़ी दूर पर चारों पृथक् निवास-स्थान में रहते थे। उनका वर्तमान जीवन सबके लिये प्रत्यक्ष था, परंतु उनके अतीत जीवन पर एक ऐसा रहस्यमय पर्दा पड़ा हुआ था कि जिसको हटाने का न तो किसी ने कभी प्रयत्न ही किया और न कभी किसी ने इच्छा ही की हमारे युवक आर्तगान के लिये यह एक पहेली थी। उसने प्रत्येक मित्र से पृथक्-पृथक् एक दूसरे के विषय में बहुत पूछताछ की, परंतु वह इसी निष्कर्ष पर पहुँचे कि उसके मित्र एक दूसरे के विषय में वास्तव में नितांत अनभिज्ञ हैं। अपनी उत्सुकता को शांत करने का जब कोई मार्ग न मिला, तब वह भी शांत हो गया।

८

इन चारों मित्रों की विचित्र मंडली बहुत शीघ्र ही नगर भर में अपने अद्वितीय पराक्रम और साहस के लिये प्रसिद्ध हो गई। तीनों मित्र राजसैनिक होने के कारण पहले ही से प्रभावशाली थे। त्रिबली के कहने-सुनने से आर्तगान भी राजकृपा द्वारा एक दूसरी सेना में भरती कर लिया गया था। अतः राजदरबार में उसका भी पर्याप्त मान होने लगा था। किंतु त्रिबली के अधीन सैनिक राजा के विशेष प्रिय-पात्र थे। इसका कारण यह था। कि भीषण परिस्थियों में तथा कठिन अवसरों पर ही इस सेना से काम लिया जाता था। राजा के अंग-रक्षक होने का गौरव इसी सेना को प्राप्त था। राजा को भी इसी सेना की राजभक्ति पर विश्वास था। शत्रुओं से भरे हुए दर्बार में राजा का पद इतना संकटमय हो गया था कि इस प्रकार की सेना के विना राजा की रक्षा असंभव थी, राज-महल की रक्षा का प्रबंध इसी सेना के हाथ में था। इसी कारण इस सेना में वही व्यक्ति भरती किये जाते थे, जो अपने अद्वितीय पराक्रम, साहस और अविचलित राजभक्ति का प्रदर्शन कठिन परिस्थितियों में भी कर चुके थे। राजा स्वयं इनका निर्वाचन करता था। इसी कारण

इनके स्वत्त्व और अधिकार भी बढ़े हुए थे। इस सेना में भरती होना परम गौरव का विषय समझा जाता था। बड़े-बड़े सैनिक इस पद के लिये लालायित रहते थे। वीर आर्तगान की भी इच्छा राजसैनिक होने की थी। राजा उससे संतुष्ट भी था। सेना-नायक त्रिवली का तो आर्तगान पर विशेष अनुराग था। परंतु वह अभी अनुभव-हीन बिलकुल नवीन युवक था। तिसपर भी राजा ने यह वचन दे दिया था कि किसी विशेष साहस का कार्य दिखलाने पर वह शीघ्र ही राज-सेना में भरती कर लिया जायगा। इसी विश्वास से आर्तगान अपने वर्तमान पद पर ही संतुष्ट था।

आर्तगान को जो धन राजा द्वारा इनाम में मिला था; वह धीरे-धीरे करके कुछ ही महीनों में मंडली के आनंदोत्सवों में समाप्त हो गया। चारों मित्रों ने यह नियम बना लिया था, कि उनमें से एक-एक पारी-पारी से सबके भोजन-वस्त्र का प्रबंध करे। आर्तगान जब अपने कर्तव्य को पूरा करचुका, तब अथास की पारी आई। इसी प्रकार पार्थ और अर्मस ने भी कुछ काल तक चारों मित्रों के भोजन-व्यय का प्रबंध किया। अथास के पास कुछ संचित धन था। पार्थ ने अपनी प्रेमिका का सहारा लिया और अर्मस ने अपनी धर्म-पुस्तकों को बेचकर मंडली की आवश्यकताओं की पूर्ति की। इसके पश्चात् फिर आर्तगान की पारी आ गई। वेतन के मिलने का समय अभी बहुत दूर था। नगर में उसके कोई ऐसा मित्र भी न था जिससे ऋण लेकर वह अपने कर्तव्य से निवृत्त होता। ऐसी परिस्थिति में वह अपने कमरे में पड़ा हुआ धन-संग्रह के विषय में चिंता कर रहा था। उसने देखा कि किसी प्रयत्न के किये बिना धन की प्राप्ति असंभव है। मंडली की आवश्यकतायें तो एक ओर रहीं अभी वह कई मास से घर का किराया भी नहीं दे सका है। कुशल यह है कि घर का मालिक तक़ाज़ा करना भूल गया है। किराया किसी न किसी भाँति देना ही पड़ेगा। इसी

उधेड़बुन में वह लगा हुआ था कि सहसा किसी व्यक्ति ने बाहर से द्वार खटखटाया। उसने चौंककर प्लेंचेट को द्वार खोलने को कहा। द्वार खुलने पर एक आगंतुक ने कमरे में प्रवेश किया। अत्यंत मोटे कपड़े पहने हुए एक अधेड़ दुबले-पतले मनुष्य को प्रवेश करते देखकर आर्तगान उठकर खड़ा होगया। उसको आश्चर्य हुआ कि एक अपरिचित व्यक्ति को उससे कौन काम हो सकता है। आगंतुक ने झुककर सलाम किया और थोड़ी देर इधर-उधर देखने के पश्चात् कहा—"महाशय आर्तगान, मैंने आपके साहस की कीर्ति बहुत सुनी है। आपके सौजन्य तथा वीरता पर विश्वास करके ही मैं आपसे अपना एक गुप्त भेद बतलाने आया हूँ। मुझे आशा है कि आप उसे सुरक्षित रक्खेंगे और मुझे एक विपत्ति से उबारेंगे।"

आर्तगान ने उत्सुक होकर पूछा—"कहिये? आप पर क्या विपत्ति है? और मैं आपको क्या सहायता पहुँचा सकता हूँ?" आगंतुक का चेहरा पीला पड़ गया था उसने कुछ क्षण रुककर कहा—"मेरी स्त्री राजमहिषी की सेविका है। सौभाग्य से वह रूपवती और चरित्र में उज्ज्वल है। तीन वर्ष हुये कि मैंने उसके साथ अपना विवाह किया था यद्यपि उस विवाह द्वारा मुझे धन की कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई।"

आगंतुक इतना कहकर रुका। खाँसकर उसने फिर कहना प्रारंभ किया—"महाशय! कल प्रातःकाल से वह ग़ायब है। राजमहिषी कार्य्यों से निवृत्त होकर जब वह अपने कमरे से आ रही थी तभी से वह लापता है। किसी शत्रु ने मार्ग से उसे उड़ा दिया है।"

आर्तगान ने चकित होकर पूछा—"तुमको यही कैसे ज्ञात हुआ कि तुम्हारी स्त्री वास्तव में उड़ाई ही गई है?"

"राजमहिषी के सेवक लैपार्टी से। लैपार्टी मेरी स्त्री का धर्माभिभावक है।"

"तब इसका कुछ पता चला कि वह उड़ा ले जानेवाला कौन है ?"

"यह तो मैं निश्चितरूप से नहीं जानता। परंतु एक व्यक्ति पर मेरा संदेह है यह मनुष्य बहुत काल से मेरी स्त्री को उड़ा ले जाने की फ़िक्र में रहा है। परंतु मुझे विश्वास है कि इस घटना के भीतर राजनीतिक चाल अधिक है और प्रेम-संबंध कम।

आर्तगान ने आश्चर्य के साथ पूछा—"राजनीति से और तुम्हारी स्त्री से क्या संबंध हो सकता है ? तुम्हारा क्या संदेह है ?

आगंतुक ने डरते-डरते कहा—"परंतु डरता हूँ कि कहीं इस रहस्य को बतला देने से विपत्ति में न फँस जाऊँ।"

आर्तगान ने उत्तर दिया—"तब, तुम मेरे पास किस अभिप्राय से आये हो ? मैं यह नहीं कहता कि तुम किसी गुप्त रहस्य को मुझ पर प्रकट करो। इसका विचार तुमको स्वयं करना चाहिये।"

आगंतुक ने कहा—"नहीं, महाशय, मैं सब कुछ बतला देने के ही लिये आया हूँ।"

आपकी सच्चाई तथा सहृदयता पर मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि आप इसको किसी पर प्रकट न करें। इस रहस्य का संबंध इंगलैंड के एक प्रसिद्ध ड्यूक से है।"

आर्तगान की जिज्ञासा बढ़ने लगी। उसने पूछा—"आख़िर तुमको यह सब रहस्य किसके द्वारा मालूम हुआ ?"

"मुझे यह स्वयं अपनी स्त्री से मालूम हुआ। मेरी स्त्री ने लैपार्टी के द्वारा जाना। लैपार्टी राजमहिषी का अत्यंत प्रियपात्र सेवक है। राजमहिषी अपने हृदय का बोझ हलका करने के लिये इस सेवक को अपनी सब गुप्त बातें बतलाती रहती हैं। विदेशीया होने के कारण राजमहिषी पर धर्माचार्य की बड़ी कड़ी निगाह रहती है। उसके प्रत्येक कार्य की देख-रेख वह रखता है। राजा उनका अलग तिरस्कार करते हैं और प्रजा भी उनको शत्रु की दृष्टि से देखती है। बिचारी बड़ी

विपत्ति में हैं। ऐसी दशा में वह नौकर-चाकरों तक पर विश्वास नहीं कर सकती। केवल लैपार्टी ही उनके दिल-बहलाव का साधन है।"

आर्तगान ने धीरे से कहा—"ये सब बातें तो बड़ी विचित्र हैं। अच्छा फिर ?"

आगंतुक ने कहा—"मेरी स्त्री चार दिन हुए घर आई। प्रति सप्ताह दोबार राजमहल से मेरे घर वह अवश्य आती थी। इसका कारण यह है कि हम दोनों में प्रेम बहुत है। वह मुझे हृदय से प्यार करती है। जिस दिन आने में देर हो जाती है, तो मेरा हृदय व्यग्र हो उठता है। उसने एक दिन मुझे गुप्त रीति से यह बतलाया था कि राजमहिषी के प्रति धर्माचार्य का व्यवहार दिन-प्रतिदिन उग्र होता जा रहा है। वह सरानंद की घटना का राजमहिषी से बदला लेना चाहता है। आजकल धर्माचार्य इस उधेड़बुन में है कि किसी न किसी प्रकार राजमहिषी को विद्रोही सिद्ध करे। इसके लिये वह झूठे षड़यंत्र रच रहा है। राजमहिषी को पता चला है कि किसी ने राजमहिषी के नाम से एक निमंत्रण-पत्र ड्यूक के नाम भेजा है।"

आर्तगान इस रहस्य को सुनकर बड़ा आनंद ले रहा था। उसने उत्सुकता से पूछा—"ड्यूक को बुलाने का क्या अभिप्राय है ?"

आगंतुक ने कहा—"ड्यूक के बुलाने का अभिप्राय बड़ा गहरा है। ड्यूक अँगरेज़-जातीय है। अँगरेज़ों से और फ्रांस से शत्रुता है। ड्यूक के फ्रांस में राजमहिषी के पास आने पर यह अच्छी प्रकार सिद्ध किया जा सकेगा कि राजहिषी ड्यूक के साथ फ्रांस के विरुद्ध षड़यंत्र रच रही हैं और षडयंत्र के ही उद्देश्य से राजमहिषी ने ड्यूक को बुलाया है।"

आर्तगान ने अत्यंत आश्चर्य से कहा—"परंतु तुम्हारी स्त्री को और इन सब बातों से क्या संबंध ?

"मेरी स्त्री राजमहिषी की गुप्त सहचरी है। यह बात सब पर

प्रकट है। शत्रु लोग या तो यह चाहते हैं कि वह राजमहिषी के पास रह ही न सके अथवा उससे बलात् राजमहिषी के किसी रहस्य को पूछना चाहते हैं। संभव है कि उसको अपने पक्ष में मिलाकर अपनी गुप्तचरी बनाना चाहते हों।"

"परंतु क्या तुम अपने उस शत्रु को जानते हो जिसने,यह कार्य किया है।"

"हाँ! मैं उसे जानता हूँ।"

"वह कौन है? उसका नाम?"

"नाम मैं नहीं जानता। लेकिन उसको पहचान सकता हूँ। धर्माचार्य का वह प्रधान जासूस है। उनके समान धूर्त मिलना कठिन है। एक दिन मेरी स्त्री ने उसे दिखाया था। उसका शरीर लंबा और बलिष्ठ है, तेज़ भूरी आँखें हैं, बाल काले हैं, चेहरे का रंग कुछ बदामी है, उसकी कनपटी पर एक ज़ख़्म का निशान है।"

इस वर्णन को सुनकर आर्तगान चौंक पड़ा। उसने चिल्लाकर कहा—"अरे! यह तो मेरा शत्रु है। यह वही मियाँग होटलवाला आदमी है। तुम्हारे वर्णन से उसका चेहरा ठीक और बिल्कुल ठीक मिलता है। अगर यह वास्तव में वही धूर्त है तब तो एक ही निशाने में दो शिकार होंगे। मैं अवश्य तुम्हारी सहायता करूँगा। क्या तुम जानते हो कि वह कहाँ रहता है?"

"नहीं! यही अगर मैं जानता होता तब सारी कठिनाई हल न हो जाती। मैं तो केवल उसको चेहरे से ही पहचानता हूँ। एक दिन मैं अपनी स्त्री को राजमहल पहुचाने गया था। वह राजमहल से आरहा था। ड्योढ़ी से उसको निकलते हुए देखकर मेरी स्त्री ने उसी समय मुझ से कहा, "प्यारे वोनैसी, देखो यह वही मनुष्य है जिसका मैंने तुमसे आज ही ज़िक्र किया है" आर्तगान ने आगंतुक के चेहरे को ग़ौर से देखते हुये कहा—"क्या तुम्हारा नाम वोनैसी है। मुझे याद

आता है कि मैं तुमको पहचानता हूँ। शायद तुम्हीं मेरे घर के मालिक हो ?"

वोनैसी ने मुस्कराते हुये कहा—"मैं ही आप का गृहस्वामी हूँ। आपको इतने दिन यहाँ रहते हुये होगये, किंतु मैं बीच में आपके पास कभी न आ सका। यद्यपि इधर कुछ महीनों का किराया मुझे नहीं मिला, तथापि मैं आपके पास इसी कारण से और भी न आया कि आप, किसी विशेष आर्थिक कारणवश किराया नहीं दे सके हैं, मेरे आने पर आप संकोच अनुभव करेंगे।"

आर्तगान ने किराये के प्रश्न से कुछ निश्चिंतसा होकर कहा—"मैं इस उदार आचरण के कारण आपका अत्यंत कृतज्ञ हूँ। यह निश्चय मानिये कि मैं प्रत्येक प्रकार से आपकी सहायता करने के लिये तैयार हूँ।"

वोनैसी ने कहा—"इसपर तो मुझे स्वयं विश्वास है। इसी विश्वास के आधार पर मैं इस गुरुतर कार्य में आपकी सहायता की याचना करने आया हूँ।" यह कहकर वोनैसी ने एक पत्र अपनी वास्कट की भीतरी जेब से निकालकर आर्तगान के हाथ में देते हुए कहा—"यह पत्र मैंने आज प्रातःकाल डाक द्वारा पाया है।"

पत्र को लेकर आर्तगान खिड़की के निकट जाकर रोशनी में पढ़ने लगा। सायंकाल हो जाने के कारण कमरे की रोशनी धीमी पड़ गई थी। पत्र में यह लिखा था—"अपनी स्त्री के अनुसंधान करने का विचार कदापि न करना। उसका पता तुमको नहीं लग सकता। हमारा मतलब निकल जाने पर वह यथास्थान तक पहुँचा दी जायगी। परंतु यदि तुम हमारी इस आज्ञा की अवहेलना करोगे तो तुम अपने प्राणों से हाथ धो बैठोगे।"

पत्र को पढ़कर आर्तगान ज़ोर से खिलखिलाकर हंस पड़ा और कहा—"वास्तव में पत्र-लेखक बड़ा धूर्त है।"

वोनैसी को संबोधन करके कहा—"तुम डरो नहीं। यह केवल धमकी भर है।"

वोनैसी ने आश्वासित होकर कहा—"महाशय ! मैं निर्बल मनुष्य इस पत्र-लेखक की तलवार का सामना नहीं कर सकता। आपकी और आपके साथियों की वीरता का बड़ा नाम सुना है। इस कार्य में आप ही सहायक हो सकते हैं। मेरे अतिरिक्त राजमहिषी भी मेरी स्त्री के उद्धार पर आपकी चिर-कृतज्ञ रहेंगी। परंतु इस कार्य में आपको धर्माचार्य की शक्ति का सामना करना पड़ेगा ?"

आर्तगान ने उत्साहित होकर कहा—"निस्संदेह !" वोनैसी ने फिर कहा—"इस साहस पूर्ण कार्य पर मैं आपसे मकान के किराये के विषय में कभी कुछ न कहूँगा और यदि आवश्यकता आ पड़ेगी तो विशेष रूप से आपकी सहायता करूँगा।"

आर्तगान ने यह देखा कि इसी काम को करने से उसके आर्थिक कष्टों की भी दूर होने की आशा है। फिर धर्माचार्य की शक्ति के विरुद्ध यदि वह विजयी हो सका तो राजकृपा को पाने का भी वह अधिकारी हो जावेगा। इसके अतिरिक्त बहुत काल से प्रतीक्षा करने पर भी वह किसी साहस के कार्य्य में प्रवृत्त होने का अवसर न पा सका था। स्वभाव ही से युद्धप्रिय होने के कारण शांति से उसको अरुचि हो गई थी। किसी संकटमय कार्य में संलग्न होने के लिये उसके हृदय में स्वयं प्रबल इच्छा उठ रही थी। इस अवसर ने उसके हृदय में उज्ज्वल भविष्य की आशा भर दी। विशेष उत्साह उसको इस बात से मिलता था कि इस कार्य में प्रवृत्त होने से उसको अपने चिर-शत्रु का सामना करने का अवसर मिलने की उसको आशा थी। मियाँग के भद्रपुरुष की याद ने उसके हृदय में प्रतिहिंसा और प्रतीकार की भावनायें फिर जाग्रत कर दी थीं। उत्साह और साहस उमड़ आया।

आर्तगान इन्हीं विचारों में लीन था कि वोनैसी ने सहसा खिड़की

द्वारा सड़क की ओर देखते हुये चौंक कर उंगुली से इशारा करके कहा—"वह देखो, वह खिड़की के सामने सड़क पर, उस मकान के नीचे वही पुरुष लबादा ओढ़े खड़ा है।"

आर्तगान ने देखा। देखते ही वह चिल्ला उठा—"यह वही मनुष्य है—वही—मियाँग होटलवाला।" कमरे की खूँटी में तलवार लटक रही थी। उपरोक्त शब्द कहकर आर्तगान ने शीघ्र ही म्यान से तलवार निकाल ली और यह कहता हुआ शीघ्र ही सीढ़ियों की ओर लपका—"ओ! धूर्त! इस बार तू मेरे पंजे से नहीं निकल सकता।"

बोनैसी सकते की हालत में हो गया। भय के कारण उसके मुँह से एक शब्द भी न निकल सका।

आर्तगान जब तेज़ी से सीढ़ियाँ उतर रहा था, तब उसी समय उसके मित्र अथास और पार्थ उससे मिलने के लिये आ रहे थे। कुछ सीढ़ियाँ पार कर चुके थे। आर्तगान को इस उग्र रूप में देखकर चकित रह गये। आर्तगान उन दोनों को चीरता हुआ उसी वेग के साथ निकल गया। अपने मित्र के भीषण चेहरे की ओर देखकर अथास के मुँह से सहसा निकल पड़ा, "यह पागल तो नहीं हो गया।"

६

अथास और पार्थ आर्तगान के इस भयावह रूप से भौंचक्के रह गये। वे आर्तगान से कुछ पूछ भी न सके। जब सीढ़ियाँ पार करके वे कमरे में गये, तो कमरा ख़ाली था। वोनैसी भयभीत होकर पहले ही खिसक गया था। दोनों मित्र इस आशा से कि आर्तगान लौटकर अवश्य आएगा बैठ गये और उसकी प्रतीक्षा करने लगे। थोड़ी देर में अर्मस भी वहाँ आ पहुँचा। तीनों मित्र आर्तगान के विचित्र व्यवहार पर वार्तालाप कर ही रहे थे कि आर्तगान भी पसीने से लतपथ लौट आया। उसके मुख की आकृति से यह स्पष्ट मालूम होता था कि वह हताश होकर लौटा है।

आर्तगान के आने के पूर्व ही उसका शत्रु उस मकान के नीचे से जहाँ आर्तगान ने उसे खड़े देखा था रफ़ू-चक्कर हो गया था। आर्तगान ने उसकी तलाश में तमाम गलियाँ छान डालीं, परंतु उसका कहीं भी पता न चला। नंगी तलवार लिये उग्र वेश में दौड़ते हुये उसको देखकर नगर-निवासी भयभीत होकर उसकी ओर देखने लगते थे और उसके निकट आने पर मार्ग से हट जाते थे। इस बार भी शत्रु के ग़ायब हो जाने से आर्तगान को अपनी विफलता पर अत्यंत क्रोध और

झुँझलाहट हुई। निराश होकर वह अपने कमरे में लौट आया। मित्रों को पहले ही से बैठे देखकर कहा—"धूर्त, बदमाश इस बार भी ग़ायब हो गया? यह प्रेत है या जिन है? इसकी परछाईं तक का पता नहीं लगता।"

तीनों मित्रों ने हँसकर कहा—"क्या तुम प्रेत-योनि में विश्वास करते हो? किस अभागे को यह शुभ-नाम प्राप्त होने का अवसर मिला है?"

आर्तगान ने शांत होकर कहा—"यह अभागा हो या न हो, परंतु यह निश्चित है कि इसने आज हमारे आशामय भाग्य पर पानी फेर दिया। कम-से-कम एक मास तक की दावतों की आशा नष्ट हो गई। तीनों मित्र इस वाक्य को सुनकर एक साथ बोल उठे।

"दावत की आशा! यह तो नवीन समाचार है।" आर्तगान ने इसको अन-सुनी करके अपने नौकर प्लैंचेट को आवाज़ दी और कहा—"गृह-स्वामी वोनैसी के पास जाकर कहो कि एक दर्जन शराब की बोतलें यहाँ भेज दे। किंतु यह कह देना कि शराब उम्दा क़िस्म की हो।"

पार्थ ने आश्चर्य-चकित होकर पूछा—"क्या गृह-स्वामी तुम्हारा महाजन भी है?"

अथास ने कहा—"मैं यह पहले ही से कहता आ रहा हूँ कि आर्तगान शारीरिक शक्ति के अतिरिक्त मानसिक शक्ति में भी हम सब लोगों से बढ़ा हुआ है। आर्तगान प्रशंसा वाक्य को सुनकर हँस पड़ा और अथास को झुककर अभिवादन करके कहा—"चाटु-कारिता का परिणाम सदा ही मीठा होता है। मैं आप लोगों की शंकायें अभी निवारण करूँगा।" यह कहकर उसने आज की घटना आद्यंत मित्रों को कह सुनाई।

सब कथा सुनकर अथास ने मुस्कराते हुए कहा—"तब यह

व्यापार तो बुरा नहीं है। तुम्हारा गृह-स्वामी धनिक मालूम होता है। परंतु अब निश्चय यह करना है कि इस धन की प्राप्ति के लिये इस मंडली को यह संकट मोल लेना चाहिये या नहीं ?"

आर्तगान ने शीघ्र ही उत्तर दिया—"परंतु इस घटना से एक रमणी का गौरव विपत्ति में है, इस बात को हमें नहीं भूलना चाहिये। कर्त्तव्य-प्रेरणा धन की लालसा से कहीं श्रेष्ठतर है।"

अर्मस धर्म और कर्तव्य के निर्णय में कभी चुप नहीं रह सकता था। उसने छूटते ही कहा—"आर्तगान, कर्तव्य की मीमांसा बड़ी कठिन होती है। क्या मालूम कि इस स्त्री ही के कारण हमारी मंडली का भी गौरव नष्ट हो जाय। स्त्रियों के विषय में इतना शीघ्र निर्णय करना उचित नहीं है।"

सुरसिक पार्थ को अर्मस का यह कथन बड़ा बुरा लगा। रमणी के प्रश्न ने उसकी सारी सहानुभूति को अपनी ओर कर लिया था। उसने कहा—"मित्रवर ! स्त्रियों के गौरव को यदि हम सब लोग मरकर भी सुरक्षित रख सकें, तो कोई अपमान की बात नहीं है। शौर्य का प्रश्न दार्शनिक व्याख्या से हल नहीं होता।"

इस उत्तर पर अथास को हँसी आ गई। आर्तगान ने सबको शांत करते हुये कहा—"वोनैसी की पत्नी ही का यह प्रश्न नहीं है। मेरी चिन्ता का विषय है राजमहिषी। राजा द्वारा वह तिरस्कृत है और धर्माचार्य, तो उसको फूटी आँखों भी नहीं देखना चाहता। उसने उसको अपमानित करने के लिये यह षडयंत्र रचा है।

अर्मस—"तब वह हमारे शत्रु स्पेन और इंगलैंड पर क्यों प्रीति करते हैं ? इसी कारण सब उससे घृणा करते हैं।"

आर्तगान ने गंभीरता से उत्तर दिया—"मित्रवर ! क्या तुम अपने जन्मस्थान से घृणा कर सकते हो ? स्पेन राजमहिषी की मातृ-भूमि है। उसका प्रेम स्वाभाविक है। रहा इंगलैंड, इस विषय में मैंने यह सुना

है कि वह इंगलैंड को प्यार नहीं करती। उसका प्रेम केवल इंगलैंड-निवासी एक ड्यूक तक ही परिमित है।"

इसपर अथास ने कहा—"और यह मानना पड़ेगा कि यह अँगरेज़ अर्थात् ड्यूक यथार्थ में राजमहिषी का ही प्रेम-पात्र बनने योग्य है। मैंने अपने जीवन में इतना सुंदर, इतना आकर्षक और इतना सौजन्य-पूर्ण कोई व्यक्ति नहीं देखा।"

आर्तगान ने गर्व के साथ कहा—"निस्संदेह ! यदि मुझे यह मालूम हो जाय कि बकिंघम कहाँ ठहरा है, तो मैं आज ही उसके पास जाकर धर्माचार्य के षडयंत्र की सारी पोल खोल दूँ। इससे हमको धर्माचार्य की कोपाग्नि में अवश्य गिरना पड़ेगा। परंतु मित्रो ! साहस दिखलाने का समय संकट ही हुआ करता है। हम राजा के भक्त हैं। उसके सत्य गौरव की रक्षा के लिये धर्माचार्य के कोप का हमको सामना करना होगा। धर्माचार्य के फेर में पड़कर इस समय राजा राजमहिषी का तिरस्कार अवश्य कर रहे हैं, परंतु भ्रांति का पर्दा फ़ाश होते ही राजा इसी राजमहिषी पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देंगे। धर्माचार्य की कूट-नीति को नष्ट करना हमारा कर्त्तव्य हो गया है। मैं तो यहाँ तक तत्पर हूँ कि आवश्यकता पड़ने पर इस धूर्त ढोंगी के कुचक्र को नष्ट करने के लिये यदि प्राणों पर आ बने तब भी तिलभर भी न डिगूं।

आर्तगान इतना कहकर चुप हो गया। मित्रों में सन्नाटा छा गया। इस आवेशपूर्ण प्रोत्साहन को सुनकर सब गंभीर हो गये। अथास ने कुछ क्षण के बाद कहा—"क्या तुमसे वोनैसी ने यह कहा था कि राजमहिषी की यह धारणा है कि जाली पत्र द्वारा ड्यूक बुलाया गया है ?"

आर्तगान ने कहा—"हाँ ! वोनैसी ने यह कहा था। यथार्थ बात है कि राजमहिषी हृदय से ड्यूक पर अनुरक्त है। धर्माचार्य को इस

प्रेम-व्यवहार का पता है। परंतु उसको खुले आम राजमहिषी पर दोषारोपण करने का अवसर नहीं मिलता था। अब उसने जाली पत्र द्वारा इसी उद्देश्य से ड्यूक को बुलाया है। मेरा यह विश्वास है कि वोनैसी की स्त्री संबंधी घटना का संबंध धर्माचार्य के इस कुचक्र से अवश्य है।"

पार्थ ने प्रभावित होकर कहा—"आर्तगान की दृष्टि बड़ी तीव्र है।"

अथास ने कहा—"मैं तो इसकी तीक्ष्ण बुद्धि का पहले ही से क़ायल हूँ। इस गुत्थी को जिस सरलता से आर्तगान ने सुलझाया है उस प्रकार हम में से कोई भी नहीं कर सकता था। वास्तव में इस घटना के संबंध में हम सबको योग देना चाहिये।"

आर्तगान मित्रों की सहमति पाकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। प्रसन्न होकर उसने कहा—"इस सारे रहस्य की कुंजी वोनैसी की औरत का पता लगाना है। बस हम सबको इसी काम पर जुट जाना चाहिये।"

पार्थ ने कहा—"परंतु हमें सबसे पहले वोनैसी से सौदा तय कर लेना होगा।"

इसपर आर्तगान ने कहा—"यह व्यर्थ है, क्योंकि यदि वह हमको काफ़ी नहीं देगा, तो विपत्तियों से हमको यथेष्ट धन के मिलने की आशा है।"

इसपर पार्थ कुछ कहने ही वाला था कि सहसा सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने का शब्द सुनाई दिया। सब आगंतुक की प्रतीक्षा करने लगे। क्षण भर में कमरे का दर्वाज़ा तेज़ी से खोलकर वोनैसी यह चिल्लाता हुआ आया—"महाशयो! ईश्वर के लिये मुझे बचाओ!! चार मनुष्य मुझे पकड़ने के लिये आये हैं। बचाओ! मुझे बचाओ!" यह कहकर वोनैसी हाँपता हुआ मित्रों के आगे गिर पड़ा।

पार्थ और अर्मस ने तलवारें निकाल लीं और खड़े हो गये।

आर्तगान ने चिल्लाकर कहा—"ठहरो, यहाँ साहस की अपेक्षायुक्ति अधिक काम देगी।"

पार्थ ने उत्तर दिया—"तिस पर भी हम ऐसा नहीं···" अथास ने बात काटकर कहा—"मित्रो! हमें इस समय आर्तगान के ही आदेश का अनुकरण करना चाहिये। जो कुछ वह करनेवाला है वह अधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

इसी समय चार सिपाही ऊपर चढ़ आये। परंतु अपने सामने राज-सैनिकों को तलवारें निकाले हुए खड़े देखकर उनको आगे बढ़ने का साहस न हुआ।

आर्तगान ने सौजन्य के साथ कहा—"तुम लोग भीतर चले आओ। हम सब राजा और धर्माचार्य के भक्त हैं।" इन शांत तथा विनम्र शब्दों से सिपाहियों को कुछ साहस हुआ। उनमें से एक ने आगे बढ़कर कहा—"तब हमको आशा है कि आप लोग हमारे न्याय-पूर्ण कार्य में बाधा न डालेंगे।"

आर्तगान ने कहा—"बाधा! बाधा डालना, तो दरकिनार हम आपको यथेष्ठ सहायता देंगे।"

पार्थ ने क्रोध में भरकर कहा—"क्या! यह तुम क्या कह रहे हो।" परंतु अथास ने पार्थ को रोककर शांत किया और कहा—"मूर्खता न करो, शांति से देखते-देखते जाओ कि क्या होता है? आर्तगान अत्यंत दूरदर्शी है।"

पार्थ और अथास के बीच में जो बातें हुईं उनकी भनक ज़रा भी न लग पाई। वोनैसी भी कुछ बरबरा रहा था, परंतु आर्तगान ने धीरे से यह कहकर चुप कर दिया—"घबड़ाओ नहीं? तुम बच जाओगे। अन्यथा झगड़ा करने पर तुम्हारे साथ हमको भी जेल जाना पड़ेगा।"

आर्तगान ने तब स्पष्ट स्वर में कहा—"आइये! आइये!! और अपने इस अपराधी को लेजाइये। आज से पहले मैं इसको कभी न

जानता था। आज ही यह मुझसे मकान का भाड़ा माँगने आया था।" वोनैसी को एक लात मारकर चपरासियों की ओर ढकेल दिया और कहा—"दुष्ट! अपराध करके हमारे पास भाग जाने के लिये रुपया माँगने आया था। सिपाहियो, आप लोग इसको पकड़कर ले जाइये और जेल में ठूस दीजिये। यह वास्तव में बड़ा धूर्त है। इसकी यही उचित सज़ा है।"

सिपाहियों ने धन्यवाद दिया और अपने अपराधी को ले गये। जब उनका अफ़सर जाने लगा, तो आर्तगान ने उसको रोका और कहा—"महाशय! क्या एक शराब का प्याला पीकर न जाइयेगा?"

अफ़सर आर्तगान के व्यवहार से पहले ही से प्रसन्न था, इस अभ्यर्थना को अस्वीकार न कर सका। बोतल खोली गई और सब मित्रों ने साथ में बैठकर शराब पी।

अफ़सर के चले जाने पर पार्थ ने बिगड़कर कहा—"यह क्या मूर्खता और डरपोकपन का काम किया है? वोनैसी को पूरा धोखा दिया गया! यह भद्रता के नियमों के प्रतिकूल है। धिक्कार है इस बुद्धिमानी को!"

अर्मस ने हँसकर कहा—"पार्थ! शांत हो! यह अभी सिद्ध हो जायगा कि कौन मूर्ख है, आर्तगान अथवा तुम! इस समय इससे बढ़कर और कोई दूसरी युक्ति नहीं हो सकती थी। मैं आर्तगान की बुद्धि की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता।"

अथास ने भी अर्मस का समर्थन किया। पार्थ चुप हो रहा। तब आर्तगान ने कहा—"मित्रो! अब आज से इस मंडली के जीवन का सिद्धांत यह होता है कि—"एक सबके साथ और सब एक के साथ!" यही हमारा मूल मंत्र है और यही हमारा लक्ष्य है। मुझे आशा है कि आप लोग इसका समर्थन करेंगे।"

शराब पीते हुए सबने चिल्लाकर एक स्वर में कहा—"एक सबके साथ और सब एक के साथ।"

आर्तगान का हृदय आनंद से फूल उठा। उसने सबके स्वर में चिल्लाकर यह भी कहा—"हमारा उद्देश्य आज से धर्माचार्य की शक्ति का सामना करना होगा।"

सब मित्रों ने इसकी प्रतिज्ञा कर ली।

१०

चारो मित्र वोनैसी की स्त्री की खोज में अलग-अलग निकल पड़े। बहुत परिश्रम करने पर भी वे निष्फल रहे। अथास ने कुल हाल जाकर कह दिया। सेनापति इस नवीन-घटना से अनभिज्ञ था। वह अपने सैनिकों की अनुसंधान-प्रवृत्ति से बहुत प्रसन्न हुआ। उसकी समझ में अब यह भी आ गया कि राजा, धर्माचार्य और राजमहिषी इन तीनों की उद्विग्नता किस कारण थी। राजमहिषी की तो आँखें रोते-रोते सूज गई थीं और जब उसने देखा था तब भी वे कमल-नयन अश्रुपूर्ण थे। त्रिबली ने अथास को चलते समय समझाया कि धर्माचार्य की चालों से उन लोगों को सदा सतर्क रहना चाहिये। राजा और राजमहिषी के हित की रक्षा करना उनका परमधर्म है। उपद्रव की अपेक्षा शांतिमय युक्ति ऐसे समय अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

इधर अथास त्रिबली के पास बातचीत में संलग्न था, उधर आर्तगान एक अत्यंत रोचक घटना के उपादान संग्रह करने में तल्लीन था। वोनैसी की गिरफ़्तारी के दूसरे दिन से उसके मकान पर पुलिस का पहरा बैठा दिया गया था। पुलिस के चार मनुष्य वोनैसी के मकान

के अंदर बैठकर बोनैसी से मिलने के लिये आनेवाले सब मनुष्यों को एक विचित्र चाल से गिरफ़्तार करने लगे। बाहर के फाटक में एक ऐसा यंत्र लगा दिया गया; जिससे वह स्वयं बंद हो सके। जब कोई आगंतुक आकर दर्वाज़ा खटखटाता था तब भीतर से एक चपरासी उसको जाकर खोल देता था। आगंतुक के प्रवेश करने पर फाटक स्वयं फ़ौरन बंद हो जाता था और तब आगंतुक हिरासत में ले लिया जाता था। इस चूहेदानी से आगंतुक का निकलना असंभव था। यह सब इसलिये होता था। जिससे बोनैसी अथवा उसकी स्त्री के मित्रों से उनके विषय में कोई नवीन-समाचार संग्रह हो सके।

आर्तगान बोनैसी के इसी घर के ऊपरी भाग में रहता था। उसके बाहर आने-जाने का मार्ग दूसरा था। उसकी छत के नीचे के कमरे में ही यह कांड हो रहा था। अतः उसको इसके देखने का सुअवसर मिल गया। पुलिस यह नहीं जानती थी कि कोई छिपे रूप से उनके इस रहस्य को देख रहा है। आर्तगान के कमरे में बाहर से जाने के लिये जो सीढ़ियाँ बनी हुई थी उनमें से ऊपरी सीढ़ी की दीवार में एक खिड़की लगी थी इस खिड़की के द्वारा बोनैसी के उपरोक्त कमरे की कुल लीला, स्पष्ट दिखलाई पड़ती थी। आर्तगान को जब नीचे के कमरे में शोर-ग़ल सुनाई पड़ा, तब इसका कारण जानने के लिये उसने चुपके से खिड़की के दरवाज़े खोले। कमरे के कांड को देखकर वह चकित हो गया। उसने देखा कि इस चूहेदानी में आगंतुक के फँस जाने पर चपरासी उसकी तलाशी लेते हैं और जो काग़ज़-पत्र उसके पास निकल आता है उसको शीघ्र ही हथिया लेते हैं तब उससे तीन प्रश्न पूछे जाते हैं—क्या श्रीमती बोनैसी ने अपने पति के लिये या किसी अन्य के लिये कोई चीज़ तुम्हारे द्वारा भेजी है? या बोनैसी ने अपनी पत्नी या किसी अन्य के लिये कुछ भेजा या

कहलाया है ? अथवा उन दोनों में से किसी ने तुमसे कोई गुप्त बात कही है ?

जितने भी मनुष्य उस कमरे के अंदर आये ; लगभग सबके सब अपनी-अपनी पारी से इन सवालों को सुनकर हक्के-बक्के रह जाते थे। अपने ऊपर पड़ी हुई इस नवीन आपत्ति का आशय वे न समझ सकते थे। निराश होकर जब चपरासी उनको दूसरे मार्ग से निकाल देते थे, तब वे समझते थे कि उनके प्रबल पुण्य प्रताप से उनके प्राण बच गये हैं। अन्यथा आज जीवित बचकर आना असंभव हो गया था।

आर्तगान घंटों इस लीला को देखता रहा। परंतु इस नवीन न्यायालय के विचित्र विधान को वह कुछ भी न समझ सका। इन प्रश्नों ने उसके कुतूहल को और भी बढ़ा दिया। उसके हृदय में यह प्रश्न उठ-उठकर रह जाता था कि यह प्रश्नावली किस अभिप्राय से पूछी जाती है और इसका तात्पर्य क्या हो सकता है ? उसके मनमें कईबार यह भी विचार उत्पन्न हुआ कि वह क्यों न इस निरर्थक खेल को स्वयं जाकर बिगाड़ दे। बोनैसी के मित्र इस अनजान आफ़त से कितने त्रस्त हो उठते थे, चपरासियों के पैरों पड़कर गिड़गिड़ाते थे कि वे कुछ नहीं जानते, अभी कुछ ही दिन हुए कि व्यापार के संबंध में उनका बोनैसी से परिचय हुआ है, परंतु दुष्ट पुलिस के सिपाही उनको जब तरह-तरह की पीड़ायें पहुँचाते थे, तब इस दृश्य को देखकर आर्तगान का क्रोध उबल पड़ता था। उसकी इच्छा होती थी कि अभी जाकर पुलिस को उचित शिक्षा दे, परंतु व्यर्थ ही एक नई विपत्ति में पड़ जाने के विचार से वह अपने क्रोध को रोक लेता था। बहुत देर तक देखते-देखते उसका जी उकता गया और वह उठकर अपने पलंग पर लेट गया और इस घटना के वैचित्र्य पर विचार करने लगा।

सायंकाल का समय था। सूर्य अस्ताचलगामी हो चुके थे। रात्रि के अंधकार ने प्रवेश करना प्रारंभ कर दिया था। प्लेचैंट ने कमरे में लैंप जला दिया था। आर्तगान आज की घटना की तह में पहुँचने के लिये अपने मनमें पलंग पर पड़े हुए भिन्न-भिन्न तर्क-वितर्क कर रहा था कि सहसा नीचे के कमरे से एक चीख़ उसके कान में पड़ी। वह फ़ौरन कूदकर खिड़की के पास आ गया। जब तक वह खिड़की खोलकर देखे, तब तक कईबार चीख़ें उसको सुनाई दीं। स्वर से उसने पहचाना कि ये चीख़ें किसी रमणी की हैं। उसने क्रोध में आकर मनमें कहा—"मालूम होता है कि अबकी बार कोई सुंदरी इन क्रूरों के जाल में फँसी है। उसी को ये सता रहे हैं।" आर्तगान ने खिड़की खोलकर देखा। कमरे में अंधकार था वह यह न जान सका कि रमणी कौन है, परंतु ये शब्द उसको स्पष्ट सुनाई पड़े—"लेकिन मैं तुमसे कहती हूँ कि मैं इस घर की स्वामिनी हूँ, मैं बोनैसी की पत्नी हूँ और मेरी पहुँच राजमहिषी तक है। अत्याचारियो! होश में आकर काम करो!"

"बोनैसी की पत्नी" इन शब्दों ने आर्त्तगान को चकित कर दिया। उसको अमित हर्ष हुआ कि जिसको वह तथा उसके मित्र ढूँढ़ रहे थे वह सहसा उसको सहज ही मिल गई। उसने ध्यान लगाकर सुना। कुछ अस्पष्ट स्वर उसके कान में पड़े। उसको ऐसा मालूम हुआ कि चारों आदमी उसको पकड़ने का प्रयत्न करते हैं और वह छुड़ाने के लिये कोशिश कर रही है। "ओफ़! अत्याचारियो! छोड़ो! राज महिषी का......।" इन शब्दों से आर्तगान को मालूम हो गया कि रमणी के पूरी बात कहने के पूर्व ही उसका गला दबा दिया गया है। उसका धीरज अब जाता रहा। क्रोध सहनशीलता के बाहर हो गया उसने लपककर तलवार कमरे की खूँटी में लटकती हुई म्यान से निकाल ली और खिड़की की राह ही कमरे में कूद

पड़ा। कमरे की दीवार बहुत ऊँची नहीं थी। आर्तगान को कोई चोट न आई।

प्लेचेंट यह देखकर अवाक् रह गया। स्वामी को विपत्ति में जाते देखकर वह घबड़ा उठा; परंतु उनको रोकने का साहस उसे न हुआ; लेकिन उसे एक बात सूझ गई। उसने खिड़की शीघ्र ही बंद कर दी, रोशनी का मार्ग बंद होने से कमरे के अंधकार में कोई परिवर्तन न हुआ। आर्तगान जिस जगह कूदा था, वहाँ एक कोच रक्खा था। इसी लिये उसके कूदने पर कोई विशेष शब्द न हो सका। और न पुलिस के सिपाहियों का ही ध्यान खिड़की के खुलने और आर्तगान के कूदने ही की ओर गया; क्योंकि कमरे के जिस ओर खिड़की थी उसके दूसरी ही ओर एक कोने में यह कांड हो रहा था।

कमरे में आर्तगान के कूदने के वाद, प्लेचेंट को कूद-फाँद और तलवारें चलने का शब्द सुनाई दिया, परंतु एक क्षण ही में सन्नाटा छा गया। कारण यह था कि आर्तगान जब कमरे में पुलिस के पास पहुँचा, तब सिपाही एक अजनवी सशस्त्र मनुष्य को देखकर पहले भयभीत हो उठे, परंतु कुछ साहस करके एक ने आर्तगान पर हमला किया। अन्य तीनों ने कुर्सी, स्टूल उठा-उठाकर आर्तगान पर फेंकना चाहा; क्योंकि इन चार सिपाहियों में केवल एक ही के पास तलवार थी और शेष निहत्थे थे; परंतु आर्तगान के तलवार चलाने की फुर्ती ने निहत्थे सिपाहियों के होश हवास बिगाड़ दिये। वे भाग खड़े हुए। जिसके पास तलवार थी, वह भी ज़ख़्मी होने पर समझ गया कि उसका शत्रु उससे कहीं बढ़-चढ़कर है। अतः वह भी तलवार फेंककर अपने साथियों के पीछे भाग गया।

आर्तगान जब अकेला रह गया, तब उसने लेंप जलाकर कमरे को ख़ूब ग़ौर से देखा। वोनैसी की स्त्री एक कोच पर बेहोश पड़ी थी, उसके हाथ पैर बँधे थे और मुँह में एक कपड़ा ठुसा था।

आर्तगान ने हाथ पैर खोल दिये और मुँह से कपड़ा हटा लिया। उसने देखा कि रमणी की अवस्था २०—२२ वर्ष से अधिक न थी। उसका रूप अत्यंत सुंदर था। सौंदर्य चेहरे की कांति से फूटा पड़ता था। लाल-लाल पतले अधर बेहोशी की अवस्था में काँपते हुए चूमने के योग्य थे। अस्त-व्यस्त अवस्था में मस्तक तथा रक्तवर्ण मिश्रित, श्वेत कपोलों पर छितरे हुये केश-रमणी की रूप-माधुरी को और भी हृदयाकर्षक बना रहे थे। मुख की आकृति इतनी मधुर थी कि आर्तगान का हृदय प्रेम लालसा से भर गया। सोते हुये निष्कलंक सौंदर्य को निरखकर उसकी आँखें चकित रह गईं। कोमल गौर-वर्ण कलाइयों पर कठोर रस्सी के निशान बने हुए थे। रस्सी को खोलते समय स्पर्श-मात्र से उसका बदन सिहर उठा।

आर्तगान का जीवन युद्ध और उपद्रवों ही में व्यतीत हुआ था। रमणी की सरसता से वह अभी तक अनभिज्ञ था। वीरता और शौर्य के वायुमंडल में पले हुए आर्तगान ने, इतना सरस सौंदर्य कभी नहीं देखा था। प्रेम की हिलोरों से वह नितांत वंचित था। इस सुंदर रमणी ने उसके शुष्क हृदय में, आज सरसता की एक नवीन लहर पैदा कर दी। अनुराग ने उसके हृदय में पदार्पण किया। अप्रतिम सौंदर्य को देखकर उसे रोमांच हो आया। आर्तगान बड़ी देर तक बेहोशी की अवस्था में पड़ी हुई वोनैसी की पत्नी के मुख की अनिंद्य शोभा को निहारता रहा। एकांत में होने के कारण, वह कुछ सशंक हुआ। इधर-उधर निगाह डालने पर उसने देखा कि रमणी के निकट ही एक रेशमी रूमाल पड़ा हुआ है। उसने झुककर उठा लिया, रूमाल के एक कोने में कुछ अक्षर कढ़े हुए थे, उनपर जब उसकी दृष्टि पड़ी, तो वह सहसा चौंक पड़ा। इसी प्रकार के एक रूमाल को उसने अर्मस के पास देखा था, जिसके कारण उसको द्वंद्व-युद्ध में प्रवृत्त होना पड़ा था। वोनैसी की स्त्री के पास उसी प्रकार

के रूमाल को देखकर वह गंभीर विचार में पड़ गया। परंतु कुछ सोचकर उसने रमणी की जेब में बहुत सावधानी से रूमाल रख दिया। ठीक इसी समय वोनैसी की स्त्री सचेत हो गई। भयभीत होकर उसने जब नेत्र खोले, तो कमरे में केवल अपने रक्षक को देखकर, उसके जी में जी आया। उसने अत्यंत मधुर हँसी के साथ उठते हुए कहा—"आह! महाशय, आपने मेरी रक्षा की है। इस परिश्रम के लिये मैं आपको हृदय से धन्यवाद देती हूँ।"

आर्तगान ने लज्जा से शिर झुकाकर कहा—"मैंने केवल यही किया है, जो प्रत्येक मनुष्य ऐसी अवस्था में करता। धन्यवाद मुझको देना चाहिये कि आप जैसी रमणी की सहायता देने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।"

रमणी ने हँसकर कहा—"आपका परिश्रम मेरी चिर-कृतज्ञता के कारण व्यर्थ नहीं जायगा। परंतु ये मनुष्य जिनको मैंने पहले डाकू समझा था, मुझसे क्या चाहते थे, यह मैं न समझ सकी? और मेरा पति इस समय यहाँ क्यों नहीं है?"

आर्त०—ये मनुष्य डाकुओं से भी अधिक भयानक थे। इनके इस कार्य का अभिप्राय मैं स्वयं भी न समझ सका। आपके पति वोनैसी कल गिरफ़्तार कर लिये गये हैं।"

श्रीमती वोनैसी ने आश्चर्य चकित होकर एक चीत्कार किया और कहा—"ओफ़! मेरा पति जेल में हैं? ओह! ईश्वर! उसने कौन-सा अपराध किया? वह तो सीधेपन की मूर्ति है?"

आर्तगान ने हँसकर कहा—"उसका अपराध इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। वह सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य से आपका पति है।"

श्रीमती वोनैसी—"परंतु मैं तो स्वयं ही......?"

आर्तगान ने रोककर कहा—"यह मैं जानता हूँ कि आप भगाई गई थीं।"

श्री० वो०—"परंतु क्या आप यह भी जानते हैं। मुझको भगाकर ले जानेवाला कौन व्यक्ति था ? यदि आप जानते हैं, तो मुझको बताइये ?"

आर्त०—"सम्भवतः वह मनुष्य ४०-४५ वर्ष की अवस्था का है। उसके काले बाल हैं और कनपटी पर एक ज़ख़्म है।"

श्री० वो०—"और उसका नाम क्या है ?"

"आर्त०—"नाम से मैं स्वयं अपरिचित हूँ।"

श्री० वो०—"क्या वोनैसी को मेरे भगाये जाने का हाल मालूम है ?"

आर्त०—"अवश्य, भगानेवाले व्यक्ति ने उसको एक पत्र द्वारा सूचना देदी थी।"

श्री० वो० ने ज़रा बेचैन होकर कहा—"और क्या उनको इस घटना के कारण का भी पता है ?"

आर्त०—"वोनैसी के विचार में इसका कारण राजनीतिक है।"

श्री० वो०—"मुझको भी कुछ ऐसा ही संदेह है। परंतु अब मुझे विश्वास है कि राजनीति ही से इसका संबंध है। तब वोनैसी को मुझ पर तो कुछ संदेह नहीं है ?"

आर्त०—ओह ! आपके चरित्र पर तो उसको घमंड है, उसकी दृष्टि में आपका सतीत्व निष्कलंक है।"

इसको सुनकर श्रीमती वोनैसी ने एक मर्म भेदी मुस्कराहट के साथ आर्तगान की ओर देखा।

आर्त०—"परंतु आप छूट किस प्रकार आईं ?"

श्री० वो०—"थोड़ी देर के लिये वे मुझे एकांत में छोड़कर चले गये, अवसर पाकर मैं भाग आई। मेरा ख़्याल था कि वोनैसी मकान में होंगे।"

आर्तगान—"अब हमें इस स्थान को छोड़कर शीघ्र ही अन्यत्र

चल देना चाहिये। यह स्थान अधिक देर तक बातें करने के लिये ठीक नहीं है। भागे हुये सिपाही कुमक लेकर आते ही होंगे!"

श्री० वो०—"ओह! हम लोगों को शीघ्र ही अन्य स्थान में चल कर अपनी जान बचानी चाहिये। चलिये यहाँ से भाग चलें।" यह कहकर उसने अपनी बाँह आर्तगान की बाँह में डाल दी और आगे बढ़ने के लिये पैर रक्खा। आर्तगान ने चलते हुए पूछा—"पहले यह तो निश्चय हो जाय कि कहाँ चलना होगा?"

श्री० वो० ने उत्तर दिया—"पहले इस स्थान से भाग चलें, यह फिर तै हो जायगा।"

बाँह में बाँह डाले हुये दोनों वहाँ से चल पड़े। अंधकार में एकांत सुंदर रमणी के साथ इस प्रकार, चलते हुये आर्तगान ने अपने को परम सौभाग्यशाली समझा। उसकी अनुराग-प्रवृत्ति और भी बढ़ गई। पेरिस की कई गलियों को पार करके आर्तगान एक स्थान पर रुक गया और श्री० वो० से पूछा—"अब हम निर्भय हैं, वे लोग अब हमारा पता नहीं पा सकते। अब क्या विचार है? आप कहाँ जाना चाहती है?"

श्री० वो० ने कहा—"मैं स्वयं उसी प्रश्न पर विचार कर रही हूँ। मैं वोनैसी के पास यह इरादा करके आई थी कि उनको लैपार्टी के पास भेजकर यह मालूम करूँगी कि राजमहल में इन तीन दिनों में कौन-कौन-सी नवीन घटनायें हुई हैं और मेरे वहाँ पहुँचने में कोई बाधा तो नहीं है?

आर्त०—"यदि आप आज्ञा दें, तो मैं स्वयं जाकर पता लगाऊँ?"

श्री० वो०—"निस्संदेह, आप जा तो सकते हैं; किंतु कठिनाई यह है कि आप यदि जायेंगे, तो राजमहल में अपरिचित होने के कारण दरवान बाहर ही आपको रोक देंगे।"

आर्त०—"परंतु क्या आपका गुप्त-संकेत इस कठिनाई को दूर नहीं कर सकता?"

श्री० वोनैसी ने चौंककर तीक्ष्ण दृष्टि से आर्तगान को देखा; परंतु युवक की सच्चाई पर विश्वास करके उसने कहा—"अरे! हाँ! गुप्त-संकेत का तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा; परंतु इस गुप्त-संकेत की पूर्ण-रक्षा आपको करनी पड़ेगी?"

आर्त०—"इससे आप निश्चिंत रहिये। आपके गुप्त-संकेत का मुझसे कभी दुरुपयोग नहीं हो सकता। आप मुझे अपना सच्चा मित्र समझ सकती हैं।"

श्री० वो०—"परंतु इतनी देर तक मैं कहाँ रहूँ? यहाँ एकांत में तो मैं खड़ी नहीं रह सकती।"

आर्त०—"इसकी आप चिंता न कीजिये। मेरे मित्र अथास का घर निकट है, वह अपने घर में नहीं है। कहीं बाहर गया हुआ है, उसके मकान में तब तक आप विश्राम कीजिये।

अथास अभी कुछ देर तक नहीं आवेगा? क्योंकि मैं जानता हूँ कि वह कब लौटकर आता है और यदि वह आ भी गया तो भी कोई हानि नहीं है। मैं उससे बतला दूँगा कि एक रमणी को मैंने तुम्हारे घर के कमरे में बैठा दिया है। वह मुझ पर संदेह न करेगा।

श्री० वो०—"परंतु तब तो और भी बुरी अवस्था उत्पन्न हो जावेगी।"

आर्त०—"आह! आप इस समय शिष्टाचार का ध्यान न कीजिये। अपने कर्तव्य की ओर ध्यान दीजिये।"

श्री० वो० आर्तगान के आग्रह को न टाल सकी। आर्तगान ने जाकर अथास के घर के दर्वाज़े का ताला खोला; क्योंकि उनकी मित्र मंडली में एक दूसरे के घर की कुंजी सबके पास रहती थीं। दर्वाज़ा खोलकर श्रीमती वोनैसी को एक कमरे में बैठा दिया। श्री० वो० से कहा—"आप दर्वाज़ा अंदर से बंद कर लीजिये। मैं वापस आकर जब दर्वाज़े पर तीन बार थपथपाऊँ, तब आप खोलियेगा।"

श्री० वो० ने कमरे में पड़े हुए कोच पर बैठ कर कहा—"अच्छा, अब आप मेरे गुप्त संकेत को सुनिये। 'अक्सल' और 'दुअर' इन दो शब्दों से आप का क्या हो जायगा? राज-महल के बाहर आपको जर्मन मिलेगा। उससे आप यह संकेत कह दीजियेगा। वह आपसे पूछेगा कि आप क्या चाहते हैं? आप उसके द्वारा लैपार्टी को बुलवाइयेगा। लैपार्टी के आने पर कहियेगा कि वह शीघ्र मेरे पास चले आवें।"

आर्तगान ने चलते समय रमणी के मुख को प्रेम-पूर्ण दृष्टि से देखा और कमरे के बाहर हो गया। राजमहल के निकट आने पर, घड़ी ने टन-टन करके दस बजाये उपरोक्त सारी घटना आधे ही घंटे में समाप्त हो गई थी। उसने आते ही गुप्त-संकेत की सहायता से जर्मन के द्वारा लैपार्टी को बुलवाया और श्री० वो० का संदेशा कहा। लैपार्टी ने अथास के घर का पता पूछा और शीघ्र ही उस ओर चल दिया।

आर्तगान जब लौटा, तो मार्ग में, उसके मस्तिष्क में, आज की घटना के संबंध में, विचार चक्कर मारने लगे। उसने विचार किया कि पुलिस के सिपाही कल दिन में ज़रूर कुछ उपद्रव मचायेंगे और कुछ ताज्जुब नहीं कि उसकी गिरफ़्तारी के लिये भी आदेश न्यायालय की ओर से निकले। क्योंकि उसने पुलिस के काम में बाधा डाली है। ऐसी दशा में उसकी ओर से मुनासिब सफ़ाई दिये बिना, उसका छुटकारा असंभव है। थोड़ी देर तक वह यही सोचता रहा कि अपने बचाव के लिये कौन-सा उपाय काम में लाना चाहिये। आख़िर एक उपाय उसे सूझ गया। वह फ़ौरन ही त्रिवली के घर की ओर मुड़ गया। अपने दफ़्तर में त्रिवली मौजूद न था। एक प्रहरी के द्वारा अपने आने का संदेशा त्रिवली के पास भेजा। जब आर्तगान पहुँचा, तो पहले-पहल उसकी दृष्टि दीवार पर टँगी हुई घड़ी पर गई। घड़ी में दस बजकर २५ मिनट हो चुके थे। उसने एकांत पाकर नौ बजकर

पच्चीस पर सुई कर दी। तत्पश्चात् एक कुर्सी पर बैठकर त्रिबली की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ क्षण पश्चात् त्रिबली आये और पूछा—"कहो, इस कुसमय कैसे आये ?"

आर्तगान ने हँसते हुए कहा—"परंतु अभी कुछ ऐसी विशेष देर तो नहीं हुई है। अभी केवल नौ बज के पच्चीस मिनट आये हैं। आपने इतने शीघ्र दफ़्तर कैसे छोड़ दिया ?" त्रिबली ने चौंककर घड़ी की ओर देखा और कहा—"इसमें तो ठीक यही बजा है। मेरा ख़्याल था कि दस बज चुका है।"

तब आर्तगान ने राजमहिषी संबंधी रहस्य पर त्रिबली के साथ कुछ देर तक बातचीत की। त्रिबली ने आर्तगान से बहुत-सी नई बातें सुनीं। उसको आर्तगान के इतनी रात गये आने पर कुछ भी आश्चर्य न हुआ। प्रत्युत उसके आगमन की विशेष आवश्यकता पर विश्वास ही हुआ। उसने प्रसन्नता-पूर्वक आर्तगान को भविष्य का कार्य-क्रम बताया। उस घड़ी के अनुसार ठीक दस बजे आर्तगान विदा हो गया, परंतु तुरंत ही फिर लौटा और दफ़्तर में पुनः जाने का कारण प्रहरी को यह बतलाया कि मैं अपना बेंत भूल गया हूँ उसको उठा लाऊँ। प्रहरी की आँख बचाकर घड़ी की सुई को फिर ठीक कर दिया; जिससे त्रिबली को यह संदेह न पड़ सके कि उसकी घड़ी ख़राब हो गई है। इसके पश्चात् अपने बेंत को उठाकर शीघ्र कमरे के बाहर हो गया।

११

रात के ग्यारह बजे का समय था। पेरिस की गलियाँ निस्तब्ध थीं। हवा की सनसनाहट और किसी-किसी घर में सुकुमार कामिनियों के आनंदोत्सव के शब्दों के अतिरिक्त और कुछ भी सुनाई न पड़ता था। प्रकाश-हीन गलियाँ रात्रि के तमोमय आवरण को और भी अधिक भयंकर बना रहीं थीं। वीर युवक आर्तगान जल्दी-जल्दी पग रखता हुआ, गलियों को पार करता जाता था। उसका मस्तिष्क इस समय बोनैसी की पत्नी की ही रूप-माधुरी में उलझ रहा था। यही विचार उसके हृदय को मथ रहे थे कि रमणी के अतुलनीय सौंदर्य को हस्तगत करने के लिये कौन-सा साधन संभव है। रमणी रूप की खानि है, कमनीयता और कोमलता उसके अंग-अंग से टपकती है। उसका हृदय इन्हीं गुणों की बार-बार विवेचना करता था। उसका प्रेम प्राप्त करने की उसको कुछ आशा भी हो गई थी। क्योंकि उसने देखा था कि रमणी के नेत्र उससे वार्तालाप करते समय अनुरागमय हो गये थे। उसकी चेष्टायें प्रेम-मयी थीं। मधुर किंतु संकोच-पूर्ण भाषण से यह स्पष्ट झलक मिलती थी; कि रमणी का हृदय भी उसके प्रति आकृष्ट है।

इन कारणों से आर्तगान के हृदय में आशा का संचार हो रहा था। वह भावी जीवन की मधुर कल्पनाओं से मन-ही-मन प्रसन्न हो रहा था। अर्मस का घर उसी गली में था। अर्मस स्वयं एक उप-पत्नी रक्खे हुये था। अतः अन्य मित्रों की अपेक्षा रँगीला अर्मस ही उसको प्रेम संबंध में वार्तालाप करने के लिये उपयुक्त पात्र समझ पड़ा। इसी विचार से वह अर्मस के मकान की ही ओर मुड़ा।

जिस ज़माने का हम वर्णन कर रहे हैं, उस समय परकीया स्त्री से प्रेम संबंध करना अनुचित नहीं समझा जाता था। नैतिक वायु-मंडल इन विचारों का समर्थन ही न करता था; वरन् पोषण भी करता था। कोई भी युवक ऐसा न था, जिसको उप-पत्नी रखने का गौरव न प्राप्त हो। स्त्रियाँ ऐसे संबंध पर अभिमान करतीं थीं और पुरुष इसको गौरव समझते थे। यही कारण था कि राजमहल से लेकर मज़ूर तक की झोपड़ी में, उप-पतियों तथा उप-पत्नियों की भरमार रहती थी, इसी कारण आर्तगान को भी ब्रोनैसी की पत्नी से प्रेम संबंध करने के विचार में कुछ भी अनौचित्य न दिखलाई पड़ा। समय की गति के अनुकूल ही आचरण के औचित्य अथवा अनौचित्य का निर्णय हुआ करता है।

अर्मस के मकान वाली गली में जब आर्तगान ने प्रवेश किया, तब मकान पास ही होने के कारण, वह धीरे-धीरे चलने लगा। अर्मस के मकान के सामने कुछ पेड़ थे, जिनकी छाया के कारण मकान के सामने अंधकार और भी घना हो गया था। आर्तगान जब मकान के समीप पहुँचा, तब वह चौंक पड़ा। उसने देखा कि कोई व्यक्ति अपने को काले लबादे में छिपाये हुये, गली के दूसरी ओर से इस मकान की ही ओर आ रहा है। क़द और चाल से उसने पहचाना कि वह कोई स्त्री है। आर्तगान मकान की आड़ में खड़ा होकर इस स्त्री के उद्देश्य का अनुमान करने लगा। स्त्री ने अर्मस के मकान के निकट आकर

अपने चारों ओर देखा, कुछ रुकी और फिर पीछे की ओर लौट पड़ी। मालूम होता था वह जिस मकान के लिये आई, वह यह मकान न था, परंतु न मालूम क्या सोचकर वह फिर लौटी। स्त्री के इस संदिग्ध आचरण से आर्तगान घबड़ा उठा। उसने सोचा कि यह स्त्री कदाचित मार्ग भूल गई है, इसको सहायता न देना अधर्म होगा। वह यह सोचकर आगे बढ़ा कि जाकर स्त्री से कहे कि आप घबड़ाइये नहीं मैं आवश्यक सहायता कर सकता हूँ। परंतु फिर सोचा कि यह रमणी नवयुवती है सम्भव है कि वह अपने किसी प्रेमी से मिलने के लिये आई हो। तब ऐसी दशा में उसके पास जाने से वह अपने इष्ट अभिप्राय के नष्ट होने से खिन्न हो उठेगी। वह सुख पहुँचाने के स्थान में उसके दुःख का कारण बन जायेगा। उसके मस्तिष्क में यह विचार उठ रहे थे; किंतु दृष्टि उस स्त्री ही की ओर थी। ओट में होने के कारण आर्तगान स्त्री को दिखलाई न पड़ सकता था। उसने देखा कि स्त्री मकानों और खिड़कियों को गिनती हुई फिर अर्मस के मकान पर आकर रुक गई। उसने धीरे से आगे बढ़कर दरवाज़े पर उँगली से तीन बार शब्द किया। इस पर आर्तगान को अत्यंत आश्चर्य हुआ। उसको यह जानकर हर्ष भी हुआ कि आज आर्तगान को अर्मस की प्रेमिका को पहचानने का अवसर मिल गया है। उसने मन में सोचा कि अर्मस से अब वह सुविधा-पूर्वक उसकी प्रेमिका के संबंध में विनोद तथा परिहास कर सकेगा। इस रहस्य-भेद पर आर्तगान मन-ही-मन में बहुत हँसा।

स्त्री के शब्द करते ही किसी ने द्वार खोल दिया। दरवाज़ा खोलनेवाले व्यक्ति के पास रोशनी थी। स्त्री ने एक सफ़ेद पुलिंदा अपने लबादे के अंदर से निकाला, उसे खोला और एक रूमाल निकाला, तब उस रहस्य-मयी रमणी ने रूमाल हाथ में लेकर उसके कोने को दरवाज़े के अंदरवाले व्यक्ति को दिखलाया।

आर्तगान अत्यंत निकट ही छिपा हुआ था। रोशनी के प्रकाश में रूमाल और उसके कोने के अङ्कित अक्षरों को देखकर, वह आश्चर्य में डूब गया। यह रूमाल वही था, जिसको एक बार उसने अर्मस के पास देखा था और दुबारा बोनैसी की पत्नी के पास। इस रूमाल के रहस्य ने उसके हृदय में कौतूहल उत्पन्न कर दिया। वह यह जानने के लिये व्यग्र हो उठा कि इस रूमाल का किस रहस्य से संबंध है? और यह इस स्त्री के पास आया तो कैसे आया? उधर वह यह भी जानना चाहता था कि यह स्त्री किसके साथ खड़ी हुई संकेत-विनिमय कर रही है। उसको यह तो विश्वास था कि वह व्यक्ति अर्मस ही है परंतु वह अपने नेत्रों से अर्मस को इस प्रेम-व्यवहार में लिप्त देखना चाहता था। यह इच्छा उसमें इतनी प्रबल हो उठी कि वह धीरे-धीरे अपने स्थान से खिसक कर पेड़ की आड़ में आकर खड़ा होगया। यहाँ से वह मकान के अंदर वाले व्यक्ति को स्पष्ट देख सकता था; परंतु यह देखकर उसके आश्चर्य की सीमा न रही कि वह व्यक्ति अर्मस न था प्रत्युत एक स्त्री थी। यह स्त्री अर्मस के मकान में रहती हुई किस षड्यंत्र में भाग ले रही है? यह जानने के लिये आर्तगान चिंतित हो उठा। उसने देखा कि अंदरवाली स्त्री ने भी उसी प्रकार का एक रूमाल निकाला और बाहरवाली स्त्री के रूमाल से बदल लिया। इसके बाद कुछ क्षण इन दोनों में कुछ गुप्त बातचीत हुई; परंतु उसको आर्तगान न सुन सका। थोड़ी देर के बाद अंदरवाली स्त्री रोशनी सहित ग़ायब हो गई और बाहरवाली स्त्री भी लौट पड़ी। लौटते समय उसने बड़ी फुर्ती से उलटी हुई नक़ाब को गिरा दिया; परंतु आर्तगान की तीक्ष्ण दृष्टि से उसका चेहरा न छिप सका आर्तगान एकबारगी चौंककर उछल पड़ा। वह स्त्री बोनैसी की पत्नी थी बोनैसी की पत्नी ने भी यह देख लिया कि कोई व्यक्ति पेड़ की आड़ में छिपा है। वह ज़ोर से एक चीख़ मारकर तेज़ी से भागी। परंतु आर्तगान से

भागकर कहाँ जा सकती थी। उसने पल भर में पकड़ लिया। बोनैसी की स्त्री ने जब यह देखा कि अब बचकर जाना असंभव है, तो वह रहस्य-भेद के कारण भयभीत होकर यह चिल्लाती हुई गिर पड़ी—"मार चाहे डालो, परंतु मुझसे कोई भेद नहीं पा सकते।" आर्तगान उसको उठाने के लिये झुका। स्त्री की घबड़ाहट के कारण चेहरे की नक़ाब उलट गई थी। दोनों की आँखें चार होते ही बोनैसी की पत्नी हर्ष से चिल्ला उठी—"ओह! तुम हो; मैं तो भय के मारे मर-सी गई थी।"

आर्तगान ने भेद-भरी मुस्कराहट के साथ कहा—"घबड़ाओ नहीं, मुझे ही ईश्वर ने तुम्हारे ऊपर निगरानी करने के लिये भेजा है।"

"ओहो! तब क्या तुम इसी विचार से छिपे हुये थे।"

"नहीं! मैं तो अकस्मात् यहाँ आ गया हूँ। एक रमणी को अपने मित्र के दरवाज़े को खटखटाते देखकर कौतूहल-वश छिपकर तुम्हारी कार्यवाही देख रहा था।"

स्त्री ने आश्चर्य में होकर पूछा—"मित्र के पास! कौन मित्र?"

"निस्संदेह! जिसके दरवाज़े तुम गई थीं वह मेरा मित्र अर्मंस है।"

"अर्मंस! अर्मंस का तो मैंने आज ही नाम सुना है।"

"क्या! क्या तुम यह छिपा सकती हो कि इस घर में एक राज-सैनिक रहता है?"

"ओह! मैं आज ही प्रथम इस मकान पर आई हूँ। मैं नहीं जानती कि अर्मंस कौन बला है? क्या तुमने यह नहीं देखा कि मैं एक स्त्री से बातचीत कर रही थी?"

"यह तो सच है किंतु वह स्त्री अर्मंस की ही प्रेमिका है, यह तुम अवश्य जानती हो।"

"नहीं! नहीं! मैं यह नहीं जानती। इस स्त्री से संभव है अर्मंस का संबंध हो; परंतु मैं इस बात से अनभिज्ञ हूँ! आप मेरी इस बात को सच मानिये।"

"तब यह स्त्री कौन है ?"

"ओह ! यह रहस्य मैं नहीं बता सकती।"

"श्रीमती वोनैसी ! तुम निस्संदेह बड़ी सुंदरी हो ; परंतु साथ ही में कठोर और मायाविनी भी हो !"

इस पर सुंदरी हँस पड़ी। रात के अंधकार में इस हँसी के साथ एक बिजली-सी चमक गई। आर्तंगान और भी मुग्ध हो गया। रहस्य-मयी रमणी से यह छिपा न रहा। उसने तीक्ष्ण कटाक्ष करते हुए हँसकर प्रेम के साथ आर्तंगान के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा—"अच्छा, अब चलो ! मुझे पहुँचा दो ! इस अंधकार को देखकर, मेरा हृदय काँप रहा है।"

आर्तंगान मस्त हो रहा था। रमणी के कटाक्ष से और प्रभावित हो गया। बिना कुछ कहे-सुने चल दिया ; परंतु थोड़ी ही दूर चलने पर रुका और पूँछा—"आख़िर तुम कहाँ जा रही हो ?"

"यह तुमको अभी मालूम हो जायगा। मुझे एक मकान तक पहुँचाकर तुम लौट आना ?"

"क्या—क्या तुम वहाँ जाकर लौटोगी नहीं ?" आर्तंगान ने सुंदरी से पूछा।

"लौटूँगी क्यों नहीं ?"

"तब मुझे यह मंजूर है कि मैं तुम्हारे लौटने तक, तुम्हारी प्रतीक्षा मकान के बाहर करता रहूँ।"

"परंतु मुझे तो मंजूर नहीं ! इस शर्त पर आपको ले जाने के लिये मैं तैयार नहीं हूँ।"

"परंतु तुमने स्वयं ही तो कहा था, आख़िर इसमें हानि क्या है ?"

"मुझे एक भद्र पुरुष की आवश्यकता है, न कि एक जासूस की। आर्तंगान यह जानना चाहता था कि यह स्त्री अब किस स्थान को जा रही है और किससे वार्तालाप करेगी ? उधर सौंदर्य के आकर्षण

ने इस विचार को और भी दृढ़ बना दिया ; क्योंकि वह अधिक समय तक उस सुंदरी के सामीप्य-सुख का उपभोग करना चाहता था। इस अवसर को हाथ से जाने देना, उसके लिये असह्य था। स्त्री के वाक्चातुर्य को देखकर उसने अधिक विवाद करना उचित न समझा। वह इस शर्त पर राज़ी होगया कि उसको मकान तक पहुँचाकर वह शीघ्र ही बिना प्रतीक्षा किये वापस हो जायगा। दोनों फिर चल पड़े। मार्ग में प्रेम-वार्तालाप जारी रहा। सुंदरी की बाँह आर्तगान के कंधे पर थी। इस स्पर्श-सुख में लीन दोनों कई गलियों को पार कर गये। सहसा एक मकान के निकट आकर स्त्री रुक गई।

उसने कहा—"अब मैं अपने स्थान पर आ गई। अनेक धन्य-वाद ! वास्तव में तुम्हें बहुत कष्ट हुआ है, इस कष्ट के लिये मैं कृतज्ञ रहूँगी।"

"क्या लौटती बार तुमको भय नहीं लगेगा ?"

डाकुओं के अतिरिक्त और किस बात का भय ? परंतु डाकुओं के लिये मेरे पास कुछ भी नहीं है ?"

"परंतु तुम भूलती हो ! तुम्हारा रेशमी रूमाल बहुत क़ीमती है।"

रूमाल का नाम सुनकर स्त्री का चेहरा लाल हो गया। उसने बिगड़कर कहा—"बस ! इसका कभी ज़िक्र न कीजियेगा वरना आपकी जान का ख़तरा है ?"

"ओह ! इतनी सी बात से जब तुम भय खा रही हो ; तब तो प्रत्यक्ष ही में तुमको ख़तरा है। आओ, इधर आओ ! अप्रसन्न न हो, निष्ठुरता की भी कोई सीमा होती है ? मेरे ऊपर विश्वास करो। क्या तुम यह अनुभव नहीं करतीं कि मेरा हृदय तुम्हारे प्रति कितना अनुरक्त है ? मुझसे भेद बतलाकर तुम दुःखी न होगी ; यह निश्चय जानो।"

"परंतु इस भेद को गुप्त रखने के लिये मैं वाध्य हूँ ; क्योंकि इसका

संबंध दूसरे से है। मैं अपने संबंध के विषय में कोई बात तुमसे न छिपाऊँगी।"

"ख़ैर, तुम स्वयं न बताओ; किंतु मैं इस भेद का अनुसंधान बिना किये नहीं रह सकता!"

सुंदरी ने चिल्लाकर कहा—"ख़बरदार, ऐसा साहस कभी न करना। मैं उस प्रेम के नाम पर तुमसे कहती हूँ; जो मेरे प्रति तुम दिखला रहे हो? यह मैं बतलाये रखती हूँ कि यदि ऐसा करोगे, तो अपना जीवन संकट में डालोगे। मुझसे यदि वास्तव में प्रेम करते हो, तो मुझे भूल जाओ? समझ लो कि तुमने मुझे कभी देखा ही नहीं। मेरे विषय में जानने का कभी प्रयत्न न करना।"

"ओह! यदि ऐसा है; तब तो मैं तुमको छोड़ नहीं सकता।"

सुंदरी काँप उठी। उसने प्रार्थना करते हुए कहा—"ऐसा न करो—ऐसा न करो। देखो रात कितनी बीत गई। मेरी बहुत प्रतीक्षा हो रही होगी। तुम नहीं जान सकते कि मेरी कितनी हानि हो सकती है। अन्यथा तुम मुझको रोकते नहीं। जो मैं कर सकती हूँ, उसे करने के लिये मेरा हृदय ही मुझे रोकता है। क्या तुम समझते हो कि प्रेम करना पुरुष ही जानते हैं?"

इन शब्दों ने आर्तगान के हृदय में बिजली पैदा कर दी, उसने शीघ्र ही रमणी का कोमल हाथ चूम लिया। उसने कहा—"जाओ! जाओ! अब तुम जहाँ जाना चाहो जाओ। मैं भी तुमको नहीं रोक सकता; परंतु इतना ध्यान रखना कि इस प्रेम की समाप्ति आज यहीं पर न हो।"

"नहीं-नहीं, अवसर पड़ने पर फिर भेंट होगी। निराश न होना।" इतना कहकर वोनैसी की पत्नी फुर्ती के साथ वहाँ से हट गई और मकान के भीतर घुस गई।

आर्तगान भी अपने वचन के अनुसार लौट पड़ा। चलते-चलते

वह सोचने लगा कि यह सुंदरी बड़ी रहस्यमयी है। जो कुछ अंत में इसने कहा है, वह सत्य है या अनर्गल, इसका पता लगना कठिन है; क्योंकि प्रकट में तो यह स्पष्ट मालूम है, वह भी मेरे प्रति अनुरक्त है; परंतु जब उसकी रहस्यमयी बातों पर ध्यान जाता है, तो उसकी बातें नाटक के प्रेमाभिनय जैसी जान पड़ती हैं। इस संदिग्ध अवस्था में पड़कर आर्तगान यह सोचने लगा कि क्या ही अच्छा होता यदि इस रमणी से उसकी भेंट न हुई होती? सहसा उसे ध्यान हुआ कि उसके मित्र उसे ढूँढ़ रहे होंगे। विचारा अथास मेरे कमरे में मेरी प्रतीक्षा करते-करते सो गया होगा। इतने में एकबारगी उसको पीछे से यह शब्द सुन पड़े, "नष्ट हो गया—सारा खेल नष्ट हो गया!" आर्तगान ने भय से चौंककर पीछे मुड़कर देखा—तो उसका नौकर प्लेंचेट दौड़ता हुआ आ रहा है। उसी के ये शब्द थे। आर्तगान ने चिंतित होकर पूछा—"कैसा नाश? मूर्ख, क्या बकता है? क्या हुआ?"

"बड़ा दुखद समाचार है। अथास गिरफ़्तार हो गये हैं?"

आर्तगान के हृदय में एक धक्का-सा लगा, उसने चिल्लाकर कहा—"अथास! गिरफ़्तार! यह कैसे?"

"वे आपके कमरे में थे, पुलिस ने उन्हें आपके धोखे में गिरफ़्तार कर लिया।"

"क्या उन्होंने अपना परिचय नहीं दिया? उनको तो यह उसी समय कह देना चाहिये था कि वह इस मामले के संबंध में कुछ नहीं जानते?"

"उन्होंने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया। इसके विपरीत मुझको भी मनाकर दिया कि मैं उनका नाम न लूँ। उन्होंने मुझसे कहा कि इस समय तुम्हारे स्वामी को स्वतंत्र रहने की अत्यंत आवश्यकता है। क्योंकि वह कुल रहस्य से परिचित हैं और मैं नितांत अनभिज्ञ हूँ।

तुम्हारे स्वामी के धोखे में वे मुझे पकड़ ले जायेंगे और इस प्रकार वह हिरासत से बच जायेंगे। तीन दिन के बाद मैं अपना परिचय देकर छूट आऊँगा और तब तक सम्भव है मामला दूसरा ही रूप धारण करले।"

आर्तगान चिल्ला उठा—"अथास! अथास! तुम्हारा हृदय कितना उदार है, यह सौजन्य-पूर्ण व्यवहार तुम ही को शोभा देता है? ऐसी दशा में मैं स्वयं क्या करता? यह मैं नहीं कह सकता। अच्छा, पार्थ और अर्मस कहाँ है?"

"यह मैं नहीं जानता, वे कहाँ हैं?"

"अच्छा! अच्छा! ये लोग मेरे घर आकर मेरी प्रतीक्षा अवश्य करेंगे। तुम जाओ? उनसे कहना कि मैं अभी आता हूँ। तब तक मैं सेनानायक त्रिबली से भेंट करके आता हूँ। तुम मकान ही पर रहना! कहीं जाना नहीं; क्योंकि पुलिस मेरे घर की निगरानी ज़रूर करेगी।"

यह कहकर आर्तगान त्रिबली के मकान की ओर चल दिया। प्लेंचेट भी अपने स्वामी के आदेशानुसार घर लौट गया।

आर्तगान सीधा त्रिबली के घर गया। वहाँ मालूम हुआ कि त्रिबली अपनी सेना सहित राजमहल की निगरानी के लिये गया है। आर्तगान को त्रिबली से भेंट करना आवश्यक था। अतएव उसने मन में राज-महल ही जाना निश्चय किया। राज-महल पहुँचने के लिये एक नदी को नौका द्वारा पार करना पड़ता था। जब वह नदी किनारे पहुँचा; तब उसे याद आया कि नाव का किराया देने के लिये उसके पास पैसे नहीं हैं। वह खड़ा होकर यही सोच रहा था कि एक सड़क की ओर से उसको दो व्यक्ति आते हुए दिखलाई दिये। अंधकार होने पर भी वह यह पहचान गया कि उनमें-से एक पुरुष है और दूसरा स्त्री। जब वे कुछ निकट आये, तो मालूम हुआ कि स्त्री चेहरे

पर नक़ाब डाले है और काले लबादे से अपने बदन को ढके है। पुरुष की पोशाक राज-सैनिक की भाँति थी, वह भी एक रूमाल से अपने चेहरे को ढके था। आर्तगान को संदेह हुआ कि स्त्री संभवतः बोनैसी की पत्नी है और राज-सैनिक की पोशाक में उसके साथ अर्मस के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता। दोनों व्यक्ति भी नदी की ओर जा रहे थे। आर्तगान भी उनके पीछे हो लिया। ३० क़दम का अंतर होने पर आर्तगान का संदेह विश्वास में परिणत हो गया। वास्तव में ये स्त्री-पुरुष अर्मस और बोनैसी की पत्नी ही थे।

अपनी आँखों से यह देखकर आर्तगान ईर्षा से जल गया। जिसको वह सच्चे हृदय से प्यार करता है, वही उसको इस प्रकार धोखा देकर अन्य प्रेमियों के साथ चुहलें करती फिर रही है और वह भी अर्मस के साथ। जिसके विषय में सौगंधें खाकर उसने यह कहा था कि मैं अर्मस को पहचानती ही नहीं। स्त्री जाति की इस प्रवञ्चना और धूर्तता पर उसको अत्यंत क्रोध हुआ। प्रेम के स्थान में ईर्षा और क्रोध ने उसके हृदय में घर कर लिया। अपनी आँखों से अपनी ही प्रेमिका को, अन्य पुरुष के साथ देखकर सिर से पैर तक उसके बदन में आग लग गई। अर्मस और बोनैसी की पत्नी दोनों से उसने बदला लेने की ठानी। क्रोध से अंधा होकर वह शीघ्रता से इन दोनों के समीप पहुँच गया। अपने पीछे एक अपरिचित व्यक्ति को आते देखकर दोनों स्त्री-पुरुष भी रुक गये।

आर्तगान ने आगे बढ़कर अत्यंत तीव्र स्वर में कहा—"रुको—" वह तेज़ी में और भी कुछ कहना चाहता था; परंतु पुरुष के चेहरे पर निगाह पड़ते ही चौंक कर पीछे हटा। उसने देखा कि वह अर्मस नहीं है। अपनी भूल पर वह मन-ही-मन बहुत पछताया। लज्जित होकर धीरे से कहा—"ओह! यह अर्मस नहीं है!"

अपरिचित पुरुष भी आर्तगान की इस बेहूदा हरकत से बहुत

क्रुद्ध हुआ ; परंतु फिर शांत होकर कहा—"नहीं ! महाशय ! मैं अर्मस नहीं हूँ ? आपको धोखा हुआ ? मैं आपको क्षमा करता हूँ ?"

"आप मुझे क्षमा करते हैं ?" त्योरी बदलकर आर्तगान ने कहा। उस पुरुष ने चिल्लाकर कहा—"हाँ ! आपका यह कार्य भद्रोचित नहीं था। परंतु साथ ही आपने जान-बूझकर भी यह नहीं किया। ख़ैर ! अब जाने दीजिये। आप जाइये।"

"नहीं ! मुझे अभी इस स्त्री से कुछ काम है ?

पुरुष ने आश्चर्य में होकर कहा—"इस स्त्री से ? क्या आप इससे परिचित हैं ?

"हाँ मैं इससे अच्छी प्रकार परिचित हूँ।"

इस पर बोनैसी की पत्नी ने कहा—आपने कुछ बचन दिया था, याद है ?

आर्तगान ने लज्जित होकर कहा—"परंतु तुमने भी प्रतिज्ञा की थी कि......।"

बीच ही में उस मनुष्य ने कहा—"श्रीमती बोनैसी, चलो ! अब यहाँ रुकना फ़िज़ूल है।" इतना कहकर दोनों आगे बढ़े। परंतु आर्तगान ने हाथ बढ़ाकर मार्ग रोक लिया। इस घटना से वह अत्यंत लज्जित हो गया था। वह घबड़ाहट के कारण यह न सोच सका कि अब क्या करना चाहिए ? उसकी बात काटकर पुरुष के चल देने से उसका क्रोध उमड़ आया। आगे बढ़कर उसने मार्ग रोक लिया। उस पुरुष ने आर्तगान को धक्का देकर हटा दिया। आर्तगान ने फ़ौरन उछलकर तलवार निकाल ली। अपरिचित मनुष्य भी तलवार निकाल-कर हमला रोकने के लिये तैयार हो गया। परंतु इसी बीच में बोनैसी की पत्नी दोनों के बीच में आ गई और हाथ उठाकर उसने चिल्ला-कर कहा—"माई-लार्ड !" आर्तगान के मन में शीघ्र ही एक नवीन विचार दौड़ गया। उसने तलवार नीचे कर ली और सर झुकाकर

कहा—"माई लार्ड ! मैं क्षमा प्रार्थी हूँ, मुझे नहीं मालूम था कि श्रीमान्......।" श्रीमती बोनैसी ने शीघ्र ही कहा—"लार्ड ड्यूक आफ़ वकिंघम हैं ।"

आर्तगान ने सैनिक ढंग से अभिवादन करके कहा—"श्रीमान् । मुझे क्षमा करेंगे ! मैं इस स्त्री को प्यार करता हूँ। इसी कारण ईर्षा-वश होकर यह कार्य मैं कर बैठा। श्रीमान् जानते हैं कि प्रेम अंधा होता है ? अब मैं हाज़िर हूँ, श्रीमान् का जो आदेश होगा, उसका पालन हृदय से करूँगा ।"

ड्यूक ने प्रसन्न होकर कहा—"वीर युवक ! मैं तुम्हारी वीरता पर मुग्ध हूँ। तुम यथार्थ में सच्चे वीर हो और साथ ही साहसी भी हो। जब तुमने स्वयं ही अपनी सेवायें प्रस्तुत की हैं ; तब मैं तुम्हारी सहायता अवश्य लूँगा। अच्छा ! तुम २० कदम के अंतर पर रहकर मेरे पीछे-पीछे आओ। देखो। जो कोई शत्रु हमारा पीछा करता हुआ दिखलाई दे, फ़ौरन ही उसको समाप्त कर दो।" यह आदेश देकर ड्यूक श्रीमती बोनैसी के साथ आगे बढ़ गये। आर्तगान पीछे-पीछे चलने लगा।

क्षण भर में सब लोग राज-महल के निकट आ गये। ड्यूक और बोनैसी की पत्नी दोनों गुप्त द्वार से राज-महल के भीतर चले गये।

आर्तगान त्रिबलो से इस समय भेंट करना अनुचित समझकर अपने घर लौट पड़ा।

१२

श्रीमती बोनैसी और ड्यूक दोनों को राज-महल के अंदर जाने में कुछ भी कठिनाई न पड़ी। पहले तो वे गुप्त द्वार सेग गये थे और दूसरी सुविधा की बात यह थी कि ड्यूक त्रिवली की पोशाक में थे। त्रिवली बिना किसी विघ्न के राज-महल के अंदर जा सकता था। श्रीमतो बोनैसी को पहले ही से कोई रुकावट नहीं थी। जर्मेन और लै-पार्टी राज-महल के अंतरंग रहस्यों से परिचित होने के अतिरिक्त राजमहिषी के अत्यंत भक्त अनुचर थे।

श्रीमती बोनैसी ड्यूक को लिए हुए अनेक कमरे तथा गुप्त द्वारों को खोलती हुई, एक अत्यंत सुसज्जित सुगंधमय कमरे में पहुँची। ड्यूक को वहाँ बिठाकर आप राजमहिषी को समाचार देने चली गई।

ड्यूक आफ़ वकिंघम का नाम जार्ज विलयिर्स था। इतिहास के पाठक यह जानते हैं कि इंगलैंड के राजा प्रथम चार्ल्स का वह प्रधान मंत्री था। उस समय ड्यूक के समान प्रभावशाली व्यक्ति बहुत कम थे। योरोप के राजनैतिक क्षेत्र में वह अत्यंत प्रतिष्ठित तथा शक्तिशाली समझे जाते थे। धन, ऐश्वर्य, मान-संभ्रम से सम्पन्न होते हुए भी, उनका-सा रूपवान पुरुष उस समय मिलना दुर्लभ था।

अवस्था लगभग ३० वर्ष की थी। बलिष्ठ, लंबा क़द, मज़बूत कलाइयाँ, चौड़ा दिव्य मस्तक, ख़ूबसूरत मूछें इन सबके कारण उनके सौंदर्य की शोभा और भी अधिक बढ़ गई थी। साहस, निर्भयता और असीम उत्साह उनमें कूट-कूटकर भरा था। राजमहिषी के नाम से जब उन्हें निमंत्रण मिला था, तभी अपनी सूक्ष्म बुद्धि द्वारा यह अनुमान कर लिया था कि पेरिस-स्थित शत्रुओं की यह चालबाज़ी है। परंतु यह जानकर भी उन्होंने पेरिस आने का विचार निश्चित कर लिया। पेरिस आकर उनका अनुमान सत्य निकला। परंतु यहाँ आकर वह राजमहिषी से भेंट करने के लोभ को संवरण न कर सके। यह उनसे छिपा न था कि चारों ओर जासूसों से घिरे होने पर उनकी इस इच्छा का सफल होना कठिन है। परंतु तो भी उनका निर्भय और साहसी हृदय बाधाओं से विचलित न हुआ। भेंट का समय निश्चित करने के लिये राजमहिषी के पास उन्होंने संवाद भेजा। राजमहिषी ने प्रथम तो परिस्थिति से भयभीत होकर भेंट करना अस्वीकार कर दिया; परंतु फिर यह सोच कर कि ड्यूक अपनी हठ पूरी किये बिना न मानेंगे और ऐसी दशा में संभव है कोई उपद्रव खड़ा हो जाय। श्रीमती बोनैसी को, ड्यूक को गुप्त रूप में लाने के लिए आज्ञा दे दी। परंतु इसके बाद ही श्रीमती बोनैसी ग़ायब कर दी गई। तीन दिन तक यह भेंट स्थगित रही। श्रीमती के छूटकर आने पर फिर इसके लिये गुप्त काररवाइयाँ शुरू हो गईं और अंत में आज वह ड्यूक को भेष बदलाकर ले ही आई।

ड्यूक पेरिस आकर कई बार राजमहिषी से मिल चुके थे। ड्यूक और राजमहिषी का प्रेम इस पराकाष्ठा तक पहुँच गया था कि शत्रुओं के कान खड़े हो गये। धर्माचार्य ने इस प्रेम-व्यवहार का भंडा-फोड़ करने का ज़िम्मा लिया। सब प्रकार से विघ्नों से घिरे होने पर भी, ड्यूक आज पेरिस से चलते समय अपनी उपास्य देवी के दर्शन करने

के लिये अत्यंत उत्सुक थे। श्रीमती बोनैसी के चले जाने के पश्चात् ड्यूक थोड़ी देर तक कमरे में टहलते रहे। प्रेम अभ्यर्थना किस प्रकार की जाय। यही विचार उनके मन में दौड़ रहे थे कि सहसा कमरे के एक ओर का दर्वाज़ा खुला। उत्सुकता भरे नेत्रों से ड्यूक ने देखा कि सौंदर्य की अनुपम प्रतिमा, प्रेम की उपास्य देवी, राजमहिषी प्रवेश कर रही है।

राजमहिषी की अवस्था लगभग २३-२४ वर्ष की थी। बसंत ऋतु की शोभा के समान, उसके यौवन की कांति चमक रही थी। प्रत्येक अङ्ग में कूट-कूटकर सौंदर्य भरा था। कमल-नेत्र मणि की कांति को भी मात करते थे। प्रफुल्लित गुलाबी मुस्कराहट, पूर्ण मुख की अनुराग-मयी लालिमा का परिचय दे रहा था। भ्रूयुगल और नासिका सुंदरता की श्री की आगार थीं। कोमलता, अनुपम लावण्य-पूर्ण शरीर की प्रभा को द्विगुणित कर रही थी। छिपे हुए स्निग्ध कुंतलपाश के कारण मुख का सौंदर्य इतना आकर्षक हो गया था कि ड्यूक सहसा इस लावण्य-मयी शोभा के आगार को देखकर चकित रह गये। राजमहिषी को इतना रमणीय उन्होंने और कभी नहीं देखा था। सफ़ेद रेशमी साड़ी में, राजमहिषी उन्हें सौंदर्य की प्रत्यक्ष देवी देख पड़ती थी। राजमहिषी ने अत्यंत मंद गति से कमरे में प्रवेश किया। ड्यूक ने घुटने के बल झुककर राजमहिषी की अभ्यर्थना की, राजमहिषी ने अत्यंत कोमल, मधुर स्वर में कहा—"ड्यूक, यह तुमको मालूम होगा कि तुमको बुलाने के लिये मैंने पत्र नहीं लिखा था।"

ड्यूक ने फ़ौरन ही उत्तर दिया—"राजमहिषी! यह मैं भली-भाँति जानता हूँ कि यह संभव हो सकता है, पत्थर कठोरता त्याग दे; किंतु यह असंभव है कि राजमहिषी मुझको बुलाने के लिए पत्र लिखें; परंतु मेरी यह यात्रा निष्फल नहीं हुई है।"

राजमहिषी ने उसी स्वर में कहा—"ड्यूक, क्या तुम यह जानते

हो कि मैंने तुमसे आज यह भेंट क्यों क ।है ? इसका कारण यह है, तुमने मेरी यंत्रणाओं की ओर तनिक भी ध्यान न देकर पेरिस में बने रहने की हठ की है । यह प्रत्यक्ष है कि तुम्हारा यहाँ का रहना मेरे और तुम्हारे दोनों के जीवन के लिए विपत्तिजनक है । आज मैं तुमको अंतिम बार यह बतलाने के लिए आई हूँ कि आज के दिन से तुमसे सदा के लिये अलग होती हूँ । समुद्र की लहरें, राज्य की शत्रुता और प्रतिज्ञाओं की पवित्रता ने हम तुम दोनों को, दो विभिन्न धाराओं में विभक्त कर दिया है । आज की भेंट हमारी अंतिम भेंट होगी । अतः मैं यही बतलाने आई हूँ कि तुम अब फिर कभी भेंट करने का विचार न करना ।"

तुम्हारे इस सरस कंठ में कितना आकर्षण है ? "राजमहिषी ! तुम्हारे स्वर की मधुरता से शब्दों की कठोरता नष्ट हो जाती है । क्या यह संभव है कि ईश्वर द्वारा निर्मित दो अभिन्न हृदय ईश्वर के नियम की अवहेलना करके विभक्त हो जायँ ?"

"ओह ! यह तुम्हारी भूल है । मेरे कथन का तात्पर्य यह कभी नहीं रहा कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ ।"

"परंतु राजमहिषी ने यह भी तो कभी नहीं कहा कि मैं प्रेम नहीं करती । राजमहिषी ! मैंने प्रेम के लिए क्या-क्या किया है ? यह बतलाना व्यर्थ है । विपरीत दृष्टि, वियोग, निराशा और दुर्भय जिस प्रेम की लौ को नहीं बुझा सके, ऐसे प्रेम की अग्नि जिस हृदय में प्रज्वलित हो रही है, उसके ऊपर राजमहिषी ने कब कृपा की है ? तीन वर्ष के पश्चात् आज इस सेवक को अपनी आराध्य-देवी के दर्शन मिले हैं; परंतु उसकी मूर्ति इस हृदय में आज भी उसी रूप में विराजमान है जिस रूप में अंतिम बार दर्शन मिले थे । क्या यह जानना चाहती हो कि वह रूप क्या है ? ओह ! मुझे एक-एक झलक याद है । तुम उस दिन स्पेन की पोशाक में ज़री के सजे हुए

मख़मली कोच पर बैठी हुई थीं। चाँदी और सोने के काम का बना हुआ हरा रेशमी वस्त्र इन सुंदर भुजाओं पर लटक रहा था। तुम अपने शिर पर नेत्रों को चकाचौंध कर देनेवाले ताज को धारण किये थीं। तुम्हारे अंग-अंग से सौंदर्य की किरणें फूट-फूटकर निकल रही थीं। इस रूप की अनुपम छटा को सदा अपनाने के लिये मैंने नेत्र बंद कर लिये थे। तुम उठकर चली गई; परंतु वह शोभा मेरे नेत्रों में सदा के लिए समा गई। आज मैं फिर उन्हीं नेत्रों से सहस्र गुने रूप को निरख रहा हूँ। क्या यह रूप माधुरी......।"

राजमहिषी ने बात काटकर धीरे से कहा—"आह ! इन निरर्थक स्मृतियों से मस्तिष्क को भर देना, कितनी मूर्खता है ?"

ड्यूक ने उसी स्वर में कहा—"आह ! राजमहिषी ; यही मूर्खता मेरे जीवन का आधार है। इन्हीं स्मृतियों के बल पर मैं इस जीवन को स्थिर रख सका हूँ। यही मेरा आनंद है यही मेरी संचित निधि है और यही है मेरी आशा। प्रत्येक क्षण इन्हीं मूर्खता-पूर्ण स्मृतियों के परदों को उलट-उलट कर तुम्हारे सौंदर्य की झलक देख लेता हूँ। मेरा हृदय तुम्हारे रूप का मंदिर है। यह स्मृतियाँ उसकी कुंजियाँ हैं। इस रूप के दर्शन करने का यह मुझको चौथा अवसर मिला है। पहला अवसर वही था; जिसका निर्देश मैं अभी कर चुका हूँ। मैडेम कैवरियस के महल में दूसरी बार इस सौंदर्य-निधि की झलक देखने को मिली थी। तीसरा अवसर वह था, जबकि अमम्सि की वाटिका में—" राजमहिषी ने व्यग्रता के साथ बीच ही में कहा—"ओह ! ड्यूक ! उस रात्रि का वर्णन इस समय न करो।" ड्यूक ने कहा—"राजमहिषी मुझको कह लेने दो ! केवल कहने के भी अधिकार को न छीनो ! मेरे जीवन का सबसे सुखद समय वही था। उसकी स्मृति आनंद की धारा में मुझे निमग्न कर देती है। मेरे नेत्रों के आगे वह स्वर्गीय दृश्य अब भी नाच रहा है। आह ! यह वही समय था।

जब हम तुम दोनों अकेले रह गये थे। वाटिका बसंत ऋतु की अनंत सुषमा-मयी शोभा को धारण किये थी। सुगंधित वायु के झकोरे तुम्हारे कुंतल-पाश के साथ क्रीड़ा कर रहे थे। समग्र आकाश चंद्रिका के रूप में दिव्य-आनंद की वर्षा कर रहा था। आमोद-पूर्ण पुष्पों से भीनी-भीनी सुगंध छूट रही थी, तुम मेरी भुजा पर सर रखकर अपने हृदय की सुखद पीड़ा को कहने ही वाली थीं। तुम्हारे मुख की सुगंधित श्वास निकलकर मेरे वक्षस्थल को सुवासित करती थी। उस समय मैं किस दुनिया में था। आह! रानी! तुम नहीं जान सकतीं कि वह सुख कितना स्वर्गीय था। ओह! तुमने केवल उस दिन प्रेम अवश्य किया था। इससे तुम इंकार नहीं कर सकतीं।" राजमहिषी के मुख पर लज्जा की लालिमा दौड़ गई। उसने लज्जित दृष्टि के साथ कहा—"ड्यूक! तुम भूल करते हो? हाँ! यह संभव है कि बाटिका की शोभा ने, सुंदर परिस्थिति ने और तुम्हारे मुख के आकर्षण ने कुछ क्षण के लिए स्त्री-सुलभ भावों को जागृत कर दिया हो।"

ड्यूक ने कहा—"आह! यह तुम नहीं जानतीं कि बस इतना ही मुझे जीवित रखने के लिए काफ़ी था। इसी के सहारे आज तक ज़ीवित हूँ। आह! तुमने यह ख़्याल किया था कि तुम पेरिस आकर मेरे पास से सदा के लिए भाग जाओगी। तुमको यह जानकर वास्तव में आश्चर्य हुआ होगा कि मैं आठ ही दिन के बाद यहाँ कैसे आ गया?"

"आह! ड्यूक, यह तुम नहीं जानते। इसी घटना के आधार पर कितनी झूठी-सच्ची ख़बरें तमाम पेरिस में मेरे ख़िलाफ़ फैल गई थीं। धर्माचार्य की प्रेरणा से राजा ने कितना शोर मचाया था। मेरी सखियाँ मुझसे अलग कर दी गईं, मेरे सच्चे सेवक शहरबदर किए गए और मैडेम कैवरियस का घोर अपमान किया गया और जब कि तुम

इंगलैंड के राजदूत की हैसियत से, पेरिस आनेवाले थे तब स्वयं राजा ने इसका प्रतिवाद किया था।"

"फ्रांस ने इसी प्रतिवाद के बदले इंगलैंड से युद्ध मोल लिया है। इस समय मैं तुम्हारे दर्शन के लिए भी नहीं आने पाता परंतु यदि मेरी चाल सफल हो गई तो मैं फिर आऊँगा और तुम्हारे मुख चंद्र की झाँकी से अपने नेत्रों को सुफल करूँगा। री पर आक्रमण करने और राश्ले के प्रोटेस्टेंटों से अभिसंधि करने का और कोई दूसरा अभिप्राय नहीं है। यह मैं जानता हूँ कि पेरिस में विजयी होकर आना दुर्लभ है; परंतु युद्ध छिड़ने पर फ्रांस और इंगलैंड के बीच संधि-स्थापन की हैसियत से पेरिस में मेरा आना निश्चित है। यह सच है कि इस क्षणिक सुख के लिये हज़ारों मनुष्यों की जानें खपाना होंगी, देश का धन स्वाहा करना पड़ेगा; परंतु तुम्हारे दर्शन-लाभ के क्षणिक सुख के लिये संसार का कुल ऐश्वर्य मेरे लिये तुच्छ है, मनुष्यों का बलिदान इस इच्छा की पूर्ति के सामने नगण्य है।"

"ओह! ड्यूक-ड्यूक, अपराधों की इस तालिका को सुनाकर ही क्या तुम अपने प्रेम को प्रकट कर सकते हो?"

"इसका कारण यह है कि तुम मुझसे प्रेम नहीं करतीं। यदि वास्तव में ऐसा होता, तो इन सब बातों को दूसरी ही दृष्टि से देखतीं। आह! यदि वास्तव में तुम प्रेम करती होतीं—ओह! यह विचार ही मुझको आनंद से पागल बना देता है। ओह! तुम मैडेम कैवरियस का ज़िक्र करती हो वह तुमसे कम निर्दय थी। हालैंड उसको प्यार करता था, वह भी हालैंड की अनुरक्ता थी।"

"ओह! ड्यूक, तुम यह भूल जाते हो कि वह राजमहिषी नहीं थी।" यह वाक्य राजमहिषी के मुँह से सहसा निकल पड़े। प्रेम की गहरी भावना ने दबाये हुए अनुराग को उभाड़ दिया था।

ड्यूक ने कहा—"ओह! प्यारी ऐन, क्या तुम उस समय मुझे

वास्तव में प्यार करतीं, यदि तुम राजमहिषी न होतीं ? इन शब्दों को फिर दुबारा कहो। ओह ! मेरे कानों में कितनी मधुर-वर्षा हो रही है, तो क्या यह केवल तुम्हारे पद का गौरव है ? जिसने तुमको इतना निष्ठुर बना दिया है ?" राजमहिषी ने शीघ्र ही बदल कर कहा—"नहीं-नहीं, तुमने मेरे शब्दों का ठीक अर्थ नहीं समझा। यह भूल है।"

"यह न कहो, यह न कहो। यदि यह भूल है, तो मुझे सदा इस भूल में पड़ा रहने दो। क्या इससे सुंदर, इससे अधिक रमणीय और शांति-दायक दूसरी भूल हो सकती है। मैं सदा इसी भूल में रहना चाहता हूँ। राजमहिषी तुम यह नहीं जानतीं कि यह भूल मेरी आत्मा को स्वर्गीय सुख पहुँचा रही है।"

इन शब्दों ने राजमहिषी की दबी हुई प्रेम-भावना के स्रोत को खोल दिया। उसने अधीर होकर करुणा-व्यंजक स्वर में कहा—"ओह ! ड्यूक, यह मैं नहीं जानती कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। या नहीं ! परंतु यह मैं जानती हूँ कि विपत्तियों से मैं घिरी हुई हूँ। मुझ पर दया करो ! बस ! अब अधिक और कुछ न कहो ! जाओ ! ड्यूक अब पेरिस से चले जाओ ! इस नगर की हवा भी तुम्हारी शत्रु है ! तुमको यदि ज़रा भी व्यथा हो गई तो मैं ढाढ़स नहीं बंधा सकूँगी। पागल हो जाऊँगी। इसी लिये कहती हूँ कि अब तुम जाओ ! पेरिस को शीघ्र ही छोड़ दो। यदि अब कभी आना तो राजदूत की हैसियत से आना, मंत्री बनकर आना अथवा उस सेना के साथ आना जो तुम्हारी रक्षा करने में सदा तत्पर रहे, मैं हृदय से तुम्हारा स्वागत करूँगी—" अपने मुख से ही अनुराग का कथन करते हुए राजमहिषी का मुख लाल पड़ गया। भीतर-ही-भीतर हृदय पिघल रहा था। वह अधिक न बोल सकी।

"ओह ! प्यारी ऐन ! क्या तुम यह सच कहती हो ! आनंद के

कारण मैं पागल हुआ जा रहा हूँ। अच्छा ! अब जाता हूँ ? यद्यपि हृदय आज्ञा नहीं देता ? परंतु इसकी इच्छाओं को दबाने का तो मुझे अभ्यास-सा है, अब जाता हूँ। हृदय की आज्ञा के संमुख तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य है; परंतु क्या कोई वस्तु इस भेंट के चिह्न-स्वरूप दे सकती हो ?"

राजमहिषी ने चंदन की लकड़ी की बनी एक छोटी-सी सुंदर संदूक़ची दूसरे कमरे से लाकर ड्यूक के हाथ में दी। इस संदूक़ची के ऊपर राजमहिषी का सुंदर चित्र बना था।

ड्यूक ने इस उपहार को लेकर चूमा और हृदय से लगा लिया। तब कहा—"राजमहिषी ! क्या इन हाथों को स्पर्श करने की भी आज्ञा मिल सकती है।"

राजमहिषी ने आँसुओं के वेग को रोकते हुए, काँपते हुए हाथ फैला दिये। ड्यूक ने धीरे से काँपते हुए ओंठ से उनका चुम्बन किया और अंतिम बार राजमहिषी के मुख की ओर देखा और कमरे के बाहर हो गया।

१३

बोनैसी को गिरफ़्तार करके पुलिस कर्मचारी सीधे वेस्टाइल के जेलख़ाने में ले गये। जेल के कर्मचारियों ने उसकी ज़ाहिरा हालत को देखकर उसके साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया। वे समझ गए थे कि उनका संबंध एक भले आदमी से नहीं पड़ा है; क्योंकि पहनावे और चाल-ढाल से बोनैसी एक अजीब उजड्ड मालूम होता था। जेल में प्रवेश करने के आध-घंटे बाद ही एक सिपाही उसको परीक्षा-भवन में ले चलने के लिये आया। बोनैसी को पहले तो यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि उसका छुटकारा अब शीघ्र ही हुआ जाता है; परंतु कमरे में प्रवेश करते ही जब उसने अपनी आँखों से एक भयानक पुरुष को कुर्सी पर बैठे हुए, सामने रक्खी हुई मेज़ पर कुछ लिखते हुए देखा; तो उसका हृदय भय से काँप उठा। यह व्यक्ति जेल के आफ़िस का प्रधान-कर्मचारी था। बैठे हुए गाल, लंबी नुकीली नाक, पीले कालापन लिये लंबे ओठों से बाहर निकले हुए दाँतों ने, उसके चेहरे को अत्यंत भयावह बना दिया था। क्रूरता उसके चेहरे से स्पष्ट टपकती थी। जब मेज़ पर के काग़ज़ से निगाह उठाकर उसने गिद्ध के समान तेज चमकीली आँखें बोनैसी

के चेहरे पर गाड़ दीं तब बोनैसी की रही-सही जान भी निकल गई। वह थर-थर काँपने लगा। उसने तेज़, भन्नाती हुई आवाज़ से बोनैसी का नाम, पता, उम्र और पेशा पूछा। काँपती हुई आवाज़ से बोनैसी ने सब ठीक-ठीक बता दिया।

इसके बाद कर्मचारी ने एक लंबा व्याख्यान धर्माचार्य की शक्ति का परिचय देते हुए दिया। अपनी वक्तृता को समाप्त करते हुए उसने कहा—"इतनी महती शक्ति वाले धर्माचार्य के विरुद्ध किसी साधारण नागरिक का आचरण करना अपनी मौत को आमंत्रित करना है। संसार की कोई भी शक्ति ऐसे व्यक्ति की रक्षा नहीं कर सकती। अतः तुम अपनी स्थिति को ख़ूब समझ लो। तुमको मैं इतना समय देता हूँ।"

मृत्यु-दंड का नाम सुनकर उसकी, अपने जीवन की आशा जाती रही। इस सारी विपत्ति का कारण उसके विचार से उसकी स्त्री थी। मन-ही-मन वह स्त्री को कोसने लगा। लैपार्टी ने उसके साथ विवाह कराके शायद किसी बैर का बदला निकाला था। यदि वह स्वप्न में भी यह जान पाता कि उसकी पत्नी दुरूह राजनैतिक मामलों में भाग ले रही है तो कम-से-कम उसको तलाक़ अवश्य दे देता। परंतु अब तो जीवन बचना भी असंभव है। हाय! उसका सारा धन अब वही दुष्टा स्त्री भोग करेगी।

बोनैसी अत्यन्त कृपण था। धन में उसके प्राण लगे हुए थे। इसी कारण उसका ध्यान सबसे पहले धन ही पर गया। रूपवती स्त्री पर उसका अनुराग केवल इसी कारण था कि वह भी कभी-कभी धनोपार्जन में उसकी सहायता किया करती थी। प्रेम और आसक्ति क्या वस्तु है? इन पर उसको ध्यान देने का कभी अवसर ही नहीं मिला। जेल कर्मचारी के उपदेशों को सुनकर उसने धीरे से काँपते हुए कहा—"लेकिन हुज़ूर, इस बात पर आप विश्वास कीजिये कि मैं धर्माचार्य का सबसे अधिक आदर करता हूँ। मैं उनका पूरा भक्त हूँ।"

कर्मचारी ने गर्दन हिलाते हुए अविश्वास सूचक हुङ्कार के साथ कहा—"हूँ! यदि ऐसा है तो तुम इस जेल में क्यों लाये गये ?"

"मैं जेल में क्यों लाया गया यह बतलाना मेरे लिये बिलकुल असंभव है ? परंतु यह निश्चित है कि धर्माचार्य की किसी भी आज्ञा का मैंने उल्लंघन नहीं किया है।"

कर्मचारी ने घूरते हुए कहा—"तुमने कोई-न-कोई अपराध अवश्य किया होगा, अन्यथा तुम यहाँ क्यों लाये जाते ? तुम्हारे ऊपर राजद्रोह का अपराध लगाया गया है।"

बोनैसी ने चकित होकर कहा—"राजद्रोह! क्या एक निर्धन बनिया राजद्रोह का अपराध कर सकता है ? यह असंभव है! हुज़ूर! यह बिलकुल असंभव है!"

कर्म०—ओह! यह धूर्तता यहाँ काम नहीं दे सकती! तुम्हारे एक पत्नी है ?"

अपनी पत्नी को सैकड़ों गालियाँ मन-ही-मन में देते हुए बोनैसी ने कहा—हाँ! मेरे एक पत्नी थी अवश्य!"

कर्म०—"पत्नी थी! क्या अब नहीं है ?"

बो०—"हाँ! हुज़ूर, वे लोग उसको पकड़ कर ले गये ?"

कर्म०—"पकड़ कर ले गये! कौन पकड़ कर ले गया ?"

बो०—"यह तो मैं ठीक तौर से नहीं जानता; परंतु मेरा संदेह एक लंबे कनपटी पर दाग़वाले व्यक्ति पर है। वह अक्सर उसके पीछे लगा रहता था।

कर्मचारी ने कुछ सोचा और तब गंभीर होकर कहा—"उसका क्या नाम था ?

"नाम तो हुज़ूर मैं नहीं जानता; परंतु देखने पर मैं उसे पहचान सकता हूँ।'

कर्मचारी की आकृति और भी गंभीर हो गई, "तब तुम

उसको पहचान सकते हो ! यही तुमने कहा ना ?" कुछ सोचकर उसने पूछा।

बोनैसी इस प्रश्न पर काँप उठा, उसने सिटपिटाते हुए कहा—"यदि......यदि मैं उसे देखूँ तो शायद......।'

कर्मचारी ने डाटते हुए कहा—"बस ! आज के लिये इतना ही काफ़ी है ! सिपाहियो ! इसे जेल में बंद करो।"

बोनैसी बहुत रोया चिल्लाया परंतु सिपाही उसे घसीटते हुए ले गये।

दो दिन बाद एक दूसरा कर्मचारी बोनैसी के पास आया, दरवाज़ा खुलते ही बोनैसी को विश्वास हो गया कि उसको फाँसी-घर ले चलने के लिये जल्लाद आया है। परंतु कर्मचारी को देखकर उसको कुछ अधिक दिन जीने की आशा हुई।

कर्मचारी ने कमरे में प्रवेश करते ही कहा—"बोनैसी ! तुम्हारा मामला बहुत पेचीदा हो गया है। यदि अपनी जान बचाना चाहो तो मेरा उपदेश मानो। सच्चा-सच्चा सब हाल कह दो; क्योंकि पश्चाताप ही केवल अब तुम्हारी जान बचा सकता है।"

जीवन की आशा से प्रसन्न होकर बोनैसी ने कहा—"परंतु मैं तो हर एक बात बताने को तैयार हूँ। कोई पूछना तो चाहे। आपही पूछिये मैं बताता हूँ।"

कर्म०—"अच्छा ! पहले यह बताओ कि तुम्हारी स्त्री अब कहाँ है।"

बोनै०—"यह तो मैं पहले ही बतला चुका कि वह उड़ाली गई है ?"

कर्म०—"परंतु कल पाँच बजे शाम को वह बचकर भाग आई है।"

बोनै०—"भाग आई ! क्या वह कम्बख़्त भाग आई है ? यदि ऐसा है तो इसमें मेरा क्या अपराध ?"

कर्म०—"यह ठीक है ? परंतु तुम अपने पड़ोसी आर्तगान के पास क्या करने गये थे ?"

बोनै०—"हाँ ! यह मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं वहाँ गया था। परंतु मैं गया था अपनी स्त्री के ढूँढ़ने में मदद माँगने के लिये ? क्या यह मेरा कर्तव्य न था कि मैं अपनी स्त्री को ढूढ़ूँ ?"

कर्म०—"अच्छा ! तब आर्तगान ने क्या कहा ?"

बोनै०—आर्तगान ने मदद देने का बचन दिया। परंतु उसी क्षण मुझे यह मालूम हो गया कि वह मुझे धोखा दे रहा था।"

कर्म०—"ओह ! तुम यह झूठ बोलते हो। आर्तगान से और तुमसे सलाह हुई थी और उसी सलाह के अनुसार उसने उन सिपाहियों को मारकर भगा दिया, जो तुम्हारी स्त्री को फिर पकड़ने आये थे और उसको अब हम लोगों की पहुँच के बाहर कर दिया है।

बोनैसी चिल्ला पड़ा—"यह तुम क्या कहते हो ? क्या आर्तगान ने मेरी स्त्री को भगा दिया ?"

कर्म०—"सौभाग्य से आर्तगान हमारे पंजे में है, तुम्हारा उससे सामना करा दिया जायगा।"

बोनै०—"इससे अच्छी और क्या बात हो सकती है। इसी समय बुलवाइये ?"

कर्मचारी ने चपरासियों से कहा—"आर्तगान को इधर ले आओ।" चपरासियों ने अथास को उपस्थित कर दिया।

कर्मचारी ने अथास से कहा—"आर्तगान ! तुमसे और इससे जो कल बातचीत हुई थी, उसको कह डालो।"

बोनैसी ने चिल्लाकर कहा—"परंतु यह तो आर्तगान नहीं है ?"

कर्मचारी ने आश्चर्य से पूछा—"और ! तब यह कौन है ?"

बोनै०—"यह आर्तगान नहीं है। और यह कौन है ? यह मैं बिलकुल नहीं जानता।"

कर्मचारी का आश्चर्य बढ़ता जाता था; उसने फिर पूछा—"क्या तुमने इसको और कभी नहीं देखा ?"

बोनै०—"मैंने इसको देखा अवश्य ; परंतु इसके नाम से परिचित नहीं हूँ।"

तब कर्मचारी ने अथास की ओर देखा और उससे पूछा—"तुम्हारा क्या नाम है ?"

"अथास" अथास ने कहा।

प्रश्नकर्ता ने कहा—"परंतु यह तो मनुष्यों का नाम नहीं है, यह तो किसी पहाड़ का नाम मालूम होता है।"

अथास ने शांति से कहा—"परंतु मेरा नाम यही है।"

कर्मचारी—"परंतु तुमने तो अपना नाम आर्तगान बतलाया था ?"

अथास ने लापरवाही से कहा—"नहीं ! किसी ने मुझसे कहा था—'तुम आर्तगान हो !' मैंने उत्तर दिया—"तुमको क्या ऐसा विश्वास है ?" इसके अतिरिक्त और मैंने कुछ नहीं कहा। बस वे लोग मुझे पकड़ लाये।"

कर्मचारी ने कहा—"तुम न्यायालय का अपमान करते हो ? तुम्हीं आर्तगान हो !"

अथास ने उत्तर दिया—"लीजिये ! अब आप ही स्वयं कह रहे हैं कि मैं आर्तगान हूँ। इस पर मैं आपसे भी पूँछता हूँ कि क्या आपको इस पर विश्वास होता है ?"

बोनैसी—"यह मैं हज़ार बार सौगंध खाकर कह सकता हूँ कि यह मनुष्य आर्तगान नहीं है। यह त्रिबली की सेना का राज-सैनिक है और आर्तगान एसार्टगार्ड का सैनिक है ? क्या यह बात आपको अथास की पोशाक से नहीं मालूम होती ?"

इतना सुनकर कर्मचारी की आँखें खुल गईं, उसने अथास को नीचे

से ऊपर तक देखते हुए कहा—"ओह ! यह बात तो निस्संदेह सच है ?"

इसी समय एक नौकर ने कमरे में प्रवेश किया और कर्मचारी के हाथ में एक पत्र दिया। पत्र को पढ़ते ही कर्मचारी के मुख से निकल पड़ा—"आह। अभागी स्त्री।"

बोनैसी ने चौंककर कहा—"क्या ! यह आप क्या कहते हैं ? क्या यह मेरी स्त्री के विषय में तो नहीं है ?"

कर्म०—"हाँ ठीक ! उसीके विषय में है ! तुम्हारा सौदा बड़ा खरा है।"

बोनैसी ने करुणा-पूर्ण स्वर में कहा—"परंतु कृपा करके यह बता दीजिये कि मेरा खरा सौदा मेरी स्त्री के कारण कैसे बिगड़ गया ?"

कर्म०—"इसका कारण है, तुम्हारे और उसके बीच का षड्यंत्र।"

बोनैसी ने सिसकते हुए कहा—"नहीं ! नहीं ! मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कह सकता हूँ कि यह सब असत्य है। मैं अपनी स्त्री की कार्यवाहियों से नितांत अनभिज्ञ हूँ। यदि उसने कुछ मूर्खता की है; तो मैं उसका त्याग करता हूँ—तलाक़ देता हूँ और कभी भी उससे संबंध न रखने की प्रतिज्ञा करता हूँ। कृपया ! अब मुझे छोड़ दीजिये। केवल उसीके कारण मैं काफ़ी यंत्रणायें सहन कर चुका।"

परंतु कर्मचारी का ध्यान कहीं दूसरी जगह था। वह कुछ और ही सोच रहा था। इसी समय अथास ने कहा—"यदि अब मेरी कोई आवश्यकता न हो, तो मुझे जाने की आज्ञा दीजिये। यह तो निश्चय हो चुका कि मैं आर्तगान नहीं हूँ।"

कर्मचारी ने कुछ क्षण सोचकर चपरासियों को इशारा देते हुए कहा—"इन लोगों पर कड़ी निगाह रखना।" यह कहकर वह चला गया। अथास शान्ति के साथ चपरासियों के साथ हो लिया। बोनैसी का कमरा फिर बंद कर दिया गया।

तीसरे दिन बोनैसी के पास एक अफ़सर आया और उसको कमरे के बाहर ले जाकर एक बंद गाड़ी में बैठा दिया। कुछ क्षण के बाद अपने क़ैदी को लेकर, गाड़ी चल दी। रात का समय था, गाड़ी लगातार कई स्थान पर मुड़ती हुई दो घंटे तक चलती रही। बोनैसी की रही-सही जीवन की आशा भी जाती रही थी। उसको यह विश्वास हो गया था कि इस समय वह फाँसी-घर पहुँचाया जा रहा है। गाड़ी पर ही घुटने टेककर वह ईश्वर की अंतिम बंदना करने लगा। गाड़ी रुकी, बंदना समाप्त न करने का उसको असह्य दुःख था ही कि इसी समय उसने देखा कि यमदूत के समान कई भयङ्कर मनुष्यों ने आकर खिड़की का द्वार खोला। वह इतना भयभीत हो गया था कि इन लोगों को देखते ही एक चीख़ मार कर वह बेहोश हो गया।

१४

वो नैसी ने सचेत होने पर, अपने आप को एक सजे-सजाए कमरे में पाया। दीवारों पर अस्त्र-शस्त्र लटक रहे थे। एक ओर अँगीठी में आग जल रही थी। पास ही एक बड़ी मेज़ पड़ी थी। मेज़ पर मोटी-मोटी किताबें रक्खी थीं। मेज़ पर एक नकशा राशेल स्थान का खुला हुआ पड़ा था। मेज़ की एक तरफ़ कुर्सी पर अधेड़ अवस्था का एक पुरुष बैठा हुआ बड़े ध्यान से उस नक़शे को देख रहा था। इस पुरुष का चेहरा बहुत रोबीला था। क़द साधारण था; परंतु भरा हुआ होने के कारण बहुत पुष्ट था। तीक्ष्ण दृष्टि, चौड़ा माथा, उठी हुई मूछें और घनी भौं के कारण उसकी आकृति, अत्यंत गंभीर तथा अहंकार-पूर्ण प्रकट होती थी। सैनिक वेश तथा धूल से भरे हुए जूतों से यह साफ़ ज़ाहिर था कि वह अभी कहीं से लंबा सफ़र किये हुए आ रहा है। यही प्रसिद्ध पुरुष धर्माचार्य रिचलू था। अद्वितीय वीरता, साहस तथा राजनैतिक दूरदर्शिता के लिये यह पुरुष इतिहास में प्रसिद्ध है। इस समय वह राशेल से अँगरेज़ों को हटाने की चिंता में लगा था। राशेल पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया गया था। अब वह विजय प्राप्त करने

के अन्य साधनों के अनुसंधान के लिये राशेल के नक़शे का मनन कर रहा था। फ्रांस के अन्य स्थानों से अँगरेज़ हटा दिये गये थे। इसी स्थान से उनको हटाना बाक़ी था।

जो पुलिस-अफ़सर बोनैसी को धर्माचार्य के कमरे में छोड़ने आया था, वह अभी तक खड़ा था। जब धर्माचार्य ने नक़शे पर से निगाह उठाकर उसकी ओर देखा तो उसने आगे बढ़कर, हाथ जोड़ कर कहा—"हुज़ूर! अपराधी हाज़िर है।" बोनैसी की ओर दृष्टि डालकर धर्माचार्य ने पूछा—"क्या यही बोनैसी है?"

अफ़सर ने कहा—"जी हुज़ूर यही है?"

धर्माचार्य—"अच्छा! अब तुम जाओ और वह काग़ज़ात मुझको दे जाओ।"

अफ़सर ने कुछ काग़ज़ मेज़ पर जेब से निकाल कर रख दिये और अभिवादन करके वहाँ से चला गया।

बोनैसी को अफ़सर के वार्तालाप से जब यह मालूम हुआ कि वह धर्माचार्य के सामने है; तो फ़ौरन हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और आँखें फाड़-फाड़कर धर्माचार्य की ओर देखने लगा। उसने अपने जीवन में धर्माचार्य को कभी न देखा था। उसके शरीर में इस आशा ने प्राणों का संचार कर दिया कि शायद सच्चा हाल बतलाने और धर्माचार्य से क्षमा माँगने पर जीवन बच जाय। उसने देखा कि अफ़सर ने जो क़ाग़ज़ दिये थे वे जेल-कर्मचारी द्वारा लिये गये उसके लिखित बयान थे। क्षण भर में उनको देखकर धर्माचार्य ने कहा—"तुम्हारे ऊपर राजद्रोह का अपराध लगाया गया है।"

बोनैसी ने गिड़गिड़ाते हुये कहा—"हाँ! श्रीमान्! यह तो मुझे मालूम है; परंतु मैं शपथ-पूर्वक हूज़ूर से कह सकता हूँ कि मैं निरपराधी हूँ। मैंने कोई भी कार्य श्रीमान् के विरुद्ध नहीं किया। मेरे ऊपर यह तोहमत झूठी लगाई गई है।"

धर्माचार्य को बोनैसो की अवस्था पर हँसी आई। उसने कहा—"परंतु तुम अपनी स्त्री के साथ षड्यंत्र में शामिल हो। तुम्हारी स्त्री मैडम कैवरिस और वकिंघम के ड्यूक के साथ राजद्रोह में सम्मिलित है।"

बो०—"मैंने इन नामों को अपनी स्त्री के मुख से निकलते हुए अवश्य सुना है।"

धर्मा०—"किस अवसर पर?"

बो०—वह कहती थी कि धर्माचार्य रिचलू ने राजमहिषी और ड्यूक का सर्वनाश करने के लिये ड्यूक को पैरिस बुलाया है।"

धर्माचार्य ने चौंककर पूछा—"क्या उसने यह कहा था?"

बो०—"हाँ! और मैंने उस समय कहा था कि तुम झूठ बोलती हो। धर्माचार्य अत्यंत दया-पूर्ण हैं, वे ऐसा नहीं कर सकते।"

धर्माचार्य ने हँसी को रोककर पूछा—"तुम जानते हो कि तुम्हारी स्त्री को कौन उड़ा ले गया था?"

बो०—"नहीं!"

धर्मा०—"लेकिन तुमने किसी पर संदेह किया है?"

बो०—"परंतु वह संदेह जेल-कर्मचारी को बुरा मालूम हुआ इसलिये मुझे अब किसी पर भी संदेह नहीं है।"

इस उत्तर पर धर्माचार्य की हँसी न रुक सकी। उसने पूछा—"तुम्हारी स्त्री अब बचकर आगई है, यह तुमको मालूम है?"

"हाँ जेल में आकर कर्मचारी द्वारा यह बात मुझे मालूम हुई है।"

"तब तुमको यह नहीं मालूम कि तुम्हारी स्त्री अब कहाँ है?"

"सम्भव है! वह राज-महल लौटकर आई हो?"

"आज एक बजे दिन तक तो वह आई नहीं है।"

"ऐं! तब वह कहाँ चली गई?"

"यह हमको मालूम हुए बिना रह नहीं सकता। धर्माचार्य से कोई बात छिपी नहीं रह सकती।"

"तब श्रीमान् क्या कृपा करके मालूम होने पर मुझे भी बतला देंगे।"

"अवश्य, परंतु इस शर्त पर कि तुम मैडेम कैवरिस और उसके संबंध के विषय में जो कुछ जानते हो, मुझे बता दो ?"

"परंतु मैने तो उसे कभी देखा भी नहीं ?"

"क्या जब तुम अपनी स्त्री को राज-महल से वापस लेने जाते थे; तब क्या सीधे घर ही आते थे ?"

"नहीं! उसको कभी-कभी कपड़े-फ़रोशों से बातचीत करना होता था। इसके साथ मैं उनके मकान तक जाता था।"

"ये कपड़े फ़रोश कितने थे ?"

"दो।"

"वे कहाँ रहते हैं ?"

"वे बाजीरार्ड और हार्प नामक गलियों के क्रमशः २५ और ७५ नंबर के मकानों में रहते हैं!"

"क्या तुम इन घरों में उसके साथ अंदर जाते थे ?"

"कभी नहीं! मैं सदा उसकी बाहर प्रतीक्षा करता था।"

"तुमको मकान के अंदर वह क्यों नहीं ले जाती थी ?"

"यह तो मैं नहीं जानता। उसने मुझे कभी कारण नहीं बताया। मुझसे प्रतीक्षा करने को कहती थी और मैं प्रतीक्षा करता था। मैंने इसका कभी कारण नहीं पूछा।"

धर्माचार्य ने हँसकर कहा—"तब तो तुम यथार्थ में अत्यंत भोले पति हो।"

यह कहकर उसने घंटी बजाई। एक अफ़सर शीघ्र ही आकर हाज़िर हुआ। धर्माचार्य ने कहा—"जाओ! शीघ्र राकफ़ोर्ट को मेरे पास ले आओ। वह लौटकर अवश्य आ गया होगा।"

अफ़सर ने कहा—"हुज़ूर वह तो बाहर उपस्थित है। आज्ञा हो तो अभी बुला लूँ।" धर्माचार्य ने कहा—"शीघ्र बुलाओ।"

अफ़सर चला गया और थोड़ी देर में एक नये, लंबे-शरीरधारी व्यक्ति को लिवा लाया।

इस अपरिचित व्यक्ति पर दृष्टि पड़ते ही बोनैसी चौंक कर चिल्ला उठा—"यह वही है! हुज़ूर! यह वही है?"

धर्माचार्य ने कहा—"क्या! क्या यह वही है?"

यह कहकर उसने दुबारा घंटी बजाई। अफ़सर फिर वापस आ गया। धर्माचार्य ने बोनैसी की ओर इशारा करते हुए कहा—"इस अपराधी को अभी और हिरासत में रक्खो, बुलाने पर फिर हाज़िर करना।"

बोनैसी धर्माचार्य के पैरों पर गिर पड़ा और रोकर कहने लगा—"नहीं, हुज़ूर यह वह नहीं है। मैं शपथ खाकर कहता हूँ, यह वह नहीं है! मैंने पहचानने में भूल की है।" परंतु इस रोने पर कुछ भी ध्यान न देकर धर्माचार्य ने तीव्र स्वर में कहा—"इस मूर्ख को यहाँ से ले जाओ।" अफ़सर ज़बरदस्ती घसीटता हुआ बोनैसी को ले गया। बोनैसी के चले जाने के बाद राकफ़ोर्ट ने कमरे में प्रवेश किया। आते हो धर्माचार्य से उसने कहा—"उन दोनों की भेंट हो गई?"

धर्मा०—"किनकी?"

राक०—"ड्यूक और राजमहिषी की।"

धर्माचार्य ने आश्चर्य में होकर पूछा—"कहाँ?"

राक०—"राज-महल में।"

धर्मा०—"क्या तुमको इसका निश्चय है?"

राक०—"पूर्णतया"

धर्मा०—"यह समाचार किसके द्वारा मिला?"

राक०—"मैडेम लेनाय से। वह आपकी परम भक्त है।"

धर्मा०—"तब उसने मुझे पहले से क्यों नहीं ख़बर दी?"

राक०—"राजमहिषी बड़ी चालाक है। उसने जानकर उसे अपने सोने के कमरे में बैठा रक्खा था और यह आदेश दे दिया था कि मैं जब तक लौटकर न आऊँ, तब तक यहाँ से न हटना। इसके बाद भी उसको दिन भर अपने पास रोक रक्खा।"

धर्मा०—"हम लोगों के सारे प्रयत्न निष्फल हो गये। परंतु इसका बदला अवश्य लेना होगा।"

राक०—मैं श्रीमान् को सब प्रकार से सहायता दूँगा। बदला अवश्य लिया जायगा।

धर्मा०—"आख़िर यह भेंट हुई किस प्रकार ?"

राक०—"साढ़े बारह बजे के लगभग; जबकि राजमहिषी अपनी परिचारिकाओं के साथ अपने सोने के कमरे में थी, किसी व्यक्ति ने आकर एक रेशमी रूमाल राजमहिषी को दिया। रूमाल को देखकर ही राजमहिषी का चेहरा लाल हो गया था। वह झटपट उठ खड़ी हुई और परिचारिकाओं से यह कहकर कि जब तक मैं लौट न आऊँ, तब तक यहीं रहना। फ़ौरन कमरे के बाहर हो गई।"

धर्माचार्य ने बीच में रोककर कहा—"मैडम लेनाथ उसी समय मेरे पास क्यों नहीं चली आई ? उसकी इस भूल ने सारा मामला चौपट कर दिया।"

राक०—"निश्चित रूप से कुछ भी मालूम न था। इसके अतिरिक्त राजमहिषी की आज्ञा को उल्लंघन करना साधारण दासी का काम नहीं है।"

धर्मा०—"कितनी देर तक राजमहिषी कमरे के बाहर रहीं ?"

राक०—"पौन घंटे के लगभग वह लौट आई; परंतु अपने नाम की चंदन की संदूकची लेकर फिर वापस चली गई।"

धर्मा०—और क्या अंतिम बार लौटने पर वह संदूकची रानी के पास थी ?"

राक०—"नहीं !"

धर्मा०—तुमको यह मालूम हुआ कि उस संदूक़ची में क्या था ?"

राक०—"उसमें वे हीरे थे, जो राजा ने उसको दिये थे।"

धर्मा०—"तब वे हीरे कहाँ गये ?"

राक०—"मैडेम लेनाय कहती थीं कि वे शायद ड्यूक को दे दिये गये हैं। लेनाय का काम राजमहिषी को वस्त्राभूषण पहनाना और उनकी रक्षा करना है। उसने उनको ढूँढ़ा और न पाकर चिंतित होकर, राजमहिषी से पूछा था। राजमहिषी ने बतलाया कि उनमें-से एक टूट गया है; इसलिये बनवाने के लिये मैंने सुनार के पास भेजे हैं। परंतु सुनार से पूछने पर मालूम हुआ कि यह बात ग़लत है।

धर्माचार्य का चेहरा चमक उठा। उसने कहा—"अच्छा! तब तो अभी कुछ नहीं बिगड़ा है और शायद जो कुछ हुआ है उसमें भी एक अच्छाई है। यह जानते हो कि मैडेम कैवरिस और ड्यूक कहाँ छिपे हुये हैं।"

राक०—"नहीं.? इस विषय में मेरे जासूस बिलकुल अनभिज्ञ हैं।"

धर्मा०—"मैं जानता हूँ? उनमें से एक वाजीरार्ड गली के २५ नंबर के मकान में छिपा हुआ है और दूसरा हार्प गली के ७५ नंबर के मकान में।"

राक—"तब क्या श्रीमान् का यह अभिप्राय है कि वे दोनों शीघ्र गिरफ़्तार कर लिये जायँ ?"

धर्मा०—"आह! इसके लिये तो काफ़ी देर हो चुकी, वे दोनों अब तक पैरिस के बाहर हो चुके होंगे।"

राक०—"परंतु तिस पर भी यह निश्चित हो जाना आवश्यक है।"

धर्मा०—"ठीक है। मेरी गारद के १० सैनिकों को ले जाओ।" राकफ़ोर्ट आदेश पाकर फ़ौरन चला गया।

धर्माचार्य ने फिर घंटी बजाई। अफ़सर आकर हाज़िर हुआ—उससे कहा—"अपराधी को यहाँ ले आओ।" बोनैसो सामने लाकर खड़ा कर दिया गया। धर्माचार्य ने तीखे स्वर में कहा—"तुमने धोखा दिया।"

बोनैसी ने काँपते हुए आश्चर्य से कहा—"मैंने धोखा दिया। क्या मैं श्रीमान् को कभी धोखा दे सकता हूँ?"

धर्मा०—"तुम्हारी स्त्री कपड़े-फ़रोशों के पास उन मकानों में नहीं जाती थी?

बो०—"तब वह और किस लिये जाती थी?"

धर्मा०—"वह ड्यूक और मैडैम कैवरियस से भेंट करने जाया करती थी।"

बोनैसी ने पिछली घटनायें याद करके कहा—"श्रीमान् ठीक कहते हैं? वह अवश्य इसी लिये जाती होगी। मैंने कई बार उससे कहा था कि यह अत्यंत आश्चर्य-जनक है कि कपड़े-फरोश इतने विशाल और सुंदर मकानों में रहते हैं? परंतु मेरी इस बात को वह हमेशा हँसकर टाल देती थी।" बोनैसी धर्माचार्य के पैरों पर गिर पड़ा और रोकर कहने लगा—"श्रीमान् की दृष्टि अत्यंत तीच्ण है। श्रीमान् सच्चे धर्माचार्य हैं, महान् हैं और प्रतिभा-सम्पन्न हैं। इन्हीं कारणों से संसार श्रीमान् की पूजा कर रहा है? श्रीमान् इसी भाँति मेरे ऊपर भी उदारता दिखावें।"

धर्माचार्य आत्म-प्रशंसा से प्रसन्न हो उठा, अपने हाथ से बोनैसी को उठाते हुए कहा—"उठो, अपनी यन्त्रणाओं को भूल जाओ, आज से तुम मुक्त हुए।"

मुक्ति की आज्ञा सुनकर बोनैसी आनन्द से पागल हो गया। सहस्त्रों बार धर्माचार्य के पैरों की मिट्टी को चूमा और चिल्ला उठा—"धर्माचार्य की जय हो! महान् धर्माचार्य की जय हो!"

धर्माचार्य ने सौ मुद्राओं की एक थैली बोनैसी को देकर कहा— "तुम्हारी परीक्षा का यह इनाम है, तुम्हारे कष्टों का यह पुरस्कार है, अब तुम ख़ुशी-ख़ुशी घर जा सकते हो, आवश्यकता पड़ने पर मैं तुमसे भेंट करूँगा।"

जीवन रक्षा और ऊपर से अप्रत्याशित धन के मिलने से बोनैसी के हर्ष का वारापार न रहा, उसने कहा—"श्रीमान् की सेवा के लिये मैं सदा प्रस्तुत रहूँगा।" अनेक आशीर्वाद देता हुआ कमरे के बाहर चला गया।

इसके पश्चात् धर्माचार्य रास्ते के मान-चित्र को फिर ध्यान से देखने लगा। थोड़ी ही देर में राकफ़ोर्ट ने कमरे में प्रवेश किया।

धर्माचार्य ने दृष्टि उठाकर उत्सुकता के साथ पूछा—"कहो! क्या मालूम हुआ?"

राक०—"श्रीमान् का अनुमान ठीक निकला। एक स्त्री और एक पुरुष उन्हीं मकानों में ठहरे थे। स्त्री पिछली रात को मकान छोड़कर चली गई और पुरुष आज सुबह गया है।"

धर्मा०—"ये वही थे! आह! अब तक वे दोनों लंदन पहुँच गये होंगे?"

राक०—श्रीमान् अब क्या आदेश देते हैं?"

धर्मा०—"इस घटना के विषय में बिलकुल चुप रहना चाहिए। रानी को यह पता कभी भी न लग सके कि हम इस रहस्य को जानते हैं। मेरे पास मोहर-रक्षक को भेज दो।"

राकफ़ोर्ट आदेश पाकर चला गया।

एकान्त होने पर धर्माचार्य ने एक पत्र लिखा। उसपर अपनी मोहर लगाई और तब घंटी बजाई। अफ़सर आकर हाज़िर हो गया। उससे कहा—"वीट्रे को मेरे पास भेजो। उससे कहना कि एक लंबी यात्रा के लिये तैयार होकर आवे।"

थोड़ी देर में वीट्रे आ गया। धर्माचार्य ने कहा—"तुमको अभी लंदन जाना होगा। मार्ग में एक मिनट के लिये भी कभी न रुकना। इस पत्र को लंदन पहुँचकर म्लैडी को दे देना। छः दिन के अंदर यहाँ वापस आ जाना। इस चेक के अनुसार ख़ज़ाने से रुपया ले लेना। काम में सफल होने पर वापसी में इतना ही इनाम फिर मिलेगा।"

वीट्रे ने बिना कोई उत्तर दिये, पत्र और चेक ले लिया और अभिवादन करके चला गया।

पत्र में लिखा था :—

"म्लैडी

ड्यूक आफ़ बकिंघम जिस पहले नाच में जावे, उसमें तुम अवश्य सम्मिलित होना। वह अपने कोट में बारह हीरे लटकावेगा। जितना निकट उसके पहुँच सको, पहुँचो और उनमें-से दो को किसी उपाय से अवश्य काट लो। इन हीरों को अपने क़ब्ज़े में कर लेने पर मुझे शीघ्र सूचना दो।"

१५

इस घटना के दूसरे ही दिन सेना-नायक त्रिबली को जब यह समाचार मिला कि अथास अकारण ही धर्माचार्य के इशारे से गिरफ़्तार कर लिया गया है, तो वह क्रोध के मारे आग-बबूला हो गया। आपे से बाहर होकर वह सीधा राजा के पास पहुँचा, राजा उस समय धर्माचार्य से वार्तालाप कर रहा था। राजा को धर्माचार्य ने पहले ही से राज-सैनिकों के विरुद्ध भर दिया था। त्रिबली के प्रवेश करते ही राजा ने स्वयं ही कहा—"तुम बहुत ठीक समय पर आये, मैं तुमको बुलानेवाला ही था। तुम्हारे सैनिकों के विषय में मैंने कुछ नवीन बातें सुनी हैं।"

त्रिबली इस प्रश्न के लिये पहले ही से तैयार था। उसने निडर होकर कहा—"और हुज़ूर इन पादरियों के सम्बन्ध में मुझे भी बहुत कुछ कहना है।"

राजा ने चकित होकर पूछा—"क्या?"

त्रिबली—मुझे हुज़ूर से निवेदन करना है कि इन लोगों ने पुलिस और सैनिकों के अधिकारों को हथिया कर, निरीह प्रजा के घरों में घुस कर अनीति करना प्रारम्भ कर दिया है। मेरे राज-सैनिक अथास को

जिसका नाम हुज़ूर को स्मरण होगा ? बिना किसी अधिकारी की न्याय-पूर्ण आज्ञा के इन लोगों ने उसकी राज-भक्ति तथा असंदिग्ध चरित्र की पूरी उपेक्षा करके केवल राज-न्याय का अपमान करने के लिये गिरफ़्तार कर लिया है। क्या कोई भी व्यक्ति यह बतला सकता है कि किस गुरुतर अपराध के कारण उसकी ख्याति को कलंकित किया जा रहा है। वह अपने मित्र से भेंट करने के लिये गया हुआ था। उसका मित्र कहीं बाहर था, अथास वहीं बैठकर प्रतीक्षा करने लगा, बस उसी समय गिरफ़्तार कर लिया गया, तो क्या अपने किसी मित्र से मिलने जाना भी अपराध है ?"

धर्माचार्य ने राजा से चुपके से कहा—"यह सब उसी मामले के सम्बन्ध में हुआ है, जिसका मैं अभी ज़िक्र कर चुका हूँ।"

राजा ने त्रिबली से कहा—"मुझे सब मालूम है। जो कुछ हुआ है, वह सब राज्य के हित के लिये ही हुआ है।"

त्रिबली ने और भी तेज़ पड़कर कहा—"और क्या यह भी राज्य ही के हित के लिये हुआ है कि वह राज-सैनिक जिसने हुज़ूर के लिये कई बार अपना ख़ून पानी की तरह बहाया है, जिसका हृदय असीम राज-भक्ति का आगार है और जिसने प्राणों की बाज़ी लगाकर अनेक बार राजा के गौरव की रक्षा की है। उसको साधारण बन्दी की भाँति क़ैद करके अगणित यन्त्रणायें पहुँचाई जायँ और आम जनता में घुमाकर उसकी दुर्दशा की जाय ?"

राजा इसको सुनकर काँप उठा। उसने धर्माचार्य की ओर तीक्ष्ण दृष्टि करके धीरे से पूछा—"क्या ऐसा भी हुआ है ?"

धर्माचार्य ने राजा को हाथ से निकले जाते देखकर आन्तरिक व्यग्रता को छिपाकर कहा—"त्रिबली ने श्रीमान् को यह नहीं बतलाया कि इस निरपराधी राज-सैनिक ने एक घंटा पेश्तर ही नंगी तलवार लेकर न्याय-कर्मचारियों पर, जो इस मामले की तहक़ीकात करने आये थे, आक्रमण करके न्याय की पूर्ण अवहेलना की है।"

त्रिबली का शरीर क्रोध से जलने लगा, उसने चिल्लाकर कहा—"मैं धर्माचार्य को चैलेंज देता हूँ कि वह इसको साबित कर दें। इस घटना के ठीक एक घंटा पेश्तर यह राज-भक्त और सत्यव्रती सैनिक ट्रीमादल तथा अन्य प्रतिष्ठित रईसों के साथ मेरे यहाँ दावत में शामिल था।"

राजा ने धर्माचार्य की ओर देखा। धर्माचार्य के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं। परंतु वह फिर सँभला और कहा—"अथास के यह लिखित उत्तर मेरे कथन को पुष्ट करते हैं। श्रीमान् स्वयं इनको देख सकते हैं।"

त्रिबली ने गर्म पड़कर कहा—"क्या एक पादरी की लिखी हुई रिपोर्ट एक सैनिक के वचनों की अपेक्षा अधिक विश्वास के योग्य है?"

"अगर एक राजसैनिक के चरित्र पर किसी प्रकार का संदेह किया जाता है, तो मैं कहूँगा कि धर्माचार्य के भी इस कार्य की पूरी तहक़ीक़ात होनी चाहिए।"

धर्माचार्य अब भी हार मानने को तैयार नहीं था। उसने कहा—"क्या आर्तगान भी इस अपराध से बरी हो सकता है कि उसने अथास को राजद्रोह के लिये भड़काया है? आर्तगान यह वही युवक है ना; जिस पर तुम्हारी कृपा-दृष्टि सदा रहती है?"

त्रिबली ने त्यौरी बदल कर कहा—"हाँ! यह वही युवक है, जिसने जोज़ेक और वर्नेज जैसे अद्वितीय पहलवानों को मुँह की खिलाई है! परंतु यह भी सफ़ेद झूठ है? आर्तगान उस रात को मेरे ही पास था।"

धर्माचार्य ने चिढ़कर कहा—"तब मालूम होता है, सभी लोग उस रात को तुम्हारे पास थे?"

इन शब्दों ने आग बरसा दी। त्रिबली ने पैर पटक कर कहा—"तो क्या धर्माचार्य मुझको झूठा समझते हैं?" त्रिबली के नेत्रों से

आग की चिनगारियाँ निकल रही थीं। धर्माचार्य सिटपटा कर चुप हो गया। राजा धर्माचार्य के इस अपमान पर मन-ही-मन प्रसन्न था; क्योंकि और बातों में तो वह धर्माचार्य का परम-भक्त था; परंतु सेना-संबंधी मामले में धर्माचार्य और राजा में बड़ी होड़ा-होड़ थी। अपने सैनिक की गिरफ़्तारी पर वह भी भीतर से जल उठा था; परंतु राजा होने के कारण प्रकट में उसको न्याय का मान रखना पड़ता था। इस बार भी अपना ही पल्ला भारी होते देखकर वह हर्षित हुआ। उसने शांति से कहा—"तो अब इसका निर्णय किस प्रकार हो ?"

धर्माचार्य ने बिगड़ी बात को सँभालने के लिये कहा—"श्रीमान् को सभी अधिकार प्राप्त हैं। श्रीमान् क्षमा प्रदान कर सकते हैं ?"

त्रिबली ने ज़ोर से कहा—"क्षमा प्रदान ! क्षमा प्रदान उसको किया जाता है धर्माचार्य ! जिससे कुछ अपराध हो जाता है। मेरा सैनिक बिलकुल निर्दोष है। न्याय की रक्षा तभी हो सकती है, जब दूध-का-दूध और पानी-का-पानी कर दिया जाय। अथास को शीघ्र छुटकारे का आदेश होना चाहिए। राज्य के लिये यह अपमान की बात है कि केवल अपनी इच्छा की तृप्ति के लिये ही किसी के सम्मान को अकारण ही नष्ट किया जाय।"

यह शब्द यथेष्ट निर्भीक थे। सत्य होने के कारण धर्माचार्य को ख़ून का-सा घूँट पीकर रह जाना पड़ा। राजा ने स्थिति को समझकर कहा—"धर्माचार्य ! मैं समझता हूँ अथास को मुक्त करने में आपको कोई आपत्ति न होगी। मैं उसको मुक्त करता हूँ, यदि आवश्यकता पड़े, तो न्यायालय के समक्ष उसको उपस्थित करने के लिये त्रिबली ज़ामिन रहेगा। देखो त्रिबली ! यदि कभी भविष्य में कोई बात तुम्हारे सैनिक के विरुद्ध सुनी गई तब नियमानुकूल अभियोग द्वारा इसका निर्णय किया जायगा।"

इस विजय पर त्रिबली का हृदय आनंद से भर गया। उसने

अत्यंत झुककर राजा को अभिवादन किया और धर्माचार्य की ओर गर्व-पूर्ण नेत्रों से देखता हुआ अथास को मुक्त कराने के लिये चल दिया। धर्माचार्य का मुँह सूख गया था। जीवन में ऐसी हार उसको कभी न हुई थी।

परन्तु धर्माचार्य राजा की प्रवृत्ति से ख़ूब परिचित था। अपनी पराजय के प्रभाव को नष्ट करने और राजा पर अपना रंग चढ़ाने के लिये उसने वार्तालाप के विषय को बदलते हुए कहा—"श्रीमान् इन साधारण घटनाओं पर ध्यान न देकर महत्वपूर्ण घटनाओं पर विचार करें। राजनीति में हम लोगों की दृष्टि बहुत तीक्ष्ण होनी चाहिए। श्रीमान् ने सुना होगा कि ड्यूक आफ़ बकिंघम पाँच दिन पैरिस में रहा है और आज ही प्रातःकाल यहाँ से रवाना हुआ है।"

इस समाचार ने राजा पर अच्छा प्रभाव डाला। उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया; परन्तु सहसा किसी विचार ने उसके पीलेपन को क्रोध जनित लालिमा में परिणत कर दिया, उसने आश्चर्य से चिल्ला कर कहा—"ड्यूक पैरिस में आया! क्यों? उसका क्या अभिप्राय था?" धर्माचार्य नेदे खा कि उसका निशाना ठीक बैठा, कहा—"श्रीमान् के शत्रुओं के साथ षड्यंत्र रचने के अतिरिक्त और क्या अभिप्राय हो सकता है?"

राजा यह जानता था कि स्पेनवाले और नवीन धर्म के समर्थक फ्रांस के दुश्मन हैं। परंतु वह यह भी जानता था कि राजमहिषी ड्यूक से प्रेम करती है। अतएव उसने विचार किया कि ड्यूक की इस यात्रा का रहस्य राजमहिषी से प्रेम-भेंट करने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता। धर्माचार्य की बात का सुनकर कहा—"नहीं! नहीं! उसका अभिप्राय मेरी कीर्ति पर मैडेम कैवरिस, मैडेम लांगवील और काण्डी के षड्यंत्र द्वारा धब्बा लगाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सकता।"

धर्माचार्य ने कहा—"ओफ़ ! श्रीमान्, क्या विचार करते हैं ? महारानी का चरित्र अत्यंत उज्ज्वल है। इसके अतिरिक्त वह श्रीमान् पर प्रेम भी अधिक करती हैं।"

राजा—"धर्माचार्य ! रमणी की जाति अत्यंत धूर्त होती है। राजमहिषी मुझसे कितना प्रेम करती है ? यह मैं अच्छी तरह जानता हूँ।"

धर्मा०—"परन्तु मेरी यही धारणा है कि ड्यूक की इस यात्रा के अंतर्गत राजनीतिक उद्देश्य छिपा हुआ है ?"

राजा—"और मेरा यह पूरा विश्वास है कि ड्यूक राजमहिषी कारण ही यहाँ आया था।"

धर्मा०—"यह हो सकता है। क्योंकि मुझे मैडैम लेनाय के द्वारा यह पता चला है कि गत रात्रि को राजमहिषी बहुत देर तक जागती रही थीं। उनके नेत्रों से आँसू जारी थे और वह बहुत रात तक कोई पत्र लिखती रही थीं।"

राजा—"ओह ! तब यह पत्र अवश्य ड्यूक को लिखा गया होगा ? इस पत्र को मुझे अपने अधिकार में शीघ्र ही करना चाहिए।"

धर्मा०—"परंतु यह हो कैसे सकता है ? न तो मैं और न श्रीमान् ही राजमहिषी से पत्र लेने के कार्य का स्वयं सम्पादन कर सकते हैं।"

राजा—"किसी भी उपाय से हो, मैं वह पत्र अवश्य हस्तगत करूँगा।"

धर्मा०—"परंतु श्रीमान् ! यह राजमहिषी के गौरव के लिये अत्यंत अपमान-जनक बात होगी।

राजा—"गौरव ! गौरव तो पहले ही नष्ट हो गया। राजमहिषी को इससे भी अधिक दंड दिया जायगा।"

राजा के क्रोध को बढ़ते देखकर, धर्माचार्य हृदय में अत्यंत प्रसन्नता अनुभव कर रहा था। उसके इष्ट-कार्य की सिद्धि के लिये यह अत्यंत

आवश्यक था। क्रोध की प्रज्ज्वलित अग्नि में ईंधन डालते हुए उसने गंभीर होकर कहा—"मैं श्रीमान् से प्रार्थना करूँगा कि राजमहिषी निष्कलंक हैं। अतएव उनके गौरव को इस प्रकार.........." राजा का क्रोध उबल पड़ा, नेत्र लाल हो गये। अत्यंत तीव्र-स्वर में उसने कहा—"धर्माचार्य! मालूम होता है तुम भी इस षड्यंत्र में सम्मिलित हो! अन्यथा प्रत्येक स्थल पर मेरी इच्छा का विरोध न करते? मेरे क्रोध की आग से अब कोई भी राजमहिषी को नहीं बचा सकता।

वाक्पटु चतुर धर्माचार्य ने भयभीत होकर कहा—श्रीमान्, मैं इस लाञ्छन का पात्र किसी प्रकार भी नहीं हूँ। मेरा अभिप्राय राजमहिषी की रक्षा करना कभी नहीं है, मैं अपने शब्दों के लिये स्वयं लज्जित हूँ।"

राजा ने शांत होकर कहा—"मैं स्पष्ट कह चुका हूँ कि उस पत्र को मैं अवश्य हस्तगत करूँगा।"

धर्माचार्य—"इसका केवल एक उपाय है। मोहर-रक्षक सीगर को इस कार्य का भार सौंपा जाय। वही राजमहिषी की तलाशी लेने के लिये उचित पात्र है।"

राजा—"यही ठीक है। उसको शीघ्र बुलाओ।"

धर्मा०—"वह संभवतः मेरे मकान पर होगा। मैंने उसको बुलवाया था। वह अभी उपस्थित होता है। उसके द्वारा यह कार्य हो तो सकता है; परंतु एक कठिनाई है।"

राजा ने चौंककर पूछा—"वह क्या?"

धर्मा०—"राजमहिषी संभवतः उसकी आज्ञा का पालन न करें।"

राजा की भौंहें फिर टेढ़ी पड़ गईं। उसने पूछा—"क्या? क्या रानी मेरी आज्ञाओं का उल्लंघन करेगी?"

धर्मा०—"वह यह किस प्रकार जानेगी कि यह श्रीमान् की आज्ञायें हैं! श्रीमान तो स्वयं जाकर आज्ञा दिया करते हैं।"

राजा—"तब मैं स्वयं ही जाकर यह कहे आता हूँ कि सीगर मेरी अमुक आज्ञाओं का पालन करने आवेगा।"

रानी को साधारण सेवक द्वारा अपमानित और तिरस्कृत करने के सब विधान को रचकर, धर्माचार्य बहुत प्रसन्न हुआ। राजा शीघ्र ही उठकर राजमहल की ओर चले गये। धर्माचार्य अपनी अभिलाषा की पूर्ति के आनंद में निमग्न हो गया। तेरहरवाँ लुई आस्ट्रिया की रानी ऐन के कमरे की ओर चल दिया।

रानी अपनी परिचारिकाओं के साथ कमरे में एक पलँग पर लेटी हुई थी। एक सेविका निकट ही बैठी हुई उपन्यास पढ़कर सुना रही थी। सब की दृष्टि में रानी का ध्यान उपन्यास की घटनाओं की ओर लगा था; परंतु यथार्थ में उसकी विचार-धारा कहीं अन्यत्र ही प्रवाहित हो रही थी। वह सोचती थी कि राजा उसका तिरस्कार करते हैं, धर्माचार्य उसको संदेह की दृष्टि से देखते हैं और साधारण जनता भी उसपर विश्वास नहीं करती। कितना घोर दारुण दुःख है। हृदय का प्रेम सिमट-सिमटकर शून्याकार हो गया है। सहानुभूति और सहृदयता के भाव उसके लिये आकाश-कुसुम है। वह अपने चारों ओर धोखा, जाल और प्रवंचना ही देख रही है। कोई भी ऐसा नहीं, जिसके आगे वह अपना जी खोलकर रख सके। इन विचारों ने जब परिस्थिति की भीषणता उसके आगे चित्रित की; तो राजमहिषी के नेत्रों में आँसू भर आये। इन आसुओं में कितनी वेदना थी, कितना तिरस्कार था—इसको देखनेवाला वहाँ कोई भी न था।

ठीक इसी समय जब रूमाल आँखों पर रक्खे, दूसरों की दृष्टि में राजमहिषी सोने का बहाना करती हुई आँसू पोंछ रही थी, लूई ने कमरे में प्रवेश किया। सब परिचारिकायें अदब से उठकर खड़ी हो गईं। रानी भी पलँग छोड़कर खड़ी हो ही रही थी कि राजा ने

सहसा अशिष्ट होकर कहा—"तुम्हारे पास अभी सीगर आवेगा, जो तुमको मेरी कुछ आज्ञायें सुनायेगा।"

भाग्यहीना रानी के लिये ये 'कुछ आज्ञायें' तलाक़, देश निकाला दारुण तिरस्कार आदि सभी कुछ हो सकती थीं। वह सकते की हालत में ही खड़ी रह गई। कुछ क्षण बाद हृदय को दबाकर पूछा—"परंतु वह कौन-सी आज्ञायें हैं; जिनको आप स्वयं न कहकर, अन्य व्यक्ति द्वारा कहलाना उचित समझते हैं?"

परंतु इस प्रश्न को अच्छी प्रकार बिना सुने ही राजा वैसे ही उलटे पैरों लौट पड़े। रानी हतबुद्धि-सी ज्यों-की-त्यों खड़ी रह गई। इसी समय दरवाज़ा खोलकर एक दासी ने सीगर के आने की सूचना दी। मुस्कराते हुए सीगर ने कमरे में प्रवेश किया।

सीगर धर्माचार्य की कृपा से एक अत्यंत पतित अवस्था से न्यायाधीश के पद पर पहुँचा था। जन्म से ही क्षुद्र होने के कारण नीचता उसके स्वभाव का अंग बन गई थी। धर्माचार्य की स्वार्थ-सिद्धि में इस व्यक्ति से बड़ा काम निकलता था। न्यायाधीश के आसन पर बैठकर न्याय की विभूति का दान वह किस प्रकार करता था, यह पेरिस के निर्दोष अपराधी भली-भाँति जानते थे। धर्माचार्य की सिफ़ारिश पर ही राजा ने इस ऊँचे पद पर इसकी नियुक्ति की थी। मधुर-भाषण हृदय की नीचातिनीच संकीर्णता, कठोरता और अहंकार की भावनाओं पर पर्दा डाले था। राजमहिषी को अपमानित करने के लिये इससे बढ़कर उपयुक्त व्यक्ति पेरिस में और न था। राजा के आदेश को सुनकर अभिमान और परि-पीड़न के क्रूर भाव उसके हृदय में जाग्रत हो गये। उसने प्रसन्नता-पूर्वक इस कार्य के सम्पादन को स्वीकार कर लिया।

सीगर को आते देख राजमहिषी अपने पलँग पर जा बैठी और अत्यन्त शान्ति से आदेश-व्यंजक स्वर में कहा—"सीगर! तुम किस इच्छा से यहाँ आये हो?"

सीगर ने नम्रतापूर्वक कहा—"मैं राजा की आज्ञानुसार राजमहिषी के काग़ज़-पत्रों की तलाशी लेने के लिये भेजा गया हूँ।"

रानी के चेहरे का रंग पीला पड़ गया। उसने क्रोध-मिश्रित आश्चर्य के साथ कहा—"मेरे काग़ज़ पत्रों की तलाशी! निश्चय ही यह मेरा अपमान है।"

सीगर—"मैं इस धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ। कर्त्तव्य मुझे इस कार्य के लिये विवश करता है। आप स्वयं ही देख चुकी हैं कि राजा ने ऐसी ही आज्ञा दी है।"

क्रोध को दबाकर रानी ने एक परिचारिका की ओर इशारा करते हुए कहा—"स्टेफ़ेनिया! इनको तालियाँ दे दो? सीगर! जी खोलकर तलाशी ले लो। मैं तो अभियुक्ता ठहरा ही दी गई हूँ।"

सीगर ने अत्यंत सम्मान के साथ कुंजियाँ ले लीं और यह भली-भाँति जानते हुए भी कि अभिलक्षित पत्र दफ़्तर के किसी भी स्थान में रानी ने न रक्खा होगा। प्रत्येक अलमारी और संदूक़ खोल-खोलकर देखा-भाला। कई बार खोजने पर भी जब वह पत्र न मिल सका तब दिखावटी संकोच को त्यागकर, अत्यंत साहस के साथ राजमहिषी के समीप पहुँच कर सीगर ने कहा—"राजा को यह निश्चित-रूप से मालूम है कि एक पत्र आज लिखा गया है और यह भी मालूम हो चुका है कि अभी यह पत्र भेजा नहीं गया। यह पत्र मेज़, अलमारी या किसी संदूक़ में नहीं है, अतएव अब यह निश्चित् रूप से जहाँ पर है, उसकी भी तलाशी लेनी होगी?"

रानी तलाशी के समय पलँग से उतर कर खड़ी हो गई थी। सीगर को अपने समीप आकर ये शब्द कहते हुए सुनकर रानी सहसा भयभीत होकर पीछे हट गई। उसके चेहरे पर सफ़ेदी छा गई। सीगर की नीच निर्भीकता से डरकर उसने चिल्लाकर कहा—

"क्या ! क्या तुम अपनी राजमहिषी पर भी हाथ उठाने की धृष्टता के लिये तैयार हो ?"

सीगर ने धीरे से कहा—"राजमहिषी ! मैं राजा का आज्ञाकारी सेवक हूँ। उनके आदेश का उल्लंघन नहीं कर सकता।"

रानी ने चिढ़कर कहा—"क्यों नहीं ! धर्माचार्य के जासूस से बढ़कर राजा की आज्ञा का और कौन पालन कर सकता है ?" मैंने आज पत्र लिखा है और वह पत्र अभी भेजा भी नहीं गया है। तो क्या तुम जानना चाहते हो कि वह पत्र कहाँ है ? वह यहाँ रक्खा है।" यह कहते हुए रानी ने अपने सुंदर हाथों को अपने वक्षस्थल पर रक्खा।

सीगर ने क्षुब्ध होकर कहा—"तब कृपया वह पत्र दे दीजिये।"

रानी ने चिल्लाकर कहा—"असंभव ! वह पत्र राजा के अतिरिक्त और किसी को नहीं मिल सकता ?"

सीगर—"राजमहिषी ! आपके प्रति यथोचित समान प्रदर्शित करते हुए भी मैं यह कहने के लिये विवश हूँ कि इस पत्र को आपके शरीर से भी ले लेने की मुझको आज्ञा मिल चुकी है।"

राजमहिषी ने आँखें फाड़कर कहा—"क्या ! क्या साधारण स्त्री की भी मर्यादा का उल्लंघन करने के लिये तुम उद्यत हो ? यह कितना नीच काम है, कितना घृणित है। यह तुम जानते हो ?"

सी०—"राजा की ऐसी ही आज्ञा है। मैं व्यक्तिगत रूप से इसको क्षमा चाहता हूँ। रानी ! सेवक को समय पड़ने पर सब कुछ करना पड़ता है।"

स्त्रीत्व के गौरव के नाश की आशंका ने राजमहिषी के शरीर में शाही ख़ून खौला दिया। उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा। "नहीं ! नहीं ! मैं यह पत्र नहीं दे सकती ! तुम राजा से जाकर यही कह देना। मैं मर जाऊँगी ; परंतु पत्र नहीं दूँगी।"

सीगर पहले तो कुछ संत्रस्त-सा हुआ ; परंतु क्षण ही भर के पश्चात् दृढ़-विचार के साथ, राजमहिषी की ओर बढ़ा। यह देखकर अबला रानी के नेत्रों से क्रोध की अधिकता के कारण आँसू ढरक पड़े। वह एक पग पीछे हटी। क्रोध, भय और आशंका से अभिभूत होकर उसने अपने सीने से पत्र निकालकर सीगर के हाथ में काँपते हुए हाथों से रख दिया और स्वयं बेहोश होकर पलँग पर गिर पड़ी।

पत्र एक सुनहले लिफ़ाफ़े में बंद था। बन्द लिफ़ाफ़े को ले जाकर सीगर ने राजा को दे दिया। राजा ने खोलकर पत्र पढ़ा। उसके आश्चर्य की सीमा न रही, जब उसको यह मालूम हुआ कि प्रेम शब्द का उस पत्र भर में कहीं पता तक न था। यथार्थ में वह पत्र रानी ने अपने भाई आस्ट्रिया के बादशाह के नाम लिखा था। धर्माचार्य की शिकायतों से वह पत्र भरा हुआ था। उसमें रानी ने अपने भाई से यह प्रार्थना की थी कि वह धर्माचार्य की नीति से ऊब उठने का कारण बताकर, फ्रांस के विरुद्ध युद्ध छेड़ दे और केवल इस शर्त पर लड़ाई बन्द करे कि धर्माचार्य फ्रांस से निकाल दिया जाय।

धर्माचार्य के प्रति राजा के हृदय में जो ईर्षा-द्वेष का भाव भरा था, उसकी परितृप्ति उसे इस पत्र को पढ़ कर हुई। भीतर-ही-भीतर अत्यंत सुखी होकर उसने धर्माचार्य से कहा—"आह ! तुम्हारा कथन सत्य निकला। मेरा अनुमान ग़लत था। वास्तव में वह सारा षड्यंत्र राज-नीति से संबंध रखता है। प्रेम से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं। यह पत्र इसका प्रमाण है। परंतु तुम्हारे विषय में इसमें बहुत कुछ लिखा है।"

धर्माचार्य का चेहरा उतर गया। यह पत्र ड्यूक के नाम नहीं है प्रत्युत उसके विरुद्ध विषय से भरा हुआ आस्ट्रिया के राजा के नाम है, यह जानकर अपनी विफलता पर वह अत्यंत लज्जित हुआ। परंतु

इन भावों को छिपाकर उसने राजा से ऊपरी हँसी के साथ कहा—"देखिये ! श्रीमान् ! शत्रु कहाँ तक पहुँच गये हैं ! फ्रांस को दो देशों से युद्ध करना पड़ेगा। परंतु यदि आप मुझे निकाल दें तो युद्ध की आशंका नष्ट हो जायेगी। केवल मेरे कारण फ्रांस के राज-कोष की हानि पहुँच रही है। राज्य-प्रबंध से हाथ हटाने के लिये मैं भी अत्यंत उत्सुक हूँ। मैं तो यह वर्षों से अभिलाषा कर रहा हूँ कि अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ ईश्वरोपासना में संसार के झगड़ों से अलग रहकर शांति-पूर्वक बिताऊँ।"

राजा ने हँसकर कहा—"धर्माचार्य ! आप असंतुष्ट न हों। मैं आपकी अभिलाषा को अच्छी प्रकार समझता हूँ। आप निश्चिंत रहें, जिन-जिन लोगों का इस पत्र में निर्देश है, उन सबको यथोचित दंड दिया जायगा।"

धर्मा—"श्रीमान् ने मेरे अभिप्राय को ठीक नहीं समझा। मैं यह नहीं चाहता कि मेरे कारण राजमहिषी को तिल भर भी कष्ट पहुँचे। राजमहिषी, आज ही नहीं सदा से मुझे अपना शत्रु समझती है। यद्यपि यह श्रीमान् स्वयं जानते हैं कि मैं उनका ही पक्ष ग्रहण करने के कारण श्रीमान् के क्रोध का पात्र बन चुका हूँ।"

राजा धर्माचार्य की चतुराई को न समझ सके। उनको धर्माचार्य के इन शब्दों पर विश्वास हो गया। राजा ने कहा—"आप सत्य कहते हैं। परन्तु राजमहिषी को इस कार्य के लिये दंड अवश्य मिलना चाहिए।

धर्मा०—"दंड ! दंड की अपेक्षा उसको पुरस्कार मिलना चाहिये। क्या श्रीमान् ने उनको तिरस्कृत करके, उनका हृदय नहीं दुखाया है ? रानी मेरी शत्रु है न कि श्रीमान् की। श्रीमान् के लिये तो वह अत्यंत अनुरक्ता, आज्ञाकारिणी और सती पत्नी है। ऐसी दशा में उसको प्रसन्न करने के लिये श्रीमान् को कोई यत्न करना चाहिए।

धर्माचार्य का तर्क राजा को अत्यंत संगत प्रतीत हुआ। राज-महिषी के लिये जो थोड़ी-बहुत प्रेम की मात्रा उनके हृदय में संचित थी, वह उमड़ पड़ी। उनको अपनी भूल पर पश्चात्ताप हुआ।

धर्माचार्य से कहा—"तब रानी को प्रसन्न करने का कौन उपाय हो सकता है?"

धर्मा०—नाच! नाच से बढ़कर राजमहिषी के क्रोध को और कौन-सी बात दूर कर सकती है? श्रीमान् यह जानते ही हैं कि रानी को नाच कितना पसंद है।"

राजा०—"धर्माचार्य! वास्तव में तुम्हारी बुद्धि बहुत तीक्ष्ण है। नाच रानी के हृदय से अपमान की याद भुला देगा। इससे अधिक यथार्थ में और कोई प्रीतिकारी कार्य नहीं हो सकता।"

धर्मा०—रानी से यह कह दीजियेगा कि श्रीमान् ने जो हीरों का हार उनको दिया था, उनको वह इस नाच के अवसर पर अवश्य पहनें। यह हार रानी के सौंदर्य को द्विगुणित कर देगा। आपकी दृष्टि रानी के सौंदर्य की ओर आकृष्ट हुई है, यह जान कर राजमहिषी अत्यंत प्रसन्न होगी।"

राजा०—"अवश्य। हीरे के हार को धारण करने के लिये रानी से अवश्य कहूँगा। यह समाचार रानी के हृदय को मेरे प्रति और भी अधिक संदेह रहित कर देगा। और यह बात भी यथार्थ है। वास्तव में इस हार से रानी की द्युति और भी चमक उठेगी। रानी ने इस हार को अभी तक पहना भी नहीं है।"

धर्माचार्य अपने प्रथम प्रयास में जितना विफल हुआ था उतना ही रानी को अपमानित करने के इस कुचक्र को सफल होते देखकर सुखी हो गया।

तरंगित-हृदय से अभिवादन करके उसने राजा से विदा ली।

१६

इस घटना के एक सप्ताह बाद धर्माचार्य को लंदन से एक पत्र मिला। पत्र में लिखा था—"मैंने उनको हस्तगत कर लिया है; परंतु धनाभाव के कारण आने में असमर्थ हूँ। फ़ौरन रुपया भेजिये। रुपया मिलने के चार-पाँच रोज़ बाद मैं पेरिस आ जाऊँगी।"

इसी दिन धर्माचार्य ने राजा से मिलकर कहा कि नृत्योत्सव के लिये कोई दिन निश्चित हो जाना चाहिए। राजा ने कहा—आप ही स्वयं कोई उचित तारीख़ निश्चित कर दीजिये। धर्माचार्य ने कुछ गिनकर कहा—"आज २० सितंबर है। तीसरी अक्टूबर सा शुभ-दिन इस उत्सव के लिये मिलना कठिन है। इस बीच में काफ़ी तैयारियाँ हो सकती हैं। परंतु श्रीमान् रानी से यह अवश्य कह दें कि वह उस दिन ख़ूब शृंगार करें और वह हीरों का हार अवश्य धारण करें।"

यह कहकर रिचलू चला गया। हीरों के हार पर विशेष ज़ोर देने से राजा का माथा ठनका। उसने विचार किया कि क्या कारण है जो धर्माचार्य ने और बातों पर कुछ भी ध्यान न देकर इस हार

के विषय में ही अधिक ज़ोर दिया है। उसको संदेह हुआ कि इसका संबंध अवश्य किसी रहस्य से है; परंतु वह महत्वपूर्ण रहस्य क्या है? बहुत कुछ सोच-विचार करने पर भी यह राजा की समझ में न आया। एक बात उसके ध्यान में आई कि यदि रानी से बातचीत की जाय तो संभव है कि इस रहस्य का कुछ भेद खुले। अतः राजा शीघ्र ही रानी के पास गया। पहुँचते ही उसने स्वभाव के अनुसार रानी की परिचारिकाओं के बाबत बहुत बका झका। रानी ने चुपचाप शांति से सब बौछारें सहन करलीं। तत्पश्चात् कहा—"महाराज! मैं यह न समझ सकी कि आपने यह निर्मूल भाव अपने हृदय में क्यों संचित कर रक्खे हैं? मैं किस अपराध के कारण इन सब संदेहों की पात्री बनाई जा रही हूँ। यह तो असंभव है कि केवल उस पत्र के कारण जो मैंने अपने भाई के नाम लिखा था, यह सब उत्पात नहीं उठ सकता।"

रानी के इस निर्भीक उत्तर ने राजा को क्षण भर के लिये चुप कर दिया। रानी को क्या उत्तर दिया जाय, तत्क्षण ही यह राजा की समझ में न आ सका। तब उसने सोचा कि यही उपयुक्त समय है जबकि अपने गुप्त अभिप्राय को प्रकट कर देना उचित है। उसने सर उठाकर अभिमान के साथ कहा—"ऐन, थोड़े ही दिनों में एक नृत्योत्सव होगा। मेरी यह इच्छा है कि उस दिन तुम अपनी पूरी शोभा से सम्मिलित हो और उस दिन हीरों के उस हार को अवश्य धारण करो, जो कि मैंने तुमको तुम्हारे जन्मोत्सव के दिन प्रदान किया था। तुम्हारे प्रश्न का यही उत्तर है।"

यह उत्तर रानी के लिये वज्रपात था। रानी को ख़्याल हुआ कि राजा सब कुछ जानते हैं और धर्माचार्य ने ही राजा को इस उत्सव के लिये प्रेरित किया है। रानी के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। उसका रक्त सूख गया—कलेजा काँप उठा। वह इतनी भयभीत हो गई कि

क्षणभर कुछ भी उत्तर न दे सकी। उसने देखा कि राजा की क्रूर, तीक्ष्ण-दृष्टि उसी के चेहरे पर लगी है। राजा ने देखा कि उसके शब्दों ने रानी पर अनोखा प्रभाव डाला है; परंतु कारण की तह तक न पहुँच सका। अभिप्रेत उत्तर पाने के लिये उसने रानी पर दृष्टि गाड़ते हुए कहा—"क्यों! हीरों का हार पहनकर आओगी न?"

रानी ने कहा—"हाँ! अवश्य!"

राजा ने तब कहा—"बस, मुझे यही कहना था।"

रानी ने अपने को सँभाल कर साहस करके पूछा—"यह नृत्योत्सव किस तारीख़ को होना निश्चित हुआ है?"

राजा ने सोचा कि ठीक तारीख़ बताना उचित नहीं है न मालूम इस अज्ञात रहस्य के कारण इसका क्या परिणाम निकले? अतः उसने कहा—"यह उत्सव बहुत शीघ्र ही होनेवाला है, ठीक तारीख़ मुझे इस समय याद नहीं। धर्माचार्य से पूँछकर फिर बतलाऊँगा।"

"तब क्या इसकी तारीख़ धर्माचार्य ने निश्चित की है?" रानी ने पूछा।

"हाँ! परंतु यह प्रश्न किस लिये?" राजा ने आश्चर्य में होकर पूछा।

रानी ने राजा के प्रश्न की ओर ध्यान न देकर कहा—"तब यह भी धर्माचार्य ही ने आपसे कहा है कि मैं हीरों का हार पहनकर वहाँ जाऊँ? यह काम धर्माचार्य ही का है न?"

राजा—"परंतु इससे क्या! चाहे वह धर्माचार्य हो या मैं स्वयं होऊँ। क्या यह प्रार्थना अनुचित है?"

रानी—"नहीं? यह सर्वथा उचित है?"

राजा—"तब यह निश्चित हो चुका कि तुम वहाँ अवश्य आओगी और हीरों का हार भी पहन कर आओगी?"

रानी—"अवश्य।"

राजा, रानी की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से घूरते हुए वहाँ से चला आया।

राजा के जाने के पश्चात् रानी अत्यंत भयभीत होकर पलँग पर गिर पड़ी। उसके बदन से पसीना छूटने लगा। उसके मुख से निकला—"आह! ईश्वर! ईश्वर! मैं नष्ट हो गई! धर्माचार्य सब कुछ जानता है। यद्यपि राजा नहीं जानता; परंतु शीघ्र ही वह भी जान जायगा। हा! तब मेरी क्या दशा होगी? घोर अपमान! मुझे मर जाना होगा! नाश! सर्वनाश।"

रानी के ये शब्द एक परिचारिका के कान में पड़े। वह शीघ्र ही दौड़कर निकट आ गई और अत्यंत समवेदना प्रकट करते हुए कहा—"राजमहिषी! घबड़ाइये नहीं! मेरी सेवा को स्वीकार कीजिये।"

रानी ने गर्दन घुमाकर देखा। यह श्रीमती बोनैसी थी। श्रीमती बोनैसी बग़ल के कमरे में रानी की पोशाक ठीक कर-कर के रख रही थी। उसने राजा और राजमहिषी की कुल बातचीत चुपके से सुन लिया था। रानी के हृदय की अवस्था को और भावी विपत्ति को ताड़ गई थी। वह रानी को सच्चे हृदय से चाहती थी। रानी की इस अवस्था से उसका दयार्द्र हृदय रानी को इस विपत्ति से बचाने के लिये प्राणपण से चेष्टा करने को अधीर हो उठा।

रानी ने शंकित दृष्टि से उसकी ओर देख कर कहा—"आह! तुम! क्या कर सकती हो? नहीं! नहीं! तुम्हीं लोगों ने मेरा यह सर्वनाश किया है। मैं अपनी किसी दासी पर भी विश्वास नहीं कर सकती!

श्री० बो०—"राजमहिषी! मैं ईश्वर की शपथ खाकर कहती हूँ कि आपके लिये मैं अपने प्राण न्योछावर कर सकती हूँ। यह मैं जानती हूँ कि अन्य दासियों ने आपको धोखा दिया है। परंतु यह आप पर शीघ्र ही प्रकट हो जावेगा कि आपकी यह दासी उस श्रेणी के बाहर है। मेरी पिछली सेवायें इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।"

इन आश्वासन-युक्त शब्दों ने रानी के जीवन में नवीन प्राणों का संचार कर दिया। दासी के इस प्रेम-युक्त बर्ताव से उसके नेत्रों में आँसू भर आये। गद्गद्-कंठ से उसने कहा—"हा! ईश्वर! क्या यह असंभावना दूर हो सकती है?"

श्री० बो०—"आप अधीर न हूजिये। वह हार वापस लाना होगा?"

रानी—'परंतु यह हो क्यों कर सकता है?"

श्री० बो०—"किसी को वहाँ भेजना होगा।"

रानी—"परंतु वहाँ जायगा कौन? इतना विश्वास मैं किस पर कर सकती हूँ?"

श्री० बो०—"राजमहिषी! इतना विश्वास मुझ पर कीजिये। मैं ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ लूँगी।"

रानी—"परंतु मुझको पत्र लिखना होगा और यदि वह भी किसी के हाथ पड़ गया तो?"

श्री० बो—"आपको केवल दो शब्द लिखने होंगे! इसका जिम्मा मैं लेती हूँ कि यह पत्र ठिकाने से पहुँचेगा। किसी अन्य के हाथ नहीं पड़ सकता!"

रानी—"आह! तब मुझे अपना सारा गौरव, मान और जीवन तक तुम्हारे हाथ में दे देना होगा!"

श्री० बो०—"आप मेरे ऊपर निर्भर रहिये। मैं यथा साधन इन सब की रक्षा कर लूंगी।"

रानी—"किस प्रकार?"

श्री० बो०—"मेरा पति मेरा अंध-भक्त है। वह राजनीतिक प्रपञ्चों से सर्वथा वञ्चित है। वह न किसी से घृणा करता है और न किसी से प्रेम। केवल मेरी दी आज्ञा का अनुसरण करता है। मैं यदि कह दूँ तो वह अपने प्राण तक दे सकता है। वह मेरी आज्ञा पाकर

इस पत्र को लेकर फ़ौरन चल देगा और बिना इसके जाने हुए कि यह किसका पत्र है और किस रहस्य से इसका संबंध है ठीक पते पर पहुँचा देगा।"

रानी का हृदय आशा के प्रकाश से चमक उठा। उसने अपने दोनों हाथों से दासी का हाथ पकड़ कर कहा—"इतनी दया अवश्य करो। अब मेरा जीवन तुम्हारे ही हाथों में है। इसका पुरस्कार मैं क्या दूँगी यह मैं बतला ही नहीं सकती। हा! ईश्वर! ईश्वर!! क्या अब भी कुछ आशा बाक़ी है?"

यह कहकर रानी फूट-फूटकर रोने लगी। श्री० बो० ने बहुत ढाढस बँधाया। पत्र लेकर वह चली आई। रानी ने अपनी बहुमूल्य अँगूठी मार्ग-व्यय के लिये दी।

दस मिनट के बाद ही वह अपने घर पहुँची। जैसा कि उसने रानी से बताया था, उसे पूरा विश्वास था कि उसका सरल पति उससे अत्यधिक प्रेम करता है। वह उसकी आज्ञा पाते ही पत्र-वाहक का काम करना अंगीकार कर लेगा। किसी को भी कानो-कान पता न लगेगा। परंतु वह यह नहीं जानती थी कि धर्माचार्य के भाषण तथा प्रलोभन ने उसको काफ़ी सचेत कर दिया था। अब उस पर कोई भी रंग जम नहीं सकता। राकफ़ोर्ट इन दिनों बार-बार उसके घर का चक्कर लगाता था और प्रति-दिन धर्माचार्य के गुणानुवाद गाकर उसको भाँति-भाँति के सब्ज़ बाग़ दिखाया करता था। इन सब बातों का बोनैसी पर आश्चर्यजनक प्रभाव पड़ा था। वह धर्माचार्य का परम भक्त बन गया था और अपनी स्त्री की चालों से भली भाँति सचेत हो गया था।

जिस समय बोनैसी की पत्नी ने घर में प्रवेश किया, तब बोनैसी अकेला था। उसके नौकर-चाकर उसकी अनुपस्थिति में भाग गये थे। अपनी स्त्री को आते हुए देखकर बोनैसी ने प्रसन्नता का प्रकाश करते

हुए कहा—"आह ! तुम आगईं ! आओ" यह कहकर उसके गले में बाहें डालकर उसका आलिंगन किया। पत्नी ने कहा—"आज मुझे तुमसे एक अत्यंत महत्त्व-पूर्ण बात कहनी है।"

पति—"और मुझे भी तुमसे यह प्रश्न करना है कि तुमने अपने भगाये जाने का हाल मुझसे कुछ भी नहीं कहा।"

पत्नी—"ओह ! इस समय यह बात बिलकुल निरर्थक है।"

पति ने चिढ़कर कहा—"निरर्थक है ? तब मेरे बंदी होने से इससे क्या सम्बन्ध ?"

पत्नी—मुझे उसी समय मालूम हुआ था ; परंतु मैं यह जानती थी कि तुम निर्दोष हो। तुम्हारे ऊपर किसी षड्यंत्र का दोष आरोपित नहीं किया जा सकता। इसी कारण मैं निश्चिंत हो गई। तुम भी शीघ्र ही छूटकर आ गये।"

अपनी स्त्री के इस नीरस व्यवहार पर बोनैसी को बड़ा क्रोध आया। परंतु क्रोध की झलक उसने अपने चेहरे पर न आने दी। उसने कहा—"खूब शीघ्र छूटकर आया ! यह क्या तुम नहीं जानतीं कि जेल के गंदे कमरे में मुझे दो दिन बंदी होकर रहना पड़ा है ?"

पत्नी—ओह ! इन बातों को जाने दीजिये। इस समय मतलब की बात करना चाहिए।"

पति—"तो क्या यदि यह मतलब की बात न होती तो तुम मेरा मुँह तक देखने न आतीं।"

पत्नी—"तुम से मिलना तो मैंने सबसे पहली आवश्यकता समझी है। परंतु दूसरी आवश्यकता वह महत्वपूर्ण काम भी है ; जिसे मुझे तुम पर अभी प्रकट करना है।"

पति—"तब वह क्या काम है बतलाओ न ?"

पत्नी—"वह काम अत्यंत महत्व का है। इसके करने से तुमको बहुत ही धन लाभ होगा।"

बोनैसी की स्त्री यह जानती थी कि धन-लाभ का नाम सुनकर बोनैसी की काम-लालसा जाग्रत हो जावेगी और तब उसको सीधे रास्ते पर लाना सरल हो जावेगा। परंतु अब बोनैसी धर्माचार्य रिचलू से वार्तालाप करके अपने को अत्यंत प्रतिष्ठित समझने लगा था। अपने विचार में अब बड़ा आदमी हो गया था। अतः धन-संबंधी प्रलोभन उसे क्षुद्र प्रतीत होते थे। इसके अतिरिक्त धर्माचार्य द्वारा मुद्राओं की थैली मिलने से उसकी अर्थ-प्रवृत्ति भी तृप्त हो चुकी थी।

उसने पूछा—"आख़िर कितना धन मिलेगा ?"

पत्नी—"सोने के हज़ार सिक्के।"

पति—"तब तो मालूम होता है कि कोई कठिन काम करना होगा।"

पत्नी—"तुमको अभी जाना होगा। मैं तुमको एक काग़ज़ दूँगी जिसको तुम्हें ठिकाने पर पहुँचा देना होगा। परंतु इस बात का ध्यान रहे कि किसी और के हाथ में वह न पड़ने पावे।"

पति—"जाना कहाँ होगा ?"

पत्नी—"लंदन।"

पति—"लंदन ! तुम हँसी तो नहीं करतीं ? लंदन में मेरा क्या काम हो सकता है ?"

पत्नी—"परंतु भेजनेवाले का तो काम है ?

पति—"भेजनेवाले कौन हैं ? यह मैं बतला देना चाहता हूँ कि अब मैं अंधकार में नहीं रह सकता। तुमको यह बतलाना होगा कि वह भेजनेवाला कौन है और किस संबंध में वह भेजना चाहता है। मैं भोला बनकर अज्ञात विपत्तियों में पड़ना नहीं चाहता।"

पत्नी—"एक बहुत बड़ा व्यक्ति तुमको भेज रहा है और एक

बहुत बड़े व्यक्ति के पास तुमको जाना होगा। बदले में जो कुछ तुमको मिलेगा उसका तुम अनुमान भी नहीं कर सकते।"

पति—"आह! यह सब षड्यंत्र है! किसी नवीन षड्यंत्र में मुझको फाँसना चाहती हो? परंतु अब यह असंभव है। अब मैं तुम्हारा पुराना भोला पति नहीं रहा। अब काफ़ी सचेत हो गया हूँ। धर्माचार्य ने मुझे तुम्हारे षड्यंत्रों से काफ़ी होशियार कर दिया है।"

पत्नी ने आश्चर्य से चिल्लाकर कहा—"धर्माचार्य! क्या तुम धर्माचार्य से मिल चुके हो?"

पति ने अत्यंत अभिमान के साथ कहा—"हाँ! उसने मुझे बुलाया था। स्वयं आकर हाथ मिलाया और मुझे अपना मित्र कहकर पुकारा। मित्र! तुम जानती हो मैं अब धर्माचार्य का मित्र हूँ?"

पत्नी—"आह! मेरे भोले पति! तुम नहीं जानते कि धर्माचार्य की मित्रता क्या चीज़ है? राज-मंत्री से मित्रता करने का क्या फल होता है? यदि यह तुम जान पाते तो इस बात पर इतना अभिमान न करते। कहीं साधारण व्यक्ति राज-मंत्री का मित्र हो सकता है? यदि तुमको अपनी उन्नति करनी है, तो इससे भी बड़ी शक्ति का पल्ला पकड़ो।"

पति—"ओह! मैं यह सब जानता हूँ। धर्माचार्य से भी क्या कोई बड़ी शक्ति विद्यमान है? मैं उस स्त्री के षड्यंत्र में नहीं फँसना चाहता जो कि न तो फ्रांस देश की है और न फ्रांस का भला चाहती है। मैं उस शक्ति का समर्थक हूँ; जिसकी तीक्ष्ण दृष्टि से कोई बात भी छिपी नहीं रहती।"

बोनैसी राकफ़ोर्ट द्वारा रटाये हुए प्रत्येक शब्द को दोहरा रहा था। परंतु बेचारी पत्नी इन सब बातों से अनभिज्ञ थी। वह केवल यही समझी कि उसका पति सरल हृदय होने के कारण धर्माचार्य की

बातों में आगया है उसे यह क्या मालूम कि राकफ़ोर्ट प्रतिदिन आकर विरुद्ध पाठ पढ़ाया करता है। अतः उसने यही समझा कि थोड़ी ही देर में वह अपनी मीठी-मीठी बातों से अपने पति को रास्ते पर ले आयेगी।

उसने कहा—"तब तुम धर्माचार्य के अनुयायी हो। उसी धर्माचार्य के जिसने तुम्हारी पत्नी की दुर्दशा की और तुम्हारी राजमहिषी का घोर अपमान किया है।"

पति—"इन निजी स्वार्थों से मुझसे कुछ भी संबंध नहीं। मैं तो उस पक्ष का समर्थक हूँ जो कि राज्य के गौरव की रक्षा कर रहा है।"

पत्नी—"परंतु राजनीति के विषय में क्या जानते हो? राज्य की भलाई किस बात में है इसको तुम भला क्या जानो? मैं तुमसे यह बतलाये देती हूँ कि अपने स्वाभाविक सीधेपन को छोड़कर इन बड़ी-बड़ी बातों में न पड़ना। तुम्हारे लिये वही पक्ष ठीक है जोकि अधिक लाभदायी हो।"

पति—मैं भी इसी मार्ग पर चल रहा हूँ। यह नहीं देखा तुमने! यह थैली!"

यह कहकर बोनैसी ने एक बड़ी थैली उठाकर अपनी पत्नी को दिखाई। थैली में ठसाठस सिक्के भरे हुए थे।

पत्नी ने चौंककर कहा—"एं! यह कहाँ से आई?"

पति—"यह थैली धर्माचार्य और मेरे मित्र राकफ़ोर्ट ने मुझे दी है।"

पत्नी—"अरे यह वही व्यक्ति है जो मुझे भगा ले गया था।"

पति—"इससे क्या होता है? क्या तुमने अभी नहीं कहा कि यह एक निरर्थक बात है?"

पत्नी निरुत्तर हो गई। उसने देखा कि उसका पति अब बातचीत में पहले की अपेक्षा अधिक कुशल हो गया है। धर्माचार्य और राक-

फ्रोर्ट ने सब्ज-बाग दिखा-दिखाकर उसके पति के मस्तिष्क में अपनी पक्ष की बातें इतनी अधिक बढ़ा-बढ़ाकर भर दी हैं कि उनपर विजय पाना असंभव-सा है। अपनी असफलता तथा निराशा पर उसको जितना दुख हुआ, उससे अधिक वह इस बात से भयभीत हो उठी कि उसने बिना समझे-बूझे अपने प्रति-पक्षी के सामने बहुत कुछ ऐसी बातें कह डालीं जिनके कारण संभव है उसको भविष्य दुःख के अतिरिक्त अपने उस कार्य में जिसको करने का वह राजमहिषी से प्रतिज्ञा कर चुकी है, विघ्नों का भी सामना करना पड़े। जिस पति पर पूर्ण विश्वास करके वह रानी को बचन दे आई थी, उसको इस प्रकार विफल होते देख, उसको अपने पति पर अत्यंत क्रोध हुआ। परंतु उसने चतुरता-पूर्वक इन सब भावों को दबाकर हँसते हुए कहा—"अच्छा, मुझे क्षमा करो। संभव है तुम्हीं ठीक हो। मैं स्त्री जाति होकर राजनीति के संबंध में पुरुषों से अधिक कहीं जान सकती हूँ? तुम धर्माचार्य से स्वयं बातचीत कर चुके हो। वह अत्यंत कुशल राजनीतिज्ञ है और फ्रांस का पूरा हित-चिंतक है। मैं भ्रम में थी।"

बोनैसी ने कहा—"अब तुम ठीक मार्ग पर आई हो। परंतु तुमको यह बतलाना होगा कि मुझको तुम किस काम से लंदन भेजना चाहती थीं?"

इस प्रश्न से पत्नी को अपनी उपरोक्त धारणा में विश्वास हो गया। वह समझ गई कि बोनैसी राकफ्रोर्ट की संगति से काफ़ी चालाक हो गया है, वह गुप्त रहस्य केवल इसीलिये जानना चाहता है, जिससे राकफ्रोर्ट से वह पूरा भेद बतला सके। उसने शीघ्र ही सँभलकर कहा—"वह एक व्यापार-संबंधी काम था। इससे भेजने-वाले को आर्थिक लाभ की आशा है। परंतु अब तुम उसको जानकर क्या करोगे? तुम्हारे लिये अब यह सब निरर्थक हैं। बोनैसी ताड़ गया कि उसकी पत्नी बात छिपा रही है। उसने विचार किया कि शीघ्र ही

जाकर राकफ्रोर्ट को इस घटना से सूचित कर देना चाहिए। संभव है वह किसी उपाय द्वारा इस रहस्य का पता लगा सके। इस कार्य से उसको अवश्य ही पर्याप्त पुरस्कार मिलेगा। यही सोचकर उसने कहा—"मुझे क्षमा करना। मैं यह नहीं जानता था कि तुम आनेवाली हो अन्यथा अपने एक मित्र से भेंट करने के लिये यही समय निश्चित न करता! अब देर हो रही है। वह मेरी प्रतीक्षा कर रहा होगा। मैं बहुत शीघ्र ही लौटा आता हूँ।" यह कहकर बोनैसी कमरे के बाहर हो गया।

बोनैसी के चले जाने पर दर्वाज़ा बंद करके उसकी पत्नी आकर पलँग पर गिर पड़ी। वह हताश होने के कारण इतनी घबड़ा गई थी कि उसको रानी के काम को पूरा करने का कोई भी उपाय न सूझ सका। एकांत होने के कारण वह सहसा स्वयं कहने लगी—"ओफ! अब मैं रानी को जाकर मुँह कैसे दिखाऊँगी? जिस पति से मैं प्रेम करती थी और जिस पर मुझे अगाध विश्वास था, उस मूर्ख ने प्रति-पक्षी का पक्ष ग्रहण किया है। आह! अब मैं उससे घृणा करती हूँ। आज से वह मेरा शत्रु है। बोनैसी! तुमको अपने कार्य के लिये पश्चाताप करना होगा, तुम...... ।"

ठीक इसी समय उसके कान में दर्वाज़ा खटखटाने का शब्द पड़ा—"श्रीमती बोनैसी! ज़रा कष्ट कीजिये। मैं आपसे भेंट करना चाहता हूँ।"

यह शब्द आर्तगान के थे।

१७

आर्तगान ने दर्वाज़ा खुलने पर, कमरे के भीतर प्रवेश करते हुए कहा—"श्रीमती बोनैसी ! तुमको वास्तव में बहुत बुरा पति मिला है।"

श्रीमती बोनैसी ने चौंककर पूछा—"तब क्या तुमने हमारी सब बातें सुन ली हैं ?"

आर्त०—"हाँ !"

श्रीमती बोनैसी ने उत्सुक होकर पूछा—यह कैसे ?"

आर्त०—उस ही पुराने मार्ग से, जिसके द्वारा उस दिन तुम्हारा हाल देखकर दुष्ट चपरासियों से तुम्हारी रक्षा करने के लिये मैं तुम्हारे पास आ सका था।"

श्री० बो०—"तब तुम क्या समझे ?"

आर्त०—"मैं सब समझ गया। पहली बात यह कि तुम्हारे पति की सरलता, मूर्खता की सीमा तक पहुँच गई है। दूसरी बात यह कि तुम घोर विपत्ति में फँसी हो। मुझे आशा है कि मैं किसी सेवा में अवश्य नियुक्त किया जाऊँगा। तीसरी बात यह है कि राजमहिषी को एक अत्यंत वीर, चतुर और विश्वास-पात्र सेवक की अवश्यकता है। जिसको कोई गुरुतर संदेश लेकर लंदन जाना होगा। मैं भूल नहीं

करता यदि मैं कहूँ कि मुझमें ये तीनों गुण उपस्थित हैं। मैं इस सेवा-कार्य को करने के लिये अपने आपको प्रस्तुत करता हूँ।"

श्रीमती बोनैसी का हृदय आनंद से भर गया। उसकी आँखें आशा से चमक उठीं। उसने गंभीर होकर कहा—"परंतु तुम्हारे ऊपर कहाँ तक विश्वास किया जा सकता है? क्या भेद बतलाकर मुझे दूसरी आपत्ति नहीं ख़रीदनी होगी?"

आर्त०—"इसके लिये तुम्हारा प्रेम साक्षी है। क्या मुझे हृदय चीर कर दिखाना होगा?"

श्रीमती बोनैसी—"आह! ईश्वर! तुम नहीं जानते, यदि धर्माचार्य तक यह भेद पहुँच गया; तो मेरे ऊपर कितनी विपत्तियाँ आ सकती हैं? मेरा और राजमहिषी का सर्वनाश हो सकता है।"

आर्त०—"क्या प्रेम से भी बढ़कर साक्षी ढूँढ़ना चाहती हो? मैं इससे अधिक और क्या कह सकता हूँ कि राजमहिषी का और तुम्हारा मैं दोनों का भक्त हूँ। कम-से-कम एक बार परीक्षा ही करके देख लो? जिस मनुष्य को तुम भेद बतलाने जा रही थीं उससे कहीं अधिक विश्वास का पात्र यह तुम्हारा प्रेमी है। मैं ऐसे अवसर की खोज ही में था अपनी सेवा स अपने हृयय का भाव तुम पर प्रकट कर सकूँ।"

श्रीमती बोनैसी को आर्तगान के शब्दों पर विश्वास हो गया। आर्तगान के नेत्रों से उसने प्रेम की निर्मल ज्योति निकलते देखी? वह सिहर उठी। उसने कहा—"अच्छा मैं तुम पर विश्वास करती हूँ। परंतु यह कहे देती हूँ कि यदि तुमने धोखा दिया, मेरा सर्वनाश किया तो चाहे मेरे शत्रु मुझे क्षमा भी कर दें; परंतु मैं आत्म-हत्या कर लूँगी।"

आर्तगान के लिये यह वचन अत्यंत कठोर थे। उसने भुजा उठाकर कहा—"मैं भी ईश्वर की शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं

इस भेद को अन्य पर प्रकट करने की अपेक्षा मर जाना पसंद करूँगा।"

तब श्रीमती बोनैसी ने सब भेद विस्तारपूर्वक आर्तगान को बताया। आर्तगान का हृदय उल्लास और अभिमान से भर गया। उसने कहा—"मैं आज ही लंदन रवाना हो जाऊँगा। परंतु मेरे साथ मेरे तीन मित्र भी चलेंगे। इन तीन मित्रों पर मुझे यह रहस्य अवश्य प्रकट करना होगा। परंतु तुम निश्चिंत रहो इनके द्वारा भेद प्रकट नहीं हो सकता। ये मेरे घनिष्ट मित्र हैं। राजमहिषी इनकी सेवाओं से प्रसन्न ही होंगी।"

श्री० बो०—"परंतु तुम बिना ख़र्च के जा कैसे सकते हो?"

आर्त०—"हाँ! इसकी तो तुमने ख़ूब याद दिलाई।"

श्रीमती बोनैसी ने अलमारी खोलकर वह थैली उठा ली जिसको जल्दी के कारण बोनैसी संदूक में बंद करके रख जाना भूल गया था। आर्तगान के हाथ में देते हुए उसने कहा—"यह धन तुम्हारी सहायता करेगा।"

आर्तगान ने थैली ले ली और हँसकर कहा—"इससे बढ़कर और क्या हो सकता है? धर्माचार्य के धन से राजमहिषी का काम चले।"

श्रीमती बोनैसी—"अधीर न होना। राजमहिषी तुम्हारे लिये भी अकृतज्ञ न रहेगी।"

आर्त०—"आह! इसका प्रतिकार तो मुझे मिल चुका है। तुम्हारा प्रेम और तुम्हारा सौंदर्य! क्यों! यह क्या कोई बुरा सौदा है?"

श्रीमती बोनैसी—"ख़ामोश! ख़ामोश!"

आर्तगान चौंक पड़ा। उसने पूछा—"क्यों?"

श्रीमती बोनैसी के कान द्वार की ओर लगे थे। उसने कहा—"कोई व्यक्ति बाहर बातें कर रहा है। यह आवाज़ तो......।"

आर्त०—"तुहारे पति की-सी है।"

श्रीमती बोनैसी—"ओह! ठीक यह वही स्वर है?"

आर्त०—चलो! इसी समय यहाँ से खिसक चलें। वह यहाँ ही आ रहा है। मेरे कमरे में जाने के लिये एक गुप्त द्वार है। वहीं से यहाँ का दृश्य देखेंगे। देखना! बोनैसी थैली न मिलने पर कितना रोता-पीटता है।"

श्रीमती बोनैसी—"परंतु तुम्हारे साथ एकांत कमरे में चलने में मुझे कुछ आशंका होती है।"

आर्त०—"आशंका! आशंकायें सब व्यर्थ हैं। मेरे पास अपने को उसी भाँति सुरक्षित समझो जैसे किसी पवित्र मंदिर में।

श्रीमती बोनैसी—"ओह! अब तो मुझे तुम्हारे ऊपर अगाध विश्वास है। चलो।"

यह कहकर वह आर्तगान के साथ हो ली। गुप्त द्वार से आर्तगान अपने ऊपर के कमरे में आ गया और वहाँ से खिड़की द्वारा दोनों बोनैसी के कमरे का हाल देखने लगे। देखा कि बोनैसी एक मनुष्य के साथ जो अपने शरीर को लबादे से छिपाये हुए था, बात-चीत कर रहा है। ज्योंही आर्तगान की दृष्टि इस अपरिचित व्यक्ति पर पड़ी, वह चौंक पड़ा। शीघ्र ही तलवार निकालकर दरवाज़े की ओर लपका। यह व्यक्ति म्यांग होटल वाला शत्रु था। बोनैसी की पत्नी ने चकित होकर पूछा—"यह तुम क्या कर रहे हो? क्या हमारा सर्वनाश करना चाहते हो?"

आर्तगान ने कहा—"परंतु मैं इस मनुष्य को मार डालने की भीषण प्रतिज्ञा कर चुका हूँ।"

श्रीमती बोनैसी—"परंतु तुम्हारे जीवन पर आज से तुम्हारा अधिकार नहीं रहा। तुम राजमहिषी को अपना जीवन दे चुके हो। उन्हीं के नाम पर मैं तुमसे कहती हूँ कि इस प्रण को इस समय भूल जाओ। तुम्हारे हाथ में अत्यंत गुरुतर, उत्तरदायित्व का काम है।"

आर्तगान रुक गया। वास्तव में वह इस समय जो कार्य करने जा रहा था, उससे राजमहिषी, बोनैसी की पत्नी और अपने को भी वह नाश के मार्ग पर ले जानेवाला था। बोनैसी की पत्नी के बचनों ने उसकी आँखें खोल दीं।" उसने हँसकर कहा—"क्या अपने नाम से कोई आदेश नहीं दोगी ?"

श्रीमती बोनैसी--"अपने नाम पर तो मैं तुमसे प्रार्थना करती हूँ। परंतु सुनो ! सुनो, मालूम होता है यह लोग मेरे ही विषय में बातें कर रहे हैं।"

दोनों ने बोनैसी को यह कहते हुए सुना—"ओह ! वह तो चली गई। वह ज़रूर राजमहल लौटकर गई होगी।"

अपरिचित व्यक्ति—"क्या तुम को यह पूर्ण विश्वास है कि वह यह नहीं जान सकी कि तुम किस इरादे से बाहर जा रहे हो ?"

बोनैसी—"अवश्य ! उसको रत्ती भर भी संदेह नहीं हुआ कि मैं तुम्हारे पास गया हूँ।"

अपरिचित—"क्या यह नव-सैनिक अपने घर है ?"

बोनैसी—"मुझे तो विश्वास है कि वह नहीं है। उसका द्वार बंद है। कमरे में भी अँधेरा है।"

अपरिचित—"परंतु तो भी निश्चित रूप से जान लेना आवश्यक है।"

बोनैसी कमरे से निकलकर आर्तगान के द्वार पर आया। द्वार खटखटाया; परंतु किसी ने भी उत्तर नहीं दिया। इत्तफ़ाक से आर्तगान का सेवक प्लेंचेट भी किसी काम से बाहर गया हुआ था।

बोनैसी ने लौटकर कहा—"वह नहीं है।"

अपरिचित—"तब तुम्हें यह पूरा विश्वास है कि तुम्हारी पत्नी राजमहल ही गई है।"

बोनैसी—"और वह जा कहाँ सकती है ? अवश्य ही वहाँ गई है।"

इस पर अपरिचित व्यक्ति चुप हो गया। बोनैसी ने कहा—"तब जो सूचना मैंने दी है, वह बड़े महत्त्व की है।"

अपरिचित—"अवश्य ! यह मैं तुमसे छिपाना नहीं चाहता कि यह समाचार हमारे लिये अत्यंत उपयोगी है।"

बोनैसी—"तब धर्माचार्य ! ओह ! महान् धर्माचार्य मुझपर बहुत प्रसन्न होंगे, क्यों न ?"

अपरिचित—"तुमको बहुत धन इनाम में मिलेगा। परंतु हाँ ! यह तो बतलाओ कि यह तुम्हें ठीक याद है कि कांसटेंस ने बात-चीत करते हुए किसी भी व्यक्ति का नाम नहीं लिया ?"

बोनैसी—"हाँ ! यह मुझे ठीक याद है।"

अपरिचित—"क्या उसने मैडेम कैवरियस ड्यूक आफ़ बकिंघम या मैडेम वर्नेल इनमें से किसी का नाम लिया था ?"

बोनैसी—"नहीं ! उसने मुझसे केवल यही कहा था कि एक अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति तुमको किसी आवश्यक कार्यवश लंदन भेजना चाहता है।"

"धोखेबाज़ ! प्रवञ्चक !" बोनैसी की पत्नी कांसटेंस के मुख से सहसा यह शब्द निकल पड़े। शीघ्र ही आर्तगान ने उसका हाथ दबाते हुए कहा—"चुप, चुप।"

अपरिचित व्यक्ति ने कहा—"ख़ैर ! परंतु तुमने मूर्खता की तुमको चाहिए था कि उसका संदेश स्वीकार कर लेते। ऐसा करने से इस समय पत्र हमारे क़ब्ज़े में होता और राज्य किसी अज्ञात विपत्ति से बच जाता।"

बोनैसी—"परंतु इससे निश्चिंत रहो। मेरी पत्नी मुझपर प्रेम करती है। मैं किसी-न-किसी बहाने से उससे वह संदेश-पत्र अवश्य हस्तगत कर लूंगा।"

"मूर्ख !" बोनैसी की पत्नी कांसटेंस ने दाँत पीसकर कहा। आर्तगान ने फिर चुप करा दिया।

अपरिचित—"परंतु क्या अब इतना समय है ?"

बोनैसी—क्यों नहीं ? मैं अभी राजमहल जाकर उससे कहूँगा कि मैंने अब सोच-विचार लिया है। मैं लंदन जाने के लिये तैयार हूँ। पत्र लेकर मैं सीधे धर्माचार्य के पास चला आऊँगा।"

अपरिचित—"अच्छा ! मैं चलता हूँ। तुम शीघ्र राजमहल जाओ।"

यह कहकर अपरिचित व्यक्ति चला गया। बोनैसी अकेला रह गया। उसने रोशनी करके चाहा कि अपनी थैली सुरक्षित स्थान में रख दें। परंतु जब अलमारी को ख़ाली पाया तो एक ज़ोर से चीत्कार करके धम से पृथ्वी पर गिर पड़ा। उसकी स्त्री व आर्तगान के अट्टहास का स्वर उसकी कातर चिल्लाहट में दब गया। कमरे को वैसा ही खुला छोड़कर, वह बड़े ज़ोरों से चिल्लाता हुआ गली में चला गया।

कांसटेंस ने ख़ूब जी खोलकर हँसने के बाद कहा—"वह तो उधर गया। अब तुम्हारे भी जाने की बारी है। देखो ! विश्वासघात न करना ! राजमहिषी की इज्ज़त तुम्हारे ही हाथों में है। मार्ग में धैर्य, सहिष्णुता और चातुरी को हाथ से न जाने देना।"

आर्तगान—"सौंदर्यमयी हृदय-देवी ! इससे निश्चित रहो। राजमहिषी के बहाने मैं तुम्हारे प्रेम का पूर्ण अधिकारी हो सकूँ, परमात्मा से यही मेरी प्रार्थना है।"

दोनों एक दूसरे को प्रेम-दृष्टि से देखते हुए अपने-अपने मार्ग पर चले गये।

१८

आर्तंगान का हृदय भविष्य की उज्ज्वल आशाओं से ओत-प्रोत हो गया। जिस अवसर के लिये वह ईश्वर से दिन-रात प्रार्थना किया करता था, वही अनायास आज उसको प्राप्त हो गया। उत्साह, साहस और हार्दिक आल्हाद उसके मन में भर गये। राजमहिषी के कार्य को पूरा करके, वह उसको सदा के लिये अमित कृतज्ञता के पास में बाँध लेगा। धन, गौरव व सम्मान के साथ ही उसको अभिलाषित राजसैनिक का पद अनायास ही स्वयं मिल जावेगा। इसके अतिरिक्त वह अपनी प्रेम देवी प्रेमिका पर भी विजय पा सकेगा। इन्हीं सुखद कल्पनाओं द्वारा अपने भावी जीवन को चित्रित करता हुआ, वह शीघ्र ही त्रिबली के मकान पर आ पहुँचा। त्रिबली अपनी बाहरी बैठक में मौजूद था। आर्तंगान को आते देखकर उसने हँसते हुए कहा—"इस समय कौन-सी आवश्यकता तुमको इधर खींच लाई ?"

आर्तंगान ने अभिवादन करके कहा—"एक अत्यंत आवश्यक काम ने मुझे आपको कष्ट देने के लिये वाध्य किया है।"

त्रि०—"वह कौन-सी आवश्यकता है ?"

आर्त०—"उसका महत्त्व आप स्वयं समझ जायेंगे, जब आपको यह मालूम होगा कि वह एक रहस्य है और उसका संबंध राजमहिषी से है।"

त्रिबली ने चौंककर इधर-उधर देखते हुए कहा—"राजमहिषी से! वह कौन-सा गुरुतर रहस्य है?"

आर्त०—"मैं आपको बतलाता हूँ......।"

त्रिबली ने रोककर कहा—"जब वह रहस्य राजमहिषी से संबंध रखता है। तब वह तुम्हारा नहीं है। क्या तुमको दूसरे पर उसे प्रकट कर देने का अधिकार है?"

आर्त०—"नहीं! इसके विपरीत वह इतना महत्त्व-पूर्ण है कि किसी पर प्रकट नहीं किया जा सकता।"

त्रि०—"तब, ऐसी दशा में इस भेद को अपने ही तक रक्खो। किसी पर भी प्रकट न करो। इसके अतिरिक्त यदि और कुछ कहना चाहते हो तो कहो।"

आर्तगान सेना-नायक त्रिबली के सौजन्य पर अत्याधिक मुग्ध हो गया।

उसने कहा—"इसी रहस्य के सम्बन्ध में मुझे लन्दन जाना है। मैं आपसे यह प्रार्थना करने आया हूँ कि आप कृपया १५ दिवस की छुट्टी मेरे सेनापति इसार्ट से अनुरोध-पूर्वक दिलादें।"

त्रि०—"१५ दिवस की छुट्टी तुमको दिलादी जायगी। इससे तुम निश्चिन्त रहो? कब रवाना होगे?"

आर्त०—"आज ही! और अभी।"

त्रि०—"परन्तु तुम्हारा अकेले जाना ठीक नहीं है। मार्ग में अनेक विघ्न पड़ेंगे। धर्माचार्य के जासूस तुम्हारा पीछा अवश्य करेंगे। यह यात्रा बिना दो-चार साथियों को साथ लिये कभी समाप्त नहीं हो सकती।"

आर्त०—"परन्तु मुझे अपने साहस पर विश्वास है, अधिक-से-अधिक मर जाना होगा। वीर-मृत्यु से मैं कभीभय भीत नहीं होता।"

त्रि०—"ओह! तुम भूलते हो। मार्ग में मर जाने पर जो काम तुमने लिया है, वह पूरा नहीं हो सकता।"

आर्तगान ने क्षण भर कुछ सोचकर कहा—"तब ऐसी दशा में अथास, पार्थ और अर्मस मेरे साथ जायँगे। वे मेरे अभिन्न मित्र हैं। हम मित्रों में यह प्रतिज्ञा हो चुकी है कि एक का साथ बिना कारण जाने भी सबको देना होगा। क्या आप उनको भी छुट्टियाँ देने की कृपा करेंगे?"

त्रि०—"अवश्य! इनको मैं अभी अवकाश-स्वीकृत पत्र स्वयं भेजता हूँ। एक घण्टे पश्चात् तुम्हारे प्रत्येक मित्र को १५ दिवस की छुट्टी के पत्र मिल जायँगे। तुम निश्चिन्त रहो।"

आर्तगान धन्यवाद देकर वापस लौट गया।

पहली भेंट उसने अर्मस से की। अर्मस कई दिनों से चिन्तित-सा दिखलाई देता था। आज भी उसके मुख पर गम्भीर चिन्ता की छाया देखकर, आर्तगान ने उसका कारण पूछा। अर्मस ने टालकर कहा कि वह एक धर्म-पुस्तक के उल्था करने में व्यस्त है। परिश्रम के कारण उसके चेहरे पर गम्भीरता छा गई है।

दोनों मित्र कुछ क्षण तक किसी अन्य विषय पर बातचीत करते रहे। कुछ देर बाद त्रिबली का एक नौकर एक लिफ़ाफा लेकर आया

अर्मस—"यह क्या है?"

नौकर—"छुट्टी की मंजूरी है जो श्रीमान् ने माँगी थी।"

अर्मस ने आश्चर्य में होकर कहा—"कैसी छुट्टी? मैंने कभी कोई छुट्टी नहीं माँगी।"

आर्त०—"इसे मंज़ूर कर लो और ख़ामोश हो जाओ।"

नौकर से कहा—"तुम जाओ। सेनापति से कह देना कि अर्मस इस अनुकम्पा के लिये अत्यंत कृतज्ञ है।"

नौकर चला गया। अर्मस भौचक्का रह गया। उसने कहा—"यह सब क्या मामला है?"

आर्त०—"अपना असबाब इत्यादि बाँधकर १५ दिन की लंबी यात्रा के लिये तैयार हो जाओ। मेरे साथ तुमको चलना होगा।"

अर्मस—"परंतु मैं अभी पेरिस नहीं छोड़ सकता। मुझे यह जानना है कि वह......।"

आर्त०—"कि उसका क्या हुआ यही जानना है ना?"

अर्मस—"किसका?"

आर्त—"वह जोकि यहाँ थी—वह रेशमी रुमालवाली रमणी!"

अर्मस ने व्यग्र होकर कहा—"क्या कहते हो? कौन स्त्री? यह तुमसे किसने कहा कि मेरे यहाँ स्त्री रहती थी?"

आर्त—"मैंने उसे स्वयं देखा है।"

अर्मस—"तब तुम जानते हो कि वह कौन है?"

आर्त—"मैं अनुमान से अवश्य जानता हूँ।"

अर्मस ने यह देखा कि आर्तगान उसके और मैडेम कैवरिस के प्रेम-सम्बंध से किसी प्रकार परिचित हो गया है। अतः उसने कहा—"अब चूँकि तुम सब कुछ जानते हो तो यह बतलाओ कि वह रमणी इस समय है कहाँ?"

आर्त०—"मेरा विचार है कि वह टुअर्स पहुँच गई।"

अर्मस ने कुछ सोचकर कहा—"यह संभव है, वह वहाँ हो; परंतु मुझे बिना बताये वह क्यों चली गई?"

आर्त०—"यह तो स्पष्ट है कि वह डरती थी कि कहीं गिरफ़्तार न करली जाय।"

अर्मस—"ओह! आर्तगान! आज तुमने मुझे एक नया जीवन

प्रदान किया। मेरा ख़्याल था कि मुझे वह धोखा देकर भाग गई। आह! उसको इस बार देखकर मैं कितना सुखी हुआ था। मुझे यह कभी ख़्याल भी नहीं हो सकता था कि वह अपने जीवन को ख़तरे में डालकर मुझसे पेरिस में आकर मिलेगी। परंतु वह पेरिस आख़िर किस काम से आई थी?"

आर्त०—"जिस काम के लिये अब हम इंगलैंड जा रहे हैं!"

अर्मस—"वह कौन-सा काम है?"

आर्त०—"किसी दिन यह तुमको मालूम ही हो जावेगा। इस समय मैं उस रहस्य को गुप्त रखने के लिये वाध्य हूँ।"

अर्मस ने हँसकर कहा—"ख़ैर! चूँकि वह अब पेरिस में नहीं है, इसलिये मैं अब निश्चिंत हूँ। अब मैं तुम्हारे साथ कहीं भी चलने के लिये तैयार हूँ।"

आर्त०—"तो अब मैं अथास के पास चलता हूँ। अपने नौकर वैरीकान से भी कह देना कि वह भी तैयार रहे।"

अर्मस ने वैरीकान को बुलाकर यात्रा की तैयारी के लिये आज्ञा दी और स्वयं तलवार, पिस्तौल और लबादा लेकर आर्तगान के साथ हो लिया।

मार्ग में अर्मस ने आर्तगान से कहा कि इस रमणी का ज़िक्र किसी दूसरे के कान में न पहुँचने पावे। यहाँ तक कि कोई मित्र भी इसकी भनक तक न पा सकें।

जब दोनों मित्र अथास के पास पहुँचे तो देखा कि अथास हाथ में एक पत्र लिये हुए बैठा है और किसी विचार में मग्न है। दोनों मित्रों को आते हुए देखकर अथास झट बोल उठा—"आओ! और ज़रा इस भेद पर प्रकाश डालो कि आज बिना माँगे सेनापति ने छुट्टी क्यों दी है?"

आर्तगान—"इस छुट्टी का अभिप्राय यह है कि तुमको मेरे साथ १५ दिन की यात्रा करनी पड़ेगी।"

अथास—"कहाँ ? राजा की ही नौकरी है ना ?"

ठीक इसी समय पार्थ ने यह कहते हुए प्रवेश किया—"ख़ूब ! अब तो महाशय त्रिबली १५—१५ दिन की छुट्टियाँ बिना माँगे देने लगे ? मुझे आश्चर्य है कि यह स्वभाव उनका कब से पड़ गया ?"

आर्त०—"जब से तुम्हारे एक मित्र को इसकी आवश्यकता हुई ?"

पार्थ—"अहा ! हा ! तब तो मालूम होता है कि कोई नवीन घटना घटित हुई है ।"

आर्त०—"हम लोगों को अब एक साथ यात्रा करनी होगी ।"

अथास और पार्थ दोनों ने पूछा—"कहाँ ?"

आर्त०—"लन्दन !"

दोनों आश्चर्य में हो गये । पार्थ ने कहा—"लन्दन ! लन्दन में क्या करना होगा ?"

आर्त०—"मित्रो ! यही एक ऐसी बात है कि जिसको मैं अभी न बतलाने के लिये मज़बूर हूँ । तुम लोगों को मुझ पर विश्वास करना होगा ।"

पार्थ—"वहाँ जाने के लिये रुपया चाहिये । परंतु मेरे पास तो एक कौड़ी भी नहीं है ।"

आर्तगान ने थैली निकाल कर मेज़ पर रखदी और कहा—"धन के विषय में निश्चिंत रहो । धन काफ़ी है ।" अब यात्रा के लिये सुगम मार्ग सोच लेना चाहिए । हमको आज ही सुबह होने के पूर्व पेरिस त्याग देना होगा ।"

चारो मित्र कैसी ही भीषण परीस्थिति हो, एक साथ काम करने के लिये बचन-बद्ध थे । ऐसे समय व्यक्तिगत हानि-लाभ का विचार छोड़ देना पड़ता था । एक दूसरे पर विश्वास इतना अधिक था कि लंदन किस कार्यवश जाना पड़ रहा है, इससे अनभिज्ञ रहते हुए भी तीनों मित्र आर्तगान का अनुगमन करने के लिये तैयार हो गये ।

मित्र-मण्डली अब यात्रा के लिये कोई समुचित योजना तैयार करने में लग गई। आर्तंगान ने यह समझाया कि रानी का पत्र लेकर लन्दन एक भद्र-पुरुष के पास पहुँचाना है। धर्माचार्य इस कार्य में बिघ्न डालेगा। यह अनुमान है कि मार्ग में कोई जासूस पीछा करेगा और यह भी सम्भव है कि चारों मित्रों में से एक-एक करके मार्ग में छूट जायँ और केवल अन्तिम व्यक्ति ही अपने गंतव्य स्थान पर पहुँच सके। अतः यह आवश्यक है कि चारों मित्र एक साथ अपने-अपने सेवकों को साथ लेकर सब प्रकार से लैस होकर रवाना हों। पार्थ ने इस योजना पर कुछ विरुद्ध मत प्रकट करना चाहा; परंतु अथास आर्तंगान की बुद्धि तथा प्रभुत्व सम्मति पर विश्वास करता था। इसके अतिरिक्त उसकी योजना की भावी सफलता उसको तर्क द्वारा प्रत्यक्ष दिखलाई पड़ रही थी। अतः उसने सबको सहमत कर लिया। चारो मित्र अपने-अपने सेवकों के साथ यात्रा के लिये तैयार हो गये।

१९

रात के दो बजने के पहले ही आठों यात्री घोड़ों पर सवार होकर अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित, पेरिस से चल पड़े। घनी अँधियारी में ये सवार ख़ामोशी से लंबे-लंबे वीहड़ बनों को लाँघते हुए, अपने मार्ग पर चलते चले गये। प्रातःकाल की सुनहरी किरणें जब मैदान में आकर पड़ने लगीं तब इस मंडली ने देखा कि पेरिस से वे लोग बहुत दूर निकल चुके हैं। उनके चेहरे आनंद से लाल हो गये। यद्यपि इस मंडली की फ़ौज़ी पोशाक को देखकर साधारण राहगीर भी चकित दृष्टि से इनकी ओर देखने लगता था, तथापि अपने पहचान लिये जाने का डर इनके हृदय से दूर हो चुका था। धीरे-धीरे बातचीत करते हुए ये लोग चैंटिली होटल के निकट आ गये। घोड़ों से उतर कर चारों मित्रों ने होटल में प्रवेश किया। नौकर बाहर रहकर घोड़ों की रक्षा करने लगे। इनका यहाँ पर अधिक देर तक रुकने का विचार न था; इसी कारण नौकरों को आज्ञा दी कि घोड़ों का चारजामा उतारा न जाय।

होटल के स्वामी ने अपने असाधारण अतिथियों का अच्छा स्वागत किया। एक बड़े कमरे में स्वादिष्ट भोजन का प्रबंध कर दिया

गया। यहाँ पर एक अपरिचित भद्र-पुरुष जो मालूम होता था कि कुछ क्षण पहले ही लंबी यात्रा करके आया है, बैठा हुआ शांति से भोजन कर रहा था। कभी-कभी कनखियों से आगंतुकों की ओर भी वह देख लेता था। पार्थ इसके निकट ही आकर बैठ गया और एक ही मेज़ पर भोजन करने लगा। भद्र पुरुष ने विलायती प्रथानुसार वर्षा और मौसम के विषय पर बातचीत छेड़ी। थोड़ी देर तक बातचीत करने के बाद अपरिचित भद्र पुरुष ने पार्थ से कहा कि धर्माचार्य की मंगल-कामना के लिये शराब का एक प्याला पिया जाय। पार्थ की भौंहें इस पर टेढ़ी हो गईं। उसने उत्तर दिया कि इसके पूर्व राजा की मंगलकामना के लिये प्याला पीना चाहिए। अपरिचित ने कहा कि धर्माचार्य के सामने राजा की कुछ भी हैसियत नहीं। धर्माचार्य की सत्ता प्रधान है। पार्थ के मुँह से क्रोध के आवेश में निकल गया कि तुम मूर्ख हो। बस झगड़ा करने के लिये इतना काफ़ी था। दोनों में कहा-सुनी होने लगी, अपरिचित ने म्यान से तलवार निकाल ली। दोनों में तलवारें चलने लगीं। जब अथास की दृष्टि इस ओर गई; तो उसने पार्थ से कहा—कि "तुमने ग़लती की। इस समय युद्ध छेड़ना अनुचित हुआ। हम लोगों को इस यात्रा भर क्रोध के स्थान में सहन-शक्ति का परिचय देना चाहिये। ख़ैर! हम लोग अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकते। हम चलते हैं, तुम अपने शत्रु को परास्त करके मार्ग में आ मिलो।"

यह कह कर अथास शेष मित्रों के साथ घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ गये। तेज़ चाल से घोड़े सनसनाते हुए चले जा रहे थे। मार्ग में अथास ने कहा—"लो! हम में से एक तो यहीं छूट गया, पार्थ के इस विचित्र आक्रमण के अन्दर कुछ रहस्य अवश्य है। यद्यपि हम नहीं जानते पर शत्रु पीछा कर रहे हैं। भविष्य में हमको सतर्क रहना होगा।"

अथास अपनी बात को मुश्किल से पूरा कर पाया था कि मार्ग में दस बारह आदमी दिखलाई पड़े। इस स्थान पर सड़क बहुत तंग होगई थी। सड़क के दोनों ओर ऊँचे-ऊँचे पुश्ते से बने हुये थे और सड़क ने एक गहरी खाई का रूप धारण कर लिया था। अश्वारोहियों ने देखा कि ये लोग सड़क में न मालूम क्यों गहरे-गहरे गड्ढे खोद रहे हैं और इन गड्ढों में गन्दा कीचड़ भरते जाते हैं। घोड़ों को चलने में असुविधा देखकर अर्मस ने इन विघ्न-कारियों को रोका। मज़दूर लोग हँसने लगे और इन लोगों का मज़ाक़ उड़ाने लगे। अथास की शांति लोप होगई, उसने चिढ़कर क्रोध में एक के जूते की गहरी ठोकर जमा दी। ठोकर का मारना था कि सब मज़दूर तलवारें निकाल-निकाल कर यात्रियों पर पिल पड़े। चारों ओर से घिरा देखकर, अथास को अपने कार्य पर बड़ा अफ़सोस हुआ। आत्मरक्षा करने के लिये युद्ध करने के अतिरिक्त और कोई चारा न दिखाई पड़ा। अर्मस और मास्कटन बे-ख़बर थे। आक्रमणकारियों ने इन दोनों की ख़ूब ख़बर ली। परन्तु जब सातों यात्रियों ने ग़ोल बाँधकर हमला कर दिया, तो मज़दूरों की दृढ़ क़तार टूट गई। मार्ग पाते ही सातों घोड़े उड़ चले। आक्रमणकारी पैदल होने के कारण थोड़ी दूर तक पीछा करने के बाद लौट गये।

दो घंटे लगातार घोड़े फेंकते हुए ये लोग चलते चले गये। मास्कटन का घोड़ा कुछ घायल हो गया था और मास्कटन के स्वयं भी गहरी चोट आई थी। इसी लिये वह मार्ग के एक गाँव में रुक गया। शेष यात्री आगे बढ़ते चले गये। क्रेवाकर के होटल के निकट जब ये लोग पहुँचे तो अर्मस जिसके घाव से ख़ून बहुत निकल चुका था, इतना कमज़ोर होगया कि आगे बढ़ने की उसकी हिम्मत न पड़ी। बैरीकान को उसकी रक्षा के लिये वहीं छोड़कर अथास और आर्तगान अपने सेवकों के साथ आगे बढ़े। मार्ग में आर्तगान ने कहा—"कि

अब हम लोग केवल दो रह गये हैं। शत्रुओं की चाल यदि अब चल गई; तो हमारी यात्रा का उद्देश्य नष्ट हो जायगा। अतः हमको ज़रूर पहुँचना है, इसी बात पर ध्यान देने के अतिरिक्त हमको अब इस पर भी ध्यान देना होगा कि शत्रु के विघ्न को क्रोध से नहीं वरन् शांति से नष्ट करें।" अथास ने घोड़े को चाबुक मारते हुए कहा—"चले चलो, व्यर्थ में समय नष्ट न करो।" आर्तगान ने हँसकर अपने घोड़े को ऐंड़ लगाई।

रात के बारह बजते-बजते ये चारों यात्री अमींस पहुँच गये। होटल में उतर कर इन लोगों ने विश्राम किया। होटल का स्वामी देखने में बहुत भला और ईमानदार मालूम होता था। उसने किनारे के दो कमरों को दिखाकर कहा कि आप लोग यहाँ विश्राम कीजिये। आप ही जैसे प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिये इन कमरों को मैं खुलवाता हूँ। परंतु अथास ने इनको पसंद न करके कहा कि हम लोग साधारण हाल में चटाइयाँ बिछाकर सो रहेंगे। विवश होकर होटल के स्वामी को हाल ही में प्रबंध करना पड़ा। ग्रीमांड घोड़ों की रक्षा पर नियत किया गया और प्लेंचेट हाल के भीतर फाटक पर सुलाया गया; परंतु प्लेंचेट रात भर जागता ही रहा। सोने का उसने नाम तक नहीं लिया। रात्रि में कई-बार किसी ने ज़ोर-ज़ोर से द्वार खटखटाया; परंतु उसने जानकर भी न खोला।

सुबह को चार बजे के क़रीब बड़े ज़ोरों का हल्ला सुनाई पड़ा। इस चिल्लाहट में ग्रीमांड की आवाज़ को सुनकर सब लोग दौड़ पड़े। मालूम हुआ कि ग्रीमांड ने अस्तबल के लड़कों को तैयार होने की जल्दी में जगा दिया था। लड़कों ने केवल इस ही बात पर उसे ख़ूब पीटा यहाँ तक कि बेदम कर दिया। उसके सर पर बहुत चोट आई थी। प्लेंचेट जब घोड़े तैयार करने गया तो उसने देखा कि घोड़े सब बेकार हो गये हैं क्योंकि इत्तफ़ाक़ से डाक्टर किसी दूसरे

घोड़ों की फ़स्द खोलते समय धोखे में इन्हीं के घोड़ों की फ़स्द खोल गया था।

इन घटनाओं ने दोनों मित्रों को बहुत निराश कर दिया। परंतु इन साहसी वीरों ने हिम्मत न छोड़ी। यह निश्चित हुआ कि शीघ्र ही कोई दूसरे घोड़े अस्तबल से किराये पर ले लिये जायँ; परंतु अस्तबल में कोई घोड़े न मिल सके। केवल दो घोड़े अस्तबल के बाहर कसे-कसाये खड़े थे। मालूम होता था कि कोई यात्री इन पर जाने वाला है।

आर्त्तगान इधर घोड़ों की चिन्ता में खड़ा था कि उधर अथास होटल का बिल चुकाने के लिये होटल के स्वामी के पास गया। अथास ने जाकर मेज़ पर सिक्के डाल दिये। स्वामी एक सिक्का हाथ में लेकर बड़े ग़ौर से देखने लगा। और सहसा चिल्ला उठा, "धूर्त जालसाज़! यह नक़ली सिक्के देकर जाना चाहता है! चल! अदालत में तेरा फ़ैसला होगा!"

अथास के बदन में आग लग गई। उसने डपटकर कहा—"ज़बान बंद कर! नहीं तो सर उड़ा दूँगा!"

अथास के बोलते ही सहसा कमरा खोलकर चार आदमी नंगी तलवार लिये घुस आये और अथास को घेर लिया। उसने तलवार निकाल ली और ज़ोर से पुकार कर इतना कहा,—"भाग जाओ! मैं घिर गया हूँ।" और शत्रुओं का हमला रोकने लगा।"

अथास की यह आवाज़ आर्तगान के कान में पड़ गई। वह समझ गया कि प्लेंचेट के अतिरिक्त अब और कोई उसका साथ न दे सकेगा। अथास पर क्या बीतेगी, इसकी कुछ भी परवा न करके उसने शीघ्र ही चल देने का विचार कर लिया। उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ गई। शीघ्र ही प्लेंचेट को हुक्म दिया—"रुको मत! चल पड़ो! ये ही घोड़े काफ़ी हैं। पीछा करने वाले को धोखा देकर

चल दो।" यह कहकर वह सामने के कसे-कसाए घोड़े पर सवार हो गया। प्लेंचेट ने भी उसका अनुकरण किया। रात्रि में घोड़ों ने इन दोनों को अपना स्वामी समझकर तीव्र-गति से चलना शुरू किया। कुछ ही क्षण में वे दोनों मीलों आगे निकल गये। जब यह देख लिया कि पीछा करनेवाले शीघ्र ही निकट नहीं पहुँच सकते तब आर्तगान ने निश्चिंत होकर प्लेंचेट से अथास के आक्रमण का हाल पूछा। प्लेंचेट से नक़ली सिक्के की कथा सुनकर आर्तगान हँसा। उसके मुँह से निकला कि "लड़ाई करने के लिये किसी कारण की आवश्यकता नहीं होती।"

दो घंटे का मार्ग तै करके दोनों स्वामी और सेवक अत्यंत थके हुए, पसीने से तर कैले पहुँच गये। इंगलैंड पहुँचने के लिये फ्रांस का निकटतम बंदरगाह यही था, आर्तगान को यहीं से जहाज में सवार होना था।

जब इन लोगों से बंदरगाह केवल सौ क़दम के फ़ासले पर रह गया; तब प्लेंचेट ने आर्तगान को उँगली से एक ओर इशारा किया। आर्तगान ने देखा कि एक अपरिचित व्यक्ति पचास क़दम आगे चला जा रहा था। उसके जूतों और कपड़ों पर गर्द जमी थी जिससे मालूम होता था कि वह भी लंबी यात्रा करके आ रहा है। इसके साथ एक नौकर भी था। दोनों तेज़ चाल से झपटते हुये जा रहे थे। आर्तगान को कुछ संदेह हुआ। वह भी इन दोनों के पीछे हो लिया। अपरिचित व्यक्ति ने कप्तान के पास पहुँचकर पूछा—"इंगलैंड जानेवाला जहाज़ अभी छूटा या नहीं ?"

कप्तान—"जहाज़ अभी मौजूद है लेकिन धर्माचार्य का यह आदेश है कि उसकी विशेष आज्ञा बिना आज कोई भी इस जहाज़ पर सवार नहीं हो सकता।"

अपरिचित ने अपनी जेब से एक काग़ज़ निकालकर दिखलाते हुए कहा—"मेरे पास उनका आज्ञा-पत्र मौजूद है।"

कप्तान—"तो फ़ौरन् गवर्नर को इसे जाकर दिखलाओ। उनके तसदीक़ करने पर तुमको स्थान दे दिया जायगा।"

अपरिचित—"परंतु गवर्नर कहाँ हैं ?"

कप्तान—"यहाँ से थोड़ी दूर पर एक पहाड़ी के निकट उनका बँगला है। वह देखो ! यहाँ से दिखलाई पड़ रहा है।"

अपरिचित अपने नौकर के साथ गवर्नर के बँगले की ओर चल दिया। नगर के बाहर जंगल से गुज़रना पड़ता था। आर्तगान और प्लेंचेट पाँच-सौ क़दम के फ़ासले से इन दोनों का पीछा कर रहे थे। जब वे लोग जंगल में पहुँचे तो आर्तगान ने फुर्ती से आगे बढ़कर उनको रोककर कहा—"महाशय ! तुम बहुत जल्दी में मालूम होते हो ?"

अपरिचित—"हाँ ! इस समय मुझसे अधिक कोई जल्दी में नहीं हो सकता।"

आर्त०—"मुझे खेद है ? मैं भी बहुत जल्दी में हूँ। क्या आप मेरे ऊपर एक कृपा करेंगे ?"

अपरिचित ने आश्चर्य में होकर पूछा—"क्या ?"

आर्त०—"जहाज़ में पहले मैं चढ़ना चाहता हूँ।"

अपरिचित ने चिल्लाकर कहा—"यह असंभव है, मैं बड़ी लंबी यात्रा करके केवल इसीलिये आ रहा हूँ।"

आर्त०—"परंतु मैंने भी इसीलिये बहुत लंबी यात्रा की है ? मुझको कल सुबह लंदन ज़रूर पहुँच जाना है।"

अपरि०—"मुझे खेद है। परंतु मैं यहाँ पहले आ गया हूँ, मेरा अधिकार पहला है ?"

आर्त०—"अधिकार मेरा पहला है ; यद्यपि मैं देर में आया हूँ।"

अपरि०—"मैं राजा के काम से जा रहा हूँ।"

आर्त०—"कुछ परवा नहीं, मैं अपने काम से जा रहा हूँ।"

अपरिचित ने क्रोध में होकर कहा—"तुम क्या चाहते हो? व्यर्थ में झगड़ा करके पछताओगे।"

आर्त०—"मैं चाहता हूँ आज्ञा-पत्र।"

अपरि०—"वह नहीं मिल सकता।"

आर्त०—"देना होगा?"

"तब लो!" यह कहते हुए अपरिचित ने तलवार आर्तगान के ऊपर चला दी। आर्तगान पहले ही से सतर्क था। पैतरा देकर साफ़ बच गया। दोनों में युद्ध होने लगा। आर्तगान ने चिल्लाकर कहा—"इसको मैं ठीक करता हूँ। तुम नौकर से निपटो।"

प्लेंचेट ने शीघ्र ही नौकर को धर दबाया। उसने बहुत हाथ पैर पटके और शोर गुल किया; परंतु प्लेंचेट ने कस कर दबा दिया और छाती पर चढ़ बैठा। उधर आर्तगान ने भी अपने शत्रु को बेदम कर दिया था। अपरिचित ज़मीन पर पड़ा हुआ छटपटा रहा था। आर्तगान चढ़ा हुआ छाती पर बैठा था। अपने शत्रु को असहाय समझकर आर्तगान जेब से काग़ज़ निकालने के लिये झुका, तब उसी समय अवसर पाकर अपरिचित ने एक छुरा आर्तगान के कलेजे में भोंक दिया। वार गहरा पड़ा था; परंतु कवच ने बचा दिया। आर्तगान ने झल्लाकर तलवार के अंतिम वार से शत्रु को अचेत कर दिया। घाव की कुछ भी परवा न करके आर्तगान काग़ज़ लेकर शीघ्र ही गवर्नर के पास चल दिया। प्लेंचेट ने दोनों शत्रुओं की लाशों को कसकर बाँध दिया और एक झाड़ी में उनको फेंक दिया।

पत्र को देखने से मालूम हुआ कि अपरिचित का नाम वार्ड था। आर्तगान ने पहुँचकर इसी नाम से गवर्नर को अपना परिचय दिया। गवर्नर ने कहा—"तुम्हारे पास आज्ञा-पत्र है?" आर्तगान ने आज्ञा-पत्र दिखलाया। गवर्नर ने देखकर कहा—"ठीक! यही वह आज्ञा-

पत्र है। मालूम होता है, धर्माचार्य किसी विशेष व्यक्ति को इंगलैंड पहुँचने से रोकना चाहता है?"

आर्त०—"हाँ! उसका नाम आर्तगान है, वह अपने तीन मित्रों के साथ पेरिस से चला है?"

गव०—"क्या तुम उसको पहचानते हो?"

आर्त०—"ख़ूब अच्छी तरह। उसके साथ एक नौकर भी है?" यह कहकर उसने वार्ड की आकृति का पूरा वर्णन कर दिया।

गवर्नर बहुत प्रसन्न हुआ। हर्षित होकर उसने विदा दी और कहा—"इस आर्तगान पर मैं काफ़ी नज़र रक्खूँगा, वह इंगलैंड न जा सकेगा?"

आर्तगान अत्यंत प्रसन्न हुआ और जब वह जहाज़ पर प्लेंचेट के साथ बैठ गया तब वह निश्चिंत हो गया। जहाज जब चलने लगा तो इसकी सूचना देने के लिये तोप की आवाज़ उसके कानों में पड़ी कि बन्दरगाह अब बन्द कर दिया गया और शेष यात्री अब आज न जा सकेंगे। यह देखकर उसके आनंद की सीमा न रही।

२०

आतःकाल दस बजे के लगभग, आर्तगान ने जहाज से उतरकर इंगलैंड की भूमि पर क़दम रक्खा। हर्षातिरेक से उसने चिल्लाकर यह आनंद ध्वनि की—"अंत में मैं आ ही गया।" परंतु अभी लंदन पहुँचना था। किराये पर घोड़े लेकर दोनों यात्री दोपहर ढलते-ढलते लंदन पहुँच गये।

आर्तगान पहली ही बार लंदन आया था। अंगरेज़ी भाषा से भी वह अनभिज्ञ था। एक काग़ज़ पर ड्यूक आफ़ बकिंघम का नाम लिखकर वह ड्यूक के प्रासाद में पहुँचा। ड्यूक इंगलैंड के राजा का प्रभावशाली मंत्री था। समग्र राजशक्ति उसके हाथ में थी। उस समय योरप भर में उसका दबदबा छाया हुआ था। उसके प्रासाद से जिस ऐश्वर्य और वैभव की झलक आर्तगान को मिली, उसको देखकर वह चकित हो गया। ड्यूक उस समय राजा के साथ आखेट-स्थान में गया हुआ था। आर्तगान ने ड्यूक के प्रधान भृत्य से यह कहा कि मैं अत्यन्त ही आवश्यक कार्य से ड्यूक से अभी मिलना चाहता हूँ, देर होने पर ड्यूक को ही हानि उठानी होगी। मेरे कार्य का संबंध ड्यूक के एक प्रिय-पात्र के जीवन-मरण से है। भृत्य इसको सुनकर

आर्तगान को घोड़े पर सवार कराके आखेट-स्थान पर ले आया। आर्तगान बाहर प्रतीक्षा करने लगा। ड्यूक एक पक्षी पर आक्रमण करने के लिये अपने शिकारी बाज़ को पुकार रहा था कि ठीक इसी समय भृत्य ने आकर आर्तगान का संदेश सुनाया। ड्यूक आर्तगान का नाम सुनते ही व्यग्र हो गया। उसने विचार किया कि राजमहिषी पर कोई भीषण विपत्ति आई हुई है। सशंकित हृदय से वह राजा से कुछ बहाना करके शीघ्र ही आर्तगान के पास आया। पहुँचते ही उसने पूछा—"राजमहिषी पर कोई अमंगल तो नहीं है? वह सकुशल है ना?"

आर्तगान ने सर झुकाकर कहा—"राजमहिषी शरीर से सकुशल हैं; परंतु उन पर जो विपत्ति आई है, उससे आप ही केवल रक्षा कर सकते हैं। आपके लिये यह पत्र है।"

यह कहकर आर्तगान ने पत्र दे दिया। जल्दी में पत्र खोलकर ड्यूक ने पढ़ा। पढ़ते ही चेहरे पर अत्यंत व्यग्रता के चिह्न दिखलाई पड़े। उसके मुख से सहसा निकल पड़ा—"ओफ़! यह मैं क्या पढ़ रहा हूँ?" वह और कुछ कहनेवाला था परंतु रुक गया। आर्तगान को पीछे आने के लिये इशारा करके उसने फ़ौरन् ही घोड़े को एड़ लगाई और अपने महल की ओर चल दिया। मार्ग में आर्तगान द्वारा हार के विषय में कुल घटना सुनकर वह बहुत बेचैन हुआ। राजमहल के निकट पहुँचकर दोनों घोड़ों पर से उतर पड़े। आर्तगान को साथ लेकर महल के कई कमरों को लाँघता हुआ ड्यूक एक बड़े हाल में आकर रुका। इस कमरे में एक अलमारी थी जो वास्तव में एक दूसरे कमरे में पहुँचने के लिये चोर दरवाज़ा था। जेब से सोने की ताली निकालकर ड्यूक ने यह गुप्त द्वार खोला। आर्तगान पहले झिझका; परंतु ड्यूक ने हाथ पकड़कर कहा—"अंदर चलो। जो कुछ देखना, वह राजमहिषी से निवेदन कर देना।"

ड्यूक के साथ आर्तगान एक अत्यंत सुसज्जित विशाल कमरे में पहुँचा। मख़मली फ़र्श पर पैर रखते हुए उसको डर-सा मालूम होता था। इतना रमणीक कमरा उसने कभी न देखा था। कमरे में पहुँचकर जिस वस्तु पर उसकी पहले निगाह पड़ी उसे देखकर वह चकित रह गया। सोने के मंडप के भीतर राजमहिषी की अत्यंत सुंदर प्रस्तर मूर्ति खड़ी हुई थी। सौंदर्यमय अवयव इतनी कुशलता के साथ बनाये गये थे कि मालूम होता था कि साक्षात् राजमहिषी खड़ी है। ड्यूक ने पहुँचते ही मूर्ति को झुककर प्रणाम किया और अत्यंत प्रेम के साथ मूर्ति के हाथ को अपने ओठों से स्पर्श किया। मूर्ति के चरणों के पास सुनहरी संदूक़ची में हीरों का हार रक्खा हुआ था।" ड्यूक ने कहा—"यही मेरा प्रेम-मंदिर है और यही उस मंदिर की अधिष्ठात्री देवी हैं। दिन में कई-बार इनके दर्शन करके मैं अपने हृदय की अग्नि को शांत कर लेता हूँ।" ड्यूक बातचीत करते हुए ही हीरों का हार निकाल कर आर्तगान को दिखला रहा था। सहसा चेहरे का रंग उड़ गया। उसने चिल्लाकर कहा—"अरे यह क्या? सर्वनाश! दो हीरे क्या हुए!"

आर्तगान भी घबड़ा गया। उसने पूछा! "कोई चुरा तो नहीं ले गया?"

ड्यूक—अवश्य! किसी ने चुराये अवश्य हैं। कुल बारह हीरे थे। दो ग़ायब हैं! यह देखो निशान बने हुए हैं। किसी ने क़ैंची से काट लिये हैं।"

आर्त०—"यह कौन हो सकता है?"

ड्यूक—जहाँ तक मेरी स्मृति काम देती है यह विंटर का काम है। उस रोज़ नृत्यशाला में उससे और मुझसे कुछ झगड़ा हो गया। परंतु क्षण ही भर के बाद विंटर ने क्षमा मांग ली थी। वैमनस्य मिटाने के लिये उसने मेरा आलिंगन किया था। मैं उस रोज़ यह हार पहने हुआ था। वह धूर्त ज़रूर धर्माचार्य की जासूस है!"

आर्त०—"धर्माचार्य की जासूस ! क्या धर्माचार्य के जासूस इंगलैंड में भी मौजूद हैं ?"

ड्यूक—" ओह ! उसके गुर्गे कहाँ नहीं हैं ? संसार भर में फैले हुए हैं ! यह स्त्री भी उसी की ओर से जासूसी के काम पर मालूम होता है नियत है। राजमहिषी को छकाने के लिये यह करतूत की गई है ; परंतु कोई हर्ज नहीं ? ड्यूक से बचकर वह नहीं जा सकती ? यह बतलाओ वह नृत्य कब होनेवाला है ?"

आर्त०—"अगले सोमवार को ।"

ड्यूक—"तब तो काफ़ी समय है। अभा पाँच दिन हैं।

शीघ्र ही कमरा बंद करके ड्यूक बाहर दफ़्तर में आया और एक काग़ज़ पर कुछ लिखा और अपने सेक्रेटरी और राजा जौहरी को बुलवाया। आर्तगान भी एक कुर्सी पर बैठ गया था। ड्यूक ने सेक्रेटरी के आते ही कहा—"यह आज्ञा लेकर चेंसलर के पास जाओ उनसे कहना कि मैं चाहता हूँ कि इस आदेश के अनुसार शीघ्र ही कार्यवाही की जाय।"

सेक्रेटरी—"परंतु यह तो फ्रांस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करना है ? क्या इतना शीघ्र यह उचित होगा ?"

ड्यूक—"यह ठीक है ! परंतु मैं ऐसा ही चाहता हूँ। इस विषय पर मैं कुछ अधिक नहीं सुनना चाहता।"

सेक्रेटरी चला गया। आर्तगान की ओर प्रवृत्त होकर ड्यूक ने कहा—"यदि हीरे इंगलैंड के बाहर अभी तक नहीं चले गये हैं तो तुमसे पूर्व वे पेरिस नहीं पहुँच सकते। इसका मैंने प्रबंध कर दिया है।"

आर्तगान ने आश्चर्य से पूछा—"कैसे ?"

ड्यूक—"राज्य भर के बंदरगाहों में यह आज्ञा निकाल दी है कि फ्रांस जानेवाले कुल जहाज़ बिना विशेष आज्ञा के न जाने पावें।" आर्तगान संशय में हो गया, इतनी विशाल आज्ञा क्या राजा स्वयं

भी देना पसंद करता ? ड्यूक के इस असाधारण साहस पर आर्तगान का हृदय ड्यूक के प्रति असीम श्रद्धा तथा सम्मान से भर गया। इतने महान् पुरुष के साथ वह समान पद पर बैठा हुआ है, इस भाव ने उसके मन में अभिमान और गौरव की भावना भर दी।

कुछ क्षण पश्चात् राज्य जौहरी ने आकर ड्यूक को झुककर अभिवादन किया। ड्यूक ने हार के एक हीरे को दिखाकर कहा—"देखो! इस हीरे के समान दो हीरे तुमको नक़ली बनाना होंगे। परंतु सच्चे और झूठे हीरों में यदि ज़रा भी पहचान हो सकी तो तुम्हारे जीवन पर आ बनेगी। आज तुमको अपने पूरे कौशल का परिचय देना होगा, कितना धन लगेगा और कब तक बना सकते हो ?

जौहरी ने कहा—"हुज़ूर! काम बहुत कठिन है; परंतु ढाई लाख रुपये के रत्न ख़र्च होंगे और चार दिन के परिश्रम में तैयार हो सकते हैं ?"

ड्यूक—"इस चेक के द्वारा हमारे सेक्रेटरी से ले लो। तुमको पुरस्कार में पचास हज़ार रुपया और अधिक दिया जायगा, यदि परसों तक इनको बना सको।"

जोहरी—"हुज़ूर! इंगलैंड भर में केवल मैं ही इसके समान झूठे हीरे बना सकता हूँ; परंतु समय कम है। लेकिन हुज़ूर का काम है। हुज़ूर की आज्ञा का पालन करूँगा।"

ड्यूक—परंतु ये हीरे तुमको बाहर नहीं दिये जा सकते। महल ही में रहकर तुमको बनाना होगा और यहाँ पर तुम्हारे ऊपर काफ़ी निगरानी रहेगी। डरो मत! इसके लिये इनाम दिया जायगा। लेकिन इसका ख़्याल रहे। नये और पुराने में भेद न रहने पावे।"

जौहरी—"हुज़ूर स्वयं परख कर देख लीजियेगा। ज़रा भी अंतर दिखलाई न देगा।" यह कहकर जौहरी अपने यंत्र लेने के लिये चला गया।

आर्तगान ड्यूक के प्रभुत्व और समृद्धि को देखकर चकित हो गया। लाखों पर पानी किस प्रकार बहाया जा सकता है, यह उसने आज ही जाना। उसके लिये यह सब बातें स्वप्नवत् थीं। ड्यूक ने आर्तगान से कहा—"आर्तगान! तुम्हारी इस सेवा के लिये मैं जीवन भर कृतज्ञ रहूँगा। परंतु इस समय जो कुछ भी तुम्हारी इच्छा हो, उसको मैं पूरा कर सकता हूँ। इंगलैंड मेरा है। जो कुछ चाहो, वह माँग सकते हो!"

आर्तगान ने झुककर अभिवादन किया और कहा—"इस समय मुझे विश्राम के लिये थोड़े से स्थान के अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिए।"

ड्यूक—"परंतु जिस ऋण-पाश में तुमने मुझे बाँध लिया, उससे मुक्त होने के लिये मुझे कुछ-न-कुछ तुम्हारी भेंट अवश्य करना होगा।"

आर्त०—"परंतु मैं इस धृष्टता के लिये क्षमा माँगता हूँ कि मैं फ्रांस का निवासी हूँ और एक राज-भक्त प्रजा की भाँति एक अँगरेज़ का आभारी होना पसंद नहीं कर सकता। मुझे युद्ध-क्षेत्र में आपसे भेंट करके अत्यंत प्रसन्नता होगी। वहाँ पर आपकी ओर से तलवार का प्रथम वार मेरे लिये अत्यंत सुखकर होगा। यही मेरी इच्छा है और इसी की पूर्ति मेरी माँग है।"

ड्यूक इस वीरता पर मुग्ध हो गया। उसको अत्यंत आश्चर्य हुआ कि इस युवक के छोटे से शरीर में कितना वीरोचित साहस भरा हुआ है। उसने आर्तगान से हाथ मिलाकर कहा—"युवक! तुम सच्चे वीर हो! तुम्हारी युद्ध की अभिलाषा अवश्य पूरी होगी। परंतु इस समय यह भेंट दो मित्रों की भेंट है और यहाँ से तुम्हारी विदा भी मित्र ही की भाँति होगी।"

इसके बाद दोनों अलग हो गये। आर्तगान ने एक अतीव वैभव-शाली कमरे में अपने नौकर के साथ विश्राम किया।

तीसरे दिन बारह हीरे आर्तंगान के सुपुर्द कर दिये गये। ड्यूक ने एक ख़ास जहाज़ में आर्तंगान और प्लैंचेट का प्रबन्ध कर दिया। और कैले से पैरिस तक की उनकी यात्रा के लिये दो तेज़ घोड़ों का भी प्रबंध अपने कैले-स्थित निजी मनुष्यों द्वारा करा दिया। इसके अतिरिक्त ड्यूक ने आर्तंगान के प्रत्येक मित्र के लिये भी एक-एक नवीन अश्व भेंट किया।

उस दिन इंगलैंड के प्रसिद्ध बंदरगाह डोबर से कई जहाज़ छूटे थे। आर्तंगान और प्लैंचेट का जहाज़ जब बंदरगाह से छूटा तो आर्तंगान की दृष्टि एक दूसरे जहाज़ में बैठी हुई एक सुंदर रमणी पर पड़ी। देखते ही आर्तंगान के मुख से सहसा निकल पड़ा—"ओह! यह तो मियांग होटल की वही सुंदरी ग्लैडी है?"

२१

सोमवार का दिन था पेरिस में शाही नृत्योत्सव की धूम मची हुई थी। प्रत्येक गली-कूचे में इसी नृत्य के विषय में बात-चीत होती थी। बार्तालाप के अन्य सब विषय लोग भूल से गये थे। नृत्योत्सव की तैयारियाँ लगातार आठ दिन से हो रही थीं। जिस महल में यह उत्सव मनाया जानेवाला था उसमें आदर्श सजावट का प्रबंध किया गया था। राज-कर्मचारी अपनी असीम तत्परता को दिखलाने में उत्सुक होकर, इधर-उधर अमित कार्य-संलग्नता को दिखा रहे थे। अनेक प्रकार के बाजों का संग्रह किया गया था। रात को दिन बनानेवाले प्रकाश में सुंदर रमणियाँ अपने यौवन की झलक और बहुमूल्य वस्त्रों की जगमगाहट दिखलाती फिरतीं थां। उत्सव में भाग लेनेवाले निमंत्रित, प्रतिष्ठित भद्र-पुरुषों तथा सौंदर्य-मयी कामनियों का समुदाय नौ बजने के पहले ही उत्सव-गृह में आकर उपस्थित हो गया। ठीक नौ बजे अनिंद्य सौंदर्य की अप्रतिम प्रतिमा ने बाजे-गाजे के साथ सभानेत्री का आसन ग्रहण किया। कर्मचारियों ने अपूर्व स्वागत का परिचय दिया। अब राजा की प्रतीक्षा जोरों से की जाने लगी। आधीरात के समय राजा ने

अपने अंग-रक्षक सैनिकों के साथ प्रवेश किया । मनमोहक वाद्यों ने राजा का स्वागत किया । राजा नृत्य की पोशाक में बहुत स्वरूपवान दिखलाई पड़ता था; परंतु उपस्थित लोगों की दृष्टि से यह न छिप सका कि राजा के मुख की कांति उस दिन फीकी थी और वह किसी अज्ञात कारणवश कुछ व्यग्र-सा प्रतीत होता था । आध घंटे के बाद ही राजमहिषी भी आ गई । राजा ने स्वयं आकर राजमहिषी का स्वागत किया । लोगों को यह देखकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि राजमहिषी भी उस दिन कुछ अप्रतिम-सी दिखलाई पड़ती थी ।

नृत्योत्सव के प्रारंभ करने का समय नौ बजे रात का नियत किया गया था । परंतु कुछ कारणवश धर्माचार्य ने इस नियत समय को बढ़ाकर बारह बजे कर दिया था । परंतु १२ बज चुकने पर भी धर्माचार्य अभी तक नहीं आये थे । राजा ने कुछ क्षण प्रतीक्षा करके एक कर्मचारी उसको बुलाने के लिये भेजा । कर्मचारी ने कठिनता से ड्योढ़ी लाँघी होगी कि नृत्य-गृह के पिछले द्वार से धर्माचार्य ने हँसते हुए प्रवेश किया । राजमहिषी ने आकर हँसते हुए स्वयं उसका स्वागत किया ।

धर्माचार्य की दृष्टि, राजमहिषी की ओर थी । वह भीषण प्रसन्नता के कारण अपने ओठों को काट रहे थे । राजमहिषी हीरे का हार नहीं पहने थी । राजमहिषी सम्भ्रांत रमणियों के अभिवादनों के उत्तर देने में लग गई । धर्माचार्य राजा के पास जाकर बहुत धीरे-धीरे बातें करने लगे । सहसा राजा सीधा भीड़ में से होकर तेज़ी के साथ रानी के पास आये और कहने लगे क्यों ? मेरे इतने अनुरोध करने पर भी हार पहनकर नहीं आईं ?

रानी का चेहरा पीला पड़ गया । उसने अपने चारों ओर निगाह डाली । धर्माचार्य पीछे खड़ा हुआ हँस रहा था । रानी ने लड़खड़ाती हुई ज़बान से कहा—"मुझे डर था कि कहीं इस भीड़ में वह खो

न जाय ।" रानी इतना कहकर चुप हो गई । राजा ने क्रुद्ध होकर कहा—"तुम्हारा यह विचार ग़लत है । यह बहाना निमू'ल है । ऐसे ही उत्सवों में उस हार को धारण किया जाता है ।"

राजा का चेहरा क्रोध से लाल हो गया। लोग बड़े आश्चर्य से यह देख रहे थे; परंतु उनको सुनाई कुछ न देता था। अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार तरह-तरह की अटकलें कर रहे थे। रानी ने उत्तर दिया—"तो उसको अभी मँगवाये लेती हूँ। श्रीमान् की इच्छा की पूर्ति अवश्य होगी।"

"ओह! उसको जल्दी मँगवाओ तब तक के लिये उत्सव को मैं रुकवाये देता हूँ।" यह कहकर राजा धर्माचार्य के हाथ में हाथ देकर वहाँ से हट गया। रानी के चले जाने पर धर्माचार्य ने राजा के हाथ में एक डिबिया रख दी। राजा ने खोलकर देखा कि उसमें दो हीरे रक्खे हैं। अत्यंत आश्चर्य में होकर वह धर्माचार्य के मुख की ओर ताकने लगा। क्षण भर के पश्चात् पूछा—"इसका क्या अभिप्राय है?"

धर्मा०—"कुछ नहीं! मुझे संदेह है कि रानी के पास हार में ये हीरे नहीं हैं। गिनकर देख लीजियेगा हार में केवल दस हीरे होंगे। तब पूछियेगा कि दो हीरे कहाँ हैं और कौन ले गया है?"

राजा इस पर कुछ पूछने ही वाला था कि सहसा लोगों का शोर-ग़ुल सुनाई दिया। राजा ने घूमकर देखा कि राजमहिषी हार पहने हुए अपूर्व सौंदर्यमय रूप में प्रवेश कर रही हैं। शोभा को देखकर लोगों के मुख से स्वयं प्रशंसा-सूचक शब्द निकल पड़े थे। राजा का हृदय आनन्द से फूल उठा। परन्तु धर्माचार्य की कांति मलिन पड़ गई। ये दोनों राजमहिषी से इतनी दूर थे कि हीरों का वहाँ से गिनना असंभव था। हीरे दस थे या बारह यह जानने के लिये धर्माचार्य की उत्सुकता बढ़ रही थी।

शीघ्र ही नृत्य प्रारंभ हो गया। राजा ने सभा-नेत्री के साथ नृत्य किया और धर्माचार्य ने राजमहिषी के साथ। हीरों की गणना करके उसके मुख की आकृति विचित्र हो गई थी। अधिक श्रम न पड़ने पर भी लोगों ने देखा कि वह पसीने से तर था और शान्त होने का बहाना लेकर वह नृत्य से हट गया।

नृत्य की समाप्ति पर राजा ने रानी से कहा—"मैं बहुत प्रसन्न हूँ कि तुमने मेरी अभिलाषा को पूर्ण कर दिया; परन्तु मेरा विचार है कि इन दो हीरों की शायद तुमको आवश्यकता पड़े।" यह कहकर उसने वही हीरे पेश कर दिये। परंतु रानी ने चौंककर कहा—"यह क्यों! आप तो मुझे दो हीरे और दे रहे हैं, तब तो मेरे पास चौदह हो जायँगे।"

राजा ने भौंहें टेढ़ी करके धर्माचार्य से कहा—"महाशय! इसका क्या अर्थ है?"

धर्माचार्य ने फ़ौरन ही बात बनाकर कहा—"इसका अर्थ केवल यही है कि मैं यह दो हीरे राजमहिषी को भेंट करना चाहता था; परंतु स्वयं भेंट करने का साहस न कर सका, इसी कारण यह उपाय काम में लाया गया।"

रानी ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"और मैं आपकी इस भेंट के लिये अत्यंत कृतज्ञ हूँ, जिसके संग्रह करने में शायद आपको काफ़ी श्रम व अर्थ-व्यय करना पड़ा है।" यह कहकर अभिवादन करके रानी वहाँ से चली गई।

२२

आर्तगान जब लंदन से हार लेकर कांसटेंस के पास आया तो उसका हृदय प्रेम की सुंदर कल्पनाओं से ओत-प्रोत था। राज महिषी के प्रसन्न होने का उसको इतना ध्यान न था जितना कि अपनी प्रेमिका को सुखी करके अपने श्रम को उसकी कृपा-दृष्टि से पुरस्कृत कराने का। कांसटेंस मुझे इस परीक्षा में उत्तीर्ण पाकर अवश्य ही अपने हृदय में मुझे स्थान देगी। इस विचार ने उसके हृदय में आनंद की धारा बहा दी थी। अतएव वह हार लेकर सीधा कांसटेंस के पास ही गया; परंतु राजमहिषी को हार देकर उसके संताप को दूर करने की शीघ्रता में कांसटेंस आर्तगान को धन्यवाद के दो शब्द भी देना भूल गई। आर्तगान को नृत्योत्सव की समाप्ति तक प्रतीक्षा करनी पड़ी। जैसे ही अपनी प्रेमिका को, रमणियों के झुंड के साथ उसने नृत्य-गृह से निकलते देखा, वह उसके पीछे हो लिया। यद्यपि काले मखमली लबादे से वह अपने सर्वाङ्ग को छिपाये थी; परंतु आर्तगान की तीक्ष्ण दृष्टि से वह छिप न सकी। उस दिन कांसटेंस का सौंदर्य अपूर्व था। अनिंद्य रूप की राशि कांसटेंस आर्तगान को स्वर्गीय देवी के समान जान पड़ती थी। उसके हृदय में दबी हुई प्रेम की

भावनायें उमड़ पड़ीं। रूप-माधुरी ने उसके शरीर की नस-नस में मादकता भर दी। प्रेम के नशे में उन्मत्त आर्तगान ने चाहा कि कांसटेंस के हाथ को वहीं चूम ले। इस विचार से आगे बढ़ा; परंतु कांसटेंस ने आर्तगान के विचार को ताड़कर मुँह पर उँगली रखकर संकेत से कहा कि चुपचाप मेरे पीछे चले आओ।

आर्तगान कांसटेंस के पीछे-पीछे चुपचाप चल दिया। राजमहल में प्रवेश करके वह कई कमरों में होकर गुज़री और अंत में एक कमरे में आकर यकायक ग़ायब हो गई। आर्तगान बराबर छिपे-छिपे आ रहा था। अपनी प्रेमिका-को इस प्रकार आँखों से ओझल होते देख भौचक्का-सा खड़ा रह गया। आश्चर्य और क्रोध दोनों उसके हृदय में उथल-पुथल मचाने लगे। परंतु कुछ देर यह सोचकर कि वह अभी लौटकर अवश्य आवेगी। शांत हृदय से प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी देर में पास के कमरे से कुछ शब्द उसके कान में पड़े। शब्द इतने अस्पष्ट थे कि वह समझ न सका; परंतु इतना मालूम हो गया कि कांसटेंस से कोई आदेशात्मक ढंग से बातें कर रहा है। एक विचार उसके मन में दौड़ गया कि संभवतः यह शब्द राजमहिषी के होंगे। वह बड़े ग़ौर से सुनने लगा। 'हुज़ूर' और 'श्रीमती' शब्दों के अतिरिक्त और वह कुछ भी न समझ सका। थोड़ी देर में लैम्प की रोशनी का प्रकाश कमरे में दिखलाई दिया। उसने देखा कि वह एक अत्यंत सुसज्जित कमरे में खड़ा है और उसके सामने ही कमरे का द्वार है जिस पर बहुमुल्य जड़ाऊ परदा पड़ा है। उसकी निगाह परदे पर जमी हुई थी। क्षण ही भर पश्चात् उसने देखा कि एक अत्यंत कोमल और सुंदर कलाई परदे को हटाकर निकली। कलाई का सौंदर्य प्रकाश की किरणें पड़ने पर द्विगुणित हो गया। यह कलाई राजमहिषी की थी। आर्तगान ने शीघ्र ही घुटने टेक कर राजसिक सम्मान प्रदर्शित किया और अपने एक हाथ से राजमहिषी के हाथ को बहुत

ही कोमलता से थामकर, अत्यंत आदर के साथ डरते हुए उसे अपने ओष्ठों से चूमा। शीघ्र ही कलाई वापस चली गई। आर्तगान ने देखा कि राजमहिषी ने उसके हाथ में एक सुंदर हीरे की अंगूठी रख दी है। अंगूठी में राजमहिषी का नाम अंकित था। वह समझ गया कि यह उसके परिश्रम का पुरस्कार है। प्रसन्नता से उसका हृदय भर गया। वह अपने पुरस्कार को उलट-पुलटकर देख ही रहा था कि यह शब्द उसके कान में पड़े, "राजमहिषी तुम्हारे लिये चिरकृतज्ञ हैं।" उसने दृष्टि उठाकर देखा, कांसटेंस मुस्कराती हुई कमरे में प्रवेश कर रही थी। देखते ही उसके मुख से निकल पड़ा—"अंत में तुम आ ही गईं ?"

कांसटेंस ने शीघ्र ही कहा—"चुप ! चुप ! इस समय अब चले जाओ। रुको मत।"

आर्तगान ने उदास होकर कहा—"तो अब कब दर्शन होंगे ?"

कांसटेंस—"तुम्हारे मकान पर एक परचा मिलेगा जिससे तुमको मिलने का समय मालूम हो जायगा, बस अब जाओ, यहाँ रुको मत।" यह कहकर कांसटेंस ग़ायब हो गई। आर्तगान एक अबोध, सीधे बच्चे की भाँति आज्ञानुसार वहाँ से चला आया।

मकान पहुँचने में उसको घंटा भर लगा होगा। आते ही प्लेंचेट से पूछा—"कमरे में कोई ख़त तो नहीं दे गया है ?"

प्लेंचेट—"ख़त कोई दे तो नहीं गया ; परंतु वह स्वयं ही आगया है ?"

आर्त०—"क्या बकते हो ?"

प्लें०—"जब मैं लौटकर कमरे में आया तो देखा कि मेज़ पर एक ख़त रक्खा हुआ है। जाते समय मेज़ पर कोई ख़त नहीं था। कमरे का ताला मैं बंदकर गया था। मेरे पास कुंजी बराबर रही। ऐसी दशा में ख़त स्वयं नहीं आया तो और कैसे आया। कुछ-न-कुछ जादू इस ख़त में अवश्य है ?"

इस बात पर आर्तगान हँस पड़ा। कमरे में जाकर फ़ौरन् ही पत्र खोला। यह लिखा था—

"कल रात को दस बजे सेंटक्लाउड में स्ट्री के मकान के पासवाले प्रासाद में मिलो। मैं वहाँ उपस्थित रहूँगी।" —कांसटेंस

पत्र को पढ़ते समय उसका हृदय मिलन के भावी सुख की आशा से उछल रहा था। उसके जीवन में ही यह पहला अवसर था जब कि किसी प्रेमिका ने उससे भेंट के लिये समय निश्चित किया था। उसके उन्मत्त हृदय को इतनी लंबी प्रतीक्षा अखरने लगी। रात्री को सिनेमा की भाँति प्रेम-मिलन ही के स्वप्न उसके मन में नाच रहे थे। रात करवटें बदलते बीत गई। सुबह उठते ही प्लेंचेट से यह बात न छिप सकी। उसने चिंतित होकर कहा—"देखिये! मैं कहता था न कि वह पत्र अवश्य कुछ अनिष्ट बात से संबंध रखता है। इसी कारण आप रात भर न सो सके।"

आर्त०—"हिश! उस पत्र में स्वर्गीय आनंद का समाचार था। तुम नहीं जानते, आनंद की अधिकता के कारण मुझको नींद नहीं आई।"

परंतु प्लेंचेट को विश्वास न हुआ। असंतुष्ट मुद्रा बनाकर वह अपने काम में लग गया।

आर्तगान जब बाहर जाने लगा तो नौकर को यह आज्ञा दी—"ठीक सायंकाल के सात बजे दो घोड़ों को तैयार करके हाज़िर रहना। मैं शाम तक लौटकर आऊँगा।" यह सुनकर नौकर मलिन पड़ गया। उसने विचार किया अभी एक विपत्ति-पूर्ण यात्रा से सकुशल लौटकर आ गये हैं, अब फिर नवीन यात्रा पर चलकर क्या प्राण गँवाना ही स्वामी ने निश्चित कर लिया है? आर्तगान नौकर की आकृति से बात समझ गया। उसने हँसकर कहा—"कहीं दूर नहीं जाना है! डरो मत, यह यात्रा पेरिस के भीतर ही तक परिमित है।"

नौकर ने साहस करके पूछा—"तो क्या तलवार और पिस्तौल को भी साफ़ करके रख दूँ ?"

आर्त०—"मूर्ख ! बिना शस्त्रों के मैं कभी बाहर जाता हूँ ?"

प्लेंचेट ने एक ठंडी सांस भरकर कहा—"मैंने तो पहले ही सोच लिया था कि वह ख़त निहायत मनहूस है।"

आर्त०—"अरे, मूर्ख ! डर मत, कोई भय की बात नहीं है। जहाँ जाना होगा, वह एक अत्यंत सुख-कर पार्टी है।"

यह कहकर हँसता हुआ आर्तगात चल दिया। बाहर निकलते ही उसने देखा कि बोनैसी अपने मकान के दर्वाज़े पर खड़ा है। उधर से आर्तगान को जाते देखकर उसने कहा—"कहिए महाशय ! इस समय कहाँ चल दिये।" आर्तगान निकट आ गया। दोनों में इधर-उधर की बातें होने लगीं। जब बातचीत में बोनैसी के बंदी होने का ज़िक्र आया, तो आर्तगान ने पूछा—"परंतु—हाँ ! यह तो बतलाओ कि तुम्हारी पत्नी को उड़ा कौन ले गया था ?"

बोनैसी—"आह ! इसका तो मुझे आज तक पता न चल सका। और मेरी पत्नी ने तो सौगंध खाकर कहा है कि मैं इस विषय में कुछ नहीं जानती। परंतु तुम इन दिनों कहाँ ग़ायब रहे ? तुम्हारे साथी भी इधर कई दिन से दिखलाई नहीं पड़े ?" यह कहकर बोनैसी ने ओठ दबाते हुए तेज़ निगाह से आर्तगान की ओर देखा।

आर्त०—"ओह ! हम लोग अपने मित्र अथास का इलाज कराने फोर्जेस गये थे। मेरे सब मित्र अभी वहीं पर हैं।"

"तुम उनको छोड़कर चले आये ? तुम्हारी यहाँ ज़बरदस्त प्रतीक्षा की जा रही थी ? क्यों न ! प्रेमिका की मोहब्बत खींच लाई होगी ?"

बोनेसी ने किंचित हास्य के साथ तीक्ष्ण दृष्टि फेंकते हुए यह बात कही। आर्तगान इस दृष्टि का रहस्य न समझ सका। उसकी दृष्टि में बोनेसी-सा मूर्ख और कोई न था। सरल हास्य के साथ उसने कहा—

"अवश्य ! मेरी प्रतीक्षा अवश्य हो रही थी । मैं तुमसे कोई भेद छिपाना नहीं चाहता ।"

इन शब्दों को सुनकर बोनैसी की भौंहें टेढ़ी पड़ गईं। चेहरे का रंग लाल हो गया ; परंतु उसने शीघ्र ही हास्य का भाव धारण करके कहा—"और संभवतः अब तुम्हें प्रेमिका की ओर से पारिश्रमिक मिलनेवाला है ?"

यह कहकर उसने आरक्त नेत्रों से आर्तगान की ओर घूरा। आर्तगान की दृष्टि उसकी ओर न थी। उसने हँसकर कहा—"ओह ! ठीक है। आज रात को मुझे बाहर रहना पड़ेगा ?"

बोनैसी का चेहरा पीला पड़ गया। आर्तगान ने फिर कहा—और आज सायंकाल को तो तुम्हारी पत्नी भी शायद तुमसे भेंट करे।" यह कहकर आर्तगान ने मुस्कराते हुए बोनैसी की ओर देखा। बोनैसी ने चिढ़कर कहा—"नहीं ! उसको तो आज सायंकाल को वहीं रहना होगा। उसको भला यहाँ आने की छुट्टी कहाँ है।" बोनैसी के मुख से एक ठंडी साँस निकल पड़ी। आर्तगान ने दूसरी ओर देखते हुए कहा—"यह बड़े दुख की बात है ! आज के दिन मैं संसार भर को सुखी देखना चाहता था ; परंतु देखता हूँ कि यह असंभव है।" यह कहते हुए आर्तगान आगे बढ़ गया। उसके थोड़ी दूर निकल जाने पर बोनैसी ने ईर्ष्याजनित हास्य करके कहा—"ख़ूब प्रसन्न हो लो। कौन सुखी होता है ?" परंतु आर्तगान दूर निकल गया था। इन शब्दों को न सुन सका। यदि उसने सुन लिया होता तो वह कुछ सतर्क अवश्य हो जाता।

आर्तगान ने सायंकाल तक का समय त्रिवली के पास काटा। वहाँ से शाम होते ही वह सीधा अपने घर आया। प्लेंचेट घोड़े तैयार लिये खड़ा था। घोड़ों पर सवार होकर दोनों स्वामी और सेवक सेंटक्लाउड की ओर चल दिये। अंधेरी रात थी, सरदी कड़ाके की

पड़ रही थी। नगर के बाहर जब ये दोनों निर्जन जंगल में होकर गुज़रने लगे तब प्लेंचेट ने घबड़ाकर कहा—"स्वामी ! क्या आपको भूतों पर विश्वास है ?" आर्तगान समझ गया कि नौकर भूतों को डरता है। उसने हँसकर कहा—"इतने भयभीत न हो ! मृत मनुष्यों की अपेक्षा जीवितों का अधिक ध्यान रखने की ज़रूरत है। घबड़ाओ नहीं, अब हम अपने स्थान के निकट ही आ गये हैं।"

नौकर ने शीत के कारण लबादा और भी लपेटते हुए कहा—"मैं जीवित या भूत किसी से नहीं डरता ! परंतु क्या इतनी ठंड में भी आपको चलना सुखकर मालूम हो रहा है ?"

आर्तगान—"अत्यंत सुखकर ! क्या यह हवा तुमको अच्छी नहीं मालूम होती ! अच्छा अब तुम यहीं रुको। मुझे और आगे जाना है। सुबह तक मेरी प्रतीक्षा करना, तुम इन सामनेवाले घरों में कहीं विश्राम करलो।"

प्लेंचेट—"तो आप क्या अकेले जायँगे ? ओह ! इस जाड़े में तो मेरा बदन काँपा जा रहा है।"

आर्त०—"तब तुम किसी घर में जाकर तापने की फ़िक्र करो। लेकिन मुझे ठीक छैः बजे यहीं मिलना।"

यह कहकर आर्तगान ने अपना घोड़ा बढ़ा दिया नौकर चिंतित होकर निकट के घरों में विश्राम करने के लिये चला गया।

आर्तगान जब अपने निश्चित स्थान पर पहुँचा; तब नौ बज चुके थे। सड़क के एक ओर लंबी ऊँची दीवार चली गई थी। भेंट के लिये जो मकान नियत हुआ था, उसी की यह दीवार थी। उसमें ऊपर खिड़की थी और नीचे फाटक था। सड़क के दूसरी ओर एक छोटी-सी वाटिका थी, जिसके पास ही लगा हुआ एक झोपड़ा था। आर्तगान दीवार के पास आकर रुक गया। अपने आगमन को सूचित करने के लिये कोई संकेत निश्चित नहीं था, इसीलिये वह

प्रतीक्षा करने लगा। अँधेरा अत्यंत गहरा छाया हुआ था। निस्तब्धता के कारण रात्रि और भी डरावनी मालूम होती थी। परंतु वीर आर्तगान के हृदय में भय छू तक न गया था। उन्मत्त प्रेम ने भय पर विजय पा ली थी। जंगल की निर्जनता उसकी मिलन-इच्छा को और भी सुखद बना रही थी। जब हवा से पत्तियाँ खड़खड़ा उठती थीं तब वह चौंककर फाटक पर दृष्टि जमा देता था कि अब प्रेमिका द्वार खोलकर उसको बुला रही है। आशा की मधुरता को उसने इतना सुखकर कभी अनुभव नहीं किया। परंतु धीरे-धीरे यह मिठास कम पड़ने लगी। क्रमशः दस और ग्यारह के घंटे किसी निकटस्थ गिरजे में बजते हुए उसने सुने। प्रतीक्षा करते-करते वह अधीर हो गया। जब निश्चित समय व्यतीत हुआ तब उसने यह अनुमान किया कि शायद किसी कार्यवश कांसटेंस अटक गई है। परंतु जब पूरा एक घंटा बीत चुका तो उसको किसी अनिष्ट का संदेह हुआ। खिड़की से रोशनी आ रही थी। निकट ही एक ऊँचा पेड़ खड़ा था। पेड़ पर चढ़कर उसी रोशनी के प्रकाश में वह मकान के अंदर का हाल देखने लगा। मकान के अंदर दृष्टि पड़ते ही उसके चेहरे का रंग फक़ पड़ गया। शरीर एड़ी से चोटी तक काँप उठा। जो कुछ दिखलाई दिया, उसकी आशा उसने स्वप्न में भी न की थी।

सामने ही कमरे में लैंप की तेज़ रोशनी पड़ रही थी। कमरे की अवस्था स्पष्ट दिखलाई देती थी। कमरे की प्रत्येक वस्तु, छिन्न-भिन्न अवस्था में पड़ी थी, मेज़ उल्टी पड़ी थी। उस पर का सजा हुआ बढ़िया-बढ़िया भोजन का सामान कमरे भर में बिखरा पड़ा था। टूटे हुए बर्तन इधर-उधर उल्टे पड़े थे। कुर्सी टूटकर चूर-चूर हो गई थी। खिड़की और दरवाज़े के किवाँड़े टूटे हुए थे। प्रत्येक वस्तु से यह मालूम होता था कि किसी ने दरवाज़ा तोड़कर कमरे में प्रवेश किया है और वहाँ काफ़ी लड़ाई हुई है। ग़ौर से देखने पर आर्तगान ने

स्पष्ट रूप से देखा कि किसी रमणी का वस्त्र फटा पड़ा है। उस पर तथा कमरों के अन्य परदों पर ख़ून के छींटे लगे हुए हैं।

यह दृश्य देखकर आर्तगान का हृदय धड़कने लगा। तरह-तरह के विचार उसके मन में आने लगे। शीघ्र ही वह उतरकर सड़क पर आया और इस अत्याचार के और चिह्नों का पता लगाने लगा। द्वार को आकर खटखटाया, कई आवाज़ें दीं; परंतु कुछ भी उत्तर न मिला। वहाँ से लौटते समय उसको फाटक के पास सड़क के किनारे एक दस्ताना पड़ा मिला। दस्ताना मिट्टी से लत-पथ होने पर भी तीव्र सुगंध दे रहा था। आर्तगान ने सोचा निस्संदेह यह किसी रमणी का है। वह रमणी कांसटेंस कदापि नहीं हो सकती। क्योंकि उसने मकान के निकट भेंट करना निश्चय किया था न कि मकान के अन्दर। राज-महल में किसी आवश्यक कार्य में फँस जाने के कारण वह नहीं आ सकी है; परंतु ये सब आश्वासन हृदय की उस विचित्र धड़कन के कारण नष्ट हो जाते थे जो कि ऐसे अवसर पर प्रेमिक के हृदय में स्वाभाविक रूप से उठा करते हैं। उसका हृदय यह रह-रहकर बतला रहा था कि उसकी प्रेमिका किसी कठिन विपत्ति में फँसी हुई है। आर्तगान घबड़ा उठा। वह पागल की भाँति इधर-उधर दौड़ने लगा। निकट ही नदी के किनारे पहुँचकर केवट के पास गया। केवट ने बतलाया कि सात बजे रात्रि को एक रमणी उसकी किश्ती में बैठकर इधर आई है। वह लबादे से अपने शरीर और चेहरे को ढके थी, इस कारण वह उसको पहचान न सका; परंतु इतना वह निश्चित रूप से कह सकता है कि वह रमणी अत्यंत रूपवती युवती थी। उसके बाद और भी कई स्त्रियाँ दूसरी किश्ती में बैठकर आई थीं; परंतु वे भी लबादे से अपने शरीर को ढके थीं।

आर्तगान को अब भी यह संदेह नहीं हुआ कि वह रमणी कांसटेंस हो सकती है, वह वहाँ से सीधा फिर उसी मकान की

ओर लौटा और वाटिका के निकटवर्ती झोपड़े के द्वार पर पहुँचकर दरवाज़ा खटखटाया। कई-बार आवाज़ें देने पर एक मनुष्य ने द्वार खोला; परंतु आर्तंगान पर दृष्टि पड़ते ही उसने द्वार फिर बंद कर लिया। आर्तंगान ने अत्यंत करुण स्वर में कहा—"अरे भाई! द्वार क्यों बंद करते हो। मैं एक व्यक्ति से भेंट करने यहाँ आया था; परंतु वह न मिल सका। ज़रा यह बतला दो कि तुम्हारे पड़ोस में क्या कोई घटना हो गई है? इस कृपा के लिये मैं तुम्हारा कृतज्ञ रहूँगा।"

आर्तंगान के शब्दों ने उसपर प्रभाव डाला। द्वार खुला। उसने देखा कि एक वृद्ध जर्जर व्यक्ति चिराग़ हाथ में लिये आर्तंगान को खड़ा हुआ घूर रहा है। आर्तंगान ने उससे अपनी कथा कही; परंतु प्रेमिका का नाम छिपा लिया। वृद्ध बड़े ध्यान से सुनता रहा। तब उसने चिराग़ धर दिया और बैठकर एक ठंडी साँस लेकर कहा—"मेरे पड़ोस में जो कुछ घटना हुई है, उसको सुनकर तुम सुखी न होगे। परंतु तुम्हारे अनुरोधवश जो कुछ बीता है सो सब सुनाता हूँ। नौ बजे के लगभग किसी ने मेरे द्वार को खटखटाया थो। मैं एक निर्धन व्यक्ति हूँ, किसी प्रकार अपना जीवन काटता हूँ। लूटे जाने का भय मुझे नहीं हुआ। जाकर द्वार खोला। तीन मनुष्य दरवाज़े के पास खड़े थे और एक बंद गाड़ी सड़क पर खड़ी थी। गाड़ी के पास ही ज़ीन कसे हुए तीन घोड़े थे। ये मनुष्य अश्वारोही सैनिक के लिवास में थे। मेरे पूँछने पर उनमें से एक ने जो उनका सरदार मालूम होता था, कहा—"क्या तुम्हारे पास एक सीढ़ी है।" मैंने कहा—"हाँ! है।"—"तब कृपा करके थोड़ी देर के लिये उसे हमको दे दो? परंतु देखो! इस बात का ख़्याल रहे कि यहाँ पर जो कुछ भी तुम देखो और सुनो तो उसका एक शब्द भी किसी से न कहना और यदि कहा तो तुम्हारे प्राणों की ख़ैर नहीं।" उस व्यक्ति ने यह कहकर कुछ सिक्के मेरी ओर फेक दिये। वे लोग सीढ़ी ले गये। उनके चले जाने

के बाद में बाहर जाकर एक झाड़ी की आँड़ में छिप रहा और उनकी हरकतों को देखने लगा। गाड़ी के अंदर से एक ठिंगना मज़बूत अधेड़ अवस्था का मनुष्य निकला। यह काले रंग के वस्त्र पहने था। इसने सीढ़ी नीचे से मकान की खिड़की पर लगा दी। बहुत सँभल कर यह ऊपर चढ़ा, बहुत ही संदिग्ध दृष्टि से खिड़की में झाँककर कुछ देखा। तब शीघ्र ही नीचे उतर कर धीरे से उन तीन आदमियों से कहा—"वही है।"

यह सुनकर शीघ्र ही वह व्यक्ति जो सरदार मालूम होता था, फाटक पर गया, कुंजी निकालकर ताला खोला और मकान के अंदर पहुँचकर दरवाज़ा बंद करके भीतर ही ग़ायब हो गया। इसी समय शेष दो आदमी सीढ़ी पर चढ़कर खिड़की के निकट खड़े रहे और ठिंगना आदमी गाड़ी के पास जाकर खड़ा हो गया। इसी समय मकान के अन्दर से बड़ा शोर-ग़ुल सुनाई पड़ा और एक स्त्री खिड़की पर चिल्लाती हुई आई। उसका भयाकुल चेहरा बतला रहा था कि उसके प्राण संकट में हैं और शायद वह खिड़की से कूदकर भाग जाने के विचार से आई थी। आह! उसकी करुण, आर्त दृष्टि कितनी व्यथा प्रकट कर रही थी? परन्तु सीढ़ी पर बाहर खड़े हुए दो दैत्यों को देखकर वह पीछे लौट पड़ी। इसके बाद मैंने और किसी व्यक्ति को नहीं देखा, केवल शोर-ग़ुल सुनाई पड़ा। कमरे के असबाब के फेंके जाने और मेज़, कुर्सी और दरवाज़े के किवाड़ों के टूटने का शब्द स्पष्ट सुनाई पड़ता था। सहसा किसी स्त्री के चीख़ने की आवाज़ सुनाई दी। स्त्री सहायता के लिये चिल्ला रही थी। ओह! कितना घोर करुण क्रन्दन था! परंतु शीघ्र ही यह शब्द भी बंद हो गया। शायद उन दुष्टों ने स्त्री का गला दबा दिया था। थोड़ी ही देर में दो मनुष्य उस स्त्री को अपने हाथों में लेकर निकले। स्त्री बेहोश थी। उसको गाड़ी में लेटाल दिया। वह ठिंगना आदमी भी गाड़ी के अंदर जाकर

बैठ गया। दरवाज़े बंद कर लिये गये। गाड़ी चल दी। उसके पीछे तीनों आदमी भी घोड़ों पर सवार होकर चले गये। बस, तबसे न तो मुझे कुछ सुनाई दिया और न कोई व्यक्ति दिखलाई ही पड़ा।"

आर्तगान चुपचाप अचेतन की भाँति सब सुनता गया; परंतु उसके हृदय में असीम क्रोध की ज्वाला भड़क रही थी। कुछ क्षण पश्चात् आर्तगान ने प्रश्न किया—"परंतु क्या तुम इस विषय में कुछ अनुमान कर सकते हो कि वह सरदार कौन था?"

"यह मैं नहीं बतला सकता कि वह कौन था। परंतु उसकी हुलिया बतला सकता हूँ, उसकी मूछें घनी और काली थीं, तेज़ चमकती हुई आँखें थीं। देखने में भद्र-पुरुष मालूम होता था। कनपटी के पास एक हलका ज़ख्म का निशान था।"

अन्तिम शब्दों को सुनकर आर्तगान का चेहरा तमतमा उठा, उसके मुँह से निकल पड़ा—"यह वही मेरा शत्रु है? आह; क्या कोई भी जगह इससे ख़ाली नहीं जाती?"

कुछ स्थिर होकर आर्तगान ने कहा—" महाशय! यह समाचार बतलाकर आपने मेरे ऊपर अत्यंत कृपा की है? मैं इसके लिये धन्य-बाद देता हूँ।" यह कहकर आर्तगान वहाँ से चल दिया। यह उसको निश्चय हो गया कि वह स्त्री कांसटेंस ही थी। शोक, निराशा, क्रोध और व्यग्रता उसके चेहरे से टपक रहे थे। उसके मन की दशा पागल की भाँति हो गई। हृदय की असह्य व्यथा तेज़ नश्तर का काम कर रही थी, रह-रहकर क्रोध का आवेश शरीर के प्रत्येक अवयव को फड़का देता था। रात्रि के बारह बज चुके थे। सर्दी अपना विचित्र प्रभाव दिखला रही थी; परंतु आर्तगान का शरीर आग-सा तप रहा था। वह धीरे-धीरे कुछ सोचता हुआ, पैरिस के मार्ग पर चल दिया।

२३

आ
र्तगान दूसरे दिन सुबह उठते ही, सीधा त्रिबली के पास पहुँचा। उसने यह तय कर लिया था कि त्रिबली से कुल सच्चा-सच्चा हाल बतला दिया जाय। और उसके परामर्श के अनुसार कार्य किया जाय। इसी विचार के अनुसार उसने समूचा हाल त्रिबली से कहा यहाँ तक कि अपने प्रेम-संबंध को भी न छिपाया। त्रिबली ने धैर्य के साथ सब हाल सुना। वह एक गंभीर चिंता में पड़ गया। कुछ क्षण सोचकर कहा—"युवक! पेरिस की राजनीति विचित्र है। धर्माचार्य के षड्यंत्र बड़े गहरे हैं। तुम वीर हो; साहसी हो, परंतु राजनीति के दाँव-पेचों से अनभिज्ञ हो। तुम्हारी प्रेमिका का कार्य-क्षेत्र राजनीति से संबंध रखता है। प्रेमी और प्रेमिका दोनों पर धर्माचार्य की शनि-दृष्टि लगी हुई है। वह उसके चंगुल में फँस गई है। तुम पर भी उसका प्रहार अब होने ही वाला है। यह प्रहार आज ही कल में होगा, यह मुझे निश्चित मालूम होता है। कम-से-कम आज-कल दो-चार रोज़ के लिये तुम पेरिस से खिसक जाओ। जब यह मामला ठंडा पड़ जायगा तब चले आना।

अपनी प्रेमिका के अनुसंधान के लिये यहाँ टिकने में अब तुम्हारी कुशल नहीं है। धर्माचार्य की चालों का जवाब चाल से ही दिया जा सकता है इसका हमेशा ख़्याल रखना।"

आर्तगान ने कहा—"परंतु कांसटेंस……………

"कांसटेंस के लिये मैं अभी राजमहल जाता हूँ। मैं रानी से सब घटना कहूँगा। मुझे विश्वास है कि रानी के प्रयत्नों से इस घटना पर कुछ प्रकाश अवश्य पड़ेगा। इस विषय में तुम निश्चिंत रहो। मैं कुछ उठा न रक्खूँगा। और मुझे आशा है कि तुम्हारे लौटने पर कुछ सुखद समाचार तुमको सुनने को मिलेगा।"

आर्तगान को त्रिवली के बचनों पर विश्वास था। वह उसकी शक्ति, बुद्धि-चातुर्य तथा प्रभाव को अच्छी प्रकार जानता था। उसके हृदय में आशा और विश्वास का संचार हुआ। वह निश्चिंत होकर वहाँ से घर की ओर चल दिया।

मार्ग में बोनैसी अपने घर के सामने टहल रहा था। आर्तगान को देखते ही उसके ओठों पर एक भीषण हँसी दौड़ गई। उसके विचित्र रंग-ढंग को देखकर आर्तगान को संदेह हुआ। बोनैसी और दिनों की अपेक्षा अधिक प्रसन्न था। उसने आर्तगान को रोककर कहा—"कहिये! कल की रात तो बड़े मज़े में कटी होगी? प्रेम-भेंट बड़ी आनन्द-दायित्री होती है।" आर्तगान ने देखा कि एक विचित्र दुष्ट-भाव बोनैसी के चेहरे से झलक रहा था। सहसा उसके मन में एक विचार दौड़ गया। रात को उस ठिंगने मनुष्य की जो हुलिया उस वृद्ध-पुरुष ने बतलाई थी, वह बोनैसी से बिलकुल मिलती थी। बोनैसी के प्रश्न ने आर्तगान के संदेह को और भी दृढ़ कर दिया। उसको विश्वास हो गया कि वह ठिंगना व्यक्ति यही बोनैसी था। जब वह रात को प्रेम-भेंट के लिये जाने लगा था, उस समय भी बोनैसी की बातचीत भेद-पूर्ण थी। इसी ने धर्माचार्य की सहायता

से रात का सब काण्ड रचा है। ये सब बातें एक-एक करके आर्तगान को याद आने लगीं उसके शरीर में आग लग गई। क्राध इतना तीव्र हो गया कि उसने इरादा किया कि इसी समय गला दबाकर बोनैसी को मार डाले ; परंतु त्रिबली के उपदेश काम कर गये ! क्रोध के भावों को दबाकर उसने कहा—"तुम्हारी रात कैसी कटी ? इन जूतों की गर्द और कीचड़ अभी तक क्या साफ़ करने का अवसर नहीं मिला ? क्या सुंदर और नवयौवना पत्नी के पति को भी आनंद लूटने के लिये बाहर जाना पड़ता है ?" बोनैसी कट गया। उसके मुख की कांति मलीन पड़ गई। बात भी ठीक थी। बोनैसी ने अपने जूतों पर लगी हुई धूल और कीचड़ अभी तक साफ़ नहीं की थी ; परंतु बलात् हँसी को चेहरे पर लाकर उसने कहा—"आप हँसी करते हैं ? मैं सचमुच कल रात को एक गाँव गया था और अभी वहीं से चला आ रहा हूँ। व्यापार के संबंध में एक आवश्यक कार्य आ पड़ा था।"

"आवश्यकता क्या थी, इसको बतलाने की ज़रूरत नहीं। कहाँ गये थे, यह गाड़ी के निशान ख़ुद बतला सकते हैं।" आर्तगान यह कहकर चल दिया। बोनैसी का चेहरा ज़र्द पड़ गया था, यह उसकी दृष्टि से न छिप सका।

आर्तगान जब मकान पहुँचा, तब प्लेंचेट घबड़ाया हुआ उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। अपने नौकर को भयभीत देखकर आर्तगान ने आश्चर्य में होकर पूछा—"क्या कोई नवीन घटना हुई ?"

"नवीन घटना ! एक नई आफ़त है ! मैं आपकी रास्ता देख रहा था। अभी कुछ देर पहले धर्माचार्य के सेनापति मिस्टर केव यहाँ आये और आपके विषय में पूछताँछ करने लगे। उनके व्यवहार से यह मालूम होता था कि वे आपको गिरफ़्तार करना चाहते थे। यह कुशल हुई कि आप इस अवसर पर नहीं थे।"

"उसने आकर तुम से क्या पूछा ?"

"उसने बहुत नम्रता और मधुरता के साथ बातचीत की। उसने कहा कि धर्माचार्य ने आपको याद किया है। आपकी पदोन्नति के विषय में धर्माचार्य आपसे कुछ बातचीत करना चाहते हैं।"

"तुमने क्या जवाब दिया ?"

"मैने कहा कि इस, सुखद समाचार को प्रभु के आने पर मैं बतला दूँगा। इस समय वह अपने किसी निजी काम से शम्पेन गये हुए हैं।" तब उस धूर्त ने पूछा—'कब गये थे ?" मैने भी कह दिया 'कल शाम को।'

आर्तगान ने प्रसन्न होकर कहा—"प्लेंचेट मैं तुमको इतना होशियार नहीं समझता था। तुमने बहुत उचित उत्तर दिया।"

"अब आगे चलकर आप देखेंगे कि मैं कितना होशियार हूँ, यह कहकर प्लेंचेट हँसने लगा। आर्तगान भी हँस पड़ा उसने कहा— "धैर्य रक्खो ? तुम्हारी यह होशियारी निरर्थक न जायगी।" हम लोगों को कुछ दिन के लिये प्रवास करना होगा। तैयारी कर रक्खो। आज ही रात को यात्रा करनी पड़ेगी।"

"मैं भी श्रीमान् को यही राय देनेवाला था। कहाँ चलियेगा ?"

"हमारे साथी अभी तक लापता हैं। उनके नौकरों की भी कुछ खबर नहीं। इन्हीं सब की खोज में जाना होगा। यात्रा की सब तैयारियाँ शीघ्र ही समाप्त कर लो। वेश बदलकर चलना उचित है। यहाँ से हम दोनों का रास्ता अलग-अलग होगा। पैरिस के बाहर एक साथ हो लेंगे।"

सुबह होने के तीन घंटे पहले ही आर्तगान और प्लेंचेट दोनों पैरिस के बाहर हो गये। प्लेंचेट इस यात्रा के बहुत पक्ष में था। वह अपने स्वामी के हित के लिये कुछ दिन बाहर रहकर धर्माचार्य के कुचक्र से स्वामी की रक्षा करना चाहता था। इसीलिये इस यात्रा की

साधारण विपत्तियों की आशंका उसको हतोत्साहित न कर सकी। वह प्रसन्न था। उसका हृदय साहस, उत्साह और नवीन उमंगों से भर गया। यात्रा के विचार ने ही उसके शरीर में नूतन स्फूर्ति का सञ्चार कर दिया। बहुत आनन्द से बातें करते हुए दोनों यात्री चैंटली के होटल के निकट पहुँच गये। मार्ग में कोई बाधा न पड़ी। पिछली-बार की यात्रा में भी ये लोग इसी स्थान पर आराम करने के लिये पहले-पहल रुके थे और यहीं पर पार्थ एक महाशय से युद्ध में भिड़ जाने के कारण रह गया था। आर्तगान को यहीं पर पार्थ का कुछ पता मिल सकता था इसी उद्देश्य से वह यहीं पर आकर रुक गया।

आर्तगान अपने साथ उन चार घोड़ों को लेता आया था जो ड्यूक ने उसको पुरस्कार में दिये थे। उन्हीं में से एक पर वह स्वयं सवार था और शेष ख़ाली थे। वह एक कुलीन पुरुष के वेश में था। साथ के तीन ख़ाली घोड़े उसकी शान को और भी बढ़ा रहे थे। होटल के स्वामी ने जब इन यात्रियों को आते हुए देखा तब उसने ख़्याल किया कि कोई प्रतिष्ठित धनिक उसके होटल में विश्राम करने के लिये आ रहा है। उसने फ़ौरन ही दौड़कर स्वागत किया। नौकरों के द्वारा घोड़ों को अस्तबल में पहुँचाया। उसका व्यवहार अत्यंत नम्र और सम्मान-पूर्ण था। आर्तगान ने अपने उद्देश्य को सफल होते देखकर भोजन करते हुए अवसर पाकर कहा—"तुम्हारे होटल में मैं एक-बार और ठहर चुका हूँ।"

होटल स्वामी—"मुझे भी याद पड़ता है कि श्रीमान् कभी इस होटल में पधार चुके हैं। शायद इसी महीने में श्रीमान् को मैंने देखा है?"

आर्त०—"मैं अपने तीन साथियों के साथ राजसैनिक के वेश में आया था। इसी होटल में मेरा एक मित्र एक मनुष्य से युद्ध में भिड़ जाने के कारण रह गया था।"

हो० स्वा०—"ठीक! अब मुझे याद आ गया। आप शायद मिस्टर पार्थ का ज़िक्र करते हैं।"

आर्त०—हाँ! यही उसका नाम है। उस युद्ध का क्या परिणाम हुआ?"

हो० स्वा०—"उसका परिणाम इसी से प्रकट है कि वह अभी तक यहीं डटे हैं।"

आर्त०—"यहीं डटे हैं। यह क्यों?"

हो० स्वा०—"इसका कारण ख़र्च की तंगी है।"

आर्त०—"ख़र्च की तंगी! रुपया तो उनके पास इतना अवश्य होगा कि अब तक उनको ऋण की ज़रूरत न पड़ी होगी?"

हो० स्वा०—"ओह! यह आप क्या कहते हैं? मैं तो ऋण देते-देते उकता गया। आज ही डाक्टर ने कहा है कि यदि उनको फ़ीस न दी गई तो वह मुझसे वसूल करेंगे; क्योंकि उनको बुलवाया तो मैंने ही है?"

आर्त०—"तो क्या पार्थ ज़ख़्मी है?"

हो० स्वा०—"यह मैं नहीं बतला सकता।"

आर्त०—"यदि मुझे नहीं बतलाओगे तो और किससे बतलाओगे?"

हो० स्वा०—"परंतु मैं बतलाने से मना कर दिया गया हूँ।"

आर्त०—"अच्छा तो मैं स्वयं ही पार्थ के पास चलता हूँ।"

हो० स्वा०—"परंतु वहाँ जाने के पेश्तर उनके पास अपने आने की सूचना भेज दीजिये; क्योंकि सहसा इस प्रकार जाने में कुछ भय है।"

आर्तगान ने आश्चर्य से पूछा—"इसका क्या अर्थ है?"

हो० स्वा—"वह ख़याल करेंगे कि कोई होटल ही का व्यक्ति है, जो रुपया माँगने आया है। हम जब कभी बिल लेकर जाते हैं तो

हज़ारों गालियाँ खाने को मिलती हैं। और यदि हम वहाँ ज़रा देर भी रुके तो जुआ बंद करके वह हमको दंड देने की घोषणा करते हैं।"

आर्त०—"तो क्या पार्थ जुआ भी खेलता है?"

हो० स्वा०—जुये में तो उन्होंने सारा धन उड़ा दिया, दिन-रात जुआ ही होता रहता है?"

आर्तगान ने आश्चर्य में होकर पूछा—"किसके साथ?"

हो० स्वामी—"जो यात्री यहाँ आकर ठहरता है।"

आर्त०—"ओह! तब उस मूर्ख ने सारा धन उड़ा दिया?"

हो० स्वा०—"वह तो अपना घोड़ा तक हार गये। ऐसी दशा में जब मैंने उनसे कहा कि कृपया किसी दूसरे होटल में पधारिए तो उत्तर दिया कि मुझे तुम्हारा ही होटल सबसे प्रिय है। मैंने यह भी कहा कि अच्छा इसी होटल के किसी साधारण कमरे में ठहर जाइए, तो कहा कि मैं अपनी प्रेमिका की बराबर प्रतीक्षा कर रहा हूँ। वह राज-दरबार की बड़ी प्रसिद्ध रईसज़ादी है। उसकी भेंट के लिये यही कमरा उपयुक्त है। इस पर भी मैंने तक़ाज़ा करना न छोड़ा। तबसे उन्होंने अपनी मेज़ पर भरी हुई पिस्तौल रखली है और यह कह रक्खा है कि यदि फिर कभी मेरे कमरे में तुमने या होटल के किसी आदमी ने प्रवेश किया तो मेरी पिस्तौल का निशाना बन जाना पड़ेगा। उस दिन से सिवाय उनके नौकर के और कोई व्यक्ति उनके कमरे में प्रवेश करने का साहस नहीं करता।"

आर्त०—"तब क्या मास्कटन भी यहीं है।"

हो० स्वा०—"उसके मारे तो और भी नाक में दम है। जब तबियत चाहती है, बिना कहे सामान उठा ले जाता है। अपने स्वामी की सेवा में त्रुटि न हो, इस विचार ने उसको और भी उद्धत बना दिया है।"

आर्तगान ने हँसकर कहा—"तुम भूलते हो। तुम्हारा ऋण अदा

हो जावेगा। कहीं ऐसा हो सकता है कि रईस प्रेमिका का प्रेमी बिना भुगतान किये यहाँ से चला जाय।"

हो० स्वा०—"महाशयजी! इसकी भी परख हो चुकी है। मैं पूर्ण रीति से निराश हो चुका हूँ। इस प्रेमिका के रहस्य का भी भंडा-फोड़ हो चुका है।"

आर्तगान की जिज्ञासा बढ़ गई। उसने उत्सुक होकर पूछा—"क्या कोई प्रेमिका नहीं है? तुम्हारा क्या अभिप्राय है।"

हो० स्वा०—"यह एक भेद है, जो मुझे ही मालूम है। मैं आपसे हाथ जोडकर प्रार्थना करता हूँ कि आप किसीसे कहियेगा नहीं। पार्थ भी इस विषय में कुछ न जान सके। आपकी भद्रता पर विश्वास करके ही मैं आपसे इसे प्रकट कर रहा हूँ। एक दिन मिस्टर पार्थ ने इस रईसज़ादी के नाम एक लिफ़ाफ़ा डाक में डालने के लिये मुझे दिया। डाक में डालने के बजाय मैंने उस लिफ़ाफ़े को उसके पते के अनुकूल एक लड़के के द्वारा पेरिस भेजा। पार्थ इस रईसज़ादी के बारे में बड़ी लम्बी-लम्बी बातें हाँकते थे। जब लड़का लौटकर आया, तब मालूम हुआ कि वह एक साधारण दलाल की औरत है। उसका नाम काकनर्द है। अवस्था लगभग पचास के होगी; परंतु पाउडर और वस्त्रों की शोभा से अधेड़ मालूम होती है। ख़त पाते ही वह जल उठी। क्रोध के आवेश में उसने कहा कि "पार्थ चञ्चल प्रवृत्ति का है। ज़रूर किसी दूसरी प्रेमिका के फंदे में पड़ गया है। ऐसे नीच प्रकृति के मनुष्य को मैं कुछ भी नहीं दे सकती।" लड़का डर कर भाग आया। तबसे पार्थ ने और भी कई ख़त भेजे; लेकिन कोई उत्तर नहीं आया।

आर्तगान ने पूछा—"क्या पार्थ आहत है?"

हो० स्वा०—"बड़ा गहरा ज़ख़्म लगा था। पहले तो यह महाशय डींग मारते रहे कि दमभर में अपरिचित को मारे लेता हूँ; परंतु उसने फ़ौरन् ही इनको ज़मीन पर दे पटका और सीने पर प्रवार

होकर गले पर तलवार रख दी। पार्थ की सारी डींगें हवा हो गईं। पराजय स्वीकार कर लेने पर प्राण बचे। अपरिचित ने भी जब यह जाना कि उसका शत्रु आर्तगान नहीं है; वरन् पार्थ है तब उसने पार्थ को सहारा देकर उठाया और अपने घोड़े पर सवार होकर रवाना हो गया।"

आर्तगान ने आश्चर्य से पूछा—"तब क्या वह आर्तगान से युद्ध करना चाहता था?"

हो० स्वा०—"यह मैं नहीं बतला सकता।"

आर्तगान पार्थ के पूरे हालत से परिचित होने के बाद, उसके कमरे में गया। पार्थ अपने नौकर मास्कटन के साथ बैठा हुआ जुआ खेल रहा था। आर्तगान को देखते ही हर्ष की ध्वनि के साथ, उठकर खड़ा हो गया। दोनों मित्रों ने हाथ मिलाये। पार्थ ने पूछा—"होटल स्वामी से तुमको मेरे विषय में सब बातें मालूम हो गई होंगी?"

आर्तगान ने कहा—"उसने मुझे कुछ भी नहीं बतलाया।" आर्तगान के इस उत्तर ने पार्थ के मुर्झाये हुए चेहरे पर ताज़गी ला दी। उसने निश्चिंत होकर गर्व-पूर्वक कहा—"मैंने पहले ही वार में अपने शत्रु को गिरा दिया। उसको समाप्त कर डालना चाहता था; किंतु मेरा पैर फिसल गया। टाँग में गहरी चोट आ गई। अवसर पाकर डरपोक मनुष्य भाग गया।"

आर्तगान ने समवेदना दिखाते हुए कहा—"ओह! तब इसी चोट के कारण तुमको विस्तरे के अधीन होना पड़ा है। अब क्या हाल है?"

पार्थ—"दो-चार रोज़ में अब बिलकुल चंगा हो जाऊँगा।"

आर्त०—"पेरिस क्यों नहीं चले गये?"

पार्थ—"क्या करूँ। एक अजीब मुसीबत में पड़ गया। एक महाशय ने आकर जुये के लिये मुझे आह्वान दे दिया। मजबूरन

मंज़ूर करना पड़ा; परंतु भाग्य को क्या कहूँ। सब कुछ हार गया। घोड़े से भी हाथ धोना पड़ा। मित्र! सब बातों में कुशल होना असाध्य है। बस जुआ खेलने ही में मैं कमज़ोर पड़ता हूँ।"

आर्तगान ने गंभीरता के साथ कहा—"क्या अपनी प्रेमिका को सहायता के लिये नहीं लिखा? ऐसे समय में वह तुम्हारी अवश्य मदद करती। आखिर उसका सारा धन है और किस लिये?"

पार्थ—"उसको लिखा था। मालूम होता है कि वह घर पर नहीं है। अपनी ज़मींदारी पर गई हुई है। उसको यदि सूचना मिल जाती तो अवश्य दौड़ी हुई आती?"

आर्तगान के होठों पर हलकी मुस्कराहट की रेखा खिंच गई; परंतु उसने हृदय के सब भावों को दबाकर, बात-चीत के विषय को बदल दिया। दोनों मित्रों में देर तक बातें होती रहीं।

आर्तगान ने अपना कुल हाल कहा; परंतु अपनी प्रेमिका का रहस्य छिपा लिया। ड्यूक द्वारा दिये हुए घोड़ों में से एक घोड़ा और कुछ धन पार्थ को भेंट में दिया। अथास वग़ैरह का कोई पता पार्थ को न था। उनका पता लगाने के लिये वह चलने को उत्सुक हुआ; परंतु चोट के कारण आर्तगान ने मना कर दिया। रातभर वहाँ विश्राम करके प्रातःकाल होने के दो तीन घंटा पहले ही, आर्तगान और प्लेंचेट शेष मित्रों का पता लगाने के लिये रवाना हो गये। यह निश्चित हो चुका था कि लौटती-बार आर्तगान पार्थ को साथ लेकर पेरिस लौटेगा।

२४

सुबह होते-होते दोनों यात्री क्रेवीकर के होटल पहुँच गये। इस होटल पर इस बार स्वागत करने के लिये एक रमणी आई। रमणी सुंदर और आकर्षक थी। उसकी हास्यमयी मुखाकृति से आर्तगान को यह पता चल गया कि यहाँ पर कोई भय की बात नहीं है। रमणी से बातचीत करने पर पता चला कि अर्मस अभी तक इसी होटल में ठहरा है। उसका मेल-मिलाप अर्मीस के पादरी और जेसुट संप्रदाय के धर्म-गुरु से बहुत बढ़ गया है। उन्हीं के साथ दिन-रात धर्म-चर्चा में लगा रहता है। इस समय धर्म के अतिरिक्त उसे और कोई व्यसन नहीं है। धार्मिक वादा-विवाद में उसकी प्रवृत्ति इस क़दर बढ़ी हुई है कि उसने यह आज्ञा दे रक्खी है कि उसके कमरे में कोई व्यक्ति न आने पावे। इसी आज्ञा के अनुकूल आर्तगान को रमणी ने अर्मस के कमरे में जाने से रोका, आर्तगान को याद हो आया कि अर्मस ने एक बार ज़िक्र किया था कि उसने राज-सैनिक का काम कुछ ही दिनों के लिये ग्रहण किया है और वह यथार्थ में धर्म-पुरोहित हो जानेवाला है। यही कारण था कि वह पेरिस में भी बाइबिल तथा अन्य धार्मिक

ग्रंथों का अध्ययन बराबर किया करता था। भाग्य से उसका नौकर वैरीकान भी ठीक उसी की प्रवृत्ति के अनुकूल मिला था। वह सदा अपने स्वामी को पादरी हो जाने की याद दिलाया करता था। क्योंकि वह स्वयं भी पादरी हो जाना चाहता था। बहुत कुछ पढ़ा-लिखा न होने पर भी वैरीकान अपने स्वामी की धर्म-पुस्तकें उलट-पुलटकर अक्षरों के भीतर महत्त्वपूर्ण धर्म-तत्व की अनन्त रस-धारा की झाँकी देखकर अपने को अत्यंत धार्मिक समझता था।

रमणी के आग्रह की अवहेलना करके, जब आर्तगान अमंस के कमरे के निकट पहुँचा तो देखा कि वैरीकान द्वार पर बैठा हुआ अपने स्वामी के धार्मिक स्वरूप की रक्षा यमदूत की भाँति कर रहा है। अमंस की धार्मिक आलोचना के समय कोई आगंतुक न आ धमके। इसके रोकने के लिये वैरीकन की सतर्क दृष्टि बराबर बाहर ही की ओर लगी हुई थी। यद्यपि उसके कान कमरे के अंदर होनेवाले धार्मिक वादा-विवाद के रस का आस्वादन करने में भी त्रुटि न करते थे। आर्तगान को आते देखकर ही, वैरीकान की भौंहें चढ़ गईं। आँखें तरेर कर रह गया। इस आकस्मिक विघ्न को किस प्रकार टाला जाय ? यही विचार बार-बार उसके मन में दौड़ने लगा। आर्तगान को रोकने के लिये बल का ज़ोर, विनम्र अनुरोध का प्रभाव तथा अत्यंत आवश्यक निषेधाज्ञा इत्यादि किसी भी बात का असर जब न पड़ा और आर्तगान के बलिष्ठ सांसारिक पार्थिव शक्तिमय हाथों द्वारा जब उसका अध्यात्म, तत्त्वमय पवित्र शरीर एक किनारे खड़ा कर दिया गया तब वैरीकान ईश्वर की परमशक्ति का आह्वान करके ही चुप हो गया। उसको विश्वास था कि वह असीम शक्ति आर्तगान के ससीप शिर पर अवश्य अज्ञात व अचूक प्रहार करेगी।

आर्तगान ने कमरे में प्रवेश किया। एक कुर्सी पर पादरी साहब बैठे थे और दूसरी पर धर्म-गुरु। मेज़ पर बड़ी मोटी-मोटी कई धार्मिक

पुस्तकें रक्खी हुई थीं। पास ही कुर्सी पर अमंस बैठा था। सामने मेज़ पर कुछ लिखे हुए कागज़ खुले पड़े थे। धर्म-चर्चा बड़े ज़ोरों से चल रही थी। अमंस वक्ता था। और दोनों पादरी श्रोता। आर्तगान चुपचाप एक ओर खड़ा हो गया और सुनने लगा; परंतु वक्ता और श्रोता तीनों में से किसी का ध्यान उसकी ओर न गया।

अमंस—"आपका यह विचार कि मेरा यह लेख अधिक विवादात्मक संश्लिष्ट और निदर्शनमय होना चाहिए, कहाँ तक सुसंगत है? अब इस पर भी विचार करना है। मेरी धारणा है कि मेरा लेख आदर्श, सरल और निदर्शनमय होना चाहिए। इसी लिये मैंने अपने लेख का विषय यही रक्खा है कि पुरोहित के धार्मिक आशीर्वाद देते समय दो हाथ होना अनिवार्य है।"

धर्म-गुरु—"लेख का विषय अद्वितीय है।"

अमंस—"इसके लिखने के लिये धर्म की गहन पुस्तकों का अध्ययन मुझे करना पड़ा है। खाना-पीना और सोना एक मास से हराम हो गया है।"

आर्तगान ने देखा कि वास्तव में अमंस पहले से आधा रह गया है।

धर्म-गुरु—"तुम्हारा परिश्रम वास्तव में सराहनीय है; परंतु विषय की जटिलता को दूर करने के लिये लेख का ढंग वैसा ही होना चाहिए जैसा मैं पहले कह चुका हूँ। देखो! ईश्वर के अनुचर मूसा-भक्त-शिरोमणि श्रद्धेय मूसा—जब यहूदी अपने शत्रुओं को मारने लगे थे तब उन्होंने अपनी दोनों बाहें फैला दी थीं। दोनों हाथों से आशीर्वाद दिया था। हाथ से नहीं। देखो! पवित्र बाइबिल यह कहती है...... ।"

पादरी—"अवश्य! बाइबिल भी यही कहती है—'दोनों हाथों' न कि 'हाथ' से।

धर्म-गुरु—"ठीक ! वह यही कहती है जो मैं कहता हूँ। सुनो ! मूसा की कथा ऊपर बता चुका ; परंतु बाइबिल कहती है कि सेंट पीटर ने अँगुलिकाओं से आशीर्वाद दिया था—पोप ने भी अँगुलिकाओं से ही आशीर्वाद दिया था। और कितनी अँगुली से तीन से—एक पिता के लिये—एक पुत्र के लिये और एक पवित्र आत्मा (Koly ghost) के लिये। इसीलिये मैं कहता हूँ कि अपना लेख अधिक विस्तृत करो और अधिक सश्लिष्ट और निदर्शनमय बनाओ। परीक्षा की कसौटी पर, जितना ही उत्तम तुम्हारा लेख प्रमाणित होगा; उतना ही ऊँचा पद तुमको पादरी-श्रेणी में मिल सकेगा। और तुम्हारा नौकर वैरीकान भी तुम्हारे ही साथ भर्ती कर लिया जायगा।" वैरीकान का ध्यान आते ही धर्म-गुरु की दृष्टि द्वार की ओर गई। सहसा मुँह से चीख़ निकल गई और चिल्ला उठे "अरे ! यह कौन ?"

सब घबड़ा गये। अर्मस देखते ही उछल पड़ा। आर्तगान को पहचान कर ख़ुश हो गया। हाथ बढ़ाकर मिलाया। मित्र को कुर्सी पर बैठालकर कहा—"आप लोग घबड़ायें नहीं, यह मेरे इस पार्थिव-शरीर के परम मित्र हैं।" आर्तगान से सम्बोधन करके कहा—"ख़ूब तुम यहाँ कब आ टपके ? कबसे खड़े थे ? क्यों ? मेरा मत कुछ अनुचित तो नहीं है ? तुमने तो सब कुछ सुन लिया होगा ? तुमसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई ?" आर्तगान ने मुस्कराते हुए कहा—"क्या इस वितण्डावाद की मुझे भी प्रशंसा करनी पड़ेगी ?"

आर्तगान की बात सुनकर नाक सिकोड़ते हुए अर्मस ने कहा—"यह विषय अत्यंत जटिल और गम्भीर है। धीरे-धीरे तुम इसको समझ जाओगे।"

"अत्यंत जटिल है और साथ ही विवादास्पद भी ?" पादरी ने चिल्लाकर कहा।

धर्म-गुरु बोला—"जटिल कुछ भी नहीं। बिल्कुल स्पष्ट है। तुम्हारे नवीन मित्र भी इसमें दीक्षित हो सकते हैं। आगे सुनिये—पोप सेंटपीटर का उत्तराधिकारी है और तीन दैवी शक्तियों का परिचायक है। धार्मिक सम्प्रदाय के शेष लोग पवित्र देवताओं के नाम से आशीर्वाद देते हैं। हम लोगों की भाँति अत्यन्त क्षुद्र जीव भी पवित्र जल को छिड़ककर, मंगल-वाक्य कहते हैं। यह जल-धारा अनंत उँगलियों का रूप धारण करके शुभ्र मंगल-वर्षा करती है। देखिये! यहाँ पर विषय की जटिलता कितनी सरल पड़ जाती है। मैं इस विषय पर कई ऐसी मोटी-मोटी पुस्तकें लिख सकता हूँ।" यह कहकर धर्म-गुरु ने मेज़ पर रक्खी हुई अत्यंत मोटी जिल्दों को उठा लिया।

आर्तगान उनको देखकर ही काँप उठा। सब अवाक् रह गये। थोड़ी देर में अर्मस ने कहा—"मैं इस विषय के सौंदर्य का अनुभव कर रहा हूँ; परंतु मैं इस विषय का बोझ उठा नहीं सकता। पहले मैंने इस विषय को पसंद किया था लार्ड (ईसा) को भेंट देते समय किंचित् पश्चाताप की झलक अनुपयुक्त नहीं है।"

ओह! ग़ज़ब! इससे अधिक अपवित्र विषय और कौन होगा? प्रिय शिष्य! गाँठ बाँध लो! इस विषय का कभी ध्यान भी न करना। हृदय से इसे निकाल दो। यह झूठा अनर्गल प्रलाप है।" धर्म-गुरू ने गंभीर होकर चिल्लाते हुए कहा। आर्तगान ने भी हार्दिक अनिच्छा से कहा—"वास्तव में यह सब झूठा प्रलाप है। इन सब व्यर्थ बातों में अर्मस न पड़ो।" आर्तगान के व्यंग्य को अर्मस न समझ सका। वह समझा आर्तगान की वार्तालाप में रुचि है। उसने और भी उत्साहित होकर कहा—"परंतु मैं तो········।"

धर्म-गुरु ने बात काटकर कहा—"अबोध शिष्य! तुम यह किस तरह प्रमाणित करोगे कि ईश्वर के प्रति आत्म-समर्पण करते समय हमको संसार के लिये दुःखी होना चाहिए। नहीं! कदापि नहीं!

सुनो! इस सिद्धांत को ध्यान देकर सुनो! ईश्वर, ईश्वर है—और संसार शैतान है। क्या इस सिद्धांत के प्रतिकूल चलकर तुम्हारा अनिष्ट नहीं होगा ?"

आर्तगान चिढ़ उठा था। उसने गर्म पड़कर कहा—"अवश्य होगा! अवश्य होगा! इससे बचने का उपाय है ऐसी धर्मांधता बचना।"

धर्म-गुरु ने कहा—"मेरा भी यही विचार है। सत्य धर्म की व्याख्या मैं अभी कर चुका हूँ। उसी का अनुसरण करो।"

पादरी ने भी कहा—"उसी का अनुसरण करो ?"

आर्तगान की उदासीनता क्रोध का रूप धारण कर रही थी। वह चाहता था कि इन दोनों पादरियों का गला घोटकर, अर्मस की रक्षा करूँ।

इसी समय अर्मस ने कहा—"अच्छा! मैं इस धर्म-विवाद के लिये कृतज्ञ हूँ। मैं आप लोगों की विषय-विवेचना पर विचार करूँगा।"

दोनों पादरी चले गये। एकांत पाकर आर्तगान ने कहा—"अच्छा! यह नाटक तो समाप्त हो गया न? या अभी और कुछ शेष है ?"

अर्मस—"मित्र! मैं अपने पूर्व सिद्धांतों पर ही फिर लौट आया हूँ। तुमसे मैंने अपने इन विचारों के विषय में कभी-कभी ज़िक्र किया है ?"

आर्त०—"पर वह तो एक मज़ाक था ?"

अर्मस हँस पड़ा, कहा—'मज़ाक! कहीं ये बातें मज़ाक की होती हैं।"

आर्त०—"लेकिन आश्चर्य यह और भी है कि तुमने इस मज़ाक को अत्यंत गंभीरता-पूर्वक स्थिर रक्खा।"

अर्मस हँस पड़ा। आर्तगान ने कहा—"तीन घंटे से बराबर तुम्हारी बहस सुन रहा था। मैं तो समझने लगा कि एक पागल-खाने में खड़ा हूँ। अब पेट में चूहे कूद रहे हैं? खाने का जल्दी से प्रबंध करो।"

अर्मस ने कहा—"परंतु क्षमा करना मैं सह-भोज में सम्मिलित नहीं हो सकता। आज पवित्र शुक्रवार का दिन है। मैंने व्रत रक्खा है। हाँ! निरामिष भोजन में सम्मिलित हो सकता हूँ।"

आर्त—"निरामिष ही सही।"

शीघ्र ही भोजन का प्रबंध हो गया। दोनों मित्र खाने बैठे। आर्तगान ने खाते हुए कहा—"तो अब तुम्हारा विचार यही निश्चित हो चुका है? ज़रा यह तो सोचो! त्रिबली और तुम्हारे मित्र क्या कहेंगे? आवश्यकता के समय पर तुम धोखा दे रहे हो?"

अर्मस—"मित्र! मैं इस समय चर्च में प्रवेश नहीं कर रहा हूँ। यह मेरा पुनर्प्रवेश है। क्या तुमको मेरी पूर्व-कथा नहीं मालूम?"

आर्त—"नहीं! वह क्या कथा है? सुनाओ?"

अर्मस ने इस प्रकार कहना प्रारंभ किया—मैं बचपन से ही धर्म-चर्चा में लगा था। धार्मिक जीवन से मुझे प्रेम था। बीस वर्ष की आयु में मैं धार्मिक सम्प्रदाय में पादरी होकर, सम्मिलित होने की सब तैयारियाँ कर चुका था। एक दिन मैं अपनी प्रेमिका के यहाँ गया था। मैंने उसी दिन पवित्र बाइबिल का अनुवाद समाप्त किया था। उसी अनुवाद को प्रेमिका के कंधे पर हाथ रक्खे हुए आनंद के साथ सुना रहा था। ठीक इसी समय एक सैनिक अफ़सर ने बिना सूचित किये घर में प्रवेश किया। यह अफ़सर मेरी प्रेमिका के रूप पर मुग्ध था। मुझको बुरा लगा। जब मैं घर के बाहर जाने लगा।

उसने भी मेरा पीछा किया और बाहर आकर कहा—"महाशय ! क्या बेंत की चोट तुमको पसंद है ?"

मैंने कहा—"मैं कह नहीं सकता ! परंतु अभी तक किसी का इतना साहस नहीं हुआ ।" उसने कहा—"ख़ैर ! सुन रक्खो कि यदि कभी इस घर में क़दम रक्खा तो इसका भी तुमको अनुभव हो जावेगा।" इस उत्तर से मैं बहुत भयभीत हुआ। वह सैनिक बहुत बलिष्ठ था। मैं पादरी की भाँति अत्यंत दुर्बल था। ख़ून का घूँट पीकर रह गया। मेरी ज़बान से कोई बात न निकल सकी। मैं घर लौट आया।

मेरा अपमान हुआ था—अपमान असह्य था। मैं कुलीन घर में उत्पन्न हुआ था, बात को सहन न कर सका। बदला लेने का विचार दृढ़ कर लिया। उसकी बात रह-रहकर मेरे हृदय को साला करती थी। अपने घरवालों से कह दिया कि अब मेरा विचार पादरी होने का नहीं है। मैं पेरिस के प्रसिद्ध अखाड़े में जाकर, अस्त्र-शस्त्र चलाना सीखने लगा। साल भर में मैं इस कला में कुशल हो गया। मैंने शारीरिक शक्ति में भी काफ़ी उन्नति कर ली थी। ठीक उसी दिन—जिस दिन मेरा अपमान हुआ था। मैं सैनिक वेष में सुसज्जित होकर, अपने एक मित्र के नृत्य-उत्सव में गया। मेरा शत्रु भी इसमें सम्मिलित होने आया था। मैं सीधा वहाँ गया; जहाँ वह अपनी प्रेमिका के पास बैठा हुआ नृत्योत्सव में मग्न होकर, मधुर-संगीत सुन रहा था। उसके कँधे पर हाथ रखकर मैंने कहा—"महाशय ! आप अप्रसन्न तो न होंगे यदि मैं उसी घर में फिर जाऊँ और क्या वहाँ जाने पर आप अब भी बेंत मारने की धमकी देने का साहस करेंगे ?"

वह चौंक पड़ा और कहा—"महाशय ! मुझसे आपका क्या काम है ? मैं आपको नहीं जानता।" मैंने अपना परिचय दिया। तब उसने अट्टहास करके कहा—"ओह ! अब मैं समझा ! आप मुझसे कल प्रातः मिल सकते हैं ?"

मैंने कहा—"नहीं ! मैं कल पर कोई काम उठा रखना नहीं चाहता ! आइये ! बाहर चलकर निपट लें।"

मेरे ज़िद करने पर वह बेमन-से उठ खड़ा हुआ। हम दोनों बाहर आगये। चाँदनी की शुभ्र ज्योति पृथ्वी को दूध से नहला रही थी—शांत निस्तब्धता चारों ओर छाई हुई थी। हम दोनों उसी स्थान पर आये। जहाँ एक वर्ष पहले उसने मुझको वे वज्र-वाक्य कहे थे। द्वंद-युद्ध प्रारंभ हो गया। पहले ही वार में शत्रु गिर पड़ा और उसके प्राण-पखेरू उड़ गये। दूसरे दिन जब लोगों को उसकी लाश मिली तो चारों ओर कोहराम मच गया। स्थिति को उपयुक्त न समझकर मैंने दीक्षा लेने के लिये और रुक जाना उत्तम समझा। मेरी मित्रता अथास और पार्थ से हो गई थी। इन्होंने मुझे राज-सेवा को ग्रहण कर लेने के लिये मज़बूर किया। राजा मेरे पिता का बहुत सम्मान करते थे। मुझे राज-सैनिक का पद शीघ्र ही मिल गया। तबसे अब अवसर मिला है। अब कल मैं दीक्षा लूँगा।"

आर्त०—"क्या कुछ दिन और ठहरकर दीक्षा लेने में हर्ज़ है। इन्हीं दिनों में विरक्ति के विचार क्यों उदय हुए?"

अर्मस—"इस ज़ख़्म ने मुझे युद्ध से विरक्त कर दिया है?"

आर्त०—यह तो कोई गहरा ज़ख़्म नहीं है। हृदय में अवश्य एक गहरा ज़ख़्म है।" आर्तगान यह कहकर मुस्कराया।

अर्मस की आँखें चमक उठीं; परंतु हृदय के भावों को छिपाकर उसने कहा—"आह ! इन बातों का ज़िक्र करना व्यर्थ है? क्या एक साधारण रमणी के प्रेम के कारण यह परिवर्तन हो सकता है? असंभव।"

आर्त०—"परंतु यह सब बातें इतनी क्षुद्र नहीं हैं? मैं भी इसको पूर्ण अनुभव करता हूँ?"

अर्मस ने चौंककर पूछा—"यह क्या? अपनी बीती तो सुनाओ?

आर्तगान ने अपना कुल हाल कहा। कांसटेंस की प्रेम-कथा भी कही।

अर्मंस ने कहा—"ओह ! इसमें अधिक दुःख की बात नहीं है। कम-से-कम तुमको इतना संतोष तो है कि तुम्हारी प्रेमिका ने स्वयं तुम्हारे प्रेम को निराश नहीं किया। परंतु मैं तो……।" इतना कहकर अर्मंस रुक गया। आर्तगान ने कहा—"हाँ ! क्या ! क्या ! कहो !"

अर्मंस—"कुछ नहीं ? यह सब व्यर्थ है। संसार की क्षुद्रता में लिप्त रहकर, आत्मिक आनंद को नष्ट करना है ?"

आर्तगान मुस्कराया। उसने भी और कुछ न पूछा। कुछ रुककर कहा—"तो अब यह निश्चित है कि तुम दीक्षा अवश्य लोगे ?"

"निश्चित ! और पूर्णतया निश्चित ! मेरे मित्रों से सादर अभिवादन कह देना।"

आर्त०—"तो अब सब सांसारिक बंधनों को नष्ट कर देना चाहिए और साथ ही में वह पत्र भी जो कि तुम्हारे प्रिय-पात्र के आदर्श-प्रम का चिन्ह है ?"

"कौन-सा पत्र ?" अर्मंस ने चकित होकर पूछा।

"वह पत्र जो तुम्हारी प्रेमिका ने तुम्हारे घर के पते से भेजा था—तुम्हारी अनुपस्थित में उसको मैंने रख लिया था।"

अर्मंस चौंक पड़ा। हर्ष की लालिमा ने उसके चेहरे को चमका दिया। उसने उत्सुक होकर पूछा—"तुम क्या कहते हो ?"

आर्तगान ने अपने कोट की जेबें टटोलते हुए कहा—"अरे ! मालूम होता है, वह पत्र खो गया। ख़ैर ! जाने दो। तुम्हारी दृष्टि में तो अब संसार स्मशान है, स्त्री-पुरुष परिवर्तन-शील छाया-मात्र हैं और प्रेम केवल क्षणिक उमंग है।"

अर्मंस का चेहरा फीका पड़ गया। उसने चिल्लाकर कहा—"आर्तगान ! आर्तगान ! दया करो। इतने निठुर न बनो।"

आर्तगान ने जेब से पत्र निकालते हुए कहा—"लो! कुशल हो गई। पत्र खोया नहीं था! यह लो मिल गया।"

अर्मस ने झपटकर पत्र हाथ से छीन लिया और खोलकर उसमें आँखें गाड़ दीं। क्षण भर बाद कहा—"धन्यवाद! आर्तगान, धन्यवाद! मैं तुम्हारा सदा कृतज्ञ रहूँगा। उसको मजबूरन टुअर्स लौट जाना पड़ा था। वह प्रेम से विचलित नहीं हुई—मुझको अभी तक प्यार करती है। मेरा विचार था कि उसकी आँखें और किसी से मिल गई हैं। आओ! मित्र, आओ! तुम्हें हृदय से मिला लूँ। हर्ष के कारण मुझसे बोला नहीं जाता।"

दोनों मित्र हृदय से मिले। इसी समय वैरीकान फलाहार लेकर हाज़िर हुआ। देखते ही अर्मस ने कहा—"मूर्ख! यह क्या भीषण पदार्थ लाया है? मनुष्यों का खाना ला! शराब और गोश्त लाकर हाज़िर कर! यह क्या मुँह बनाता है?"

वास्तव में वैरीकान अपने स्वामी के घोर परिवर्तन को देखकर, भौचक्का रह गया था। कुछ ही क्षण पूर्व जो स्वामी असीम धर्म परायणता का प्रमाण अपने वादा-विवाद में दे चुका था—उसे क्षण ही भर में इतना बदलते देखकर, सहसा उसे विश्वास न आता था; परंतु वह पूर्ण रीति से जानता था कि उसके नेत्र धोखा नहीं दे रहे हैं। इस सब उत्पाद तथा मति विभ्रम का मूल कारण उसके विचार में आर्तगान ही था। वैरीकान समझने लगा कि आर्तगान वास्तव में कोई जादूगर है। उसको अत्यंत क्रोध हुआ; परंतु आर्तगान उसकी शक्ति के बाहर है, यह जानकर वह केवल मुँह ही बनाकर रह गया। अर्मस की आज्ञानुसार बेचारे ने बे-मन से शराब और गोश्त लाकर हाज़िर किया। आर्तगान ने शराब का प्याला ओठों से लगाते हुए कहा—"अब राजा और उसकी सेवा के नाम पर एक प्याला अवश्य पीना चाहिए। क्यों मित्र! क्या धर्म-गुरु के नाम पर भी एक प्याला पियोगे?"

२५

आ

मंस का पता लगाकर, आर्तगान अथास की खोज में आगे चल दिया। अर्मंस अत्यन्त कमज़ोर होने के कारण, अपने ही होटल में रह गया। आगे-आगे आर्तगान और पीछे-पीछे प्लेंचेट अपने-अपने घोड़ों पर चले जाते थे। अब इनके साथ केवल एक घोड़ा और अधिक रह गया था। एक अर्मंस की भेंट कर दिया गया था। इस नवीन घोड़े को बहु-मूल्य साज के साथ पाकर अर्मंस अत्यंत प्रसन्न हुआ था।

कुछ ही घंटों में दोनों यात्री अर्मींस के होटल में पहुँच गये। ज्योंही होटल का स्वामी स्वागत करने के लिये पहुँचा—आर्तगान ने हाकिमाना ढंग "नहीं ! महाशय क्या तुम मुझको पहचानते हो ?" उसने कहा—

"नहीं ! तुम मुझको अवश्य नहीं जानते हो। क्य पुरुष की याद नहीं, जिस पर तुमने कुछ दिन पहले जो उस भद्र- का अपराध लगाया था ! वह पुरुष अब कहाँ है ?" पक्के बनाने

इस बात को सुनकर होटल के स्वामी का चेहरा पड़ गया। भयभीत दृष्टि से उसने कहा—"महाशयजी ! उन न कीजिये।

अर्मंस ने शराब पीते हुए कहा—"धर्म-गुरू जहन्नुम में जाय। मौज़ से शराब पियो। मैं भी किस बेहूदगी में फँस गया था। अब मुझे स्वयं हँसी आती है? अब यह बतलाओ कहाँ चलना होगा?"

आर्तगान का पेट हँसी से फूल रहा था।

मैं अपनी भूल के लिये अभी तक पश्चाताप कर रहा हूँ। मुझे अपनी ग़लती की काफ़ी सज़ा मिल चुकी है। अब तक दुष्परिणामों को भोग रहा हूँ।"

आर्तगान ने आश्चर्य से पूछा—"क्या कोई नई बात हुई। अथास इस समय हैं कहाँ ?"

हो० स्वा०—"आप ध्यान से सुनिए। मैं अपनी विपत्ति की कथा सुनाता हूँ।"

आर्तगान की उत्सुकता बढ़ रही थी। एक कुर्सी पर बैठ गया। होटल के स्वामी ने इस प्रकार कहना प्रारंभ किया :—

"मुझको अधिकारियों से यह सूचना मिली थी कि एक प्रसिद्ध सिक्के का जालिया मेरे होटल में आकर ठहरेगा। वह और उसके साथी राज-सैनिक के भेष में होंगे। आपकी और अथास की हुलिया मुझको ठीक-ठीक दी गई थी। इस सूचना के साथ ही छैः सिपाहियों की एक गारद भी मेरी सहायता के लिये आ गई।"

यह कहकर होटल का स्वामी दम लेने के लिये रुका और ज़ोरों से खाँसने लगा।

आर्तगान ने व्यग्र होकर पूछा—"लेकिन यह तो बतलाओ कि वह हैं कहाँ ? मर गये या जीवित हैं।"

खाँसते हुए होटल के स्वामी ने कहा—"ज़रा धीरज रखिए ! सब बातें अभी मालूम हुई जाती हैं। तब इसके पश्चात् वही आपको मालूम है। आप लोगों की जल्दी से—अथास के आने से मेरा यह विचार और भी दृढ़ हो गया कि वास्तव की सूचना सत्य थी। अथास ने निराश होकर अपने सक प्रयत्न किया। उसका सेवक भी वीरता से

आर्तगान ध्यान से सब सुन रहा था बढ़ते जाते थे। होटल के स्वामी ने

हारे मित्र ने अपनी पिस्तौल से दो सैनिकों को आहत कर दिया। मेरे एक सेवक को गिरा दिया और स्वयं मेरे शिर पर एक ऐसा भीषण प्रहार किया कि मैं बेहोश हो गया। लड़ते-लड़ते वह पीछे-पीछे हटता गया यहाँ तक कि भोजन-भंडार के द्वार के निकट आ गया। द्वार खुला हुआ था। शीघ्र ही उसमें प्रवेश करके भीतर से उसे बंद कर दिया। आक्रमणकारी सैनिक उसको कमरे में बंद देखकर चले गये।"

आर्तगान ने क्रोध में भर कर कहा—"तुम तो उसको जेल में बंद करना चाहते थे? तुम्हारी इच्छा पूरी हो गई न?"

हो० स्वा०—ओह! ईश्वर! हम उसको जेल में बंद करना चाहते थे! नहीं! हमारा ऐसा विचार नहीं था। उसने तो स्वयं ही अपने आपको बंद कर लिया। मुझको जब होश हुआ तो मैं सीधा प्रधान अधिकारी के पास गया और कुल हाल बतलाया। प्रधान यह सब सुनकर आश्चर्य में हो गया। उसने कहा कि मैंने कोई इस प्रकार का हुक्म नहीं दिया और यदि तुमने इस मामले के साथ कभी मेरा नाम लपेटा तो मैं तुम्हारी बड़ी दुर्दशा करूँगा। मैं यह सब सुनकर अवाक् रह गया। मुझे अपनी भूल मालूम हुई। बात यह थी कि हमने भूल से ग़लत आदमी को पकड़ लिया था। यथार्थ अपराधी ग चुका था। मैं लौटकर आया कि निर्दोष व्यक्ति से माफ़ी माँगकर क कर दूँ; परंतु वह तो मनुष्य नहीं राक्षस निकला। उसने म धोखा देते हो और जब तक मेरी शर्तें न मंजूर हो जायँगी ाहर न निकलूँगा। मैंने कहा तुम्हारी क्या शर्तें हैं? उसने सबसे पहले मेरा नौकर कुल हथियारों के साथ मेरे य, तब उसके बाद अपनी बाक़ी शर्तें बतलाऊँगा। ाज्ञा का पालन किया; लेकिन ऐसा करके हमने ाड़ी मार ली। नौकर को लेकर उसने फिर बको बड़ी लंबी फटकार बताई।"

आर्तगान ने ऊब कर पूछा—"तो क्या तबरेः अथास अभी तक उसमें बंद है ?"

होटल स्वामी—"हाँ ! महाशय ! हमने सैकड़ों प्रार्थनायें कीं—हाथ जोड़े, पैरों पर गिरे, हजारों प्रकार से क्षमा माँगी, नाना प्रकार के प्रलोभन दिये ; परंतु वह निकलने का नाम तक नहीं लेते। हम रोज़ाना दोनों वक्त एक ख़ूराक़ के द्वारा गोश्त और रोटियाँ पहुँचा देते हैं। गोश्त और रोटियों के ख़र्च का हमको इतना ख़्याल नहीं—जितना कि उस सब सामान का है, जो भंडार में बंद है। हमारे ग्राहक सब आकर वापस चले जाते हैं। उस भंडार में कुल बढ़िया-बढ़िया शराब, उम्दा अर्क़ की बोतलें और सब प्रकार की बहुमूल्य मिठाइयाँ, अचार, मुरब्बे इत्यादि बंद हैं। मेरी सब आमदनी का द्वार बंद हो गया। यह भी सहन हो सकता है ; परंतु विपत्ति तो यह है कि वे दोनों एक महीने से उसमें हैं। न मालूम कितना सामान खा डाला हो और नष्ट कर दिया हो। महाशय ! मैं तो लुट गया। मेरे जीवन का सारा आधार जाता रहा। हाय ! आप ही किसी प्रकार उनको निकलवाकर मेरा उद्धार कीजिये।"

यह कहकर वह रोता रोता आर्तगान के पैरों पर लोट गया।

आर्तगान हँस रहा था। उसने कहा—"इससे उचित दंड तुमको नहीं मिल सकता है। अथास के बुद्धि-चातुर्य की मैं तो प्रशंसा ही करता हूँ।"

होटल स्वामी—"महाशय ! अब मैं काफ़ी दंड पा चुका। मेरी उम्र भर की कमाई नष्ट हो गई। अब कान पकड़ता हूँ, कभी ऐसा न करूँगा। ज़िंदगी भर यह बात याद रहेगी। मैंने यह भी कोशिश की कि लुहार के ज़रिये दरवाज़े तुड़वा दिये जायँ ; परंतु उन्होंने शराब की कुल डेगें और अन्य भारी-भारी सामान सामने दरवाज़ों के पीछे इस तरह अड़ा दिये हैं कि दरवाज़े टूटने पर भी वहाँ से

इस से मस नहीं होते। हाय! हाय! उन्होंने सारी डेगों की शराब पी डाली है। क्या अब भी मेरे ऊपर दया न होगी?"

उसके करुण-रुदन से आर्तगान का हृदय द्रवित हो उठा। ठीक इसी समय अथास का स्वर उसके कान में पड़ा। उसने कहा—"देखो! यह वही बोल रहा है।"

होटल स्वामी ने भयभीत होकर कहा—"मालूम होता है किसी ने उसको छेड़ा है। इसी प्रकार छेड़ने पर वह गालियाँ सुनाया करता है। दोनों भीतर दौड़े गये। देखा कि दो अँगरेज़ होटल में आकर उतरे हैं। उनको बढ़िया शराब की आवश्यकता पड़ी। होटल स्वामी की स्त्री ने अथास से थोड़ी-सी शराब निकाल देने के लिये प्रार्थना की, उसने इंकार कर दिया। इस पर दोनों अंगरेज़ बिगड़ पड़े। एक कह रहा था—"यह कैसा अत्याचार है कि यह पागल आदमी एक बूँद शराब भी नहीं देने देता। आओ, दरवाज़ा तोड़कर निकाल लें और इसको इसकी शरारत के लिये काफ़ी दंड दें।"

अथास ने भीतर ही से जवाब दिया—"अच्छा। इनको आने दो! एक ही फायर में दोनों मज़ा चख लेंगे। इन छोकड़ों की अक़्लें ठीक हो जायँगी।"

आर्तगान ने आते ही मामले को शांत कराया। कहा—"महाशयो? अपनी-अपनी तलवारें म्यान में रक्खो। तुम्हारे सब प्रयत्न निष्फल होंगे। देखो! मैं अभी सब ठीक किये देता हूँ।"

आर्तगान के शब्दों को सुनकर अथास ने भीतर ही से कहा—ओह! यह क्या! क्या मैं आर्तगान का स्वर सुन रहा हूँ।"

आर्त०—"हाँ। मित्र! मैं ही हूँ!"

अथास—"तब तो ठीक है! इन अँगरेज़ों का मैं अभी काम तमाम किये देता हूँ। मैं फ़ैर करता हूँ। आर्तगान! तुम ज़रा हट जाना।"

आर्तगान ने चिल्लाकर कहा—"अरे! यह ग़ज़ब न करना

यह बड़ी भारी मूर्खता होगी। मैं सब शांत किये देता हूँ।" यह कहकर उसने अँगरेज़ों को अथास का पूरा हाल कहा। वह ख़ूब हँसे और अथास की वीरता तथा चातुरी की प्रशंसा की। आर्तगान ने कहा—"अब आप लोग अपने-अपने कमरे में जाकर बैठिये। मैं शराब निकलवाकर अभी भिजवाता हूँ।"

इसी बीच में अथास ने चिल्लाकर कहा—"यदि कुछ बची होगी तब न।" होटल स्वामी के होश उड़ गये, उसने सर पीटते हुए कहा—"हाय! हाय! इन्होंने तो सब पी डाली। बड़ा भारी राक्षस भी इतना शीघ्र सब सामान समाप्त नहीं कर सकता था। अरे! ग़ज़ब! मैं तो कहीं का न रहा! मर गया। हाय मर गया?"

अँगरेज़ों के चले जाने पर आर्तगान ने चिल्लाकर कहा—"अथास! अब निकल आओ! मैं ही अकेला हूँ।"

तब भोजन-भंडार में खड़-खड़ाहट का शब्द सुनाई दिया। मालूम हुआ कि आड़ का सामान हटाया जा रहा है। कुछ क्षण के बाद, दरवाज़े खोलकर—अथास झूमता, गिरता-पड़ता लाल-लाल नेत्र किये, निकलता दिखाई दिया। इसी दशा में ग्रीमांड भी पीछे-पीछे आ रहा था, आर्तगान समझ गया कि इन दोनों ने शराब पर ख़ूब हाथ साफ़ किये हैं। चारों व्यक्ति एक सुंदर कमरे में विश्राम करने के लिये चले गये। होटल-स्वामी और उसकी स्त्री ने जब भंडार में पैर रक्खा; तो वहाँ की दशा देखकर दोनों के होश उड़ गये। सब शराब के बर्तन ख़ाली पड़े थे। बोतलें टूटी पड़ी थीं। मुरब्बा, अचार इत्यादि का चिन्ह तक शेष न था। यह हालत देखकर दोनों ख़ूब चिल्ला-चिल्लाकर रोने-पीटने लगे। उनके करुण-क्रंदन से सारा होटल गूँज उठा। आर्तगान ने दोनों को बुलाया और कहा—"यदि तुमने अधिक शोर किया; तो हम दोनों तुम्हारे दूसरे भंडार को भी बंद करके बैठ जायँगे और सारा सामान समाप्त करके ही निकलेंगे।"

होटल का स्वामी चरणों पर गिर पड़ा और गिड़गिड़ाकर कहा— "आप कुलीन प्रतिष्ठित रईस हैं। मैं निर्धन व्यक्ति हूँ। मेरे ऊपर दया कीजिए।"

अथास ने झूमते हुए कहा— "तुम्हारी बातों से मुझे दया आ रही है। अच्छा, यह बतलाओ कि वह सिक्कों की थैली कहाँ है ? जिसको तुमने जाली सिक्के बतलाकर यह विपत्ति मोल ली ?"

होटल स्वामी—"वह तो मैं न्यायाधिकारी के पास जमा कर आया था।"

अथास—"उसको जाकर वापस ले लो और अपने ख़र्च में लाओ।"

होटल स्वामी और उसकी स्त्री दोनों ने आशीर्वाद की वर्षा करते हुए चलना चाहा ही था कि आर्तगान ने रोककर कहा—"और वह घोड़ा कहाँ है ? जिसको मेरे यह मित्र अपने साथ लाये थे।"

होटल स्वामी—"हुज़ूर वह तो अस्तबल में है। न मालूम कितना दाना और घास खा गया है।"

आर्त०—"उसको भी बेचकर धन अपने पास रक्खो।"

अथास ने चिल्लाकर कहा—"अरे ! यह क्या ! मैं अब किस पर सवारी करूँगा ?"

आर्त०—"तुम न घबड़ाओ ! मैं दूसरा बढ़िया घोड़ा तुम्हारे लिये लाया हूँ। देखकर ख़ुश हो जाओगे ?"

अथास—"कहाँ से ?"

आर्त०—"यह सब अभी मालूम हो जावेगा। तब तक आओ, शराब पियें।" होटल स्वामी से सम्बोधन करके कहा—"शराब मँगाओ ?" उसका चेहरा पीला पड़ गया। यह देखकर अथास ने कहा—"भंडार में संदूक के पीछे अभी दो दर्जन बोतलें बच रही हैं। उनमें से छैः ले आओ।"

होटल स्वामी धीरे-धीरे यह बरबराता हुआ चला गया—"यह आदमी क्या है, देव है। एक महीने तक शराब में डूबा रहने पर भी शराब के लिये असाधारण इच्छा रखता है।"

तब एकांत पाकर आर्तगान ने शेष मित्रों का सब हाल बतलाया। दोनों मित्र पार्थ और अर्मस की कथाओं पर ख़ूब हँसे। इसी बीच में शराब आ गई। शराब का प्याला मुँह से लगाते हुए अथास ने कहा—"परंतु मित्र! तुम पर क्या बीती! यह क्यों छोड़ गये!"

"मैं सबसे अधिक अभागा प्रमाणित हुआ?"

"क्या? अभागा! यह असंभव है?"

"वही तो संभव हो गया!" यह कहकर आर्तगान ने आप-बीती सब घटनायें सविस्तार वर्णन कीं, सब सुनकर अथास बोला—"यह तो साधारण प्रेम-लीला है। कोई महत्त्व की बात नहीं?"

"तुम्हारी दृष्टि में संभव है, ये बातें महत्त्व न रखतीं हों, क्योंकि तुमने तो कभी प्रेम किया ही नहीं?"

इस पर अथास की आँखें चमक उठीं; परंतु क्षण ही भर में पूर्ववत होकर उसने कहा—"यह सत्य है। मैंने स्वयं कभी भी प्रेम नहीं किया।"

"तब यह स्वीकार करो कि तुम्हारे वे वाक्य मेरे कोमल-हृदय के लिये अत्यंत कठोर हैं।"

"कोमल-हृदय? नहीं—भग्न-हृदय?"

"क्या?"

"मैं यह कहता हूँ कि प्रेम एक जुआ है; जिसमें विजयी के पक्ष में सदा मृत्यु ही पड़ती है। तुम बड़े भाग्यशाली हो जो उससे अलग हो गये और मैं यही परामर्श दूँगा कि अब कभी उसकी चिंता न करना।"

"ओह! वह मुझसे प्रेम करती थी।"

"क्या वास्तव में प्रेम करती थी? मित्र? क्या ऐसा भी कोई

व्यक्ति है; जिसने यह विश्वास कर लिया हो कि उसकी प्रेमिका उससे प्रेम नहीं करती। प्रेमिकाओं से किसने धोखा नहीं खाया?"

"मैं कहूँगा तुमने! क्योंकि तुम्हारी प्रेमिका कभी रही ही नहीं?"

अथास के नेत्र फिर चमके। कुछ देर शांत रहकर उसने कहा— "यह सत्य है। मेरी कोई प्रेमिका नहीं रही। अच्छा! अब शराब पियो।"

"परंतु इस समय मुझको क्या धीरज नहीं बँधाओगे? ओह! मैं कितना अभागा हूँ?"

"तुम अभागे नहीं हो! मित्र! सुखी हो! तुम्हारी कथा हास्यास्पद है। मैं तुमको यदि एक प्रेम-कथा सुनाऊँ, तो तुम रो पड़ोगे—आँखें खुल जायँगी। तुमको मालूम हो जायगा कि तुम अभागे नहीं हो।"

"वह कथा आप-बीती है?"

"नहीं! वह एक मेरे मित्र पर बीती थी?"

"तब सुनाओ! वह क्या है?"

"रहने दो! आओ शराब पियें।"

"नहीं! ज़रूर सुनाओ। शराब भी पियो और कथा भी सुनाओ। अथास आग्रह को न टाल सका। कहा—"बहुत सावधान होकर सुनना। यह हृदय-विदारक घटना है। यह न समझ बैठना कि इस कथा का नायक मैं ही स्वयं हूँ। यह एक मेरे मित्र से संबंध रखती है। मेरा एक ज़िमींदार मित्र था। आयु २४—२५ के लगभग होगी। यौवन की नई उमंग थी, वह एक १६ वर्ष की अनिंद्य सुंदरी कन्या पर आसक्त हो गया। शरीर की अपूर्व कोमलता, उसके अनुपम गठन से मिलकर रूप-माधुरी को अत्यंत आकर्षक बना रही थी। सौंदर्य-श्री स्वर्गीय थी, उसका स्वर वीणा विनिंदक था—उसकी नेत्र ज्योति विमो-हक थी। वह अपने भाई के साथ एक ही घर में रहती थी। उसका

भाई पादरी था। दोनों कुछ ही दिन पूर्व, उस नगर में आकर रहने लगे थे। उनका पूर्व-निवास कहाँ था? उसके सौंदर्य-मद से छककर, लोग यह पूछना तक भूल गये थे। देखने में वे कुलीन मालूम होते थे। मेरा मित्र उस नगर का अधिपति था। वह चाहता तो उसको उड़ा ला सकता था। प्रलोभन अथवा ज़बरदस्ती से उसको वश में कर सकता था; परंतु दुर्भाग्य से वह सुसभ्य और भद्र-व्यवहार युक्त था। उसने उस रमणी से विवाह कर लिया। ओह! वह कितना मूर्ख था—कितना अज्ञानी था! और उसकी यह भूल कितनी भीषण थी।"

यह कहते-कहते अथास उत्तेजित हो गया था। मालूम होता था कि उसके हृदय में विकराल लपटें उठ रही हैं। उसने क्षण भर रुककर फिर कहा—"उसने उसे अपने प्रासाद में ला रक्खा और अत्यंत भक्ति और श्रद्धा से उसकी पूजा करने लगा। वह रमणी भी हृदय से उस पर प्रेम प्रकट करती थी। एक दिन जबकि वह अपने पति के साथ, शिकार खेलने गई थी कि सहसा घोड़े से गिर पड़ी और अचेत हो गई। उसका पति शीघ्र ही सहायता को पहुँचा तो देखा कि वह अपने कपड़ों से ही उलझकर गिर पड़ी है। उसने अत्यंत सावधानी से, उसके कपड़ों को खोला। ऐसा करने में उसे अपनी पत्नी का वक्षस्थल खोलना पड़ा। ओह! उसने क्या देखा! क्या, मित्र! तुम इसका अनुमान कर सकते हो?" यह कहते हुए अथास का चेहरा पीला पड़ गया।

आर्तगान ने उत्सुक होकर पूछा—"वह क्या था?"

"ओह! उसका वक्षस्थल गर्म लोहे से चिन्हित था। "पापिष्टा" शब्द स्पष्ट रूप से उस पर अंकित था।"

आर्तगान चिल्ला पड़ा—"ग़ज़ब! यह तुम क्या कह रहे हो।"

अथास ने शांत होकर विकृत हँसी हँसकर कहा—"यह सत्य है।

वह स्वर्गीया देवी के रूप में राक्षसी थी। उसके विषय में बाद को मालूम हुआ कि उसने धर्म-मंदिर से सोने के बर्तन चुराये थे।"

आर्त०—"तब तुम्हारे मित्र ने क्या किया ?"

अथास—"मेरा मित्र कुलीन वंशज था, अत्यंत प्रतिष्ठित था, उसको अपनी भावी—अबोध संतान के अधिकारों का काफ़ी ध्यान था। अपने उज्ज्वल कुल को कलंकित नहीं कर सकता था। उसने उसके हाथ पैर बाँधकर, उल्टा करके एक पेड़ में लटका दिया।"

आर्तगान ने चिल्लाकर कहा—"ओफ़! यह ख़ून।"

अथास का चेहरा मुर्दे की भाँति सफ़ेद पड़ गया था। शराब का एक प्याला पीकर उसने गर्दन झुका ली। धीरे-धीरे उसके मुँह से यह निकल पड़ा—"इस प्रकार उस सुंदर, प्रेममयी, मधुर-भाषिणी रमणी से मुझे छुटकारा मिला।" परंतु शीघ्र ही सचेत होकर स्वर बदलकर कहा—"आर्तगान! आओ शराब पियें।"

आर्तगान ने धीरे से पूछा—"तब क्या वह मर गई ?"

अथास ने आर्तगान की ओर देखकर कहा—"अपना प्याला लाओ। थोड़ी-सी शराब और पियो ?"

परंतु आर्तगान ने पूछा—"और उसका भाई ?"

अथास ने चौंककर कहा—"हाँ! उसको भी वही दंड देने के लिये मैंने बुलवाया; परंतु वह नगर छोड़कर, उसी दिन भाग गया था।"

"क्या यह मालूम हुआ कि वह कौन था ?"

"ओह! वह उसका पहला प्रेमी था और उस षड्यंत्र का सूत्रधार था। वह इसी उद्देश्य से पादरी के भेष में, इस नगर में आकर ठहरा था कि अपनी पतिता प्रेमिका को किसी कुलीन रईस के गले, मढ़कर आप समाज में किसी प्रतिष्ठित पद पर सम्मान पूर्वक रहे।

उसको भी फाँसी की सज़ा दी गई थी; परंतु फिर क्षमा दे दी गई।"

इस अद्भुत कथा को सुनकर आर्तगान अवाक् रह गया। अथास ने हँसने का प्रयत्न करते हुए कहा—"लो! यह शराब पियो! यह सबसे उत्तम है। इतनी स्वादिष्ट शराब मैंने आज तक नहीं पी।"

आर्तगान अचेत-सा होकर कुछ सोच रहा था।"

२६

दूसरे दिन एक विचित्र घटना हो गई। अथास तबियत बहलाने के लिये उन अँगरेज़ों के साथ, जो होटल में ठहरे हुए थे, जुए में प्रवृत्त हो गया। सब धन हारने पर उसने अंतिम दो बाज़ियों में अपने और आर्तगान के घोड़े को भी रख दिया, वे भी चले गये। कुशल यह हुई कि उनका बहुमुल्य चारजामा बच गया था। केवल उसी को लेकर पाश्चाताप करते हुए, दोनों अपने-अपने नौकरों के, खच्चरों पर सवार होकर, अर्मस के यहाँ किसी प्रकार पहुँचे। दोनों नौकर भी चारजामे सर पर लादे हुए पैदल कूदते-फँदते उनके पीछे आ गये। यहाँ पर आकर मालूम हुआ कि अर्मस भी जुए में अपना घोड़ा हार चुका है। आर्तगान को ड्यूक के उपहार-स्वरूप दिये हुए घोड़ों के इस प्रकार हाथ से निकल जाने पर अत्यंत दुःख हुआ। केवल पार्थ के पास एक घोड़ा बच गया है इस बात ने उसके दुःख को घटाने के स्थान में बढ़ाया ही; क्योंकि एक घोड़े से चार साथियों का काम कैसे चल सकता था? अर्मस तो यहाँ तक कल्पना कर रहा था कि पार्थ भी यदि इस घोड़े से वंचित हो जाय तो उसके हृदय को संतोष हो। अर्मस के पास भी केवल चारजामा

बच रहा था। अतः तीनों नौकरों के सर पर चारजामे लदवाकर, तीनों मित्र नौकरों के खच्चरों पर सवार होकर पार्थ के पास चल दिये। वहाँ पहुँचने पर देखा कि पार्थ उदास-मन किसी चिंता में लीन, होटल के बाहर बैठा हुआ है। उदासी का कारण पूछा तो पार्थ ने अपने घोड़े के जुए में हार जाने पर अत्यंत दुःख प्रकट किया। उसको भी घोड़े को हारकर, चारजामा बाज़ी में रखते समय लालच हो आया था। परंतु अपने शेष मित्रों को भी अपनी ही अवस्था में पाकर, उसे कुछ संतोष हुआ। दुःख और हानि के भाव ने अब तो विनोद का रूप धारण कर लिया। चारों मिलकर हँसते रहे। ये घोड़े अमींस होटल वाले अँगरेज़ी सौदागरों ही ने सब होटलों में पहुँचकर कौशल से जीते थे। इस रहस्य पर और मित्रों का तो ध्यान नहीं गया; परंतु आर्तंगान को इसमें धर्माचार्य की कुटिलता का संदेह हुआ। चारों मित्र अत्यंत कठिनता से इस प्रकार घोड़ों से हाथ धोकर पेरिस पहुँचे।

पेरिस पहुँचते ही त्रिबली ने दुःख और सुख भरे संवाद सुनाये। सुखमय संवाद तो यह था कि राजा ने त्रिबली के आग्रह को स्वीकार करके, आर्तंगान को राज-सेना में भरती कर लेने का वचन दे दिया है। दुःख पूर्ण सूचना यह थी—अँगरेज़ और फ़्रांस के संग्राम में भाग लेने के लिये राज-सेना को आज्ञा हुई है कि वह युद्ध-स्थल में १५ दिन के पश्चात् १५ मई तक अवश्य पहुँच जाये।

अब चारों मित्रों पर यह चिंता सवार हुई कि युद्ध-भूमि में चलने के लिये वस्त्र इत्यादि सामान ख़रीदने को धन कहाँ से आवे? वेत... द्वारा प्राप्त धन तो पहले ही उड़ चुका था। पार्थ ने तो यह उपा... सोचा कि किसी अपनी प्रेमिका से मिलना चाहिये जिससे पहले रूठकर, तन कर, फिर उसकी अनुनय-विनय स्वीकार करके कौशल-पूर्वक कुछ धन ऐंठा जाय। अर्मस का भी अपनी प्रेमिका से सहायता की आशा थी। रह गये अथास और आर्तंगान, इनके पास इस प्रकार

का कोई आश्रय नहीं था। उनको अपनी चिंता पड़ी। इधर-उधर से क़र्ज़ लेने का प्रयत्न करने लगे।

आर्तगान को सबसे बड़ी चिंता कांसटेंस की लगी थी। उसका अभी तक कोई पता न लगा था। त्रिबली और स्वयं रानी ने बहुत खोज की; परंतु सब प्रयत्न व्यर्थ गये। आर्तगान की प्रेम-व्यथा बढ़ रही थी। उसका हृदय दिन-रात व्याकुल रहता था। वह स्वयं खोज करने लगा। एक दिन वह एक गिरजा में धर्म-भाषण सुनने के लिये गया। पार्थ पहले ही से वहाँ मौजूद था। उसकी दृष्टि बार-बार रमणियों पर पड़ रही थी। उनमें से एक तो पार्थ की वही पूर्व-प्रेमिका थी और दूसरी एक नववयस्का अत्यंत सुंदरी रमणी थी। पहनावे, चाल-ढाल और मुखाकृति से वह कोई कुलीन वंशजा राजकुमारी सी प्रतीत होती थी। उसके पास एक नीग्रो (हबशी) लड़का और एक अतीव सुंदरी १५-१६ वर्ष की रूपवती दासी ये दोनों खड़े हुए थे। पार्थ कभी अपनी स्नेह-दृष्टि अपनी पूर्व प्रेमिका के ऊपर डाल देता था और कभी उसके हृदय में ईर्षाग्नि उत्पन्न करने के लिये दूसरी नववयस्का पर आँखें गड़ा देता था। पूर्व-प्रेमिका यह देखकर जल रही थी। जब उसने देखा कि मेरा प्रेमी मुझ से विरक्त होकर, नवीन रमणी के ही ऊपर स्नेह-दृष्टि कर रहा है और वह रमणी भी पूर्व-परिचिता की भाँति मुस्कराहट के साथ जवाब दे रही है, तो उसकी बेचैनी बढ़ गई।

आते ही आर्तगान की दृष्टि नवीन रमणी पर पड़ी। उसको देख कर वह चौंक पड़ा। वह म्यांग होटल वाली वही रमणी थी, जिसको उसने कैले और डोवर में भी देखा था। वास्तव में वह म्लैडी थी। आर्तगान थोड़ी देर तक पार्थ की प्रेम-लीला देखता रहा। जब धर्म-भाषण समाप्त हुआ और सब लोग उठ-उठकर चलने लगे तो आर्तगान ने भी म्लैडी का अनुसरण किया। पार्थ अपनी पूर्व-प्रेमिका

के साथ एकांत में जाकर, मानलीला करने लगा। आर्तगान छिप कर ग्लैडी के पीछे-पीछे बाहर आया। ग्लैडी बाहर आकर अपनी गाड़ी में सवार हो गई और कोचमैन को सेंट-जर्मेन की ओर चलने की आज्ञा दी। गाड़ी के पीछे-पीछे चलना व्यर्थ समझकर, आर्तगान अपने घर वापस आया। आते ही उसने प्लेंचेट को दो घोड़े तैयार करके अथास के निवास-गृह पर लाने के लिये आदेश दिया और स्वयं भी उसी ओर चल पड़ा।

आर्तगान ने अथास से चर्च की कुल घटना आद्योपांत कह सुनाई—अथास ने हँस कर कहा—"क्या अब नई प्रेमिका को कांसटेंस का स्थान मिलेगा।" आर्तगान ने गंभीर होकर कहा—"कदापि नहीं ? मैं इस रमणी के विचित्र भेद से केवल अवगत होना चाहता हूँ। मैं यह स्वयं नहीं सोच सकता कि यह अपरिचित रमणी मेरे ऊपर क्यों इतना गहरा प्रभाव डाल रही है ?"

अथास—"तुम्हारा बिचार सत्य है। मेरे भी बिचार से एक लापता रमणी के अनुसंधान करने की अपेक्षा, किसी नवीन रमणी को प्रेमिका बनाने का प्रयत्न स्तुत्य है।"

यह कह कर अथास ने एक भेद-भरी दृष्टि से आर्तगान को देखा। आर्तगान ने अथास के व्यंग्य को समझकर कहा—"तुम्हारा विचार ग़लत है। मैं वास्तव में कांसटेंस को हृदय से प्यार करता हूँ। यदि मुझे ज़रा भी पता मिल जाय कि वह अमुक स्थान में है, तो मैं जान पर खेलकर शत्रुओं के पंजे से उसे छुड़ा लाऊँ।"

अथास ने मुस्कराते हुए कहा—"ख़ैर ! तब तक इस नवीन चिड़िया से दिल बहलाओ।"

आर्तगान भी हँस पड़ा। कुछ क्षण भर बाद उसने कहा—"अच्छा चलो, तब तक सेंट-जर्मेन तक घूम आवें।"

अथास जो कि अभी सुन चुका था कि ग्लैडी वहीं गई है, यह

सुनकर मुस्कराया और कहा—"अवश्य! दिल बहलाने का स्थान तो वही है?"

इसी बीच में प्लेंचेट दो घोड़े तैयार करके ले आया था। दोनों उस पर सवार होकर, सेंट-जर्मेन की ओर चल दिये। वहाँ पहुँचकर आर्तगान की दृष्टि एक मनुष्य पर पड़ी; जो एक गली के निकट एक विशाल स्वच्छ प्रासाद के बाहर चबूतरे पर टहल रहा था। उस ओर कुछ अंधकार पड़ता था इसलिये आर्तगान उसकी आकृति को स्पष्ट न देख सका; परंतु प्लेंचेट पैदल चल रहा था, उसने कुछ निकट जाकर उसको अच्छी प्रकार देख लिया और आर्तगान के निकट आकर कहा कि वह व्यक्ति डी० वार्डीस का सेवक ल्यूविन है।

आर्त०—"ओह! अब मैं पहचान गया; परंतु क्या यह हम लोगों को पहचान लेगा?"

प्लेंचेट—"नहीं! उसको हमारी स्पष्ट आकृति का ध्यान न होगा।"

आर्त०—"अच्छा, तब जाकर किसी ढंग से यह मालूम करो कि इसका स्वामी डी० वार्डीस अभी जीवित है या नहीं?"

प्लेंचेट ल्यूविन की ओर चला गया और ये दोनों व्यक्ति एक गली की आड़ में होकर, इन दोनों के बीच की बातचीत सुनने लगे। थोड़ी देर में आर्तगान ने किसी गाड़ी के आने का शब्द सुना। आर्तगान को संदेह हुआ कि यह गाड़ी ग्लैडी की है। उसका संदेह सच निकला। गाड़ी प्रासाद के निकट आकर रुक गई। आर्तगान ने स्पष्ट-रूप से देखा कि ग्लैडी उसमें बैठी थी। उसके साथ नवयुवती सुंदरी दासी भी थी। ग्लैडी ने कुछ क्षण तक इस दासी से गाड़ी में बैठे-ही-बैठे बातचीत की। थोड़ी देर में वह दासी गाड़ी से उतर कर प्रासाद की ओर चली। इसी बीच में एक और घटना हो गई। प्रासाद के अंदर से किसी ने ल्यूविन को आवाज़ दी। ल्यूविन शीघ्र ही घर में चला गया। अब प्लेंचेट अकेला रह गया। वह चबूतरे पर खड़ा इधर-

उधर नज़र फेंककर, अपने मालिक को ढूँढ़ रहा था कि ठीक इसी समय लेडी की दासी प्रासाद के निकट आ गई और अँधेरे में उसको ल्यूविन समझकर एक पत्र देकर कहा—"अपने स्वामी को दे देना" और उत्तर की बिना प्रतीक्षा किये ही उलटे पैरों लौट गई। प्लेंचेट को अत्यंत आश्चर्य हुआ। वह क्षण भर चकित-सा रह गया। उसको कुछ पूछने का भी अवसर न मिला; परंतु फिर यह सोचकर कि सम्भवतः यह पत्र मेरे मालिक के ही लिये किसी ने भिजवाया हो। शीघ्र ही आज्ञाकारी सेवक की भाँति वहाँ से हट गया और ढूँढ़ता हुआ आर्तगान के पास आया और चिट्ठी देकर कहा—"एक सुंदर दासी ने यह पत्र आपके लिये दिया है।" आर्तगान को भी अत्यंत आश्चर्य हुआ। उसने पत्र खोलकर पढ़ा। यह लिखा था—

"एक स्त्री जो आपको स्नेह की दृष्टि से देखती है, आपसे यह पूछने का साहस करती है कि आप उस जंगल में चलने के लिये किस दिन तैयार मिलेंगे? कल फ़ील्ड होटल में एक सेवक चितकबरी पोशाक में इस पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा करेगा।"

पत्र पढ़कर आर्तगान ने मुस्कराकर कहा—"आह! लेडी डी० वार्डीस से प्रेम करती है।"

प्लेंचेट ने कहा—"ल्यूविन के द्वारा मुझे मालूम हुआ है कि डी० वार्डीस अब भला-चंगा हो गया है और अभी तक जीवित है।"

आर्तगान प्लेंचेट की इस सेवा से बहुत प्रसन्न हुआ। इसी बीच में एक अश्वारोही गाड़ी के निकट आ गया था और खड़ा हुआ लेडी से बातचीत कर रहा था। आर्तगान की दृष्टि उस पर पड़ी। दोनों अँगरेज़ी भाषा में बातचीत कर रहे थे। आर्तगान अँगरेज़ी से अनभिज्ञ था। अतः वह यह तो न समझ सका कि दोनों में क्या बातें हो रही हैं? परंतु एक दूसरे के ढंग से यह जान गया कि लेडी बहुत क्रुद्ध है और बात-बातपर झुँझला जाती है। परंतु अश्वारोही इसके विपरीत

हँस रहा है, जिससे उसके क्रोध का पारा और भी बढ़ जाता है। जब आर्तगान ने यह देखा कि ग्लैडी अश्वारोही के व्यवहार से अत्यंत खिन्न है और किसी प्रकार उससे प्राण बचाकर भाग जाना चाहती है तो वह अपनी अद्भुत प्रकृति के अनुसार आगे बढ़कर, ग्लैडी के निकट आया और अत्यंत विचित्र स्वर में समवेदना प्रकट करते हुए कहा—'श्रीमती! क्या मैं अपनी सेवायें आपके लिये प्रस्तुत कर सकता हूँ? मुझे मालूम होता है कि इस अश्वारोही ने आपको अकारण रुष्ट करके आपके हृदय को कष्ट पहुँचाया है। यदि आपका इशारा मिले तो मैं क्षण-मात्र में इस दुष्ट को काफ़ी दंड दे दूँ।"

ग्लैडी ने घूमकर देखा और अत्यंत आश्चर्य में होकर मधुर फ्रेंच भाषा में कहा—"महाशय! मैं आपके इन सहानुभूति-पूर्ण वचनों के लिये आपको अवश्य धन्यवाद देती; यदि यह अश्वारोही मेरा भाई न होता?"

आर्तगान ने झेंपकर कहा—"ओह! मैं इस धृष्टता के लिये क्षमा-प्रार्थी हूँ। आप यह जानती ही हैं कि मैं इस बात से पूर्णतः अनभिज्ञ था?"

इसी समय उस अश्वारोही ने चिल्लाकर कहा—"यह मूर्ख क्या बक रहा है? अपनी राह-राह क्यों नहीं जाता?"

'मूर्ख' शब्द ने आर्तगान के बदन में आग लगा दी। उसने क्रोध में भर कर कहा—"तुझ मूर्ख को यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि मैं यहाँ क्यों डटा हुआ हूँ?"

झगड़े की आशंका करके ग्लैडी ने अपनी गाड़ी तेज़ी से हाँक दी। अब गली में आर्तगान और ग्लैडी के भाई भर रह गये। चलती-बार आर्तगान की दृष्टि सहसा ग्लैडी की सुंदरी दासी पर पड़ गई। वह बड़ी प्रेम-भरी दृष्टि से आर्तगान को देख रही थी। दोनों की आँखें मिलते ही सुंदरी मुस्कराई। जब गाड़ी चल दी तो अश्वारोही भी

लपक कर उसमें सवार होने के लिये बढ़ा; परंतु आर्तगान ने आगे बढ़कर रोक लिया। निकट आने पर देखा कि यह वही व्यक्ति था जिसने अर्मीस होटल में उसके और अथास के, जुए में कौशल करके घोड़े हर लिये थे। अब तो आर्तगान का क्रोध और भी बढ़ गया। बिना दंड दिये उसको योंही छोड़ देना उसके लिये असह्य हो गया।

आर्तगान को इस प्रकार युद्ध पर तुला हुआ देखकर उसने कहा—"तुम मुझसे भी अधिक मूर्ख मालूम होते हो, जो अकारण झगड़ा कर रहे हो?"

आर्त०—"यह जुए का दाँव नहीं है। 'मूर्ख' कहनेवाले व्यक्ति में तलवार चलाने का भी कुछ कौशल है या नहीं? आज मुझे यही देखना है।"

अश्वारोही—"ओह! जुए की हार ने दिल में इतनी चोट पहुँचाई। यह याद रखना कि तलवार में मैं उससे बढ़ा हुआ हूँ; परंतु इस समय मेरे पास तलवार नहीं है?"

आर्त०— कुछ परवा नहीं। मेरे पास दो हैं।"

अश्वा०—"वे मेरे लिये बेकार हैं। मैं अपने ही शस्त्र से सदा लड़ता हूँ।"

आर्त०—"अच्छा! तो छैः बजे लक्समवर्ग के निकट तैयार होकर आना।"

अश्वा०—मंजूर; परंतु हम चार आवेंगे।"

आर्त०—"तो इधर भी चार होंगे।"

इतना कहकर दोनों ने अपना-अपना मार्ग पकड़ा।

अथास अपने कमरे में आराम कर रहा था। आर्तगान ने कुल घटना सविस्तार कह सुनाई। केवल डी० वार्डीस के पत्र का ज़िक्र नहीं किया। अथास युद्ध की बात सुनकर बड़ा प्रसन्न हुआ। इधर अर्से से इतनी अप्रिय शांति बनी हुई थी कि वह युद्ध के लिये लालायित हो

रहा था। शीघ्र ही नौकर भेजकर, अन्य मित्रों को बुलवाया गया। उनसे सब कथा कही गई। अर्मस और पार्थ भी युद्ध की बात सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुए। शीघ्र ही यह मित्र-मंडली युद्ध के लिये सुसज्जित होने की तैयारी करने लगी। अब सबको एक-एक मिनट की देरी भार-सी मालूम होने लगी। अंत में वह समय आ ही गया। चारों मित्र अपने-अपने घोड़ों पर सवार होकर नौकरों के साथ लक्समबर्ग आ पहुँचे।

प्रशस्त बन के एक भाग में द्वंद युद्ध निश्चित हुआ था। वहाँ पहुँचकर इस मित्र-मंडली ने देखा कि कुछ लोग घोड़ों पर सवार उन्हीं की ओर आ रहे थे। ये ही प्रतिस्पर्धी थे। निश्चित स्थान पर जब यह लोग आगये तो द्वंद-युद्ध के नियम के अनुसार दोनों दलों के व्यक्तियों ने अपना-अपना परिचय दिया। अथास इत्यादि के नाम सुनकर लार्ड डी० विंटर ने जिसको ग्लैडी ने अपना भाई बतलाया था, आगे बढ़कर कहा—"महशयो! क्षमा कीजिये। हम गड़रियों के-से नामों के व्यक्तियों के साथ लड़ने के लिये तैयार नहीं है। इसमें हमारे गौरव की हानि होती है। हम यह जानना चाहते है कि वास्तव में आप लोग कौन हैं ?"

अथास ने उत्तर दिया—"परंतु जुआ खेलने में तो आपको इस परिचय की आवश्यकता नहीं पड़ी थी। यह सच है कि हमारे ये सब नक़ली नाम हैं; परंतु इन्हीं नामों से आपने हम लोगों से हमारे घोड़े जीते थे।"

लार्ड डी० विंटर—"परंतु उस समय तो धन की बाज़ी थी; अब तो कुलीन रक्त दाँव पर है। जुआ किसी के साथ भी खेला जा सकता है; परंतु द्वंद-युद्ध बराबरवालों ही से होता है।"

अथास निरुत्तर हो गया। तब उसने शत्रु-दल के एक व्यक्ति से जिससे वह द्वंद-युद्ध करनेवाला था, अलग लेजाकर चुपके से अपना असली नाम बतलाया।

पार्थ और अर्मस ने भी अपने-अपने प्रतिस्पर्धियों से इसी प्रकार अपना-अपना परिचय दिया। आर्तगान को इसकी आवश्यकता ही न थी।

पार्थ अर्मस, अथास ने अपने-अपने प्रतिस्पर्धियो से प्रकट में कहा कि अब स्थिति ऐसी आ पड़ी है कि अपने परिचय को गुप्त रखने के लिये हम लोगों को अपने शत्रुओं को मार डालना पड़ेगा। उन लोगों ने इसका उत्तर तलवारों के प्रहार द्वारा दिया। शीघ्र ही आठ तलवारें संध्या के अंधकार में चमक उठीं। द्वंद युद्ध ने बड़ा भीषण रूप धारण कर लिया। शांत वायु मंडल में रक्त-रंजित भयंकरता व्याप्त हो गई। प्रतिस्पर्धी कुछ निर्बल तथा नये खिलाड़ी न थे। वे अत्यंत कौशल से प्रहार को बचाकर बहुत तुला हुआ प्रति प्रहार करते थे; परंतु हमारे मँजे हुए सैनिकों को बहुत अर्से से युद्ध का अवसर न मिला था। वे प्रारंभ ही में अपने शत्रुओं को निरुत्साहित करना नहीं चाहते थे; क्योंकि ऐसी दशा में उनकी युद्ध-प्रवृत्ति शांत न होती। अत: थोड़ी देर तक उनको संग्राम-क्रीड़ा में व्यस्त रखकर, उनपर भूखे शेर की भाँति टूट पड़े। अथास ने एक ही प्रहार में अपने प्रतिद्वंदी का काम तमाम कर दिया। पार्थ का प्रतिद्वंदी युद्ध से भाग खड़ा हुआ। अर्मस का शत्रु अपने घोड़े से गिर चुका था और पृथ्वी पर पड़ा हुआ, अंतिम साँसें ले रहा था। आर्तगान लार्ड डी० विंटर की छाती पर चढ़ा बैठा था और चाहता था कि शिरच्छेद करके विश्रांति ले; परंतु कुछ सोचकर कहा—"लार्ड! तुमको अपने पंजे में पूरी तरह पाकर भी मैं तुम्हारी बहन को निभ्रातृ नहीं करना चाहता। जाओ! मैं तुमको प्राण-दान देता हूँ।" आर्तगान यह कहकर उठ खड़ा हुआ। लार्ड डी० विंटर अपने शत्रु की सहृदयता तथा उच्च विचारों पर मुग्ध हो गया। उसने कोटिशः धन्यवाद दिया और कहा—"मैं चिर-कृतज्ञ रहूँगा। यह जीवन आज से आप ही का है।" उसने

आर्तगान को अपने घर पर आने के लिये निमंत्रित किया और कहा कि मेरी बहन आपसे मिलकर अत्यंत प्रसन्न होगी। आर्तगान इस प्रार्थना को अस्वीकार न कर सका। वह ग्लैडी से घनिष्ठता बढ़ाना चाहता था। इसका कारण यह नहीं था कि ग्लैडी पर वह आसक्त था। यद्यपि ग्लैडी अनुपम सुंदरी थी और उसके सौंदर्य से आर्तगान का हृदय बिना प्रभावित हुए न बच सका था, तथापि उसका हृदय प्रेमाकर्षण के स्निग्ध भावों से शून्य था। उसकी दृष्टि में ग्लैडी इतनी रहस्य-पूर्ण रमणी थी कि वह उसका वास्तविक परिचय हस्तगत करने को उत्सुक था। वह जानता था कि ग्लैडी का संबंध धर्माचार्य से है। अतः उसके हृदय में बार-बार यह संदेह उठता था कि यह उसकी गुप्तचरी है। म्यांग के होटल में जिस व्यक्ति के साथ यह थी वह धर्माचार्य का प्रमुख जासूस है। डोवर और कैले भी जब वह गई थी तब धर्माचार्य हो के किसी कार्य को संपादन करके इंगलैंड से वापस आ रही थी। यह सब बातें आर्तगान के संदेह को पुष्ट करती थीं। इन सब बातों के अतिरिक्त आर्तगान के हृदय में एक और विशेष विचार उठ रहा था। वह सोचता था कि ग्लैडी का संबंध कांसटेंस वाली रहस्यमयी घटना से अवश्य है। यह विचार उसको ग्लैडी से घनिष्ठता बढ़ाने के लिये और भी अधिक प्रेरित करता था। इसीलिये वह लार्ड डी० विंटर की प्रार्थना को टाल न सका।

चारों मित्र अपने-अपने निवास-स्थान पर वापस आये। लार्ड डी० विंटर ने अपने मृत साथियों के शवों को यथा-स्थान पहुँचा दिया।

रात्रि को, नौ बजे के लगभग लार्ड डी विंटर के साथ आर्तगान उसके निवास-स्थान पर गया। लार्ड का प्रासाद अत्यंत नेत्र-रंजक ढंग से सुंदर अँगरेज़ी वस्तुओं से सजा हुआ था। ग्लैडी से आर्तगान का परिचय कराते हुए लार्ड ने कहा—"इस युवक-सैनिक ने अपनी विजय

का लाभ न जानकर, मुझे प्राण-दान दिया है। क्या इससे अधिक उच्च कुलीन विचार अन्यत्र मिल सकते हैं? मेरे प्रति यदि कुछ भी स्नेह का भाव है तो आप भी इनको धन्यवाद दीजिए।" आर्तगान की तीक्ष्ण दृष्टि से यह बात छिपी न रह सकी कि अपने भाई की यह बात सुनकर, ग्लैडी के माथे पर बल पड़ गये थे, उसकी भौहें सिकुड़ गई थीं और एक विचित्र विरक्ति-सूचक खिन्नता उसके चेहरे पर दिखाई दी थी। परंतु प्रकट में ग्लैडी ने मुस्करा कर आर्तगान से अत्यंत उत्साहित-सी होकर हाथ मिलाया और अपने भाई के प्राण-दान पर असीम कृतज्ञता प्रकट की। लार्ड की दृष्टि ग्लैडी के पूर्व-भाव पर न पड़ सकी थी। अतः उसने अत्यंत उत्साह से द्वंद-युद्ध संबंधी प्रत्येक घटना सविस्तार कही। ग्लैडी अपने हार्दिक विरक्ति के भावों को छिपाने में बड़ी कठिनता अनुभव कर रही थी। उसने कोई विशेष रुचि प्रदर्शित नहीं की।

शीघ्र ही मेज़ पर भोजन के सामान सजाये गये। तीनों व्यक्ति खाने बैठे। आर्तगान ने इतनी नीरसता के साथ कभी भोजन नहीं किया था। थोड़ी ही देर में ग्लैडी की नवयुवती दासी ने कमरे में प्रवेश किया और लार्ड से अँगरेज़ी में कुछ कहा। लार्ड आर्तगान से क्षमा माँगकर किसी कार्यवश बाहर चला गया।

आर्तगान ने देखा कि अब ग्लैडी के चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी। दोनों में उत्साह-पूर्वक वार्तालाप होने लगा। ग्लैडी ने अपना परिचय बतलाते हुए कहा कि लार्ड डी विंटर मेरे पति के भाई हैं। मेरा पति मुझसे केवल एक पुत्र छोड़कर मर गया है। लार्ड डी विंटर निस्संतान है। उसकी कुल संपत्ति का उत्तराधिकारी उसका यही पुत्र होगा। ग्लैडी की बातों से यह स्पष्ट झलकता था कि वह किसी गुप्त रहस्य को छिपाने का प्रयत्न कर रही है। थोड़ी देर तक बातें करने के बाद आर्तगात विदा हुआ।

मार्ग में ग्लैडी की दासी किटी मिली। उसने हँसकर आर्तगान पर भेद-पूर्ण प्रेम-दृष्टि डालते हुए अत्यंत विनम्र रूप से अभिनंदन किया। आर्तगान का हृदय इस दृष्टि के भीतर के छिपे हुए भाव से अप्रभावित न रह सका।

२७

दूसरे दिन आर्तगान का स्वागत ग्लैडी ने और भी अधिक उत्साह के साथ किया। इस दिन लार्ड डी विंटर घर में उपस्थित न थे। ग्लैडी बहुत प्रसन्न-वदन दिखलाई देती थी। उसने बहुत घुल घुलकर बातें की। वह आर्तगान के घर-द्वार और उसके मित्रों के बारे में बड़ी देर तक बातें करती रही। उसने पूछा कि आपने राजा के स्थान में धर्माचार्य की नौकरी क्यों नहीं स्वीकार की ? आर्तगान अत्यंत चतुर था। उसने ग्लैडी के अभिप्राय को समझकर धर्माचार्य की बहुत प्रशंसा की और तब कहा कि मैं यदि त्रिवली के स्थान में कैवाय को जानता होता तो अवश्य ही धर्माचार्य का सेवक हो गया होता; परंतु समय-चक्र ने मुझे इस सौभाग्य से वंचित रक्खा है। इस उत्तर को सुनकर ग्लैडी ने बिना किसी कारण के ही वार्तालाप का विषय बदल दिया। उसका उत्तर उसे अप्रिय लगा था, यह बात आर्तगान से छिपी न रह सकी। ग्लैडी ने तब पूछा कि क्या आपको कभी इंगलेंड जाने का अवसर आया है ? आर्तगान ने शीघ्र ही उत्तर दिया कि हाँ मैं त्रिवली की आज्ञा से एक-बार इंगलैंड अवश्य गया हूँ। ग्लैडी ने इसपर दो-तीन बार अपने ओठों को दबाया। वह समझ गई

उसको एक अत्यंत चतुर मनुष्य से सामना पड़ा है, जो किसी प्रकार भी अपने भेद को प्रकट नहीं कर सकता।

शाम के वक्त आर्तगान लौट आया। इस बार भी जाते समय उसको सुंदरी किटी द्वार पर खड़ी मिली। जब आर्तगान उधर से जाने लगा तो उसने एक अत्यंत स्निग्ध दृष्टि से उसकी ओर देखा और मुस्कराई। आर्तगान भी मुस्कराकर उसकी ओर देखता हुआ चला गया।

इस भाँति आर्तगान प्रति दिन आने लगा और दिन प्रति दिन ग्लैडी के साथ उसकी घनिष्ठता बढ़ती गई। ग्लैडी भी उसके साथ प्रेम-व्यवहार करती थी और यदि उसके आने में क्षण भर की भी देर हो जाती थी तो घंटों शिकायतों का तार बँध जाता था। आर्तगान का हृदय भी उसकी विमोहक दृष्टि से प्रभावित-सा हो गया था; परंतु उसके हृदय पर सबसे अधिक असर किटी का पड़ा था। किटी उसकी दृष्टि में एक अनुपम रूपवती सरलता की प्रतिमा थी। किटी की दृष्टि में एक विचित्र तीक्ष्णता; परंतु साथ ही अनोखी शीतलता थी। उसका स्वर अत्यंत मधुर था। अत्यंत रूपवती होने पर भी उसको अपने रूप का गर्व न था। भोलापन और हृदय की स्वच्छता उसके चेहरे से स्पष्ट झलकती थी। आर्तगान उससे धीरे-धीरे प्रेम करने लगा था।

एक दिन आर्तगान जब किटी के कमरे की ओर से होकर ग्लैडी के पास जा रहा था, तब किटी ने आकर आर्तगान के कंधे पर अत्यंत कोमलता से हाथ रख दिया। आर्तगान को आश्चर्य हुआ। उसने विचार किया कि सम्भवतः यह अपनी स्वामिनी का कोई संदेश कहने वाली है। वह किटी की मधुर शोभा को निहारने लगा। किटी ने मुस्कराते हुए कहा—"महाशय! मैं आपसे कुछ शब्द निवेदन करना चाहती हूँ।"

आर्तंगान किटी के मधुर स्वर पर मुग्ध होगया। उसने कहा—"कहो! कहो! मैं बड़े ध्यान से सुनूँगा।"

किटी—"परंतु यहाँ नहीं! मैं जो कुछ कहना चाहती हूँ, वह एक लंबी बात है और अत्यंत गोपनीय है। अतः आप मेरे पीछे-पीछे आने का कष्ट करें।"

आर्तंगान बिना कुछ उत्तर दिये उसके पीछे-पीछे गया। किटी ने अपने कमरे में पहुँचकर कहा—"यहाँ एकांत में बातें हो सकती हैं। यह कमरा मेरा है। इसी से मिला हुआ कमरा मेरी स्वामिनी का है; परंतु कोई भय की बात नहीं है। वह हमारी बातों को सुन नहीं सकतीं।"

आर्तंगान ने कमरे में चारों ओर नज़र डाली। कमरा बहुत ही स्वच्छ और सुंदर था। मेज़ पर बहुत-से रंग-बिरंगे सुगंधित पुष्प शोभा दे रहे थे।

किटी ने कहा—"आप मेरी स्वामिनी से अत्यंत प्रेम करते हैं?"

आर्तंगान—"ओह! मैं उसके लिये पागल हूँ।"

किटी का चेहरा मलीन पड़ गया। उसने एक साँस लेकर कहा—"परंतु, महाशय! यह आपके लिये अत्यंत अहितकर है।"

आर्तंगान ने आश्चर्य में होकर पूछा—"अहितकर किस प्रकार है?"

किटी—"क्योंकि मेरी स्वामिनी आपसे बिल्कुल प्रेम नहीं करतीं।"

आर्तंगान ने आँखें फाड़कर पूछा—"तब क्या यही संदेश उसने तुम्हारे द्वारा कहलवाया है?"

किटी—"नहीं! यह आपके हित की बात है, इसलिये मैं यह स्वयं आपसे कह रही हूँ।"

आर्तगान—"मैं इस विचार के लिये कृतज्ञ हूँ; परंतु प्रिय किटी! यह एक असंभावना है।"

किटी—"असंभावना! ग्लैडी-सी कुटिलता-प्रिय स्त्री के लिये यह असंभावना नहीं है। क्या आप मेरी बात पर अविश्वास करते हैं? अच्छा! ज़रा इसको पढ़िये।"

यह कहकर किटी ने अपने वक्षस्थल से एक पत्र निकालकर आर्तगान को दिया। आर्तगान ने देखा पत्र पर डी० वार्डीस का पता लिखा हुआ था। आर्तगान ने शीघ्र ही पत्र को खोल डाला यद्यपि किटी ने चिल्लाकर पत्र खोलने को बहुत मना किया। पत्र में यह लिखा था—

"तुमने मेरे पहले पत्र का कोई उत्तर नहीं दिया। क्या कुछ अस्वस्थ हो या अपने पुराने प्रेम-व्यवहारों को भूल बैठे। प्यारे! अब भी अवसर है, चले आओ और केवल एक बार आकर हृदय शीतल कर जाओ।"

पत्र पढ़कर आर्तगान का चेहरा उतर गया। ग्लैडी के प्रेम की उसकी सारी डींगे हवा हो गईं। वह अत्यंत लज्जित हुआ।

किटी का चेहरा चमक उठा। उसने आर्तगान के हाथ को अपने हाथ में लेकर करुण स्वर में कहा—"आर्तगान! मैं तुम्हारे साथ सहानुभूति प्रकट करती हूँ। मैं जानती हूँ कि प्रेम करने में क्या होता है?"

आर्तगान ने किटी पर प्रेम-दृष्टि फेंकते हुए कहा—"तब तुम यह समझती हो कि प्रेम-व्यथा क्या वस्तु है और प्रेम-भग्न-हृदय पर क्या बीतती है?"

किटी ने गहरी साँस भरकर कहा—"आह! यह मैं भली भाँति जानती हूँ।"

आर्त०—"तब मुझे आशा है कि सहानुभूति करने के स्थान में तुम मुझे उससे बदला लेने में सहायता दोगी।"

किटी—"परंतु उससे आप किस प्रकार का बदला लेना चाहते हैं?"

गई हूँ। उसके सामने मुझे झूठा बनना पड़ा है। इसी का मुझे इस युवक से बदला लेना है।"

"मेरा विश्वास था कि आप उससे प्रेम करती हैं ?"

"प्रेम ! मैं उससे प्रेम करूँगी ! मैं घृणा करती हूँ। मूर्ख ने लार्ड विंटर को प्राण-दान दिया। आह ! यदि वह उसको मार डालता, तो मैं आज ही उसकी सारी सम्पत्ति की अधिकारिणी बन जाती।"

"परंतु आपका पुत्र तो उसका उत्तराधिकारी नियत हो चुका है। उसके मरने के बाद सारी सम्पत्ति आपके पुत्र ही की तो होगी।"

किटी की बात को अनसुनी करके म्लैडी ने पूर्व-स्वर में ही कहा— "इन्हीं सब बातों के लिये मैं अब तक न मालूम कबकी उससे बदला ले चुकी होती; यदि धर्माचार्य ने ऐसा करने के लिये निषेध न किया होता। न मालूम क्यों धर्माचार्य ने उससे मृदुल व्यवहार करने के लिये कहा है !"

"परंतु क्या आपने उस रमणी से बदला नहीं चुका लिया, जिसपर वह इतना अधिक अनुरक्त है ?"

"आह ! वह बोनैसी की पत्नी ! क्या यह युवक उसको अभी तक नहीं भूला ? आह ! वह कितना अच्छा प्रतिकार था !"

आर्तगान का कलेजा दहल उठा। उसके माथे पर पसीना आगया। उसने विचारा कि यह स्त्री राक्षसी है ! इसके दाँत कितने ज़हरीले हैं !

म्लैडी ने कहा—"अच्छा ! अब तुम जाओ और कल उस पत्र का उत्तर किसी-न-किसी उपाय से अवश्य लाओ।"

"डी० वार्डीस के पास से ?"

"हाँ ! उसी से।"

किटी अपने कमरे में चली आई। म्लैडी ने भीतर से दर्वाज़ा बंद कर लिया। आर्तगान भी अपने गुप्त-स्थान से बाहर आया। किटी ने देखते ही कहा—"ऐं ! तुम्हारा चेहरा इतना पीला क्यों है ?"

आर्तगान के मुँह से सहसा निकल पड़ा—"ओफ़ ! कितनी भयानक स्त्री है ?"

किटी—"यह क्या कहते हो ! कहीं वह सुन न ले ?"

आर्तगान कुछ देर तक वहाँ और रहा। किटी से कांसटेंस के विषय में बहुत पूछताछ की ; परंतु वह उसके विषय में वास्तव में कुछ और न जानती थी। ग्लैडी किटी को अपने गुप्त-भेद में कभी सम्मिलित न करती थी।

दूसरे दिन जब आर्तगान ग्लैडी के पास गया, तो उसने देखा कि ग्लैडी का चेहरा उतरा हुआ था। वह समझ गया कि डी० वार्डीस का कोई उत्तर न आना ही इसका कारण है। परंतु ग्लैडी ने आर्तगान से बहुत प्रसन्नता के साथ बातचीत की और अपने दुःख के भाव को उसपर किसी प्रकार भी प्रकट न होने दिया। आज आर्तगान ग्लैडी के पास से जल्दी ही चला आया और किटी से भेंट की। किटी ने कहा कि ग्लैडी ने डी० वार्डीस के नाम एक और पत्र दिया है। आर्तगान ने वह पत्र किटी से ले लिया। पत्र में लिखा था—

"अब तीसरी बार मैं तुमको यह लिख रही हूँ कि मैं तुमसे प्रेम करती हूँ। यह ध्यान रखना कि चौथी बार मैं तुमको पत्र द्वारा यह सूचित नहीं करूँगी कि मैं तुमसे घृणा करती हूँ। यदि तुमको अपने कार्य पर पश्चाताप हो, तो यह लड़की जो पत्र ले जा रही है, तुमको समझा देगी कि एक भद्र-पुरुष को इस समय क्या करना चाहिये ?"

पत्र पढ़कर आर्तगान कुछ क्षण कुछ सोचता रहा। तब उसने क़लम और दावात मँगाकर एक पत्र यों लिखा—

"अभी तक मैं यह विश्वास न कर सका था कि तुम्हारे दो पत्र मेरे ही लिये थे। इसका मुझे कितना खेद है, यह मैं लिख नहीं सकता। इसके अतिरिक्त मैं इतना सख़्त बीमार था कि तुम्हारे पत्रों का उत्तर न दे सका ; परंतु अब मुझे तुम्हारे विशेष अनुग्रह पर पूरा

विश्वास है; क्योंकि तुम्हारे पत्रों ही ने नहीं—तुम्हारी परिचारिका ने भी मुझे भाग्यशाली प्रमाणित कर दिया है। उसको भाग्य-वशात् मुझे इसकी शिक्षा देने का अवसर न मिला कि मुझे भद्र-पुरुष की भाँति कैसे क्षमा माँगना चाहिए। मैं स्वयं आकर यह कार्य सम्पादन करूँगा। ११ बजे रात्रि को मेरी प्रतीक्षा करना।"

भाग्यशाली—

डी० वार्डीस।

आर्तगान ने किटी को पत्र देकर कहा कि यह ले जाकर तुम अपनी स्वामिनी को दे देना। किटी पत्र पढ़कर अवाक् रह गई। उसकी कांति मलीन पड़ गई। उसको संदेह हुआ कि आर्तगान अब भी ग्लैडी को चाहता है।

आर्तगान ने किटी के अभिप्राय को समझकर कहा—"प्यारी किटी! डरो नहीं! यदि मैं यह न करूँ, तो सारा रहस्य खुल जावेगा। वह समझ जावेगी कि तुमने डी० वार्डीस नाम के सब पत्र मुझी को दे दिये हैं। तब तुम्हारी क्या दशा होगी, वह कितनी भीषण स्त्री है? यह तुम जानती हो। इस पत्र का परिणाम क्या होगा और मैं किस प्रकार उससे भेंट करूँगा? यह तुमको कल सब मालूम हो जायगा।"

किटी को कुछ सांत्वना मिली। उसने अश्रु-पूर्ण नेत्रों से कहा—"मैं यह कुछ नहीं जानती। मुझे तुम्हारे प्रेम पर पूर्ण विश्वास है। तुम्हारी आज्ञा से मैं अपने प्राण तक न्योछावर कर सकती हूँ।"

आर्तगान का हृदय द्रवित हो गया, उसने किटी को आलिंगनपाश में आबद्ध करके उसके अधरों पर अपना मुख रख दिया। किटी का शिर आर्तगान की छाती पर लटक आया था।

२८

रा

ज-सेना को पेरिस से युद्ध-स्थल के लिये रवाना होने में, अब केवल पाँच दिन शेष रह गये थे। आर्तगान के मित्र तो यात्रा की तैयारी में व्यस्त थे; परंतु वह एक दूसरी ही धुन में मस्त था।

कांसटेंस के अनुसंधान के प्रयत्न में, उसके सामने सहसा ग्लैडी आ पड़ी थी। यह रमणी उसको इतनी विचित्र और रहस्यमयी प्रतीत हुई कि उसके हृदय में उसके संबंध में कुछ अधिक जानने के लिये एक उत्सुकता-पूर्ण कौतूहल-प्रवृत्ति उत्पन्न हो गई। इसीसे प्रेरित होकर वह उसके घर इतनी अधिकता से आने-जाने लगा था। इस निरंतर भेंट और ग्लैडी के प्रेममय व्यवहार ने आर्तगान के हृदय में स्थित कांसटेंस के प्रति प्रेम-भाव की तीक्ष्णता को बहुत कुछ कम-सा कर दिया। ग्लैडी अनिंद्य सुंदरी रमणी थी, उसके नेत्रों में पुरुषों को बेचैन कर देने की एक विचित्र शक्ति थी। आर्तगान के नेत्रों में कभी-कभी उसका रूप इतना सुंदर जँचता था कि वह कुछ क्षण के लिये, कांसटेंस को भूल-सा जाता था। ग्लैडी के प्रति दिन के आवेशमय स्वागत, प्रतीक्षा, मान आदिक प्रेम-चिह्न ने उसके भी हृदय में आशा और विचित्र लालसा के भाव उत्पन्न कर दिये। उसके

हृदय को पहले प्रेम की जो अभिलाषा अलक्षित रूप से प्रभावित कर रही थी, उसीने अब स्पष्ट और सुनिश्चित रूप धारण कर लिया। उसकी उमंगे बढ़ चलीं, उसकी आशायें वास्तविकता के रूप में परिणत होने का स्वप्न देखने लगीं। ठीक इसी समय किटी द्वारा उसका नशा भंग हो गया। छिपकर ग्लैडी के मुख से जो कुछ उसने सुना था, उसने उसकी आशा की भित्ति को संपूर्ण रीति से उखाड़कर फेंक दिया। डी० वार्डीस के जिन पत्रों को किटी द्वारा उसने हस्तगत किया था, उनके द्वारा यह जान कर कि ग्लैडी अपने प्रेम और सौंदर्य को डी० वार्डीस के चरणों में अर्पित कर चुकी है—उसके हृदय में विकट प्रतिकार की इच्छा जाग्रत हो गई। अपनी इस लालसा को चरितार्थ करने के लिये किस उपाय का अवलम्बन किया जाय? इसका संकेत डी० वार्डीस के प्रेम-पत्रों से सहसा उसको मिल गया। डी० वार्डीस के रूप में आर्तगान ग्लैडी के प्रेम पर विजय पाकर अपने हृदय की स्पर्धा तथा प्रतिकार की धधकती हुई अग्नि को बुझाने में समर्थ होगा, यह निश्चय आर्तगान ने शीघ्र ही कर लिया। इसी अभिप्राय से उसने ग्लैडी के नाम डी० वार्डीस की ओर से उत्तर लिखा था।

दूसरे दिन अपने नियत समय पर आर्तगान ग्लैडी के यहाँ पहुँचा। आज ग्लैडी अपनी सर्व-श्रेष्ठ भड़कीली पोशाक में थी। उसका सौंदर्य उन्मत्त यौवन पर आनंद की लहरें मार रहा था। मुस्कराहट अधरों की लालिमा को स्वच्छ दंतावली की शुभ्रता से बार-बार दीप्तिमान कर देती थी। आर्तगान समझ गया कि यह सब उस पत्र का प्रभाव है। ग्लैडी ने आर्तगान का कभी भी इतना स्वागत नहीं किया था। ग्लैडी की रूप-रश्मि ने आर्तगान की ईर्षा और साथ ही प्रेम-लालसा को और भी उद्दीप्त कर दिया।

इसी समय किटी शर्बत का ग्लास लेकर हाज़िर हुई। ग्लैडी ने हँसकर आर्तगान को स्वयं अपने हाथ से शर्बत दिया। आर्तगान ने

देखा कि किटी का चेहरा उतरा हुआ है। एक बार उसने ग्लैडी की ओर फिर देखा। उसने सोचा, यदि इस सौंदर्य-पूर्ण रमणी में किटी का-सा सरल हृदय होता, तो क्या ही अच्छा था? सौंदर्य और सरल पवित्रता में ईश्वर ने क्यों इतना घोर विरोध बना रक्खा है?

दस का जब घंटा बजा, तो ग्लैडी कुछ बेचैन-सी दिखलाई देने लगी। वह बार-बार घड़ी की ओर देखती थी। डी० वार्डीस के आने का समय जितना ही निकट आता जाता था, उतना ही वह आर्तगान के प्रति विरक्त और उदासीनता प्रकाशित करती जाती थी। आर्तगान इसका कारण समझ गया। ज्वलंत-हृदय की आह के साथ वह वहाँ से बिदा हुआ। उसने अपने मनमें कहा—"आह! यदि इस प्रतीक्षा का कारण कभी मैं होता?"

आर्तगान किटी के कमरे में आया। आज किटी आर्तगान की प्रतीक्षा नहीं कर रही थी। वह शोक-पूर्ण हृदय के साथ चिंतामग्न कुर्सी पर बैठी हुई सिर झुकाये, किसी उपन्यास के पढ़ने का प्रयत्न कर रही थी; परंतु आँसुओं की निरंतर झड़ी उसके प्रयत्न को बार-बार निष्फल कर देती थी। आर्तगान उसके पास आकर खड़ा हो गया। किटी ने गर्दन उठाकर ऊपर देखा—किटी के मुख को देखर आर्तगान कुछ क्षण तक अवाक् रह गया। किटी के नेत्र अश्रुओं से पूर्ण थे। उसका तेज लुप्त हो चुका था। आर्तगान के हृदय में एक विचित्र ठेस पहुँची। वह सोचने लगा कि सरल हृदया कन्या को धोखा देकर उसने कितना बड़ा अधर्म किया है। एक बार उसके हृदय में यह इच्छा उत्पन्न हुई कि ग्लैडी को पराजित करने की भयंकर अभिलाषा का परित्याग करके, वह क्यों न किटी से ही संतुष्ट रहे? किटी जैसी अबोध सौंदर्य की जीवित प्रतिमा उसको कहाँ मिलेगी? परंतु ग्लैडी का ध्यान आते ही उसकी ईर्षाग्नि फिर धधक उठी। ग्लैडी के सौंदर्य की प्रज्वलित अग्नि में किटी का शांत-प्रेम विलीन हो गया। आर्तगान ने किटी की

ठोढ़ी पकड़कर कहा—"यह अश्रुपात व्यर्थ है। क्या तुमने अभी यह नहीं जाना कि ग्लैडी को पराजित करने के लिये ही, इस कपट की रचना की गई है।" सरल बालिका आर्तगान के मधुर बचनों को सुनकर आश्वासित हो गई। उसने हँस कर आर्तगान की ओर एक बार देखा—आर्तगान ने उसको आलिंगन-पाश में आबद्ध कर लिया।

इसी समय ग्लैडी ने किटी को पुकारा—आर्तगान बग़लवाले पूर्व कमरे में छिप रहा।

डी० वार्डीस के आने का समय निकट आ गया था। ग्लैडी को एक-एक सेकिंड युग के समान बीत रहा था। वह अभी से प्रेम-मिलन के स्वर्गीय दृश्य को अपने कल्पना नेत्रों से देख रही थी। उसका हृदय वासना के तीव्र मद से उन्मत्त हो गया था। मिलन की सब तैयारियाँ करने के पश्चात्, उसने घर की कुल रोशनी नौकरों द्वारा बुझवा दी थी। इसके बाद किटी को बुलाकर वह अत्यंत उत्सुकता के साथ यह पूछने लगी कि पत्रोत्तर देते समय डी० वार्डीस के मुख पर क्या भाव झलकता था? क्या सत्य प्रेम के चिन्ह उसके व्यवहार से प्रकट होते थे, वह कैसे मिला, क्या-क्या बातें की? इन सबको अत्यंत विस्तार से वह पूँछने लगी। यह आतुरता देखकर, किटी का हृदय भीतर-ही-भीतर जल रहा था। परंतु आंतरिक भावों को अत्यंत कठिनता से छिपाकर किटी ने डी० वार्डीस की नक़ली भेंट का कुछ कल्पित वर्णन किया। ग्लैडी यदि हर्ष और आनंद की अधिकता से आं त न होती, तो वह शीघ्र ही समझ जाती कि किटी का बतलाया हुआ वर्णन कितना अस्वाभाविक था।

किटी अपने कमरे में जैसे ही वापस आई, वैसे ही आर्तगान अपने गुप्त-स्थान से बाहर आया और ग्लैडी के कमरे की ओर चला। आर्तगान ने लबादे से अपना शरीर ढक लिया था। ग्लैडी ने चौंककर किटी से पूछा कौन है?"

"मैं हूँ काम्टी डी० वार्डीस" आर्तगान ने स्वर बदलकर कहा।

ग्लैडी का हृदय धड़कने लगा। उसने काँपती हुई आवाज़ में कहा—"काउंट! काउंट! यहाँ आओ! देखो! मैं कितनी देर से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ?"

क्रोध, शोक, हर्ष और आशा ने एक साथ ही आर्तगान के हृदय को मथना प्रारंभ कर दिया। प्रतिद्वंदी के नाम से जब कभी प्रेमी अपनी प्रेमिका द्वारा आदर और सत्कार प्राप्त करता है, तब उसका हृदय विपरीत भावों का विचित्र क्रीड़ा-क्षेत्र बन जाता है। आर्तगान का हृदय विलास की आशा से प्रफुल्लित था; परंतु ईर्षा का विषैला डंक उस प्रेम-सुख में तेज़ाब का काम कर रहा था। इस समय किटी और आर्तगान के हृदय की समान दशा थी।

ग्लैडी ने अपने कंपित हाथों को आर्तगान के गले में डालते हुए धीमे स्वर में कहा—"आह! काउंट! आज मैं तुम्हारे प्रेम से कितनी सुखी हूँ। आज तुमको यह प्रतिज्ञा करनी होगी कि तुम कभी भी मुझको नहीं भूलोगे? परंतु! काउंट तुम्हारा स्वास्थ्य अब कैसा है? जिसके कारण मैं तुम्हारे पत्रोत्तरों से इतने समय तक वंचित रह सकी। ओह! तुम्हारा हृदय कितना निष्ठुर है। परंतु नहीं! नहीं! तुम मेरे प्रेम-देवता हो। अपने प्रेम का चिन्ह-स्वरूप यह मैं तुम्हारी भेंट करती हूँ। अब कभी भूल न जाना।"

यह कहकर ग्लैडी ने अपनी चमकदार हीरे की बहु-मूल्य अँगूठी आर्तगान की उँगलियों में पहना दी।

ग्लैडी के इन उद्भ्रांत शब्दों ने आर्तगान के हृदय को आनंद से विभोर कर दिया। क्षण भर के लिये वह अपने को भूलकर सचमुच डी० वार्डीस ही सा व्यवहार करने लगा। परंतु फिर उसको इस प्रवंचना का ध्यान आया। उसने एक बार सोचा कि सारा रहस्य प्रकट कर दूँ; परंतु ग्लैडी के सौंदर्योपभोग की लालसा ने उसकी ज़बान

को बंद कर दिया। प्रतिकार की इच्छा दब गई, और वह लिप्सा की गोद में, ग्लैडी के प्रेम का रसास्वादन करने लगा।

रात को एक बज गया। आर्तगान सुख-शय्या त्यागकर चलने लगा। ग्लैडी ने कल आने की प्रतिज्ञा कराकर, बड़ी कठिनता से आर्तगान को बिदा किया।

आर्तगान ने उस रात को किटी से भेंट नहीं की।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही आर्तगान अथास के पास गया और इस विचित्र घटना को आद्योपांत कह सुनाया। वह अथास से इस विषय में परामर्श लेना चाहता था।

अथास ने कुछ देर तक सोचकर कहा—"तुम्हारी प्रेमिका वास्तव में अद्भुत रमणी है; परंतु उसको धोखा देकर तुमने अपने लिये एक भीषण शत्रु पैदा कर लिया है? ऐं! यह क्या है?"

अथास की दृष्टि आर्तगान की अँगूठी पर पड़ गई थी। अँगूठी को देखकर वह चौंक पड़ा।

आर्त०—"इसमें आश्चर्य क्या है? यह अँगूठी बड़ी क़ीमती है।"

अथास—"इसको देखकर मुझे अपने घर की एक अँगूठी का ध्यान आगया; परंतु क्या इस प्रकार के दो हीरे संसार में मौजूद हैं? तुमने इसको कहाँ से ख़रीदा?"

आर्त०—"यह मेरी प्रेमिका का उपहार है।"

अथास ने उत्तेजित होकर कहा—"क्या यह ग्लैडी का उपहार है?"

आर्त०—"हाँ! कल रात्रि के परिश्रम का यह पुरस्कार मिला था! देखो! कितनी अच्छी अँगूठी है?"

यह कहकर आर्तगान ने अँगूठी उतार कर अथास के हाथ पर रख दी। अथास ने बड़े ध्यान से उसको कई-बार उलट-पुलटकर देखा। उसके चेहरे का तेज जाता रहा। अपने बायें हाथ की उँगली में उसको

पहनकर देखा। वह ठीक बैठती थी। अथास के चेहरे पर क्रोध और आंतरिक वेदना के चिन्ह लक्षित होते थे।

आर्तंगान ने पूछा—"क्या तुम इस अँगूठी को पहचानते हो?"

अथास ने हार्दिक भावों को दबाकर कहा—"मेरा विचार था कि मैं इसको पहचानता हूँ; परंतु नहीं! यह मेरी भूल है।" यह कहकर उसने अँगूठी लौटाल दी; परंतु उसकी दृष्टि निरंतर उसी पर लगी रही।

कुछ क्षण के बाद अथास ने कहा—"आर्तंगान! दया करके इस अँगूठी को मेरी दृष्टि से हटा दो। इससे मुझे एक ऐसी घटना की स्मृति जागृत हो उठती है कि मैं अपने मनपर अधिकार नहीं रख सकता। परंतु हाँ! ज़रा लाओ! मैं यह देखना भूल गया था कि इसके हीरे में एक बारीक खरोंच का चिन्ह तो नहीं है?"

अथास ने देखा कि उस हीरे में वह चिन्ह मौजूद था। वह काँप उठा। उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया।

आर्तंगान ने आश्चर्य में होकर पूछा—"परंतु तुमको यह अँगूठी कहाँ मिली थी?"

अथास—"मेरी माँ ने इसे दिया था। मेरी माँ को यह दादी से मिली थी। यह मेरे कुल की पैतृक संपत्ति है।"

आर्तं०—"तब तुमने इसे बेच दिया?"

अथास ने मार्मिक हँसी के साथ कहा—"नहीं, मैंने भी एक रात्रि में इसे उसी प्रकार प्रेम-भेंट में दे दिया, जिस प्रकार तुमको कल रात्रि में यह मिली है।" आर्तंगान चिंता-मग्न हो गया। उसको ग्लैडी और भी रहस्यमयी प्रतीत होने लगी।

अथास ने कहा—"आर्तंगान! तुम यह जानते हो कि मैं तुम्हें स्नेह की दृष्टि से देखता हूँ। मेरा यह उपदेश मानो कि इस स्त्री का संग छोड़ दो। यद्यपि मैं उसको जानता नहीं हूँ; परंतु मेरी अंतरात्मा

यह कह रही है कि यह स्त्री पापिष्ठा है, अत्यंत धूर्त है और अतीव भीषण है ?"

आर्त०—"आप ठीक कहते हैं ! मैं इसको हमेशा के लिये छोड़ दूँगा। मैं भी यह जानता हूँ कि इस स्त्री से मेरा हृदय दहल उठता है।"

अथास—"यदि यह साहस तुम में है, तो तुम्हारा अनिष्ट न हो सकेगा।"

मकान पर पहुँचकर आर्तगान ने देखा कि किटी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। म्लेडी ने यह पूछने के लिये भेजा था कि डी० वार्डीस आज रात को किस समय आवेंगे ? किटी का चेहरा सूख गया था। उसकी आँखें रोते-रोते सूज गई थीं।

आर्तगान ने यह चिट्ठी लिखकर किटी को दी और कहा—"प्यारी किटी ! अब मेरे प्रतिकार की क्रिया समाप्त हो गई। म्लैडी को शोक-संतप्त बनाकर मैं संतुष्ट हो गया हूँ।"

चिट्ठी यह थी—"मेरे लिये आज की रात किसी प्रकार की भी प्रतीक्षा न करना। मैं अपने कार्यों में इतना व्यस्त हूँ कि मुझे एक मिनट की भी छुट्टी नहीं है। अवकाश मिलने पर मैं कब आ सकूँगा ? इसकी पूर्व-सूचना मैं स्वयं भेज दूँगा।"

—डी० वार्डीस

किटी ने जब पत्र पढ़ा, तो उसके शरीर में नवीन जीवन स्पंदित होने लगा। हर्ष से वह उन्मत्त हो गई। शीघ्र ही दौड़ी गई और अत्यंत शांति तथा गंभीरता के साथ म्लैडी के हाथ में वह पत्र धर दिया।

म्लैडी पत्र पढ़कर अवाक् रह गई। उसके हृदय और मस्तिष्क को इतना धक्का पहुँचा कि वह साधारण निर्बुद्धि-सी हो गई। तब उसने कहा—"क्या यह संभव है कि कोई भद्र पुरुष ऐसा पत्र किसी स्त्री को

कभी लिखे ? आह ! वह अँगूठी········ ।" इसपर वह पछाड़ खाकर गिर पड़ी। परंतु कुछ क्षण के पश्चात् फिर उठ खड़ी हुई। इस बार उसका चेहरा कितना भीषण हो गया था, क्रोध से उसके नेत्र लाल हो गये थे, होंठ काँप रहे थे--श्वास-प्रश्वास ज़ोरों से चल रहे थे। उसने चिल्लाकर दोनों मुट्ठियाँ बाँधकर कहा—"हूँ, वह प्रवंचक ! वह दुष्ट। आओ ! इधर आओ !" परंतु उसका स्वर फिर बदल गया। वह बैठकर रोने लगी।

किटी बाहर किवाड़ों की ओट से यह सब देख-देखकर अत्यंत प्रसन्न हो रही थी। आज उसके हृदय की अग्नि शांति हो पाई थी।

२९

दूसरे दिन ग्लैडी ने अपने नौकरों को यह हुक्म दे रक्खा था कि जब आर्तगान आवे, तो फ़ौरन ही अत्यंत सम्मान-पूर्वक उसको मेरे पास ले आओ ; परंतु आर्तगान उस दिन नहीं आया। अगले दिन भी ग्लैडी ने बहुत प्रतीक्षा की ; परंतु आर्तगान नहीं आया। ग्लैडी गंभीर चिंता में डूब गई। शोक और संताप से उसका चेहरा मुर्झा गया। उसने किटी द्वारा आर्तगान के पास पत्र भिजवाया।

आर्तगान ने किटी के हाथ से पत्र लेकर खोला—उसका हृदय यह जानकर फूल उठा कि इस समय यह पत्र डी० वार्डीस के नाम न था। पत्र में यह लिखा था—

"प्रिय आर्तगान—इस प्रकार अपने मित्रों को विस्मरण कर देना, अत्यंत हृदय-हीनता है। विशेष कर उस समय जब कि आप शीघ्र ही पेरिस से बाहर जानेवाले हैं। मैं दो रोज़ से आपकी बराबर प्रतीक्षा कर रही हूँ ? क्या आज भी आप मुझे अपने दर्शनों से वंचित रखियेगा ?"

आपकी प्रेम-पात्री
ग्लैडी

पत्र पढ़कर आर्तगान ने प्रसन्न होकर कहा—"मैं इस पत्र की प्रतीक्षा कर ही रहा था। डी० वार्डीस के गौरव-नाश ने मेरे गौरव को बढ़ा दिया।"

किटी ने चिंतित होकर पूछा—"क्या आप जाइएगा?"

आर्तगान ने कहा—"मेरी प्यारी किटी। सुनो, क्या यह उचित होगा कि मैं ऐसे निमंत्रण को अस्वीकार कर दूँ। मेरे न जाने से ग्लैडी को यह संदेह हो सकता है कि डी० वार्डीस की घटना से मेरा संबंध अवश्य है। सारा रहस्य खुल जावेगा?"

किटी को यह उत्तर विष-तुल्य लगा; परंतु उत्तर इतना उचित था कि वह कुछ विरोध न कर सकी। एक गर्म साँस भरकर उसने कहा—"आर्तगान! तुम बात को कहने के ढंग में इतने कुशल हो कि मैं निरुत्तर हो जाती हूँ। परतु कहीं ऐसा न हो कि इस समय वह तुमको भी प्यार करने लगे।"

आर्तगान हँस पड़ा। किटी को आस्वासन देकर बिदा किया। दस बजे के लगभग आर्तगान ग्लैडी के मकान पहुँचा। ग्लैडी ने हँसते हुए अतीव प्रेम और आदर से आर्तगान का स्वागत किया।

ग्लैडी को देखते ही आर्तगान यह जान गया कि यह हँसी का भाव दिखावटी है। उसकी आँखें रोके अथवा अधिक जागने के कारण सूजी हुई थीं। उनमें हँसी ऐसी ही मालूम देती थी, जैसे मुर्झाये हुए कमल पर सूर्य का प्रकाश। आर्तगान ने स्वास्थ्य संबंधी कुशल पूछी।

ग्लैडी ने कहा—"स्वास्थ्य बहुत ख़राब है?"

आर्त०—"तब तो मैं समझता हूँ, मेरे आने के लिये यह कुसमय है। आपको आराम करना चाहिए।"

ग्लैडी—"नहीं! आपके कारण मेरी तबियत बहली रहेगी। आप यहाँ ज़रूर रुकिये।"

कुछ देर इधर-उधर की बातचीत होती रही। तब ग्लैडी ने कहा—"क्या कभी आपकी कोई प्रेमिका रही है ?"

आर्त०—"प्रेमिका ! मैंने तुम्हारे अतिरिक्त अन्य से कभी प्रेम किया ही नहीं। तुम्हारा प्रेम ही मेरे जीवन का आधार है। ग्लैडी की आँखें चमक उठीं। उसने भेद-भरी मुस्कराहट के साथ कहा—"तब तुम मुझे प्यार करते हो ?"

आर्त०—"क्या इसके भी कहने की मुझे आवश्यकता है ? क्या आपको इसका अनुभव नहीं होता ?"

ग्लैडी—"यह संभव है ; परंतु हृदय पर विजय प्राप्त करना सदा कठिन हुआ करता है ?"

आर्त०—"ओह ! कठिनाइयाँ मुझे कदापि भयभीत नहीं कर सकतीं ! मैं केवल असंभावना से डरता हूँ।"

ग्लैडी—"परंतु सच्चे प्रेमी के लिये असंभव कुछ भी नहीं।"

आर्तगान ने प्रसन्न होकर कहा—"तो क्या मैं इस श्रेणी में अपनी गणना करूँ ? क्या मैं इतना भाग्यशाली हो सकता हूँ ?"

"अवश्य ! परंतु इस प्रेम का कुछ प्रमाण भी देना होगा ?" ग्लैडी ने तीक्ष्ण भ्रू-क्षेप करते हुए यह कहा।

आर्तगान ने उत्साहित होकर उत्तर दिया—"केवल आज्ञा चाहिए। मैं सब बातों के लिये तैयार हूँ।"

ग्लैडी—"प्रत्येक बात के लिये ?"

आर्त०—"हाँ ! प्रत्येक बात के लिये।"

ग्लैडी ने तब कुछ गंभीर होकर कहा—"मेरा एक शत्रु है ! उसने मेरा इतना घोर अपमान किया है कि मेरे और उसके बीच में प्राण-हानि तक की बाज़ी लग गई है। मैं उसकी मृत्यु चाहती हूँ। क्या आप इसमें सहायता देंगे ?"

आर्तगान ग्लैडी के अभिप्राय को समझ गया। उसने अपने

मन में कहा—"ग्लैडी ठहरो। मेरी प्रतिकार की इच्छा अभी समाप्त नहीं हुई। तुम मेरे पंजे में आ भर जाओ, फिर मैं और तुम्हारा शत्रु दोनों परस्पर हँसेंगे।"

प्रकट में आर्तगान ने कहा—"प्रिये! मेरा जीवन मेरे प्रेम की ही भाँति तुम्हारे ही अधिकार में है।"

ग्लैडी ने तब हँसकर आर्तगान पर एक प्रेम-दृष्टि फेंकते हुए कहा—"तब तुम्हारे लिये कोई भी बात असंभव नहीं है।"

आशातीत हर्ष से उन्मत्त होकर आर्तगान ग्लैडी के और निकट आगया और कहा—"ग्लैडी! प्यारी ग्लैडी! क्या सचमुच यह सुख सत्य है! यह स्वप्न तो नहीं है?"

ग्लैडी—"प्यारे आर्तगान! मैं तुम्हें प्यार करती हूँ।"

आर्त०—"प्यार! क्या वास्तव में तुम मुझे प्यार करती हो? ओह! आज मैं कितना सुखी हूँ!" यह कहकर आर्तगान ने ग्लैडी को आलिंगन-पाश में बाँध लिया और उसके अधर पर अपना मुख रख दिया। ग्लैडी ने कोई विरोध नहीं किया; परंतु आर्तगान ने देखा कि ग्लैडी के ओष्ठ शीतल थे। ग्लैडी प्रस्तर की प्रतिमा बनी हुई थी; परंतु तब भी आर्तगान कम सुखी न था। उसको ग्लैडी पर विश्वास-सा हो चला था। उसकी दृष्टि में डी० वार्डीस यथार्थ में अपराधी जान पड़ने लगा।

आर्तगान ने कहा—"उस दुष्ट का नाम शीघ्र बतलाओ, जिसने तुम्हारे कोमल हृदय पर आघात किया है?"

ग्लैडी—"ओह! उसने बड़ा गहरा आघात किया है। परंतु उसका नाम अत्यंत गुप्त रखना होगा?"

आर्त०—"प्यारी ग्लैडी! मेरे द्वारा वह किसी पर प्रकट नहीं हो सकता।"

ग्लैडी—"उसका नाम………………।"

शीघ्र ही आर्तगान के मुख से सहसा निकल पड़ा—"डी० वार्डीस है। मैं जानता हूँ।"

ग्लैडी चौंक पड़ी। उसने आर्तगान के हृदय तक पहुँचने के लिये उसकी आँखों पर अपनी स्थिर-दृष्टि गाड़ दी।

आर्तगान ने अपनी भूल को यों सुधारा—"मैं इस प्रकार जानता हूँ कि डी० वार्डीस से मेरी कल चर्च में भेंट हुई थी। उसने मुझे एक अँगूठी दिखलाकर कहा था कि मुझे यह तुम्हारे द्वारा मिली है।"

ग्लैडी का चेहरा पीला पड़ गया। उसने तीव्र स्वर में कहा—दुष्ट ने मेरा सत्यानाश किया है। मैं इसी की मृत्यु चाहती हूँ।"

आर्त०—"मैं उसका जीवन-नाश करूँगा। तुम विश्वास रक्खो।"

ग्लैडी ने आश्वासित होकर कहा—"मैं कृतज्ञ रहूँगी! तुम्हारा शुद्ध-प्रेम मुझपर विजयी है!"

आर्तगान ने हर्ष के उन्माद में ग्लैडी को फिर अपनी बाहों में बाँध लिया।

ठीक इसी समय लार्ड डी० विंटर के आने की सूचना नौकर ने दी। ग्लैडी को उसका इस समय आना बड़ा बुरा मालूम हुआ; परंतु विवश होकर आर्तगान से कहा कि आप दो घंटे बाद आइयेगा। तब विस्तार से इस विषय पर बातचीत होगी। आर्तगान को बिदा करके ग्लैडी ने अत्यंत विरक्ति के साथ डी० विंटर को बुलवाया।

आर्तगान अपने होटल वापस आया। उसका हृदय ग्लैडी पर अनुरक्त था। इस समय की बातचीत से उसको विश्वास-सा होने लगा था कि ग्लैडी मेरे प्रेम की ओर आकर्षित हो रही है। यद्यपि वह यह जानता था कि ग्लैडी इस समय अपने स्वार्थ का उसको साधन बनाना चाहती है, तथापि इस संभावना पर विश्वास रखना उसको अत्यंत रुचिकर मालूम होता था कि संभव है कि यह स्वार्थ ही निश्चित प्रेम की नींव डाल दे। परंतु उसके लिये यह बात भी अत्यंत स्पष्ट थी कि

म्लैडी के समान कुटिला और कपटिनी संसार में अन्य स्त्री मिलना दुर्लभ है। कभी-कभी उसके मन में यह भी विचार उठता था कि वह म्लैडी को पत्र द्वारा यह बात स्पष्टतया सूचित कर दे कि वह ही डी० वार्डीस का स्वांग रच रहा था और अब वह इस स्वांग की समाप्ति कर देना चाहता है। परंतु यह विचार कि म्लैडी अब आर्तगान पर अनुरक्त है, न कि डी० वार्डीस पर, उसके उपरोक्त इरादों को नष्ट कर देता था। वह दो प्रतिस्पर्धी भावनाओं का शिकार हो रहा था। दोनों एक-दूसरे पर विजय पाने का प्रयत्न कर रही थीं।

दो घंटे इसी उधेड़-बुन में व्यतीत करके वह म्लैडी के पास आया। डी० विंटर जा चुका था। म्लैडी बड़ी तपाक से मिली। कमरे की रोशनी गुल कर दी गई। अंधकार में म्लैडी का रूप घनावृत्त चंद्रमा की भाँति चमक रहा था। उसकी सौंदर्य-पिपासा उत्तेजित हो उठी। वह म्लैडी के रेशम सदृश केश-कलाप से खेलने लगा। म्लैडी अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये आतुर हो रही थी। उसने कहा—"क्या आपने वह उपाय स्थिर कर लिया जिसके द्वारा आप डी० वार्डीस को द्वंद-युद्ध के लिये आवाहन करेंगे।"

आर्तगान इस समय प्रेम-वार्ता में ही संलिप्त रहना चाहता था। उसको यह प्रश्न बड़ा बुरा लगा। वह म्लैडी की स्वार्थमयी प्रवृत्ति पर झुँझला उठा। उसने कहा—"इन बातों को अभी से सोचने की क्या आवश्कता है? युद्ध और शस्त्र की बातों से मेरा जी ऊब उठा।"

म्लैडी के लिये इस समय युद्ध की वार्ता ही सबसे अधिक प्रिय वस्तु थी। वह इस विरक्ति-सूचक उत्तर को सुनकर चौंक गई।

उसने कहा—"क्या आप उससे भयभीत होते हैं?"

आर्त०—"कदापि नहीं! परंतु प्यारी म्लैडी तुम वास्तव में मुझ पर अनुरक्त हो?"

म्लै०—इसका प्रमाण तो मैं दे चुकी हूँ?"

आर्त०—"तब क्या तुमको यह भय नहीं होता कि कहीं मैं ही इस युद्ध में आहत हो जाऊँ ?"

ग्लै०—"यह असंभव है ! तुम्हारी बीरता पर मुझे विश्वास है ?"

आर्त०—"मुझे उस अभागे व्यक्ति पर दया आती है, जो तुम्हारे प्रेम से वंचित होने पर, तुम्हारी दृष्टि में अब इस प्रकार खटक रहा है ।"

ग्लैडी ने तीव्र स्वर में कहा—"परंतु यह तुमसे किसने कहा कि मैं उसको प्यार करती थी ?"

ग्लैडी के इन बचनों से आर्तगान की प्रेम-धारणा और भी उत्तेजित हो उठी, वह अपने को सँभाल न सका। उसने कहा—"तब ऐसी दशा में तो उसका कुछ भी अपराध नहीं ? परंतु क्या यह सत्य है कि तुम मुझ पर प्रेम करती हो ?" यह कहकर आवेश में आर्तगान ने ग्लैडी को अपनी भुजाओं में लपेट लिया ?"

ग्लैडी ने उत्सुकता से कहा—"यह तो सत्य है; परंतु वह निरपराधी किस प्रकार है ?"

आर्तगान—"मैं सब जानता हूँ। मैं तुमसे सब कह दूँगा; परंतु एक बार यह फिर कह दो कि तुम मुझसे वास्तव में प्रेम करती हो ?"

ग्लैडी भौचक्की हो गई। उसने आश्चर्य और चिंता में होकर पूछा—"परंतु तुम क्या जानते हो ?"

आर्त०—तुमने गत वृहस्पति को इसी कमरे में डी० वार्डीस से भेंट की थी ?"

ग्लैडी का चेहरा पीला पड़ गया; परंतु उसने अत्यंत दृढ़ता के साथ कहा—"यह बिलकुल झूठ है ! सफ़ेद झूठ है ? तुमसे यह किसने कहा ?"

आर्तगान ने हँसते हुए उत्तर दिया—"मेरी प्यारी सुंदरी ! झूठ न बोलो ! मुझ से कुछ छिपा नहीं है ।"

ग्लैडी की चिंता और आश्चर्य दोनों बढ़ रहे थे। उसने चिल्लाकर कहा—"तुमको क्या मालूम है ? कहते क्यों नहीं ?"

"धीरज रक्खो, मैं सब बतलाऊँगा ?"

"क्या ! यही न कि डी० वार्डीस ने कहा था कि वह अँगूठी मेरी दी हुई है ? इसके अतिरिक्त क्या उसने और भी कुछ कहा था ?"

"आह ! वह अँगूठी मेरे पास है और बृहस्पति का डी० वार्डीस और आज का आर्तगान एक ही व्यक्ति है ?"

आर्तगान ने समझा था कि ग्लैडी केवल चौंक उठेगी और अपनी भूल पर पश्चाताप प्रकट करके, मुझ पर अधिक प्रेम दिखाएगी। परंतु जल्दबाज़ युवक को अपनी भूल शीघ्र ही मालूम हो गई।

ग्लैडी चोट खाई हुई नागिन की भाँति फुफकार कर आर्तगान को ढकेलकर उठ खड़ी हुई। आर्तगान ने चाहा कि उसको रोककर अनुनय करके क्षमा माँग ले। उसने इसी विचार से उसके सीने का कपड़ा पकड़ कर अपनी ओर खींचा। परंतु ग्लैडी ने एक तेज झटका देकर अपने को छुड़ा लिया। सीने का कपड़ा फट गया। आर्तगान चौंककर पलंग से कूद पड़ा। ओफ़ ! ग्लैडी के सीने पर स्पष्ट अक्षरों में अंकित था 'पापिष्ठा'।

अथास की कथा उसकी स्मृति में ताज़ी हो गई। वह अवाक् होकर निश्चल, पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़ा रह गया।

"क्या यह वही 'पापिष्ठा' है ?"

ग्लैडी भूखी सिंहिनी की भाँति आर्तगान की ओर झपटी। उसके नेत्र लाल-लाल अंगारे की भाँति अँधेरे में चमक रहे थे। अपरिमित क्रोध के कारण सारा शरीर काँप रहा था। चेहरा लाल हो गया था। उसने दाँत पीसते हुए उच्च-स्वर में गरज कर कहा—"कम्बख़्त ! तूने अत्यंत नीचता के साथ मेरे भेद को खोल दिया है ? अब तू मरेगा।"

ग्लैडी के हाथ में तेज़ छुरी चमचमा रही थी। यह कहकर वह आर्तगान की ओर झपटी।

यद्यपि आर्तगान साहसी और वीर-पुरुष था; परंतु ग्लैडी की भयंकर आकृति को देखकर, उसके छक्के छूट गये। वह भय खाकर पीछे हटता चला गया। बड़ी कठिनता से उसने काँपते हुए हाथों से म्यान से तलवार बाहर की। ग्लैडी तलवार को देखकर ज़रा भी न हिचकी, वह हुँकारती हुई आगे बढ़ती ही गई। उसकी छुरी आर्तगान के कलेजे के पार हो गई होती; यदि आर्तगान की तलवार उसके गले तक न पहुँच जाती। वह रुक गई। उसने बहुत प्रयत्न किया कि तलवार को वह आर्तगान के हाथ से छीन ले; परंतु आर्तगान उसको शीघ्रता से इधर-उधर घुमाता रहा; कभी उसकी छाती की ओर करता और कभी आँखों की ओर। ग्लैडी विवश होकर कई क़दम पीछे हट गई। आर्तगान भी दरवाज़े की ओर बराबर पीछे हटता जाता था। ग्लैडी बड़े ज़ोर से चीत्कार करके कई बार फिर आर्तगान की ओर झपटी। वह क्रोध से अंधी हो रही थी। कुछ क्षणों तक द्वंद-युद्ध-सा होता रहा, आर्तगान की विलुप्त शक्ति भी धीरे-धीरे लौट आई थी। वह अत्यंत चतुरता से आक्रमण को बचा-बचाकर पीछे हटता जाता था। दरवाज़ा निकट आने पर वह एक क्षण में ही कमरे के बाहर हो गया। ग्लैडी यह देखकर बड़े ज़ोर से लपकी; परंतु जल्दी के कारण एक मेज़ में उलझकर गिर पड़ी। आर्तगान को बाहर से दरवाज़ा बंद करने का अवसर मिल गया। ग्लैडी में राक्षसी-शक्ति पैदा हो गई थी। उसने भीतर से दरवाज़े को तोड़ डालने के लिये बहुत ज़ोर लगाया, लगातार कई धक्के दिये। इसमें अकृतकार्य होने पर उसने ग़ुस्सा निकालने के लिये अपनी छुरी ही से दरवाज़े पर कई-बार प्रहार किये; परंतु सब व्यर्थ हुआ। आर्तगान और किटी जो कि चीत्कार सुनकर वहाँ आगई थी, दोनों ने बाहर से दरवाज़े की आड़ लगा ली थी।

परास्त सिंहिनी बड़े ऊँचे स्वर से चिल्लाने लगी । मकान भर दहल उठा ।

किटी ने घबड़ाकर कहा—"भागो ! जल्दी भागो ! नहीं तो नौकर आ जायँगे !"

आर्त०—"परंतु इस दशा में मैं कैसे जा सकता हूँ ? मेरे कुल कपड़े तो वहीं कमरे में रह गये !"

किटी ने झटपट अपने कमरे से एक ओवर कोट लाकर दिया । इसी से अपने शरीर को ढककर, आर्तगान वहाँ से जी छोड़कर भागा । नौकर जाग उठे थे । उसके कान में म्लैडी के यह शब्द पड़े—"फाटक मत खोलो ! इस दुष्ट को मत जाने दो ।" परंतु आर्तगान स्वयं पहले ही फाटक खोलकर बाहर आ चुका था ।

३०

आर्तंगान इतना घबड़ा गया था कि किटी की क्या दशा होगी? इस पर कुछ भी ध्यान न देकर, वह सीधा भागता हो चला गया और अथास के दरवाज़े पहुँचकर ही रुका। दरवाज़ा खटखटाने पर ग्रीमांड ने किंवाड़े खोले। विचित्र वेश में हाँफ़ते हुए एक अपरिचित व्यक्ति को तेज़ी से कमरे में घुसते हुए देखकर, वह चिल्लाने लगा। आर्तंगान का शरीर लबादे से ढका था। ग्रीमांड को चिल्लाते हुए सुनकर, अथास अपने कमरे से निकल आया। इसी समय आर्तंगान ने लबादे को उतार डाला। मित्र को पहचानकर अथास ठट्ठा मारकर हँस पड़ा। आर्तंगान चिढ़ उठा—मित्र को बिगड़ते हुए देखकर, अथास उसको अपने कमरे में ले गया और इस विचित्र अवस्था में होने का कारण पूछा। आर्तंगान ने कुछ दम लेकर शान्त होने के बाद कहा—"मित्र! मैं तुमको आज एक घटना सुनाता हूँ, जिसको तुमने आज तक कभी न सुना होगा। अत्यंत विचित्र बात है। ग्लैडी 'पापिष्ठा' है उसके सीने पर यह शब्द गुदे हुए हैं।

अथास के कलेजे में मानों किसी ने घूसा मार दिया हो। वह अचंभे में हो गया। चौंककर उसने कहा—"ऍं! यह क्या कहते हो?"

आर्त०—"तुमको यह ठीक तरह से मालूम है कि वह अभी ज़िंदा है?"

अथास ने भरभराई हुई आवाज़ से कहा—"वह?"

"हाँ! वही, जिसके बिषय में तुमने अमींस में वह घटना सुनाई थी?"

अथास का चेहरा उतर गया। उसने एक गर्म सांस ली और अपने शिर को बड़े ज़ोरों से हाथों से पकड़ लिया। कुछ देर तक सोचकर कहा—"क्या उसका रंग बहुत खुलता हुआ है?"

"बहुत"

"उसकी आँखे नीली और चमकीली हैं और पलकें काली हैं?

"हाँ!"

"क़द लंबा है और एक बायाँ ऊपर का बग़ली दाँत टूटा है?"

"बिल्कुल ठीक?"

"परंतु तुम तो कहते हो कि वह अंग्रेज रमणी है?"

"वह अपने आपको अंग्रेज बताती है। संभव है फ्रेंच हो?"

अथास ने एक गर्म साँस ली, और फिर किसी चिंता में लीन हो गया। कुछ क्षण के बाद कहा—"मैं उसको देखूँगा।"

आर्तगान चिल्ला पड़ा—"अथास। ख़बरदार! उससे मिलने की इच्छा न करना? तुमने उसको मार डालना चाहा था। वह तुम्हारे ऊपर ज़रूर हाथ साफ़ करेगी। उसके लिये कुछ भी असम्भव नहीं है। तुमने कभी उसको क्रोध में नहीं देखा है। बिल्कुल भीषण सिंहिनी की भाँति है।"

यह कहकर आर्तगान ने अपना कुल अनुभव बतलाया। अथास

बड़े ध्यान से सुनता रहा, तब कहा—"तुम्हारा बिचार सत्य है। परंतु कल हम पेरिस से रवाना हो जायँगे। मैं उससे अवश्य मिलूँगा ?"

"यह बिचार त्याग दो ! वह राशेल तक हम लोगों का पीछा बिना किये न मानेगी ?" उसका सारा क्रोध मुझ ही अकेले पर रहने दो।"

"आह ! मित्र ! मुझको मारकर वह क्या बना लेगी ? मैं अपने जीवन को इतना मूल्यवान नहीं समझता।"

"तुम भूलते हो ! इसमें एक और रहस्य भी घुसा है। वह धर्माचार्य की जासूस है।"

"ऐसी दशा में तुमको बहुत सचेत रहना चाहिए। धर्माचार्य बड़ा भयंकर है। वह तुमको बहुत घृणा से देखता है ; परंतु वह खुल्लम-खुल्ला तुमको अपराधी नहीं प्रमाणित कर सकता। यदि उसको ज़रा भी अवसर मिल गया तो तुम्हें सदा के लिये कुचल डालेगा। अब कभी अकेले कहीं मत जाना, ऐसी अवस्था में अपनी छाया से भी डरना चाहिए। किसी पर भी भरोसा न करना। हम सब लोग अब सदा साथ रहा करेंगे।"

इसके बाद आर्तगान कुछ देर और बातें करके अपने घर चल दिया। अथास भी संग था। घर पहुँचकर देखा कि किटी बड़ी देर से आर्तगान की प्रतीक्षा कर रही है। किटी ने कहा—"तुमने मेरी रक्षा करने का बचन दिया है। अब मैं म्लैडी की क्रोध में आहुति नहीं बन सकती। मेरी रक्षा करो।"

आर्तगान ने अत्यंत प्रेम और सहानुभूति के साथ कहा—"तुम निश्चिंत रहो। मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा ; परंतु यह बतलाओ, मेरे चले आने के बाद वहाँ क्या हुआ ?"

किटी—"यह मैं कैसे बतला सकती हूँ ? उसका शोर सुनकर सब

सिपाही और नौकर इकट्ठा हो गये थे। वह क्रोध के मारे पागल थी। इसी गड़बड़ी में मैं भाग आई। नहीं तो उसका संदेह मुझ पर अवश्य होता और मेरी क्या दशा होती? यह मैं नहीं कह सकती?"

आर्तगान विचित्र स्थिति में पड़ गया। किटी की रक्षा का प्रश्न उसके लिये अत्यंत कठिन था। युद्ध-स्थल में वह उसको अपने साथ ले नहीं जा सकता था। पेरिस में उसका संबंध न होने के बराबर था। अथास ने संकट-मयी स्थिति को ताड़ लिया। उसने कहा—"क्या यह उचित न होगा कि इनको अर्मस की प्रेमिका के पास रख दिया जाय। वह बड़ी रईस औरत है?"

आर्तगान सुनकर प्रसन्न हो गया। किटी भी इस बात पर सहमत हो गई। इसी समय अर्मस भी आ मौजूद हुआ। सब हाल सुनने के बाद उसने कहा कि उसकी प्रेमिका को एक परिचारिका की आवश्यकता भी है। वह बड़ी प्रसन्नता के साथ किटी को वहाँ रख देगा। अर्मस ने शीघ्र ही एक पत्र लिखकर किटी को दिया और कहा कि इस पत्र को पढ़कर ही वह तुमको रख लेगी। चलती बार किटी ने आर्तगान पर एक प्रेम-दृष्टि फेंकी। उसके नेत्रों में आँसू भर आये। आर्तगान ने किटी को अंतिम बार आलिंगन किया और प्रेमाश्वासन दे करके उसको बिदा किया। इस समय आर्तगान की भी आँखें डबडबा आई थीं। उसने किटी को बचन दिया कि युद्ध से लौटने के पश्चात् मैं अवश्य मिलूँगा।

इसके बाद अब चारों मित्र युद्ध की तैयारियों के विषय में बातें करने लगे। पार्थ भी इसी समय आ गया था। अर्मस और पार्थ ने तो अपनी-अपनी प्रेमिकाओं के द्वारा वस्त्र, घोड़े तथा अन्य सामान के लिये काफ़ी धन प्राप्त कर लिया था। आर्तगान और अथास ही आश्रय-हीन थे; परंतु इसी समय आर्तगान को भी एक उपाय सूझ गया। उसने वह अँगूठी जो म्लैडी द्वारा प्राप्त हुई थी अथास को

समर्पित की। अन्य मित्र इस अँगूठी और ग्लैडी की कथा से अनभिज्ञ थे। आर्तगान ने कब अथास को अँगूठी दी, इस पर उनकी दृष्टि न गई। अथास ने वह अँगूठी रख तो ली; परंतु आर्तगान से धीरे से कहा कि यद्यपि यह अँगूठी उसके कुटुम्ब का स्मृति-चिह्न है तथापि उसके द्वारा उसको सदा उस घटना की याद आती रहेगी। जिसका निर्देश उसने उससे एक बार किया है। इसके अतिरिक्त वह ग्लैडी की स्मृति को भी मिटा डालना चाहता है। अतः यह उचित होगा कि उसको बेच डाला जाय। इससे इस समय की आर्थिक समस्या भी सुगमता-पूर्वक हल हो जाएगी। दोनों की आवश्यकतायें इसके द्वारा पूर्ण हो सकती हैं। आर्तगान ने अथास के इन बिचारों का पहले ही से अनुमान कर लिया था। वह भी इस पर सहमत हो गया।

ठीक इसी समय प्लेंचेट ने दो लिफ़ाफे लाकर आर्तगान को दिये। एक पत्र पर धर्माचार्य की मोहर थी। दूसरे से भीनी-भीनी सुगंध आ रही थी। इसके ऊपर एक हिरण का बढ़िया चित्र अंकित था। इसको देखकर आर्तगान का हृदय उछल पड़ा। वह लिखावट को पहचानता था। उसने अत्यंत उत्सुकता के साथ उसे शीघ्र खोल डाला। पत्र में यह लिखा था—

"बृहस्पति के दिन छैः और सात के बीच में सायंकाल को चेलेट की सड़क पर रहना और उस मार्ग से गुजरनेवाली गाड़ियों पर बहुत ध्यान से निगाह रखना; परंतु यदि तुमको अपने या अपने मित्रों के जीवन का ज़रा भी ख़्याल है, तो बिलकुल ख़ामोश रहना किसी गाड़ी को रोकने का भी बिचार न करना। और देखो! इस बात का ध्यान रहे कि किसी को यह न मालूम हो सके कि तुम मुझे पहचानते हो अन्यथा मेरा जीवन संकट में पड़ जाएगा।"

पत्र में किसी के हस्ताक्षर नहीं थे। परंतु आर्तगान यह समझ गया कि इसकी प्रेषिका कांसटेंस है। उसका हृदय उछल पड़ा।

अथास ने कहा—"यह सब जाल है। तुम कहीं न जाना।"

आर्त०—"परंतु मैं लिखावट को पहचानने में भूल नहीं करता।"

अथास—"संभव है वह जाली हो। सायंकाल को छः और सात के बीच में चेलेट सड़क बिल्कुल निर्जन रहती है। वहाँ जाने से अवश्य किसी विपत्ति में फँस जाओगे?"

आर्त०—"परंतु यदि हम चारों चलें, तो किसी अनिष्ट की भी संभावना नहीं हो सकती।"

पार्थ—"यह तो ठीक है। अपने नवीन घोड़ों की परीक्षा भी हो जाएगी।"

अर्मस—"परंतु क्या यह उचित होगा कि हम सब लोग वहाँ मौजूद रहें, जब कि वह स्त्री केवल आर्तगान ही को वहाँ जाने का आदेश करती है।"

पार्थ—"हम सब लोग पीछे पेड़ों की आड़ में खड़े हो जाएँगे। आर्तगान सड़क पर रहेगा।"

अंत में यह निश्चित हुआ कि सब लोग साथ नियत समय पर, चेलेट सड़क पर जावें।

आर्तगान ने दूसरे पत्र को खोलते हुए कहा—"अब यह भी देख लेना चाहिए कि धर्माचार्य क्या आदेश देते हैं।"

आर्तगान ने ज़ोर से पत्र को पढ़ा—"डे सार्ट की सेना के सैनिक आर्तगान की प्रतीक्षा आज सायंकाल को आठ बजे के लगभग धर्माचार्य के प्रासाद में की जायगी। वह वहाँ उपस्थित रहें।"

—गारद का नायक

अथास बोला—"यह भेंट तो पहली भेंटसे भी अधिक आवश्यक है।"

आर्त०—"पहली भेंट को समाप्त करके मैं इस दूसरी के लिये जाऊँगा। एक सात बजे है और दूसरी आठ बजे। दोनों के लिये समय काफ़ी है।"

अर्मस—"ऐसी स्थिति में मैं तो कभी न जाता! एक सच्चा शूर-

वीर एक स्त्री के साथ मिलना नहीं टाल सकता; परंतु एक चतुर पुरुष धर्माचार्य से न मिलने का कोई न कोई बहाना ढूँढ सकता है। धर्माचार्य ने कुछ तुमको सम्मानित करने के लिये नहीं बुलाया है।"

पार्थ ने भी गर्दन उठाकर कहा—"मैं अपने मित्र अर्मस के विचारों का समर्थन करता हूँ।"

आर्तगान बोला—"मित्रो! कैवाय के द्वारा धर्माचार्य मुझको एक बार और आमंत्रित कर चुके हैं। उस बार मैंने उस आमंत्रण पर ध्यान नहीं दिया। दूसरे ही दिन मेरी प्रेमिका कांसटेस अंतर्द्धान कर दी गई। इस बार न जाने पर और कोई नई विपत्ति आ सकती है। मैं तो अवश्य जाऊँगा।"

अथास—"यदि तुम्हारा यही निश्चय है, तो तुम अवश्य जाओ।"

अर्मस—"और वेस्टाइल जेल………… ।"

आर्तगान—"वाह! क्या तुम लोग मुझको वहाँ से निकाल नहीं लोगे?"

अर्मस और पार्थ ने अपनी सामर्थ्य पर ज़रा भी संदेह न करते हुए कहा—"निश्चय ही हम छुड़ा लेंगे; परंतु हम लोगों को कल ही रवाना होना है, हमको जान-बूझकर विपत्ति सिर पर नहीं लेनी चाहिए?"

अथास—"ऐसी अवस्था में हमको यह करना चाहिए कि आर्तगान के साथ बराबर रहें। हम सब लोग अपनी कुल सेना के साथ प्रासाद के बाहर छिपकर खड़े हो जायँ और जिस बंद गाड़ी को भीतर से निकलते देखें, उसी पर हमला कर बैठें। बहुत अर्से से धर्माचार्य के सैनिकों से कोई मोर्चा भी नहीं हुआ है।"

अथास का विचार सबको पसंद आया। इस नवीन परिस्थिति के लिये सब लोग तैयार होने के लिये चल दिये।

३१

उसी दिन सायंकाल को, अँधेरा होने पर यह मित्र-मंडली अपनी-अपनी नवीन वर्दियें पहनकर, नये घोड़ों पर सवार होकर चेलेट सड़क पर पहुँच गये। सड़क के दोनों ओर घना जंगल था; परंतु पथिकों को प्रकाश पहुँचाने के लिये थोड़ी-थोड़ी दूर पर लालटेनें गड़ी थीं, जिनसे रास्ते पर काफ़ी प्रकाश पड़ रहा था। सड़क बिल्कुल निर्जन थी। आर्तगान सड़क के एक किनारे खड़े होकर प्रतीक्षा करने लगा और शेष मित्र पास ही एक वृक्ष की आड़ में खड़े हो गये। आध घंटे प्रतीक्षा करते-करते आर्तगान के नेत्र थक गये थे कि सहसा एक गाड़ी आती हुई दिखलाई पड़ी। गाड़ी पर दृष्टि पड़ते ही आर्तगान का हृदय बोल उठा कि यही वह गाड़ी है। उसने गाड़ी पर अपनी दृष्टि जमा दी। गाड़ी बंद थी, केवल जिस ओर आर्तगान था उस ओर की खिड़की खुली थी। ज्योंही गाड़ी निकट आती जाती थी, उसके हृदय की धड़कन बढ़ती जाती थी। गाड़ी जब सामने से गुज़रने लगी, तो उसने देखा कि एक अपूर्व सुंदर चेहरा खिड़की के बाहर निकला हुआ है। यही कांसटेंस थी। दोनों की दृष्टियाँ मिलते ही आर्तगान के मुख से हर्ष ध्वनि निकल पड़ी और किसी अज्ञात शक्ति ने

पत्र की निषेधाज्ञा के विरुद्ध-उसको इतना प्रभावित कर दिया कि वह गाड़ी को रोक लेने के विचार को दबा न सका। शीघ्र ही ऐंड़ लगाकर घोड़े को बढ़ा दिया। कांसटेंस उसकी इस इच्छा को ताड़ गई, उसने मुख पर उँगली रखकर, उसको मना करने का संकेत दिया भी; परंतु आर्तगान का घोड़ा सड़क के सामने आ ही गया। गाड़ी सड़क के दूसरे किनारे पर इतनी तेज़ चाल से जा रही थी कि वह फ़ौरन् सनसे निकल गई। आर्तगान भौचक्का-सा रह गया। गाड़ी का पीछा करने की उसकी हिम्मत न पड़ी। कांसटेंस की निषेधाज्ञा अत्यंत प्रबल हो गई थी। उसको अब पश्चाताप हुआ। उसका हृदय इस विचार से भयभीत हो उठा कि न मालूम अब कौन-सी विपत्ति उसकी प्रेमिका के ऊपर उसके इस विरुद्धाचरण के कारण आवे? वह सोचने लगा कि कांसटेंस बंदी अवश्य है और इस षड्यंत्र में धर्माचार्य का प्रधान हाथ है। उसी की आज्ञा से वह अब पेरिस लाई गई है। वह अब तक कहाँ थी? किन-किन विपत्तियों को उसको झेलना पड़ा और अब वह किस प्रकार मुक्त की जा सकती है? इन विचारों ने उसके हृदय में अद्भुत हलचल पैदा कर दी। धर्माचार्य के विरुद्ध उसका मन और भी उत्तेजित हो गया। वह विचारने लगा कि धर्माचार्य से उसको अब अवश्य भेंट करना चाहिए? संभव है कि कांसटेंस के बंदीगृह का तथा उसकी मुक्ति के उपाय के बारे में उसको कुछ साधन प्राप्त हों?

इन्हीं बातों को सोचता हुआ, वह अपने साथियों के साथ धर्माचार्य के प्रासाद की ओर चल दिया।

जैसा निश्चित हुआ था, आर्तगान के मित्रों ने उसकी रक्षा का यथोचित प्रबंध कर लिया। प्लेंचेट बाहर फाटक के निकट अपने स्वामी के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। आर्तगान ने अत्यंत सशंक होकर धीरे-धीरे प्रासाद के भीतर प्रवेश किया। प्रहरी ने आर्तगान के आने की सूचना जाकर भीतर दी। कुछ क्षणों के बाद ही

आर्तगान की पुकार हुई। कुछ सैनिकों ने उसको एक कमरे में पहुँचाया। आर्तगान ने पहले कभी भी धर्माचार्य को न देखा था; परंतु कमरे में पहुँचते ही जब उसने मेज़ पर सामने कुछ लिखते हुए एक बलिष्ठ तेजस्वी पुरुष को देखा, तो उसको यह समझने में देर न लगी कि वह फ्रांस के प्रसिद्ध धर्माचार्य के सामने खड़ा है। उसने झुककर अत्यंत सम्मान सहित अभिवादन किया। परंतु धर्माचार्य लिखने में इतना लीन था कि उसका ध्यान अभिवादन द्वारा आकृष्ट न हो सका। कुछ क्षण के बाद उसने अपने लेख को समाप्त करके ऊपर दृष्टि उठाकर, इस नवीन युवक की ओर देखा—उसकी दृष्टि अत्यंत प्रभाव-युक्त थी। आर्तगान का हृदय सिहर उठा; परंतु उसने साहस के साथ धर्माचार्य से सामना करने का निश्चय कर लिया था। वह हृदय के भय को दबाकर और भी तन कर सीधा खड़ा हो गया। कुछ क्षण देखकर धर्माचार्य ने कहा—

"युवक! तुम्हारा ही नाम आर्तगान है?"

"हाँ श्रीमान्।"

"तुम्हीं अपने देश से इस राजधानी में धन और पद की लालसा से आये हो?"

"श्रीमान् का विचार सत्य है?"

"तुम म्यांग होकर आये थे, जहाँ पर तुम्हारे साथ कुछ घटना हो गई थी?"

आर्तगान को अत्यंत आश्चर्य हुआ। उसने कहा—"हाँ! श्रीमान् वह घटना केवल यह थी कि............।"

धर्माचार्य ने बीच में रोककर—भेद-भरी मुस्कराहट के साथ कहा—"ओह! इसको जाने दो। ख़ैर! तुम्हारी सिफ़ारिश त्रिबली से कराई गई थी?"

"हाँ! श्रीमान परंतु उसी घटना में............?"

"वह पत्र खो गया ! ओह ! यह मैं सब जानता हूँ। त्रिबली मनुष्य की पहचान में बहुत कुशल है। उसने शीघ्र ही तुमको डेसार्ट के सेना-विभाग में भरती करा दिया और अब तुमको यह विश्वास दिलाया गया है कि तुम शीघ्र ही राज-सेना में सम्मिलित कर लिये जाओगे ?"

"श्रीमान् को सत्य सूचना मिली है ।"

"जबसे तुम आये हो, तबसे बहुत-सी घटनायें तुम्हारे साथ घटित हो चुकी हैं। तुम एक दिन उस क़िले के पीछे गये थे जहाँ पर न जाने से, तुम एक नवीन बिपत्ति से बच सकते थे। उसके बाद तुम अपने मित्रों के साथ इंगलैंड सैर करने के लिये रवाना हुए। तुम्हारे साथी मार्ग ही में रुक गये; परंतु तुम इंगलेंड पहुँच ही गये। वहाँ तुम्हारा पहुँचना आवश्यक था; क्योंकि तुम एक गुरुतर कार्यवश वहाँ गये थे।"

आर्तगान का आश्चर्य उत्तरोत्तर बढ रहा था। वह बोला—"परंतु श्रीमान् ! मैं वहाँ...... ।"

"वहाँ राजमंत्री के साथ शिकार खेलने गये थे या और किसी कार्य से—इसके जानने की कोई आवश्यकता नहीं। परंतु मैं सब जानता हूँ; क्योंकि सब प्रकार की बातों से भिज्ञ होना मेरा कर्त्तव्य है। वहाँ से लौटने पर, एक अत्यंत प्रतिष्ठित व्यक्ति से तुम्हारी भेंट हुई और मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि तुमने उस भेंट द्वारा प्राप्त-उपहार को बहुत सावधानी से सुरक्षित रक्खा है।"

आर्तगान को अपनी भूल अनुभव हुई। राजमहिषी की अँगूठी को वह अब तक धारण किये हुए था। उसने अपनी उँगली को छिपाने की बहुत कोशिश की; परंतु धर्माचार्य की तीव्र-दृष्टि ने उसके प्रयत्न को निष्फल सिद्ध कर दिया।

धर्माचार्य ने कहा—"उसके एक दिन बाद मैंने तुमको कैवाय

के द्वारा बुलवाया था। तुमने उस आमंत्रण पर कुछ भी ध्यान न दिया और इस ग़लती का फल तुमको उसी रात्रि में मिल गया।"

आर्तगान को याद आया कि उसी रात्रि को बोनैसी की पत्नी ग़ायब कर दी गई थी। उसका वीर-हृदय काँप उठा।

धर्माचार्य ने पूर्व-स्वर में फिर कहा—"आज मैंने तुमको इसलिये बुलवाया है कि बहुत दिनों से तुम्हारे विषय में मुझे ख़बर नहीं मिली है। इसके अतिरिक्त आज मैं तुमको तुम्हारी उन्नति के संबंध में एक साधन बतलाना चाहता हूँ।"

आर्तगान चौंक पड़ा। धर्माचार्य ने कहा—"इस साधन को मैं उसी दिन बतलाना चाहता था; परंतु तुम नहीं आये। परंतु अब भी कुछ हानि नहीं हुई है, तुमको उससे लाभ उठाने का अवसर है। शांति से सुनो।" यह कहकर धर्माचार्य ने आर्तगान को पास ही एक कुर्सी पर बैठने का संकेत किया। चतुर युवक इस प्रलोभन के भीतर छिपे हुए अभिप्राय को समझकर मन में हँसा। वह कुर्सी पर बैठ गया।

धर्माचार्य ने कहना प्रारंभ किया—"युवक! मैं चतुर वीरों का बहुत सम्मान करता हूँ। तुम्हारा हृदय वीर है और तुम्हारा मस्तिष्क उर्वर। परंतु अभी तुम संसार के कुचक्र से अनभिज्ञ हो। इसी थोड़े अर्से में तुमने अपनी अनुभव-शून्यता ही के कारण, अगणित शत्रु पैदा कर लिये हैं। यदि तुम अपनी रक्षा का कोई उचित प्रबंध न करोगे, तो संभव है शीघ्र ही नष्ट कर दिये जाओ।" यह कहकर धर्माचार्य कुछ क्षण चुप रहा, आर्तगान के हृदय को टटोलने के लिये उसने एक भेद-पूर्ण दृष्टि उसकी ओर डाली।

आर्तगान ने कहा—"श्रीमान् की धारणा सत्य है। वास्तव में मेरे शत्रु बहुत शक्तिशाली हैं।"

"यह सब सच है और यह भी सच है कि तुमने उनका सामना अभी तक अत्यंत साहस व कौशल से किया है। परंतु बकरे की माँ

कब तक ख़ैर मना सकती है। इन सब विपत्तियों से बचने के लिये एक सरल मार्ग तुम्हारे सामने खुला है। तुम मेरी सेना में भरती होकर निशंक रह सकते हो ? तुम्हारी रक्षा का भार मैं लेने को तैयार हूँ।"

"परंतु श्रीमान्……… ।"

"क्या ! क्या तुम इनकार करते हो ?" धर्माचार्य अत्यंत आश्चर्य में होकर चिल्ला उठा।

"मैं राजा का अनुचर हो चुका हूँ और मैं कोई कारण भी अपनी अवस्था से असंतुष्ट होने का नहीं देखता।"

"परंतु मेरी भी सेना तो राजा ही की सेवा में है।"

"ओह ! श्रीमान् ने मेरा अभिप्राय ठीक नही समझा।"

"आह ! तुम बहाना ढूँढ़ते हो ! यह मैं सब जानता हूँ। सम्मान, धन, उच्च-पद यह सब मैं तुम्हारे सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। इसके अतिरिक्त तुम्हारी रक्षा का भार भी मेरे ऊपर होगा ; परंतु तुम इन सब को ठुकराते हो। आर्तगान ! मैं जानता हूँ कि तुम दिन-रात राजा के ही काम में नहीं लगे रहते—अवशिष्ट समय तुम्हारा कैसे गुज़रता है ? यह सब मुझको मालूम है।"

धर्माचार्य का स्वर धीरे-धीरे तीव्र हो गया था ; परंतु आर्तगान का धैर्य विचलित न हुआ। उसने कहा—"श्रीमान् ! मैं इन सब से इनकार नहीं कर सकता ; परंतु विवश हूँ। श्रीमान् इस अनुचित निर्भीकता के लिये क्षमा करेंगे। मैं श्रीमान् की सहृदयता तथा हित-कामना के लिये सदा कृतज्ञ रहूँगा। परंतु मेरे सब मित्र राज-सेवा में हैं और दुर्भाग्य से मेरे सब शत्रु श्रीमान् ही के अनुचर हैं। यदि मैं श्रीमान् के प्रस्ताव को स्वीकार कर लूँ तो मैं दोनों पक्षों में घृणा का पात्र बन जाऊँगा।"

"तो क्या मैं यह समझूँ कि जो कुछ मैं दे रहा हूँ, वह तुम्हारी

योग्यता के अनुकूल नहीं है ?" धर्माचार्य ने व्यंग्य-पूर्ण स्वर में यह कहा और आर्तगान की ओर एक तीव्र घृणा-सूचक दृष्टि फेंकी।

"नहीं ! श्रीमान् जो कुछ दे रहे हैं, वह इतना अधिक है कि मैं अपने को स्वयं उसके योग्य नहीं पाता। श्रीमान् की अनुकम्पा का मैं जीवन भर आभारी रहूँगा। इस समय राशेल का युद्ध चल रहा है। यह युद्ध श्रीमान् ही के निरीक्षण में होगा। यदि भाग्य से मैं अपनी सेवा द्वारा श्रीमान् को संतुष्ट कर सका। तब सम्भवतः मैं श्रीमान् द्वारा बताये हुए मार्ग के योग्य अपने को सिद्ध कर सकूँ। अपने-अपने समय ही पर सब बातें उचित मालूम होती हैं।"

धर्माचार्य ने क्रोध के भावों को दबाकर कहा—"मतलब यह है कि तुम मेरे प्रस्ताव को अस्वीकार करते हो। ख़ैर ! तुम स्वतंत्र रहो और अपने शत्रुओं का सफलता-पूर्वक सामना करो।"

धर्माचार्य के ये वाक्य भावी अमंगल की सूचना स्पष्ट-रूप से दे रहे थे। आर्तगान का हृदय भविष्य की इस अग्र-सूचना को सुनकर भयभीत हो उठा।"

चलते समय धर्माचार्य ने कहा—"आर्तगान ! आज का दिन याद रखना। आज जो कुछ मैं दे रहा हूँ, संभवतः वह कल न दे सकूँ।"

आर्तगान ने साहस के साथ कहा—"मैं श्रीमान् की इस सहृदयता का सदा कृतज्ञ रहूँगा और मुझे विश्वास है कि श्रीमान् सदा यही भाव मेरे प्रति रक्खेंगे।"

धूर्त धर्माचार्य दाँत पीसकर रह गया। एक-तीव्र दृष्टि से उसने आर्तगान की ओर देखा। उसके नेत्रों से आग बरस रहा थी। आर्तगान ने झुककर अभिवादन किया और शीघ्रता से क़दम बढ़ाकर वहाँ से चल दिया।

प्लेंचेट ने अपने स्वामी के सकुशल लौट आने की, उसके साथियों को दौड़कर सूचना दी। सब अत्यंत हर्षित होकर उससे मिले। धर्माचार्य

से कैसे निपटी, क्या-क्या बातें हुईं, उसका रुख़ कैसा था? इत्यादि प्रश्न करने पर, आर्तगान ने अपनी भेंट का सब हाल कहा। अथास बोला—"तुमने वही किया, जो इस समय पर करना चाहिए; परंतु तुम्हारे लिये भविष्य बड़ा संकटापन्न हो गया। धर्माचार्य अपनी इस अवज्ञा का बदला अवश्य लेगा।"

चारों मित्र ख़ुशी-ख़ुशी घर लौटकर आये। दूसरा दिन संग्राम-क्षेत्र में चलने की तैयारी में बीता। तीसरे दिन सुबह ही सब सेना का राज-महल के सामने मैदान में आवाहन हुआ। राजा स्वयं युद्ध-क्षेत्र में चलने के लिये तैयार था। उसने सैनिक-वेष में सब सेना का निरीक्षण किया। सेना कई भागों में विभक्त की गई। दुर्भाग्य से आर्तगान एक ऐसे विभाग के साथ किया गया; जिसमें उसके अन्य साथी सम्मिलित न थे। आर्तगान को इस पर अत्यंत दुःख हुआ। परंतु राजाज्ञा के सम्मुख उसको शिर झुकाना पड़ा। सेना के, आर्तगान वाले विभाग के साथ स्वयं राजा चल रहा था; परंतु अकस्मात बीमारी के कारण उसकी सेना को आज्ञा हुई कि वह कई स्थानों में विश्राम करती हुई चलेगी। शेष सेना को शीघ्र रवाना होने की आज्ञा दे दी गई।

जब सब सेना का निरीक्षण हो रहा था, तब मनुष्यों का जमाव इस दृश्य को देखने के लिये एकत्रित हो गया था। इसी जमघट में एक ओर म्लैडी भी खड़ी थी, वह एक मनुष्य से बातचीत करती हुई आर्तगान को घूर-घूरकर देखती जाती थी। आर्तगान ने देखा कि एक बार म्लैडी ने अपने साथी की दृष्टि उसकी ओर आकर्षित करके उसको दिखलाया और तब धीरे से उसके कान में कुछ कहा। आर्तगान को यह संदेह हुआ कि म्लैडी इस पुरुष की सहायता से उसके विरुद्ध कुछ कुचक्र रच रही है।

जब कुल सेना कूच कर चुकी तब सायंकाल को आर्तगान की

टुकड़ी भी रवाना हो गई। अपनी सेना के साथ जाते समय, उसने देखा कि दो बलिष्ठ भयानक आकृतिवाले मनुष्य उसकी सेना के साथ अलग होकर पीछे-पीछे आ रहे हैं। उसकी धारणा म्लैडी की अभिसंधि के विषय में विश्वास में परिणत हो गई। वह और भी सतर्क हो गया।

३२

राशेल का घेरा तेरहवें लुई के शासन-काल की अत्यंत प्रसिद्ध घटना है और यही धर्माचार्य के सैनिक-चातुर्य का महत्त्व-पूर्ण उदाहरण भी है। अतः इस घटना के संबंध में कुछ विशेष बातें इस स्थल पर पाठकों को बतलाना कुछ अनुचित न होगा। इतिहास इसके संबंध की जिन प्रमुख बातों को बतला चुका है, उनके विषय में हमारा मौनावलंबन ही यथेष्ट होगा; क्योंकि पाठक उनसे, इतिहास के अध्ययन द्वारा परिचित हो सकते हैं।

इतिहास के पाठक जानते हैं कि फ्रांस पुरातन चर्च कैथोलिक सम्प्रदाय का अनुगामी था; परंतु अन्य देश धर्म-सुधारक कालविन के मत पर चलते थे। इंगलैंड, स्पेन, इटली और जर्मनी इसी नवीन मत के अनुयायी थे। यही नहीं, सारे योरप भर में धार्मिक-क्रांतियों द्वारा इसी की स्थापना धीरे-धीरे हो रही थी। इन धार्मिक क्रांतियों ने राजनैतिक विप्लवों का रूप धारण कर लिया था। फ्रांस और इंगलैंड में बहुत ज़माने से दुश्मनी चली आ रही थी। धार्मिक मामलों ने इस दुश्मनी की नींव को और भी दृढ़ कर दिया। फ्रांस की भूमि पर इंगलैंड के जितने नवीन मतानुगामी स्थान थे, उन सबको एक-एक

करके फ्रांस ने जीत लिया था और वहाँ के कालविन के मतानुयायियों को निकाल बाहर किया था। इन लोगों ने सब जगह से खदेड़े जाने पर, राशेल में आश्रय ग्रहण किया। फ्रांस देश में अब केवल यही नगर इंगलैंड के हाथ में रह गया था। यह नगर अंतिम बंदरगाह था, जिसके द्वारा इंगलैंड, योरप में पदार्पण कर सकता था। अतः इस नगर का फ्रांस के हाथ में चले जाने का अर्थ यह था कि इंगलैंड के लिये योरप का द्वार सदा के लिये बंद कर दिया जाय। अपनी इसी महत्ता के कारण राशेल राजनैतिक कुचक्रों और षडयंत्रों का आगार बना हुआ था।

रिचलू इन कुटिल चालों का सूत्रधार था। उसका हृदय फ्रांस की राजमहिषी पर अनुरक्त था। वह रानी की प्रेम-दृष्टि पर विजय पाना चाहता था; परंतु इंगलैंड के वकिंघम ने उसकी इस तृष्णा पर कुठाराघात किया। एक शत्रु-दल के विदेशी व्यक्ति को बाज़ी मार ले जाते देखकर, फ्रांस का प्रसिद्ध आमात्य रिचलू रानी के हृदय पर चोट पहुँचाने के लिये कमर कसकर तैयार हो गया। पहला आघात उसने हीरेवाली घटना द्वारा पहुँचाया; परंतु वह आर्तगान के कौशल द्वारा किस प्रकार विफलित हुआ? यह हम ऊपर देख चुके हैं। यह जीत इंगलैंड के महा-मंत्री वकिंघम के ही हाथ में रही। रिचलू हृदय मसोस कर रह गया। उसने अब की बार इससे भी अधिक प्रबल आघात पहुँचाने का विचार किया। उसने सोचा कि राशेल पर आक्रमण करके, वह केवल अपने देश के शत्रु ही पर विजय नहीं पायेगा वरन् अपने प्रतिद्वंदी से भी बदला ले सकेगा। रिचलू जानता था कि इंगलैंड से विरोध करने का अर्थ वकिंघम से विरोध करना था। इंगलैंड को परास्त करके वह यथार्थ में वकिंघम को परास्त कर रहा था और इंगलैंड को योरोप की दृष्टि में अपमानित करके वह राजमहिषी की दृष्टि में वकिंघम के महत्त्व को नष्ट कर रहा था।

वकिंघम भी इंलैंगड की प्रतिष्ठा की ओट में, अपने निजी स्वार्थों के साधन में लगा था। प्रतिकार की अग्नि उसके हृदय में भी तीव्र ज्वाला का रूप धारण कर रही थी। वह जानता था कि राज-दूत की हैसियत से वह फ्रांस में प्रवेश न कर सकेगा। इसी लिये उसके हृदय में यह महत्त्वाकांक्षा जाग्रत हुई कि अब वह विजयी की हैसियत से ही फ्रांस की भूमि पर पदार्पण करे। इस उद्देश्य के सिद्ध होने पर वह निशंक होकर रानी के सौंदर्य व प्रेम को प्राप्त कर सकेगा। इस प्रकार आस्ट्रिया की राजकुमारी, राजमहिषी एन की कृपा-दृष्टि को हस्तगत करके तथा केवल अपनी प्रेम-तृष्णा शांत करने के लिये ही दो प्रेमी योरप की दो विशाल राज्यों की विरोधनी शक्तियों के साथ राशेल के रण-क्षेत्र में उतर रहे थे।

इस युद्ध में पहली विजय वकिंघम को ही मिली। वह शत्रुओं को धोखा देकर चुपचाप एक रात में ६० जहाज़ और बीस हज़ार सैनिकों के साथ राशेल के निकटवर्ती समुद्र के किनारे आ धमका और थोड़े से रक्तपात के पश्चात् राशेल में प्रविष्ट हो गया। इस क्षणिक युद्ध में फ्रांस के एक प्रसिद्ध वैरन की मृत्यु हो गई। उसने एक डेढ़ साल की अनाथ लड़की छोड़ी थी। यही आश्रय-हीन छोटी लड़की आगे चल कर मैडम सेविग्नी के नाम से मशहूर हुई।

यहाँ से परास्त होकर फ्रांस के बचे हुए सैनिक लाग्री नामक क़िले में चले आये। इस घटना ने धर्माचार्य की कार्य-शीलता को और भी प्रोत्साहित किया। उसने रण-क्षेत्र में स्वयं पहुँचने के पूर्व ही राजा को कुछ सेना के साथ भेज दिया। आर्तगान इसी सेना के साथ आया था।

आर्तगान ने राशेल में आकर देखा कि उसके सब साथी पीछे रह गये हैं, वह यहाँ पर अकेला है। इतने थोड़े समय में वह किसी से मित्रता भी नहीं पैदा कर सका था। वह स्वभाव ही से संगी-साथियों

की सोहबत में रहने का आदी था, एकाकी जीवन से एक ही दिन में उसका जी ऊब उठा। नाना प्रकार की चिंतायें उसके मन में उदय होने लगीं। उसने सोचा कि जबसे वह पेरिस में आया है; तबसे सार्वजनिक प्रश्नों में ही उसे अधिक लिप्त रहना पड़ा है। इन्हीं उलझनों के कारण इतना भी अवकाश न मिला कि वह अपने निजी कामों के लिये कुछ प्रयत्न कर सके। उसके धन व पद की लालसा पीछे रह गई, प्रेम की आशा पर पानी पड़ गया। उसने केवल एक स्त्री को अपने हृदय में स्थान दिया है; परंतु दुर्भाग्य से वह भी ऐसी लापता हुई कि अभी तक उसका कुछ भी पता न लग सका। संपत्तिशाली बनने के प्रयत्न में उसको धर्माचार्य को अपना शत्रु बनाना पड़ा। इस प्रबल शत्रु द्वारा वह किसी भी समय नष्ट किया जा सकता है। यह बात आश्चर्य की अवश्य है कि उसने अभी तक ऐसा क्यों नहीं किया? इस उदारता के भीतर कोई गंभीर अर्थ छिपा हुआ है। कदाचित् उसके भाग्याकाश में या तो प्रकाशमान सूर्य की किरणें चमकेंगी या तमो-राशि एकत्रित होकर उसकी जीवन-आशा पर अंतिम प्रहार करेगी। इनमें से क्या होगा? यह भविष्य ही बतला सकता है। इन बातों को सोचकर उसका हृदय दहल उठा। उसके भयभीत हृदय को कँपाने के लिये एक बात और पैदा गई थी। वह म्लैडी की शत्रुता थी। इस स्त्री के पास वह प्रेम की याचना लेकर गया था; परंतु उसके स्थान में उसको नागिन की विषैली फुफकार मिली। जब मनुष्य चमकीले रंग पर मुग्ध होकर नागिन के पास जाता है, तो वह भीषण भुजंगिनी का रूप धारण करके उसके ऊपर हमला करती है। नागिन की यह रीति है कि वह विफल-प्रयत्न होने पर चुप्पी साधकर नहीं बैठ जाती, वरन् अपने प्रेमी के पीछे पड़ जाती है। उसको खिला-खिला कर मारना चाहती है। म्लैडी ठीक ऐसी ही नागिन थी। अब कौन-सा जाल उसके फाँसने के लिये रचा जा रहा है? यह वह नहीं जानता

था ; परंतु यह जानता था कि कोई-न-कोई जाल अवश्य रचा जा रहा है। आर्तगान का हृदय एक बार फिर दहल उठा।

इन्हीं सब बातों को सोचता हुआ आर्तगान एक सड़क पर जा रहा था। उसको यह न मालूम हुआ कि ख़ेमे से वह बहुत दूर निकल आया है। दिन डूब चला था, सूर्य की अंतिम किरणों सामने के वृक्ष-समूह पर पड़कर विचित्र आभा उत्पन्न कर रही थीं। धीरे-धीरे अंधकार ने पृथ्वी को प्रकाश-हीन कर दिया। आर्तगान ने अपने को एक घने जंगल के निकट पाया। वह वहाँ से लौट पड़ा। कुछ ही क़दम जाने पर उसकी निगाह के सामने कोई चीज़ चमकती हुई निकल गई। सनसनाहट की आवाज़ से वह पहचान गया कि यह गोली थी। आर्तगान यह शीघ्र समझ गया कि घनी झाड़ी के अंदर से शत्रु के अतिरिक्त और कोई इस प्रकार गोली क्यों चलायेगा? विपत्ति की आशंका ने उसको भयभीत कर दिया। वह वहाँ से हटकर सड़क की ओर मुड़ा ; परंतु उसने देखा कि सड़क के उसपार वाली झाड़ी से एक गोली सनसनाती हुई उसकी ओर आ रही है। फुर्ती से वह पीछे हट गया। वह समझ गया कि शत्रुओं ने चारों ओर से उसको घेर लिया है। छिपे हुए शत्रुओं का सामना करके वीरता दिखाना मूर्खता है। वीर और साहसी नदी में कूदकर अपना शौर्य नहीं दिखाते, उनकी परीक्षा का स्थान तो रण-क्षेत्र है। जहाँ वीरता से काम नहीं चल सकता, वहाँ बुद्धि-कौशल से भागकर आत्म-रक्षा करना निर्बलता का चिह्न नहीं है। आर्तगान भी विपत्ति को अपने सर पर मँडराते देखकर, तेज़ी से ख़ेमे की ओर भागा। जिस स्थान पर वह हटकर खड़ा हो गया था, यदि उस स्थल से वह भाग न खड़ा होता, तो उसकी जीवन-लीला समाप्त हो गई होती ; क्योंकि उसी समय एक गोली ठीक उसी स्थान पर आकर गिरी। वह भाग रहा था, तब भी गुप्त आक्रमणकारियों ने उस पर कई गोलियाँ चलाईं ; परंतु वार ख़ाली गये।

मौत के पंजे से बचकर, आर्तगान ने खेमे में आकर दम लिया। उसने अपने किसी भी बंधु-सैनिकों से इसका हाल नहीं बताया। अब आर्तगान को और भी सतर्क रहने की आवश्यकता पड़ गई, वह समझ गया कि म्लैडी ने अपना कार्य प्रारंभ कर दिया। म्लैडी के अतिरिक्त और कोई इसका घातक नहीं हो सकता। यदि अँगरेज़ विपक्षियों को ही हमला करना था, तो वे खुले मैदान वार करते? धर्माचार्य को इस जघन्य साधन के अवलम्बन करने की क्या आवश्यकता थी? जब कि वह अन्य सुगम उपायों से उसका बध करा सकता है।

आर्तगान की रात बड़ी बेचैनी से कटी। तीन या चार बार वह पलँग से उठ-उठकर खड़ा हो जाता था। उसको मालूम होता था कि कोई मनुष्य उसको मारने के लिये, उसके पलँग की ओर आता है; परंतु आँखें खुलने पर जब वह अपने कमरे में किसी भी मनुष्य को न देखता, तो अपने हृदय की निर्बलता पर लज्जित होकर, फिर पलँग पर जाकर लेट जाता। उसके हृदय की विचित्र अवस्था थी। रह-रहकर एक अज्ञात भय से वह रोमांचित हो उठता। किसी प्रकार सुबह हुई। आज वह अपने खेमे में ही रहा। अपने साथियों से यह बहाना किया कि उसकी तबियत कुछ अस्वस्थ है।

दूसरे दिन उसके सेना-नायक ए० सार्टी ने आकर यह ख़बर दी कि राजा को एक ऐसे पराक्रमी सैनिक की आवश्यकता है, जो वीरता तथा युद्ध-कौशल में सर्वथा निपुण हो और जो प्राणों के मोह को त्यागकर अवसर पर साहस दिखा सके। जो काम इस सैनिक के सिपुर्द किया जायगा, उसमें जीवन-हानि की संभावना है। मैं चाहता हूँ कि तुम इस काम को अपने हाथ में ले लो।

आर्तगान तो चाहता ही था कि चिंता-मुक्त होने के लिये वह किसी साहसिक योजना में संलग्न हो। मानसिक शिथिलता दूर

करने के लिये वह हमेशा ऐसे ही अवसर की ताक में रहता था। इससे शरीर में स्फूर्ति आती थी, दिल बहला रहता था और वीरत्व-प्रदर्शन का अवसर मिलता था। वह अत्यंत हर्षित हुआ।

उपरोक्त आवश्यकता इस कारण से आ पड़ी थी कि राशेल के निवासियों ने क़िले के उस अग्र-भाग पर अधिकार जमा लिया था जिसको राज-सेना दो दिन पूर्व ही जीत चुकी थी। अब इसके जानने की आवश्यकता थी कि कुछ लोग जाकर यह पता लगावें कि शत्रु किस भाँति उसकी रक्षा कर रहे हैं, वहाँ पर कोई रक्षक-सेना है या नहीं। इसका पता लगाना सरल नहीं था। प्राणों की परवा न करके ही लोग उसका पता लगाने के लिये वहाँ जा सकते थे। प्रत्येक सैनिक पर विश्वास नहीं किया जा सकता कि वह तोपों और बंदूको की बाढ़ के भीतर जाकर इसका पता लगावे।

बादशाह ने फ़ौज के सम्मुख आकर यह घोषणा की कि हमको इस काम के लिये चार सैनिकों की आवश्यकता है पाँचवें उस व्यक्ति की जो कि इस समय पर नायक का पद ग्रहण कर सके। आर्तगान आगे निकल आया और तलवार उठाकर उच्च-स्वर में कहा—"मेरे साथ मरने के लिये चार सैनिक निकल आवें।" शीघ्र ही दो उसके जत्थे के और दो अन्य सैनिक उसके पास आकर खड़े हो गये।

आर्तगान अपने अधीनस्थ सैनिकों को साथ लेकर, क़िले की ओर चल पड़ा। ये लोग खाँई की ओट में होकर चलने लगे। आर्तगान बीच में हुआ—दो सैनिक आगे और दो पीछे चले। सौ क़दम के फ़ासले पर जब क़िला रह गया, तो आर्तगान की निगाह पीछे की ओर गई। पीछे वाले दो सैनिक ग़ायब थे। उसने सोचा कि कदाचित् भय के कारण ये लोग पीछे रह गये हैं। यह विचार कर वह आगे बढ़ा चला गया। निकट पहुँचने पर आर्तगान ने देखा कि क़िले का अग्र भाग ख़ाली पड़ा है। तीनों वहीं पर रुक कर यह सोचने लगे कि अब

आगे बढ़ना चाहिए या नहीं। इसी समय उन्होंने देखा कि आकाश से एक आग का गोला उनकी ओर चला आ रहा है, क्षण भर में एक दर्जन भर गोलियाँ इन लोगों के चारों ओर आकर बिखर गईं, धुएँ से वे लोग ढक गये।

उनका उद्देश्य सिद्ध हो गया, वे जान गये कि क़िले में शत्रु-दल डटा है। अब वहाँ अधिक ठहरना, प्राणों से व्यर्थ में हाथ धोना था। वे लोग लौट पड़े और तेज़ी से ख़ेमे की ओर लपके। खाँई के निकट पहुँचने पर, एक सैनिक धम से गिर पड़ा। एक गोली उसके सीने के पार हो गई थी। यह देखकर दूसरे सैनिक ने अपनी चाल और भी तेज़ कर दी। आर्तगान अपने साथी को ख़तरे में छोड़कर भागना नहीं चाहता था, उसने झुककर उसको उठाने का प्रयत्न किया। इसी समय दो बन्दूक़ें दगीं। एक गोली आहत-व्यक्ति के शिर में आकर लगी और दूसरी आर्तगान के कान के पास से सनसनाती हुई निकल गई।

आर्तगान ने देखा कि ये गोलियाँ क़िले की ओर से नहीं आई हैं वरन् खाँई की ओर से चलाई गई हैं। यह किसी नये शत्रु का काम है। उसके दिमाग़ में दो रोज़ पूर्व की घटना दौड़ गई। उसको यह भी ख़याल आया कि अभी दो सैनिक उसका साथ छोड़ कर पीछे रह गये हैं। उनका यह कार्य कुटिलता से ख़ाली नहीं है। म्लैडी की शत्रुता ने उसके नाश के निमित्त घातकों का जाल-सा पैदा कर दिया है। अवश्य ही यह आक्रमण इन्हीं सैनिकों का काम है। इस अवसर पर उसको मारकर, वे सरलता से यह प्रकट कर सकते हैं कि क़िले के शत्रुओं के द्वारा उसकी मृत्यु हुई है। अपने इन विचारों की परीक्षा करने के लिये आर्तगान मृत-सैनिक की बग़ल में लेट गया जिससे आक्रमणकारी उसको मरा हुआ समझकर अपने आक्रमण के परिणाम को देखने के लिये उसके निकट आवें।

आर्तंगान का संदेह सत्य निकला। दो सैनिकों के शिर खाँई के ऊपर दिखलाई दिये। लाशों को देखकर वे धीरे-धीरे अपने स्थान से चले। जब वे कुछ निकट आये, तो क्षण भर में आर्तंगान उठकर उन पर झपट पड़ा। उक्त सैनिक शीघ्रता में अपनी राइफलें न भर सके थे। इस अप्रत्याशित आक्रमण के लिये वे तैयार भी न थे। बंदूक़ों को लाठी की तरह इस्तेमाल करके आत्म-रक्षा करने लगे। आर्तंगान भूखे शेर की भाँति उनपर झपटा। उनमें से एक मौक़ा पाकर क़िले की तरफ़ भागा; परंतु क़िले के शत्रुओं की गोली का शिकार होकर थोड़ी दूर जाकर ढेर हो गया। इसी बीच में आर्तंगान ने अपने घातक को ज़मीन पर गिरा दिया और उसकी छाती पर चढ़ बैठा। गले पर कृपाण अड़ी हुई देखकर, हत्यारा भय खाकर चिल्ला पड़ा—"मुझे क्षमा करो! मारो मत! मैं सब रहस्य खोले देता हूँ?"

'रहस्य' शब्द ने आर्तंगान को चौंका दिया। "क्या कोई ऐसा रहस्य है, जिसका मूल्य तुम्हारा प्राण-दान हो सकता है?"

"अवश्य! यदि तुम्हारे जैसे वीर और सुंदर युवक को जीवन कुछ भी प्यारा है, तो यह रहस्य तुम्हारे अत्यंत हित का है।"

इसपर आर्तंगान ने तलवार हटा ली। परास्त सैनिक ने कहा—"मैं और मेरा अन्य साथी इस काम के लिये म्लैडी द्वारा नियुक्त किये गये हैं। हमको सौ सुवर्ण सिक्के इसके लिये मिले थे। मेरे साथी के पास म्लैडी का अभी एक पत्र आया था। इसी पत्र के कारण हमको अपने उद्देश्य के पूरा करने में जल्दी करनी पड़ी। हम अवसर की ताक ही में थे कि दैवयोग से यह अवसर मिल गया; परंतु अब मुझे अपने व्यापार से घृणा हो गई है। आपके प्राण-दान ने मुझे आपका चिर-कृतज्ञ बना लिया है। आजसे मुझे आप अपना अंग-रक्षक समझिए।" आर्तंगान ने उसको क्षमा कर दिया। वह अपने मित्र साथी की जेब से निकालकर पत्र लाया। आर्तंगान ने पढ़ा—

"अभी तुम एक भूल कर चुके हो, वह स्त्री तुम्हारी असावधानी ही के कारण हाथ से निकल गई और अब धर्म-मठ में मौजूद है, क्या ऐसी ही सावधानता से काम करोगे ? कम-से-कम अब यह मनुष्य किसी प्रकार न बच सके, ऐसा ही प्रयत्न करना। यदि इस काम में ज़रा भी शिथिलता आई, तो याद रखना कि मेरी पहुँच बड़ी दूर-दूर तक है और मेरा बदला बड़ा कठोर है।"

पत्र हस्ताक्षर-रहित था। आर्तगान को यह समझने में देर न लगी कि यह किसका लिखा था। ग्लैडी के अक्षर स्पष्ट प्रकट हो रहे थे। पत्र में वर्णित स्त्री के विषय में पढ़कर आर्तगान के हृदय में विचित्र कुतूहल और जिज्ञासा के भाव उदय हुए। उसने सैनिक से पूछा कि इस पत्र में किस स्त्री का निर्देश किया गया है ? सैनिक ने कहा कि यह बोनैसी की पत्नी और आपकी प्रेमिका है। ग्लैडी ने इस पर भी निगाह रखने के लिये हमको नियुक्त किया था। हमको यह आदेश था कि उसको पकड़कर हम ग्लैडी के मकान पर पहुँचा दें। हम इसी उद्देश्य के लिये एक दिन निकले; परंतु शराबख़ाने में रुक जाने के कारण देर से पहुँचे, तब तक कांसटेंस की गाड़ी निकल चुकी थी।

आर्तगान का हृदय ग्लैडी के भीषण प्रतिकार की लालसा को देखकर भय और आश्चर्य से भर गया। विकट प्रतिहिंसा ने इस स्त्री को इतना उन्मत्त बना दिया कि उसकी इच्छा मुझे ही मार कर शांत होना नहीं चाहती, प्रत्युत मुझसे संबंध रखनेवाली प्रत्येक वस्तु को भी पूर्णतया नष्ट करने में तत्पर है। धर्माचार्य द्वारा यह उसको मालूम हुआ होगा कि मैं कांसटेंस से प्रेम करता हूँ। मालूम होता है कि मेरे विषय में अब वह सब भेदों से परिचित हो गई है। परंतु उसको संतोष यह जान कर हुआ कि उसकी प्रेमिका अब निरापद स्थान में पहुँच गई और उससे भेंट करने का कोई-न-कोई उपाय ढूँढ़ा जा सकता है।

इस घटना ने उसको जितना विषाद पहुँचाया था, उतना ही अब वह प्रसन्न था। मरे हुए सैनिक के ऊपर मृतकों की लाशें लादकर, आर्तगान अपने खेमे में वापस आया। उसने सत्य बातें छिपा लीं। यही प्रकट किया कि शत्रुओं की गोलियों द्वारा उसके साथी मारे गये। राजा तथा अन्य सैनिक आर्तगान को सुरक्षित लौटते हुए देखकर अत्यंत हर्षित हुए। राजा आर्तगान की वीरता पर पहले से मुग्ध था ही, इस बार उस पर और भी अनुकूल प्रभाव पड़ा। उसने प्रसन्न होकर आर्तगान को खूब पुरस्कृत किया। सेना में आर्तगान का सम्मान तथा गौरव और भी बढ गया।

३३

दो दिन यों ही बीत गये। आर्तगान को अभी तक अपने मित्रों का कोई समाचार नहीं मिला था। उसको एक नवीन चिंता ने आ घेरा, क्या कारण है कि मित्रों ने एक पत्र तक न भेजा, वे किसी नई विपत्ति में तो नहीं फँस गये। इसी भाँति की अनेक दुश्चितायें उसके मस्तिष्क में उदय होने लगीं। इसी प्रकार एक दिन और बीत गया। दूसरे दिन उसको एक पत्र मिला। उसने बड़ी आतुरता के साथ उसको पढ़ा—

"मेरे मकान पर एक निमंत्रण में तुम्हारे तीनों मित्र आये थे। शराब पीकर उन्होंने इतना ऊधम मचाया कि भीषण अशांति की आशंका करके पुलिस-अफ़सर वहाँ दौड़ा आया और तीनों को नज़र-बंद कर लिया। अंतिम समय तुम्हारे मित्रों ने यह अंतिम इच्छा प्रकट की थी कि इस बढ़िया शराब की एक दर्जन बोतलें हमारे मित्र आर्त-गान को भेज देना। उन्हीं के आदेश का पालन करने के लिये मैं ये बोतलें भेज रहा हूँ। इस प्रिय शराब को उनके स्वास्थ्य के लिये पान करना।"

विनीत—

गोडी—राज-सैनिकों का खाद्य-प्रबंधक

पत्र पढ़कर आर्तगान को हर्ष और विषाद दोनों हुए। विषाद इस बात का कि उसके मित्र विपत्ति-ग्रस्त हैं और हर्ष इस बात पर हुआ कि आपत्ति के समय भी उनको मेरे सुख-साधन का इतना ख़्याल रहा। उसकी इच्छा हुई कि वह अपने मित्रों की मुक्ति के लिये कुछ प्रयत्न करे; परंतु वह ऐसी परिस्थिति में है कि राशेल के बाहर जाना उसके लिये असंभव है। यहाँ रहते हुए किसी अन्य साधन द्वारा भी उनको सहायता पहुँचाना उसके लिये दुष्कर है। इधर उसको यह भी विश्वास था कि उसके मित्र अपने उद्योग और पराक्रम से स्वयं मुक्त हो जायँगे, उनके इच्छा-मात्र करने पर कोई भी विशाल शक्ति उनको बंधन में नहीं रख सकती। यही सोच-विचार कर, वह चुप तो हो रहा; परंतु उसके चेहरे पर एक गहरी चिंता झलकने लगी।

अपने मित्रों के उपहार का सदुपयोग करने के लिये उसने अपने कुछ सैनिक-साथियों को एक भोज देने का विचार किया। अगला दिन इसके लिये निश्चित किया गया। खाद्य-प्रबंध का भार प्लेंचेट के शिर पर पड़ा। इस पद को पाकर वह अत्यंत हर्षित हुआ। कौन-कौन-सी सामग्री भोज में प्रस्तुत की जानी चाहिए? इसके निर्वाचन में अब मैं अपने संचित कौशल का परिचय दे सकूँगा, अभ्यागतों के सामने-अपने अधीनस्थों को विवेक-पूर्ण आदर्श दे-देकर जब अपनी प्रकांड प्रबंध-शक्ति से उनको चकित कर दूँगा, तो उनकी दृष्टि में मेरा गौरव कितना अधिक बढ़ जायगा। यह सोचकर प्लेंचेट गर्व से फूल उठा। उसने अपनी सहायता के लिये दो सेवक चुन लिये, इनमें से एक वही पूर्व परिचित छद्मवेशी सैनिक था। अपने उद्देश्य में असफल होकर और आर्तगान से क्षमा-याचना करने पर, अब उसने आर्तगान ही के चरणों में पड़े रहना निश्चित कर लिया था। इसका नाम ब्राइंट था।

भोज का समय निकट आने पर निमंत्रित व्यक्ति धीरे-धीरे आने

लगे। मेज़ों पर स्वच्छ वस्त्र बिछाया गया और उस पर विधिवत् तश्तरियाँ रक्खी गईं। तौलिया लेकर प्लेंचेट सेवा के लिये खड़ा हो गया। एक सेवक ने बोतलें कार्क खोल-खोलकर मेज़ों पर रख दीं। ब्राइंट ने प्यालों में शराब उँडेल-उँडेल कर भर दी, शराब की सुगंध कमरे भर में छा गई, अतिथियों की लोलुप-दृष्टि शराब के प्यालों के ऊपर जम गई। इतनी बढ़िया शराब उन्होंने कभी स्वप्न में भी नहीं पी थी। उसके लाल-चमकीले रंग से सबके नेत्र अनुरंजित हो गये। किसी प्रकार भोज शीघ्र प्रारंभ हो और प्याले सबके ओठों तक पहुँचें, इसके लिये सबके चित्त छटपटाने लगे। बढ़िया स्वादिष्ठ शराब को देखकर ब्राइंट का चित्त डाँवा-डोल हो गया, उसकी कुत्सित-लालसा इतनी तीव्र हो गई कि वह अपनी इच्छा को न रोक सका। मुँह में पानी भर आया। चखने के बहाने से उसने सब बोतलों की तलघट उँडेल कर एक प्याले में भरली और अतिथियों की निगाहें बचाकर पी गया। आर्तगान ने देख लिया। उसने एक टेढ़ी-दृष्टि उसकी ओर फेंकी; परंतु उस समय बोलना उचित न समझ कर चुप रहा। धीरे-धीरे भोजन प्रारंभ होने का समय आ गया। लोगों के हाथ प्यालों पर पड़ने ही वाले थे कि इसी समय बाहर बड़ा भारी हल्ला होता हुआ सुनाई दिया। लोगों ने यह समझा कि कदाचित् शत्रुओं ने हमला कर दिया है? इसी आशंका से सब घबड़ा कर नंगी तलवारें निकाल-निकाल कर बाहर निकल पड़े। आर्तगान सबसे आगे था; परंतु ये लोग मुश्किल से दहलीज़ से बाहर हुए होंगे कि 'राजा की जय हो', 'धर्माचार्य की जय हो' इस जयोल्लास से सारा अकाश गूँज उठा, ढोल, दमामे और बंदूकों के छूटने की आवाज़ें आने लगीं। बाहर आकर आर्तगान ने देखा कि राजा की अवशिष्ट सेना, धर्माचार्य की अधीनता में आ रही है। उसके तीनों मित्र गर्वोन्मत्त चाल से घोड़ों को दौड़ाते हुए आगे

चले आ रहे हैं। उसका हृदय हर्ष से उन्मत्त हो गया, चेहरा चमकने लगा।

थोड़ी देर में स्वागत-सत्कार के बाद, चारों मित्र प्रसन्न हो-होकर गले मिले। आनंद से प्रेरित होकर आर्तगान ने कहा—"आप लोग ख़ूब आये, इससे अधिक उत्तम समय और क्या हो सकता है? भोजन अभी किंचित्-मात्र भी ठंडा न हुआ होगा।"

पार्थ ने उच्च-स्वर में हँसकर कहा—"अहा! हा! हा! मालूम होता है आज भोज है?"

'मित्र आर्तगान! मुझे विश्वास है कि इस भोज में रमणियाँ न होंगी।' अर्मस ने यह कहकर पार्थ की ओर कनखियों से देखा। पार्थ मुस्करा दिया।

अथास ने कहा—"मित्र! क्या इस भोज में कोई पीने योग्य शराब भी है?"

आर्तगान—"शराब तो तुम्हारी ही भेजी हुई है?"

अथास आश्चर्य में हो गया, उसने कहा—"हमारी भेजी हुई शराब!"

आर्तगान समझा कि अथास परिहास कर रहा है। उसने हँसकर कहा—"मुझसे छिप नहीं सकते! शराब तुम्हीं लोगों की भेजी हुई है।"

अथास का चेहरा गंभीर होता जाता था, उसने कहा—"यह क्या बकते हो? हमने कभी शराब नहीं भेजी।" यह कहकर उसने अर्मस और पार्थ की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि डाली। सब आश्चर्य में हो गये। उन्होंने कहा हमने नहीं भेजी। आर्तगान को मित्रों की चेष्टा में परिहास की कोई बात दिखलाई नहीं दी। उनके गंभीर आश्चर्य-पूर्ण मुख-मंडल बतला रहे थे कि वे असत्य नहीं कह रहे। आर्तगान बड़े असमंजस में पड़ा, उसने कहा—"यह सत्य है कि तुम लोगों ने स्वयं

नहीं भेजी; परंतु तुम्हारे ही आदेश पर राजसेना के खाद्य-प्रबंधक गोडी ने भेजी है, अभी कल ही तो पार्सल आया है।"

अथास—"हमने कोई ऐसा आदेश नहीं दिया। इसकी हमको आवश्यकता ही क्या थी?"

पार्थ—"ओह! इतने विवाद की ज़रूरत ही क्या है? कहीं से आई हो! आओ! चखकर देखें कि वह कैसी है, यदि स्वादिष्ट है, तो उसके पीने में हर्ज़ ही क्या है?"

अथास—"नहीं! एक अज्ञात-व्यक्ति की भेजी हुई शराब को हमें कभी न पीना चाहिए?"

पार्थ और आर्तगान को इस कथन में बहुत सार मालूम पड़ा। आर्तगान ने अपने मित्रों को ख़त निकालकर दिया। पत्र की लिखावट पर दृष्टि पड़ते ही अथास चिल्ला पड़ा—"धोखा है! यह लिखावट गोडी की नहीं है, उसकी लिखावट को तो मैं अच्छी प्रकार पहचानता हूँ।"

अर्मस ने कहा—"आर्तगान! तुमने यह कैसे विश्वास कर लिया कि हमने उपद्रव किया और हम नज़रबंद कर दिये गये।"

आर्तगान के मुख का रंग पीला पड़ गया, उस पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। अथास चिल्ला उठा—"तुम्हें क्या हुआ? चेहरे का रंग क्यों उड़ गया?"

आर्तगान—"एक संदेह मेरे मन में दौड़ रहा है! क्या यह उस दुष्टा म्लैडी का कोई नया कुचक्र तो नहीं है!" यह कह कर आर्तगान तेज़ी से कमरे की ओर दौड़ा, अथास इत्यादि भी उसी ओर लपके।

कमरे में पहुँचते ही सब से पहले आर्तगान की दृष्टि ब्राइंट पर पड़ी। ब्राइंट फ़र्श पर उलटा पड़ा था, मुँह से झाग निकल रहे थे और सारा शरीर तेज़ी से ऐंठ रहा था। प्लेंचेट ने उसको सँभालने का भरसक प्रयत्न किया; परंतु उसकी सब सहायता व्यर्थ सिद्ध हुई।

बेचारा ब्राइंट पड़ा हुआ जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिन रहा था, मौत उसके सामने खड़ी थी। इस भयानक दृश्य को देखकर, सब मित्र अवाक् रह गये। इसका कारण उनकी समझ में प्रत्यक्ष आगया इस बात से वे सुखी अवश्य हुए कि आर्तगान इस विषम-परिणाम से बच गया; परंतु एक निर्दोष व्यक्ति उनके नेत्रों के सामने मर रहा है। इस बिचार ने उनके हृदय में असीम व्यथा पहुँचाई। ब्राइंट करवटें बदल-बदलकर कराह रहा था, असह्य-वेदना से उसकी नस-नस तन्ना रही थी। उसके शरीर में विष का प्रकोप उग्र-रूप में व्याप्त हो चुका था, धीरे-धीरे उसकी शक्ति घटने और संज्ञा लोप होने लगी आँखों के डेले ऊपर चढ़ गये और मुख की चेष्टा बिगड़ गई। आर्तगान पर दृष्टि डालते हुए, हाथ जोड़ने का प्रयत्न करते हुए उसने अंतिम बार कहा—"क्ष···मा···पा···पी···दंड···मिला।"

आर्तगान का चेहरा काला पड़ गया था, पैर डगमगाने लगे, वह बैठ गया, नेत्रों से आँसू बहाते हुए उसने अत्यंत करुण-स्वर में कहा—"क्षमा! ईश्वर-तुमको क्षमा दे, तुम्हारी आत्मा को स्वर्ग प्राप्त हो।"

चारों मित्र रो रहे थे। इस भीषण घटना ने शोक का वायुमंडल उत्पन्न कर दिया था। भोज में निमंत्रित सज्जन विषाद-पूर्ण हृदयों के साथ, निराश होकर, अपने-अपने ख़ेमों को लौट गये।

३४

थोड़े ही दिन के पराक्रम और रण-कौशल से फ्रांसीसियों ने अँगरेज़ों को बहुत दूर तक खदेड़ दिया। राशेल-निवासी पराजित हो गये, क़िला उनके हाथ से छीन लिया गया। इस विजय का सेहरा धर्माचार्य के सिर बँधा। उसकी राजनैतिक चालें सफल हो गईं। वकिंघम पर विजय पाकर, धर्माचार्य को कितना आनंद हुआ? यह बतलाना कठिन है। वकिंघम इंगलैंड वापस चला गया। उसके ख़ेमे को फ्रांसीसियों ने लूट लिया। वकिंघम भागने की जल्दी में अपना ज़रूरी सामान भी न ले जा सका था। बाद को जो लूट-मार मची, उसमें बहुत-सी मूल्यवान् वस्तुयें धर्माचार्य के हाथ लगीं। इनमें से कुछ ऐसे काग़ज़ात थे, जिनसे उसका संबंध फ्रांस की राजमहिषी से पूर्णतया सिद्ध होता था। इनमें कुछ पत्र यह भी प्रमाणित करते थे कि फ्रांस के विरुद्ध इटली, जर्मनी, स्पेन आदि देशों ने एक संगठन स्थापित किया है, जिसका उद्देश्य फ्रांस की जड़ को खोदना है। इन पत्रों को पाकर, धर्माचार्य के हर्ष की सीमा न रही, वह इंगलैंड और वकिंघम के गौरव को नष्ट करने के दृढ़ मंसूबे बाँधने लगा।

अथास चौंक पड़ा। उसके आश्चर्य की सीमा न रही, उसने झुक कर कहा—"धर्माचार्य की जय हो!" उसके मित्रों ने भी यही उच्च घोष किया। तब अथास ने कहा—"हुज़ूर! मेरा नाम अथास है!" धर्माचार्य ने अपने अनुचर को संकेत करके कहा—ये तीनों राज-सैनिक हमारे पीछे चलें। और बहुत धीमे स्वर में कहा—"मै यह प्रकट नहीं करना चाहता कि मैं ख़ेमे से अनुपस्थित हूँ, इन लोगों को साथ रखने से यह बात छिपी रहेगी।"

अथास के कान में यह बात पड़ गई। उसने कहा—"हम कुलीन और भद्र व्यक्ति हैं। हम एक रहस्य को गुप्त रख सकते हैं। और श्रीमान् हमको सदा विश्वास-पात्र ही पायेंगे।"

धर्माचार्य ने इस गर्वशील वक्ता पर तीव्र-दृष्टि डालते हुए कहा—"अथास! तुम्हारे कान बहुत तेज़ हैं; परंतु अपने साथ रखने का कारण यह नहीं है कि मैं तुम लोगों पर अविश्वास करता हूँ। तुम्हारे रहने से मेरी हिफ़ाज़त रहेगी। तुम्हारे साथी अर्मस और पा' ही हैं न?"

"हाँ! श्रीमान्।" यह कहकर तीनों व्यक्ति धर्माचार्य के पी' लिये। सब लोग चल पड़े।

धर्माचार्य पूर्वोक्त होटल के पास आकर रुक गया। मालू' था कि होटल-स्वामी आगंतुकों तथा उनके आने के निश्चित स' जानता था; क्योंकि होटल के सामने से सब भीड़ पहले ही 'दी गई थी और मार्ग साफ़ कर दिया गया था। धर्माचा' 'ढ कर द्वार को खटखटाया। द्वार खोल कर शीघ्र ही एक 'य बाहर निकल आया। इन दोनों में कुछ क्षण 'ीरे कानाफूँसी होती रही। बातचीत करने 'पाकर वह व्यक्ति वहाँ से ख़ेमे की ओर चल 'र्य ने होटल-स्वामी से कहा कि इन तीन'

किसी उत्तम स्थान में यहाँ कुछ देर आराम कराओ और उन तीनों से कहा कि आप लोग यहाँ थोड़ी देर विश्राम करें, मैं एक आवश्यक कार्य से निवृत्त होकर अभी आता हूँ। यह कहकर धर्माचार्य होटल की ऊपरी मंज़िल जानेवाले ज़ीने की सीढ़ियों पर चढ गया। हमारे मित्र नीचे एक कमरे में विश्राम करने लगे।

तीनों राज-सैनिकों को अत्यंत आश्चर्य हुआ कि धर्माचार्य के यहाँ आने का क्या कारण है। इसमें अवश्य कोई गुप्त भेद है। होटल-स्वामी से बहुत कौशल-पूर्वक बातें करने पर, उनको इतना मालूम हुआ कि एक अत्यंत सुंदरी रमणी यहाँ पर कई दिन से ठहरी हुई है। धर्माचार्य उसी से भेंट करने आये हैं। इस बात ने उनके संदेह को और भी बढ़ा दिया, वे इस रहस्यमयी भेंट के विषय में नाना प्रकार की तर्कनायें करने लगे। होटल-स्वामी को इससे अधिक और कुछ न मालूम था। अथास चिंता-मग्न होकर इधर-उधर टहलने लगा।

टहलते-टहलते कई बार वह कमरे के बाहर लगे हुए एक पाइप निकट होकर गुज़रा। यह पाइप किनारे से टूटा हुआ था, इसका ा किनारा ऊपर के एक कमरे में लगा हुआ था। जितनी बेर प्त पाइप के पाससे निकला, उसको उसमें से कुछ हल्की फुस- ो आवाज़ बाहर आती हुई सुनाई पड़ी। उसका ध्यान पहले र नहीं गया; परंतु बार-बार उसके पास से गुज़रने पर, जब उस निकलते हुए कुछ अस्पष्ट शब्द उसके कान में पड़े, तब उसका ओर खिंच गया। कुछ क्षण ध्यान देने पर उसको माल ऋ मनुष्य ऊपर बातचीत कर रहे हैं, उन्हीं के शब्द नेकल रहे हैं। उसने अपने अन्य साथियों को सं ख़ामोशी से बैठकर, तमाशा देखने को कहा—औ लगा दिये। धर्माचार्य का स्वर और किसी

रमणी का मधुर कंठरव सुनाई पड़ा, दोनों में यह वार्तालाप हो रहा था—

"सुनो, ग्लैडी ! यह मामला बड़े महत्त्व का है, बैठकर सुनो, यह ध्यान देने योग्य है। 'ग्लैडी' शब्द ने अथास को चौंका दिया। इसके बाद यह रमणी-स्वर सुनाई पड़ा—

"मैं श्रीमान् की बातों को बड़े ध्यान से सुन रही हूँ।"

इस स्वर से अथास फिर चौंक पड़ा। उसको प्रतीत हुआ कि यह स्वर उसका परिचित-सा है। उसने बड़े ध्यान से सुना—

"एक छोटा-सा अँग्रेज़ी जहाज़ तुम्हारी प्रतीक्षा में रुका हुआ है। जहाज़ का कप्तान हमारे पक्ष में है, जहाज़ कल प्रातःकाल यहाँ से छूट जायगा।"

"तो मुझे आज ही रात को वहाँ पहुँच जाना चाहिए ?"

"फ़ौरन् ! मेरी बातचीत समाप्त होने के बाद ही तुमको वहाँ पहुँच जाना चाहिए। दो आदमी होटल के बाहर तुमको मिलेंगे, जो हिफ़ाज़त के साथ तुमको समुद्र तक पहुँचा देंगे। यहाँ से मेरे चले जाने के आध घंटा बाद तुम रवाना होना।"

"अच्छा ! श्रीमान् ! लेकिन मुझे अब क्या करना होगा ? यह स्पष्ट समझा दीजिए, जिससे मुझसे किसी प्रकार की भूल न हो सके।"

इसके बाद कुछ क्षणों तक बिल्कुल ख़ामोशी छाई रही। यह प्रतीत होता था कि धर्माचार्य उन शब्दों को तौल रहे थे, जिनके द्वारा वे अपना अभिप्राय ग्लैडी पर प्रकट करना चाहते थे। कुछ देर बाद धर्माचार्य ने कहा—"तुमको लंदन जाकर वकिंघम से मिलना होगा।"

ग्लैडी—"परंतु मैं एक बात यहाँ पर प्रकट कर देना चाहती हूँ, हीरेवाले मामले से वकिंघम मुझपर संदेह करता है।"

धर्माचार्य—"किंतु इस बार तुमको उसे धोखा देने की ज़रूरत न होगी, तुम शांति-स्थापक (Negotiation) की हैसियत से

निर्भीकता-पूर्वक उससे मिलना क्योंकि संधि-विषयक सब वार्तालाप हमको खुल्लम-खुल्ला करना पड़ेगा ।"

"मैं श्रीमान् के आदेश का पालन अक्षरशः करूँगी ।"

"मेरी ओर से बकिंघम से मिलना, उससे कहना कि मैं उनकी सब चालों और प्रत्येक प्रकार की तैयारी से ख़ूब परिचित हूँ। मैं जानता हूँ कि उनके सब उद्योग असफल होंगे ; क्योंकि ज्योंही उन्होंने अपने उद्योग के अनुकूल कार्य करना प्रारंभ किया त्योंही मैं राजमहिषी के नाश का उपक्रम कर दूँगा ।"

"परंतु क्या वह श्रीमान् की इन धमकियों से प्रभावित हो सकते हैं ?"

"अवश्य, क्योंकि मेरे पास इसके प्रमाण मौजूद हैं ?"

"परंतु मुझे भी इन प्रमाणों से अवगत होना ज़रूरी है ।"

"निस्संदेह ! तुम उससे कहना कि लोवर में श्रीमती कार्मोला के सायंकालिक भोज में राज-महिषी और उसके साथ जो प्रेम-वार्तालाप हुआ उसका पूरा वर्णन मेरे अधिकार में है। उसकी घोषणा मैं संसार में सरलता के साथ कर सकता हूँ। इसका अधिक प्रत्यक्ष प्रमाण यदि वह चाहे, तो बतला देना कि वहाँ पर वह मुग़ल शाहज़ादे के भेष में गया था। इस पोशाक को उसने एक बैरन से जो स्वयं इसको धारण करके आने वाला था ३००० सिक्के में ख़रीद किया था । उससे कह देना कि मैं यह भी जानता हूँ कि एक बार वह राजमहल में इटली के भविष्य-वक्ता के वेष में राजमहिषी से मिला था। उस बार वह सफ़ेद लबादा पहन कर गया था, उस लबादे पर जीवन, मृत्यु और श्मशान के वीभत्स दृश्य चित्रित थे ।"

"बस, यही दो प्रमाण हैं न ?"

" नहीं ! नहीं ! अभी और हैं ! उससे कह देना कि अमींस नगर की प्रेम-मिलन संबंधी बातें भी मुझे अच्छी प्रकार मालूम हैं। मैं उस

पुष्प-वाटिका के प्रत्येक वृक्ष, गुल्मलता, पुष्प और पत्ते-पत्ते तक का हाल बता सकता हूँ। चाँदनी रात्रि में, उस प्रेम-भोज में कौन-कौन उपस्थित था ? इन सबके चित्र मैं उपस्थित कर सकता हूँ। उससे यह भी बतला देना कि मांटेग मेरे क़ब्ज़े में है और वह आजकल वेस्टाइल की प्रसिद्ध जेल में मौजूद है। यह सत्य है कि उसके पास कोई पत्र नहीं निकले ; परंतु कठोर यंत्रणा के नीचे पड़कर, वह एक शब्द भी छिपा न सकेगा। अभी और सुनो—बकिंघम से यह भी कहना कि राशेल से भागते समय वह अपने ख़ेमे में मैडेम कैब्रीज़ का एक महत्वशाली पत्र भूल गया है। वह पत्र रानी के लिये बहुत अनिष्टकारी है ; क्योंकि उससे केवल यही नहीं सिद्ध होता कि फ्रांस की रानी, फ्रांस के राजा के साथ प्रेम नहीं करती वरन् उससे यह भी स्पष्ट प्रमाणित होता है कि वह फ्रांस के शत्रु के साथ मिलकर, अपने देश के विरुद्ध षडयंत्र में भी भाग ले सकती है।"

"मैं इन सब प्रमाणों को अच्छी प्रकार याद रक्खूँगी ; परंतु यदि इन सबको सुनकर भी वह अपनी स्वाभाविक दृढ़ता से विचलित न हुआ ; तो मुझे क्या करना होगा ?"

"यह असंभव है ! यदि वह इसपर भी अप्रभावित रहे, तो समझना होगा कि वह पागल है या अत्यंत मूर्ख है। उसके इस युद्ध का अभिप्राय केवल राजमहिषी का दर्शन करना है। यदि उसको यह निश्चय हो जावे कि इस युद्ध द्वारा उसकी प्रेमिका का गौरव, स्वतंत्रता तथा प्रतिष्ठा सब नष्ट होते हैं, तो वह युद्ध से अवश्य हाथ खींच लेगा।"

"परंतु मुझको प्रत्येक अवसर के लिये तैयार हो जाना चाहिए और यदि वास्तव में वह हठ करे तो...... ।"

"यदि वह हठ करे तो...... ।" धर्माचार्य के लिये इसका उत्तर देना अत्यंत कठिन मालूम हुआ, कुछ देर रुककर उसने कहा—"तो

हमको अन्य उपाय का आश्रय लेना पड़ेगा। यह वही उपाय है, जिसने राज्यों के भाग्यों में आश्चर्यकारी परिवर्तन उत्पन्न कर दिया है।"

"वह कौन उपाय है ?"

"व्यक्तिगत शत्रु को ढूँढकर, उसके द्वारा गुप्त प्राण नाश का उद्योग।"

"परंतु क्या भीषण दंड की आशंका, किसी भी व्यक्ति में ऐसा साहस उत्पन्न कर सकेगी ?"

"क्यों नहीं ? प्रत्येक युग और प्रत्येक देश में ऐसे मनुष्य मिलते हैं, फिर जिन देशों में धार्मिक भेद-भाव इतना अधिक मौजूद है, वहाँ तो धर्मांध मनुष्य शहीद होने की अपेक्षा किसी भी सुख को वांछनीय नहीं समझता।"

"यह सत्य है, मैं अपनी भूल स्वीकार करती हूँ।"

"इस समय एक ऐसी सुंदर और चतुर स्त्री को ढूँढना चाहिए, जो बकिंघम से रुष्ट होकर उसके प्राणों की ग्राहक बन गई हो, ऐसी स्त्री को सहायता देने से हमारा काम बख़ूबी सफल हो सकता है।"

"यह काम कोई कठिन नहीं है, मैं ऐसी स्त्री को ढूँढ़ लूँगी।"

"तुम्हारी चतुरता और तीक्ष्ण-बुद्धि पर विश्वास है, अच्छा अब और तुमको क्या चाहिए ?"

"मुझे एक ऐसी लिखित आज्ञा चाहिए, जिसमें मैं फ्रांस के हित संबंधी जो भी काम करूँ उन सबके लिये आपकी पूर्व-स्वीकृति अंकित हो।"

"यह मैं अभी लिखे देता हूँ।"

इसके बाद कुछ देर तक शांति रही। मालूम होता था कि धर्माचार्य आज्ञा-पत्र लिख रहा है। कुछ क्षण के बाद म्लैडी का कोमल स्वर सुनाई दिया—"इस पत्र से मैं आपके लिये सब कुछ कर सकूँगी।

परंतु अब मैं अपने मतलब की बात भी आपसे निवेदन करना चाहती हूँ।"

"क्या तुम्हारे भी कोई शत्रु हैं ?"

"मेरे दो विकट शत्रु हैं। आपकी ही सेवा करते हुए मैंने इनकी शत्रुता मोल ली है। इनके विरुद्ध आपकी सहायता की आवश्यकता है।"

"ये कौन लोग हैं ?"

"पहली एक नाटे क़द की स्त्री है, जिसका नाम कांसटेंस है।"

"परंतु वह तो मेंटीज़ की जेल में है ?"

"वह पहले वहाँ थी ; परंतु रानी ने राजाज्ञा प्राप्त करके, उसको वहाँ से मुक्त कर दिया और धर्म-मंदिर में भिजवा दिया है।"

"किस धर्म-मंदिर में ?"

"इससे मैं स्वयं अनभिज्ञ हूँ, यह भेद बड़े कौशल से गुप्त रक्खा गया है।"

"परंतु मुझसे कोई बात कब तक छिप सकती है ?"

"मुझे आशा है, मालूम होने पर मुझे आप अवश्य बतला देंगे ?"

"अवश्य !"

"दूसरा शत्रु इससे भी अधिक प्रबल और भयानक है। वह इस स्त्री का प्रेमी है।"

"उसका नाम क्या है ?"

"श्रीमान् उसे अच्छी तरह जानते हैं। वह हम दोनों का शत्रु है, यह वही है जिसने श्रीमान् की सेना के दो नायकों को अपमानित किया, श्रीमान् के दूत डी० वार्डीस के तीन घातक घाव पहुँचाये और जिसके उद्योग से वह हीरेवाला मामला असफल हो गया। उसको जब यह हाल मालूम हुआ कि बोनैसी की पत्नी का अपहरण मैंने किया है, तब से वह मेरे प्राणों का गाहक बन बैठा है।"

"ओह ! मैं समझ गया कि तुम्हारा इशारा किस व्यक्ति की ओर है ?"

"यह वही दुष्ट आर्तगान है।"

"वह बड़ा निडर युवक है।"

"उससे अधिक भयानक कदाचित् ही कोई हो ?"

"उसके विरुद्ध कार्य करने के लिये यह आवश्यक है कि मुझे उसके और वकिंघम के संबंध के कुछ प्रमाण मिलें।"

"प्रमाण ! प्रमाण मैं सैकड़ों प्रस्तुत कर सकती हूँ।"

"प्रमाण मिलने पर मैं उसको अत्यंत सुगमता के साथ बेस्टाइल की जेल भिजवा सकता हूँ।"

"परंतु मैं इससे कुछ और अधिक चाहती हूँ। मेरी इच्छा है कि उसको दण्ड देने का अधिकार मैं अपने हाथ में रक्खूँ।"

"इसमें मेरी कोई विशेष हानि नहीं है, तुमको इस दण्ड के विचार का अधिकार मैं प्रदान करता हूँ।"

"श्रीमान् की इस उदारता के लिये मैं सदा कृतज्ञ रहूँगी।" इसके बाद फिर सन्नाटा हो गया।

अथास इतना सुनकर फ़ौरन ही उठ खड़ा हुआ और मित्रों को बाहर चलने के लिये संकेत किया। बाहर आकर पार्थ ने आश्चर्य से पूछा—"वहाँ से चले क्यों आये ? सम्भव है अभी और बातें हों। हमको अन्त तक सुनना चाहिए।"

"अब कोई आवश्यकता नहीं, जितनी आवश्यक बातें होनी थीं सब हो चुकीं। मैं अब यहाँ नहीं ठहर सकता, मैं चलता हूँ।"

"तुम जाते हो ? और यदि धर्माचार्य ने पूछा—तो हम क्या उत्तर देंगे ?"

"अगर वह पूछे, तो कह देना कि मैं आगे बढ़कर देख-भाल करने गया हूँ; क्योंकि होटल-स्वामी की बातों से मालूम हुआ है कि

ख़ेमे को जानेवाली सड़क सुरक्षित नहीं है। धर्माचार्य के अंग-रक्षक जो बाहर खड़े हुए हैं, उनको भी मैं यही समझा दूँगा, इसके बाद और सब मैं स्वयं सँभाल लूँगा।"

अर्मस ने कहा—"परंतु, अथास ! ख़ूब होशियार रहना।"

अथास—"इस विषय में तुम निश्चिंत रहो, मैं जल्दबाज़ी कभी नहीं करता।"

यह कहकर अथास फुर्ती से बाहर चला गया, दोनों मित्र फिर पाइप के पास आकर बैठ गये।

३५

जैसा अथास ने अनुमान किया था, वैसा ही हुआ धर्माचार्य कुछ क्षण के बाद ही नीचे उतर आये। जिस कमरे में राज-सैनिक थे उसके कपाट खोलकर, वह भीतर चले गये। पार्थ और अर्मस बैठे हुए ताश खेल रहे थे, धर्माचार्य को आते देखकर उठ खड़े हुए। धर्माचार्य ने एक व्यक्ति को अनुपस्थित पाकर प्रश्न किया—अथास कहाँ गया ? पार्थ ने जैसा अथास ने सिखलाया था, वही उत्तर दिया। धर्माचार्य इस उत्तर से संतुष्ट प्रतीत हुए ? उन्होंने कहा मैं अब चलता हूँ, देर हो गई है, क्या तुम लोग भी साथ चलोगे। इस पर दोनों मित्र धर्माचार्य के साथ हो लिये। बाहर अंग-रक्षक खड़ा धर्माचार्य की प्रतीक्षा कर रहा था। उसने भी पार्थ की बतलाई हुई बात का समर्थन किया। चारों अश्वारोही घोड़े दौड़ाते हुए खेमे की ओर चले गये।

अथास अपने मित्रों से अलग होकर सड़क से कुछ दूरी पर, एक झाड़ी की आड़ में छिप रहा। जब धर्माचार्य की टोली बहुत दूर निकल गई, तो वह अपने स्थान से बाहर आया और होटल की ओर लौट चला। सड़क के एक किनारे होटल के बाहर दो आदमी और

तीन घोड़े उसको एक पेड़ के नीचे खड़े दिखलाई दिये। अथास समझ गया ये व्यक्ति धर्माचार्य के आदेशानुसार ग्लैडी को जहाज़ तक पहुँचाने के लिये उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

अथास ने होटल में प्रवेश करते हुए होटल-स्वामी से कहा—"मेरे अफ़सर रमणी से एक आवश्यक बात कहना भूल गये हैं, उन्होंने उसी बात को कहने के लिये मुझे भेजा है।" होटल-स्वामी को विश्वास हो गया, वह रमणी के कमरे तक स्वयं अथास को पहुँचा आया।

अथास ने कमरे में प्रवेश किया और शीघ्र ही दरवाज़ा भीतर से बंद कर दिया। खटके का शब्द सुनकर ग्लैडी ने द्वार की ओर देखा। एक मनुष्य काले लबादे से अपने शरीर को ढके हुए चुपचाप पत्थर की मूर्ति की भाँति खड़ा है, यह देखकर ग्लैडी के होश उड़ गये, वह अत्यंत भयभीत हो गई, घबड़ाकर चिल्ला उठी—"तुम कौन हो और यहाँ किस साहस से आये?"

अथास की तीक्ष्ण-दृष्टि ने ग्लैडी की मुखाकृति को भली-भाँति देख लिया, उसने मनमें कहा—"ओह, यह तो वही रमणी है, वही स्वर, वही आकृति और वही सौंदर्य है।" ग्लैडी की बात सुनकर उसने अपना लबादा नीचे गिरा दिया, टोप को उतार लिया और एक पग आगे बढ़कर, बहुत गंभीरता तथा शांति के साथ कहा—"ख़ूब ध्यान से देख लो, मुझे विश्वास है तुम मुझे न भूली होगी?"

ग्लैडी ने एक पग आगे बढ़ाया; परंतु ज्योंही उसकी दृष्टि अथास के चेहरे पर पड़ी, वह बदहवास होकर पीछे लौट पड़ी, उसके चेहरे का रंग उड़ गया, मालूम होता था कि उसने किसी भयंकर सर्प को देखा है। उसके मुख से सहसा निकल पड़ा 'काउंट फ़ैरी'। वह इतनी भयभीत हो गई थी कि भय होता था, कहीं उसके हृदय की धड़कन न बंद हो जाय, शरीर से पसीना छूटने लगा, पैर डगमगाने लगे, वह

चाहती थी कि यदि पृथ्वी फट जाय, तो मैं उसमें समा जाऊँ। वह पीछे दीवाल तक हटती चली गई, इस समय प्रतीत होता था कि प्रत्येक दीवाल उसके साथ अपनी पुरानी शत्रुता निकाल रही है। वह आँखें फाड़कर अथास की ओर देखने लगी।

अथास यह सब दशा देख रहा था, वह एक कुर्सी पर बैठ गया और अपनी तीव्र-दृष्टि म्लैडी के शरीर पर जमाते हुए पूर्ववत् शांति के साथ कहा—"ओह ! मैं देखता हूँ कि तुम मुझे नहीं भूलीं। हाँ ! मैं ही साक्षात् 'काउंट फ़ैरी' हूँ। स्वर्ग से इस संसार में केवल तुमसे एक बार भेंट करने आया हूँ। बैठ जाओ और धर्माचार्य की भाँति मुझसे भी थोड़ी देर बातें हो जायँ।"

म्लैडी भय से आक्रांत होकर, चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ गई।

अथास ने तीव्र गंभीर स्वर में कहा—"हाँ ! तो मुझको पहचानती हो। मैं भी जानता हूँ कि तुम इस पृथ्वी पर दिव्य-रूपमयी राक्षसी हो, नेत्र-रंजक चमकीली नागिन हो, तुम्हारे दाँत बिषैले हैं और तुम्हारी फुफकार प्राणांतक है। तुमको ईश्वर ने विशाल क्षमता दी है; परंतु तुम यह भी समझती हो कि उसी ईश्वर की सहायता से मनुष्य ने तुमसे भी अधिक क्षमताशाली पाप-रूपिणी राक्षसियों पर विजय प्राप्त की है। एक बार तुम स्वयं मेरे मार्ग पर आ गई थीं। मैं समझता था कि मैंने तुमको सदा के लिये कुचल दिया; परंतु या तो मैं ही धोखा खा गया या तुम्हारा प्याला लबरेज़ करने के लिये यमदूतों ने फिर तुमको इस पृथ्वी पर नर्क से ढकेल दिया।"

म्लैडी को मानों सैकड़ों विच्छू डंक मार रहे थे, घोर वेदना से वह तड़प रही थी। अथास ने कुछ रुककर फिर कहा—"नर्क ने तुम्हारे स्वरूप को और भी सँवार दिया, तुम्हारे सौंदर्य में प्रदाहक-शक्ति की बृद्धि कर दी, तुमको और भी ऐश्वर्य दिया, तुम्हारे नाम को बिलकुल बदल डाला और इस भाँति तुम्हारे अतीत पर एक

नवीन विमोहक पर्दा डाल दिया ; परंतु तुम्हारी आत्मा के धब्बों और तुम्हारे शरीर के दाग़ी अंगों को वह भी न मिटा सका। वह देखो ! मेरे नेत्रों के सामने तुम्हारी भड़कीली पोशाक के अंदर से वे साफ़ झलक रहे हैं।"

ज़ंजीर से जकड़ी हुई शेरनी बल्लम की चोट खाकर—जैसे भड़क कर तड़प उठती है, वैसे ही ग्लैडी असह्य वेदना और क्रोध से उठ खड़ी हुई, उसका शरीर क्रोध से काँप रहा था और नेत्रों से आग बरस रही थी। परंतु अथास वैसे ही शांति के साथ बैठा रहा उसने कहा—"जैसा तुम्हारे विषय में मैं समझता था, वैसा ही तुम भी समझती थीं कि मैं मर गया ; परंतु आज यह सिद्ध हो गया कि हम दोनों जीवित हैं। अथास के नाम से 'काउंट फेरी' अब भी जीवित है और ग्लैडी के नाम से, एन० ब्रियूल भी धर्माचार्य की अंकशायिनी बनी हुई है। क्यों ! क्या इसकी सत्यता से तुम इंकार कर सकती हो ? तुम्हारा यही नाम था ना जब कि तुम्हारे अभिभावक पूज्य भाई ने तुम्हारा संबंध मेरे साथ जोड़ा था ?" इस व्यंग ने ग्लैडी के हृदय में एक और विषम आघात पहुँचाया। अथास ने हँसकर फिर कहा—"हम दोनों का संबंध वास्तव में बड़ा ही हास्यास्पद और विचित्र है। हम दोनों आज तक केवल इसी कारण जीवित रह सके ; क्योंकि हम परस्पर एक-दूसरे को सर्वथा मृत समझते थे। यह सच है कि अतीत की स्मृति हृदय के लहू को सदा सुखाती रहती है ; परंतु मूर्तिमान स्मृति-समूह-स्वरूप जीवित प्राणी कहीं अधिक विदाहक होता है।"

ग्लैडी ने कई बार बोलने का उद्योग किया ; परंतु मालूम होता था—कोई उसका गला दबाये हुए है। इसबार अंतिम उद्योग करने पर क्षीण, भर्राई हुई आवाज़ में बोली—"परंतु तुम यहाँ किस निमित्त आये हो और आख़िर मुझसे चाहते क्या हो ?"

"मैं—मैं यहाँ किस लिये आया हूँ, यही जानना चाहती हो ना। मैं आया हूँ यह बतलाने के लिये कि यद्यपि मैं तुम्हारे विषाक्त नेत्रों के सामने कभी नहीं पड़ सका; किंतु मेरी आँखों से तुम कभी ओझल नहीं हुईं।"

"क्या तुम मेरे विषय में कुछ जानते हो?"

"ओह! जबसे तुमने नवीन केंचुली धारण करके, धर्माचार्य की नौकरी की है, तबसे आज की रात्रि तक का एक-एक दिन का हाल मैं बता सकता हूँ।" स्लैडी के ओष्ठों पर एक अविश्वास की हास्य-रेखा खिंच गई। अथास ने यह देखकर कहा—'क्या जानना चाहती हो? सुनो! वह स्त्री तुम ही थीं, जिसने बकिंघम के गले की रत्न-माला से दो हीरे काटकर चुराये थे, तुम्हीं ने श्रीमती बोनैसी का अपहरण किया; परंतु वह राजमहिषी की कृपा से तुम्हारे चंगुल से छूटकर, अब धर्म-मंदिर में अपनी विपत्ति के दिन काट रही है। तुमने डी० वार्डीस से प्रेम किया और उसको अपने सौंदर्य के तीव्र मद से छकाने के लिये डी० वार्डीस समझकर, तुम आर्तगान की अंकशायिनी बनीं। तुमको पहले यह भ्रम हुआ था कि डी० वार्डीस ने तुमको धोखा दिया है। अतः उसको मार डालने के लिये आर्तगान से तुमने सहायता माँगी; परंतु तुम्हारा उद्देश्य विफल हुआ और जब तुमने देखा कि यह आर्तगान तुम्हारे गुप्त भेद से, उन दाग़ी-चिह्नों से परिचित हो गया, जिसको केवल इने-गिने ही व्यक्ति इस संसार में जानते हैं, तो तुम उस बेचारे की जान की गाहक बन बैठीं। उसके अस्तित्व को मिटाने के लिये तुमने तीन उद्योग किये। दो-बार तुम्हारे भेजे हुए घातकों ने उसके ऊपर गोलियाँ चलाईं, जब वे गोलियाँ व्यर्थ गईं, तो एक जाली ख़त के साथ उसके पास तुमने ज़हरीली शराब भेजी। परंतु यह वार भी ख़ाली गया। आज धर्माचार्य ने इसी कुर्सी पर बैठकर जिसपर अब मैं बैठा हूँ, तुमसे बकिंघम को मार डालने की प्रतिज्ञा कराई है और इसके बदले में

उसने तुमको आर्तगान की हत्या करने में सहायता देने का बचन दिया है।"

अथास ये सब बातें एक ही साँस में कहता चला गया। एक-एक घटना ग्लैडी को तीखे बाण के समान छेद रही थी। उसके चेहरे का ख़ून सूख गया था। जब अथास दम लेने के लिये रुका, तो वह चिल्ला उठी—"ओफ़ ! तुम शैतान हो ?"

"शायद इससे भी अधिक ; परंतु यह अच्छी तरह ध्यान देकर सुन लो—तुम वकिंघम को मार सकती हो ? इसके विषय में मै कुछ नहीं कहता, क्योंकि मैं नहीं जानता कि वह कौन है ? परंतु आर्तगान के शरीर को छूने का विचार तक न करना। वह मेरा मित्र है, मैं उसका रक्षक हूँ, यदि उसका बाल भी बाँका करने का इरादा किया, तो मैं यह दृढ़ता के साथ शपथ खाकर कहता हूँ कि यह कृत्य तेरा अंतिम पाप होगा।"

"परंतु आर्तगान ने मेरा घोर अपमान किया है!" ग्लैडी ने काँपती हुई आवाज़ में कहा। अथास हँस पड़ा, उसने घृणा-व्यंजक स्वर में कहा—"अपमान ! और तुम्हारा ! तुम्हारा अपमान तो कोई कर ही नहीं सकता।" ग्लैडी इस व्यंग्य को सहन न कर सकी, उसके साहस ने एक ज़ोर लगाया, यह दृढ़ता के साथ बोली—"नहीं ! वह मरेगा। कांसटेंस पहले और वह बाद को।"

अथास के शरीर में मानो किसी ने आग फूँक दी। उसकी दृष्टि के सामने इस दिव्यांगना का विकराल राक्षसी-स्वरूप फिर गया। उसने सोचा कि एक दिन मैंने इस स्त्री के पौरुष को अपनी प्रतिष्ठा-बेदी पर बलि कर देना चाहा था ; परंतु भाग्य के बिपरीत बिधान के कारण वह मृत्यु के मुँह से निकल आई। आज फिर उसके बिकट रूप को देख कर उसकी रक्त-पिपासा जाग्रत होगई, उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा, नेत्रों से चिनगारियाँ निकलने लगीं, ओंठ कांपने लगे, वह असह्य आवेश में उठ खड़ा हुआ और कमर से पिस्तौल निकाल ली।

अथास के इस रूप को देखकर, ग्लैडी का हृदय काँप उठा, उसने चाहा कि ज़ोर से चिल्लाऊँ; परंतु मालूम होता था कि कोई उसका गला दबाये है। तालू सूख गया था, हृदय की गति बंद हुई सी जान पड़ती थी। एक क्षीण भर्राई हुई आवाज़ के अतिरिक्त उसके मुख से और कुछ न निकल सका। वह चुपचाप खड़ी हुई, प्रत्यक्ष भय की वीभत्स प्रतिमा जैसी मालूम होती थी।

अथास ने धीरे-धीरे अपनी पिस्तौल को ऊपर उठाया, यहाँ तक कि उसका किनारा ग्लैडी के मस्तक को स्पर्श करने लगा और तब एक अत्यंत, उच्च, तीक्ष्ण और दृढ़ स्वर में कहा—"धर्माचार्य ने जो पत्र अपने हस्ताक्षर करके तुमको दिया है, उसे मेरे हवाले फ़ौरन कर दो, नहीं तो इसी पिस्तौल की गोली इसी समय तुम्हारे भेजे को छिन्न-भिन्न कर देगी।"

ग्लैडी के नेत्रों के आगे मृत्यु नाचने लगी, उसकी जीवन-आशा लुप्त हो गई। किसी दूसरे व्यक्ति के इस कार्य पर वह संदेह करती भी; परंतु अथास के स्वभाव को वह ख़ूब जानती थी, वह बिना किसी हरकत के वैसी ही बैठी रही।

अथास ने दृढ़ता-व्यंजक स्वर में कहा—"तुमको केवल एक मिनट सोचने के लिये दिया जा सकता है।"

ग्लैडी ने धीरे-धीरे अपना हाथ उठाया और फुर्ती से एक पत्र निकालकर अथास की तरफ़ बढ़ाया। अथास ने पत्र ले लिया और पिस्तौल को अपनी पेटी में खोंस लिया। रोशनी में देखा पत्र वही था। तब पत्र को मोड़कर जेब में रख लिया। इसके बाद उसने लबादा ओढ़ा और टोप उठा लिया और कहा—"नागिन! मैंने तेरे दाँत खींच लिये, देखूँ, तू अब कैसे काटती है।" यह कहकर वह लौट पड़ा और शीघ्र ही कमरे के बाहर हो गया।

३६

रा शेल के निवासी क़िले के उस भाग पर, जो नगर की ओर था। अभी तक क़ब्ज़ा जमाये हुए थे। जिस दिन की घटना का उल्लेख हम ऊपर कर चुके हैं, उस दिन यह हुआ कि फ्रांसीसियों ने उसकी दीवाल के एक अंश को तोड़ डाला। इसपर दोनों पक्षों में मुठभेड़ हो गई। दोनों दलों के बहुत से सिपाही खेत रहे। शहर के निकट होने के कारण राशेल-वासियों का पक्ष प्रबल रहा। अतः जब तक कोई संगठित सेना का आक्रमण फ्रांस के पक्ष की ओर से न हो, तब तक दुर्ग के उस भाग पर आधिपत्य जमाना सहल न था। फ्रांसीसी पक्ष की ओर से इस प्रकार का आक्रमण होने के लिये कुछ दिन की देरी थी। इसी कारण किसी इक्के-दुक्के फ्रांसीसी का वहाँ जाना, जाना-बूझकर विपत्ति में कूदना था।

दूसरे दिन बड़ी विचित्र घटना हुई।

प्रातःकाल ही से फ्रांस के सैनिकों में उक्त मुठभेड़ ही के विषय में गर्म चर्चा चल पड़ी। प्रत्येक ख़ीमे के सामने झुंड के झुंड सैनिक खड़े हो-होकर इसी पर तर्क-वितर्क करने लगे। टीका-टिप्पणी का बाज़ार गर्म हो गया। एक कहता कि यह युद्ध फ्रांस के लिये बड़ा

अपमान-जनक है, यह पराजय फ्रांस की कीर्ति पर धब्बा लगाती है। दूसरा उसको वहाँ मुँहतोड़ जवाब देता, तुम पागल हो, राजनीति की गंभीर चालों को क्या समझो? बच्चे हो, अभी दुनियाँ देखी नहीं है, राजनैतिक कूट-नीति का सागर अथाह है, उसमें तुम्हारी क्षुद्र हल्की बुद्धि की पैठ नहीं हो सकती। अभी राशेल-निवासी धर्माचार्य के दाँव में नहीं चढ़े हैं, वह कुशल खिलाड़ी अवसर ढूँढ़ रहा है, मौक़ा मिलते ही कुचलकर रख देगा। अभी देखते क्या हो? दो दिन के बाद ही वह लोहा बजेगा कि राशेल-निवासी सब धाईं-पेंच भूल जायँगे। इतिहास से उनका अस्तित्व ही मिट जायगा। इसी प्रकार नाना प्रकार के संकल्प-विकल्प द्वारा सैनिक लोग राजनीति के कूट-मसलों को हल करने का प्रयत्न कर रहे थे। सब ख़ेमों में चहल-पहल, उछल-कूद, डाट-डपट और वाद-विवाद का शोर-गुल मचा हुआ था। निठल्ले सैनिकों को समय काटने का सबसे सरल साधन यही हुआ करता है।

हमारे चारों मित्र एक होटल में नाश्ता करने के लिये गये हुए थे। और भी बहुत-से सैनिक वहाँ जमा थे। मेज़ पर तश्तरियाँ सजाई जा रही थीं, अभी खाने में कुछ देर थी। समय बिताने के लिये सैनिक-समुदाय में दुर्ग की घटना के विषय में बात चल पड़ी। वाद-विवाद के बीच में एक सैनिक बोला—"भाई सुनो! दुर्ग का वह भाग बड़ा विपत्ति-जनक है, शत्रु लोग पूरी चौकसी रखते हैं, वहाँ जाना ख़तरे से ख़ाली नहीं है, कल हम लोगों ने दीवाल तोड़कर बरों को और छेड़ दिया, फल भी उसी हाथ मिल गया, हमारे कई सैनिकों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ा। अब तक तो यह था कि वहाँ जाकर लुक-छिपकर चले भी आ सकते थे; परंतु अब वह मार्ग भी बंद हो गया, क्या अब कभी वहाँ जाने का हम लोग विचार भी कर सकते हैं?"

एक दूसरा सैनिक जो अब तक अपनी बहादुरी की बड़ी डींगें मार रहा था, वहाँ जाने का नाम सुनकर काँप उठा, वह बोला—"हाँ भाई कहते ठीक हो ! क्या किसी की जान भारू है, जो वहाँ जाय। फिर आग में कूदना कोई बहादुरी है ?"

अथास बोला—"बस यही आपकी बहादुरी है। जब उसे आप आग समझते हैं, तो आपसे युद्ध में क्या आशा की जा सकती है ? विपत्ति ही में आदमी के ज़ौहर खुलते हैं। वहाँ जाना कोई इतना कठिन नहीं है।"

पूर्व-वक्ता तमककर बोला—"डींगें मारना आसान है, करके दिखाना मुश्किल। यहाँ पर बैठे-बैठे नाश्ता उड़ाते हुए गप्पें हाँक सकते हो, वहाँ जाते नानी मर जायगी।"

अथास उत्तेजित हो उठा, उसने कहा—अच्छा दोस्त ! क्या शर्त लगाते हो, अब हम वहीं जाकर नाश्ता करेंगे ?"

सैनिक अत्यंत गर्व से प्रसन्न होकर बोला—"शर्त ! शर्त के लिये मैं तैयार हूँ, बोलो क्या लगाते हो ?"

"हम चार मित्र हैं। शर्त यह है कि एक घंटे के बाद जब हम चारों विजयी होकर लौटें, तो तुम आठ आदमियों को खाना खिलाओ।"

"मंज़ूर है।"

अथास के शेष मित्र बैठे-बैठे मनमें कह रहे थे कि अथास यह क्या कह रहा है ? जान-बूझकर ऐसे स्थान में जाना, जहाँ से लौटने की कोई आशा नहीं—कहाँ की बुद्धिमानी है ? यह तो आत्म-हत्या के बराबर है। पहले ये लोग इसको केवल हँसी भर समझते रहे; परंतु जब शर्त तक तै हो गई, तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही, वे अथास की मूर्खता पर झल्ला उठे। भावी विपत्ति की आशंका से उनके हृदय काँपने लगे। आर्तगान भी मन-ही-मन कुढ़ रहा था,

उसकी भी दृष्टि में अथास ने बड़ी भारी मूर्खता की थी। उसने कई बार विचार किया कि अथास को बीच में रोक दें; परंतु उसकी दृष्टि में मित्र को निरुत्साहित करना भी उचित न था। जब शर्त तै हो गई, तो उसने अथास का कोट खींचकर अपनी ओर ध्यान आकर्षित करके चुपके से कहा—"यह तुम क्या कर बैठे? क्या हम सब लोगों का सर्वनाश करना विचारा है?"

अथास हँस पड़ा, उसने केवल इतना ही कहा—"हुश! चुप रहो यह समय हम लोगों के लिये बड़ा फलदायक है।" आर्तगान चुप हो गया। इस मंडली का यह पुराना नियम था कि यदि एक मित्र कोई प्रतिज्ञा कर बैठे, तो वह प्रतीज्ञा चाहे कैसी भी कठिन हो! अन्य मित्रों को उसे सफल करने के लिये प्राणपण से चेष्टा करनी पड़ती थी। इसी कारण अन्य सब मित्र मन मारकर रह गये और विवश होकर, मौत से लड़ने के लिये तैयारी करने लगे।

अथास ने ग्रीमांड को बुलाकर आदेश दिया कि भोजन का सब सामान टोकरियों में भरकर अन्य नौकरों सहित साथ चलने के लिये तैयार रहो। ग्रीमांड इस विचित्र आदेश का रहस्य कुछ भी न समझ सका। होटल में न खाकर अन्यत्र भोजन करने में खाना क्या कुछ अधिक स्वादिष्ट हो जाता है और आख़िर इस शोर-गुल के समय इनको भोजन करने के लिये यहाँ की अपेक्षा और कौन उत्तम स्थान मिलेगा? इन प्रश्नों के क्या उत्तर हैं यह उसकी सेवा-भाव-पूर्ण तीक्ष्ण बुद्धि में न आया; परंतु प्रभु के सब आदेशों का उत्तर 'हाँ' ही होना चाहिए। इसी कारण वह चुप हो रहा और खाद्य-सामग्री की जाँच-पड़ताल में लग गया।

जब तक चारों मित्र होटल में रहे, सबने अपना मुख बंद रक्खा। बाहर आने पर आर्तगान ने पूछा—"अच्छा! ज़रा यह तो बताओ हम सब चल कहाँ रहे हैं?"

अथास ने हँसकर उत्तर दिया—"यह तो स्पष्ट है, हम लोग दुर्ग की ओर चल रहे हैं।"

"किस उद्देश्य से ?"

"उद्देश्य भी प्रकट है, नाश्ता करने के लिये ?"

"नाश्ता तो होटल में भी कर सकते थे।"

"नहीं ! यही तो गौण बात है। प्रधान बात यह है कि वहाँ चलकर एकान्त में हमको गुप्त बातें करने की सुविधा होगी। मुझे तुम्हें एक अत्यंत महत्त्व का समाचार बतलाना है। होटल में, खेमे में या और किसी अन्य स्थानमें हम निश्चित होकर उस विषयपर मनन नहीं कर सकते थे।"

पार्थ ने अपनी दूरदर्शिता प्रकट करने के लिये अत्यंत गर्व के साथ कहा—"इस उद्देश्य के लिये तो हम किसी भी जंगल में, पहाड़ी पर या समुद्र-तट पर जा सकते थे।"

अथास—"परंतु वहाँ पर बातचीत करते देखकर, धर्माचार्य के दूत यह संदेह कर सकते हैं कि हम किसी षडयंत्र की रचना कर रहे हैं।"

आर्तगान अथास के गंभीर बुद्धि-चातुर्य पर मुग्ध हो गया। अथास का तर्क उसको अत्यंत सारगर्भित मालूम हुआ। चारों ओर शत्रुओं से घिरी हुई परिस्थिति में गुप्त मंत्रणा करने के लिये दुर्ग के अतिरिक्त, कोई अन्य सुरक्षित स्थान हो ही नहीं सकता था। वहाँ पर जो वार्तालाप होगा, उसको धर्माचार्य के फ़रिश्तों के लिये भी जानना असंभव है। फिर किसी को संदेह करने का विचार भी नहीं हो सकता; क्योंकि अभी सेना भर में यह ख़बर फैली जाती है कि चार वीर-पुरुष शर्त लगाके शत्रुओं के छक्के छुटाने के लिये दुर्ग के भीतर गये हैं। यह अनुमान कोई भी नहीं कर सकता कि ऐसे संकटापन्न स्थान में, जहाँ से प्राण लेकर लौट आना असंभव है, हम लोगों के जाने का उद्देश्य इतना गूढ़ हो सकता है। परंतु आर्तगान को यह संदेह भी हुआ कि क्या गोलियों की बौछार में शांत विवेचना

करने का अवसर मिल सकता है ? उसने अथास से कहा—"परंतु आग में कूदकर तो हमारा कोई भी मनोरथ सिद्ध नहीं हो सकता ?"

अथास—"घबड़ाओ नहीं ! हमारे प्रयत्नों से वह आग शीघ्र ही ठंढी पड़ जायगी, शत्रुओं की गोलियाँ हमको कभी भयभीत नहीं कर सकतीं । हमको उनकी कुटिल नीति से सतर्क रहना चाहिए ?"

अथास को अपनी तर्क-शक्ति से प्रभावित करने के लिये अर्मस ने कहा—"परंतु शराब और सोडे की रिक्त बोतलों से कहीं कभी युद्ध हुआ है ? तुम तो कुछ अस्त्र-शस्त्र भी साथ नहीं लाये ?"

इसपर सब मित्र चौंक पड़े । वास्तव में निहत्थे थे । परंतु अथास ने गंभीर मुस्कराहट के साथ कहा—"व्यर्थ में बोझा लादने की आवश्यकता ही क्या है ? क्या यह तुमने नहीं सुना कि कल रात, दुर्ग में हमारे दस-बारह सैनिक और लगभग इतने ही राशेल-निवासी भी युद्ध में आहत हुए हैं ?"

पार्थ—"अच्छा ! परंतु इससे संबंध ?"

अथास—"इनके मृत कलेवरों से अभी तक कोई सामान लूटा नहीं गया । वहाँ पहुँचते ही हमको पंद्रह बंदूकें और सौ से अधिक कारतूसें अत्यंत सरलता से मिल जायँगी ।" यह सुन कर सब चिल्ला उठे ! और कहा—"अथास ! तुमतो सेनापति होने के योग्य हो ! इतनी तीक्ष्ण बुद्धि और इतना मस्तिष्क !"

अथास द्वारा निर्दिष्ट मार्ग पर चलने के लिये सब सउत्साह उद्यत होगये, कार्य-तत्परता और वीरत्व ने निराश हृदयों में आशा का संचार कर दिया । दुर्ग पहुँचने पर उन्होंने देखा कि शत्रु अभी तक दुर्ग के भग्न-स्थान की मरम्मत कराने नहीं आये हैं, लाशें भी इधर-उधर वैसी ही बिखरी पड़ी हैं । दुर्ग की दीवाल में कई दराज़ें हो गईं

टूटी दीवाल के उस पार गहरी खाँई है। दीवाल से एक मील के फ़ासले पर राशेल शहर बसा हुआ था, उच्च अट्टालिकाओं के कँगूरे स्पष्ट दिखलाई देते थे। दुर्ग की रक्षा करनेवाली सेना भी नगर के इसी ओर रहती थी।

ग्रीमांड ने हरी-हरी घास से ढके हुए, एक भूभाग पर वस्त्र बिछाकर खाना सजाया। अथास तथा अन्य मित्रों ने लाशें एकत्रित कीं उनके पास सब मिलाकर पंद्रह बंदूकें और सौ कारतूस निकले। पार्थ ने कहा कि लाशें खाँई में फेंक दी जायँ; परंतु दूरदर्शी अथास ने इस प्रस्ताव का विरोध किया और लाशें एक कोने में रख दी गईं। सबने मिलकर बंदूक़ों में कारतूस भर दिये। इस आवश्यक काम से निवृत्त होकर क्षुधा-निवारण के लिये सब लोग बैठ गये और बातें होने लगीं। ग्रीमांड को यह काम सौंपा गया कि वह सचेत होकर, दीवाल पर बैठ जाय और शत्रुओं के आगमन की सूचना दे, इस काम के साथ-ही-साथ वह अपना खाना भी खा सकता था।

खाना प्रारंभ करने के पूर्व ही आर्तगान ने अत्यंत आतुर होकर कहा—"जिसके लिये इतनी विपत्ति मोल ली गई, वह गुप्त समाचार क्या है?"

इसका उत्तर सुनने के लिये सब लोग उत्सुक हो गये। अथास ने कहा—"अब हम निश्चिंत हैं। इस विषय पर शांति से विचार हो सकता है। समाचार यह है कि कल रात को मैं म्लैडी से मिला था।"

आर्तगान शराब का ग्लास ओठों से लगाने ही वाला था, म्लैडी का नाम सुनकर हाथ काँप उठा, ग्लास पृथ्वी पर गिरकर चूर-चूर हो गया। उसने आश्चर्य से पूछा—"कहाँ?"

"यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर, राशेल के होटल में?"

आर्तगान का हृदय धड़क रहा था, उसने कहा—"तब तो मेरा सर्वनाश है।"

"नहीं ! नहीं ! डरो मत ! इस समय तक वह फ्रांस से जहाज़ में रवाना हो चुकी होगी।"

आर्तगान ने एक ठंडी साँस ली। पार्थ ने पूछा—"यह म्लैडी कौन चीज़ है ?"

"यह एक अत्यंत रूपवती रमणी है, भूखी सिंहिनी है और विषैली नागिन है। इसी ने आर्तगान के पास वह ज़हरीली शराब भेजी थी। उसका प्रेम, कराल-काल की क्षुधा है, उसकी स्निग्ध दृष्टि, प्रेमी की मौत है, उसके ओठों में विषाक्त मदिरा है और उसके हृदय में घोर हलाहल। वह किसी अपराध पर आर्तगान से ज़रा रुष्ट हो गई। आर्तगान के पार्थिव अस्तित्व को मिटाने के लिये उसने कितने ही प्रयत्न किये; परंतु उनमें असफल होने पर, अब उसने कल धर्माचार्य से आर्तगान के सिर की अभिलाषा प्रकट की है।"

"क्या ! धर्माचार्य से मेरा शिर तलब किया है ?" आर्तगान ने आश्चर्य से, अत्यंत भयभीत होकर पूछा।

पार्थ ने कहा—"यह नितांत सत्य है। मैंने अपने कानों से सुना है।" अमंस ने भी इसका समर्थन किया।

आर्तगान के होश उड़ गये। उसका चेहरा ज़र्द पड़ गया। उसने पूछा—"आप सब लोग हँसी तो नहीं कर रहे ? मामले को साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते ? यदि यही है, तो मेरा तो बचना असंभव है; क्योंकि शत्रु-दल बढ़ता ही जाता है, पहले म्यांग का अपरिचित व्यक्ति ही अकेला शत्रु था, फिर डी॰ वार्डीस बढ़ा, उसके बाद यह म्लैडी सामने आई और चौथा शत्रु यह धर्माचार्य हो गया। यदि म्लैडी के चक्र से बच भी गया, तो धर्माचार्य के अचूक बाण से तो किसी भी प्रकार निस्तार नहीं हो सकता।"

अथास—"परंतु कोई भय की बात नहीं है। यदि शत्रु चार हैं, तो हम भी एक-एक का सामना करने के लिये चार; परंतु मुझे

मालूम होता है, यदि ग्रीमांड का संकेत सत्य है कि हमको भिन्न प्रकार के ही शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा? वह देखो! ग्रीमांड कुछ कह रहा है। ग्रीमांड! क्या है?" सब का ध्यान शीघ्र ही उत्तर वाली दीवाल की ओर खिंच गया। वहाँ से ग्रीमांड ने चिल्लाकर कहा—"सेना आ रही है?"

"कितने आदमी?" अथास ने पूछा।

ग्रीमांड ने कहा—"बीस"

"कौन लोग हैं?"

"बीस सफ़रमैना और चार सैनिक।"

"कितनी दूर हैं?"

"यहाँ से आध माल पर होंगे।"

अथास ने कहा—"आने दो। हमारे पास अभी काफ़ी समय है।" खाना वैसे ही अधूरा छोड़कर, चारों मित्र उठ खड़े हुए। अथास ने एक स्थान ढूँढ़ लिया जहाँ से खड़े होकर ये लोग आक्रमणकारियों को प्रत्युत्तर दे सकें। इस स्थान पर शत्रुओं पर ये सुविधा पूर्वक अचूक निशाने लगा सकते थे; परंतु शत्रुओं की गोलियाँ इन पर कुछ भी असर न कर सकती थीं। शत्रु इतनी ही देर में बहुत निकट आ गये। उन पर दृष्टि पड़ते ही अथास चिल्ला उठा—"मार लिया, कोई डर नहीं, ये तो सब नागरिक हैं, ये निशाना लगाना क्या जाने।" अथास का कथन सत्य निकला, इसी समय कुछ बंदूक़ें दगीं और बहुत-सी गोलियाँ दीवाल में टकरा कर अथास के चारों ओर बिखर गईं।

आर्तगान तथा अन्य मित्रों ने तत्क्षण अपनी-अपनी बंदूक़ें उठालीं और निशाना साधकर बंदूक़ें चलाईं। इन गोलियों से तीन सैनिक उसी समय गिर कर गत-प्राण हो गये और एक सफ़रमैना घायल हुआ। ग्रीमांड ने शीघ्र ही अन्य बंदूक़ें भरी हुई इनके हाथों में दे

दों। तीन आदमी और मरे। यह दशा देखकर शेष लोग भाग खड़े हुए। ग्रीमांड ने दौड़कर मृत व्यक्तियों के अस्त्र शस्त्रादि सब बटोर लिये।

चारों मित्र फिर दस्तरख़्वान पर आ जमे। ग्रीमांड बंदूकें भरने में लगा। निश्चिंत होने पर आर्तगान ने कहा—"म्लैडी इंगलैंड किस अभिप्राय से जा रही है?"

अथास ने ग्लास में शराब भरते हूए कहा—"वकिंघम का ख़ून करने के लिये।"

"वकिंघम का ख़ून?" आर्तगान ने आश्चर्य में भरकर चिल्ला-कर कहा।

अथास ने उपेक्षा दिखलाते हुए उत्तर दिया—"यह कुकांड अवश्य है; परंतु हमको इससे चिंतित होने का कोई कारण नहीं। वकिंघम अँगरेज़-जाति का है, हमारा उससे क्या संबंध?"

"तुम्हारा विचार असत्य है, वकिघम मेरा मित्र है। मैं जब इंग-लैंड गया था, तो उसी की अमित सहायता से अपने उद्देश्य में कृत-कार्य हो सका था। फिर उसने हम सब लोगों के लिये नवीन घोड़े भी दिये?"

अथास—"ओह! इसका मुझे ध्यान ही नहीं रहा। वास्तव में हमको उसका कृतज्ञ होना चाहिए। हाँ! मुझे एक बात और याद आई। इस म्लैडी के दाँत मैंने तोड़ दिये हैं। इससे धर्माचार्य का वह पत्र मैंने ले लिया है, जिसके द्वारा वह प्रलय उपस्थित कर सकती थी।"

आर्तगान का चेहरा चमक उठा, उसने हर्षित होकर पूछा—"वह पत्र कहाँ है, ज़रा देखें तो?"

अथास ने पत्र जेब से निकाला और उच्च-स्वर में पढ़ा, पत्र में यह लिखा था।

३ दिसंबर, १६२७.

इस पत्र-वाहक ने जो कुछ किया है, वह सब मेरे आदेश पर और राज्य की भलाई के लिये किया है।

'रिचलू'

पार्थ ने कहा—"ओफ़ ! यह तो उसके हाथ में ब्रह्मास्त्र था" आर्तगान को इस पत्र के शब्दों से अपनी मृत्यु का संदेश सुनाई पड़ रहा था। उसने कहा—"इस पत्र को फाड़कर, टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिए।"

अथास चिल्ला उठा—"कदापि नहीं ! यह किसी अवसर पर हमारे बड़े काम आयेगा। इसको बड़ी सावधानी से सुरक्षित रखना चाहिए।

सब मित्रों ने इस विचार को बहुत पसंद किया। आर्तगान ने प्रश्न किया—"परंतु ग्लैडी इसकी शिकायत धर्माचार्य से अवश्य करेगी ?"

अथास—"ऐसा वह नहीं कर सकती। शिकायत करते समय उसको मेरा नाम लेना पड़ेगा और अपना गुप्त-भेद भी प्रकट करना होगा; परंतु इसकी अपेक्षा वह मर जाना पसंद करेगी।"

आर्तगान निरुत्तर हो गया। उसने कुछ सोचकर कहा—"अब क्या किया जाय ? यह बात विचारणीय है। मुझे इस संबंध में एक बात सूझी है।"

सब मित्र बोल पड़े—"वह कौन-सी बात है ?" परंतु इसके पूर्व कि आर्तगान इसका कुछ उत्तर दे, ग्रीमांड की यह आवाज़ उनके कानों में पड़ी—"तैयार हो जाओ ! आक्रमणकारी आ गये ?" सब लोग खाना छोड़-छोड़, घबड़ाकर उठ बैठे और अपनी-अपनी बंदूकें उठा लीं।

इस बार शत्रु-दल की संख्या बहुत अधिक थी। कोई तीस

व्यक्तियों का एक संगठित जत्था था, ये सब शिक्षित-सैनिक थे, नागरिक एक भी न था। पार्थ देखते ही चिल्ला पड़ा—"अबकी सामना करना असंभव है, चलो ख़ेमे वापस लौट चलें, व्यर्थ में जान देने से लाभ ?"

अथास ने दृढ़ होकर कहा—"भागना काम कायरों का है, फिर न अभी हमारा खाना ख़त्म हुआ है और न बातचीत ही समाप्त हुई। इसके अतिरिक्त अभी नियत समय भी नहीं बीता, लौट चलना असंभव है।"

इस पर आर्तगान ने कहा—"तो कम-से-कम युद्ध करने का ढंग तो सोच लेना चाहिए।"

अथास—"ओह ! यह तो अत्यंत सरल है। ज्योंही शत्रु हमारी गोलियों की पहुँच के अंदर आजायँ, त्योंही हमको फ़ायर शुरू कर देना चाहिए, यदि वे कुछ आगे बढें, तो हमको चाहिए कि दनादन गोलियाँ छोड़ते चले जायँ, रुकें क्षण भर के लिये भी नहीं। ग्रीमांड ने काफ़ी बंदूक़ें भर कर तैयार कर दी हैं। यदि शत्रु खाँई पार करके बहुत निकट आ जायँ, तो हम फ़ौरन् ही एक दीवाल उनके ऊपर ढहा देंगे, इस उपाय से एक भी शत्रु जीता नहीं बच सकता।"

पार्थ चिल्ला उठा—"ओह ! तुम तो एक योग्य सेनापति हो, वास्तव में इस उपाय से तो इससे दुगुनी सेना भी नष्ट की जा सकती है !

इसके पश्चात् सब लोगों ने आगे बढ़कर निशाने साधे और शत्रुओं के निकट आने पर गोलियों की बाढ़ शुरू कर दी। पहले शत्रु-दल के चार सैनिक गिरे, आगे बढ़ने पर चार और गिरे। परंतु तिस पर भी वे साहस के साथ आगे बढ़ते ही चले आये। इधर ये लोग बराबर गोलियाँ चलाते ही रहे। शत्रुओं के निशाने बार-बार ख़ाली जाते थे, गोलियाँ दीवाल से टकरा कर इधर-उधर बहक जाती थीं। जब शत्रु

खाँई के निकट आ गये और पार करके इधर आने लगे, तब अथास ने चिल्ला कर कहा—"दीवाल! दीवाल!" सब लोगों ने दीवाल के भाग को ढकेला, दीवाल कमज़ोर थी, फ़ौरन् ही बड़ी भारी आवाज़ के साथ गिर पड़ी, शत्रुओं का केवल चीत्कार सुनाई पड़ा, लगभग सब वहीं दफ़न हो गये, केवल दो-चार लोग लँगड़ाते हुए भागते दिखलाई दिये।

भोजन प्रारंभ करते हुए आर्तगान ने कहा—"अबकी बार ख़ैर नहीं है, बकरी की माँ कब तक ख़ैर मना सकती है, अबकी बार शत्रु-दल और भी अधिक संख्या में बहुत सँभल कर आवेगा।"

अथास—"देखा जायगा, हम भी तब तक अपना खाना और बातें समाप्त कर चुकेंगे। हाँ! तो क्या बात हो रही थी। ठीक! अब याद पड़ा। तुम कहते थे कि मुझे एक बात सूझी है।"

आर्तगान—"हाँ! मैं कहता था कि मैं दुबारा इंगलैंड जाकर बकिंघम से स्वयं मिलूँ।"

अथास—"ख़बरदार! ऐसा कभी न करना! पहली बार जब तुम गये थे, तब शांति का समय था; परंतु अब युद्ध-काल है। वहाँ जाने से तुम्हारी गणना राजद्रोहियों में की जायगी।"

पार्थ ने कहा—"मेरे दिमाग़ में एक विचार आया है। आर्तगान के स्थान में मैं वहाँ जाऊँ। म्लैडी मुझको नहीं जानती। मैं उसके पास पहुँचकर, सरलता से उसका गला घोट सकता हूँ।"

अथास—"तुम्हारा दिमाग़ ख़राब है। हममें से कोई भी व्यक्ति फ्रांस नहीं छोड़ सकता! धर्माचार्य की दृष्टि बड़ी पैनी है।"

अमंस ने अत्यंत गंभीरता से कहा—"फिर स्त्री का वध करना कहाँ तक धर्म-संगत है? भाई, मैं तो कदापि राय न दूँगा, मेरे विचार से हमारा पहला कर्तव्य यह है कि राजमहिषी को इसकी सूचना दे दी जाय।"

आर्तगान चिल्ला पड़ा—"कितने पते की बात कही है! वास्तव में हमारा पहला कर्तव्य यही है। हम लोग सब अँधेरे में टटोल रहे थे, अर्मस ने अब प्रकाश पहुँचाया है। राजमहिषी को और साथ-ही-साथ डी० वार्डीस को भी इसकी सूचना दे देनी चाहिए। डी० वार्डीस अँगरेज़ की हैसियत से वकिंघम के पक्ष का आदमी है, समाचार मिलते ही वह वकिंघम को सूचित कर देगा और संभव है ग्लैडी के उद्देश्य ही को उलट दे।"

अथास ने प्रशंसात्मक स्वर में कहा—"शाबाश! अब हम रास्ते पर आ गये; परंतु एक कठिनाई है। पेरिस में राजमहिषी के पास समाचार भेजना इस समय असंभव है। चारों ओर दृढ़ नाके-बंदी लगी है, स्थान-स्थान पर पहरा है। कोई भी व्यक्ति बिना पहचान लिये, वहाँ नहीं पहुँच सकता। पकड़े जाने पर सारा भेद खुल जायगा, तब तो लेने के देने पड़ जायँगे। सर्वनाश निश्चित है। डी० वार्डीस के पास इंगलैंड आदमी भेजना होगा। वहाँ जानेवाला कोई चतुर व्यक्ति मेरी नज़र में नहीं आता।"

इस पर सन्नाटा छा गया। कुछ क्षण बाद अर्मस हर्ष से चिल्ला उठा—"मैंने एक उपाय सोचा है। हमारा समाचार लेकर कोई आदमी टुअर्स नगर जावे, वहाँ से मेरी प्रेमिका राजमहिषी को ख़बर कर देगी। वह राजमहिषी की निकट संबंधिनी है।"

अथास—"ख़ूब सोचा, अब तो समस्या सरल होती जा रही है?"

पार्थ—"परंतु पत्र लेकर लंदन और टुअर्स कौन भेजा जाय?"

इसी समय ग्रीमांड चिल्ला पड़ा—"आ गये?" सब की निगाहें उसी ओर चली गई, देखा बहुत दूर उत्तर की ओर आकाश गर्द से ढक गया है, मालूम होता था कोई बड़े ज़ोरों की आँधी चली आ रही है। साथ ही ढोल और मारू बाज़ों की आवाज़ बड़े ज़ोरों से

आ रही थी। अथास ने कहा—"मालूम होता है बड़ा भारी जत्था आ रहा है।"

पार्थ—"क्या अब भी मुक़ाबला करने का विचार है? अब तो यहाँ से भाग चलना चाहिए।"

अथास—"शत्रुओं को यहाँ तक पहुँचने में अभी पंद्रह मिनट लगेंगे। इतने समय में हम सब बातें तै कर सकते हैं। इस विषय पर बातचीत करने का इससे अच्छा अवसर हाथ न लगेगा। परंतु ठहरो! मैं ग्रीमांड को कुछ आदेश दे लूँ। ग्रीमांड!" ग्रीमांड शीघ्र ही आकर खड़ा हो गया। अथास ने लाशों के ढेर की ओर इशारा करके कहा—"इनको उठाकर दीवाल के सहारे एक पंक्ति में खड़ा कर दो, इनके सरों पर टोप रख दो, हाथों में बंदूकें दे दो। शीघ्र ही यह काम समाप्त करो।"

अथास की बुद्धि-चातुर्य पर सब मुग्ध हो गये। उसकी युद्ध-निपुणता की सब प्रशंसा करने लगे। अथास ने कहा—"अच्छा अब फिर अपने विषय पर आना चाहिए। कौन व्यक्ति दूत बनाकर भेजे जायँ? इस पर सब ने अपने-दिमाग़ लगाये। आर्तगान ने कहा—"हम लोगों के नौकर क्या इस काम को नहीं कर सकते?"

पार्थ ने कहा—"यह बहुत उत्तम विचार है। मास्कटन इस काम के लिये उपयुक्त है।"

अथास बोला—"ग्रीमांड; लंदन जाकर सफलता प्राप्त कर लेगा।"

अर्मस ने कहा—"ये दोनों नौकर बेकार हैं। मास्कटन मोटा होने के कारण इस काम के लिये अनुपयुक्त है। वह बुद्धि का भी भद्-भद है। ग्रीमांड में साहस की कमी है, इंगलैंड यात्रा उससे निभ नहीं सकती। हाँ! प्लेंचेट और वैरीकान कुछ मतलब के आदमी हैं। वैरीकान मेरे निजी कार्य से टुअर्स कई-बार गया है। मेरी प्रेमिका उससे परिचित

है। प्लेंचेट भी एक-बार इंगलैंड हो आया है। वह हमारे समाचार को लंदन अच्छी प्रकार पहुँचा सकता है।"

अर्मस की यह सम्मति सबको पसंद आई। अथास ने एक समस्या और उपस्थित की, उसने कहा—"इन यात्राओं के लिये धन कहाँ से आवेगा?" यह समस्या सबसे कठिन थी। बिना धन के सब स्कीमें व्यर्थ थीं। ये सैनिक लोग सदा के फक्कड़ थे, जो मिलता सब ख़र्च कर डालते। इस प्रश्न ने सबको चिंता में डुबो दिया। सब एक-दूसरे का मुँह ताकने लगे। इतने ही में पार्थ के चेहरे पर कुछ चमक दिखलाई दी। उसने एक क्षण के बाद कहा—"आर्तगान! तुम्हारी अँगुली में मुझे एक अँगूठी दिखाई दे रही है। उसके बेचने से सब काम सिद्ध हो सकते हैं।" सबकी दृष्टि आर्तगान की अँगूठी पर पड़ी। बहुमूल्य हीरा बिजली के समान चमक रहा था। आर्तगान ने कहा—"परंतु यह तो राजमहिषी का उपहार है, इसको बेचना असंभव है।"

अथास ने कहा—"परंतु ऐसी वस्तुएँ विपत्ति ही के अवसर पर काम आती हैं। फिर इसको अपने पास रखने से तुम किसी नई आफ़त में भी फँस सकते हो। इस समय इसको बेच डालना ही लाभप्रद है।" कुछ देर तक इसी पर वादा-विवाद होता रहा कि उपहार को बेच डालना कहाँ तक उपयुक्त है? अंत में यही तै हुआ कि अँगूठी को बेचकर आनेवाली विपत्ति का निवारण किया जाय।

कुछ सोचने के बाद अथास ने कहा—"पत्र की रचना कैसी हो, इस पर भी विचार कर लेना चाहिए।"

आर्तगान—"मेरे विचार से उसकी भाषा सांकेतिक होनी चाहिए।"

अर्मस—"अवश्य, भेद को गुप्त रखने के लिये यह आवश्यक है; परंतु इस समय सबसे आवश्यक बात यहाँ से भाग चलना है। देखते नहीं? शत्रु कितने निकट आ गये?"

पार्थ चिल्ला उठा—"बाप रे बाप! यह तो पूरी विशाल सेना है। अथास! तुम तो कहते थे कि सौ-दोसौ आदमियों से अधिक न होंगे। अरे भाई! यहाँ से अब भागो?"

अथास—"अब दुर्ग खाली कर देने में कोई हानि भी नहीं है। हम एक घंटे के बजाय यहाँ डेढ़ घंटा बिता चुके। अब चलो! ख़ेमे से शत्रुओं का तमाशा देखेंगे।"

शीघ्र ही सबने अपना डेरा उठा लिया और क्षण भर में दुर्ग ख़ाली हो गया।

विजय का झंडा लहराते हुए इन लोगों को आता देखकर, ख़ेमे के बाहर हज़ारों सैनिक इकट्ठे हो गए थे, और वहाँ से तालियाँ और ढोल बजा-बजाकर अपना अमित हर्ष प्रकट कर रहे थे। विजय-ध्वनि से सारा आकाश गूँज उठा था। इधर शत्रुओं ने मृत कलेवरों को जीवित सैनिक समझकर तोपों और बंदूक़ों की बाढ़ खोल दी थी। क़िले की रही-सही दीवालें भी ढह गईं। भूमि से रेत उड़-उड़कर सारे आकाश में छा गई। नभ-मंडल में भीषण कोलाहल व्याप्त हो गया। इस आनंद-ध्वनि में हमारे विजयी वीरों का अभूत-पूर्व स्वागत हुआ। छावनी भर में हलचल मच गई। सब सैनिक दौड़-दौड़कर गले मिले। साथियों में आनंद और प्रेम की नदी उमड़ चली, अफ़सरों के हृदय वात्सल्य-भाव से भर गये, उनके प्रशंसात्मक वाक्यों ने इनके सन्मान और गौरव को ख़ूब बढ़ा दिया, छोटों ने उन्हें श्रद्धा और भक्ति अर्पित की। फ्रांस की सेना भर में इनके अद्वितीय वीरत्व का आतंक छा गया। पराजित बाज़ी लगानेवालों ने अत्यंत प्रसन्नता के साथ उत्साहित होकर, आठ के स्थान में बीस को दावत दी।

यह कीर्ति-कथा सुनकर त्रिबली का हृदय हर्षातिरेक से बल्लियों उछल पड़ा। वह शीघ्र ही दौड़ता हुआ आया और पारी-पारी से चारों मित्रों के गले मिला। इसके पश्चात इन चारों को साथ लेकर

राजा के पास दौड़ा गया। राजा के कानों में यह आनंद-ध्वनि पहले ही पहुँच चुकी थी। इस समय अपने सामने इन अनुपम वीरों को लज्जा की मूर्ति बने खड़े देखकर उसका हृदय गर्व तथा हर्ष की भावनाओं से ओत-प्रोत हो गया। आनंद के उत्साह में उसने यह घोषणा कर दी कि आर्तगान भी राजसेना में भर्ती कर लिया जावे, इसके अतिरिक्त विविध प्रकार से इनको पुरस्कृत करके बिदा किया। धर्माचार्य राजा के पास बैठा हुआ चुपचाप यह सब देखता रहा। इस समय किसी प्रकार भी विरोध करने का उसका साहस न हुआ।

शाही ख़ेमे से बाहर निकलते ही सैनिक-समुदाय चिल्ला उठा—"श्रीमान् राजा की जय;" 'वीर आर्तगान की जय' 'राज-सैनिकों की जय'।

३७

म्लैडी जहाज़ पर बैठी हुई सोच रही थी कि मैंने बड़ी भूल की। मुझे चाहिए था कि धर्माचार्य के पास जाकर कुल हाल कह देती, तब यह असंभव था कि धर्माचार्य, अथास का काफ़ी दमन न करते। ओह ! यह कांउंट फेरी अभी तक जीवित है। यह तो मैंने कभी स्वप्न में भी नहीं सोचा। इसका नाम याद आते ही मेरे प्राण सूख जाते हैं। वही स्वर, वही तेज़ और क्रोध है। ओह ! इसकी उपस्थिति में उस समय मेरी क्या दशा होगई थी मेरा तो सारा साहस, सारी शक्ति और सारी वाचालता नष्ट-सी होगई मानो लकवा मार गया हो। वह पत्र ही क्या; उस समय वह जो कुछ माँगता, मैं सब दे देती। मेरी सारी संकल्प-शक्ति लुप्त होगई थी। अब इस बिकट शत्रु का विनाश किये बिना, मेरा-जीवन एक क्षण भी सुख से नहीं बीत सकता। इसका विनाश आख़िर हो तो कैसे हो ? यदि मैं फ्रांस ही में रुक जाती तो इसका बदला धर्माचार्य की सहायता से अवश्य लेती। ओफ़ ! उस पत्र के निकल जाने से तो मेरा सारा उद्देश्य ही नष्ट होगया। उसी की ओट में मैं डी० विंटर, आर्तगान और बकिंघम सब का अस्तित्व मिटा सकती थी और मैं साफ़ बच जाती।

परंतु अब तो सब पर पानी पड़ गया। क्यों न अब मार्ग में फ्रांस के बंदरगाह पर उतर पड़ूँ और धर्माचार्य से ऐसा ही दूसरा पत्र लिखवा लूँ। और उस आज्ञा-पत्र के रद्द करने का आदेश भी ले लूँ।

इसी प्रकार के अनेक तर्क-वितर्क करके म्लैडी ने यही निश्चय किया कि किसी निकटवर्ती बंदरगाह पर उतर पड़ना चाहिए। इसी विचार से वह कप्तान के पास गई। परंतु कप्तान को जो आदेश मिला था; उसके विरुद्ध आचरण करने पर वह किसी प्रकार भी उद्यत नहीं हुआ। म्लैडी ने बहुत अनुनय-विनय की, कई प्रपंच रचे; परंतु उसने एक न सुनी। वह निरुपाय होकर जहाज़ पर बैठ गई। अब उसकी विचार-धारा दूसरी ही ओर मुड़ी। प्रतिकार की प्रेरणा से वह धर्माचार्य के पास लौट चलने को उद्यत तो हो गई; परंतु उसका हृदय भीतर-ही-भीतर भयभीत हो रहा था। पत्र छिन जाने की बात वह किस मुँह से धर्माचार्य से कहती? ऐसा करने पर उसे अपना सारा रहस्य उसपर प्रकट करना पड़ता; परंतु वह ऐसा कदापि नहीं कर सकती थी। दूसरी बात यह थी कि उसका जहाज़ इतनी धीमी चाल से प्रत्येक बंदरगाह पर रुकता-रुकाता जा रहा था कि उसको नौ दिन तो अभी ही बीत चुके थे। इतने दिनों में लंदन में न मालूम कितनी महत्त्वपूर्ण घटनायें हो चुकी हों और धर्माचार्य के पास लौट चलने तक उसको एक सप्ताह और अधिक लग जायेगा। ऐसी दशा में धर्माचार्य के विचार से उसका इंगलैंड ही पहुँचना हितकर समझा जायेगा। इन्हीं विचारों से इंगलैंड जाने ही में उसको संतोष हुआ।

इधर विपरीत वायु और समुद्र की दशा के ख़राब होने के कारण म्लैडी के जहाज़ को और भी देर होगई। परिणाम यह हुआ कि जब जहाज़ इंगलैंड पहुँचा, तब प्लेंचेट अपना काम समाप्त करके फ्रांस वापस जा रहा था। इसी कारण म्लैडी को समुद्र-तट पर बकिंघम दिखलाई पड़ा था। परंतु म्लैडी को इसपर किंचित्मात्र भी संदेह न

हुआ। वह अत्यंत प्रसन्नता और उत्साह के साथ अपने सामान की देख-भाल कर रही थी।

जब जहाज़ इंगलैंड के प्रसिद्ध बंदरगाह पोर्टस्-माउथ के निकट आया, तब एक किश्ती बड़ी तेज़ी से समुद्र-तट की ओर से आती हुई दिखाई दी। समीप आने पर एक भद्र-पुरुष जो अपनी सज-धज से अफ़सर मालूम होता था। उससे उतर कर जहाज़ पर आया और सीधा कप्तान के पास चला गया। कुछ देर तक उससे और कप्तान से बातचीत होती रही। बातचीत का परिणाम यह हुआ कि कप्तान ने सब यात्रियों को एक स्थान पर एकत्रित होने की आज्ञा दी। कप्तान के आदेश का सब लोगों ने पालन किया। अफ़सर ने प्रत्येक चेहरे का बड़े ध्यानपूर्वक निरीक्षण किया, उसकी तीक्ष्ण-दृष्टि सब लोगों से गुज़र कर म्लैडी के मुख पर रुक गई। एक तेज़ निगाह से उसने म्लैडी को सर से पैर तक देखा। म्लैडी की दृष्टि भी अफ़सर पर क्षण भर तक जमी रही। म्लैडी मुख देखते ही मनुष्य के हृदय की बात ताड़ जाती थी; परंतु इस बार उसके सब प्रयत्न निष्फल गये। अफ़सर २४-२५ वर्ष का सुंदर नव-युवक था। उज्ज्वल रंग, सुंदर गठन, और सुडौल मुखाकृति उसके सौंदर्य को बढ़ा रही थी। पतले ओंठ और रस-पूर्ण नेत्रों ने उसके रूप को और अधिक आकर्षक बना दिया था। म्लैडी को अफ़सर की रूप-माधुरी बड़ी प्रिय लगी। उसे उसके चमकीले स्निग्ध नेत्रों में कोई संदेह की बात दिखलाई नहीं दी।

निरीक्षण-कार्य से निपटकर अफ़सर कप्तान के पास लौट आया और उससे धीरे-धीरे कुछ बातें की। मालूम होता था कि उस समय से जहाज़ उसकी अधीनता में आ गया; क्योंकि उसके आदेशानुसार जहाज़ वहीं से मुड़ पड़ा और समुद्र-तट के किनारे-किनारे चल दिया। किश्ती जहाज़ के पीछे-पीछे चलने लगी। बंदरगाह के दूसरे किनारे पर जहाज़ आकर रुका।

इस समय सूर्य अस्त हो गया था और अंधकार धीरे-धीरे घना होता जाता था। समुद्र-तट पर लालटेनों का प्रकाश हो रहा था। अफ़सर ने आदेश दिया कि ग्लैडी का सामान किश्ती में रख दिया जाय रमणी मेरे साथ जायगी। ग्लैडी ने आश्चर्य में होकर पूछा—"आप कौन हैं जनाब! मेरे कारण कष्ट उठाने के लिये आप इतने क्यों उत्सुक हैं ?"

अफ़सर—"यह आप मेरी पोशाक ही से पहचान सकती हैं कि मैं अँगरेज़ी नौ-विभाग का एक अफ़सर हूँ। मुझे यह आदेश है कि मैं विदेशियों को विशिष्ट होटलों में पहुँचाऊँ, जिससे उनको किसी प्रकार का कष्ट न उठाना पड़े।"

ग्लेडी—"परंतु मैं तो विदेशी नहीं हूँ। मेरा नाम लेडी क्लेरिक है। और यह नियम············।"

अफ़सर—"यह नियम सार्वजनिक है। आप व्यर्थ में इसका विरोध न करें।"

ग्लैडी चुप हो गई। अफ़सर की बातचीत का ढंग इतना सरल और स्वाभाविक था कि ग्लैडी को किसी कपट का संदेह न हुआ। वह किश्ती में आ बैठी। किश्ती तीव्र-वेग से तट की ओर चल पड़ी। पाँच मिनट में किश्ती किनारे आ लगी। सब लोग उतर कर किनारे की भूमि पर आ गये। यहाँ एक बंद गाड़ी, मालूम होता था, पहले ही से प्रतीक्षा में खड़ी थी। ग्लैडी का सामान इस गाड़ी के पीछे बाँध दिया गया। अफ़सर ग्लैडी के साथ हाथ-में-हाथ मिलाये हुए उसके अंदर आकर बैठ गया। गाड़ी में बैठकर ग्लैडी ने पूछा—"क्या होटल यहाँ से बहुत दूर है ." अफ़सर ने कहा—"हाँ! नगर के दूसरी ओर है।" गाड़ी बिना अफ़सर की आज्ञा की प्रतीक्षा किये शीघ्र ही तीव्र-गति से एक सड़क पर चल दी।"

स्वागत का ढंग इतना विचित्र और अप्रत्याशित था कि ग्लैडी

को युवक अफ़सर के स्निग्ध तथा विनम्र आचरण के भीतर कुछ अनिष्ट की संभावना दिखाई देने लगी। उसको संदेह हुआ और यह संदेह इस बात से और भी दृढ हो गया कि अफ़सर चुप्पी साधे एक ओर ग्लैडी पर तीक्ष्ण-दृष्टि जमाये हुए बैठा रहा। उसने वार्तालाप करने की इच्छा को एकबार भी प्रकट नहीं किया। लगभग आध घंटा बीत गया; परंतु गाड़ी अब भी उसी तेज़ी के साथ चली जा रही थी, मालूम होता था कि वह कभी रुकेगी ही नहीं, बराबर चलती ही रहेगी। ग्लैडी का माथा ठनका, उसने खिड़की खोलकर—बाहर झाँककर देखा, अरे! यहाँ तो शहर का पता ही नहीं, गाड़ी तो जंगल में होकर जा रही है। उसके मुँह से बड़े ज़ोर से एक चीख निकली, वह चिल्ला पड़ी—"आप मुझे कहाँ लिये जा रहे है? कृपया जल्दी से बतलाइये, मैं हरगिज़ आगे नहीं जाऊँगी?" ग्लैडी का तीव्र-क्रंदन बंद-गाड़ी से निकलकर, निस्तब्ध बन की गंभीर शांति में, विलुप्त हो गया। अफ़सर गंभीर निस्तब्धता की मूर्ति बना हुआ वैसा ही बैठा रहा, गाड़ी की चाल और भी तेज़ हो गई। यह देखकर ग्लैडी घबड़ा उठी, उसने अचरज भरी आँखें फाड़कर कहा—"एँ! आप बोलते क्यों नहीं? बतलाइये तो, मुझे कहाँ लिवाये जा रहे हैं?" परंतु अफ़सर अब भी प्रस्तर-मूर्ति बना बैठा रहा। ग्लैडी क्रोध से काँपने लगी उसकी आँखों से अग्नि-कण बरस रहे थे। उसने गाड़ी से कूद पड़ने के विचार से खिड़की खोलना चाहा। इस पर अफ़सर ने अत्यंत शांति के साथ कहा—"ख़बरदार ऐसा साहस न करना, क्या कूदकर मरना चाहती हो?"

ग्लैडी झुँझलाकर अपने स्थान पर जा बैठी, क्रोध के मारे उसके ओठ काँप रहे थे। जब क्रोध का कुछ भी प्रभाव अफ़सर पर न पड़ा, तब ग्लैडी ने दूसरी चाल खेली। वह शांत होगई, भीषण चेष्टा के स्थान में स्निग्ध स्त्री-सुलभ कांति दौड़ गई। उसने अत्यंत करुण-स्वर में

कहा—"ईश्वर के नाम पर कम-से-कम यह तो बतला दीजिये कि यह अत्याचार आप किसी निजी शत्रुता के कारण कर रहे हैं या आपकी सरकार की प्रेरणा से ही यह सब कुछ हो रहा है ?"

अफ़सर इस करुण-स्वर से ज़रा कुछ प्रभावित-सा हुआ, उसने कहा—"आप शांति से काम लीजिये, आपके ऊपर किसी प्रकार का अत्याचार न होगा, जो कुछ हो रहा है, वह आपके हित के लिये है और सरकारी विधान के अनुकूल है। प्रत्येक यात्री के साथ ऐसा ही किया जाता है।" अफ़सर की चेष्टा से सत्यता टपक रही थी। ग्लैडी को उसपर विश्वास हो गया। वह शांति से निश्चिंत होकर बैठ गई।

अंत में बराबर एक घंटे चलने के उपरांत, गाड़ी एक लोहे के बड़े भारी फाटक के आगे आकर रुक गई। लहरों की गड़गड़ाहट से ग्लैडी ने यह अनुमान किया कि समुद्र भी इसी के निकट है। एक द्वारपाल ने आकर फाटक खोल दिया, गाड़ी भीतर बढ़ी चली गई। गाड़ी जिस सुर्ख़ी पर जा रही थी, उसके दोनों ओर घने वृक्षों की पंक्तियाँ चली गई थीं। इस बार गाड़ी एक विशाल प्रासाद के निकट आकर रुकी। शीघ्र ही अफ़सर ग्लैडी के साथ उतर पड़ा। उसने एक सीटी बजाई। फ़ौरन ही तीन आदमी आकर हाज़िर हुए और अफ़सर के संकेत के अनुसार सामान उतारकर, एक कमरे में रखने लगे। असबाब उतर चुकने के बाद गाड़ी वापस चली गई। अफ़सर ग्लैडी के हाथ में हाथ डाले हुए, भवन के भीतर चला गया। भीतर कई छोटे-छोटे कमरों से गुज़रता हुआ, वह एक बड़े कमरे में आकर रुका और ग्लैडी से कहा—"इस कमरे में आप विश्राम कीजिये। आपके लिये आवश्यकता की सब वस्तुयें यहाँ उपस्थित हैं।"

ग्लैडी अत्यंत आश्चर्य से यह सब लीला देख रही थी। उसको होटल का विश्वास दिलाया गया था; परंतु इस भवन में पहुँचकर

जो कुछ उसने देखा—उससे उसके मन का संदेह और भी दृढ़ होगया। वह समझ गई कि मैं बंदी-गृह में मौजूद हूँ। कमरे में लैम्प का प्रकाश फैल रहा था, इसी प्रकाश में वह कमरे की प्रत्येक वस्तु को आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगी। भवन बिलकुल निर्जन था, कमरे की दीवालें दरवाज़े और वहाँ का सामान, सबसे यह ध्वनि निकल रही थी कि यह बंदी-गृह है। किसने बंदी किया, और क्यों? ये प्रश्न उसके मन को व्यथित करने लगे। वह हताश होकर एक कोच पर बैठ गई। उसका सारा उत्साह जाता रहा, सारी आशायें मिट्टी में मिल गईं। जब अफ़सर कमरे से जाने लगा, तो उसने अत्यंत करुण-स्वर में पूछा—"मैंने ऐसा कौन-सा अपराध किया है, जिसके कारण मैं बंदी की जा रही हूँ?"

अफ़सर ने उत्तर दिया—"इस प्रश्न का उत्तर अन्य व्यक्ति देगा, वह देखिये, वह सामने स्वयं आ रहे हैं।" यह कहकर अफ़सर चला गया। ग्लैडो ने देखा कि कमरे के दूसरी ओर से एक भद्र-पुरुष उसी की ओर चला आ रहा है। जब प्रकाश की किरणें उसके चेहरे पर पड़ीं, तो ग्लैडी आश्चर्य से उछल पड़ी, वह चिल्ला उठी—"एं! प्यारे देवर! क्या तुम हो?"

३८

वास्तव में आगंतुक ग्लैडी का देवर डी० विंटर ही था।

उसने कहा—"हाँ! मैं ही हूँ?"

"और यह भवन भी तुम्हारा ही है?"

"हाँ!"

"और यह कमरा?"

"यह तुम्हारा है।"

"तो क्या मैं अपने देवर ही के आदेश से बंदी की गई हूँ?"

"मेरी भाभी का अनुमान कभी असत्य नहीं निकलता।"

"परंतु यह तो सरासर अन्याय है! क्या मानव-शक्ति का इससे बढ़कर, भयंकर दुरुपयोग और कभी हो सकता है?"

"अन्याय है? ख़ूब! न्याय और अन्याय की दार्शनिक मीमांसा करना तुमने कबसे सीखा? चंचल हृदय की दुर्दमनीय, लिप्सा के परितृप्त करने में जो रमणी सदा से अभ्यस्त रही, उसके मुख से इतने बड़े शब्द शोभा नहीं देते!"

ग्लैडी डी० विंटर का मुँह ताकने लगी। जो कुछ वह देख-सुन रही है, उसका ध्यान तो उसने कभी स्वप्न में भी नहीं किया था। अपने आचरण की इतनी खरी आलोचना सुनकर भी उसने अपने

हृदय में उठते हुए क्रोध को इस समय पी डालना ही उचित समझा। क्योंकि वह जानती थी कि बंदी होने तथा भावी जीवन को नियंत्रित करने के कारण-स्वरूप जिस भेद से अवगत होने के लिये उसका जी छटपटा रहा है, उसे वह इस समय डी० विंटर के मुख से शांत वार्तालाप ही द्वारा निकलवा सकती है, अतः वह चुप होगई। कुछ क्षण बाद शांति को भंग करते हुए डी० विंटर ने कहा—"तो एक बार फिर इंगलैंड आने का तुमने विचार आख़िर कर ही लिया, यद्यपि पेरिस में कई-बार तुमने यह प्रकट किया था कि बृटिश-भूमि पर मैं अब कभी पैर न रक्खूँगी ?"

म्लैडी ने उत्तर को टालकर स्वयं प्रश्न किया—"परंतु पहले यह तो बतलाइये कि आपको मेरे आने का पता कैसे लगा ?"

लार्ड विंटर ने भी म्लैडी ही के मार्ग का अनुसरण किया, म्लैडी की बात को अनसुनी करके उसने कहा—"हाँ ! तो तुम इंगलैंड किस उद्देश्य से आई ?"

"तुमसे मिलने के लिये।"

"ओह ! मुझसे मिलने के लिये ?"

"निश्चय, इसमें आश्चर्य की कौन-सी बात है ?"

"आश्चर्य ! मुझे तो तुम्हारी किसी भी बात पर आश्चर्य नहीं होता, तुम्हारी इस सहृदयता के लिये मैं कृतज्ञ हूँ ?"

"आज आप कैसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं ? क्या मैं आपकी संबंधिनी नहीं हूँ ?"

अवश्य ! तुम तो मेरी उत्तराधिकारिणी हो ?" यह कहकर लार्ड ने म्लैडी के नेत्रों में अपनी आँखें गड़ा दीं। यह व्यंग्य म्लैडी के हृदय में तीर की तरह चुभा। वह बेचैन हो गई, सोचने लगी कि कहीं किटी ने तो यह भंडा-फोड़ नहीं किया ? उसके अतिरिक्त और किसी के सामने तो उसने अपने हृदय की बात कभी कही ही नहीं ?

लार्ड को इसका कैसे पता चला, यही बात उसके मुख से निकलवाने के लिये, ग्लैडी ने स्त्री-सुलभ सरलता धारण करके कहा—"यह आप क्या कह रहे हैं? मैं आपके अभिप्राय को नहीं समझ सकी, क्या आपको मुझ पर कुछ संदेह है?"

लार्ड, ग्लैडी के हृदय की बात को समझ गये। एक उच्च अट्टहास करके लार्ड ने कहा—"कदापि नहीं? तुम्हारे प्रत्येक कार्य को मैं सदा असंदिग्ध दृष्टि से देखता आया हूँ। तुम मुझसे मिलने आई हो? तुमने यही कहा न? मैंने भी तुम्हारे लिये सब सुविधा कर दी थी, जिससे तुमको रात्रि के समय बंदरगाह पर उतरने में किसी प्रकार का कष्ट न हो। इसी निमित्त मैंने अपना एक कर्मचारी तुम्हारा स्वागत करने के लिये भेज दिया, एक गाड़ी भी रवाना कर दी। जिससे तुम अत्यंत सुविधा-पूर्वक इस भव्य-भवन में आ सको। यहाँ पर भी तुम्हारे सुख की सब सामग्री जुटा दी गई है। इसमें तो कोई आश्चर्य की बात नहीं है?"

"क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि तुमको मेरे आने के विषय में इतनी शीघ्र पक्की सूचना मिल गई?"

"आह! यह तो सबसे सरल बात है। इसमें अचरज की कोई बात ही नहीं? मैं बंदरगाह का प्रधान अधिकारी हूँ, मेरे पास प्रत्येक जहाज़ का कप्तान बंदरगाह में प्रविष्ट होने के पूर्व ही, प्रवेश-आज्ञा-पत्र प्राप्त करने के लिये जहाज़ संबंधी सब काग़ज़-पत्र और विशेष कर यात्री-सूची अवश्य भेजता है। क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि तुम्हारे कप्तान ने भी अपने यात्रियों की सूची भेजी थी? उसीका निरीक्षण करते समय तुम्हारे नाम पर मेरी दृष्टि पड़ गई। तुम आ रही हो, यह जानकर मुझे असीम हर्ष हुआ। चिरकाल से तुमसे भेंट नहीं हुई थी, इसी कारण मैंने अनुमान किया कि तुम्हारे आने का उद्देश्य केवल मुझसे मिलना ही होगा। अब तुम्हारे मुख से अपने अनुमान को

सत्य में परिणत होते देखकर, क्या मुझे अमित आनंद होना संभव नहीं है ?"

लार्ड विंटर में इतनी वाक्चातुरी देखकर, ग्लैडी को अत्यंत आश्चर्य हो रहा था। वार्तालाप द्वारा दूसरे के हृदय के भीतर छिपे हुए गुप्त भेद को स्वयं उसी के मुख से बाहर निकलवा लेने में ग्लैडी अत्यंत सिद्ध-हस्त थी। अपने इस गुण पर उसको गर्व था, उसकी दृष्टि में लार्ड विंटर बातचीत में बहुत कच्चा था। वह समझती थी कि उसको वह योंही बातों में उड़ा देगी और सहज ही में उसके भेद को हस्त-गत कर लेगी। परंतु उसी नौसिखिये लार्ड विंटर के सामने वह मात पर मात खाती जा रही है, उसके सब बाण निष्फल सिद्ध हो रहे हैं, यह देखकर वह अत्यंत लज्जित हुई। अपने तर्कश को उसने फिर से टटोला और नवीन उत्साह के साथ एक तीर बहुत तुले हुए हाथों से शत्रु पर फिर जमाया—"प्यारे लार्ड ! क्या वह भद्र-पुरुष जिनको मैंने आज बंदरगाह पर देखा था, लार्ड वकिंघम थे ?"

"हाँ ! वह साक्षात् वकिंघम ही थे। ओह ! मैं समझ गया कि तुम्हारा ध्यान उनकी ही ओर इतने विशेष-रूप से क्यों आकर्षित हुआ। तुम उस देश से आ रही हो, जहाँ पर उनके विषय में आजकल प्रति-दिन बहुत ज़ोरों की चर्चा रहती होगी। अहा ! मैं यह भी जानता हूँ कि तुम्हारा मित्र धर्माचार्य तो उनकी सैनिक-तैयारी संबंधी हाल चाल लेने के लिये विशेष-रूप से उत्सुक होगा।" "मेरा मित्र धर्माचार्य ! यह आप क्या कहते हैं।" जिस बाण को ग्लैडी ने ब्रह्मास्त्र समझकर शत्रु पर फेंका था, उसने बीच ही से लौटकर स्वयं उसी पर आघात किया। उसकी चोट से व्यथित होकर, ग्लैडी सहसा चिल्ला पड़ी—वह समझ गई कि उसके शत्रु से कोई बात छिपी नहीं है। लार्ड सब कुछ जानते हैं।

लार्ड ने अचंभित-से होकर कहा—"क्या वह तुम्हारा मित्र नहीं

है ? ओह ! मुझे क्षमा करना ! मुझसे भूल हुई ; परंतु हमारे लार्ड से तुम्हारी भेंट जल्दी ही होगी। घबड़ाना नहीं। हाँ ! तो तुम कह रही थीं कि तुम मुझसे मिलने आई हो। अच्छा ? तो यदि किसी बात की आवश्यकता हो, तो मुझसे कहना ? यहाँ तुमको किसी प्रकार का कष्ट तो नहीं है ?"

एक ही बाण से इतने अधिक प्रहार करते, ग्लैडी ने कभी और किसी को न देखा था। उसने कहा—"यहाँ तो मुझे कोई दास या दासी भी नहीं दिखाई देते।"

"इसका भी प्रबंध कर दिया जायगा। मैं चाहता हूँ कि तुमको किसी प्रकार का कष्ट न हो। जो सुख और ऐश्वर्य तुमको तुम्हारा पहला पति पहुँचाता रहा है, वही सब तुमको यहाँ भी मिलें।"

"मेरा पहला पति !" ग्लैडी चिल्ला उठी। वह आँखें फाड़-फाड़कर लार्ड की ओर देख रही थी।

"हाँ ! तुम्हारा फ्रेंच पति ! मैं अपने भाई के विषय में नहीं कहता। यदि तुम उसको भूल गई हो, तो मैं पत्र लिखकर इस संबंध में उससे समाचार मँगा सकता हूँ। वह तो सौभाग्य से अभी जीवित है !"

लार्ड यहाँ तक जानते हैं, यह देखकर ग्लैडी डर गई। उसके शरीर से पसीना छूटने लगा। भर्राई हुई आवाज़ में वह बोली—"तुम परिहास करते हो ?"

"परिहास ! क्या यह कभी संभव है ?"

"तो तुम मेरा घोर अपमान करते हो !" ग्लैडी ने क्रोध के आवेश में कुर्सी से उठते हुए यह कहा। उसकी चेष्टा धीरे-धीरे भीषण होती जा रही थी। उसके तरकश में अब यही आग्नेयास्त्र शेष रह गया था।

लार्ड ने घृणा-व्यंजक स्वर में कहा—"अपमान ! क्या तुम्हारा कभी अपमान हो सकता है ?" ग्लैडी के लिये यह असह्य था, उसका

रूप भयंकर हो गया था, क्रोध उसकी नस-नस में आ भरा था, आँखों से अग्नि-कण बरस रहे थे। अत्यंत तीक्ष्ण तथा कठोर स्वर में उसने कहा—"मूर्ख ! उद्दंड !" और यह कहकर शीघ्र ही लार्ड के ऊपर चोट खाई हुई नागिन की तरह झपट पड़ी। परंतु लार्ड पहले ही से इस हमले के लिये तैयार था, वह पहले ही से तलवार निकाल कर खड़ा हो गया। तलवार की नोक को ग्लैडी की छाती से स्पर्श करते हुए उसने कहा—"आ ! घातिनी ! अब आ ! मैं जानता हूँ कि तेरे हाथ ख़ून करने में अभ्यस्त हो गये हैं। निरीह मनुष्यों के लहू से तेरी कभी तृप्ति नहीं होती ? परंतु मैंने भी वह शरीर-त्राण पहना है कि हाथ लगाते ही तू स्वयं नष्ट हो जायगी !"

ग्लैडी ने कहा—"ठीक है ! निर्बल पुरुष सदा स्त्रियों पर ही हाथ उठाते हैं !"

लार्ड ने उच्च-स्वर से हँसकर कहा—"यह संभव है ! परंतु तेरे ऊपर मेरा ही पहला हाथ नहीं उठा है !" यह कहते हुए लार्ड ने ग्लैडी के वक्षस्थल की ओर हाथ से संकेत किया। ग्लैडी ज़ोर से चीख़ मारकर कुर्सी पर गिर पड़ी। श्वास बड़े ज़ोर से चलने लगी, मालूम होता था कि सारे शरीर की शक्ति ही लुप्त हो गई, उसका चेहरा सफ़ेद पड़ गया। उसकी इस वीभत्स आकृति को देखकर, लार्ड विंटर एक क्षण के लिये डर से गये। परंतु वे इस मायाविनी के भिन्न-भिन्न रूपों से भली-भाँति परिचित थे। वे आवेश में तीव्र-स्वर से कहने लगे—"ओह ! पापिनी ! तेरे इस विकराल रूप से भी मैं परिचित हूँ ; परंतु ख़बरदार ! मेरे ऊपर कभी इसका प्रहार न करना अन्यथा इस संसार में तेरी कोई रक्षा न कर सकेगा। मैं केवल तेरे वक्षस्थल को दाग़कर ही बस नहीं करूँगा वरन् उसके भीतर छिपे हुए कुटिल विषाक्त हृदय को निकालकर फेंक दूँगा ?"

ग्लैडी के विकराल नेत्रों से एक भयंकर ज्वाला निकलने लगी।

वह विस्फारित नेत्रों से लार्ड को घूर रही थी मानो आहत सिंहनी नवीन आक्रमण का उपक्रम कर रही हो।

लार्ड ने फिर कहा—"आह! तू समझती थी कि मेरे भाई की संपत्ति को हड़प लेने के बाद, तू मेरी संपत्ति को भी हज़म कर सकेगी; परंतु यह तेरी लालसा कभी सफल नहीं हो सकती। मैंने पहले ही से सब प्रबंध कर लिया है, तू एक कौड़ी पर भी हाथ नहीं लगा सकती! आह! मुझे अपने भाई के वे शब्द याद हैं, जो उन्होंने मरते समय तेरे विषय में कहे थे। उन्होने कहा था कि वह पापिनी केवल अपने पापात्मक स्वभाव ही के कारण पाप-कर्म में निरत होती है। उसकी पाप-वासना कभी तृप्त नहीं हो सकती, उसकी मृत्यु बड़ी हृदय-विदारक होगी? पूज्य भाई के ये शब्द अक्षरशः सत्य हैं! तेरी जिह्वा में लहू का स्वाद लग गया है, तेरी इस प्रवृत्ति का अन्त करने के लिये तेरी इस जिह्वा ही को उखाड़ फेंकना होगा। रक्त की प्यासी सिंहनी! इसी पिंजड़े में बंद पड़ी रह! जब तक मैं यहाँ हूँ, मैं स्वयं भी आकर तेरी देख-भाल करता रहूँगा। पंद्रह दिन के बाद जब मैं स्वयं राशेल सेना लेकर जाऊँगा, तब तू भी दक्षिण के उस उपनिवेश में भेज दी जायगी, जहाँ तुझे अपने सब पापों का प्रायश्चित करना पड़ेगा।" अपने भावी जीवन की इस कठोर व्यवस्था को सुनकर, म्लैडी के मुँह से एक गुर्राहट की-सी आवाज़ निकली।

लार्ड ने हँसकर कहा—"इस गुर्राहट का अर्थ मैं समझता हूँ। तू सोच रही है कि पंद्रह दिन का समय तो मेरे भाग निकलने के लिये बहुत अधिक है, मैं मायाविनी हूँ, अपने कल्पना-प्रवर मस्तिष्क से कोई न कोई उपाय अवश्य निकाल लूँगी; परंतु पिशाचिनी! मैंने तेरे सब मार्ग बंद कर दिये हैं। इस मकान की दीवालें, छत और दरवाज़े लोहे से भी अधिक मज़बूत हैं, इस प्रासाद के बाहर चार मज़बूत फाटक लगे हैं, जिनको कोई हिला भी नहीं सकता, बाहर और भीतर अस्त्र-

शस्त्र से सुसज्जित, संतरी चौबीसों घंटे चौकसी रखते हैं, जो एक साधारण खटके पर तेरे शिर को गोलियों से छेदने में एक पल की भी देर न करेंगे। किसी भी प्रकार का धन-लोभ उनको कठोर कर्तव्य से विचलित नहीं कर सकता और यह फ़ैल्टन—वह युवक, जो तुझको बंदरगाह से यहाँ लाया है, यद्यपि सुंदर युवक है, एक पाषाण-प्रतिमा है, तेरा यह स्निग्ध रूप, मर्मस्पर्शी नुकीले कटाक्ष, प्रेम के मधुर प्रलोभन आदि ये सब स्त्री-सुलभ अजेय बाण उसके पाषाण-हृदय से टकराकर नष्ट हो जायँगे। उसपर विजय पाने का तेरा विचार निर्मूल है, निराधार है और निरर्थक है। मैं ललकारता हूँ कि तू अपने सब अस्त्रों को उसपर आज़मा ले?"

इतना कहकर लार्ड विंटर ने पुकारा—"फ़ैल्टन! इधर आओ।" दरवाज़ा खोलकर पूर्व परिचित अफ़सर ने कमरे में प्रवेश किया। ग्लैडी की ओर संकेत करके लार्ड ने फ़ैल्टन से गंभीर स्वर में कहा—"इस रमणी को ख़ूब अच्छी तरह देख लो। यह यौवनांगना है, सुंदरी है, अत्यंत रूपवती है, इसके नेत्रों में अद्भुत आकर्षण है, चमकीली पुतलियों में जादू का सा प्रभाव है, इसकी वाणी में हृदय-भेदी शक्ति है। इसकी नस-नस में नारी-स्वभाव का सारा रहस्य संचित है। पुरुष-हृदय को विजित करने में, यह अत्यंत निपुण है। इसका दावा है कि कोई भी व्यक्ति इसके अजेय प्रलोभनों से अप्रभावित नहीं रह सकता। अपनी इसी अद्वितीय शक्ति द्वारा इसने अपने अब तक के जीवन-काल में इतने अधिक अपराध किये हैं कि तुमको न्यायालय की अपराध-तालिका में भी उतने नहीं मिल सकते। यह मायाविनी है! घोर पापिष्ठा है! इसके काटे का कहीं मंत्र नहीं है! जघन्य से जघन्य पाप करने में यह कभी नहीं हिचकी। युवकों की काम-लालसा को जागृत करके, उनको फँसाने में और स्वार्थ साधन के पश्चात् उनके अस्तित्व को मिटा देने में यह सिद्ध-हस्त है। मानव-लहू की इसको

चाट पड़ गई है। इस बार यह मेरे जीवन पर हाथ साफ़ करने इंगलैंड आई है, आज यह नागिन मेरे चंगुल में फँस गई है। फैल्टन! एक बार मैंने तुम्हारे प्राणों की रक्षा की थी, तब से तुम्हारा लालन-पालन मैंने पुत्रवत् किया है। इस बार तुम मेरे प्राणों की रक्षा करो। परंतु तुमको सबसे अधिक अपनी रक्षा इससे करनी होगी? तुमको फँसाने के लिये यह भरसक चेष्टा करेगी, इसके अस्त्रों को विफलित कर देना साधारण व्यक्ति का काम नहीं है। यद्यपि तुम्हारे चरित्र पर और तुम्हारी दृढ़ता पर मुझको विश्वास है, तथापि बहुत सँभलकर रहना, ज़रा भी डगमगाने पर तुम्हारा और मेरा दोनों का सर्व-नाश निश्चित है। तुम्हारे अतिरिक्त यह किसी से बातचीत न करने पाये और कोई भी व्यक्ति इसके निकट न जा पाये। तुमको भी जब कभी जाने की आवश्यकता हो, तो हृदय को पत्थर बनाकर जाना अपने को नेत्र और कर्ण विहीन समझ लेना। फ़ैल्टन! ईश्वर की शपथ खाकर कहो कि तुम इसके साथ सदा ऐसा ही व्यवहार करोगे।"

फ़ैल्टन ने नत-मस्तक होकर दृढ़ता-व्यंजक स्वर में कहा—"श्रीमान्! मैं ईश्वर की साक्षी करके कहता हूँ कि आपकी इन आज्ञाओं का अक्षरशः पालन करूँगा और एक सत्यनिष्ठ, वीर, व्रती व्यक्ति की भाँति अपनी इस प्रतिज्ञा पर सदा अचल रहूँगा।"

"बस! फ़ैल्टन! इतना काफ़ी है। आओ! इस कमरे को बंद करके अब हम दोनों चलें और इस पिशाचिनी को हार्दिक शांति के लिये ईश्वर से प्रार्थना करने दें।" यह कहकर दोनों कमरे के दरवाज़ों को अच्छी प्रकार बंद करके चले गये। म्लैडी निस्तब्ध कमरे में आश्चर्यमय विषाद की कलंक-मूर्ति बनी खड़ी रह गई।

३९

धर्माचार्य ग्लैडी को इंगलैंड भेजकर, एक प्रकार से निश्चित-सा हो गया। राशेल नगर से विदेशियों को वह निकाल ही चुका था। अब उसे केवल नगर-निवासियों ही पर विजय पाना शेष रह गया था! राशेल-निवासी यद्यपि फ्रांसीसी थे, तथापि भिन्न धर्मानुयायी होने के कारण, फ्रांस की सरकार के परम शत्रु थे। इंगलैंड राशेल वासियों ही के धार्मिक संप्रदाय का अनुगामी था। इसी कारण यद्यपि राशेल नगर में सरकार राशेल-वासियों के हाथ में थी। तथापि वास्तविक प्रभुत्व अँगरेज़ों ही का था। यही कारण था कि नगर से अँगरेज़ों के निकाल दिये जाने पर भी राशेल-निवासी बड़ी वीरता के साथ फ्रांस की सेना का सामना करते रहे, उनको आशा थी कि इंगलैंड का सूत्रधार बकिंघम उनकी सहायता करेगा।

रिचलू इस परिस्थिति से अच्छी प्रकार परिचित था। इसी कारण उसने उधर तो बकिंघम के सर्वनाश के लिये ग्लैडी को भेजा और इधर राशेल के चारों ओर अपनी विशाल सेना का घेरा डाल दिया। रसद पहुँचने के सब साधन बंद कर दिये। उसने सोचा कि नगर-निवासी भूख से तड़पकर शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर देंगे। अब वह

निश्चिंत होकर, राशेल के पतन और वकिंघम की मृत्यु के समाचारों की प्रतीक्षा करने लगा।

परंतु मनुष्य का चेता सदा पूरा नहीं होता। धर्माचार्य प्रतिदिन प्रतीक्षा करता था कि म्लैडी द्वारा भेजा हुआ सुसंवाद आज अवश्य मिलेगा; परंतु दिन पर दिन बीतते जाते थे और विदेशीय डाक म्लैडी के पत्र से सदा ख़ाली ही मिलती थी। उसके मन में एक चिंता सवार हो गई; परंतु लाख सोचने पर भी इस अप्रत्याशित देरी का कोई कारण उसकी समझ में न आता था। धर्माचार्य म्लैडी के चरित्र से भली भाँति परिचित था। वह जानता था कि म्लैडी में अजेय शक्ति है, उसकी क्षमता अद्भुत है, सफलता उसकी दासी है। विभिन्न गुणों का विचित्र समावेश यदि किसी स्त्री में मिल सकता है, तो म्लैडी ही में। उसमें पुरुष का विलक्षण साहस है और रमणी का अद्भुत चातुर्य। कमनीय रूप की दिव्य छटा और वीणा-विनिंदित-स्वर-माधुरी से वह किसी भी हृदय को सरलता से विजित कर सकती है। वाक्-पटुता और समयोचित वार्तालाप में उसकी समता कोई नहीं कर सकता। म्लैडी के इस दिव्य रूप की ओट में जो विकराल स्वरूप अंतर्हित है, वही उसकी कार्य-शक्ति का मुख्य केंद्र है। जब नेत्र-विमोहक सौंदर्य का दिव्यास्त्र अनावश्यक सिद्ध होता है, तो म्लैडी कमनीयता का आवरण उतार कर रण-चंडी का दुर्धर्ष कवच धारण कर लेती है। अपनी इसी विचित्र, दुर्जेय शक्ति के द्वारा वह कभी अपने उद्देश्य में अकृत-कार्य नहीं हो सकती। फिर क्या कारण है कि म्लैडी अभी तक एक पत्र भी न भेज सकी? क्या सिंहनी किसी विपत्ति-जाल में तो नहीं फँस गई? यह आशंका उसे होती अवश्य थी; परंतु इसपर सहसा उसे विश्वास करने का साहस न होता था। परंतु धीरे-धीरे इस आशंका ने अपने पैर जमाने आरंभ कर दिये और धर्माचार्य का हृदय व्याकुल हो उठा।

इधर राशेल नगर की परिस्थिति ने धर्माचार्य की व्याकुलता को और भी बढा दिया। उसको विश्वास था कि असहाय राशेल-निवासी अन्नाभाव से त्रस्त होकर शीघ्र ही आत्म-समर्पण कर देंगे; परंतु उनकी अचल देश-भक्ति, अपूर्व आत्मोत्सर्ग और अविचलित आत्म-गौरव की दृढ़ भावनाओं के आगे धर्माचार्य के विश्वास की जड़ें हिल गईं। राशेल की ओर से यह समाचार नहीं आया कि घेरा उठा दो, हम आत्म-समर्पण के लिये तैयार है। यद्यपि धर्माचार्य ने राशेल के आने-जाने के सब मार्ग बंदकर दिये, बकिंघम के पास सहायता की याचना के निमित्त राशेल के जो दूत बाहर जाते देखे गये, उनको पकड़-पकड़कर यमालय भेजना प्रारंभ कर दिया और इंगलैंड से आने-वाले पत्र-वाहकों के लिये भी इसी दंड की व्यवस्था कर दी, तथापि राशेल के नागरिकों के छक्के न छूटे, वे और भी अधिक साहस के साथ अपनी दृढ़ता पर डटे रहे।

इस निराशाजनक परिस्थिति से धर्माचार्य घबड़ा उठा। ग्लेरी की जिस सहायता के आधार पर उसने अपनी अनायास विजय द्वारा संसार को चकित कर देना चाहा था, उसके वे सब मंसूबे मिट्टी में मिल गये। परंतु अब भी प्रत्युत्पन्नमति धर्माचार्य ने साहस का पल्ला न छोड़ा। उसने निश्चय किया कि अब मै अपनी एकाकी शक्ति ही के सहारे इस युद्ध को लडूँगा। उसके सामने दो मार्ग खुले थे। वह या तो खुल्लम-खुल्ला आक्रमण करके राशेल के देशभक्तों के लहू से नगर की गलियाँ डुबो दे या कूटनीति द्वारा उनमें विनाशक फूट का बीज बपन करे। राज-परिषद ने पहले विचार का समर्थन नहीं किया। उनका यह तर्क अधिक सारयुक्त जान पड़ा कि राशेल-निवासी राज-द्रोही की हैसियत से दंडनीय अवश्य हैं और गुरुतर दंड के भी हैं; परंतु मुट्ठी भर नेताओं के कारण नगर भरके स्त्री, और बूढ़ों का बध करना, मानवी सहृदयता के नियमें

कूल है। निरीहों के इस भीषण रक्तपात से फ्रांस के इतिहास में सदा के लिये अमिट कालिमा पुत जायगी। धर्माचार्य का हृदय इस तर्क से प्रभावित होगया। अतः उसने कुटिल-नीति के ही अजेय अस्त्र का प्रयोग करना उचित समझा।

राशेल-निवासी इस समम घोर विपत्ति में फँसे थे। निर्दय शत्रुओं का टिड्डी-दल चारों ओर से उनके इने-गिने प्राणों को घेरे पड़ा था, दुर्वृत्त हृदय-हीन सैनिक मुँह बाये उनकी स्वाधीनता को हड़प जाने के लिये उद्यत थे। स्वतंत्रता के बादल अत्याचार-पवन के प्रबल झोकों से नष्ट हो जानेवाले थे। कहाँ फ्रांस की दुर्जेय अपार सेना और कहाँ उनका क्षुद्र अस्तित्व। शत्रुओं की अपार शक्ति के सामने वे कब तक टिक सकते थे? परंतु यह आक्रमण उनके जातीय जीवन तथा उनके स्वाधीन अस्तित्व पर एक भीषण कुठाराघात का प्रयत्न था। वे अपनी इस बहुमूल्य निधि को किसी भी दशा में छोड़ने को तत्पर न थे। इस संकट ने उनमें एक अपूर्व स्फूर्ति उत्पन्न कर दी। राष्ट्रीय सर्वनाश की आशंका ने प्रत्येक नागरिक की आत्मा में नूतन उत्साह और मर मिटने की एक अपूर्व भावना का संचार कर दिया। देश-भक्त नेताओं ने नगर-निवासियों को प्रोत्साहन दिया, उनको बतलाया कि जीवन का मूल्य आत्म-त्याग की अमर भावना में है, प्राणों की रक्षा का महा-मंत्र समर-यज्ञ की वीर आहुतियों में छिपा है। राष्ट्रीय गौरव की रक्षा करते हुए मर मिटने में ही जीवन का लोकोत्तर आनंद है। इन ओजस्वी शब्दों ने युवकों की आत्माओं में एक आग फूँक दी। वे दुःख की आँचें झेलकर, नगर की रक्षा करने के लिये कटिबद्ध हो गए। उनकी इस सहनशीलता और उग्र तपस्या का एक कारण और था! उनको आशा थी कि इस विपत्ति में अँगरेज़ उनकी सहायता वकिंघम उनके इस धैर्य का अवलंब था। यह बात प्रत्यक्ष थी किंघम की सहायता पर उनको विश्वास न होता, तो उनके

साहस तथा उत्साह का शीराज़ा कभी का बिखर गया होता, वे इतने समय तक शत्रुओं का सामना कदापि न कर सकते। आशा डूबते हुए मनुष्य के लिये तिनके का सहारा हो जाती है। आशा ही की प्रेरणा से हम वर्षों विपत्तियाँ झेल सकते हैं। संकट पर संकट आते हैं; परंतु हम आशा के ही स्तम्भ को पकड़कर सब आपदाओं को झेल लेते हैं। यही कारण था कि राशेल-निवासी शत्रुओं द्वारा सब प्रकार संत्रस्त किये जाने पर भी आत्म-समर्पण के लिये उद्यत न हुए।

यह स्थिति कई दिन बनी रही। वे अपनी दृढ़ता पर रहे; परंतु अधिक दिनों तक वे इस स्थिति को स्थिर नहीं रख सकते थे। उनकी परिमित-शक्ति धीरे-धीरे घटने लगी। बकिंघम की प्रतीक्षा करते-करते उनकी आँखें पथरा गईं। आशा का अवलंब नैराश्य के प्रबल धक्के से हिल गया। वे अपनी आत्मिक-शक्ति के सहारे कुछ दिन और भी लड़ सकते थे; परंतु अन्न का भंडार धीरे-धीरे ख़ाली होता जाता था, शारीरिक पुष्टि के साधनों का लोप हो रहा था। सैनिक की आत्मा कितनी ही सबल हो; किंतु अशक्त शरीर में कार्य-शक्ति का संचार नहीं कर सकती। जब हाथों में ही तलवार पकड़ने का बल नहीं, तो युद्ध-कौशल सब व्यर्थ हो जाता है। राशेल के चतुर नेताओं ने बिगड़ी हुई परिस्थिति को सुधारने के लिये, नगर भर का अवशिष्ट अन्न सैनिक बैरकों में बंद कर दिया और यह हुक्म निकाल दिया कि इससे केवल नगर के युवकों का ही भरण-पोषण किया जाय। नेताओं ने सोचा कि संग्राम के समय युवक ही काम में आयेंगे न कि नगर के स्त्री, बच्चे और बूढ़े। राष्ट्रीय-गौरव की रक्षा के लिये यदि इनका बलिदान भी देना पड़े, तो भी कोई बड़ी भारी हानि नहीं। देश-भक्त नागरिकों ने नेताओं के इस विचित्र आदेश को सहर्ष स्वीकार कर लिया। परंतु जिस दिन यह आदेश निकला था, उसके दूसरे ही दिन प्रत्येक मकान की दीवालों पर बहुत-से काग़ज़ चिपके हुए मिले। इनमें लिखा था—

"भोले-भाले राशेल-वासियो ! नेताओं का यह आचरण नितांत स्वार्थ-पूर्ण है, मानवीय भावनाओं के निपट प्रतिकूल है और घोर अन्याय का कुत्सित निदर्शन है। निरीह बच्चों, असहाय वृद्धों और कोमल अबलाओं को भूख से तड़प-तड़प कर मरते देखकर, क्या तुम्हारे अन्नपूर्ण उदरों की जठराग्नि ठंडी नहीं पड़ जाती ? अपने इन प्राणाधार प्रिय-जनों की क्रूर हत्यायें करके किस आधार पर तुम जीवित रहने की आशा करते हो ? क्या यह पैशाचिक रक्त-पात संसार से धर्म की मर्यादा का अस्तित्व नहीं मिटाता ? हृदय-हीनता के इस कलंक को अपने माथे ओढ़कर, विजय-श्री के लिये दौड़ने में क्या तुमको लज्जा नहीं आती ? जिस क्षुधा की भयानक यंत्रणा से अपने स्वार्थी पेटों की रक्षा करके तुम अपने माता-पिता पत्नी और बच्चों को मृत्यु के मुँह में ढकेलते हो, उसके स्वाद को कुछ रोटियाँ कम करके ज़रा स्वयं भी तो चक्खो ?"

"एक देश भक्त"

इन नोटिसों ने बारूद के ढेर में पलीतों का सा काम किया। नगर भर में एक आग सी पैदा हो गई। देश भक्ति और संगठन का शीराज़ा बिखर गया। इस "देश-भक्त" ने राशेल-निवासियों की आँखें खोल दीं। जवानों का गर्म ख़ून खौल गया। वे उत्तेजित होकर इस आदेश के प्रचारक नेताओं के प्राणों के गाहक बन बैठे, चारों ओर विद्रोह और क्रांति के भीषण लक्षण देख पड़ने लगे। गलियों और बाज़ारों में मनुष्यों के समूह कोलाहल करते हुए इधर-उधर घूमने लगे। लोग कहते थे कि शत्रुओं से शीघ्र ही संधि कर लेनी चाहिए, इन नेताओं ने हमको धोखा दिया है, वकिंघम की आशा में अटकाकर हमारा सर्वनाश करवाया है, इन धूर्त स्वार्थियों को पकड़कर मार डालो। उत्तेजित नागरिक संभव था, नेताओं के ख़ून से अपने हाथ रँग लेते, यदि एक अनोखी घटना न घट जाती। जिस समय उच्छृङ्खल जन-

समुदाय बीच बाज़ार में इकट्ठा होकर, फ्रांस से संधि करने और नेताओं को अपमानित करने का विचार कर रहा था। ठीक उसी समय एक भद्र-पुरुष दौड़ता-हाँफता उनके बीच में आकर खड़ा होगया, लोगों की कौतूहल-पूर्ण दृष्टियाँ उसकी ओर झुक पड़ीं! आगंतुक ने कुछ दम लेने के पश्चात् हाथ उठाकर उच्च-स्वर से यह घोषणा की—"बकिंघम की नौसेना राशेल की सहायता के लिये इंगलैंड से चल पड़ी है। समुद्र पर बृटिश झंडों को लहराते हुए उसने स्वयं अपनी आँखों से देखा है। वह इस समय सीधा बकिंघम के पास ही से आ रहा है। उसके द्वारा बकिंघम ने राशेल-निवासियों के प्रति यह संदेश भेजा है कि वीरो धैर्य मत छोड़ो? मैं स्वयं अपनी पूरी शक्ति के साथ आता हूँ, मेरे अतिरिक्त स्पेन की भी सेना शत्रुओं को पीसने के लिये शीघ्र ही राशेल पहुँचती है।" इन शब्दों ने वह जादू किया कि प्रत्येक क्रांतिकारी एक भीगी बिल्ली बन गया। नैराश्यमय जीवन में आशा रूपी प्राण जाग उठे! ज्वार भाटे के पश्चात् जैसे समुद्र में गंभीर शांति विराज जाती है, वैसे ही जन-समूह में भी पूर्ण सन्नाटा छा गया। सारा उतावलापन नष्ट हो गया। उसके स्थान में हर्ष और उल्लास, आशा और जीवन के लक्षण दीखने लगे! लोगों को अपनी मूर्खता और भूल का अनुभव हुआ, वही प्रवंचक नेता अब फिर उनके पूर्व आदर और श्रद्धा के पात्र हो गये। नेताओं के जय-जयकार और आनंद ध्वनि से क्षण भर पहले की कुत्सित भावनाओं का शीघ्र ही तिरोभाव हो गया।

यह समाचार जब रिचलू को मिला, तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। इतना कठोर प्रबंध होने पर भी, यह दूत किस प्रकार राशेल पहुँच गया, यह उसकी समझ में न आ सका। आह! यदि यह कुछ क्षण और न आता, तो मेरे कुचक्र का परिणाम स्पष्ट दृष्टि-गोचर हो जाता। फ्रांस और राशेल में अब तक संधि हो गई होती। इस-

संधि की सूचना बकिंघम के हृदय को उसी प्रकार सालती—जैसे यह दुखद समाचार इस समय मुझको साल रहा है। धर्माचार्य की दृष्टि फिर समुद्र ही की ओर गई, ग्लैडी की कार्य-कुशलता उसे फिर याद हो आई। उसकी सारी आशायें ग्लैडी ही पर आकर टिक गईं, अपने नष्ट उद्देश्य के पुनरुद्धार के लिये ग्लैडी ही उसकी आशा का स्तंभ थी। परंतु इस ओर भी उसको अंधकार ही दिखलाई दे रहा था। इतने अधिक दिन व्यतीत हो गये थे कि उसको अब विश्वास हो गया कि ग्लैडी अवश्य किसी न किसी विपत्ति में फँस गई। उसको अब चारों ओर निराशा दिखलाई देने लगी। वह फिर गहरी चिंता में लीन हो गया।

इधर युद्ध की चिंता से रहित होने के कारण, फ्रांस के सैनिक स्वछंद रूप से आनंद का जीवन व्यतीत कर रहे थे। कठोर कर्तव्य-पाश से वे मुक्त थे, ख़ेमों में खाद्य-सामग्री और धन की कमी न थी। वे निर्द्वंद होकर आनंदोत्सवों में लीन रहने लगे। समुद्र-तट पर, बन के सघन कुंजों में, या उपत्यका के तृणाच्छादित मैदानों में स्वछंद होकर घूमना, मित्र-मंडल के साथ हास्य-परिहास करते हुए स्वादिष्ट भोजों के मज़े उड़ाना, साहसिक कार्यों में प्रवृत्त होकर, एक-दूसरे के बल की परीक्षा करना, यही उनकी दिनचर्या थी।

एक दिन घोर मानसिक चिंता से उत्पीड़ित होकर, धर्माचार्य मन की ग्लानि मिटाने के लिये ख़ेमें से बाहर निकल पड़ा। वह घोड़े पर सवार था और उसके साथ दो वीर सेना-नायक थे। घूमते-घामते वह समुद्र-तट पर आ पहुँचा। समुद्र की अनंत जल-राशि में जिस प्रकार घोर अशांति अपना विकराल तांडव-नृत्य कर रही थी, उसी भाँति उसके मस्तिष्क में भी चिंता की गंभीर तरंगें उठ-उठकर भयंकर कोलाहल मचा रही थीं। प्रकृति के हृदयाकर्षी दृश्य उसको नीरसता के उपादान प्रतीत होते थे। आनंद की ध्वनियाँ मानो उसको चिढ़ाने

के लिये विकट अट्टहास कर रही थीं। चारों ओर प्रकृति उसका उपहास करती-सी जान पड़ती थी। वह खिन्न होकर समुद्र-तट से चल दिया और सामने की एक पहाड़ी पर चढ़ गया। शिखर पर पहुँचते ही उसके कान में कुछ मनुष्यों के शब्द पड़े। जिस ओर से यह शब्द आ रहे थे, उसका ध्यान उसी ओर आकृष्ट हो गया। उसको जान पड़ा कि सामनेवाली झाड़ी के उस पार कुछ लोग बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं। कुछ निकट आने पर उसने स्पष्ट देखा कि सात मनुष्य बैठे हैं—चार सैनिक मालूम होते हैं और तीन उनके अनुचर। इस मंडली के बीच में बहुती-सी बोतलें रक्खी हैं, जिनसे अनुचर लोग कुछ तरल पदार्थ-सा उलट-उलटकर प्यालों में भर रहे हैं। एक सैनिक हाथ में एक पत्र लिये हुए पढ़ रहा है और शेष उसको बड़े ध्यान से सुनने का उपक्रम कर रहे हैं। यह पत्र अत्यंत रुचिकर और महत्त्व-पूर्ण जान पड़ता था, क्योंकि वे अपने ताश का खेल तक भूल गये थे, पत्ते जैसे के तैसे प्रत्येक के सामने पड़े थे।

रिचलू यह समझ गया कि ये लोग मेरी ही सेना के सैनिक हैं। उसकी चिंताग्रस्त अशांत प्रकृति को अपने सैनिकों का यह आनंदोत्सव विष तुल्य जान पड़ा। हम जब स्वयं संकटापन्न अवस्था में होते हैं, तो अपने प्रिय-जनों तथा अधीनस्थों को विलास-लीला में निमग्न देखकर कुढ़ जाते हैं; हम स्वभावतः यह चाहते हैं कि वे लोग शुष्क और मलीन चेष्टायें धारण करके ही अपनी समवेदना और सहानुभूति का परिचय दें। रिचलू को अत्यंत क्रोध हो आया। वह फ़ौरन ही घोड़े से उतर पड़ा और अत्यंत दबे पाँव चलकर झाड़ी के निकट आ गया। पत्र पढ़नेवाले को उसके स्वर से उसने पहचान लिया, यह गैस्कनी का वाचाल युवक आर्तगान था। उसके अन्य साथी कौन-कौन हैं? इसका उसने अत्यंत सरलता से अनुमान कर लिया। इस गुट्ट को रिचलू सदा संदिग्ध दृष्टि से देखता आया था। उसने विचारा कि एकांत

में जिस पत्र को ये लोग पढ़ रहे हैं, उसका संबंध किसी न किसी षड्यंत्र से अवश्य है। पत्र को सुनने की इच्छा से वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा।

ग्रीमांड बहुत चौकसी के साथ अपने प्रभुओं के एकांत-सेवन में द्वारपाल का काम कर रहा था। उसकी सतर्क और तीक्ष्ण-दृष्टि धर्माचार्य पर पड़ गई, वह तत्क्षण चिल्ला उठा—"अफ़सर।" सब मित्र चौंक पड़े, ग्रीमांड एक ओर चुपचाप उँगली से संकेत कर रहा था, सबकी नज़रें उसी ओर दौड़ गईं। धर्माचार्य को अपने सामने देखकर, सब हकबका कर खड़े हो गये और सैनिक ढंग से उनका सम्मान-पूर्वक अभिवादन किया। धर्माचार्य की गंभीर मुद्रा को देखते ही वे ताड़ गये कि आज रंग-ढंग अच्छा नहीं है।

धर्माचार्य ने कुछ कठोर स्वर में कहा—"क्या राज-सैनिक समझते हैं कि कोई उच्च सत्ता उनको नियंत्रित नहीं करती? क्या कर्तव्य-मर्यादा के बंधन से वे बाहर हैं? क्या अपनी गणना वे उच्च अधिकारियों ही में करते हैं?"

अथास धर्माचार्य से वार्तालाप करने के लिये पहले ही से बहुत उत्सुक था, अवसर को हाथ में आया जानकर, वह आगे बढ़ा और अत्यंत नम्रता से उत्तर दिया—"धर्म-गुरु! जब सैनिकों के पास कोई काम नहीं होता या जब वे अपने निश्चित कर्तव्य को पूरा कर चुके होते हैं, तो वे अवकाश-काल को ताश इत्यादि खेलकर ही व्यतीत करते हैं और वास्तव में वे अपने अनुचरों के लिये उच्च अधिकारी ही हैं।"

"अनुचर! यह अनुचर हैं या द्वारपाल हैं?"

"श्रीमान् ज़रा इस पर ध्यान दें कि यदि इन अनुचरों से द्वारपाल का काम न लिया जाता, तो हम अपने हाथ से श्रीमान् को अपने अभिवादन प्रस्तुत करने के स्वर्ण-अवसर को खो देते। श्रीमान् हमको

इस सौभाग्य से वंचित रखकर, अब तक कबके चुपके से आगे बढ़ गये होते।"

अथास के इन विनम्र शब्दों के भीतर जो उद्दंडता और तीक्ष्ण बाणों की वर्षा छिपी थी, उसको फ्रांस का महापुरुष, महाक्षमता शाली रिचलू अत्यंत धैर्य से सहन कर रहा था। क्रोध की ज्वाला को छिपाकर उसने कहा—"ओह! तुम्हारा ढंग अत्यंत निराला है? राजसैनिकों को विशेष अधिकार इस निमित्त नहीं दिये जाते कि वे लोग सैनिक शिष्टता की इस प्रकार अवहेलना करें?"

"परंतु, श्रीमान्! सैनिक शिष्टता का एक शब्द भी हम नहीं भूले। हमारा तो विचार है, सैनिक नियमों का पालन हमसे अधिक कदाचित ही कोई कर सके? आज हम अपने नियत कर्तव्य की पूर्ति द्वारा अपने अफ़सर को संतुष्ट करके, उसकी आज्ञा से यहाँ समय व्यतीत करने आये हैं! हमारी धारणा थी कि काम समाप्त करने के पश्चात् हम अपनी इच्छानुकूल अपना समय आनंद में बिता सकते हैं। यदि श्रीमान् कोई अपना निजी सेवा-कार्य हम लोगों को बता सकें, तो हम अपना परम सौभाग्य समझेंगे। श्रीमान् यह देखलें कि हम कर्तव्य-पालन के लिये सदैव उद्यत रहते हैं, आज भी हम अपने अस्त्र-शस्त्रों बिना नहीं आये हैं।"

रिचलू इस व्यंग्य से और भी चिढ़ उठा। उसको जान पड़ा कि मानो अथास उसको यह चेतावनी दे रहा है कि यही अस्त्र-शस्त्र समय पड़ने पर आपके विरुद्ध भी उठ सकते हैं। यह उद्दंडता उसके लिये असह्य थी। उसकी आँखों में ख़ून उतर आया; परंतु उसकी दूर-दर्शिता ने, परिस्थिति के अनुकूल नम्र-व्यवहार ही करने की उसको शिक्षा दी।

आर्तगान रिचलू के चेहरे के इस उतार-चढ़ाव को देख रहा था, उसने बुझती हुई लौ को और उसकाते हुए कहा—"हम श्रीमान्

को विश्वास दिलाते हैं कि हम स्वयं ही श्रीमान् का आगे बढ़कर स्वागत करते, यदि हमको यह मालूम होता कि श्रीमान् इतने थोड़े अंग-रक्षकों को लेकर स्वयं इधर पधार रहे हैं।"

यदि किसी अन्य परिस्थिति में यह बात कही गई होती, तो धर्माचार्य नंगी तलवार से इसका उत्तर देता। उसकी रग-रग में अग्नि प्रज्वलित होगई। परंतु धूर्त रिचलू ने इस बात को अनसुनी कर दिया, क्रोध की अग्नि को भीतर-की-भीतर दबाकर उसने कहा—"क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी चेष्टा षड्यंत्रकारियों के तुल्य प्रतीत होती है ?"

"ओह ! श्रीमान् का विचार अक्षरशः सत्य है। हम षडयंत्र की रचना करते हैं ; परंतु हमारा षडयंत्र राशेल-निवासियों ही के विरुद्ध होता है।" इस अकाट्य तर्क से धर्माचार्य की भौंहें तन गईं, उसने स्वर को और भी तीव्र करके कहा—"ओह ! तुम अपने इस नीति-पूर्ण उत्तर से मेरी आँखों में धूल झोंकना चाहते हो ? वह पत्र जिसको तुम अभी ध्यानमग्न होकर पढ़ रहे थे और तुमने जिसको मुझे देखते ही छिपा लिया है, यदि मेरी दृष्टि में पड़ जाय, तो तुम्हारे मस्तिष्क में षड्यंत्र की जितनी चालें और गूढ़ रहस्य छिपे पड़े हैं, वे सब एक-एक करके उसके प्रत्येक अक्षर से शीघ्र ही निकल पड़ें।"

इस उत्तर से अथास का चेहरा सुर्ख़ पड़ गया। उसने एक पग और आगे बढ़ाकर धर्माचार्य से कहा—"कदाचित् श्रीमान् हम पर अविश्वास और संदेह करते हैं, इसीलिये हमसे इस प्रकार की जिरह की जा रही है। यदि वास्तव में श्रीमान् की धारणा यही है, तो हम चाहते हैं कि हमको यह स्पष्ट रूप से बतला दिया जाय, जिससे हम अपनी यथार्थ स्थिति को समझ सकें।"

धर्माचार्य ने चिढ़कर कहा—"यदि ऐसा ही समझा जाय तब···।"

"तब कुछ नहीं ! श्रीमान् प्रश्न करें, हम उत्तर देने को तैयार हैं।"

"वह पत्र किसका है, जिसको तुमने इतनी फुर्ती से छिपा लिया ?"

इतने मुँह तोड़ उत्तर, भाई मुझे तो कभी न सूझते, मैं तो झट तलवार ही का आश्रय ग्रहण करता।"

अथास ने कहा—"ख़ैर! जो हो गया, सो हो गया, अतीत पर सोच करना व्यर्थ है। अब भविष्य की चिंता करनी चाहिए और सबसे पहले इस प्रस्तुत पत्र को आओ, समाप्त करें।

अर्मस ने अपनी जेब से पत्र निकाला। सब लोग उसको घेरकर बैठ गये। आर्तगान ने कहा—"तुमने अभी दो-तीन पँक्तियाँ ही तो पढ़ी हैं, पत्र फिर प्रारंभ से पढ़ा जाय।"

अर्मस ने वैसा ही किया—

"मेरे प्रिय भ्राता"

"मैं अब वैथून को शीघ्र ही रवाना होनेवाली हूँ। वहाँ मेरी बहन ने उस शोकार्त सेविका को कारमेलाइट के धर्म-मंदिर में रखवा दिया है। वह बेचारी अपने दिन बड़ी विपत्ति में काट रही है। दिन-रात रोते ही बीतता है। उसको जीवन से निराशा हो गई है, वह समझती है कि उसका मिलन अब उसके भाई से होना अत्यंत दुष्कर है। एक-एक पल का वियोग उसके रक्त को सुखा रहा है। मैं ईश्वर से प्रार्थना करती हूँ कि ईश्वर उसके भाई को उससे शीघ्र मिला दे। मैं स्वयं भी इस निमित्त बहुत प्रयत्न कर रही हूँ और मुझे विश्वास है कि मैं अपने उद्देश्य में सफल हो जाऊँगी, तब तक मैं वहाँ स्वयं जाकर उसको ढाढ़स बँधाती हूँ। मेरी बहन अपनी हार्दिक कृतज्ञता का प्रकाश करती है। भावी विपत्ति की सूचना ने उसको सचेत कर दिया है। उसने अपना एक आदमी वहाँ भेज दिया है। प्यारे भाई! मुझे तुम्हारी बहुत याद आती है, देखो कब मिलना हो! कम-से-कम पत्र तो अवश्य भेजना।"

"तुम्हारी भगिनी—

मेरी माइकन"

इस पत्र की सांकेतिक भाषा को सब मित्र भली प्रकार समझ गये। आर्तगान के नेत्रों से अश्रु प्रवाहित हो रहे थे। उसने अवरुद्ध कंठ से कहा—"ओह! अर्मस! मैं तुम्हारा कितना ऋणी हूँ। इस पत्र ने मुझे नया जीवन प्रदान किया है। अहा! आज मैं कितना सुखी हूँ। वह जीवित है, सुरक्षित है! और वैथून में उपस्थित है! मैं जाकर उससे मिलूँगा। अथास! यह वैथून कहाँ है?"

अथास—"फ्रांस के उत्तर-पश्चिम के कोने में। इस युद्ध की समाप्ति के पश्चात् हम सब उधर ही चलेंगे।"

आर्तगान—"परंतु, यहाँ तो न मालूम अभी कितना समय लगे?"

पार्थ—"अब यहाँ का खेल थोड़े ही दिन का और है, अधिक दिन नहीं लग सकते?"

अथास—"अच्छा! इस पत्र को नष्ट कर देना चाहिए। श्रीमान् लो? इसको निगल जाओ। तुम्हारी प्रज्वलित जठराग्नि इससे कुछ शांत भी हो जायेगी और धर्माचार्य के भी फ़रिश्ते यहाँ जाकर ढूँढने का साहस न करेंगें।"

ग्रमिांड को पत्र निगलना पड़ा। अपने पूर्व अपराध का इस प्रकार प्रायश्चित करके उसको कुछ संतोष हुआ।

अथास ने कहा—"अब यहाँ पर अधिक देर रुकना ठीक नहीं, है, शीघ्र ही इस स्थान से चल देना चाहिए। ज़रा चलकर देखें कि ख़ेमे में क्या हो रहा है? धर्माचार्य की गति-विधि पर हमको और भी अधिक कड़ी दृष्टि रखनी पड़ेगी।"

सब मित्र इसपर सहमत हो गये। एक क्षण-मात्र में यह विचित्र मंडली वहाँ से चल पड़ी।

४०

आनिष्ट की चिंताओं से संत्रस्त ग्लैडी कारागार में पड़ी हुई, अपने निराशामय भविष्य की कल्पना करके सिहर उठी। उसके जीवन में यह पहला ही अवसर था, जबकि वह अपनी शक्ति पर संदेह करने लगी थी। भय ने आज पहले ही पहल उसके हृदय को दहलाया था। आज तक के अपने सफल जीवन में दो बेर भाग्य के सामने उसको हार खानी पड़ी, दो-बेर उसको अपमानित और लज्जित होना पड़ा और इन दोनों अवसरों पर एक ही व्यक्ति की विघातक शक्ति के सामने उसको घुटने टेकने पड़े। यह व्यक्ति आर्तगान है। आर्तगान ने उसकी शक्तियों पर पाला मार दिया। उसकी शक्तियों का चमत्कार सब नष्ट हो गया।

ग्लैडी सोचती थी—इसने प्रेमिक बनकर मुझे धोखा दिया, मेरे आत्म-गौरव पर ज़बरदस्त ठेस पहुँचाई और मेरी महत्त्वाकांक्षाओं पर कुठाराघात किया और यही अब मेरे भाग्य को भी नष्ट कर रहा है। मेरी स्वतंत्रता को छीन लेना चाहता है और मेरे प्राणों तक का घातक बन बैठा है। यही नहीं, इसने मेरा वह परदा भी फ़ाश कर दिया; जिसकी आड़ में मैं अपने यौवन-काल के प्रथम कलंक को अभी

तक छिपाये रही। यह कलंक मेरे जीवन का वह मर्म-स्थल है, जिसपर हलकी-सी चोट पहुँचते ही प्राणों का अंत हो सकता है। यह बंदी-जीवन भी इसी क्रूर युवक के किसी षड्यंत्र का फल है। इसी ने डी० विंटर को वे सब भेद बतलाये हैं, जिनका ज्ञान उसको स्वप्न में भी नहीं हो सकता था। जितना अपमान और तिरस्कार आज मुझे सहन करना पड़ रहा है, वह सब इसी के मस्तिष्क की उपज है।

ये विचार ग्लैडी के हृदय में उथल-पुथल मचा रहे थे। गर्विणी ग्लैडी, घोर प्रवंचना के जाल में फँसकर कभी क्रोध की अग्नि से दहक उठती थी, कभी घृणा और ईर्ष्या की भावनाओं से उन्मत्त हो जाती थी और कभी निराशामय भविष्य की चिंताओं में पड़कर गंभीर करुणा की मूर्ति बन जाती थी। उसके निश्चल नेत्रों से कभी अग्नि के कण बरसने लगते थे और कभी अश्रुओं के निस्तर प्रवाह! उसके हृदय के अंतिम निगूढ़ तल से उठकर क्रोध की ज्वलंत लपटें उसके श्वास-निश्वास के प्रवाह के साथ निकल पड़ती थीं। एकांत कमरे में उसकी रुद्र-मूर्ति अत्यंत भयानक मालूम होती थी। उसका मस्तिष्क चिंताओं के कारण गर्म हो गया था। क्रोध के आवेग में प्रतिकार और प्रतिहिंसा की अनेक भावनायें इस गर्म मस्तिष्क में उठती थीं; परंतु भविष्य के सुदूर-काल में विलीन हो जाती थीं। वकिंघम, बोनैसी और आर्तगान यही तीन नाम उसके मस्तिष्क में चक्कर मार रहे थे। आर्तगान के नाम पर उसके हृदय की गति अत्यंत तीव्र हो जाती थी। प्रतिहिंसा के भाव उग्र-रूप धारण कर लेते थे। वह भीषण क्रोध के आवेश में उठ खड़ी होती थी, मुट्ठी बाँधकर दाँत पीस-पीसकर कहती थी "आह! आर्तगान दुष्ट प्राण-घातक आर्तगान! तुझको पैरों से रौंद डालूँगी। तू नहीं समझता कि किस शक्ति से तू युद्ध कर रहा है। तू मेरी इस मुट्ठी में फँसकर बच नहीं सकता। क्षमा और दया! ये शब्द तेरी रक्षा न कर सकेंगे। संसार की कोई भी शक्ति तुझको

नहीं बचा सकती। बहुत दिनों के बाद आज मेरे हृदय में लहू की पिपासा जागृत हुई है, तेरे रक्त का घूँट पीकर ही यह शांत होगी।" परंतु सहसा बंद कमरे की दीवारों से टकराकर ये शब्द ग्लैडी के पास फिर वापस आ जाते हैं और निस्सहाय और परवशता का करुण दृश्य ग्लैडी के सामने पुनः लौट आता है। वह झल्ला उठती है और उसके नेत्रों के सामने अँधेरा छा जाता है। वह पलँग पर गिर पड़ती है और सोचती है, बदला! परंतु यह बदला कैसे लिया जाय? बदला लेने के लिये यह आवश्यक है कि पहले मैं स्वतंत्र होऊँ। कारागार से स्वतंत्र होने के लिये बंदी के पास लोहा और दीवार काटने के लिये कुछ औज़ार होने चाहिए, वह पुरुषत्व और साहस चाहिए, जो केवल पुरुषों ही में संभव है। अतिरिक्त इन सब बातों के लिये समय चाहिए। संभव है इसमें महीनों और वर्षों लग जायँ। परंतु, ओफ़! उस कुटिल-हृदय, निर्दय जेलर डी० विंटर ने मुझको केवल दस बारह ही दिन की तो मोहलत दी है? क्या इतने अल्प-समय में यह सब संभव है? नहीं! कदापि नहीं! अपनी इस असहाय अवस्था का ध्यान करते ही ग्लैडी का हृदय निराशा-कुलिश की तीव्र चोटों से व्याकुल हो जाता था। क्रोध और ईर्ष्या का उबाल हृदय को जलाकर, नेत्रों द्वारा आँसुओं के रूप में प्रवाहित होने लगता था। ग्लैडी कभी क्रोध करती थी, कभी हँसती और कभी रोती थी। उसकी दशा एक पागल जैसी हो गई थी।

ग्लैडी के बंदी-जीवन का प्रथम दिवस बड़ी कठिनता से कटा। तीव्र क्रोध ने स्त्री-सुलभ निर्बल प्रवृत्तियों को उत्तेजित कर दिया था। वह उद्भ्रांत अवस्था में पागलों जैसा प्रलाप करने लगी थी। परंतु धीरे-धीरे उसकी उत्तेजना कम हुई, क्रोध का उफान उतर चला, शरीर का कंपन थम गया। वह शांत होकर थकी हुई नागिन की भाँति एक स्थान पर सिमटकर बैठ गई। एकांत

कमरे में निस्तब्ध होकर शांत मन से वह सोचने लगी, इस समय मैं जिन आपदाओं से घिरी हूँ, उनसे छुटकारा पाने के लिये मुझे किसी कौशल का अवलंबन करना चाहिए। क्रोध और उत्तेजना से तो परिस्थिति और भी संकटापन्न हो जायगी। क्रोध निर्बलता का द्योतक है। मैं इस साधन को ग्रहण करके, कभी सफल नहीं हो सकती और न आज तक मैंने इस साधन का अवलंबन किया। शारीरिक शक्ति द्वारा मैं किसी स्त्री पर विजय पा सकती हूँ; परंतु इस युद्ध में पुरुषों का सामना करना है। मैं अबला शारीरिक बल से उनसे कभी पार नहीं पा सकती। मुझे अबला ही की भाँति लड़ना होगा, मेरी निर्बलता ही मेरा बल है। सबल पुरुष अबला के निर्बल शस्त्रों से ही पराजित होते हैं। इस विचार के आते ही वह सँभलकर उठकर, बैठ गई। कपड़ों और बालों को सँभाला। पीले श्री-हीन मुख में कांति दौड़ आई, नेत्र चमक उठे, अधरों में हलकी मुस्कराहट की रेखा खिंच गई। उसने शीशे में अपना मुख देखा, क्रोध और उत्तेजना से जो मुख भय और घृणा का आगार बन गया था, उसी पर अब रूप और लावण्य की किरणें छिटक रही थीं, मुर्झाये हुए सफ़ेद कपोलों पर लालिमा दौड़ आई थी, प्रखर सौंदर्य के कारण चेहरे पर एक अनोखी विमुग्धता छा गई थी। यह देखकर ब्लैंडी ने विश्वास-पूर्ण हृदय पर हाथ रखकर अत्यंत शांति से हँसकर कहा—"अभी तक कुछ भी नहीं बिगड़ा है, क्या इस अक्षय रूप का वार कभी खाली गया है? अपने सौंदर्य की अप्रमेय शक्ति का वार करती हूँ, देखूँ इसको कौन विफल करता है?"

रात्रि के आठ बज चुके थे। सायंकालिक वायु के शीतल झोंके कमरे की खिड़कियों से होकर भीतर आ रहे थे। ब्लैंडी के शरीर में एक नवीन स्फूर्ति का संचार हुआ। वह सावधान-चित्त होकर पलँग पर लेट गई। इस समय उसका हृदय शांत और मन स्थिर था। वह निश्चय कर चुकी थी कि अब उसको दृढ़ता के साथ एक पथ का

अवलंबन करना है, उसको यह जानना है कि जिस क्षेत्र में वह काम करना चाहती है, उसका कितना विस्तार है और कितनी सीमा, जिस व्यक्ति की संरक्षकता में वह सौंपी गई है, उसके चरित्र में कितनी निर्बलता है और कितनी सबलता।

इसी समय कमरे के बाहर प्रकाश दिखलाई दिया, कमरा खोलकर दो व्यक्ति भीतर आ गये। ग्लैडी आँख बंद करके और साँस रोककर पड़ गई। आगंतुकों में से एक व्यक्ति ने आदेशात्मक स्वर में कहा—"भोजन की सामग्री इस मेज़ पर रख दो?" ग्लैडी इस स्वर से परिचित थी। यह स्वर नवयुवक फ़ैल्टन का था।

नौकर ने भोजन रख दिया। फ़ैल्टन ने दूसरा हुक्म दिया—"रोशनी रखकर तुम लोग जाओ और अपने पहरे का काम करो?" ग्लैडी कनखियों से देख रही थी, नौकर की वर्दी देखकर, वह यह जान गई कि इस भवन में साधारण काम के लिये भी संतरी ही नियुक्त हैं। आज्ञाकारी संतरी ने मेज़ पर रोशनी लाकर रख दी। प्रकाश होने पर फ़ैल्टन की दृष्टि ग्लैडो पर जा पड़ी। फैल्टन ने कहा—"ओह! यह तो सो रही है, अच्छा है इसको सोने दो। जागने पर यह स्वयं खाना खा लेगी।"

संतरी ने कहा—"नहीं, नहीं यह सो नहीं रही है।"

"सो नहीं रही है, तो और क्या कर रही है?"

"यह बेहोश है! क्या आप देखते नहीं कि इसका चेहरा कितना पीला है? अरे! इसका तो श्वास-प्रश्वास भी नहीं सुनाई पड़ता?"

"ऐं! बेहोश है?" चौंककर फ़ैल्टन ने कहा और चारपाई के और निकट जाकर स्वयं परीक्षा की। तब शीघ्रता से कहा—"तुम्हारा अनुमान सत्य है, शीघ्र लार्ड विंटर के पास जाकर सब हाल कहो! यह रमणी बेहोश कैसे हो गई? हाय! मैं अब क्या करूँ! इस

घटना की तो मैंने कल्पना भी नहीं की थी और न इस संबंध में मुझे कुछ आदेश ही मिले।"

संतरी आज्ञा का पालन करने के लिये चला गया। फ़ैल्टन पास ही की एक कुर्सी पर बैठ गया और ग्लैडी के सचेत होने की प्रतीक्षा करने लगा। ग्लैडी पूरी मायाविनी थी, देखने में वह नेत्र बन्द किये हुए अचेत पड़ी थी; परंतु कनखियों से वह फ़ैल्टन के चेहरे की अवस्था का अध्ययन कर रही थी। फ़ैल्टन ग्लैडी को बेहोश देखकर घबड़ा गया था। वाह्य कठोरता के भीतर छिपा हुआ उसका सरल हृदय पसीज गया था; परंतु अब भी कठोर नियमों का बंधन उसके हृदय की भावुकता को निश्चल बनाये हुए था। वह पत्थर की मूर्ति की भाँति अचल बना रहा। हृदय के भाव बाहर आकर मुख पर अपनी छाया तक न डाल सके! ग्लैडी अपनी तीक्ष्ण-दृष्टि से स्थिति को कुछ-कुछ समझ गई थी। उसने सोचा कि कुछ बातचीत का सिलसिला छेड़ना चाहिए। जिससे फ़ैल्टन के हृदय की गंभीरता पर कुछ प्रकाश पड़े। ग्लैडी और अधिक समय तक उसी अवस्था में पड़ी रहती; परंतु उसको यह भी ध्यान हुआ कि लार्ड स्वयं आकर परिस्थिति को पलट देंगे। फ़ैल्टन के हृदय में जिस दया तथा समवेदना के भाव ने जड़ जमाई है, वे लार्ड के नवीन आदेशों द्वारा उन्मूलित हो जायँगे। इसी कारण उसने शीघ्र ही सचेत होने के लक्षण प्रकट करना प्रारंभ कर दिये।

फ़ैल्टन ने यह देखकर अपनी गर्दन मोड़ी और कहा—"ओह! आप जाग उठीं। अब यहाँ मुझे ठहरने की आवश्यकता ही क्या है? जब आपको ज़रूरत हो, तो घंटी बजाकर मुझे बुला लीजियेगा।"

"ओह! ईश्वर! किस अपराध के कारण यह कष्ट मुझको झेलने पड़ रहे हैं!" ग्लैडी ने अँगड़ाई लेकर ये शब्द अत्यंत करुणा-व्यंजक स्वर में कहे। इस समय ग्लैडी के कंठरव में वह मोहनी शक्ति थी, जो

कदाचित् ही विफल गई हो। वह बहुत धीरे से पलँग से उठी और आराम-कुर्सी पर आकर बैठ गई। कुर्सी पर बैठी हुई वह निर्दोष सौंदर्य और स्त्री-सुलभ विलास की जीवित प्रतिमा मालूम देती थी।

फ़ैल्टन उठकर खड़ा होगया, चलते हुए उसने कहा—"आपके लिये जो अब आज किया गया है, वही प्रबंध नित्य-प्रति किया जायगा। यदि इसमें कोई बात आपकी रुचि के प्रतिकूल हो, तो कृपया बतला दीजिये ?"

"तो क्या इस विशाल कमरे में मैं सदा अकेली ही रक्खी जाऊँगी ?" म्लैडी ने पूछा।

"पड़ोस की एक स्त्री इस निमित्त बुलाई गई है। वह कल यहाँ आपके पास आ जायगी।"

"इस कृपा के लिये मैं हार्दिक धन्यवाद देती हूँ।" बंदिनी ने अत्यंत मधुर स्वर में कहा।

फ़ैल्टन चल दिया; परंतु वह कठिनता से दर्वाज़े तक पहुँचा होगा कि लार्ड ने कमरे में प्रवेश किया। लार्ड के पीछे पूर्व-संतरी हाथ में दवा की बोतल लिये हुए खड़ा था। लार्ड ने कमरे में प्रवेश करते ही देखा कि फ़ैल्टन कमरे की ओर से आ रहा है और म्लैडी कुर्सी में बैठने का उपक्रम कर रही है। यह देखकर उसने उपालंभ-पूर्ण स्वर में कहा—"क्या है ? यहाँ क्या हो रहा था ? क्या इस चमकीले शरीर में फिर प्राण आ गये ? फ़ैल्टन ! यह तुमको निरा अनुभव-शून्य बच्चा समझती है ? विषैले दाँत छिपा कर यह अभी तुमको सरस खेल खिलायेगी, सुखांत दृश्य के चित्र दिखाकर दुखांत भविष्य पर पर्दा डालेगी। याद रखना इसकी रूप-माधुरी का बाण नितांत अचूक होता है।"

"प्रभो ! मैं इन सब चालों से परिचित हूँ; परंतु बंदिनी अबला है। मैं इसके प्रति वही व्यवहार करना चाहता हूँ, जो एक

भद्र-पुरुष को अबला के प्रति करना चाहिए। प्रकट में इस नियम का उल्लंघन करने की कोई आवश्यकता भी नहीं मालूम होती।" फ़ैल्टन ने आदर पूर्वक कहा। ये शब्द सुनकर ग्लैडी का सारा शरीर काँप उठा। उसके हृदय में फ़ैल्टन के ये शब्द काँटों के समान चुभे। उसको यह मालूम न था कि सरल हृदय के भीतर इतना कौशल छिपा हुआ है। क्या फ़ैल्टन के व्यवहार में दिखावटी सौजन्य के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं हैं ?

डी० विंटर ने अट्टहास करके कहा—"तो क्या इस सुंदर केशपाश ने, इस स्निग्ध गौर वर्ण ने और इन विमोहक नेत्रों ने तुम्हारे हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं डाला ?" निष्ठुर फ़ैल्टन ने दृढ़ और स्पष्ट स्वर में कहा—"नहीं, प्रभो ! मैं विश्वास दिलाता हूँ कि रमणी-सुलभ विलास और विभ्रम मेरे हृदय को कर्तव्य-पथ से किंचितमात्र भी विचलित नहीं कर सकते।"

लार्ड ने हँसकर कहा—"तुम्हारे इन शब्दों पर मुझे विश्वास है ! अच्छा ! अब इस मायाविनी को खाना खाने दो, चलो हम लोग चलें।" दोनों चले गये। ग्लैडी का चेहरा तमतमा उठा था; परंतु उसने क्रोध को दबाकर धीरे से कहा—"ओ ! दुष्ट ! मैं तेरा सामना करने के लिये तैयार हो गई हूँ ! तेरी धूर्तता का प्रति-उत्तर दूँगी।"

लार्ड विंटर इन शब्दों की पहुँच के बाहर जा चुका था। दरवाज़े के बाहर पहुँचते ही उसने मुड़कर कहा—"ग्लैडी ! बंदी होने के कारण भोजन से परहेज़ न करना। मैं अपने क़ैदी को भूखों नहीं मारना चाहता। यह भोजन बड़ा स्वादिष्ट बना है। मेरा रसोइया भोजन बनाने में बड़ा निपुण है। यह ख़्याल न करना कि इसमें ज़हर मिला है। यह मेरे सिद्धांत के प्रतिकूल है। तुम खाना खाकर आराम करो। दूसरा ग़श आने पर फिर भेंट होगी।"

यह व्यंग्य ग्लैडी के हृदय के भीतर जाकर चुभा। उसकी सहन-

शक्ति ने जवाब दे दिया। सारा शरीर जल उठा। पैर डगमगाने लगे। उसने दोनों हाथों से कुर्सी पकड़ ली और दाँत पीस कर रह गई। जब उसने देखा कि लार्ड विंटर और फ़ैल्टन दोनों दूर निकल गये, तब उसकी दृष्टि मेज़ पर पड़ी। मेज़ पर कोई चमकती हुई तेज़, धारदार वस्तु दिखलाई पड़ी, उसने झपटकर उसे उठा लिया। यह तेज़ चाक़ू था, जो भोजन के साथ रोटी और गोश्त काटने के लिये लाया गया था। म्लैडी क्रोध और ईर्ष्या की आग से जल रही थी। प्रतिकार का कोई उपाय न देखकर, नैराश्य ने उसकी अभिलाषाओं पर अधिकार कर लिया था। उसके मस्तिष्क में विचित्र विचार उदय हुआ। हाथ का तेज़ छुरा वक्षस्थल के निकट तक आ गया। छुरे की तेज़ नोक कलेजे पर लगने ही वाली थी कि सहसा बाहर की ओर से विकट अट्टहास उसको सुनाई दिया। हाथ से छुरा गिर पड़ा। लार्ड विंटर म्लैडी के बंदी-जीवन से मुक्त होने के इस सरल उपाय पर हँस रहा था। लार्ड की यह हँसी म्लैडी को मानो यह चेतावनी दे रही थी कि तेरी दृढ़ता व विचार-चातुरी की क्या इतनी ही सीमा है? कहाँ गया वह विजयोल्लास और कहाँ गई वह पुरुषोचित वीरता। जिसके बल पर तू फ्रांस के महामंत्री तक को नचाने का दावा रखती थी। म्लैडी ने सुना—

लार्ड—"अहा! हा! फ़ैल्टन तुम धोखा खा गये! वह छुरा वहाँ छोड़ आये! म्लैडी उसका प्रयोग अपने ऊपर करना चाहेगी; परंतु कर न सकेगी। उसको जीवन की आशा बड़ी प्रबल है, वह मृत्यु की छाया तक नहीं देख सकती। परंतु यही छुरा वह तुमको समाप्त करने के लिये प्रयोग कर सकती है। मुझे विश्वास है—वह इसका तुम्हारे ऊपर वार अवश्य करेगी। उस छुरे को वहाँ से उठा लाओ। फ़ैल्टन ने अपनी भूल स्वीकार की। वह उलटे पैरों लौट पड़ा और म्लैडी के कमरे से जाकर चाक़ू उठा लाया। परंतु फ़ैल्टन की चेष्टा से

यह प्रतीत होता था कि लार्ड की बात पर उसको विवश होकर स्वीकृति देनी पड़ी है। ग्लैडी के प्रति जो आक्षेप लार्ड ने किये थे, उनको वह एक रमणी के प्रति पुरुषोचित शब्द नहीं समझता था। उसकी चेष्टा से घृणा का भाव झलक रहा था। ग्लैडी बड़े ध्यान से इसी भाव का अध्ययन कर रही थी।

पलँग पर लेटकर ग्लैडी इसी भाव का चिन्तन करने लगी। उसको अपने निराश हृदय में एक सुदूरवर्ती आशा का प्रकाश दिखलाई देने लगा। उसने अपने मन में विचार किया कि फ़ैल्टन यद्यपि दृढ़ स्वामिभक्ति तथा नियम-निष्ठा का उदाहरण है, तथापि उसके हृदय में दया और सहानुभूति का वह अंकुर मौजूद है जिसको सींचकर मैं वृक्ष रूप में पल्लवित कर सकती हूँ और इसी वृक्ष की सरस छाया में रहकर मैं सरलता से मुक्ति प्राप्त कर सकूँगी। फ़ैल्टन अनुभव-शून्य है, नवयुवक है, पवित्र है, सरल-हृदय है। इसको नष्ट करना सुसाध्य है; परंतु ओह! डी० विंटर! वह तो अत्यंत धूर्त है, मुझको अच्छी प्रकार जानता है, वह मुझसे डरता है, उससे कुछ भी आशा करना भारी मूर्खता है, पत्थर में जोंक लगाना है।"

यही विचार करती हुई ग्लैडी स्वप्न-राज्य में विचरने लगी।

४१

ग्लैडी गंभीर निद्रा में सो रही थी। निद्रा दो व्यस्त क्षणों का संधि-स्थल है। जो अव्यवहार्य है। जिसकी इच्छा हमारे हृदय में निरंतर कार्य करती रहती है। उसकी चरितार्थता कभी-कभी हमको स्वप्न-राज्य के कल्पना क्षेत्र ही में दिखलाई दे जाती है। हम सुख और आशा के प्रबल झोंकों में पड़कर, अभीष्ट की परितृप्ति का अनुभव करने लगते हैं। ग्लैडी भी स्वप्न में अपनी इच्छा को कार्य में परिणित होते देख रही थी। हृदय का उल्लास शरीर भेदकर, ओठों में झलकने लगा, हर्ष की एक हल्की रेखा उसके चेहरे पर खिंच गई। इस समय वह यौवन-पूर्ण-सौंदर्य की मादकता की सजीव प्रतिमा-सी मालूम होती थी। ग्लैडी ने देखा कि उसका भयंकर शत्रु आर्तगान उसके क़ब्जे में आ गया है, उसकी आज्ञा से उसको फाँसी दी जा रही है। जल्लाद की कुल्हाड़ी आर्तगान की गर्दन पर लगती है, लाल रक्त का फ़व्वारा छूटकर ग्लैडी के चरणों के निकट आकर गिरता है। इसी रक्त के

स्पर्श से ग्लैडी के शरीर में विद्युत-गति के साथ हर्षोन्माद प्रवेश करता है, पीले कपोलों में लाली दौड़ जाती है, ग्लैडी सोते-सोते हँसने लगती है ; परंतु क्षण भर ही में दृश्य पलटता है, वह देखती है कि आर्तगान और अथास उसको पकड़कर उठा लेते हैं और एक ऊँचे गगन-चुंबी टीले के ऊपर ले जाते हैं, टीले की सबसे ऊँची चट्टान पर ले जाकर उसको अनंत गहराई की ओर हवा में फेंक देते हैं। ग्लैडी ज़ोर से चीत्कार करके जाग उठी। उसके सारे बदन से पसीना छूटने लगा। हृदय अभी तक बाँसों उछल रहा था, चेहरे पर मुर्दे जैसा पीलापन छा गया था। उसे मालूम होता था कि वह अभी-अभी अनंत शून्य से अपने पलँग पर आकर गिरी है। तीव्र व्याकुलता से उसका मस्तिष्क भर गया। स्वप्न की भयंकरता से उसका सारा शरीर काँप उठा। भय के कारण वह बहुत देर तक पलँग पर आँखें बंद किये पड़ी रही।

प्रातःकाल जब प्रहरियों ने दरवाज़ा खोलकर कमरे में प्रवेश किया, तब उस समय भी ग्लैडी अपने बिस्तरे पर पड़ी हुई थी। फ़ैल्टन बाहर बरामदे में खड़ा हुआ था। वह अपने साथ एक दासी को लाया था। दासी ने कमरे में प्रवेश किया और ग्लैडी के पलँग के निकट पहुँचकर अभिवादन-पूर्वक अपने आने की सूचना दी। ग्लैडी के चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही दासी चौंक पड़ी। उसका चेहरा अत्यंत पीला पड़ गया था, भय-सूचक कालिमा की छाप मुख-वर्ण पर पड़ी थी, ग्लैडी की मुख-कांति को जिस व्यक्ति ने विगत रात्रि में देखा था, यदि वह इस समय उसको देख लेता, तो निश्चय धोखा खा जाता।

दासी की भयाकुल चेष्टा को जानकर, ग्लैडी ने वेदना-पूर्ण-स्वर में कहा—"आह ! मैं ज्वर से ग्रस्त हूँ। ज्वर की पीड़ा के कारण रातभर मुझे जागते ही बीता है। मुझे अब भी कठोर पीड़ा हो रही है।

मैं अपने बिस्तरे पर चुपचाप पड़ी रहना भर चाहती हूँ। क्या इस कारागार में मुझे इतनी भी सुविधा न दी जायगी ?"

दासी ने उत्तर दिया—"यदि आपकी इच्छा हो, तो कोई डाक्टर बुलवा लिया जाय ?"

फ़ैल्टन इस वार्तालाप को चुपचाप ध्यान से सुन रहा था।

म्लैडी ने सोचा—जितने अधिक व्यक्ति उसके निकट होंगे फ़ैल्टन के हृदय को हस्तगत करने में उसको उतनी ही अधिक असुविधा होगी। और लार्ड विंटर मेरे ऊपर और भी कड़ी निगरानी रक्खेगा। इसके अतिरिक्त यह बिलकुल स्पष्ट है कि डाक्टर आकर मेरे ज्वर के बहाने की पोल खोल देगा। इसी कारण उसने बात पलट कर कहा—"डाक्टर को बुलाना निरर्थक है, इससे क्या लाभ ? इन लोगों ने कल ही से कहना शुरू कर दिया है कि मैं बीमारी का बहाना मात्र कर रही हूँ। आज डाक्टर भी आकर उनके इसी मत को पुष्ट कर देगा ? क्या बंदी कभी रोगी होते हैं ? कारावास उनको सब पीड़ाओं से मुक्त कर देता है ? यदि डाक्टर ही बुलाना था, तो क्या कल से अब तक लंदन भर में उनको कोई डाक्टर नहीं मिला ?"

म्लैडी की इस तीखी शिकायत से बेचैन होकर, फ़ैल्टन ने कहा—"तो आप स्वयं ही बतलाइये, आख़िर आप कौन-सा इलाज पसंद करती हैं ?"

"मैं ! भला मैं क्या बतला सकती हूँ, मैं तो केवल यह अनुभव करती हूँ कि मैं रोगग्रस्त हूँ, आप जो इलाज चाहें वह कीजिए, इसका निर्णय मेरे अधिकार से बाहर है।"

शिकायतों के इस कभी न रुकनेवाले सिलसिले से ऊबकर, फ़ैल्टन ने झल्लाकर दासी से कहा—"जाओ, लार्ड विंटर को शीघ्र बुला लाओ ?"

लार्ड विंटर का नाम सुनकर म्लैडी चिल्ला उठी—"नहीं ! नहीं !

उनको न बुलाओो ? मैं अच्छी हूँ, मैं ख़ूब स्वस्थ हूँ, मैं किसी भी चीज़ की इच्छा नहीं करती ? मेरे ऊपर दया करो। उनको न बुलाओो ?" ग्लैडी ने ये शब्द इतनी शीघ्रता तथा इतनी तेज़ी से कहे कि फ़ैल्टन चकित होगया, इन शब्दों में न मालूम क्या जादू था कि उसने कमरे के अंदर क़दम रख ही दिया और ग्लैडी के निकट आ पहुँचा। फ़ैल्टन अभी तक बाहर ही रहकर बात-चीत कर रहा था वह ग्लैडी से यथासम्भव दूर ही रहकर अपनी कर्तव्य-पूर्ति करना चाहता था, वह जानता था कि ग्लैडी के निकट बार-बार जाने से उसके जाल में फँसने का यथेष्ट भय है। यद्यपि उसको अपने हृदय पर पूर्ण विश्वास था, तथापि लार्ड डी० विंटर के आदेश की उसको पूर्ण रक्षा करनी थी। लार्ड, ग्लैडी के कौशल से परिचित था, वह जानता था कि ग्लैडी अपनी रमणी-सुलभ-विमोहक शक्ति का प्रयोग फ़ैल्टन के युवा हृदय पर अवश्य करेगी। और यह असंभव नहीं है कि फ़ैल्टन ग्लैडी के सौंदर्य-प्रभाव से अंत में फिसल न जाय।

अपने निकट फ़ैल्टन को देखकर, ग्लैडी ने अपने हृदय में विजय का अनुभव किया। उसने अपने मन में कहा—"आह ! तुम आख़िर आ ही गये ! अब मेरी विजय निश्चित है ?"

फ़ैल्टन ने कुछ रुककर कहा—"मैडम ! यदि तुमको यथार्थ में कष्ट है, तो मैं डाक्टर का प्रबंध कर सकता हूँ; परंतु यदि तुम हमको धोखा देना चाहती हो, तो इसका परिणाम तुम्हारे लिये अत्यंत अहितकर होगा।"

ग्लैडी ख़ामोश रही, उसने अपने सुंदर चेहरे को तकिये के ऊपर रख दिया और अत्यंत हृदय-बिदारक ढंग से अश्रुपात करने लगी। ग्लैडी का वार ख़ाली नहीं गया। फ़ैल्टन का हृदय इस स्थिति के लिये तैयार न था, उसने एक अज्ञात वेदना का अनुभव

किया ; परंतु क्षण भर में ही उसने अपनी स्वाभाविक कठोरता को पुनः धारण कर लिया, निष्ठुर दृष्टि से ग्लैडी की ओर देखकर, वह कमरे से बाहर हो गया। दासी तथा अन्य प्रहरी भी उसीके पीछे-पीछे चले गये।

निर्जन कमरे में ग्लैडी ने संतोष की एक ठंडी साँस ली। पैशाचिक हृदय की एक मधुर रेखा उसके ओठों पर खिंच गई। वह धीरे-धीरे कहने लगी—"मेरी मुक्ति का मार्ग निर्मित हो चुका, यही युवक लार्ड विंटर की नीति को नष्ट करेगा।"

दो घंटे बीत गये। ग्लैडी फ़ैल्टन की प्रतीक्षा कर रही थी। वह जानती थी कि अभी थोड़ी देर में सेवक खाने की मेज़ साफ़ करने के लिये आवेंगे और उनके साथ फ़ैल्टन भी अवश्य आयेगा।

ग्लैडी की धारणा ग़लत नहीं निकली, फ़ैल्टन फिर लौटकर आया और बिना इस पर ध्यान दिये कि ग्लैडी ने खाना कुछ खाया भी या नहीं। उसने सेवक को मेज़ साफ़ कर देने का इशारा किया। खाना वैसा ही मेज़ पर पड़ा था। ग्लैडी ने स्पर्श तक न किया था। सेवक को इतना साहस न हुआ कि वह फ़ैल्टन का ध्यान भोजन की ओर आकृष्ट करता, उसने चुपचाप मेज़ को साफ़ कर दिया।

फ़ैल्टन बाहर खड़ा था, उसके हाथ में कोई सुनहरी पुस्तक थी।

ग्लाडी आराम-कुर्सी पर बैठी हुई सुन्दर, शोक मग्ना स्वर्गीय देवी के समान प्रतीत होती थी।

फ़ैल्टन धीरे-धीरे उसके पास गया, और कहा—"मैडम! लार्ड डी० विंटर ने जो आपके ही समान कैथोलिक-संप्रदाय के अनुगामी हैं, यह विचार किया है कि आपको धार्मिक साधनों से वंचित रखना आपकी आत्मा के लिये दुःख का कारण होगा। अतः उन्होंने यह बाइबिल की प्रति आपके पास भेजी है, जिससे आप प्रति दिन अपनी धार्मिक क्रियाओं को इच्छानुसार संपादित कर सकें।"

ग्लैडी ने अपना शिर ऊपर को उठाया और अत्यंत ध्यान से फ़ैल्टन की ओर देखने लगी। उसकी दृष्टि में घृणा थी, आश्चर्य था, नूतन आकर्षण था और हृदय-भेदी तीव्रता थी। अपने जाल को और भी पुष्ट करने के लिये उसको यह अच्छा अवसर मिल गया। उसके मस्तिष्क में सहसा वे विचार उत्पन्न हुए, जो संकट के क्षणों में कभी-कभी प्रतिभावान व्यक्तियों को ही सूझते हैं। ये वे क्षण थे, जिनसे मनुष्यों के भविष्य का निर्णय हो जाता है। ग्लैडी ने अत्यंत तिरस्कार के साथ कहा—"मेरे लिये ? क्या यह धार्मिक-पुस्तक मेरे लिये भेजी गई है ? बाइबिल ! यह अपवित्र बाइबिल मेरे लिये ? आह ! ईश्वर ! ईश्वर ! क्या इस इस शरीर के साथ यह आत्मा भी नष्ट की जायगी। मुझे अपमानित करने का यह एक नया साधन है। विधर्मी लार्ड विंटर अच्छी प्रकार जानता है कि मैं उसके संप्रदाय का अवलंबन नहीं करती। मुझे विधर्मी बनाने के लिये ही यह नया चारा डाला जा रहा है। आह ! ईश्वर ! मेरी आत्मा की रक्षा कर।"

फ़ैल्टन ने आश्चर्य-चकित होकर कहा—"तो, मैडम ! आप किस संप्रदाय को मानती हैं ?"

ग्लैडी ने फ़ैल्टन की सरल जिज्ञासा को उत्तेजित करने के लिये एक गहरी सांस लेकर कहा—"आह ! आप यह जानना चाहते हैं कि मैं किस संप्रदाय को ग्रहण किये हूँ ? आह ! क्या आप नहीं जानते ? क्या लार्ड विंटर ने आपको यह पाठ नहीं पढ़ाया ? नहीं ! अवश्य पढ़ाया होगा ! यह प्रश्न मेरी यंत्रणा को बढ़ाने के लिये ही किया गया है। हाय ! एक निरपराध अबला के ज़ख़्मों पर नमक छिड़कने के लिये कितने हृदय-हीन व्यक्ति नियुक्त किये जाते हैं ? जब विपदाओं की सीमा समाप्त हो जावेगी, तब मेरा पवित्र संप्रदाय ही मेरे अंत-काल में मेरा सहायक होगा। हे मेरे ईश्वर ! मेरी रक्षा कर ! मेरी आत्मा की रक्षा कर !"

फ़ैल्टन अवाक् था, यह करुणा-व्यंजक दृश्य उसके नेत्रों के सामने आज तक नहीं आया था। वह अपने धर्म पर अटल विश्वास रखता था और दूसरे धर्मावलंबियों की भावनाओं का पूरा आदर करना जानता था। उसके विचार में शत्रु को सभी प्रकार की पीड़ा पहुँचाई जा सकती है; परंतु उसके धर्म पर आघात पहुँचाना किसी प्रकार भी उचित नहीं है। धर्मनिष्ठ व्यक्ति को विधर्मी बनाने का प्रयत्न करना, उसपर पाशविक अत्याचार है। ग्लैडी के अंतिम शब्द उसकी नस-नस में असीम करुणा का संचार कर रहे थे, वह निस्तब्ध खड़ा रहा।

ग्लैडी ने भेद्य-स्थान को पहचान लिया, उसने अपने तीर को और भी सीधा करके अचूक निशाना लगाया।

उसने कहा—"हाय! इस समय मैं शत्रुओं के पंजे में फँसी हूँ। मेरे शत्रु ने मेरे शरीर को तो बंदी बना ही लिया, अब वह मेरी आत्मा को भी बंदी बनाना चाहता है। परमात्मन्! परमात्मन्! क्या अत्याचार की कोई सीमा नहीं है? नहीं! ईश्वर मेरी मदद करेगा अन्यथा अपने ईश्वर के लिये मुझे ही अपने आपको बलिदान करना होगा। नहीं! नहीं! मैं इस पुस्तक को नहीं पढ़ूँगी। इसकी ओर आँख उठाकर भी अपनी दृष्टि को अपवित्र नहीं करूँगी। तुम लार्ड से मेरा यही उत्तर जाकर कह दो, इस पुस्तक को वापस ले जाओ! इसका पाठ तुम्हीं को मुबारक रहे; क्योंकि लार्ड ने अपने मंत्रों से तुमको इसी में दीक्षित किया है? उसके पाप का दायरा बढ़ाने में तुम सहायक हुए हो? हा! ईश्वर! इस भूले हुए पथिक की आत्मा कब सचेत होगी?"

ग्लैडी के शब्दों में तेज था, हृदय-विदारक करुणा थी, कटुता थी; परंतु साथ ही उसमें वह सरस स्निग्धता, धार्मिक पवित्रता, और ओज-पूर्ण सरलता भी थी, जो शीघ्र ही अनुभव-शून्य,

युवकों के हृदयों में घर कर लेती है। म्लौडी का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा था, उसकी सौंदर्य-श्री चमक रही थी, उसके स्वर में मधुरता थी। फ़ैल्टन इसी प्रवाह में बहने लगा। थोड़ी देर तक वह चकित-सा खड़ा रहा। और अपना कर्तव्य निश्चित न कर सका; परंतु कुछ क्षण बाद हृदय को दबाकर उसने बाइबिल की प्रति मेज़ पर से उठा ली और चुपचाप उलटे पैरों लौट गया।

सायंकाल को लार्ड विंटर ने स्वयं कमरे में प्रवेश किया। म्लौडी पहले ही से यह जानती थी। वह दिन भर लार्ड का सामना करने के लिये अपना कर्तव्य-पथ निश्चित करती रही। प्रत्याक्रमण के लिये उसने अपने सब शस्त्र एकत्रित कर लिये। लार्ड डी० विंटर के आने पर उसने उनका सामना उस स्त्री की भाँति किया, जिसने अभी-अभी अपनी नष्ट शक्ति को पुनः प्राप्त कर लिया है। उसने लार्ड से सनद्ध सैनिक की भाँति भेंट की।

लार्ड डी० विंटर ने म्लौडी के सामने की आराम कुर्सी अपने निकट खिसका ली और उस पर बैठकर लापरवाही के साथ टाँगें फैलाते हुए हँसकर कहा—"मालूम होता है कि हम लोगों ने शायद अपने सिद्धांतों को भी बदल दिया है?"

म्लौडी ने सगर्व स्वर में कहा—"इससे आपका क्या अभिप्राय है?"

"अहा! अभिप्राय! अभिप्राय यह है कि हमारी पिछली भेंट के पश्चात् से शायद तुमने धर्म-परिवर्तन कर दिया है? मेरा विचार है कि तुमने अपने प्रोटेस्टेंट मतावलंबी तीसरे पति से भूलकर, सहसा ही विवाह नहीं किया?"

बंदिनी ने तेज़ी से कहा—"लार्ड! अपने मतलब को ज़रा और साफ़ कीजिये; क्योंकि मैं आपके शब्दों को अवश्य सुन रही हूँ; परंतु उनके अभिप्राय को नहीं समझ सकी।"

लार्ड विंटर ठट्टा मार कर हँस पड़े, कहा—
नास्तिक बनने जा रही हो ? यह तो और भी अच्छा ह
निर्भय होकर उत्तर दिया—"निस्संदेह ! यह आपके सिद्धांतो ५
से बहुत उपयुक्त है ?"

"ओह ! मैं तो यह स्वीकार करता हूँ। लिये ये सब बराबर हैं।"

"आह ! इस धार्मिक उदासीनता को आप स्वयं क्यों स्वीकार करते हैं ? आपके अत्याचार और जघन्य कृत्य स्वयं इसकी घोषणा कर रहे हैं।"

"मैं क्या ! मेरे अत्याचार और जघन्य कृत्य ! मैडम म्लैडी ! या तो मैं ही तुझको नहीं समझ सका, या तू ही निर्लज्जता का नाट्य कर रही है ?"

म्लैडी ने अविचलित शांति के साथ मुस्कराते हुए उत्तर दिया—"आह ! मैं समझ गई ! यह सब तुम इसलिये कह रहे हो कि कमरे के बाहर जो तुम्हारे प्रहरी तथा जेलर हमारे बीच की बातचीत सुन रहे हैं, वे मेरे प्रति और भी कठोरता का व्यवहार करने लगें।"

"मेरे प्रहरी और जेलर ! आह ! धूर्त म्लैडी ! इस समय तू करुण-काव्य का नाटक रच रही है। कल का सुखांत दृश्य आज दुःखांत में परिणत कर दिया गया हो ; परंतु ! नहीं ! अब केवल आठ ही दिन शेष रह गये हैं, इस नाटक की समाप्ति कहाँ होगी ? जहाँ तुम्हें भेजकर मैं अपने कर्तव्य से पूर्णतया निवृत्त हो जाऊँगा।'

म्लैडी चिल्ला उठी—"ओह। अत्याचारी ! पापी। यह कर्तव्य है या घोर क्रूरता का निदर्शन।"

म्लैडी का स्वरूप अत्यंत उग्र हो गया। भूखी सिंहनी की भाँति वह गरज उठी। म्लैडी जब तीव्र व्यंग्य को सहन करने में असमर्थ हो जाती थी, तब उसके मस्तिष्क में एक तीव्र बवंडर उठ खड़ा होता

न-शक्ति लुप्त हो जाती थी। नेत्रों से अग्नि-कण और उसकी आकृति अत्यंत भयंकर हो जाती थी। सकी पराजय का मुख्य चिन्ह था। लार्ड विंटर ग्लैडो के थकंडों से अ ी प्रकार परिचित था। वह कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और तेज़ी हा—"देखता हूँ! यह औरत पागल हो गई है, मैडम! यह नाटक बंदकर, नहीं तो तुझे अँधेरी काल-कोठरी में बंद करना होगा, मालूम होता है यह मेरी तेज़ शराब है, जो तेरे मस्तिष्क में चक्कर काट रही है; परंतु कोई परवा नहीं, मैं इसका इलाज भी जानता हूँ। तेरे दिमाग़ को ठंडा करने का उपाय मुझे मालूम है, मैं जानता हूँ, नागिन के दाँत किस यंत्र से निकाले जाते हैं।"

यह कहता हुआ लार्ड विंटर कमरे से चला गया। फ़ैल्टन नित्य की भाँति आज भी बाहर खड़ा हुआ था, उसने ऊपर की बातचीत का एक-एक शब्द सुन लिया था। ग्लैडी यह सब देख रही थी। उसने लार्ड विंटर को सुनाते हुये कहा—"हाँ! चला जा, चला जा, तेरे पापों का प्याला लबरेज़ हो गया है, उसके परिणामों के प्रकट होने में अब देर नहीं है? परंतु तेरी दृष्टि अभी उसपर नहीं जायेगी। जिसकी आँखों में चर्बी छाई हुई है, उसे अच्छाई और बुराई में अन्तर कब दिखाई देता है?"

इसके बाद पूरी शांति छा गई। ग्लैडी एक वीभत्स आनन्द का अनुभव कर रही थी। उसका हृदय उत्साह से परिप्लावित था। अब उसने अपने मार्ग की लगभग सब मंज़िलें तै करली थीं। केवल एक मंज़िल तै करना बाक़ी रह गई थी। फ़ैल्टन के डगमगाते हुए चरणों के नीचे बहनेवाले स्रोत की गति को ज़रा और अधिक तीव्र कर देना था। फ़ैल्टन की अभेद कट्टरता के अंदर प्रवेश करके ग्लैडी ने उसकी पाषाणता को द्रवित तो कर दिया था; परंतु अभी इतना कार्य शेष था कि वह द्रवत्व

विलंब होने पर लार्ड विंटर की विपरीत शिक्षा के शीतल झोंके से कहीं पुनः अपने पूर्व-रूप ही में न जम जावे। अतः यह आवश्यक था कि शीघ्र ही अपने ढाँचे में उसको ढाल दिया जाय। फ़ैल्टन के सामने अब दो पक्ष थे। म्लैडी को यह प्रयत्न करना था कि वह उसके ही अनुरूप पक्ष को ग्रहण करे। म्लैडी इसी उद्योग में लग गई। उसके सामने जो क्षेत्र था, उसका चप्पा-चप्पा उसका समझा था। वह जानती थी कि यंत्र के किस तार को स्पर्श करने से वह अपनी अभीष्ट लय को उत्पन्न कर सकती है। वीणा की किस झंकार से वह सम्मोहन गान की सृष्टि कर सकती है। इस घटना को हुए दो घंटे बीत गये, म्लैडी के लिये भोजन लाया गया। फ़ैल्टन ने देखा—बंदिनी इस समय भक्त जन की स्वाभाविक शांति के साथ मधुर स्वर से ईश्वर-बंदना कर रही है। म्लैडी अपनी भक्ति-पूर्ण प्रार्थना में तन्मय थी, नेत्र बंद किये हुए वह पवित्र देवी-सी प्रतीत होती थी। फ़ैल्टन को मालूम हुआ कोई स्वर्गीय देवी अपने संकट-निवारण के लिये ईश्वर का आवाहन कर रही है। उसने संकेत से नौकरों को निषेध कर दिया कि वे सब प्रबंध करके चुपचाप बिना किसी प्रकार का शब्द किये कमरे से चले जावें। वह स्वयं भी पैरों को दबा-दबाकर वापस लौट गया। म्लैडी ने धीरे से पलकों को हटाकर देखा—फ़ैल्टन तथा प्रहरी बाहर खड़े हुए अत्यंत शांति और ध्यान से उसकी प्रार्थना सुन रहे थे। उसका उद्देश्य पूरा हो रहा है, यह देखकर उसे अत्यंत हर्ष हुआ। वह और भी मधुर स्वर से अपनी प्रार्थना को समाप्त करने लगी।

इस समय म्लैडी बस इतना ही चाहती थी। वह उठी, मेज़ के समीप गई, थोड़ा-सा भोजन किया और केवल पानी पीकर अपने शयन-स्थल में वापस लौट आई। शराब और गोश्त को उसने ज़रा भी हाथ नहीं लगाया।

एक घंटे बाद मेज़ साफ़ कर दी गई। इस बार प्रहरियों के साथ फ़ैल्टन नहीं आया। ग्लैडी भी यही चाहती थी, फ़ैल्टन के बार-बार आने से उसकी उद्देश्य-पूर्ति में विघ्न पड़ता था, वह अपने शिकार को दूर ही रखकर फँसाना चाहती थी। अधिक संपर्क नवीनता के प्रभाव को नष्ट करता है। अज्ञात रहस्य की जिज्ञासा सदा आकर्षक और तीव्र होती है।

एक घंटा और बीत गया। अब प्रासाद भर में पूर्ण नीरवता छा गई थी, केवल समुद्र की लहरों का गर्जन कभी-कभी निस्तब्ध शांति को भंग कर देता था। ग्लैडी के लिये यही उपयुक्त समय था। बाहर प्रहरियों ने सुना कि एक अत्यंत कोमल स्वर-लहरी सहसा बंदिनी के कमरे से निकली और प्रासाद के वायुमंडल में छा गई। अँधेरी रात में निस्तब्धता बहुधा भय का संचार करती है; परंतु उस मधुर तरंग से रात्रि की शांत-कालिमा विमुग्धकारी सौंदर्य में परिणत हो गई। सरस गान की तरंग के स्पर्श से नीरवता सजग हो उठी। वायु इस माधुर्य-राशि को मानो चिर-संचित करने के निमित्त ही उसकी प्रतिध्वनि इधर से उधर लिये फिरती थी। सरसता का यह प्रवाह उस निस्तब्ध प्रासाद को मनोहर झंकारों से परिपूरित कर रहा था। सब प्रहरी आश्चर्य की दशा में थे। वे अपनी गति-विधि को भूलकर जहाँ खड़े थे, वहीं खड़े रह गये। वे चकित थे और सोचते थे कि क्या कोई स्वर्ग की किन्नरी इस प्रासाद में आकर, अपने वीणा विनिंदित स्वर से अमृतमयी मधुरता के इन अनंत कणों को वितीर्ण कर रही है? ग्लैडी! ग्लैडी कौन है? क्या वह वास्तव में देवी है? या देवत्व के आवरण में छिपी कोई राक्षसी है? इसका निर्णय उनके लिये कठिन था।

ग्लैडी अपनी विशुद्ध, कोमल, सरस वाणी से अत्यंत तन्मयता के साथ, यह मधुर गीत गा रही थी—

निज दासों को प्रथम प्रभो ! तुम दुख देते हो ;
भक्ति - शक्ति की कड़ी परीक्षायें लेते हो।
किंतु शीघ्र ही उन्हें प्यार से अपनाते हो ;
उनके सच्चे पथ - परदर्शक बन जाते हो।

गान बहुत ही साधारण था, कोई विशेष बात उसमें न थी ; परंतु वह भक्ति का पवित्र उद्गार था, करुणा का सजीव चित्र था, और भक्त हृदय का यथार्थ क्रंदन था। इसके एक-एक शब्द में विपत्ति की आत्म-कथा छिपी हुई थी। शब्द सादे थे ; परंतु तीव्र व्यथा का प्रचंड आवेग उनके अंदर से झलक रहा था।

ग्लैडी गा रही थी ; परंतु उसके कान प्रहरियों की गति-विधि पर थे। वह जानना चाहती थी कि उसका गीत उन पर क्या प्रभाव डाल रहा है ? वह अनुभव कर रही थी कि उसका गाना कमरे से निकल कर उसके रक्षकों के हृदयों की पाषाणता को द्रवित कर रहा है। उसके गाने में यह चमत्कार अवश्य था। परंतु कुछ ऐसे कैथोलिक संप्रदाय के सिपाही भी थे, जिनकी धार्मिक कट्टरता पर यह गीत कुछ ठेस पहुँचाता था। क्योंकि ग्लैडी ने सुना कि एक सिपाही ने तीव्र-स्वर में बाहर से डाटकर कहा—"यह कौन गा रहा है ? अपना गाना बंद करो ? यह विद्यार्थियों का गीत है ?" परंतु उसी क्षण किसी ने इसके उत्तर में और भी उच्च-स्वर से पुकारते हुए डाटकर कहा—"चुप रहो ? तुम हस्तक्षेप नहीं कर सकते ? तुमको यह आज्ञा नहीं है कि तुम किसी को गाने न दो ? तुम्हारा अधिकार केवल इतना ही है कि यदि क़ैदी भागने का प्रयत्न करे, तो उसके गोली मार दो, अपने कर्तव्य की सीमा को बढ़ाने का तुमको ज़रा भी अधिकार नहीं।" ग्लैडी यह शीघ्र पहचान गई कि यह स्वर फ़ैल्टन का है। फ़ैल्टन का विरोध करने का किसी को साहस न पड़ा। फ़ैल्टन उसके कितना निकट आ गया है, यह देखकर ग्लैडी आनंद में निमग्न होगई।

अब ग्लैडी और भी अधिक जोश और उमंग के साथ गाने लगी। उसने ऐसा भाव धारण कर लिया कि मानो उसने फ़ैल्टन और सिपाही की बात-चीत सुनी ही नहीं। उसके स्वर में नवीन चमत्कार आगया, कोमलता और माधुर्य जितना भी वह संचय कर सकी थी सब उसने अपने गान में सर्फ़ कर डाला। उसकी वाणी में, उत्साह था, उमंग थी, और वह मीठा दर्द था, जो हमदर्दों को तड़पा देता है।

उसने गाया—

उधर अश्रु-जल-वृष्टि अपरिमित चिंताएँ हैं ;
ज़ंजीरें हथकड़ी कड़ी क्या विपदाएँ हैं।
युवक-जोश है इधर प्रार्थनाओं का बल है ;
रक्षक हैं भगवान भरोसा हमें अटल है।

ग्लैडी के मधुर-स्वर ने इस गीत के भीतर जादू का मंत्र फूँक दिया, मूक शब्द आर्तवाणी के सजीव साधन बन गये। फ़ैल्टन को प्रतीत हुआ कोई पीड़िता कामिनी अपनी चिरसंचित करुणा के प्रवाह को बहा रही है।

ग्लैडी ने फिर गाया—

आयेगी शुभ घड़ी कभी तो इस जीवन में ;
होगी आशा पूर्ण हमारी जो है मन में।
होंगे विधि अनुकूल शूल हो फूल खिलेंगे ;
हुए विफल यदि कहीं मौत से मुदित मिलेंगे।

फ़ैल्टन का रुका हुआ धैर्य जाता रहा। युवक हृदय अधीर हो उठा। उससे न रहा गया। उसने शीघ्रता से कमरे के किवाड़ खोले और ग्लैडी के समीप पहुँच गया, ग्लैडी ने देखा—फ़ैल्टन उन्मत्त था, उसके नेत्रों से सरस कांति टपक रही थी।

"रमणी ! तुम इतना करुण गीत क्यों गाती हो ?"

ग्लैडी ने विनीत होकर मधुरता के साथ उत्तर दिया—"मैं क्षमा

चाहती हूँ। मैं यह भूल गई थी कि मेरा यह गीत एक बंदी की अवस्था के उपयुक्त नहीं है। मुझे दुःख है कि आपके हृदय को इससे कुछ पीड़ा पहुँची, संभव है आपके धार्मिक सिद्धांतों को भी कुछ चोट पहुँची हो; परंतु मैं सौगंध खाकर कहती हूँ कि मेरा यह उद्देश्य कदापि न था। यह गीत मेरे हृदय का अनिवार्य उद्‌गार था। मैं इस भूल के लिये पुनः क्षमा-प्रार्थना करती हूँ।"

इस समय ग्लैडी के रूप की कांति इतनी रमणीय थी कि उसके धार्मिक उन्माद ने फ़ैल्टन पर इतना गंभीर प्रभाव डाला कि वह चकित होगया। उसकी दृष्टि में ग्लैडी पवित्र, भक्ति की जीवित प्रतिमा-सी मालूम होने लगी। उसने कहा—

"आपका यह गीत यहाँ के लोगों की शांति को भंग करता है, आप हमारे कर्तव्य-पालन में विघ्न उपस्थित करती हैं।"

फ़ैल्टन अपने स्वर-भंग को न छिपा सका। ग्लैडी ने नीची दृष्टि करके अत्यंत कोमल स्वर में धीरे से कहा—

"तब मैं न गाऊँगी, मुझसे चुप न रहा गया, यह मेरी भूल थी।"

"नहीं! नहीं! मेरा यह अभिप्राय नहीं है। आप गाइये; परंतु इतनी तेज़ आवाज़ में नहीं।"

इतना कहकर फ़ैल्टन शीघ्र ही वापस लौट गया। वह अनुभव करने लगा कि मैं बंदिनी के प्रति और अधिक निष्ठुर नहीं हो सकता। हृदय की उदारता को छिपाने का साहस उसमें न था।

४२

फ़ैल्टन का पतन हो चुका था। वह अज्ञात रूप में मायामय मरीचिका से आकर्षित होकर, छिपे हुए शिकारी के मायाजाल में क़दम रख चुका था। परंतु अभी कुछ काम और शेष था। इसकी आवश्यकता थी कि फ़ैल्टन कुछ बोले, ग्लैडी से मधुर संलाप में प्रवृत्त हो, उसके सरस भाषण के प्रभाव को अनुभव करे। ग्लैडी यह भली भाँति जानती थी कि सबसे अधिक जादू उसकी वाणी में है, यह चमत्कारी प्रलोभन फ़ैल्टन की शुष्कता के आवरण में संचित सरस-हृदयता के लिये असह्य होगा। ग्लैडी पुरुष-हृदय की कुशल ज्ञाता थी। फ़ैल्टन के चरित्र का इन्हीं दो दिनों में उसने अच्छा अध्ययन कर लिया था। उसके आचरण पर, उसके प्रत्येक कार्य पर अपनी तीक्ष्ण-दृष्टि रखती थी। उसकी हँसी, उसकी चाल, मुस्कराहट, क्रोध तथा निष्ठुर व्यवहार के द्वारा उसके हृदय के प्रत्येक स्पंदन का तथा भावों के प्रत्येक उतार-चढ़ाव का अनुमान कर लेती थी। वह जानती थी कि उसके मन को अनुकूलता के रंग से अनुरंजित करने के लिये उसके हृदय के किस तार को स्पर्श करने की आवश्यकता है। किस झंकार से अनुकूल गीत को उत्पन्न किया जा सकता है।

लार्ड डी० विंटर के प्रति भी उसने अपने व्यवहार का निश्चय कर लिया था। इस विषय में उसको किसी प्रकार की कठिनता का अनुभव नहीं हुआ। फ़ैल्टन उसका लक्ष्य था, लार्ड विंटर को इसी लक्ष्य की पूर्ति का उसने साधन बनाया। उसने निश्चित कर लिया कि लार्ड की उपस्थिति में वह मूक गौरव का नाट्य करेगी, उसके सामने चुप और शांत रहेगी; परंतु तन कर अपने गौरव की रक्षा करेगी। दिखावटी घृणा और तिरस्कार के भाव धारण करके कभी-कभी उसको छेड़ेगी, कटूक्तियों से उसके क्रोध को प्रज्वलित करेगी और उत्तेजित करके उसको प्रचंड दर्प का प्रदर्शन करने का अवसर देगी। फ़ैल्टन यह सब कुछ देखेगा, म्लैडी के आत्म-समर्पण, ईश्वराधीनता, और संतोष-वृत्ति के सामने लार्ड का यह आचरण उसको अत्याचार प्रतीत होगा, और म्लैडी के प्रति उसके भाव और भी अधिक अनुकूल हो जायँगे।

फ़ैल्टन नित्य की भाँति आज भी प्रातःकाल आया। परंतु म्लैडी ने उसके प्रति उदासीनता का भाव धारण कर लिया। वह बिलकुल चुप रही, उसने आँख उठाकर भी उसकी ओर नहीं देखा; परंतु म्लैडी इतना भाँप गई कि फ़ैल्टन उससे वार्तालाप करने का उत्सुक है, वह एक बार कुछ कहने के लिये उसके निकट तक आ गया; फिर न मालूम क्या समझकर लौट गया।

दोपहर को लार्ड विंटर ने कमरे में प्रवेश किया। म्लैडी उस समय खिड़की के पास खड़ी बाहर को ओर देख रही थी। मालूम होता था कि वह कुछ विचार कर रही है। दरवाज़े के खुलने का शब्द होने पर भी वह पूर्ववत् खड़ी रही, मानो उसके कानों में यह शब्द पड़ा ही नहीं। लार्ड विंटर हँस पड़े, उन्होंने कहा—"सुखांत दृश्य के बाद तुमने दुःखांत दृश्य की रचना की। अब मालूम होता है शोकमग्ना का नाट्य किया जा रहा है।

ग्लैडी ने कोई उत्तर न दिया।

लार्ड ने उसी व्यंग्य के साथ कहना जारी रक्खा—"मैं जानता हूँ, तुम सोच रही हो कि मैं किस प्रकार समुद्र के उस तट पर पहुँच कर पूर्व-स्वतंत्रता का उपभोग करूँ। आह! स्वर्ण के समान चमकती हुई समुद्र की तरंगों से आंदोलित जहाज़ पर बैठने का मुझे सौभाग्य कब प्राप्त होगा? लार्ड विंटर को नष्ट करने के लिये कौन से प्रपंच की रचना करूँ? धैर्य रक्खो। मैं तुम्हारी इन इच्छाओं की पूर्ति का सब प्रबंध किये देता हूँ। अब केवल चार दिन बाक़ी हैं। चार दिन के बाद, समुद्र की स्वर्ण-लहरें तुम्हारे चरणों के तले होंगी, खुला हुआ समुद्र तुम्हारी दृष्टि के सामने होगा, यद्यपि वह तुमको उतना रुचिकर प्रतीत न होगा जितना कि एक स्वतंत्र बंदी के लिये होता है। आज से पाँचवें दिन इंगलैंड तुमसे छुट्टी पा जायगा।"

ग्लैडी दोनों हाथ सीने पर बाँधे हुए थी, उसकी दृष्टि आकाश की ओर थी और पवित्र भक्त की भाँति वह प्रार्थना कर रही थी—"ईश्वर! ईश्वर! इस मनुष्य को उसी भाँति क्षमा करना, जिस भाँति आज मैं इसको क्षमा कर रही हूँ।"

लार्ड विंटर ठहाका मारकर हँस पडा, और यह कहता हुआ कमरे से लौट पड़ा—"पापिनी! ख़ूब प्रार्थना कर ले। तेरी प्रार्थना आज इसीलिये इतनी कोमल है कि तू जानती है कि मैं उस शक्तिशाली व्यक्ति के पंजे में हूँ, जो मुझको कभी क्षमा नहीं कर सकता।"

जब लार्ड विंटर कमरे से बाहर हो गया, तब अधखुले दरवाज़े के झरोखे से दो नेत्र चमकते हुए ग्लैडी को दिखाई पड़े। यह फ़ैल्टन था, जो बंदिनी की व्यथा का अंदाज़ा लगाने के लिये आया था। ग्लैडी की दृष्टि पड़ते ही वह शीघ्र ही दरवाज़े के पास से खिसक गया।"

ग्लैडी घुटनों के बल बैठकर, आर्त्त-वाणी से प्रार्थना करने लगी—

"परमात्मन ! तुम सर्वज्ञ हो ! यह तुमसे छिपा नहीं है कि किस पवित्र उद्देश्य के लिये मुझे ये सब यातनायें सहन करनी पड़ रही हैं। हे ईश्वर ! मैं ये सब सहन कर सकूँ इसके लिये मुझे शक्ति दो, बल दो, सामर्थ्य दो। मैं अपने उच्च लक्ष्य से विचलित न हो सकूँ, इतना मुझे साहस दो।"

कमरे का दरवाज़ा धीरे-धीरे खुला; परंतु सौंदर्यमयी बंदिनी ने जान-बूझकर ऐसा भाव धारण कर लिया कि मानो वह वाह्य जगत् के कार्य-कलाप से निरंतर बेख़बर थी, वह और तन्मय हो गई, शोक से विह्वल होकर गद्‌गद कंठ से उसने प्रार्थना की—"हे सर्वनियंता न्यायकारी ईश्वर ! क्या धर्म की रक्षा न होगी ? इस क्रूरकर्मा दुष्ट व्यक्ति के भीषण षड्यंत्र क्या सफल होंगे ? दीनवत्सल ! रक्षा करो ! प्रणतपाल ! रक्षा करो ! मैं शरणागत हूँ।"

यह कहकर भूमि पर सर टेक दिया, उसके कमलनेत्रों से अश्रु-प्रवाह जारी था, वक्षस्थल का सारा वस्त्र भीग गया था। फ़ैल्टन कमरे के बाहर खड़ा एक-टक दृष्टि से यह दृश्य देख रहा था, अनन्य भक्ति, पवित्रता और परमोत्कृष्ट सौंदर्य का यह अद्‌भुत सम्मिश्रण उसने आज तक न देखा था, उसके हृदय का रक्त खौलने लगा, शरीर की एक-एक नस फड़क उठी, भावावेश से वह उन्मत्त होगया, उसने धीरे-धीरे क़दम बढ़ाया और कमरे के भीतर पहुँचा।

फ़ैल्टन की दृष्टि में केवल इसी समय ल्लैडी ने पहले-पहल पदचाप सुनी। वह सकुचा-सी गई, जल्दी से उठकर खड़ी होगई और नीची दृष्टि करके अपने अस्त-व्यस्त वस्त्र को और खुले हुए केश-पाश को ठीक करने लगी।

फ़ैल्टन ने गंभीर होकर कहा—"मैडम ! मुझे दुःख है कि मेरे कारण आपकी उपासना में विघ्न पड़ा। आप अपनी आराधना को बंद न कीजिये।"

ग्लैडी के नेत्र डबडबा आये, उसने भरे हुए कंठ से कहा—"आपको यह कैसे मालूम हुआ कि मैं प्रार्थना कर रही थी। आपको धोखा हुआ, मैं उपासना में निरत नहीं थी।"

फ़ैल्टन ने उसी गंभीरता के साथ; परंतु कोमलतर स्वर में कहा—"तो क्या आपकी यह धारणा है कि मुझको यह अधिकार है कि मैं किसी भक्त को अपने सृष्टि-कर्ता के प्रति झुककर प्रार्थना करने से रोक दूँ? यदि ऐसा है तो आप भ्रम में हैं! मैं तो प्रसन्न हूँ यह देखकर कि बंदी का झुकाव ईश्वर की ओर हुआ है। पापात्मा का सुधार पश्चाताप ही द्वारा होता है। उससे चाहे जितने अपराध हुए हों, यदि वह सच्चे हृदय से, ईश्वर से क्षमाप्रार्थी हो, तो मेरी दृष्टि में वह अत्यंत पवित्र है, उच्च है और आदर का पात्र है।"

"पापात्मा!" ग्लैडी ने विचित्र मुस्कराहट के साथ कहा—"तो क्या मैं पापात्मा हूँ?" ग्लैडी के शब्दों में दृढ़ता थी, व्यंग्य था और थी सत्यता की विचित्र व्यंजना। उसने एक निरपराध भक्त की भाँति कहा—"हे मेरे ईश्वर! क्या तुम्हारी भी दृष्टि में मैं अपराधिनी हूँ, क्या तुम भी मुझे पापात्मा समझते हो? नहीं! नहीं! तुम्हारे नेत्रों पर कोई पर्दा नहीं डाल सकता, तुम सर्वज्ञ हो! सब कुछ जानते हो, मेरी आत्मा पुकार रही है कि तुम्हारी दृष्टि में मैं पवित्र हूँ! निष्कलंक हूँ! लोग कहते हैं, संसार कहता है; परंतु मुझे संतोष है, मुझे विश्वास है, कि सर्व-नियंता प्रभो! तुम नहीं कहते। (फ़ैल्टन की ओर दृष्टि पात करके) कहो? कहो? तुम कहो! परंतु नहीं यह तुम नहीं कह रहे। तुम्हारी ज़बान से लार्ड विंटर कह रहा है। तुम पर मैं दोष नहीं मढ़ सकती। हा ईश्वर! मेरी परीक्षा कब समाप्त होगी?"

ग्लैडी के एक-एक शब्द निर्दोषता के रंग में रँगे थे, फ़ैल्टन की दृष्टि में उसकी पवित्रता उत्तरोत्तर स्पष्ट होती जाती थी। उसने कहा—"यदि आप पवित्र और निरपराधिनी हैं, तबतो आपके लिये

प्रार्थना की और भी आवश्यकता है, ऐसी दशा
समझूँगा कि स्वयं आपके लिये प्रार्थना करूँ।''

ग्लैडी के शरीर में हर्ष की बिजली-सी दौड़ गई, '
पड़ी—अहा! आप न्यायप्रिय हैं। आपकी उदारता के लिये म
हूँ। ग्लैडी के नेत्रों में आँसू उमड़ आये, उच्छ्वासित हृदय से उस
कहा—''आह! अब मैं अधिक सहन नहीं कर सकती। मुझे भय है कि अधिक कष्टों के आने पर मैं अधीर न हो उठूँ, धर्म से विचलित न हो जाऊँ, अपने रहस्य का प्रकाश न कर दूँ। आप सहायता दीजिये, इस निराश अबला को सहारा दीजिये, मैं आपसे केवल एक याचना करती हूँ और यदि आप उसको अंगीकार करें, तो लोक और परलोक में मैं आपका यश गाऊँगी, जन्म-जन्मांतर आपकी आभारी रहूँगी।

फ़ैल्टन में स्वामिभक्ति का अंकुर अभी शेष था; उसने कहा—''आप यह याचना स्वामी से कीजिए। वही आपकी प्रार्थना सुन सकते हैं। मुझे खेद है कि मैं उनकी आज्ञा का सेवक-मात्र हूँ। किसी को क्षमा करने या दंड देने की सामर्थ्य मुझमें नहीं है। मैं इस अधिकार से वंचित हूँ। ईश्वर ने यह अधिकार मुझसे उच्च व्यक्ति के ऊपर सौंपा है और वह व्यक्ति केवल लार्ड विंटर हैं।''

''आह! विंटर! ईश्वर उसकी आत्मा को पवित्र बनायें। मैं विंटर से कुछ नहीं कह सकती, मेरी प्रार्थना आपसे है, मैं आपसे ही कहूँगी। ओह! मेरे ईश्वर! क्या तूने सबके हृदय विंटर ही जैसे बनाये हैं? क्या इन आत्माओं में तेरे प्रकाश की झलक बंद हो गई।'' यह कहकर उसने उद्वेगपूर्ण स्वर में फ़ैल्टन से कहा—''तुमसे! मैं केवल तुमसे कहूँगी, तुम्हीं से प्रार्थना करूँगी, तुम सुनो, मेरी विपत्तियों को न बढ़ाओ, मेरी कालिमा को गहरी न करो?''

''आह! तुम्हारे ऊपर यदि उचित कालिमा लगी है, तुमने

उसका तुमको पश्चाताप है, यदि तुम अपने कर्मों ..., तो ईश्वर के प्रति प्रार्थना करो, वही क्षमा कर

..ह ! यह आप क्या कह रहे हैं ? आप मेरे अभिप्राय को नहीं ..झे । मैंने कालिमा का ज़िक्र इसलिये नहीं किया कि आप यह समझें कि मैं जेल या मृत्यु से डरती हूँ। मेरे लिये मृत्यु या जेल का कोई मूल्य नहीं ?"

"तब मैं आपकी बात को नहीं समझ सका ?"

अविश्वास की हँसी हँसते हुए ग्लैडी ने कहा—"या मैं यह समझूँ कि आप न समझने का बहाना करते हैं ?"

"नहीं ! मैं असत्य नहीं कहता, मैं आपको नहीं समझ पाता।" फ़ैल्टन ने दृढता से कहा।

ग्लैडी ने आश्चर्य का भाव धारण करके पूछा—"क्या ! क्या आप लार्ड विंटर के षड्यंत्र से अनभिज्ञ हैं, आपको अभी तक उसकी कूटनीति का पता नहीं है ?"

"षड्यंत्र कैसा ?"

"मेरे ख़िलाफ़।"

"मैं सर्वथा अनभिज्ञ हूँ।"

"यह मैं कैसे मान लूँ ? आप तो उसके विश्वस्त सेवक हैं, आप उसके भेदों से कैसे अपरिचित रह सकते हैं ?"

"मैडम ! विश्वास रखिये। मैं कभी झूठ नहीं बोलता।"

"यह संभव है उसने आप पर यह भेद प्रकट न किया हो ; परंतु वह अपने विश्वास-पात्र सेवकों से कभी कोई काम छिपाकर नहीं करता, आप अन्य साधनों से उसको जान गये होंगे ?"

"परंतु, मुझे किसी के भेद जानने की कभी जिज्ञासा ही नहीं होती। जब तक कोई बात मुझपर प्रकट न कर दी जाय, तब तक

मैं स्वयं उसको जानने का प्रयत्न नहीं करता, लार्ड विंटर ने जो कुछ आपके सामने कहा है, उसके अतिरिक्त मैं रत्ती भर भी नहीं जानता।"

सच्चाई के साथ अविश्वास प्रकट करते हुए म्लैडी ने चौंककर कहा—"तो क्या यथार्थ में आप उसके षड्यंत्र में सम्मिलित नहीं हैं? आप नहीं जानते कि वह मुझको संसार की सब वीभत्स पाशविक यातनायें देने पर तत्पर है?"

फ़ैल्टन ने पवित्र सरलता के भाव से कहा—"आप भूल करती हैं, लार्ड ऐसे जघन्य कृत्य का विचार भी नहीं कर सकते?"

म्लैडी ने चिल्लाकर कहा—"भूल आप करते हैं, उस दुष्ट के लिये कोई बात असंभव नहीं है।"

"आप दुष्ट किसे कहती हैं?"

'क्या इंगलैंड में इस नाम से पुकारे जाने योग्य अनेक व्यक्ति हैं?"

"आपका अभिप्राय शायद जार्ज विलियर्स से है?"

"हाँ! इसी को अंधविश्वासी, नास्तिक, देश के शत्रु, राजभक्त ड्यूक आव वकिंघम कहते हैं?"

फ़ैल्टन ने किंचित उत्तेजित होकर कहा—"ओह! उसपर परम-परमात्मा की दृष्टि पड़ गई है, उसके पापों का प्याला भर चुका है, शीघ्र ही उसको उचित दंड अवश्य मिलेगा।"

फ़ैल्टन ने केवल इंगलैंड की जनता के हृदय का सच्चा उद्गार प्रकट किया था, लोगों की दृष्टि में इंगलैंड का महामंत्री खटकता था। ड्यूक के दुर्धर्ष आचरण, निर्मम अत्याचार, विलासमयी व्यभिचार-प्रियता, तथा स्वार्थमूलक निष्ठुरता आदि नैतिक दुर्गुणों के कारण, लोग उससे ऊब उठे थे। कैथोलिक संप्रदाय के लोग उसको व्यभिचारी कह कर पुकारते थे, कट्टर धार्मिक उसे शैतान कहते थे। फ़ैल्टन की दृष्टि में ड्यूक अतीव दुराचारी था। म्लैडी के हृदय में फ़ैल्टन के इन शब्दों ने

असीम आह्लाद का संचार कर दिया। परंतु प्रसन्नता के भाव को छिपा कर वह बोली—"ओ ईश्वर! जब मैं आपसे यह प्रार्थना करती हूँ कि आप इस पुरुष के प्रति यथोचित व्यवहार करें, तो आप यह न समझें कि मैं अपने किसी स्वार्थ के कारण ऐसा करती हूँ। नहीं! नहीं! मेरा उद्देश्य महान है, मैं राष्ट्र के हित से प्रेरित होकर ही आपसे प्रार्थना करती हूँ। इस व्यक्ति ने हमारे राष्ट्र का सर्वनाश कर डाला है।"

फ़ैल्टन ने आश्चर्य से पूछा—"तो क्या आप ड्यूक को जानती हैं?"

"आह! संसार में ऐसा कौन है, जो उसको नहीं जानता और उसके अत्याचारों से परिचित नहीं है? मैं भी दुर्भाग्यवश उसको जानती हूँ।"

फ़ैल्टन का हृदय धड़कने लगा, वह अपनी निर्बलता अनुभव करने लगा। उसने सोचा कि यदि अधिक देर तक मैंने इस सुंदर बंदिनी के साथ बातचीत की, तो अपनी हृदयगत सरसता को छिपा न सकूँगा। अतः वह चलने के विचार से दरवाज़े की ओर बढ़ा; परंतु म्लैडी फुर्ती से आगे बढ़ गई और अत्यंत करुण शब्दों में कहने लगी—"आप जाते हैं! जाइये? परंतु मेरी याचना को स्वीकार कीजिये, इतनी दया कीजिये कि वह चाक़ू जिसको उस धूर्त ने मेरे पास एक क्षण भी नहीं रहने दिया, मुझे एक क्षण भर के लिये दे दीजिये, केवल एक क्षण के लिये। ईश्वर के लिये, इतना अवश्य कीजिये। मैं जन्म-जन्मांतर आपका उपकार मानूँगी। आपके कल्याण के लिये जगतनियंता से प्रार्थना करूँगी। संसार से विदा होते समय आपके दया भार को वहाँ ले जाऊँगी, जहाँ फ़रिश्ते बैठे भक्तों की बाट जोहा करते हैं, वहाँ आपकी कीर्ति-कौमुदी के गीत गाऊँगी। इस उपकार का बदला आपको ईश्वर देगा। आह! आप मुझपर अविश्वास करते हैं। आप समझते हैं कि मैं कहीं आपको इससे

हानि न पहुँचाऊँ। यह उस दुष्ट की धूर्तता है, वह चाहता है कि मैं सदा उसकी यंत्रणायें सहन करती रहूँ। वह नास्तिक है, ईश्वर-प्रेमी को घुला-घुलाकर मारना चाहता है। मैं ईश्वर की सौगंध खाकर कहती हूँ। आप मुझपर अविश्वास न कीजिये। मैं अपने ही दुःखों का अंत करना चाहती हूँ, एक दुखी अबला भला किसी को क्या हानि पहुँचायेगी ? यदि अब भी आपको अविश्वास है, तो द्वार बंद कर दीजिये और किसी अन्य साधन से चाकू मेरे पास पहुँचा दीजिये। मैं अत्यंत दुखी हूँ अब अधिक सहन नहीं कर सकती। इस दुखी आत्मा पर केवल एक क्षण के लिये दया कीजिये।" यह करुण विलाप फ़ैल्टन के अंतस्तल में प्रवेश कर गया, उसका हृदय भय और करुणा से कातर हो उठा। उसने कहा—"तो आप आत्म-हत्या करेंगी ?"

म्लेडी ने कहा—"मैं आपको अपना दुःख बतला चुकी। मैं निराश हूँ, जीवन से हताश हूँ, इसके अतिरिक्त अब मेरी रक्षा और कोई नहीं कर सकता। ईश्वर! ईश्वर! मैं आ रही हूँ। ओह मेरे सामने स्वर्ग के द्वार खुले हैं, मुझे वहाँ पहुँचा दो, मेरी जीवन-यात्रा समाप्त हो चुकी।"

फ़ैल्टन चुप था, उसके नेत्र आँसुओं से भर गये थे। उसका हृदय भीषण यंत्रणा का अनुभव कर रहा था। वह किंकर्तव्य-विमूढ़ था, ऐसी स्थिति उसके जीवन में केवल प्रथम बार आई थी। एक ओर मनुष्यता थी, दूसरी ओर कठोर कर्तव्य ; परंतु एक क्षण ही में उसने अपना मार्ग निश्चित कर लिया, यह मार्ग म्लैडी के अनुकूल था। म्लैडी की विजय हुई, लार्ड विंटर हार गया। कठोर नीति भावनावेश के प्रवाह में बह चली। बुद्धि ने हृदय के आगे पराजय स्वीकार कर ली। फ़ैल्टन चाहता ही था कि वह म्लैडी के आगे अपने हृदय का द्वार खोल दे कि इसी समय किसी की पद चाप उसके कान में

पड़ी। उसकी दृष्टि द्वार की ओर गई, लार्ड विंटर उस ओर आ रहा था। शीघ्र ही आँख बचाकर वह कमरे के बाहर होगया और बाहर जाकर टहलने लगा। आज उसका हृदय शांत था, मन की व्याकुलता नष्ट हो गई थी। उसने वीरता से लार्ड विंटर का सामना करने का निश्चय कर लिया था; परंतु अभी वह अपनी कार्य-विधि को उससे गुप्त ही रखकर अपने नवीन मार्ग का अनुसरण करना चाहता था; परंतु एक बात उसके मन में खटक रही थी, वह रह-रहकर सोचता था कि मैं म्लैडी के पिछले जीवन की घटनाओं से अनभिज्ञ हूँ, संभव है लार्ड विंटर उसे जो यातनायें दे रहा है, वे उसके गुप्त कृत्यों के सर्वथा उचित हों। म्लैडी या तो पूर्ण राक्षसी हो सकती है या पूर्ण देवी। वह जिस पथ का पथिक बनने जा रहा है, वह उसको किसी कंटकाकीर्ण बनमें तो ले जाकर न डाल दे, वह ऐसा कार्य न कर बैठे, जिससे उसके जीवन की शांति सदा के लिये भंग हो जावे। वह प्रकाश की आशा से अनंत अंधकार में तो प्रवेश नहीं कर रहा, ये विचार उसके मन में बार-बार उठते थे, जो उसकी कर्तव्य स्थिरता से उत्पन्न हुई शांति को क्षण भर के लिये नष्ट कर देते थे। एक ओर ये विचार थे; किंतु दूसरी ओर म्लैडी के सौंदर्य की पवित्र किरणें, उसके दिव्य स्वरूप की अलौकिक छटा, प्रगाढ़ भक्ति रस में उसकी अद्‌भुत तल्लीनता, फ़ैल्टन के मनोमंदिर में श्रद्धा और विश्वास की तरंगें उठा रही थी। इनके प्रवाह में बहकर वह अपने संदेह को अपने निर्बल हृदय की निर्मूल कल्पना समझने लगता था। बहुत सोच-विचार करने पर उसने अंत में यह उपाय सोचा कि म्लैडी के ही मुख से उसकी आत्म-कथा को सुन लिया जाय और तब तक वह अपने निर्णय को गुप्त रक्खे, म्लैडी यह न जानने पावे कि वह उसी के पक्ष में अपना मत स्थिर कर चुका है।

४३

दूसरे दिन जब फ़ैल्टन ने ग्लैडी के कमरे में प्रवेश किया, तो ग्लैडी ध्यानमग्न होकर नेत्र बंद किये हुए शांति के साथ धीरे-धीरे अत्यंत कोमल स्वर में एक रस-पूर्ण सुंदर करुण गीत गा रही थी—

उस मधुर गीत में अनंत व्यथा का गुप्त-क्रंदन अंतर्हित था, उसके प्रत्येक शब्द से निर्मम अत्याचार की झंकार उठ रही थी, मानो कोई व्यक्ति अपनी नई उमंगों को, जीवन की समस्त सुखद आशाओं को प्रेमी की एक झाँकी पर संसार के सब बंधन त्यागकर न्योछावर कर रहा हो; परंतु जब सब कुछ त्यागकर भी उसकी मधुर आशा, निराशा में परिणित होजाय, तब जिस विकलता और मार्मिक यंत्रणा का अनुभव उसको होता है, उसी दुःख की धारा ग्लैडी के इस गीत से प्रवाहित हो रही है।

फ़ैल्टन एक मार्मिक व्यथा का अनुभव करने लगा, उसने आगे बढ़कर कहा—"बंदिनी! तुम देवी हो या दानवी? क्या इस पहेली का उत्तर दोगी? मुझे समझाओ! यह दुःख-पूर्ण गीत तुम क्यों गाती हो?"

म्लैडी ने देखा—उसका तीर निशाने पर बैठ गया, वह अत्यंत प्रसन्न हुई। उसने सिर उठाकर सरलता से कहा—"फ़ैल्टन! क्या तुम मुझको नहीं जानते? न मैं देवी हूँ न दानवी? मैं इस संसार की अत्यंत साधारण दुःखनी अबला हूँ? रहस्य की दुर्गमता मुझमें नहीं है। मेरा प्रेमी ईश्वर है?"

"ओह! मैं जानता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ। अबतक मैं भ्रम में था, वह भ्रम आज मिट गया।"

"तुम विश्वास करते हो? नहीं? मुझको भ्रम में नहीं डाल सकते, मैं कैसे समझूँ कि तुम विश्वास करते हो?"

म्लैडी ने किंचित् उत्तेजित होकर कहा—"फ़ैल्टन? यदि तुम विश्वास करते होते, तो क्या लॉर्ड विंटर की कूट-नीति में सहायक हो सकते थे? उसकी अत्याचार-मूलक नीति का समर्थन करते? मैं बंदिनी हूँ, अगणित बाधाओं से घिरी हूँ, देश-द्रोही, इंगलैंड के शत्रुओं के चंगुल में हूँ, नास्तिक और धर्म-विरोधियों के कुचक्र का शिकार हूँ। यह सब देखकर भी तुम्हारा हृदय पत्थर बना रह सकता था? उस दुष्ट दुराचारी बकिंघम की घृणित नीचताओं के फंदे में पड़ी देखकर, क्या तुम्हारा हृदय पसीज न उठता? नहीं! नहीं! मैं विश्वास नहीं कर सकती? तुम व्यंग्य कर रहे हो?"

फ़ैल्टन अधिक दुराव न कर सका, उसने कहा—"यह तुम क्या कह रही हो? मैं व्यंग्य कर रहा हूँ? यह असंभव है, कम-से-कम उस हृदय के लिये असंभव है, जो तुम्हारी व्यथा को जान चुका है, तुम्हारे अंतरंग का निरंतर अध्ययन करके तुम्हारी भक्ति का जो सच्चा उपासक बन चुका है?"

म्लैडी के शरीर में हर्ष की बिजली दौड़ गई। उसे इतनी शीघ्र सफलता की आशा न थी। उसके नेत्र चमक उठे; परंतु आनंद के भावों को छिपाकर वह हताश की भाँति बोली—"परंतु

अब यह सब व्यर्थ है ! फ़ैल्टन ! अब भला तुम मेरे लिये सकते हो ? नष्ट-प्राण व्यक्ति में प्राण का संचार नहीं किया जा सकता मैं संसार के सब दृश्य देख चुकी, मेरे हृदय में अब कोई अभिलाषा बाक़ी नहीं, जीवन का द्वार मेरे लिये बंद है, मैं आशा और निराशा की उस सीमा को पार कर चुकी, जहाँ जीवन और मृत्यु का तुमुल-युद्ध होता है, जहाँ सुख और दुःख में अंतर माना जाता है, पाप और पुण्य की जहाँ विशद विवेचना होती है । मृत्यु की शीतल छाया आश्रय प्रदान करेगी, उसी शीतल अंक में मैं अनंत की शांत झाँकी का दर्शन करूँगी, मर्त्य-लोक की पार्थिव यंत्रणाओं से मुक्त होकर अनंत आनंद की विश्रामस्थली में प्रयाण करूँगी—वहाँ न लालसा होगी और न कोई अभिलाषा । स्नेह, घृणा के बंधनों से वह स्थान मुक्त है, अत्याचार और प्रतिहिंसा की दारुण लपटों की ज्वाला का वहाँ नाम नहीं ! वहाँ अनंत शांति है, अनंत विश्राम है और है अनंत प्रेम । म्लैडी के स्वर में अद्‌भुत चमत्कार था, इस समय वह सौंदर्य, नम्रता और अश्रुपात की त्रिवेणी की मूर्ति बनी थी, विलास, पवित्रता और करुणा की धारायें, उसके शब्दों में, उसकी वाणी में और उसके अनिंद्य स्वरूप में स्पष्ट रूप से प्रतिलक्षित हो रही थीं । उसकी चकाचौंध में फ़ैल्टन की आँखें मुँद गईं, उसका हृदय उमड़ आया, शरीर रोमांचित हो उठा । उसने काँपते हुए स्वर में कहा—"बंदिनी ! तुम जीवित रहने के लिये बनाई गई हो, मरने के लिये नहीं । आत्म-हत्या संसार का घोरतम पाप है, परमात्मा आत्म-हनन करनेवाले व्यक्ति से कभी प्रसन्न नहीं हो सकता । यदि तुम निर्दोष हो, तुम्हारा अतीत उन सब कलंकों से मुक्त है, जो लार्ड विंटर द्वारा तुम पर आरोपित किये गये हैं, तब तुम अवश्य जियो । मैं तुम्हारी सहायता सब प्रकार करने के लिये तत्पर हूँ । मैं प्रयत्न करूँगा कि संसार में तुम निष्कलंक प्रमाणित हो । मैं कई दिनों से यह अनुभव कर रहा

मेरा हृदय तुम्हारी ओर धीरे-धीरे खिंच रहा है। मैंने संसार में आज तक सिवाय अपने अंग-रक्षक के अन्य किसी से कभी प्रेम नहीं किया; किंतु मैं नहीं समझ पाता कि मेरा हृदय तुम्हारी ओर क्यों खिंच रहा हैं? तुम इतनी सुंदर हो, इतनी पवित्र हो और इतनी धर्म-परायण हो फिर भी लार्ड विंटर तुम्हारे ऊपर भीषण अपराध आरोपित करता है, इसका क्या कोई यथार्थ कारण है? यह आरोपण सर्वथा निर्मूल है, क्या इसका कोई प्रमाण तुम्हारे पास है? यदि प्रमाण है, तो इतनी कृपा करो कि मुझे बतला दो, जिससे मेरे हृदय का अंतिम संदेह नष्ट हो जावे।"

फ़ैल्टन की यह सरल जिज्ञासा म्लैडी की गौरव-पूर्ण विजय थी। उसने अपनी कार्य-कुशलता से फ़ैल्टन के हृदय में जिस जिज्ञासा का उद्रेक किया था, उसके अभिसंधान किस भाँति करना चाहिए यह सब वह पहले ही सोच चुकी थी। अपने अतीत जीवन की भयंकरता को छिपाकर, उसको विभिन्न मनोमुग्धकारी रंगों से चित्रित करके उस पर अद्भुत करुणा की पुट वह पहले ही से दे चुकी थी। अभीष्ट भावों को उत्तेजित करने के लिये किन-किन घटनाओं की सृष्टि करनी चाहिए, इसको वह पहले ही सोच चुकी थी। म्लैडी ने मनमोहक घटनाओं की वह मधुर श्रृंखला तैयार की थी, जिसको सुनकर फ़ैल्टन की संपूर्ण करुणा सिमट कर म्लैडी को मुक्त करने की चेष्टा में शीघ्र परिणत होजावे। इसी कारण फ़ैल्टन के बचनों को सुनकर म्लैडी ने दुःखपूर्ण अनुभूति के साथ कहा—

"हा! उनके नेत्र हैं; किंतु वे देखते नहीं, उनके कान हैं, परंतु वे सुनते नहीं, यथार्थ स्थिति से वे अनभिज्ञ हैं? किंतु मैं जिस बात को टालना चाहती थी, वह अभी तक पूर्ववत् बनी है। अपने जीवन के रहस्य को मैंने आज तक किसी से नहीं कहा, उसको सदा मैने स्त्री के प्रेम के समान गोपनीय रक्खा। अब तक मुझे एक

भी ऐसा व्यक्ति नहीं मिला, जिसके आगे मैं अपना हृदय खोलकर रख देती। मेरा जीवन निष्ठुरता के वातावरण में बीता है। क्रूर हृदय पुरुषों के सामने मैं उसको नहीं कह सकती। इसी कारण अब तक जिसको मैंने छिपाया है, उसे जीवन भर छिपाने का निर्णय मैं कर चुकी हूँ। फ़ैल्टन! क्या तुम उसे सुनना चाहते हो? क्या तुम यह सुनना चाहते हो कि मैं अपनी लज्जा की बात स्वयं तुमसे कहूँ? आह! यह असंभव है, मेरे लिये वह लज्जाप्रद घटना है, ऐसा होता है कि एक व्यक्ति के लिये जो लज्जाप्रद है, दूसरे की दृष्टि में वही पाप है। मैं स्त्री हूँ, तुम पुरुष हो? तुम चाहते हो कि स्त्री पुरुष के सामने अपनी पाप-कथा कहे? कदापि नहीं? यह असंभव है! असंभव है! आह! कभी नहीं। मैं कभी नहीं कह सकती।" यह कहते हुए म्लैडी ने अपनी आँखों पर दोनों हाथ रख लिये।

फ़ैल्टन ने कहा—"तुम मेरी धर्म-भगिनी हो, मैं तुम्हारा धर्म-भ्राता हूँ। मेरे सामने कहो। मेरे और तुम्हारे बीच में लज्जा का अब व्यवहार नहीं रहना चाहिए।"

म्लैडी अभी तक नीची दृष्टि किये संकोच और लज्जा के भार से दबी हुई सी खड़ी थी। फ़ैल्टन के इन शब्दों को सुनकर उससे न रहा गया। उसने गर्दन उठाकर एक प्रेममयी दृष्टि फ़ैल्टन के चेहरे पर डाली, वह क्षण भर एकटक देखती रही। लार्ड विंटर के ये शब्द उसके कान में अभी तक गूँज रहे थे कि फ़ैल्टन पाषाण की मूक-प्रतिमा है, इसपर तेरा कोई जादू असर नहीं कर सकता। इस समय म्लैडी यही देख रही थी कि फ़ैल्टन का अब कोई अंश ऐसा तो शेष नहीं रह गया, जो पूर्णतया द्रवित न हो चुका हो। फ़ैल्टन के चेहरे से करुणा और पवित्रता, बरस रही थी। म्लैडी ने देखा कि फ़ैल्टन अब अपना है उसकी कठोरता मेरी मायाविनी दृष्टि से पूर्णतया नष्ट हो चुकी है, अब उसकी छाया भी शेष

नहीं है। उसने संतोष की साँस ली और कहने के लिये मुँह खोला; परंतु सहसा वह रुक गई। उसके कान में विंटर के जूते का शब्द पड़ा। फ़ैल्टन भी चौंक पड़ा। ग्लैडी का उत्तर बिना सुने ही वह शीघ्र कमरे से बाहर होगया। जिससे लार्ड विंटर को उनके षड्यंत्र की हवा न मिल सके। चलते समय फ़ैल्टन धीरे से ग्लैडी से यह कहता गया कि मैं बारह बजे रात के बाद, तुम्हारी आत्म-कहानी आकर सुनूँगा।

४४

अर्ध रात्रि का समय था, बंदिनी ग्लैडी के प्रासाद में गंभीर नीरवता छाई हुई थी, कभी-कभी संतरियों के शब्द निस्तब्धता को भंग कर देते थे। ग्लैडी बेचैनी के साथ फ़ैल्टन की प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसके स्वागत के लिये सब प्रकार तैयार थी। उसने दूसरे दिन के लिये अपना कार्य-क्रम निश्चित कर लिया था। वह जानती थी कि अब उसके लिये केवल दो ही दिन शेष हैं, इसके बाद वह उस टापू में पहुँचा दी जायगी, जहाँ रहकर वह संसार से सदा के लिये पृथक् हो जायगी। तीसरे दिन प्रातः-काल यदि वह विंटर के बंधनों से मुक्त न हो सकी, तो वह उसके सर्वनाश का प्रातःकाल होगा। निर्वासित स्त्रियाँ सौंदर्य के उस चमत्कार को खो बैठती हैं, जिनके द्वारा सतीत्व के आवरण से ढकी हुई स्वतंत्र विलासिनी रमणियाँ सहज ही पुरुष-हृदय पर विजय प्राप्त कर लेती हैं। संसार का स्वतंत्र प्रकाश उनके सौंदर्य में मधुर आकर्षण उत्पन्न कर देता है। समाज का प्रचलित फ़ैशन उनके स्वर को वीणा-

.क बना देता है। ऐश्वर्यमय विलास उनकी रूप-माधुरी में माद-.ता की सृष्टि करता है।

ग्लैडी का स्वभाव अमीराना था, ऐश्वर्य और विलास उसके जीवन के अनिवार्य तत्व थे, वह रानियों की तरह रहती आई थी और रानियों ही की भाँति रह सकती थी। प्रभुत्व और गौरव उसके स्वभाव का अंग बन गये थे। उच्च कुलीन पुरुषों के हृदयों पर शासन करना ही उसके जीवन का चरम लक्ष्य था। लार्डों और महामंत्रियों की अग्रणी सत्ता उसके उपभोग की आवश्यक सम्पत्ति थी। बंदी-जीवन ने ग्लैडी को उसकी प्रकृति स्थिति से पृथक् करना चाहा था। जिससे वह कभी भिन्न नहीं हुई, लार्ड विंटर के कुचक्र से, उसी से वह सदा पृथक् की जायगी, इस भीषण स्थिति की कल्पना से ही ग्लैडी का हृदय काँप उठा।

परंतु ग्लैडी साधारण हृदय की स्त्री नहीं थी। उसमें अद्भुत बल था। जहाँ वह देखती थी कि उसके सौंदर्य की प्रखर रश्मियाँ शीतल पड़ जायँगी, वहाँ वह अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से मनोरम माया की रचना कर सकती थी। उसको विश्वास था कि उसका शत्रु माया के स्निग्ध चमत्कार को निष्फल नहीं कर सकता। फ़ेल्टन, जिसको लार्ड विंटर ने पाषाण की शुष्क-मूर्त्ति समझा था और जिसकी निर्दय प्रवृत्तियों को देखकर वह स्वयं क्षण भर के लिये व्यग्र हो गई थी, जिस प्रकार वह उसकी माया के तारों में फँस गया था, उसको अनुभव करके ग्लैडी को अपनी सफलता पर विश्वास होने लगा था, स्वतंत्र संसार के मनोहर दृश्य उसके नेत्रों के आगे झूलने लगे। वह अपने मुक्त जीवन के स्वछंद कार्यों का प्रभाव कल्पना-जगत् में प्रत्यक्ष देखने लगी। लार्ड विंटर, बकिंघम और आर्तगान से किस ढंग से बदला लेगी, इसकी मान-सिक अनुभूति से उसका हृदय उछल पड़ा। प्रबल प्रतिहिंसा की उन्मत्त भावनायें उसके काल्पनिक आनंद की तीव्रता को उत्तेजित करने लगीं।

रात धीरे-धीरे बीतती जाती थी, म्लैडी कभी हर्ष और कभी घृणा-पूर्ण तिरस्कार की दो विपरीत भावनाओं में बह रही थी कि सहसा एक का घंटा बजा, वह चौंक पड़ी। फ़ैल्टन अभी तक नहीं आया, क्या अज्ञात भविष्य के गर्भ से किसी अनिष्ट का तो प्रादुर्भाव नहीं हुआ। इस विचार से वह क्षुब्ध हो उठी; परंतु म्लैडी के भाग्य का सितारा चमक रहा था। सहसा उसे कुछ आहट मालूम हुई, उसके कान में फ़ैल्टन का स्वर सुनाई दिया। उसने सुना फ़ैल्टन संतरी से यह कह रहा था—"इस स्थान पर पूरी चौकसी रखना, मैं बंदिनी के पास जा रहा हूँ, मुझे भय है कि कहीं वह आत्म-हत्या न कर ले। इस लिये मुझे उस पर काफ़ी निगरानी रखनी पड़ती है।"

संतरी ने कहा—"बहुत अच्छा, आप निश्चिंत रहिये, मैं अपने कर्तव्य पर दत्तचित्त रहूँगा।"

फ़ैल्टन वहाँ से चल पड़ा; परंतु फिर लौटकर कहा—"यदि मैं पुकारूँ, तो तुम फ़ौरन चले आना और यदि कोई अन्य व्यक्ति यहाँ आये, तो मुझे सूचना दे देना।"

म्लैडी यह अनुभव करके अत्यंत प्रसन्न हुई कि फ़ैल्टन ने अपनी इस गुप्त भेंट को छिपाने के लिये कितना यत्न-किया है। उसकी उत्सुक दृष्टि द्वार पर जा लगी, फ़ैल्टन ने कमरे में प्रवेश किया। म्लैडी स्वागत के लिये उठ खड़ी हुई। उसने हँसते हुए कहा—"तुम आ गये? क्या मुझे अपनी आत्म-कथा आज कहनी ही पड़ेगी?"

"अवश्य! मेरे आने का उद्देश्य ही यह है। मुझे हर्ष है कि मेरा अनुरोध मान लिया गया, मैं अत्यंत व्यग्रता से उत्सुक हूँ।"

म्लैडी स्वयं कुर्सी पर बैठ गई और फ़ैल्टन को भी एक कुर्सी पर बैठने का संकेत किया। तब म्लैडी ने कहा—"तुम्हारे हृदय की सच्चाई से विवश होकर, आज मैं यह पहली-बार स्वयं अपने मुख से

अपनी जीवन-कथा कह रही हूँ। मेरा पिछला जीवन उस भूल का प्रत्यक्ष उदाहरण है, जो कि मनुष्य से केवल एक-बार हो जाती है; परंतु जिसके कारण संसार उसको जीवन पर्यंत के लिये कलंकित कहकर उसका त्याग कर देता है। मेरी कथा सुनकर तुमको घृणा होगी, दुःख होगा और दया उत्पन्न होगी। इसका निर्णय मैं तुम पर छोड़ती हूँ कि जिन यंत्रणाओं और विपदाओं से मैं घिरी रही हूँ, उनका उत्तरदायित्व किस व्यक्ति पर है? ध्यान देकर सुनना, इस अबला की कहानी अत्याचार और शोक की कहानी है।"

यह कहकर म्लैडी एक क्षण के लिये रुक गई। इसके बाद उसने कहना प्रारंभ किया। फ़ैल्टन के उत्सुक श्रोत्र म्लैडी के एक-एक शब्द का पान बड़ी आतुरता के साथ कर रहे थे। म्लैडी ने गंभीर होकर कहा—"बचपन में मैं अत्यंत सुंदरी थी। किशोरावस्था के व्यतीत होते ही अपने इस रूप के कारण मैं दुर्भाग्य से एक दुष्ट के षड्यंत्र का शिकार बन गई। मैंने प्रतिरोध किया, मैं चारों ओर से अत्याचार, विपत्ति और प्रवंचना से घिर गई; परंतु मैंने सबका वीरता से सामना किया। जिस धर्म का संचार मेरी रग में हो रहा था और जिस इष्ट देवता की भक्ति में मैं ओत-प्रोत रहती थी, उन दोनों ने मुझ असहाय अबला से मुँह मोड़ लिया, तिसपर भी मैंने प्रबल अवरोध किया। क्रूर नृशंसता के दारुण शिकंजे में मैं फँस गई थी, पैशाचिक उद्दंडता ने मुझपर भीषण आक्रमण किया था, दुष्ट शत्रु जानते थे कि संसार के सब अपरिहार्य प्रलोभनों को मैंने ठुकरा दिया था, मेरी आत्मा पवित्र थी, अकलंकित थी, अंतस्थल की पवित्रता उनके कलुषित स्पर्श के परे थी। इसीलिये, फ़ैल्टन! उन्होंने मेरे शरीर को सदा के लिये भ्रष्ट कर देना चाहा। फ़ैल्टन! संसार की अमानुषिक दुष्टता ने मेरे मानवीय अंग को कलुषित करना चाहा, पार्थिव अनाचार ने मेरे स्वर्गीय सतीत्व पर कलंक-कालिमा पोतना

चाहता था ; परंतु फ़ैल्टन ! फ़ैल्टन ! मैंने प्रतिरोध किया, अपनी शक्ति भर प्रतिरोध किया, नहीं ! नहीं ! अपनी शक्ति से अधिक, उस शक्ति से अधिक जो ईश्वर ने संसार की प्रबलतम आत्मा को प्रदान की है, मैंने प्रबल प्रतिरोध किया ; परंतु अंत में······ ।"

म्लैडी रुक गई, उसके सलज्ज नेत्र पृथ्वी पर झुक गये। "अंत में," फ़ैल्टन ने आतुरता से पूछा—"अच्छा, तब अंत में क्या हुआ ?"

"अंत में, एक रात्रि को, उस दुष्ट ने मेरी उस अवरोध-शक्ति को, जिस पर वह विजय नहीं पा सका था, अवसन्न करने का निश्चय किया। मेरे शरीर को संस्तंभित करके उस निर्लज्ज, दुष्ट-चरित्र ने अपनी पाशविक विषयासक्ति को संतुष्ट करना चाहा। एक रात्रि को उसने मेरे जल-पात्र में शरीर को जड़ बना देनेवाली औषधि को मेरी आँख बचाकर डाल दिया। फ़ैल्टन ! मैं उसके कूट प्रपंच से अनभिज्ञ थी, मैंने उस जल-पात्र को ओठों से लगा लिया और उस जल को पी गई। एक क्षण के बाद ही मैंने एक विचित्र परिवर्तन का अनुभव किया, मेरा शिर घूमने लगा, टाँगें सुन्न पड़ती जाती थीं, मेरी सारी शक्ति धीरे-धीरे घट रही थी, समस्त शरीर शनैः-शनैः जड़ होता जाता था, नेत्रों के आगे अँधेरा छा रहा था, तीव्र निद्रा मेरे शरीर, मेरे नेत्र और मेरी समस्त इंद्रियों पर प्रबल आक्रमण कर रही थी। मुझे मालूम हुआ कि मैं प्रकाश से घने अंधकार की गहरी गुफ़ा में चली जा रही हूँ। यद्यपि मैं शत्रुओं के कुचक्र से अनभिज्ञ थी, तथापि एक अज्ञात भय ने मेरे मन में प्रवेश किया, भावी अमंगल ने अपने आगमन की अशुभ सूचना दी। फ़ैल्टन ! मैंने उस जड़ता का सामना किया, उस निद्रा का घोर प्रतिरोध किया, पूरी शक्ति लगाकर नेत्रों को खोला, उठ खड़ी हुई। मैंने चाहा कि खिड़की तक पहुँचकर सहायता के लिये चिल्लाऊँ ; परंतु मेरी टाँगों ने जवाब दे दिया, मुझे मालूम होता था कि कमरे की छत अपने सारे बोझ के साथ मेरे

शिर पर आ गिरी है, मैं उसी के बोझ से कुचली जा रही हूँ ; परंतु तिस पर भी फ़ैल्टन ! मैंने प्रतिरोध किया और प्रबल प्रतिरोध किया। मैंने हाथ फैला दिये। मैने ईश्वर से प्रार्थना करना चाहा ; परंतु मालूम होता था कि कोई मेरा गला दबाये है, मैंने चीखना चाहा ; परंतु असमर्थ रही। ईश्वर की बंदना करने के लिये मैं घुटनों के बल पृथ्वी पर झुक गई ; परंतु हाय ! ईश्वर, परम पवित्र पिता ! इस जघन्य पाप-लीला से शायद अनभिज्ञ था। मेरे सब प्रयत्न निष्फल हुए। मैं भूमि पर गिर पड़ी, भीषण मृतप्राय, अचेतन अवस्था में समा गई। फ़ैल्टन ! मैं विवश थी, दुर्बृत्त के अपरिहार्य बोझ के तले दब गई। ज़बरदस्ती के निरंकुश चंगुल में फँस गई। मेरे ऊपर ज़ुल्म किया गया। मैं असमर्थ हो गई। ईश्वर की यही इच्छा थी, विधि का यही विधान था।"

ग्लैडी के नेत्रों से आँसू बह रहे थे, उसका गला रूँध आया था। कुछ क्षण रुककर उसने कहा—"कितने समय तक मैं अचेत रही और उस अचेतनावस्था में मेरे साथ क्या किया गया ? इसकी मुझे किंचिमात्र भी स्मृति नहीं। मुझे नहीं याद कि निद्रितावस्था में क्या-क्या घटनायें घटीं। मुझे केवल इतना ही याद है कि जब मैं होश में आई, तो मैंने अपने आपको एक गोल अत्यंत रमणीक कमरे में एक बिस्तरे पर पड़े पाया। यह कमरा विलासिता का क्रीड़ा-भवन मालूम होता था, ऐश्वर्य की समस्त आवश्यक सामग्रियों से वह सुसज्जित था। उसकी हवा में विचित्र सुगंध मिली थी। कमरे की दीवारों में वीभत्स विषयाशक्ति को उत्तेजित करनेवाले नग्न रमणियों के चित्र टँगे थे। कमरे की कुर्सियों और मेज़ों पर कामोद्दीपक दृश्य खचित थे। कमरे के इस स्वरूप पर दृष्टि पड़ते ही मेरा शरीर काँप उठा, हृदय धड़कने लगा, भय और संकोच से मेरे नेत्र बंद हो गये। हाय ! क्या मेरे धर्मानुराग का, ईश्वर-भक्ति का, पवित्र प्रवृत्तियों

का यही प्रतिफल था? उस नारकीय स्थान से भाग निकलने के लिये मैंने द्वार की खोज की; परंतु कमरे में द्वार का चिन्ह तक न था। प्रत्येक ओर से राग-रंजित दीवारें उसको घेरे थीं, ऊपर छत के पास कुछ झरोखों को छोड़कर वायु को प्रवेश करने के लिये भी कोई अन्य मार्ग न था। मैं किसी तिलिस्म में बंद हूँ या किसी दानव की माया का शिकार हूँ? यह धारणा होते ही मेरा चित्त घबड़ा उठा, शरीर से पसीना छूटने लगा।"

"मैं जब काँपती हुई बिस्तरे से उठी, तो मैंने देखा कि मेरे वस्त्र पास ही एक कुर्सी पर रक्खे हुए थे। मुझे यह याद नहीं पड़ता कि मैंने अपने वस्त्र कब उतारे और कब बिस्तरे पर आई? मुझे यह सब स्वप्न प्रतीत होता था। मेरे अंग-अंग में दर्द हो रहा था, शरीर में एक विचित्र निर्बलता मालूम होती थी, आलस्य के कारण बार-बार अंगड़ाइयाँ आती थीं। इन अद्भुत व्यापारों को देखकर मेरे हृदय में संकोच और भय का उद्रेक हुआ। मेरे मनमें एक अपवित्र भावना उदय हुई। सारा शरीर भीषण आतंक से काँप उठा; परंतु तब भी मैंने अपने ईश्वर पर विश्वास किया, हाय! क्या मालूम था कि उस समय ईश्वर भी मुझसे विमुख हो गया था।"

"मैंने जितना शीघ्र हो सका, उतना शीघ्र अपने कपड़े पहने। तीन-चार बार कमरे का चक्कर लगाया; परंतु बाहर जाने को किसी मार्ग का चिन्ह तक न मिल सका। श्रांत और हताश होकर एक कुर्सी पर बैठ गई। मैं समझ गई कि मैं किसी कारागार में हूँ, यह कारागार किसी पुरुष का विलास-भवन है, जहाँ पर वह संसार के पवित्र सतीत्व को कलंकित करता है। हाय! न मालूम कितनी अज्ञात कुमारियाँ, सतवंती रमणियाँ, कुलशीला वधुयें उस ऐश्वर्य-गृह में भ्रष्ट हो चुकी होंगी!"

"झरोखों से हल्का प्रकाश छन-छनकर आ रहा था, प्रातःकालीन

समीरण के झोंके इन मार्गों से आकर मुझ बंदिनी को स्वतंत्रता का संदेश सुनाने लगे। दिनकर की किरणों ने सूचना दी कि संसार की कालिमा सब सिमट कर इसी स्थान पर एकत्रित हुई है। बाहर जिस स्वतंत्र प्रकाश का साम्राज्य है, वहाँ की किरणें लुक-छिपकर ही इस कालिमामय राज्य में प्रवेश कर सकती हैं। प्रकाश की छाया से मैंने अनुमान किया कि उस समय लगभग ९-१० बजे का समय था। मैं लगातार चौबीस घंटे तक निद्रितावस्था में रही।"

धीरे-धीरे दिन बीत गया, अंधकारमयी रात्रि ने कमरे में प्रवेश किया। मै दिन भर अकेली कमरे में पड़ी रही. जब अच्छी प्रकार रात हो गई, तब सहसा द्वार खुलने का शब्द सुनकर मैं चौंक पड़ी। छत की ओर से कमरे में तेज़ रोशनी आकर फैल गई, उस रोशनी में मैंने देखा कि कुछ क़दम के फ़ासले पर एक पुरुष खड़ा है। मैं अत्यंत भयभीत होकर, चीख़ मारकर पीछे हट गई।"

"यह व्यक्ति वही था, जो साल भर से मेरा पीछा कर रहा था। इसने मुझे अपमानित और कलंकित करने का बीड़ा उठाया था; क्योंकि मैंने इसकी प्रेमाभ्यर्थना के घृणा के साथ ठुकरा दिया था। मेरे चीत्कार पर वह हँस पड़ा और कहा—"प्रेयसी! अब क्यों घृणा करती हो? कल रात को मैं अपनी मनोभिलाषा पूरी कर चुका। आह! फ़ैल्टन! उस समय की अपनी अवस्था को मैं बयान नहीं कर सकती। मेरा शरीर काँप उठा, हृदय की धड़कन बंद-सी हो गई। मैं गिर पड़ी। समस्त शरीर पसीने से तर हो गया, मैं अपने शरीर से घृणा करने लगी। मैं चाहती थी कि पृथ्वी फट जाय और मैं समा जाऊँ। हाय! ईश्वर ने मुझे इतना रूप क्यों दिया? और यदि दिया था, तो मुझे विलासिनी क्यों न बनाया? अपने भक्त के साथ इतनी निष्ठुरता!"

ग्लैडी शोक से अधीर होकर चुप हो गई। उसके मुँह से बोल

न फूट सका। फ़ैल्टन के हृदय पर इसका बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। इस पाशविक अत्याचार ने उसके क्रोध को उत्तेजित कर दिया। फ़ैल्टन का चेहरा लाल हो उठा, वह बोला—"अधम ! पापी !"

म्लैडी ने सहारा पाकर कहा—"आह ! फ़ैल्टन ! वह पापी है ! अधम है ! वह समझा कि स्वप्नावस्था में मुझ पर विजय पाकर वह मेरे हृदय पर भी विजय पा लेगा, शरीर को कलुषित करके वह मेरी आत्मा पर भी अधिकार कर लेगा। उसको विश्वास था कि मैं उसकी अभ्यर्थना को स्वीकार कर लूँगी ; परंतु आह ! बलात्कार की भावना ने मेरे हृदय की समस्त संचित घृणा को उभाड़ दिया। रोष और संताप ने मेरे हृदय में अज्ञात साहस को उपजा दिया। एक अबला स्त्री जितने भी घृणा और तिरस्कार के शब्द कह सकती है, वे सब मैंने कहे ; परंतु वह अधम इन शब्दों को सुनने का आदी था, वह धैर्य से मुस्कराता हुआ सब सुनता रहा। जब मैं चुप हो गई, तो वह मेरी तरफ़ बढ़ा, मैं पीछे की ओर हट गई, भोजन की मेज़ से तेज़ छुरी उठा ली और उसकी नोक अपनी छाती में लगाकर कहा—"यदि एक पग भी आगे बढ़ाया, तो तुम्हें मेरी मृतदेह ही मिलेगी।"

वह रुक गया, मेरी चेष्टा, आकृति और स्वर से अटल दृढ़ता की झलक देखकर, आगे बढ़ने का उसको साहस न हुआ। विकट अट्टहास करके कहा—"मोहनी ! तुम आत्म-हत्या करोगी ! नहीं ! मैं यह सहन नहीं कर सकता ! तुम्हारी ऐसी सुंदर रमणी को अपने हाथ से खो देने की मूर्खता मुझसे नहीं हो सकती। जिसको वर्षों परिश्रम के बाद पाया हो ; उसके सौंदर्य का उपभोग कुछ दिन तो और हो। अभी तुम्हारा पागलपन दूर नहीं हुआ है, इस नशे के उतरने की प्रतीक्षा करूँगा। अब मैं जाता हूँ। आगामी भेंट होने तक तुम्हारी उत्तेजना शांत हो जायगी, तब तक मस्तिष्क-विकार भी जाता रहेगा।

यह कहकर उसने एक सीटी बजाई, शीघ्र ही प्रकाश ऊपर जाकर ग़ायब हो गया। वह दुष्ट भी चला गया। मैं उस निर्जन कमरे के अंधकार में अकेली रह गई।

भय, घृणा, क्रोध और आत्मग्लानि के भाव एकबारगी मेरे हृदय में उठने लगे। मैं उस व्यक्ति के पंजे में थी, जिसको जीवन भर मैंने घृणा की दृष्टि से देखा, जो भीषण था, महापातकी और व्यभिचारी था; परंतु जिसके पास दुर्धर्ष बल था, असीम साहस था और जो कूटनीति की सब जघन्य चालों को जानता था। उसकी अद्भुत शक्ति का परिचय मैंने अपने नेत्रों से प्रत्यक्ष देख लिया।"

रोष के उद्वेग में फ़ैल्टन ने पूछा—"यह दुष्ट था कौन ?"

ग्लैडी ने इस प्रश्न की ओर ध्यान नहीं दिया। वह कहने लगी—"मैंने सारी रात कुर्सी में बैठे-बैठे बिता दी, यदि मैं सो गई, तो वह दुष्ट न मालूम किस समय आकर मुझे फिर भ्रष्ट कर दे, इसी चिंता से मेरी आँखों की नींद जाती रही। उस भीषण अंधकार में ज़रा-सा भी खटके का शब्द मेरे हृदय को कँपा देता था। भय-भीत हृदय से मैं रात भर जागती रही। उस रात को उस दुष्ट ने फिर नवीन आक्रमण नहीं किया। सुबह हुआ, सूर्य की रश्मियों ने जब कमरे में प्रकाश किया, तो मेरा भय कुछ दूर हुआ। दिन में उसकी धृष्टता की आशंका नहीं थी। रात भर जागने के कारण मेरी आँखें लाल पड़ गईं थीं, नींद उमड़ी पड़ती थी। मैं पलँग पर जाकर लेट गई; परंतु छुरी अब भी मेरे हाथ में थी। छुरी लिये हुए ही मैं पलँग पर पड़ते ही सो गई।

जब मैं सोकर उठी, तो दोपहर व्यतीत हो चुका था। ताज़ा खाना मेज़ पर बिछा था। दो रोज़ से मेरे पेट में अन्न का दाना तक न गया था। भूख बड़ी तेज़ी से लग रही थी। मैंने उठकर कुछ फल और रोटी के कुछ टुकड़े खाये। परंतु नींद लानेवाली औषधि के डर से जल के

ग्लास को नहीं छुआ। कमरे के एक कोने में एक दूसरा जल-पात्र रक्खा हुआ था, उससे लेकर थोड़ा पानी पिया।"

"दिन भर कोई नवीन घटना नहीं हुई।"

"रात्रि आई! कमरे में फिर भयानक अँधेरा छा गया। रात्रि को कुछ शुष्क फलों के अतिरिक्त मैंने कुछ न खाया और अपने उसी जल-पात्र से पानी पिया। परंतु उस समय मुझे उस पानी के स्वाद में कुछ अंतर मालूम हुआ, मुझे संदेह होने लगा कि उस दुष्ट ने शायद इस पानी में भी वही औषधि मिला दी है। इसी शंका से एक चुल्लू से अधिक मैंने पानी नहीं पिया। निस्संदेह उस दुष्ट ने मुझे उस जल-पात्र से पानी लेते हुए छिपकर देख लिया था; क्योंकि क्षण भर में ही मैं उस औषधि का प्रभाव अनुभव करने लगी। वही सुस्ती, वही चक्कर और वही सुन्नपन अपना प्रभाव दिखलाने लगा। परंतु मैंने थोड़ा-सा ही जल पिया था, इसी कारण मैं पूर्णरूप से अचेत नहीं हो सकी। अर्द्ध-निद्रित अवस्था में होने के कारण मैं नितांत ज्ञानशून्य न हुई थी; परंतु शरीर में इतनी शक्ति भी न थी कि भाग सकूँ अथवा अपनी रक्षा कर सकूँ। एक विचित्र सनसनाहट का मैं अनुभव करने लगी। मैंने अपने आपको खींचकर पलँग तक पहुँचने का प्रयत्न किया, जिससे मैं अपने जीवन की अवलम्ब छुरी को हस्तगत कर सकूँ; परंतु लड़खड़ाकर गिर पड़ी। आह! फ़ैल्टन अपनी निस्सहाय अवस्था को देखकर मेरा हृदय टूक-टूक हो गया, मैं निराश हो गई और भयभीत हृदय व शोक-विह्वल नेत्रों से अत्यंत कष्टकर प्रयत्नों द्वारा आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगी कि वह दुष्ट कुलांगार अवसर देखकर किधर से और कब आ रहा है?"

"ओह! सबसे अधिक भयानक बात यह थी कि मुझे कुछ-कुछ होश था, जो भीषण घटना गतरात्रि को मेरी अचेतनावस्था में हुई थी, वह अब प्रत्यक्ष मेरे अर्धप्रसुप्त नेत्रों के सामने होगी, मेरी शक्तियों को

अवसन्न करके वह दुष्ट मेरे जागते हुए, मेरे देखते हुए, मेरे अनुभव करते हुए अपनी कामना को पूर्ण करना चाहेगा। मेरे शरीर को स्पर्श करेगा। आह! यह सब मैं कैसे सहन कर सकूँगी? यह विचार मेरे हृदय को संताप की घोर ज्वाला में भस्म करने लगे। मैं मृत्यु की शांत गोद में आश्रय पाने के लिये आत्म-हत्या को श्रेयस्कर समझ कर दो हाथ की दूरी पर पड़े हुए तेज़ छुरे को उठाने के लिये फिर उठने का प्रयत्न करने लगी; परंतु घोर निर्बलता के कारण फिर भड़भड़ा कर गिर पड़ी, शरीर कई जगह चुटा गया। आह! फ़ैल्टन! यह समय मेरे जीवन का असीम दुःख का काल था, ये क्षण मेरे लिये असह्य यंत्रणा के क्षण थे, मैं पृथ्वी पर अर्द्ध-चेतन अवस्था में पड़ी हुई सब कुछ देख-सुन रही थी; परंतु कर कुछ नहीं सकती थी।"

"इसी समय कमरे की छत का गुप्त द्वार खटका, प्रकाश-पुंज से अंधकार की जमी हुई ठोस तहें तिरोहित हो गईं। उसी प्रकाश में मेरी कुछ बंद और कुछ खुली हुई आँखों के सामने वह पापी, वह मायावी दैत्य मुस्कराता हुआ खड़ा दिखाई दिया। उस पापी के घृणित चेहरे पर दृष्टि पड़ते ही मेरे हृदय में भय उत्पन्न होगया, शरीर काँप उठा, मस्तिष्क में चक्कर आने लगे। अपनी दयनीय अवस्था और जिसको सदा तिरस्कार किया उसकी अजेय शक्ति और अपने नेत्रों के सामने होनेवाले पापाचार की कल्पना ने जिस दुःख, शोक और भय की बढ़िया मेरे मन में उत्पन्न कर दी थी, उसी के तीक्ष्ण प्रवाह से अचेत होकर मैं उसी पिशाच की गोद में गिर पड़ी।"

"आह! वह पिशाच था कौन! उसका क्या नाम है?" फ़ैल्टन ने रोष के उद्वेग में चिल्लाकर कहा। म्लैडी यह देखकर आंतरिक आल्हाद का अनुभव कर रही थी कि उसके विस्तार-पूर्वक दिये हुए प्रभावोत्पादक वर्णन से फ़ैल्टन के हृदय में समवेदना व सहानुभूति

का दरिया उमड़ रहा है। फ़ैल्टन की सहानुभूति अभी तक ग्लैडी तक ही परिमित थी; परंतु अब ग्लैडी के शत्रुओं पर भी उसके हृदय में रोष और घृणा के भाव उत्पन्न होगये। यही नहीं उसके मन में प्रतिकार की लालसा भी जाग उठी थी। यह देखकर ग्लैडी के हर्ष का वारापार न रहा। फ़ैल्टन का करुण-स्रोत और भी उत्तेजित हो उठा, उसकी क्रोधाग्नि भीषण रूप से प्रज्वलित हो उठी, ग्लैडी का सत्याचरण, उसकी भक्ति-भावना, निष्कपट सरल सतीत्व फ़ैल्टन के हृदय में श्रद्धा, भक्ति और तल्लीनता के भावों को स्थिर रूप से अंकित कर दे इस अभिप्राय से फ़ैल्टन के प्रश्न को इस बार भी अनसुना करके ग्लैडी ने सरलता की हृदयवेधी अनुभूति के साथ कहा—"आह! फ़ैल्टन इस बार उस पापी की गोद में विगत रात्रि की भाँति नितांत चेतना रहित शरीर नहीं था। यह मैं बतला चुकी हूँ कि अबकी बार यद्यपि मुझमें इतनी सामर्थ्य न थी कि मैं अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्ति का पूर्ण रीति से प्रयोग कर सकती तथापि मुझे भय का ज्ञान नष्ट न हुआ था। मैंने अपनी शक्ति भर विरोध करने की चेष्टा की; परंतु एक अशक्त-अबला का विरोध कहाँ तक टिक सकता था। भय, शोक और निर्बलता के कारण मैं फिर अचेत हो गई। उस कुकर्मी को इस बार मूर्छित ग्लैडी मिली, गत रात्रि की भाँति निद्रित ग्लैडी नहीं मिली।"

फ़ैल्टन चुपचाप सुन रहा था, उसके हृदय की असीम वेदना चेहरे पर प्रकट हो रही थी, उसके मस्तक से पसीना बह रहा था।

"मैं कितनी देर तक बेहोश रही, यह मैं नहीं बतला सकती; परंतु जब मैं जागी, तब पहले-पहल जिस वस्तु की ओर मेरा ध्यान गया, वह छुरी थी। जीवन से मुझे घृणा हो गई थी, आत्म-हत्या का विचार मेरे मन में बार-बार उठ रहा था। परंतु ओह! फ़ैल्टन

जब छुरी मेरे हाथ में आ गई, तो एक भयंकर पाप मेरे हृदय में उठा। फ़ैल्टन ! मैंने सोच लिया है कि तुमसे झूठ न बोलूँगी, सब सच्ची बातें कहूँगी। अपनी निर्बलता, अपनी पाप-कथा भी कहूँगी। चाहे इसके लिये मुझे अपने ऊपर विपत्ति ही लेनी पड़े; परंतु मैं कहूँगी सब।"

फ़ैल्टन के चेहरे पर प्रसन्नता झलक उठी। उसने पूछा—"क्या यह प्रतिहिंसा का विचार था?"

"हाँ! फ़ैल्टन! यह मैं स्वीकार करती हूँ कि वह विचार अपवित्र था, अधार्मिक था, मेरी आत्मा की पवित्रता के विरुद्ध था, मेरी शांत प्रकृति के प्रतिकूल था; परंतु विचार यही था यह मैं तुमसे न छिपाऊँगी। जिस पापमय वातावरण में मैं पड़ी थी, वह कुत्सित विचार उसी की छाया थी। फ़ैल्टन! नारकीय परिस्थितियों में रहकर शुद्ध आत्माओं में भी कलंक लग जाते हैं, पाप का धुआँ निर्मल शुभ्र दीवारों को मलिन किये बिना नहीं रहता। मैं भी उस काजल की कोठरी से अछूती न निकल सकी। आह! शायद इसी अपवित्र विचार को धारण करने का यह प्रतिफल है, जो आज मैं भोग कर रही हूँ? फ़ैल्टन, पाप का फल भोगना ही पड़ता है और यह ईश्वर का दृढ़ नियम है कि जो निरंतर पापाचार में डूबे रहते हैं, उनको इस संसार में दुःख भोगने के कम अवसर मिलते हैं; परंतु जो जीवन भर धर्माचारी रहे हैं, जिनके आचार, व्यवहार निरंतर निर्मूल हैं, जो शुद्धता और उच्च आध्यात्मिकता के आदर्श माने जाते हैं, उनको केवल एक बार की भूल के लिये ही असह्य वेदना और दारुण यन्त्रणा का घोर दण्ड भोगना पड़ता है। दुःख की आँच में तपकर, वह शुद्ध प्रमाणित होकर परलोक गमन करते हैं। फ़ैल्टन! मैं भी उस प्रतिहिंसा की पाप-भावना के कारण शायद दुःख की इन आँचों में तपाई जा रही हूँ? आह! भगवान के उद्देश्य अभेद्य रहस्य

हैं। संसार की पार्थिव आत्मायें उन दुर्गम तथ्यों तक नहीं पहुँच सकतीं।"

फ़ैल्टन का हृदय भक्ति से भर गया। उसने असीम भक्ति और श्रद्धा के साथ म्लैडी की अभ्यर्थना की। उसकी दृष्टि में म्लैडी पवित्र देव-कन्या के रूप में दिखलाई दी। वह म्लैडी का पक्का अनुगामी बन गया था। भावावेश में उसने कहा—"आह! यह विचार अपवित्र अवश्य था; परंतु समयोचित था। दंड देने की भावना नितांत धार्मिक न होकर भी अधार्मिक नहीं थी। अच्छा! तो तुमने उस महापातकी के हृदय में छुरी भोंक दी?" फ़ैल्टन ने रोष से उन्मत्त होकर दाँत किटकिटाते हुए कहा।

म्लैडी के नेत्रों से हर्ष की ज्योति चमक उठी। उसने उत्तेजित होकर कहा—"आह! फ़ैल्टन! मैंने अपने शरीर की समग्र शक्ति को एकत्रित किया, ईश्वर से प्रार्थना की कि परमात्मन! मुझे इस दुर्धर्ष कार्य के लिये बल दो, मैं आत्म-रक्षा के लिये अपनी आत्मिक पवित्रता को सुरक्षित रखने के पवित्र उद्देश्य से प्रेरित होकर ही इस जघन्य साधन का आश्रय ग्रहण कर रही हूँ। आह फ़ैल्टन! ईश्वर ने मेरी पुकार सुन ली, मुझमें बल आ गया, शरीर की रग-रग में साहस भर गया। मैं उठ खड़ी हुई और एक अद्भुत दैवी प्रेरणा के वशीभूत होकर, मैंने अपने हाथ की छुरी उस शैतान के पापपूर्ण हृदय में घुसेड़ दी।"

"अहा! दुष्ट! अपने पाप का फल पा गया! म्लैडी! ईश्वर का यही शांत विधान था।" पवित्र संतोष की शीतल आह के साथ फ़ैल्टन के हृदय से ये शब्द निकले। म्लैडी ने शीघ्र ही कहा—"फ़ैल्टन! विधना की कर्मरेखायें अमिट हैं, ईश्वर के उद्देश्य दुर्निरीक्ष्य हैं, उसकी यह लीला समाप्त न हुई, सृष्टि-कर्त्ता को यह मंज़ूर न था कि वह इतनी सरलता से मर्त्य-लोक से प्रयाण कर जाय।

उसके पाप का प्याला अभी लबरेज़ न हुआ था, उसके लिये परमात्मा ने इससे भी कठिन विधान निश्चित कर रक्खा था, उस विधान के प्रयोग का वह समय नहीं था इसी से वह बच गया। पापी मृत्यु से सदा सशंक रहता है, वह दुष्ट कपड़ों के नीचे लोह-वस्त्र धारण किये हुए था। उसी लोह-कवच से टकराकर छुरी मुड़ गई। पापी चोटीले सर्प की भाँति फुफकार कर खड़ा होगया, उसके नेत्रों से आग बरसने लगी, चेहरा लाल होगया। उसके उस समय के भयंकर स्वरूप को देख कर मैं भय से काँप उठी। गरजते हुए उसने कहा—"सुंदरी! तुम मेरी हत्या करना चाहती थीं? ओह! मैं धोखा खा गया। मुझे विश्वास होगया था कि अब तुमने अपनी हठ छोड़ दी होगी। परंतु नहीं? स्त्री जाति बड़ी कृतघ्न होती है, जिसके लिये मैंने अनेक विपदायें सहीं, वही जीवन की गाहक बन जाय? परंतु तुमको भी आज मालूम होगया होगा कि मेरे विरुद्ध होकर भी तुम मेरा कुछ नहीं बना सकतीं। यह शरीर लोहे का है? परंतु ख़ैर! यह निश्चित है कि तुम मुझे प्यार नहीं कर सकतीं, मेरी भी काम-लालसा तृप्त हो चुकी। कल तुम आज़ाद कर दी जाओगी?"

मैंने निर्भीक होकर कहा—"परंतु यह ख़्याल रखना मेरे स्वतंत्र होते ही तुम्हारा यह पापाचरण संसार में प्रकट हो जायगा। तुम कलंकित होकर पद-च्युत कर दिये जाओगे?" मैं कारागार से मुक्त होते ही प्रत्येक मनुष्य से तुम्हारी पाप-कहानी कहूँगी, देश-देश में तुम्हारे कुत्सित आचरण के, तुम्हारे जघन्य अत्याचार के, तुम्हारे पाशविक व्यवहारों के गीत गाऊँगी। तुम्हारे इस प्रमोद-भवन का भंडाफोड़ कर दूँगी। अपनी वेदना के चीत्कार से तुम्हारे नृशंसतामय नारकीय चरित्र की घोषणा करूँगी। तुम समझते हो, जिस उच्च पद पर तुम स्थित हो वहाँ तक इस अबला का क्रंदन न पहुँच सकेगा;

परंतु ध्यान रखना, मैं बादशाह तक पहुँचूँगी और तुम्हारे अत्याचारों की पोल खोलकर संसार में तुम्हारे विरुद्ध वह वायु-मंडल पैदा कर दूँगी कि जिसके अंदर रहकर तुम साँस तक न ले सकोगे।"

मेरे इन वचनों में दृढ़ता और लगन की वह ध्वनि थी, जिसको सुनकर वह पिशाच एक क्षण के लिये काँप उठा। उसका साहस शिथिल पड़ गया। वह कुछ क्षण तक चुप रहा, तब बोला—"सुंदरी, तुम इस कारागार से मुक्त नहीं हो सकतीं, तुमको यहीं रहना होगा ?"

यह कहकर वह शीघ्रता से चला गया, कमरे में फिर अंधकार छा गया। मैं फिर अकेली रह गई।"

"तीन दिन तक मैं अकेली उस पाप-भवन में पड़ी रही, तीनों दिन मैंने निराहार और निर्जल बिता दिये। मैंने प्रतिज्ञा कर ली कि मैं इसी प्रकार भूखी रहकर प्राण त्याग कर दूँगी। इस बीच में वह नराधम एक बेर भी न आया। चौथे दिन द्वार खुलने का खटका सुनाई पड़ा। वही दुष्ट सामने आकर खड़ा हो गया, अब की बार उसके साथ भयानक आकृति वाला एक और व्यक्ति था। उस दानवी मनुष्य ने कहा—"सुंदरी ! मैं तुमको मुक्त करना चाहता हूँ ; परंतु मुक्त होने के पूर्व तुमको यह क़सम खानी होगी कि तुम मेरे और इस भवन के रहस्य के संबंध में अपनी ज़बान सदा के लिये बंद रक्खोगी। यदि तुम इस सौगंध के लिये तैयार नहीं हो, तो इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये मैं अन्य साधन काम में लाऊँगा। बोलो ! सौगंध खाने के लिये तैयार हो ?"

फ़ैल्टन ! मैं झूठी सौगंध खाकर निवृत्ति पा सकती थी ; परंतु अपनी आत्मा को मलिन बनाकर मुक्ति पाना मैंने हेय समझा। मैंने निर्भय होकर उससे स्पष्ट कह दिया—"मैं सौगंध नहीं खा सकती।

तुम ज़बान बंद रखने के लिये कहते हो, मैं इसके विपरीत यह प्रयत्न करूँगी कि मेरी ज़बान कभी बंद न हो। संसार के केंद्र-स्थानों में मैं चिल्ला-चिल्लाकर तुम्हारे आचरणों की व्याख्या करूँगी और तुम्हारे षड्यंत्र की ख़ूब पोल खोलूँगी। यह सब उस समय तक करती रहूँगी, जब तक मेरे हृदय की न बुझनेवाली अग्नि शीतल न पड़ जायगी।"

मेरी इस दृढ़ प्रतिज्ञा ने उसकी क्रोधाग्नि में घृताहुति दी। उसने विकृत स्वर से कहा—"तो तुझको इसका फल भी भोगना होगा। आज से तू वेश्या और गणिका समझी जायगी। तेरे शरीर पर उस दंड का स्थायी चिह्न रहेगा, जिसको दिखला कर तू संसार में अपनी कीर्ति की घोषणा करना। सुंदरी! याद रख! यह कलंक-चिह्न सदा तेरे विरुद्ध और मेरे अनुकूल साक्षी देगा। देखें! तू किस साहस से इस रहस्य का प्रकाश करती है?"

उस दुष्ट पापी की इस पैशाचिक इच्छा को सुनकर, मेरा शरीर "भय से काँप उठा। मैं चिल्ला उठी—हा! ईश्वर! इस दुष्ट के पंजे से अपने भक्त को छुड़ाओ! हे प्रभो! क्या तुम्हारी यही इच्छा है?" मैंने ईश्वर से अनेक प्रार्थनायें कीं; परंतु मालूम होता था कि ईश्वर ने भी इस निर्मम दानवी लीला की ओर से आँख फेर ली थी। मेरे चीत्कार और करुण-क्रंदन ने उस पाषाण हृदय दैत्य पर भी रत्ती भर प्रभाव नहीं डाला। उसके हृदय की कठोर चट्टान से टकरा कर मेरा आर्त-रुदन उस कमरे के वायु-मंडल में फैल गया। उस दुष्ट ने भयानक आकृतिवाले बधिक की ओर संकेत किया। आह! फ़ैल्टन! मैं बहुत रोई, मैंने बहुत विरोध किया; परंतु उस हृदय-हीन बधिक की प्रचंड शक्ति के आगे मेरी कुछ न चली। मेरे लिये मृत्यु से भी अधिक भयानक क्षण थे, मैं मर्मांतक यंत्रणा का अनुभव कर रही थी। उस बधिक ने मुझे ख़ूब कसकर इच्छानुसार रस्सी से जकड़ दिया और तब

आह ! फ़ैल्टन ! तब एक जलती हुई लोहे की शलाका से उसने मेरे कंधे पर कुछ अक्षर दाग़ दिये। मैं असह्य-वेदना के कारण दारुण चीत्कार करके बेहोश हो गई।'

इस हृदय-वेधी मर्मांतक पाशविक लीला का वर्णन सुनकर फ़ैल्टन के नेत्रों में ख़ून उतर आया। वह रोष से उन्मत्त होकर चिल्ला उठा—"ओह ! ग्लैडी ! वह दुष्ट कौन है ? मुझे बताओ ! मुझे बताओ उसका नाम !" फ़ैल्टन दाँत पीस रहा था।

४५

फ़ैल्टन ग्लैडी की चतुरता से उसका भक्त बन ही गया था। ग्लैडी अब उसे पूरी तौर से अपनी रूप-माधुरी में फाँस लेना चाहती थी। उसके लिये यही उपयुक्त समय था। ग्लैडी ने कातर स्वर से कहा—"फ़ैल्टन ! देखो ! इस स्थान पर—यहाँ पर—भक्ति-परायण, नवयौवना कुमारी के सतीत्व पर—यह देखो ! इस अंग पर पैशाविक नृशंसता की यह छाप लगी हुई है। उस दुष्ट की हृदय-हीनता का यह चिन्ह है।

ग्लैडी ने तुरंत अपने वक्षस्थल का वस्त्र हटा दिया और रोष के आवेश से उन्मत्त होकर अपने कंधे का दाग़ा हुआ स्थान दिखलाया। फ़ैल्टन आश्चर्य-चकित होकर चिल्ला पड़ा—"पापिष्ठा !" यह मैं क्या देख रहा हूँ, यह तो "पापिष्ठा" अंकित है ?"

ग्लैडी ने बिलखकर कहा—"हाँ ! इसी शब्द में मेरा सारा अपमान छिपा है। मेरा जीवन नष्ट होगया, मैं कहीं की भी न रही। इस अत्याचार के विरुद्ध मुख से एक शब्द भी नहीं निकाल सकती। मेरा मुँह सी दिया गया है। क्योंकि उस शैतान ने इसपर इंगलैंड का चिन्ह अंकित नहीं किया। यदि वहाँ का चिन्ह होता, तो मैं वृटिश

राज्य भर में तहलक़ा मचा देती, इंगलैंड के न्यायालय मेरे करुण चीत्कार से, आप-बीती व्यथा से थर्रा उठते; परंतु नहीं! उसने यह सब सोच लिया था, इसीलिये फ़ैल्टन! उसने यह फ्रांस का चिन्ह अंकित किया और इस प्रकार मेरे रुदन के मार्ग को भी बंद कर दिया, आह! फ़ैल्टन! मेरा हृदय ही जानता है कि मैं अपने हृदय की आह किस प्रकार ज़ब्त करती रही हूँ? फ़ैल्टन यह वक्षस्थल जिसको तुम देख रहे हो, दुःख की अग्नि से जलकर राख हो गया है।"

फ़ैल्टन की विचित्र अवस्था थी। वह मुग्ध नेत्रों से म्लैडी की ओर देख रहा था। उसके सामने म्लैडी के रूप में एक दिव्यांगना अनिंद्य सौंदर्य का नग्न रूप दिखा रही थी। लावण्यमयी रमणी यौवनमद से छलकते हुए रूप-राशि के केंद्रों को खोले खड़ी थी। नग्न सौंदर्य की इस रमणीय आभा से फ़ैल्टन के नेत्र चौंधिया गये। उसका हृदय भक्ति से उन्मत्त होगया, श्रद्धा प्रेम में परिणित होगई। श्रद्धा, और प्रेम के इस मधुर स्रोत में निमग्न होकर वह म्लैडी के चरणों में झुक गया। फ़ैल्टन ने गद्गद् कंठ से कहा—"म्लैडी! म्लैडी! तुम देव-कन्या हो। तुम्हारे पवित्र सौंदर्य के संस्पर्श से मेरा उद्धार होगया। मुझे क्षमा करो! अनुभव-शून्य होने के कारण मुझ से कठोर अपराध होगया। परंतु अब मुझे क्षमा करो!"

म्लैडी का हृदय आनंद से धड़कने लगा। हर्ष को छिपाकर आश्चर्य से उसने पूछा—"क्षमा! फ़ैल्टन! क्षमा कैसी! मुझ अभागिनी अबला से तुम्हें क्षमा क्यों माँगनी पड़ेगी?"

"आह! तुम्हारे निर्दय शत्रुओं की संगति में मुझे अब तक रहना पड़ा, क्या इसके लिये तुम मुझे क्षमा न करोगी?"

म्लैडी की अभिलाषा पूरी होगई। उसने हँसकर कहा—"ओह! इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं! तुम निर्दोष हो! मैं प्रसन्नता अनुभव

कर रही हूँ कि इन दुष्टों के साथ रह कर भी तुम्हारा हृदय इतना उज्ज्वल बना हुआ है ? तुमको ईश्वर क्षमा करेगा !"

जब ग्लैडी अपने अस्त-व्यस्त वस्त्रों को ठीक करके बैठ गई, तो फ़ैल्टन ने पूछा—"आपने उस दुष्ट का नाम नहीं बतलाया, जिसके कारण आपको इतने कष्ट सहन करने पड़े ? वह अत्याचारी कौन है ?"

"क्या ? क्या तुम नहीं जान सके कि वह कौन है ?" ग्लैडी ने चौंककर पूछा।

"नहीं, मैं नहीं जान सका ?"

"क्या तुमको यह बतलाना पड़ेगा कि वह व्यक्ति कौन है ? जो इंगलैंड का शत्रु है, धर्मद्रोही और देश की कुलीन कामिनियों के सतीत्व का लुटेरा है। जो केवल अपनी क्षुद्र काम-लालसा की तृप्ति के लिये ही इंगलैंड जैसे शांत देश को भीषण रक्तपात में संलग्न करने जा रहा है ?"

"क्या ? क्या आपका अभिप्राय बकिंघम से है ?" उत्तेजित होकर फ़ैल्टन चिल्ला पड़ा। ग्लैडी ने अपने दोनों हाथों से मुँह को छिपा लिया। इस नाम की स्मृति से उत्पन्न होनेवाली लज्जा तथा घृणा को मानो वह सहन नहीं कर सकी।

फ़ैल्टन ने उसी आवाज़ में कहा—"बकिंघम ! क्या इस सुंदरी के सतीत्व को बकिंघम ने भ्रष्ट किया। परमात्मन् ! इस अत्याचारी पर तुमने बिजली क्यों न गिरा दी ? तुम्हारे देखते हुए वह संसार में सुख और आनंद का जीवन बितावे ? यह सब क्यों हो रहा है भगवन् ?"

ग्लैडी ने शांत स्वर में कहा—"फ़ैल्टन ! जो स्वयं अपने को भूल जाते हैं, परमात्मा भी उनको भूल जाता है।"

"नहीं ! उसकी दृष्टि से कोई छिप नहीं सकता। शायद उसकी इच्छा है कि दैवी न्याय के पूर्व मानवी प्रतिकार उसको उचित दंड दे ?"

"फ़ैल्टन ! तुम भूलते हो ? मनुष्य उससे डरते हैं, प्रतिकार भला कौन ले सकता है ?"

"मनुष्य डरते हैं ? नहीं ! कदापि नहीं। मैं बदला लूँगा ! मैं उससे भयभीत नहीं हो सकता।"

फ़ैल्टन के इन शब्दों से ग्लैडी के हृदय में आनंद की धारा बह चली।

फ़ैल्टन ने शांत होकर पूछा—"परंतु इस अत्याचार से मेरे प्रभु लार्ड डी० विंटर का क्या संबंध है ?"

ग्लैडी ने दुखित होकर कहा—"आह ! यह एक दुःख की कथा है। सुनाती हूँ। सुनो ! मेरे पति अत्यंत धार्मिक स्वभाव के थे, उन्होंने भी तुम्हारा ही जैसा हृदय पाया था, वह मुझे अत्यंत प्यार करते थे, मैं उनके प्रेम में सुखी थी। हमारा गार्हस्थ जीवन अत्यंत सुख और शांति से बीतता था। आह ! फ़ैल्टन ! वे सुख के दिन जब मुझे याद आ जाते हैं, तो मैं कलेजा मसोस कर रह जाती हूँ। हृदय की सारी व्यथा उमड़ पड़ती है।"

"इस अत्याचार की घटना के होते ही मैं सीधी उनके पास गई और रोते हुए निशंक होकर उनसे सब घटना कह सुनाई। वे पवित्र-हृदय थे, उदारमना थे, मेरी सत्यता पर उनको विश्वास होगया। मेरी आप-बीती सुनकर क्रोध से उनकी आँखें जलने लगीं। उस समय मुझसे तो उन्होंने कुछ नहीं कहा—"परंतु रोष से उन्मत्त होकर वह नंगी तलवार लेकर सीधे बकिंघम के पास चल दिये। मेरे स्वामी कुलीन भद्र-पुरुष थे, मान-मर्यादा में बकिंघम से किसी प्रकार कम न थे। मेरे पति आवेंगे और उनसे युद्ध करना पड़ेगा, इस भय से बकिंघम एक दिन पहले ही स्पेन का राजदूत होकर इंगलैंड से चला गया था। मेरे पति लार्ड विंटर ख़ून का-सा घूँट पीकर वापस लौट आये।"

फ़ैल्टन ने चौंककर पूछा—"लार्ड विंटर ?"

"हाँ ! मेरे स्वामी का यही नाम था। वर्तमान लार्ड विंटर उन्हीं का छोटा भाई है। मेरे स्वामी ने मुझसे इस घटना के कारण घृणा नहीं की इसके विपरीत मेरे प्रति उनका प्रेम और बढ़ गया; परंतु हाय ! विधि से मेरा यह सौभाग्य नहीं देखा गया, बकिंघम के इंगलैंड वापस आने के एक सप्ताह पहले उनकी आकस्मिक मृत्यु हो गई। आह ! यह कैसे हो गया ! यह विधि का विधान था या मेरे शत्रुओं का षड्यंत्र ? इस विषय में मै कुछ न कहूँगी। यह संकेत करना काफ़ी हैं कि मेरे वैधव्य-काल के प्रारंभ होते ही मेरे देवर मेरे पति की जायदाद लेने का प्रयत्न करने लगे। अपने पति की मैं ही अकेली उत्तराधिकारिणी थी, मेरे अभाव में मेरी सब संपत्ति मेरे देवर लार्ड विंटर ही के अधिकार में चली जायगी। मेरे पति के मरने के बाद से ही वह मेरे शत्रु बन बैठे अर्थात् मेरे पति का जीवन नाश करके ये मुझे भी नष्ट करके मेरी संपत्ति को प्राप्त करने के मार्ग को निष्कंटक बनाना चाहते हैं। पति के मरते ही मैं फ्रांस चली गई। लार्ड विंटर और बकिंघम एक ही प्रकृति के मनुष्य हैं, इन दोनों की ख़ूब बनती है। बकिंघम ने एक दिन लार्ड विंटर से यह कहा कि मैं पतिता हूँ, व्यभिचारिणी हूँ, मेरे कंधे में 'पापिष्ठा' शब्द दंड-स्वरूप अंकित है, इसकी घोषणा करके मैं सहज ही में अपने पति की संपत्ति से वंचित की जा सकती हूँ। निर्दयी दुष्ट देवर ने मुझे इंगलैंड आमंत्रित किया हाय ! मुझे क्या मालूम था कि यहाँ बुलाकर वह प्रवंचक मुझे कारागार में बंद कर देगा। हा ! फ़ैल्टन। अब उसने विचार किया है कि इस कंटक को सदा के लिये हटा दिया जाय। इसी कारण अब मैं द्वीपांतर में भेजी जा रही हूँ, हाय ! परसों मैं तुमसे भी अलग कर दी जाऊँगी। नहीं ! नहीं ! मैं नहीं जा सकती। फ़ैल्टन मुझे तुम वह छूरी ला दो ताकि मैं तुम्हारे ही

सामने संसार के इन अपार दुःखों से सदा के लिये मुक्त हो जाऊँ। फ़ैल्टन ! मैं मरूँगी। मैं मरना चाहती हूँ। आत्म-हत्या ही अब मेरा आश्रय है ? मृत्यु की गोद ही अब मेरी सुखद-शय्या है। वहाँ मेरे प्यारे स्वामी मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

म्लैडी रोने लगी। उसकी आर्तवाणी के करुण शब्द कारागार के वायुमंडल में समा गये। शोक-विह्वला म्लैडी असह्य वेदना से फ़ैल्टन की गोद में गिर पड़ी। फ़ैल्टन का प्रत्येक अंग इस स्पर्श से रोमांचित हो उठा। उसने म्लैडी को सँभालते हुए प्रेमोन्मत्त होकर कहा—"म्लैडी ! म्लैडी ! अधीर न हो। ईश्वर तुम्हारी सहायता करेगा भक्तवत्सल अपने सेवकों से विमुख नहीं रह सकता। अब समय आ गया है, ये दुःख की घटायें सब छुट जायँगी, तुमको पूर्व-गौरव प्राप्त होगा, अपने पूर्व-सम्मान के साथ तुम फिर प्रख्यात महत्ता पर प्रतिष्ठित होगी।"

म्लैडी ने अपने नेत्र खोल दिये। रोते हुए अवरुद्ध कंठ से उसने कहा—"फ़ैल्टन ! यह तुम क्या कह रहे हो ? मुझ दुःखिनी को कौन सहायता दे सकता है ? मेरे शत्रु अनेक हैं और वे सब प्रबल हैं। मेरे लिये मुक्ति का विचार करना ही मिथ्या है। फ़ैल्टन ! मेरे लिये मृत्यु ही श्रेयस्कर है, उसी की निर्भय गोद में मैं शांति प्राप्त करूँगी।"

"म्लैडी ! तुम बहुत दिनों तक जीवित रहोगी, यह अनर्गल प्रलाप बंद करो। मेरे रहते तुम्हारे ऊपर मृत्यु की छाया भी नहीं पड़ सकती। मैं तुम्हारे शत्रुओं का नाश करूँगा, उनसे लड़कर तुम्हारे जीवन को सुरक्षित रक्खूँगा। और यदि मरना ही होगा, तो हम तुम दोनों साथ मरेंगे।"

फ़ैल्टन की इस प्रतिज्ञा को सुनकर म्लैडी का चेहरा खिल गया,

हृदय आनंद की चरम सीमा को लांघ गया, हर्ष के उन्माद में ग्लैडी ने फ़ैल्टन को आलिंगनपाश में आबद्ध कर लिया।

ठीक इसी समय द्वार को किसीने बार-बार खटखटाया, फ़ैल्टन के पैर तले की ज़मीन खिसक गई। उसका हृदय काँप उठा। चतुर ग्लैडी ने शीघ्र ही एक नई चाल खेली। उसने फुर्ती से मेज़ पर रक्खी हुई छुरी उठा ली। फ़ैल्टन को संकेत ही में समझा दिया कि अब आगे उसको कौन-सा पार्ट खेलना होगा।

जब दरवाज़ा खोला गया तो द्वारपाल सैनिक ने सूचना दी कि लार्ड डी० विंटर इस ओर आ रहे हैं। प्रातःकाल होगया था, सूर्य की किरण प्रासाद के अंधकार को भेदकर सर्वत्र फैल चुकी थीं। क्षण भर में विंटर ने मुस्कराते हुए कमरे में प्रवेश किया। उसने देखा कि ग्लैडी के हाथ में छुरा है और फ़ैल्टन उसे छीनने का प्रयत्न कर रहा है। विंटर ने हँस कर कहा—"अहा, यहाँ नाटक का अंतिम दृश्य होने जा रहा है, फ़ैल्टन! तुमने देखा, यह रमणी उन सब श्रेणियों को पार कर चुकी, जिनका वर्णन मैंने तुमसे किया था। परंतु डरो नहीं? यह दृश्य वास्तविक रक्तपात में परिणत नहीं हो सकता।"

ग्लैडी इस व्यंग्योक्ति से मानो चिढ़ गई। उसको अपनी आगामी अभिसंधि की पूर्ति के लिये भी यह उचित अवसर प्रतीत हुआ, उसने घृणा के साथ उत्तेजित होकर कहा—"विंटर! तुम भूलते हो! रक्तपात होगा! और ईश्वर करे इस रक्त की बूंदें सदा उन दुष्टों की कलुषित आत्मा पर अंकित रहें, जिनके कारण एक निरीह अबला को इस रक्तपात का आश्रय लेना पड़ रहा है।" इन शब्दों को कहते हुए ग्लैडी ने वह तेज़ छुरी अपनी छाती में घुसेड़ ली। फ़ैल्टन और विंटर दोनों उसके हाथ से छुरी छीनने के लिये तेज़ी से झपट पड़े। परंतु इसके पूर्व ही ग्लैडी मृतप्राय होकर गिर पड़ी। उसके शुभ्र

वक्षस्थल से रक्त का फव्वारा छूटने लगा। विंटर आश्चर्य-विमुग्ध हो अवाक् खड़ा रह गया। फ़ैल्टन चिल्ला पड़ा—"प्रभो! प्रभो! यह क्या होगया! हाय! यह हत्या किसके सिर जायगी।" फ़ैल्टन का चेहरा पीला पड़ गया था। उसके नेत्रों से आँसू बह रहे थे।

४६

म्लैडी इतनी शीघ्र मरनेवाली न थी। तेज़ छुरी का नोक कपड़े को काटकर उसकी छाती में एक हल्का-सा ज़ख़्म करके बग़ल की ओर मुड़ गई थी; परंतु देखने में यही मालूम होता था कि तेज़ छुरी कलेजे के आर-पार हो गई है। म्लैडी ने जिस स्थिति को टालने के लिये इस क्रिया का आश्रय लिया था, वह दूर हो गई। लार्ड विंटर यह न जान सके कि फ़ैल्टन और म्लैडी उसके विपक्ष एक नवीन षड्यंत्र में लगे हैं। म्लैडी के रक्त-पात को देखकर पहले तो लार्ड का भी दिल दहल उठा; परंतु जब प्रथम आवेश दूर हुआ और डॉक्टर ने आहत बंदिनी को देखकर यह सम्मति दी कि रोगिणी किसी आकस्मिक, मानसिक कष्ट के कारण अचेत हो गई है, ज़ख़्म बिल्कुल साधारण है और बंदिनी का जीवन निरापद है तब एक परिचारिका को वहाँ छोड़कर, फ़ैल्टन को साथ लेकर लार्ड विंटर वहाँ से चले गये।

कुछ देर बाद म्लैडी को जब होश हुआ, तो उसने देखा कि एक नवीन परिचारिका उसकी शुश्रूषा के लिये आई है। वह मन में हँसी और निर्बलता तथा पीड़ा का बहाना करके शय्या पर पड़ी रही।

दासी निरंतर उसके पास बनी रही। यद्यपि ग्लैडी ने कई बार उसको जाने के लिये संकेत भी किया; परंतु तिस पर भी वह न टल सकी। ग्लैडी को यह बात बहुत खली। रात भर वह जागती रही। सुबह को उसने दासी से कहा कि मैं रात-भर पीड़ा के कारण नहीं सोसकी, अब आँखों में नींद भरी हुई है, मैं सोऊँगी, तुम जा सकती हो। रोगिणी के स्वास्थ्य लाभ के विचार से दासी को चला जाना पड़ा। ग्लैडी उसके चले जाने पर संतुष्ट हुई। इस नई विपत्ति को हटाकर वह प्रातःकाल के भोजन की प्रतीक्षा करने लगी। उसने सोचा कि फ़ैल्टन स्वयं भोजन लेकर आता होगा, यदि दासी इस समय रहती, तो फ़ैल्टन के साथ वह अपनी नवीन अभिसंधि के विषय में बातचीत नहीं कर सकती थी; परंतु उसकी आशा सिद्ध न हुई। भोजन के साथ फ़ैल्टन न आया। इसके विपरीत उसको एक नया परिवर्तन दिखलाई दिया। आज भोजन लानेवाले सेवक भी नये थे। ग्लैडी ने अत्यंत साहस से फ़ैल्टन के विषय में जब पूछा, तो सेवक ने उत्तर दिया कि एक घंटे पहले हमने उसको इस प्रासाद से घोड़े पर जाते हुए देखा है, तब से वह लौटकर नहीं आया।

भोजन मेज़ पर सजाकर सेवक लौट गये।

ग्लैडी के मन में उथल-पुथल मच गई, भय और आशंका से उसकी छाती धड़कने लगी। फ़ैल्टन हटा दिया गया, प्रहरी बदल दिये गये, एक नवीन परिचारिका उसकी निगरानी के लिये रक्खी गई है। इस परिवर्तित व्यवस्था से यह बात बिलकुल स्पष्ट है कि लार्ड ने फ़ैल्टन पर संदेह किया उसका अविश्वास किया है। ग्लैडी की आशा-लता पर यह अंतिम तुषारपात था।

ग्लैडी की व्यग्रता इस समय देखने योग्य थी। उसके हाथ, पैर फूल गये। आशा के जिस स्वर्ण-मंदिर को उसने इतनी माया, छल-कपट और परिश्रम के साथ तैयार किया, हृदय के रक्त से सींचकर

जिस अंकुर को इतनी लगन और साध के साथ पल्लवित किया, हृदय की निगूढ़ भावनाओं की प्रेरणा से जिस सुंदर कल्पना की सृष्टि की, वह क्षण भर में दैव-दुर्विपाक से, कठोर वज्रापात से इस प्रकार नष्ट हो जाय। हाय! क्या ईश्वर की यही इच्छा है कि मैं अफ्रीका के निर्जन बंदीगृह में पड़ी सड़ती रहूँ। हा! भगवन्! क्या मेरी मुक्ति का विचार एक निर्मूल स्वप्न है?

ग्लैडी के मन में आशंकायें उठने लगीं। उसके मुख की वह सारी शोभा जिसको देखकर फ़ैल्टन का हृदय नाच उठा था, लोप होगई। श्रीहीन चेहरे पर एक भयंकर पीलापन छा गया। वह धड़कते हुए हृदय से, आँखें बंद किये पड़ी रही। परंतु मन की अनिस्थिरता तथा होने वाले भयंकर परिणाम की आशंका के कारण उससे लेटे न रहा गया, वह उठ कर कमरे में इधर उधर घूमने लगी। घूमते हुए सहसा उसकी दृष्टि द्वार की ओर गई, किवाड़ों में ऊपर की ओर शीशे लगे थे; परंतु बाहर चौखट में लोहे के सिकचों से वह द्वार बंद था। सदर दरवाज़े के किवाड़ों में शीशे नहीं थे, वे तख़्तों से जड़े थे, आने-जाने का द्वार होने के कारण वहाँ सिकचों की भी आवश्यकता न थी। ग्लैडी ने देखा कि प्रधान द्वार को छोड़कर शेष दरवाज़ों में एक नवीन परिवर्तन कर दिया गया है। उनके सिकचों में तख़्ते जड़ दिये गये हैं। यह किस उद्देश्य से किया गया है, यह तीव्र-बुद्धि ग्लैडी से छिपा न रहा। वह समझ गई कि लार्ड विंटर को संदेह हुआ है कि भीतर रहते हुए भी ग्लैडी बाहर के प्रहरियों को प्रभावित कर सकती है। इसी कारण इस मार्ग का भी अवरोध कर दिया गया।

ग्लैडी अपने शत्रु की सतर्कता पर खीझ उठी। दुःख की गहरी छटा ने उसके मन की शांति को छिन्न-भिन्न कर दिया। वह पिंजड़े में बंद क्रुद्ध सिंहनी की भाँति कमरे में टहलती रही। उसके हृदय की विचित्र गति थी। यदि इस समय वह छुरी उसके पास होती, जिसके

द्वारा उसने आंतरिक आह्लाद के साथ मृत्यु का नाट्य रचा था, तो वह गहरे दुःख के कारण या तो अपनी हत्या कर लेती अथवा प्रज्वलित क्रोध के आवेश में लार्ड की ही जीवन-लीला समाप्त कर डालती।

सायंकाल को लार्ड विंटर ने कमरे में प्रवेश किया, वह आज असाधारण रूप से आत्म-रक्षा के साधनों से सुसज्जित था। वह व्यक्ति जो आज के पूर्व एक कुलीन भद्र लार्ड दिखलाई पड़ता था, इस समय एक चतुर अनुभवी जेलर का स्वरूप धारण किये था। उसके चेहरे से यह स्पष्ट प्रतीत होता था कि उससे कुछ नहीं छिप सका, वह सब कुछ जानता है।

म्लैडी पर तीव्र दृष्टि डालकर उसने प्रतिदिन के अभ्यासानुसार तिरस्कार-पूर्ण ऊँचे स्वर से कहा—"ओह! म्लैडी! तुम्हारा मस्तिष्क इस समय मुझे मार डालने के उपाय सोचने में लगा है? तुम सोच रही हो कि ऐसा क्यों न हो सका कि मैं मृत्यु के भय से अनभिज्ञ होकर असावधानी के साथ तुम्हारी कृपाण के सामने आ जाता; परंतु! ऐसा न हो सका? ईश्वर को यह विधान पसंद न आया, उसने सारी व्यवस्था ही पलट दी, मुझे सचेत कर दिया, और उसी के फलस्वरूप आज मैं सब प्रकार से सतर्क होकर आया हूँ। म्लैडी! नहीं मेरी प्यारी भावज! क्षमा करना, अब फ़ैल्टन से भेंट करने का अवसर न मिलेगा। वह तुम्हारी प्रेम-दृष्टि के योग्य नहीं है। अब किसी दूसरे को प्रेम-पाश में फँसाओ। परंतु नहीं अब तो समय निकल गया। अब चलने की तैयारी करो, यात्रा के लिये तैयार हो जाओ। मैंने अपना प्रोग्राम बदल दिया है। पहले २४ तारीख़ यात्रा के लिये निश्चित की थी। परंतु मैं अब तुम्हें अधिक कष्ट देना नहीं चाहता, जितनी जल्दी यहाँ से तुम मुक्त हो जाओ, उतना ही अच्छा है। कल दोपहर को बारह बजे तक

बकिंघम के पास से तुम्हारी यात्रा का आज्ञा-पत्र आ जावेगा। कल ही यह भवन तुमसे मुक्त हो जायगा। मेरे भाई की पतिव्रता पत्नी! तुमको मार्ग में कष्ट न हो, तुमको स्वयं हिलना-डुलना और बोलना तक न पड़े इसकी मैंने सारी व्यवस्था कर दी है, यदि कहीं भी तुम स्वयं बोलना चाहो, तो मेरे सशस्त्र नाविक तुम्हारे उस मधुर भाषण का बंदूक़ के फ़ायर से स्वागत करें और यह ख़्याल रक्खें कि जितने अक्षर तुम्हारे मुख से निकलें, कम-से-कम उतने फ़ायर अवश्य किये जायँ, यह आदेश नाविकों को दे दिया गया है। यह आदेश यदि न देता, तो मैं अपनी आदरणीया भावज का उचित सम्मान कैसे करता? क्यों! प्यारी भावज! यह व्यवस्था तुमको पसंद है ना! ओहो! तुम ख़ामोश हो! ख़ामोशी स्वीकृति का चिन्ह है। बस, बस, मेरा कर्तव्य हो गया! मैं तो इस व्यवस्था पर तुम्हारी स्वीकृति लेने ही आया था; अब मैं जाता हूँ! कल फिर दर्शन करूँगा।" यह कहकर लार्ड हँसते हुए चले गये। म्लैडी का शिर चकराने लगा। पैर काँपने लगे, वह शय्या पर गिर पड़ी। पसीने से उसके सब कपड़े भीग गये थे।

बंदी के लिये सायंकाल का भोजन मेज़ पर सजाकर प्रहरी चला गया। म्लैडी चुपचाप शय्या पर पड़ी रही। उसके मुख की चेष्टा को देखकर यह जान पड़ता था कि वह ध्यान-मग्न होकर मृत्यु का आवाहन कर रही है। जिस भीषण स्थान में उसको भेजने का आयोजन किया जा रहा है, वहाँ जाने की अपेक्षा वह मृत्यु को अच्छा समझती थी। कौतूहलमय-क्रियाशील संसार के संपर्क से वंचित रहकर, मरु-प्रदेश में जंगली जीव-जंतुओं के बीच रहना, म्लैडी के लिये क़ब्र में जीवित दशा में रहने के समान था। लार्ड विंटर उसके लिये इतना कठिन दंड सोचेगा। यह म्लैडी ने कभी भी नहीं सोचा था। कल वह उस स्थान में भेज दी जावेगी, जहाँ संसार का समाचार उसे नहीं मिल सकता, मुक्ति का कोई साधन उसे प्राप्त नहीं हो सकता, जहाँ रहकर प्रतिकार

और प्रति हिंसा की उसकी सब कल्पनायें नष्ट हो जायँगी, धर्माचार्य को उसका पता न होगा और न उसको धर्माचार्य का। ये ही कल्पनायेँ उठ-उठकर ग्लैडी को असीम यंत्रणा पहुँचा रही थीं। धीरे-धीरे रात का भीषण अंधकार कमरे में फैल गया। ग्लैडी को मालूम हुआ मानो यमराज अपनी विकट सेना के साथ उसके कमरे में घुस पड़े हैं। वह भय से काँप उठी, उसका हृदय दहलने लगा। मृत्यु की वीभत्स भयंकर छाया उसके नेत्रों के सामने नाचने लगी।

ग्लैडी के हृदय की अवस्था का अनुकरण करके ही मानो प्रकृति ने भी उग्र रूप धारण कर लिया। आकाश में घने बादलों का विकट गर्जन होने लगा। ज़ोरों का एक तूफ़ान आया। समुद्र का गंभीर नाद भयंकरता को और भी बढ़ा रहा था। आकाश पृथ्वी और वायु तीनों मिलकर ग्लैडी के सामने मृत्यु की विभीषिका उपस्थित कर रहे थे।

ग्लैडी अपने हृदय की तुलना इस प्रलयकारी तूफ़ान से कर रही थी। सहसा कमरे की खिड़की की ओर उसे कुछ खटके का शब्द सुनाई दिया। उसने चौंककर भयभीत नेत्रों को खोला, बिजली के क्षणिक प्रकाश में खिड़की की शलाकाओं के पीछे उसे एक मनुष्य का चेहरा दिखाई दिया। वह शीघ्रता से झपटकर उठ बैठी और खिड़की के पास जाकर काँपते हाथों से दरवाज़ा खोला। सहसा वह प्रसन्नता से चिल्ला पड़ी—"फ़ैल्टन ! आह ! मैं बच गई ?" वह व्यक्ति फ़ैल्टन ही था। फ़ैल्टन ने धीमे स्वर में कहा—"हाँ ! मैं ही हूँ ! परंतु धीरे बोलो। चलने की तैयारी करो, जब तक मैं इन सलाख़ों को काटता हूँ। तुम एक काम करो, कोई मुझे कमरे के शीशों से देख न ले।"

"इससे निश्चिंत रहो, वे लोग कमरे के सीकचों पर पहले ही से तख़्ते जड़ चुके हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि परमात्मा हमारे पक्ष में है।"

ओह ! परमात्मा ने उनकी बुद्धि बदल दी। यह बात हमारे भागने

में सुविधा प्रदान करने के लिये ही बदल दी है ? क्या तुम यह नहीं देखतीं कि तूफ़ान आज हमें कितनी सहायता दे रहा है।"

तूफ़ान की स्मृति ने क्षण भर के लिये ग्लैडी के हृदय को कँपा दिया ; परंतु फ़ैल्टन की बात उसके हृदय में जम गई, उसने उत्साहित होकर कहा—"फ़ैल्टन ! आज की प्रकृति कितनी डरावनी है। परंतु नहीं ! यही हमारी सहायक है ? जल्दी बताओ मैं क्या करूँ ?"

"कुछ नहीं ! तुम खिड़की बंद कर दो ! जाकर बिस्तरे पर लेट रहो, मैं अपना काम समाप्त करने पर तुमको खटके द्वारा सूचना दूँगा, तब तुम आना। परंतु क्या तुम मेरे साथ चल सकोगी।"

"अवश्य ! क्यों नहीं।" उछलते हृदय से ग्लैडी ने जल्दी से कहा।

"और तुम्हारा जख़्म ?"

"वह कुछ नहीं। मैं चंगी हूँ।"

"तब तैयार रहना ! मेरे पहले खटके ही पर यहाँ आ जाना।"

ग्लैडी ने जल्दी से खिड़की के द्वार बंद कर दिये, लैंप को बुझा दिया और बिस्तरे पर आकर लेट रही। ग्लैडी को मानो नया जीवन प्राप्त हुआ। हर्ष और आनंद की तीव्रता से वह पागल-सी होगई थी। उसके श्वास-प्रश्वास की गति बड़ी प्रबल होगई। इस समय उसके मन में स्फूर्ति थी, हृदय में साहस और बल था। शरीर में एक नवीन शक्ति का संचार हो रहा था। रात्रि की जो भयंकरता उसे मृत्यु की नग्न विभीषका मालूम होती थी, वही अब उसकी दृष्टि में जीवन-दायिनी सहचरी प्रतीत होने लगी। प्रलयकारी तूफ़ान के तुमुलरव अब उसे सुंदर अवसर पर बजनेवाले मधुर बाजे मालूम होते थे। वह मुक्त जीवन के सुंदर दृश्यों की कल्पना करती हुई, लगभग एक घंटे तक शय्या पर पड़ी रही, थोड़ी देर के बाद उसके कान में फ़ैल्टन का सांकेतिक शब्द सुनाई दिया। वह शीघ्र ही झपटकर खिड़की के निकट आ गई।

ग्लैडी को देखकर फ़ैल्टन ने कहा —"तैयार हो ?"

"हाँ ! क्या अपने साथ भी कुछ लेती चलूँ ?"

"यदि कुछ धन हो, तो यहाँ मत छोड़ जाओ ।"

"रुपया है, उन दुष्टों की दृष्टि मेरे धन पर नहीं जा सकी ।"

"तो लेती चलो, मेरे पास जो कुछ था, वह सब नौका के प्रबंध करने में ख़र्च हो चुका ।"

ग्लैडी ने धन की थैली फ़ैल्टन के हाथ में धरते हुए कहा—"यह लो ।"

फ़ैल्टन ने थैली हाथ में ले ली और उसको दीवार के नीचे गिरा दिया ।

ग्लैडी एक कुर्सी के सहारे खिडकी पर चढ़ गई । उसने देखा कि घने अंधकार में दीवार के सहारे एक रस्सी की सीढ़ी बँधी है उसी पर फ़ैल्टन खड़ा हुआ है । यह देखकर उसके मन में एक अज्ञात भय का संचार हुआ, वह काँप उठी । फ़ैल्टन यह देखकर हँसा उसने कहा—"डरती हो ?"

"भय ! भय तो नहीं करती । मैं नेत्र मूँदकर उतर सकती हूँ ।"

"मुझ पर विश्वास करती हो ?"

"यह प्रश्न तुम करते हो ?"

"अच्छा ! तो अपने दोनों हाथ मिलाओ । हाँ ! ठीक इसी तरह ।"

फ़ैल्टन ने दोनों हाथ अपने रुमाल से कसकर बाँध दिये । ग्लैडी ने आश्चर्य से पूछा—"यह क्या कर रहे हो ?"

"अपनी बाहों को गर्दन में डाल दो और मेरी पीठ पर जमकर बैठ जाओ, भयभीत न होना ।"

"परंतु इस बोझ से तुम नीचे गिरकर चूर-चूर भी तो हो सकते हो ?"

"तुम डरो नहीं, मैं नाविक हूँ, मैं इन बातों में अभ्यस्त हूँ।"

शीघ्र ही ग्लैडी ने फ़ैल्टन के गले में अपने दोनों बँधे हाथ डाल दिये और उसकी पीठ पर बैठ गई। फ़ैल्टन अपने इस सुंदर बोझ को लिये धीरे-धीरे एक-एक सीढ़ी पर सँभाल कर पैर रखते हुए उतरने लगा। कुछ सीढ़ियाँ उतरने पर सहसा फ़ैल्टन रुक गया। ग्लैडी ने भयभीत हृदय से आश्चार्यान्वित होकर पूछा—"क्या बात है ?"

फ़ैल्टन ने धीरे से कहा—"चुप रहो, किसी का पद-चाप सुनाई देता है ?"

ग्लैडी का हृदय धड़कने लगा, पकड़े जाने के भय से उसके माथे में पसीना आ गया। कुछ क्षण तक निस्तब्ध रहने के बाद फ़ैल्टन ने कहा—"कुछ भी नहीं है ! हम निर्भय हैं।"

"तब यह शब्द किसका था ?"

"पहरे के सिपाही अपने गश्त पर जा रहे थे ?"

"तब तो उन्होंने अवश्य देख लिया होगा ?"

"नहीं ! वे नहीं देख सके, वे हँसते और बातें करते हुए निकल गये, यह भी अच्छा ही हुआ। अब लौटने में उनको लगभग बीस मिनट लग जायँगे, तब तक हम निरापद भाग सकते हैं।" ग्लैडी काँप रही थी। अब उसने संतोष की साँस ली।

फ़ैल्टन उतरने लगा। धीरे-धीरे वह ज़मीन पर आगया। ज़मीन पर पैर रखते ही उसने झुककर रुपयों की थैली उठा ली और अपने दाँतों से कसकर पकड़ लिया। तब उसने ग्लैडी को अपनी भुजाओं में ले लिया और जिस ओर प्रहरी गये थे, उसके ठीक विपरीत दिशा में तेज़ी से बेतहाशा भागा। कुछ ही मिनटों में समुद्र तट के निकट आकर रुक गया और सीटी बजाई। इसका उत्तर किसी ने सीटी ही में दिया। पाँच मिनट के बाद एक नाव समुद्र के किनारे आ लगी, चार मल्लाह उसको खे रहे थे। जब नाव बहुत निकट

आ गई, तो फ़ैल्टन, ग्लैडी को भुजाओं में लपेटे उस पर बैठ गया।

दैवयोग से उस समय तूफ़ान का वेग घट चला था। परंतु सीमा-हीन समुद्र में उत्ताल तरंग-लहरियाँ अब भी विकट निनाद कर रही थीं। चारो मल्लाह बड़ी तेज़ी से नाव खे रहे थे, आंदोलित समुद्र में डगमगाती हुई नाव तीव्र गति से चली जा रही।

ग्लैडी ने धड़कते हृदय से आँखें खोलीं। उसका सिर अभी तक फ़ैल्टन के कंधे पर रक्खा था, उछलता हुआ वक्षस्थल उसकी छाती से सटा हुआ था। फ़ैल्टन इस समय अत्यंत सुखी था, उसके हृदय में प्रेम की तरंगे उठ रही थीं, ग्लैडी के मुख से निकला हुआ उच्छ्वास उसके मनमें नवीन कामना, नवीन स्फूर्ति और नवीन साहस का संचार कर रहा था। ग्लैडी ने पूछा—"मैं कहाँ हूँ?"

"तुम सुरक्षित हो?" फ़ैल्टन ने आलिंगन-पाश को अधिक जकड़ते हुए कहा—

"आह! यह स्वप्न तो नहीं है, मैं देख रही हूँ कि यह स्वछंद आकाश है, यह बंधन रहित उन्मत्त समुद्र है, यह क्रीड़ामय तरंगों का वाद्य-रहित सुन्दर संगीत है। फ़ैल्टन। आज मैं कितनी स्वतंत्र हूँ। अहा। यह सब तुम्हारी चेष्टाओं का फल है। मैं तुम्हारी कितनी ऋणी हूँ।" ग्लैडी ने फ़ैल्टन को अपनी दोनों भुजाओं में कस लिया। हर्षोन्मत्त होकर फ़ैल्टन ने अपना मुख ग्लैडी के मुख पर रख दिया।

जिस जहाज़ को फ़ैल्टन ने किराये पर किया था, उसके समीप इस समय नाव पहुँच चुकी थी। जहाज़ पर दृष्टि पड़ते ही ग्लैडी ने पूछा—"यह जहाज़ कहाँ जायगा?"

फ़ैल्टन ने कहा—"जहाँ तुम इसको ले जाना चाहो, वहीं जायगा।" केवल मुझे निकट के बंदरगाह पोर्टस्माउथ पर उतार देना।

"क्यों? वहाँ क्यों उतर रहे हो?"

"वहाँ पर मुझे लार्ड विंटर के आदेशों का पालन करना है।" हँसते हुए फ़ैल्टन ने यह बात कही। ग्लैडी अत्यंत विस्मित हुई। उसने पूछा—"विंटर के आदेश ?"

"क्या तुम नहीं समझ सकीं।"

"बिल्कुल नहीं।"

"लार्ड विंटर ने मुझ पर संदेह किया, अतः जेलर का काम उन्होंने स्वयं करना निश्चित किया है और अपने स्थान में मुझे बकिंघम के पास से तुम्हारे देश-निर्वासन का आज्ञापत्र लेने भेजा है।"

"परंतु जब तुमको अविश्वासी समझा, तो इस महत्त्व-पूर्ण कार्य को तुम्हारे सिपुर्द कैसे किया ?"

"ओह ! यही तो महत्त्व की बात है, लार्ड विंटर यह कैसे जान सकते थे कि मैं उनके इस गुप्त कार्य के भेद को जानता हूँ। उनके इस पत्र में क्या लिखा है, उनके विचार से मैं इस विषय में नितांत अनभिज्ञ हूँ।"

ग्लैडी के नेत्र चमक उठे। उसने पूछा—"तो क्या तुम अभी पोर्ट्समाउथ जाओगे ?"

"अभी ! देर पल भर की भी नहीं कर सकता, कल २३ तारीख़ है, कल ही बकिंघम अपने नवीन बेड़े के साथ फ्रांस रवाना हो जायगा।"

ग्लैडी चौंक पड़ी, उसने आश्चर्यचकित होकर पूछा—"क्या राशेल के लिये ?"

"हाँ।"

"ओहो ! कभी नहीं ? उसको मत जाने दो।" ग्लैडी ने अपनी स्वाभाविक शांति को भंग करके अत्यंत तेज़ी के साथ चिल्लाकर कहा।

फ़ैल्टन ने दृढ़ता से कहा—"धीरज रक्खो ! वह कहीं नहीं जा सकता।" इस आकस्मिक संयोग तथा दृढ़ प्रतिज्ञ फ़ैल्टन के निश्चयात्मक ढंग को देखकर ग्लैडी आनंद से उछल उठी। नवयुवक

फ़ैल्टन के हृदय की अंतिम गहराई तक उसकी तीव्र दृष्टि पहुँच गई। वहाँ बकिंघम की मृत्यु बड़े-बड़े अक्षरों में अंकित है, यह देख कर उसने सुख की एक लंबी साँस ली।

दोनों व्यक्ति जहाज़ पर चढ़ गये। फ़ैल्टन ने म्लैडी को दिखलाते हुए जहाज़ के कप्तान से कहा—"यही वह रमणी हैं, जिनके विषय में मुझसे और आपसे बातचीत हुई थी। इन्हें ही आपको सुरक्षित रूप में फ़्रांस पहुँचा देना है।"

कप्तान ने कहा—एक सहस्र पिस्टलस (फ़्रांसीसी सिक्के)।"

"हाँ! परंतु पाँच सौ दे चुका हूँ।"

"अवश्य।"

"शेष पाँच सौ की रक़म यह लीजिये।" यह कहकर म्लैडी ने अपने धन की थैली कप्तान के हाथ में रख दी।

"नहीं! परंतु मैंने एक शर्त और की है। मैं यह बचन दे चुका हूँ कि यह पाँच सौ पिस्टलस मुझे तभी मिलेंगे, जब मैं आपको बोलोन पहुँचा दूँ।"

"तो क्या आप बोलोन पहुँचा देंगे?"

"अवश्य, नहीं तो मेरा नाम बटलर नहीं।"

"तो मैं आपको एक सहस्र मुद्रा और इनाम में दूँगी।" म्लैडी ने हर्षोत्फुल्ल-हृदय से कहा।

कप्तान ने यह समझ कर कि यह रमणी अवश्य कोई कुलीन धनिक महिला है म्लैडी को बहुत झुककर अभिवादन किया।

म्लैडी और फ़ैल्टन में यह निश्चित होगया कि म्लैडी दस बजे तक फ़ैल्टन की प्रतीक्षा करेगी और यदि इस समय तक वह न पहुँच सके, तो म्लैडी फ़्रांस की ओर रवाना हो जायगी और वहाँ पर बेथ्यून में कार्मेलाइट के धर्म-मंदिर में पुनः दोनों की भेंट होगी।

समुद्र शांत था। जहाज़ तेज़ी से चलने लगा। इस समय स्वच्छ नीलाकाश और प्रशांत समुद्र के बीच में लहरों के संघर्ष से उत्पन्न आनंदोत्तेजक मधुर संगीत को सुनते हुए, प्रेम-वार्तालाप में व्यस्त आलिंगन-पाश में आबद्ध, ये युगल-प्रेमी सुखमय दृश्यों की कल्पना करते हुए चले जा रहे थे।

४७

जहाज़ पोर्टस्माउथ बंदरगाह के किनारे आ लगा। फ़ैल्टन ने व्यथित हृदय से ग्लौडी से विदा ली। चलते समय उसने अपनी नव-प्रेमिका के कोमल शुभ्र करों का बार-बार चुंबन किया। उसके सौंदर्य पूर्ण मुख की सरस माधुरी को अपने नेत्रों में भरकर वह चल दिया। चलते हुए वह बार-बार मुँह फेर कर जहाज़ के तख़्ते पर खड़ी ग्लौडी के मुखचंद्र को निहार लेता था। नगर के निकट पहुँचने पर उसने जब अंतिम बार समुद्र की ओर देखा, तो केवल जहाज़ का उच्च मस्तूल ही दिखाई दे रहा था।

नगर में प्रवेश करने पर उसको अपने नवीन कार्य की चिंता सवार हो गई। इस समय प्रातःकाल की पौ फट रही थी। घने कोहरे से ढके हुए नगर के भव्य मंदिरों के कँगूरों पर उषा की स्वर्ण किरणें नेत्ररंजक दृश्य उपस्थित कर रही थीं। परंतु फ़ैल्टन किसी और ही धुन में मस्त था। वह अपने मन में उन अगणित अपराधों की विवेचना कर रहा था जो ग्लौडी द्वारा प्रथम जेम्स और प्रथम चार्ल्स के प्रिय पात्र बकिंघम पर आरोपित किये गये थे।

जब वह इस उच्च महत्ताशाली महामंत्री के सार्वजनिक अपराधों

की तुलना उसके निजी अपराधों से—जिनसे अधिकांश जनता अनभिज्ञ थी और जिनके परिमित उदाहरणों की झलक ग्लैडी के विवरण से मिली थी—करने लगा तो उसकी दृष्टि में बकिंघम की हृदय-हीनता सर्वथा अक्षम्य जँचने लगी। इसका एक प्रबल कारण यह भी था कि ग्लैडी के प्रेम ने उसकी दृष्टि को इतना उद्भ्रांत बना दिया था कि उसको बकिंघम की छोटी-छोटी त्रुटियाँ भी बहुत बड़ी दिखाई देती थीं। बकिंघम उसके विचार से संसार का हीनतम प्राणी था।

फ़ैल्टन के चेहरे पर इस समय प्रतिहिंसा की झलक थी। यद्यपि उसका शरीर नितांत शांत था तथापि उसके हृदय में विकट भावनाओं की क्रांति मची हुई थी। फ़ैल्टन तेज़ी से चला जा रहा था।

जब फ़ैल्टन बकिंघम के प्रासाद के पास पहुँचा, तब प्रातःकाल के आठ बजे थे। सारी जनता पैदल चल रही थी, सड़कों और गलियों में ढोल और नगाड़े बजाये जा रहे थे, युद्ध-क्षेत्र जानेवाली सेना सुसज्जित होकर, समुद्र-तट की ओर जा रही थी।

पसीने से तर फ़ैल्टन फाटक के पास पहुँचा। इस असभ्य व्यक्ति को देखकर दरवान ने पहले तो उसे सुविधा-पूर्वक ढकेल देना चाहा; परंतु जब फ़ैल्टन ने लार्ड डी० विंटर का ख़लीता ज़ेब से निकालकर दिखलाया, तो दरवान अपने व्यवहार पर स्वयं पश्चाताप करने लगा और अत्यंत आदर के साथ भीतर प्रवेश करने के लिये संकेत किया। फ़ैल्टन भीतर घुसता हुआ चला गया।

ठीक इसी समय एक और व्यक्ति मिट्टी से लतपथ, दौड़ता, हाँफता फाटक के पास आकर घोड़े से उतरा। घोड़ा इतना थक गया था कि ज़ीन ख़ाली होते ही वह घुटनों के बल ज़मीन पर बेदम होकर गिर पड़ा, सफ़ेद झाग उसके मुँह से निकलने लगे। नवागंतुक और फ़ैल्टन दोनों प्रासाद के भीतरी फाटक पर एक साथ

ही पहुँचे। बकिंघम के अंतरंग सेवक पैट्रिक ने दोनों से पूछा कि आप लोग कहाँ से आ रहे हैं ? फ़ैल्टन ने लार्ड डी० विंटर का नाम लिया ; परंतु बेचारा आगंतुक सबके सामने अपने भेजनेवाले अपरिचित व्यक्ति का नाम न ले सका, उसने केवल इतना ही कहा कि मैं ड्यूक ही को यह बात बतला सकता हूँ। दोनों बड़ी आतुरता से यह इच्छा कर रहे थे कि दूसरे की अपेक्षा मैं ही पहले पहुँचूँ। पैट्रिक को यह बात मालूम थी कि लार्ड डी० विंटर ड्यूक के अंतरंग मित्र हैं, अतः उसने पहले फ़ैल्टन ही को ड्यूक के पास भेजना पसंद किया। नवागंतुक इंतज़ार करने के लिये वाध्य होगया। उसके चेहरे से यह स्पष्टतया प्रकट हो रहा था कि वह इस देरी के लिये अत्यंत दुखी हुआ है। एक वेदना-व्यंजक आह खींचकर वह एक स्थान पर बैठ गया।

बकिंघम इस समय स्नान करके अपने शरीर को मणि-मुक्ता-जड़ित वस्त्रों से सुसज्जित कर रहे थे। फ़ैल्टन सैनिक-अभिवादन करके चुपचाप शांत खड़ा होगया। बकिंघम ने मख़मली लबादे को हटाकर सर उठाया और फ़ैल्टन को सर से पैर तक देखकर पूछा—"लार्ड स्वयं क्यों नहीं आये ? मैं उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था।"

फ़ैल्टन ने उतर दिया—"उन्होंने मेरे द्वारा श्रीमान् से यह निवेदन किया है कि उनको बड़ा दुःख है कि वह आपकी सेवा में इस समय नहीं आसके, इसका कारण यह है कि आज उनको बंदी की स्वयं देख-भाल करनी पड़ रही है।"

"हाँ ! यह मैं जानता हूँ कि उनके पास एक बंदी है।"

"इसी बंदी के विषय में मैं श्रीमान् से कुछ निवेदन करना चाहता हूँ।"

"कहो ? क्या कहना चाहते हो ?"

"परंतु जो कुछ मैं कहनेवाला हूँ, उसको सुनने का अधिकार केवल श्रीमान् ही को है।"

बकिंघम फ़ैल्टन के अभिप्राय को समझ गया। उसने पैट्रिक को चले जाने का संकेत किया। एकांत होने पर फ़ैल्टन ने कहा—"श्रीमान्, लार्ड विंटर ने कल आपसे चार्लाट वेक्सन नामक एक युवती के निर्वासन-पत्र पर हस्ताक्षर करने की प्रार्थना की थी।

"हाँ, मैंने उनसे कहा था कि तुम निर्वासन-पत्र भेज देना, मैं हस्ताक्षर कर दूँगा।"

"वह पत्र यह है।" यह कहकर फ़ैल्टन ने वह लिफ़ाफ़ा ड्यूक के सामने मेज़ पर रख दिया। ड्यूक ने जल्दी से लिफ़ाफ़ा खोलकर निर्वासन-पत्र निकाला, एक तीव्र-दृष्टि उस पर डाली और क़लम उठाकर हस्ताक्षर करने के लिये तैयार हुआ; परंतु इसी समय फ़ैल्टन ने बाधा देकर ड्यूक से कहा—"श्रीमान्! मैं क्षमा चाहता हूँ। क्या श्रीमान् को यह मालूम है कि इस रमणी का असली नाम चार्लाट वेक्सन नहीं है?"

"हाँ, यह मुझे मालूम है।" ड्यूक ने दावात में क़लम डुबोते हुए कहा।

फ़ैल्टन ने तीव्र-स्वर में पूछा—"तो क्या श्रीमान् उसका असली नाम जानते हैं?"

"ड्यूक ने क़लम काग़ज़ पर लगाते हुए कहा—मैं जानता हूँ।"

"और उसका असली नाम जानते हुए भी क्या श्रीमान् इस पत्र पर हस्ताक्षर करना पसंद करते हैं?"

"निस्संदेह! एक बार नहीं दो बार।" ड्यूक ने पुनः सिर उठाकर फ़ैल्टन के चेहरे की ओर देखा।

"परंतु मुझे विश्वास है कि श्रीमान् यह नहीं जानते कि यह निर्वासनाज्ञा ग्लैंडी डी० विंटर के लिये है।" फ़ैल्टन का स्वर तेज़ हो गया था।

बकिंघम ने हँसकर कहा—"मैं यह अच्छी प्रकार जानता हूँ ; परंतु मुझे आश्चर्य है कि तुम भी यह बात जानते हो।"

"और क्या अब भी श्रीमान् को हस्ताक्षर करते समय कष्ट नहीं होता।" यह सुनकर ड्यूक ने आश्चर्य-पूर्ण दृष्टि से नवयुवक की ओर देखा, तब कहा—"क्या तुम यह जानते हो कि तुम्हारे यह प्रश्न कितने अभद्रता-पूर्ण और विचित्र हैं ? कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इनका उत्तर नहीं देगा।"

"परंतु मेरी प्रार्थना है कि श्रीमान् इनका उत्तर देंगे। परिस्थिति जितना श्रीमान् समझते हैं, उससे कहीं अधिक भयंकर है।"

बकिंघम ने सोचा कि यह नवयुवक लार्ड विंटर का विश्वास-पात्र सैनिक है, लार्ड विंटर ही के आदेश का पालन कर रहा होगा, उसका क्रोध ठंडा पड़ गया। उसने कहा—"इस पत्र पर हस्ताक्षर करते समय मुझे किंचितमात्र भी कष्ट नहीं हो सकता ; क्योंकि मैं यह जानता हूँ और लार्ड विंटर भी यह अच्छी प्रकार जानते है कि ग्लैडी बड़ी धूर्त और पापासक्त रमणी है। यह उसके साथ दया प्रकट की गई है कि उसको प्राणदंड न देकर आजीवन देशांतरवास की ही सज़ा निश्चित की गई है।"

ड्यूक ने हस्ताक्षर करना प्रारंभ कर दिया ; परंतु इसी समय फ़ैल्टन क़दम बढ़ाकर ड्यूक के बिलकुल निकट आ गया और उत्तेजित स्वर में कहा—"परंतु मैं यह कहता हूँ कि श्रीमान इस पर हस्ताक्षर न करें।"

बकिंघम का क़लम रुक गया। युवक की धृष्टता से क्षुब्ध होकर उन्होंने कहा—"मैं इस पत्र पर हस्ताक्षर न करूँ। क्यों ?"

"इसका उत्तर श्रीमान् की आत्मा देगी ! इस बंदिनी अबला के साथ न्याय कीजिये।"

"क्या यह न्याय नहीं है! ओह! इस स्त्री ने गुरुतर पाप किये हैं। वह दानवी है।"

"नहीं! श्रीमान् असत्य कहते हैं, वह पवित्र साध्वी है। देव-कन्या है! और यह बात श्रीमान् जानते हैं। इसीलिये मेरा यह प्रस्ताव है कि वह कारागार से मुक्त कर दी जाय।"

बकिंघम को नवयुवक की इस अभद्र और अनधिकार चेष्टा पर अत्यंत आश्चर्य हुआ, गंभीर तीव्र-स्वर में उसने पूछा—"युवक! तुम क्या पागल हो गये हो। क्या तुम भूल गये कि तुम किससे बातचीत कर रहे हो?"

"श्रीमान् मुझे क्षमा करें, मैं असमर्थ हूँ। यद्यपि मैं अपने को बहुत रोक कर भाषण कर रहा हूँ; परंतु श्रीमान् यह भली प्रकार सोच-समझ लें कि श्रीमान् क्या कर रहे हैं और इसका कितना भीषण परिणाम होगा?"

"क्या! यह तुम क्या कह रहे हो? धमकी देते हो?" ड्यूक का चेहरा उद्दीप्त हो गया। उसके नेत्रों में लालिमा छा गई।

"नहीं! श्रीमान्, मैं अभी तक नम्रतापूर्वक प्रार्थना ही कर रहा हूँ। मैं पुनः श्रीमान् से कहता हूँ कि इस प्याले को लबरेज़ करने के लिये केवल एक जलबिंदु ही पर्याप्त है। एक साधारण-सी भूल सुरक्षित पापी की जीवन-लीला को समाप्त कर देती है!"

बकिंघम फ़ैल्टन की इन पहेलियों का अर्थ कुछ भी न समझ सका, उसको विश्वास हो गया कि इस युवक का दिमाग़ फिर गया है। उसने कहा—"मिस्टर फ़ैल्टन! तुम यहाँ से चले जाओ! व्यर्थ प्रलाप में समय नष्ट मत करो।"

"नहीं! श्रीमान् को मेरी पूरी बात सुननी ही होगी। श्रीमान् ही ने इस देव-कन्या को उड़ाया था, श्रीमान् ही ने उसको भ्रष्ट किया, उसका सतीत्व भंग किया और उसपर पाशविक अत्याचार किया!

अब श्रीमान् को उन पापों का प्रायश्चित्त करना होगा, उसको छोड़ना होगा ! बस, इससे अधिक कुछ भी करने के लिये मैं श्रीमान् को विवश न करूँगा।"

"प्रायश्चित !" बकिंघम ने अवाक् होकर इस शब्द को दोहराया, उनकी तीव्र, विस्मयपूर्ण तथा क्रोधोन्मत्त दृष्टि फ़ैल्टन के चेहरे पर जम गई। फ़ैल्टन का मुख उत्तेजना के कारण लाल होगया था, उसकी आँखों से भीषण अग्नि की लपटें निकल रही थीं। उसके स्वर में क्रोधोन्माद था, घृणा की और प्रतिहिंसा की भयावह उत्कट इच्छा थी। उसने कहा—"श्रीमान् सावधान हो जायँ। सचेत हों ! इंगलैंड श्रीमान् के अन्याय से ऊब उठा है, श्रीमान् ने निरीह प्रजा पर अत्याचार किये हैं, पतिव्रता कुल-कामिनियों के साथ अमानुषिक बलात्कार किया, राज्य की प्रजापालक शक्तियों का दुरुपयोग किया ! मनुष्य और ईश्वर दोनों ही श्रीमान् से संत्रस्त हो चुके हैं, ईश्वर श्रीमान् को परलोक में दंड देगा ; परंतु मैं इसी लोक में बदला चुकाऊँगा।"

बकिंघम भय से चिल्ला पड़ा—"ओह ! यह असह्य है ?" यह कहकर वह उठकर द्वार की ओर बढ़ा, परंतु फ़ैल्टन ने मार्ग रोककर कहा—"श्रीमान् से मैं पुनः प्रार्थना करता हूँ कि ग्लैडी के मुक्ति-पत्र पर हस्ताक्षर कर दीजिये। यह न भूलिये कि वह एक दुःखिनी अबला है, जो श्रीमान् ही के हाथों के द्वारा तिरस्कृत हो चुकी है।"

भय और क्रोध-मिश्रित स्वर में ड्यूक ने कहा—"हट जाओ ! अन्यथा तुमको कारागार की हवा खानी पड़ेगी। तुम्हारे हाथ-पैर में बेड़ियाँ जकड़ दी जायँगी।"

फ़ैल्टन फुर्ती से ड्यूक और उस घंटी के बीच में आकर खड़ा हो गया, जिसे ड्यूक बाहर के सिपाहियों को संकेत देने के अभिप्राय से बजाने के लिये बढ़े थे। इस प्रकार ड्यूक के सब मार्गों को बंद करके फ़ैल्टन ने तीव्र-स्वर में कहा—"श्रीमान् सहायता नहीं बुला

सकते। फिर सोच लीजिये, मैं समय देता हूँ, इस समय श्रीमान् दैवी-शक्ति के श्राधीन हैं, ईश्वरीय श्राज्ञा को मानना होगा।"

बकिंघम ने उच्च-स्वर से चिल्लाकर कहा—जिससे बाहर के प्रहरी श्रावाज़ सुन लें। "फ़ैल्टन! तुम क्या मरना चाहते हो? सावधान हो?"

"लैडी के इस मुक्ति-पत्र पर हस्ताक्षर कर दीजिये! मैं केवल यही चाहता हूँ।" यह कहते हुए फ़ैल्टन ने वह पत्र ड्यूक के सामने बढ़ाया।"

"श्रोह! यह विनोद नहीं है, पैट्रिक! पैट्रिक।"

"हस्ताक्षर!"

"कदापि नहीं।"

"कदापि नहीं?" फ़ैल्टन की श्राँखों में ख़ून उतर श्राया।

"सहायता! सहायता।" यह चिल्लाते हुए ड्यूक खूंटी पर लटकती हुई तलवार लेने के लिये श्रागे बढ़े; परंतु फ़ैल्टन ड्यूक को इतना श्रवसर देना नहीं चाहता था। उसने तेज़ छुरा श्रपनी कमर से निकाल लिया श्रौर पलक मारते ही ड्यूक पर झपट पड़ा। ड्यूक फ़ैल्टन की इस भयंकर चेष्टा से श्रनभिज्ञ था, छुरे पर उसकी दृष्टि न पड़ सकी। ठीक इसी समय पैट्रिक यह चिल्लाता हुश्रा कमरे में दौड़ा श्राया—"श्रीमान्! फ्रांस से एक पत्र श्राया है।"

बकिंघम फ्रांस का नाम सुनकर सब कुछ भूल गया, श्राश्चर्य-चकित होकर वह चिल्ला पड़ा—"फ्रांस से पत्र।"

बकिंघम का ध्यान बटते ही फ़ैल्टन को श्रवसर मिल गया, उसने धर्मोन्मत्त होकर तीक्ष्ण छुरी भरपूर ड्यूक की नंगी छाती में घुसेड़ दी।

"श्राह! राजद्रोही! हत्यारे, तूने मार डाला।"

बकिंघम ख़ून से लथपथ ज़मीन पर गिर पड़ा। पैट्रिक चिल्ला उठा—"ख़ून, ख़ून।"

फ़ैल्टन भागने के लिये इधर-उधर मार्ग देखने लगा। कमरे का

दूसरा दरवाज़ा सामने ही खुला था। वह उसी ओर भागा। आगे के कमरे में राशेल के दूत ड्यूक की प्रतीक्षा कर रहे थे, घबड़ाये हुए फ़ैल्टन को उधर आते हुए देखकर वे आश्चर्य से हट गये। उस कमरे से गुज़र कर फ़ैल्टन बरामदे में आ गया। वहाँ से नीचे की ओर सीढ़ियाँ लगी थीं। वह झपटकर नीचे उतरने लगा; परंतु दूसरी ही सीढ़ी पर उससे लार्ड विंटर से भेंट हो गई। लार्ड विंटर ने फ़ैल्टन को जब इस बिचित्र दशा में देखा, तो वह चौंक पड़ा। फैल्टन के चेहरे पर पीलापन छाया था, उससे असीम व्यग्रता टपक रही थी। उसके हाथ ख़ून से सने थे, वस्त्रों पर रक्त के बड़े-बड़े धब्बे लगे थे। डी० विंटर का क्रोध उबल पड़ा। उसने फ़ैल्टन का गला पकड़ लिया और दाँत पीसकर कहा—"विश्वासघातक! मैं सब जान चुका हूँ! मैंने इसका भी अनुमान कर लिया था; परन्तु दुर्भाग्य! दो मिनट की देर होगई! आह! मैं कितना अभागा हूँ।"

फ़ैल्टन ने कोई प्रतिरोध नहीं किया। लार्ड विन्टर ने उसे सेवकों के सिपुर्द कर दिया। सेवकों ने उसको समुद्र के समीप एक काराग्रह में ले जाकर बंद कर दिया। लार्ड विंटर ड्यूक के कमरे की ओर दौड़े गये।

ड्यूक और पैट्रिक की चिल्लाहट सुनकर, वह नवागंतुक जिसको पैट्रिक ने फाटक ही पर रोक दिया था, कमरे में घुस आया। बकिंघम एक पलँग पर अपने जख़्म पर हाथ धरे लेटे हुए थे, असह्य पीड़ा से उनके मुख से बार-बार आह निकल पड़ती थी। नवागंतुक पर दृष्टि पड़ते ही ड्यूक ने चकित होकर पूछा—"लैपार्टी! क्या तुम उन्हीं के पास से आ रहे हो?" ड्यूक का स्वर बहुत धीमा था।

फ्राँस की राजमहिषी के दूत ने कहा, "हाँ! श्रीमान्; परंतु दुर्भाग्य से मैं दो मिनट पहले न पहुँच सका।"

"ओह! चुप रहो लैपार्टी। कोई सुन न ले। पैट्रिक, यहाँ कोई

न आवे। आह ! लैपार्टी ! उनका क्या संदेश है ? हा ! ईश्वर ! मैं मृत्यु-शय्या पर हूँ। मैं मर रहा हूँ।" ज़ख़्म की वेदना बढ़ गई। ड्यूक बेहोश होगये।

इसी बीच में लार्ड विंटर, सहायक-मंत्री, राशेल के दूत, जलसेना के अध्यक्ष, बकिंघम के गृह-कर्मचारी, सब प्रासाद में आगये। निराशा सबके चेहरे से झलकती थी। दुःख के करुण-क्रंदन से सारा वायु-मंडल भर गया। हृदयवेधी चीत्कार और रुदन से प्रासाद गूंज उठा। ड्यूक के ज़ख़्मी होने का समाचार बात-की-बात में नगर भर में फैल गया। लोगों में चर्चा होने लगी कि इंगलैंड के महामंत्री का बचना कठिन है, ज़ख़्म प्राणघातक है। राज्य की ओर से भी यह सूचित करने के लिये तोपें दाग़ दी गईं कि कोई भयानक घटना प्रासाद में हो गई है। नगर भर में तहलक़ा मच गया। दुःख और शोक की आवाज़ सब स्थानों से आने लगी। लार्ड डी० विंटर को बहुत दुःख हुआ। उनकी दशा पागलों जैसी होगई। अपने शिर के बालों को नोच-नोचकर वह बार-बार यही कहते थे—"हाय ! केवल दो मिनट की देर हुई और इन दो क्षणों ही में सब कुछ होगया। ईश्वर ! ईश्वर ! मैं कितना अभागा हूँ।"

लार्ड विंटर को सुबह सात बजे यह सूचना मिली कि बंदिनी के कारागृह की पिछवाड़े की खिड़की से एक रस्सी की सीढ़ी लटक रही है, खिड़की के सीकचे तोड़ डाले गये हैं। विंटर को आर्तगान की बतलाई हुई चेतावनी याद हो आई। उसको ड्यूक के जीवन की आशंका हुई। वह शीघ्रही दौड़ा हुआ अस्तबल गया, जो घोड़ा पहले मिल गया, उसी पर सवार होकर, बड़ी तेज़ी से प्रासाद की ओर उसे दौड़ाया। क्षण ही भर में बराम्दे के पास उतरा, और बेतहाशा सीढ़ियों पर चढ़ने लगा। ऊपर की एक सीढ़ी पर ही उससे फ़ैल्टन से भेंट होगई। फ़ैल्टन एक क्षण पूर्व ही ड्यूक पर प्राण-घातक हमला कर चुका था।

थोड़ी देर में ड्यूक की बेहोशी दूर हुई, जब आँख खोली, तो लोगों के हृदयों में आशा का संचार हुआ।

ड्यूक ने मंद-स्वर में कहा—"आप सब लोग चले जाइये, केवल लैपार्टी और पैट्रिक यहाँ रह जायँ, आह! यह कौन डी० विंटर? आह! डी० विंटर तुमने आज विचित्र पागल आदमी को मेरे पास भेजा था। ज़रा देखो, उसने मेरी क्या दशा कर दी है?"

डी० विंटर के ऊपर मानो घड़ों पानी पड़ गया। खेद और संकोच-के भाव से उसने कहा—"आह! प्यारे ड्यूक, आज की घटना से मुझे कभी शांति नहीं मिल सकती। उस दुष्ट ने मेरे साथ विश्वासघात किया, वह मेरी आस्तीन का साँप निकला। उसने आज मुझे जीवन भर के लिये दुखी बना दिया।" डी० विंटर की आँखों से आँसू बह रहे थे।

"आह! डी० विंटर अब दुःख करना व्यर्थ है? भाग्य की रेख को कोई मिटा नहीं सकता। तुम्हारे हृदय की पवित्र सत्यता पर मुझे विश्वास है। तुम्हारा जैसा स्नेहशील मित्र मुझको जन्म-जन्मांतर में भी नहीं मिल सकता। डी० विंटर, अब आँसू न बहाओ। जाओ अभी भेंट होगी। दो मिनट के लिये मैं एकांत चाहता हूँ।"

डि० विंटर रोते हुए कमरे के बाहर हो गये।

एकांत होने पर ड्यूक ने लैपार्टी को संकेत से निकट बुलाया। लैपार्टी रोता हुआ घुटने टेककर पलँग के पास आकर बैठ गया। ड्यूक ने कहा—"लैपार्टी, मेरी मृत्यु का संवाद रानी के पास पहुँचा देना, कहना कि यह आत्मा उसी के चित्र की छाया के साथ संसार से बिदा हुई है।" ड्यूक रो रहे थे। उनकी हिचकियाँ बँध गई थीं।

लैपार्टी ने अवरुद्ध कंठ से कहा—"श्रीमान् धैर्य रक्खें, श्रीमान् की आयु इतनी अल्प नहीं है। श्रीमान् जीवित रहेंगे।"

बकिंघम के आहत स्थान से रक्त-श्राव बहुत अधिक हो चुका था। शरीर धीरे-धीरे निर्बल पड़ता जाता था, मुख निस्तेज हो गया

था। उन्होंने यथाशक्ति अपने को सँभालकर कहा—"लैपार्टी, उन्होंने पत्र में क्या लिखा है? हा। अपनी प्रेमिका के पत्र को पढ़ भी नहीं सकता। लैपार्टी, तुम स्वयं ही पढ़कर सुनाओ, मैं असमर्थ हूँ।"

लैपार्टी रो पड़ा। धीरे-धीरे उसने लिफ़ाफ़े को खोला, तब पत्र निकालकर ड्यूक की आँखों के सामने ले गया।

ड्यूक ने कहा—"हाय! यह उन्हीं चुंबनीय कर-कमलों के हस्ताक्षर हैं। परंतु लैपार्टी! पढ़ो! तुम्हीं पढ़ो? अब देर न लगाओ, मैं थोड़े ही समय का मेहमान हूँ। इस पत्र को सुनने के लिये मेरी आत्मा छटपटा रही है।"

लैपार्टी ने अधिक आग्रह नहीं किया। पत्र पढ़ना शुरू कर दिया—

"प्यारे ड्यूक,

जबसे मेरा तुमसे परिचय हुआ है, तबसे आज तक जो विरह-वेदनायें हमने सही हैं, रात-रात जागकर जिन सुखद कल्पनाओं और सीमा-रहित उद्भ्रांत, प्रेम-संभाषणों में हम व्यस्त रही हैं, उन सबकी याद दिलाकर मैं तुमसे यह नम्र याचना करती हूँ कि उन सब जहाज़ी बेड़ों और शस्त्रागारों को, जिनको फ्रांस के विरुद्ध तुमने तैयार कराये हैं। तोड़ दो, इस युद्ध को बंद कर दो, जिसका कारण खुल्लमखुल्ला धर्म है; परंतु लुके-छिपे मेरा प्रेम बतलाया जाता है। इस युद्ध से केवल इंगलैंड और फ्रांस ही पर भीषण विपत्तियाँ नहीं आवेंगी, प्रत्युत इसके द्वारा तुम्हारा भी अनिष्ट संभव है। आह! प्यारे! इस अमंगल की छाया की कल्पना से ही मेरा हृदय दहल उठता है।"

"प्यारे अपनी जीवन-रक्षा से सावधान रहना। शत्रु-गण हमारे सुख और आनंद को नष्ट करने की चिंता कर रहे हैं। ईश्वर तुम्हारे ऊपर सदा मंगलकारी दृष्टि रक्खे।"

तुम्हारे प्रेम की भिखारिणी

"एन०"

बकिंघम ने बड़े ध्यान से इस प्रेम-पत्र के एक-एक शब्द को सुना। उसके हृदय की सारी वेदना एकत्रित हो गई, वृश्चिक-दंश के समान असह्य पीड़ा को वह अनुभव करने लगा। पत्र के समाप्त होने पर नैराश्यपूर्ण निश्वास लेकर उसने पूछा—"क्या ज़बानी कुछ नहीं कहलाया? लैपार्टी! यदि कहलाया हो, तो उसे भी सुना दो? आह! मैं अब बच नहीं सकता।"

"रानी ने यह कहा है कि श्रीमान् बेख़बर न रहें, शत्रु श्रीमान् के जीवन-नाश की चेष्टा में लगे हैं।"

बकिंघम ने व्यग्रता से पूछा—"क्या, बस इतना ही कहा है? और कुछ नहीं कहा।"

"नहीं, रानी ने इतना और कहलाया है कि श्रीमान् के प्रति उनका प्रेम अब भी वैसा ही है। जब से श्रीमान् आये हैं, तब से मैंने उनके मुख पर हँसी नहीं देखी। किसी अज्ञात चिंता में वह सदा लीन रहती हैं।"

बकिंघम ने एक ठंडी साँस ली और कहा—"आह! तब मेरी मृत्यु उनकी दृष्टि में एक अजनबी की मृत्यु न होगी? इस सुखद संवाद ने मुझे असीम शांति पहुँचाई है।"

लैपार्टी ज़ोर से रो पड़ा।

"पैट्रिक," ड्यूक ने कहा—"वह स्वर्ण-मंजूषा लाओ, जिसमें वे हीरे रक्खे गये थे।"

पैट्रिक ने आज्ञा पालन की, लैपार्टी मंजूषा को देखकर पहचान गया कि यह वही मंजूषा है, जो राजमहिषी ने ड्यूक को प्रेम-भेंट स्वरूप दी थी।

ड्यूक ने पैट्रिक से कहा—"और वह सफ़ेद साटन का सुगंध-कोष भी लाओ, जिस पर मोतियों से उनके सुंदर हस्ताक्षर चित्रित हैं।"

पैट्रिक ने पुनः आज्ञा पालन की।

बकिंघम ने कहा—"लैपार्टी, इनको ले जाओ। उनके अगाध प्रेम के ये वे चिह्न हैं, जो उन्होंने अपने स्नेहातुर कर-कमलों से समय-समय पर मुझे प्रदान किये हैं। ये दो पत्र भी ले जाओ। इनमें उनके हृदय की प्रेम-भावनायें अंकित हैं। पैट्रिक, यह वस्तुयें राजमहिषी को जाकर लौटाल देना और कहना कि मरणासन्न प्रेमिक की ये अंतिम स्मृतियाँ हैं, उसके हृदय की वेदना और सुखद प्रेम की इच्छायें इनमें छिपी हुई हैं। पैट्रिक! इसके साथ इस मरनेवाले प्रेमिक के अंतिम स्मारक स्वरूप······" ड्यूक के मृत्यु-छाया-मलिन नेत्र किसी बहु-मूल्य वस्तु की खोज में इधर-उधर देखने लगे। सामने जो छुरी फ़ैल्टन के हाथ से छूट गई थी, पड़ी थी, उससे लाल-लाल ताज़े लोहू की बूँदे अभी तक टपक रही थीं। ड्यूक ने उसी की ओर संकेत करके कहा—"यह छुरी भी उनको भेंट कर देना।" शोक और वेदना के प्रबल वेग के कारण ड्यूक और न बोल सके। उनके शरीर की सारी शक्ति नष्ट हो चुकी थी, मुख पर मृत्यु की छाया के चिन्ह प्रकट होगये। आँखें पथरा गईं, शरीर शिथिल होकर पलँग से भूमि पर गिर पड़ा।

पैट्रिक ने एक उच्च चीत्कार किया।

बकिंघम ने अंतिम बार हँसने का प्रयत्न किया; परंतु उस समय वह मृत्यु का द्वार नाँघ चुके थे, यह हास्य-प्रयत्न भ्रूयुगल पर प्रेम के अंतिम चुंबन-चिन्ह की भाँति अंकित हो गया।

इसी समय डाक्टर ने कमरे में प्रवेश किया। ड्यूक के निस्तेज शरीर पर दृष्टि पड़ते ही डाक्टर भय से काँप उठे। उनके मुख से अकस्मात् निकल पड़ा—"सब प्रयत्न निष्फल हैं, ड्यूक निष्प्राण हैं।"

"आह मृत्यु, मृत्यु।" पैट्रिक चिल्ला पड़ा।

रुदन का कोहराम प्रासाद भर में छा गया। भय और दारुण शोक के भयावह चिह्न सब लोगों के चेहरों पर अंकित हो गये। बंधु-बांधव, राज-कर्मचारी तथा नगर-निवासियों पर अघटनीय वज्र-

प्रहार हुआ। इंगलैंड का शोक-संतप्त मानव-हृदय ईश्वरीय विधान के आकस्मिक स्वरूप की अज्ञेयता तथा अपरिहार्य निश्चितता का अनुभव करने लगा। सब रोते थे और हाथ मल-मलकर रह जाते थे।

डी० विंटर रोते हुए पागलों की भाँति दौड़कर फ़ैल्टन के कारागार में पहुँचे और क्रोध से दाँत पीसकर फ़ैल्टन से कहा—"ओ दुष्ट, तूने यह क्या कर दिया। नीच पातकी, मैंने अपने रक्त से तुझे इसी लिये सींचा था? आह तेरे हृदय के किस कोने में यह विषाक्त रक्त-पिपासा संचित थी? ओह, कुलांगार, तुझे मारकर भी यह हृदय शांति-लाभ नहीं कर सकता। विश्वास-घातक दुष्ट!" डी० विंटर के नेत्र जल रहे थे, शरीर काँप रहा था। फ़ैल्टन ने आज ही पहले-पहल अपने प्रभु के इस उग्र रूप को देखा था। फ़ैल्टन ने कहा—"प्रभो। मैंने अपना बदला लिया है?"

"बदला। और अपना बदला। अरे चांडाल। यह क्यों नहीं कहता कि उस पाप कर्मिणी, निष्ठुर-हृदया धूर्त रमणी की रक्त-पिपासा को शांत किया है। आह! यह मुझे न मालूम था कि मेरे इस विश्वास-पात्र युवक पर भी उस मायाविनी का माया-चक्र सफल हो जायगा? परंतु मैं यह कहे देता हूँ कि उसके जीवन का यह अंतिम पाप है, क्रूर काल की दृष्टि उस पर पड़ चुकी है।"

फ़ैल्टन ने शीघ्र ही कहा—"प्रभो। आप क्या कह रहे हैं यह मैं नहीं समझ सका। मैं नहीं जानता, आप किस रमणी के विषय में बात कर रहे हैं। इस रक्तपात का प्रधान कारण यह है कि वह मेरी उन्नति में बाधक था, इसने मुझे दो-बार कप्तान बनाने से इंकार किया। उसका यह अन्याय मैं सहन न कर सका।"

"उन्नति? आह! नराधम! चांडाल! अब तेरी उन्नति जल्लाद

के कुल्हाड़े करेंगे।" डी० विंटर इतना कहकर रोष की उत्तेजना में फ़ैल्टन पर घृणा और तिरस्कार की दृष्टि डालते हुए चले गये।

डी० विंटर की आज्ञा से फ़ैल्टन को प्रहरीगण बंदीग्रह के बाहर ले आये थे। फ़ैल्टन की दृष्टि के सामने समुद्र था और उसके निश्चल वक्षस्थल पर जहाज़ चल रहे थे। जलधि की उत्ताल तरंगों से उत्पन्न होकर विचित्र स्वरावली वायु-मंडल को शब्दमय बना रही थी। फ़ैल्टन के कान में जो शब्द पड़ता था, उससे उसे आलिंगन करने के लिये अपने पास आती हुई हर्षोन्मत्ता, स्नेहातुरा ग्लैडी के हास्यरव और "आती हूँ—आती हूँ।" की मधुर ध्वनि निकलती हुई-सी मालूम होती थी। जब विंटर ने चलते हुए उपरोक्त शब्द कहे, तो वह कल्पनालोक में इसी मधुर संगीत की सरस तान को सुन रहा था। उसकी दृष्टि समुद्र की लहरों पर जमी हुई थी; परंतु सहसा वह चौंक पड़ा। जिस स्थान पर उसका जहाज़ खड़ा हुआ था वह यहाँ से फ़ैल्टन को स्पष्ट दिखलाई पड़ता था। इसी जहाज़ पर ग्लैडी उसके लौटने की प्रतीक्षा कर रही थी। लौटने के निश्चित समय के समाप्त होने में अभी बड़ी देर थी; परंतु फ़ैल्टन ने देखा कि वहाँ कोई भी जहाज़ नहीं है, एकान्त समुद्र अपनी लहरों से क्रीड़ा कर रहा है। फ़ैल्टन के चेहरे पर एक भीषण कालिमा छा गई, उसके हृदय की गति तीव्र होगई। ग्लैडी धोखा देकर निकल गई। "आह! प्रवंचना विश्वासघात!" डी० विंटर के चले जाने पर जब प्रहरी फ़ैल्टन को बंदीगृह में ले जाने लगे, तो उसके मुख से ये शब्द निकले थे। प्रहरियों ने समझा बंदी पागल होगया है।

४८

इंगलैंड के राजा चार्ल्स प्रथम को जब ड्यूक की मृत्यु का दुःखद समाचार मिला, तो सबसे पहला भय उनको यह हुआ कि यदि यह समाचार रोका न गया, तो राशेल-निवासी अत्यंत हताश हो जायँगे और आत्मसमर्पण कर देंगे। इसी लिये उसने ऐसा प्रबंध किया कि राशेल निवासियों को यह समाचार उस समय तक न पहुँच सके, जब तक बकिंघम द्वारा एकत्रित की हुई सेना राशेल न पहुँच जाय। राजा ने राज्य के सब बंदरगाहों को बंद करवा दिया, और यह आज्ञा दी कि राज्य से बाहर जानेवाले सब जहाज़ रोक दिये जायँ। बकिंघम के स्थान में राजा ने सेनाध्यक्ष का पद स्वयं ग्रहण कर लिया।

इस कठोर आज्ञा का पालन यहाँ तक किया गया कि डेन्मार्क और हालैंड के राजदूत और भारतवर्ष के वस्त्र व्यापारी भी अनुरोध करके रोक लिये गये। परंतु यह आज्ञा ड्यूक की मृत्यु के पाँच घंटे के पूर्व न दी जा सकी थी इसलिये राजकर्मचारियों की अनभिज्ञता में दो जहाज़ बंदरगाह से पहले ही छूट चुके थे। इनमें से एक जहाज़ वही था जिसमें ग्लैडी यात्रा कर रही थी। इस जहाज़ पर ग्लैडी का

पूर्ण अधिकार था। जैसे ही उसने तोप की आवाज़ सुनी, उसने वैसे ही जहाज़ को छुड़वा दिया था। वह समझ गई कि उसका अभीष्ट सिद्ध होगया, फ़ैल्टन द्वारा ड्यूक का जीवन शंका में पड़ गया है, जब उसने दुर्ग पर काला झंडा लहराता हुआ देखा, तब उसकी यह धारणा और भी पुष्ट होगई। दूसरे जहाज़ में कौन यात्रा कर रहा था और वह कब और कैसे छूटा इसका वर्णन हम आगे चल कर करेंगे।

अब हमको राशेल की ख़बर लेनी चाहिए। पाठक यह जानने के लिये उत्सुक होंगे कि इस बीच में राशेल में कौन-कौन घटनायें घटीं और हमारे चिर-परिचित राजसैनिक-मंडल ने किन-किन नवीन कामों में हाथ डाला।

इस सप्ताह में जिसका वर्णन हम ऊपर कर चुके हैं, राशेल में कोई विशेषता रखनेवाली नवीन घटना नहीं हुई। केवल इतना हुआ कि राजा की बेचैनी बढ़ गई थी। राजा यों भी सुस्त और मलीन रहा करते थे, इधर युद्ध आरंभ होने पर उनकी उदासीनता और भी अधिक बढ़ गई। रण-संबंधी बातों में उन्होंने विशेष रुचि न की। जब राजा ने देखा कि युद्ध शीघ्र समाप्त होनेवाला नहीं है, युद्ध-काल बढ़ता ही जाता है, तो उन्होंने तबियत बहलाने के लिये कुछ दिन के बाद राजधानी में जाने का विचार किया। दैवयोग से उन दिनों पेरिस नगरी में एक उत्सव होनेवाला था, राजा को सुयोग मिल गया। उन्होंने धर्माचार्य से परामर्श करके यह निश्चित किया कि वह वेष बदलकर इस उत्सव में सम्मिलित हों और कुछ दिन पेरिस में रहकर चित्त-विनोद करें। इससे उनके चित्त की खिन्नता दूर हो जायगी और उनके स्वास्थ्य में भी यथेष्ट वृद्धि होगी। १५ सितंबर तक राजा का लौटना निश्चित हुआ।

त्रिबली को जब यह समाचार विदित हुआ, तो उसने यात्रा की तैयारी प्रारंभ कर दी, असबाब बाँधना शुरू किया। यात्रा में राजा के

साथ चलने के लिये उसने १६ वीर राज-सैनिकों को चुना। यह कहना न होगा कि इन सैनिकों में यह तिलंगे भी चुने गये थे। त्रिबली यह जानता था कि यह मित्र-मंडल पैरिस जाने के लिये अत्यंत उत्सुक है, उनकी इस तीव्र उत्सुकता का परिचय उसे उनकी अनेक चेष्टाओं से लग चुका था, यद्यपि वह यह नहीं जान सका कि तिलंगों की इस नवीन मटरगश्ती का कारण क्या है ?

जब इन चार तिलंगों को इस यात्रा की सूचना मिली, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए, उनके मन की मुराद पूरी हो गई ; परंतु हमको यह न भूलना चाहिए कि राज-सैनिकों में आर्तगान की गणना न थी। अतः अब यह समस्या उपस्थित हुई कि आर्तगान इस यात्रा में उनके साथ किस भाँति जा सकते हैं। यह तो एक निश्चित बात थी कि चारों मित्र किसी एक को छोड़कर कभी कहीं नहीं जा सकते, फिर जिस उद्देश्य से वे यह यात्रा कर रहे थे उसकी सिद्धि आर्तगान के बिना तो किसी भी दशा में नहीं हो सकती थी। आर्तगान का जाना तो अनिवार्य रूप से आवश्यक था। शीघ्र ही इस मंडली का एक अधिवेशन बैठा। गंभीर चिंतना तथा घंटों के वादा-विवाद के बाद सभा इस निश्चय पर पहुँची कि आर्तगान इस यात्रा में चलने के लिये एक सप्ताह की छुट्टी लें। इस छुट्टी का कारण प्रकट में मन-बहलाव बतलाया जाय और त्रिबली की गुप्त सहायता द्वारा छुट्टी लेने का शीघ्र-से-शीघ्र प्रबंध किया जाय। प्रस्ताव के अनुसार शीघ्र ही आयोजन किया गया। आर्तगान को छुट्टी मिल गई।

इन लोगों के पैरिस लौट चलने का कारण यह था कि उनको यह भय था कि ग्लैडी के हाथों न मालूम कितनी यातनायें आर्तगान की प्रेम-पात्री कांसटेंस को इस बीच में सहन करनी पड़ी हों। यदि उसे इन कष्टों से मुक्त करने में देर की जायगी, तो संभव है कि उसके प्राणों पर ही आ बने। अतः जितना शीघ्र हो सके, हम सबको यहाँ से

प्रस्थान कर देना चाहिए। इसी विचार से प्रेरित होकर राशेल त्याग करने के लिये इतने आतुर थे। इसी उद्देश्य से अर्मस ने अपनी घनिष्ठ प्रेमिका मेरी माइकन को एक पत्र लिखा कि राज-महिषी से हस्ताक्षर कराकर एक आज्ञा-पत्र लेकर भेज दो, जिसमें यह आदेश हो कि बोनैसी की पत्नी मेरी कांसटेंस धर्म-मंदिर से शीघ्र ही मुक्त करदी जाय। इस पत्र के उत्तर के लिये उन्हें अधिक काल तक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। दस दिवस के पश्चात् अर्मस को यह पत्र मिला—

"मेरे प्यारे अर्मस,

इस पत्र के साथ अपनी बहिन के हस्ताक्षर-युक्त कांसटेंस का मुक्ति-पत्र रवाना किया जाता है। मेरी बहिन उसकी मुक्ति का सम्वाद सुनकर अत्यंत प्रसन्न होगी। तुम अपने प्रयत्न में शिथिल न रहना।

मेरी माइकन।"

इस पत्र के साथ यह आज्ञा-पत्र नत्थी था—

लोवर १० अगस्त, १६२८

वेथ्यून के धर्म-मंदिर के प्रधानाध्यक्ष को यह आज्ञा दी जाती है कि तुम उस उस व्यक्ति को, जो इस पत्र को तुम्हारे हाथ में प्रस्तुत करे, वह नवसेविका जो मेरी सिफ़ारिश से तुम्हारे धर्म-मंदिर में प्रविष्ट की गई है, सिपुर्द करदो। यह आज्ञा मैं अपने हस्ताक्षरों से तुम्हारे लिये प्रचारित करती हूँ।

'एन.'

अब यह बिलकुल स्पष्ट है कि इस आज्ञा-पत्र का उपयोग हमारे मित्र राशेल में रहकर नहीं कर सकते थे। अतः यह आवश्यक होगया कि वे लोग पेरिस होते हुए वेथ्यून अवश्य पहुँचें। इसीलिये जब इन लोगों ने यह सुना कि राजा के साथ उनको यात्रा करने की आज्ञा हुई है, तो वे अत्यंत प्रसन्न हुए। अपने-अपने अनुचरों को

आगे से असबाब के साथ भेजकर, चारों मित्र १६ ता० की सुबह को राजा के साथ रवाना होगये।

यह यात्री-समूह स्थान-स्थान पर रुकता गया। आखेट-प्रिय राजा ने मार्ग में पडनेवाले जंगलों में स्वच्छंद रूप से विचरनेवाले जीवों से अनेक बेर अपनी आखेट-प्रवृत्ति को तृप्त किया। राजा के ये निरर्थक विनोद-साधन हमारे मित्रों को अत्यंत असुखकर प्रतीत हुए। इसलिये नहीं कि ये उनकी स्वाभाविक रुचि के विरुद्ध थे। प्रत्युत इसलिये कि उनके कार्य की महत्ता के सामने ये उस समय महत्त्वशाली न थे। यह क़ाफ़ला रुकता-रुकाता हुआ, अंत में २३ तारीख़ को सकुशल पेरिस पहुँच गया।

पेरिस पहुँचकर राजा ने त्रिवली को अनेक धन्यवाद दिये और यात्रा के सकुशल समाप्त होने के उपलक्ष में त्रिवली को कुछ विशिष्ट अधिकार प्रदान किये। इन अधिकारों में से एक यह भी अधिकार त्रिवली को दिया गया था कि वे अपने राजसैनिकों को चार दिन तक की छुट्टियाँ दे सकते हैं। इस अधिकार का लाभ पहले-पहल इन मित्रों ने ही उठाया। इन तीन तिलंगों ने भिन्न-भिन्न कल्पित आवश्यकतायें बतलाकर, विशेष अनुरोध करके अपनी छुट्टियों की अवधि नियमित समय से अधिक करवा ली थी। दूसरे दिन प्रातःकाल ही चारों अपनी नवीन यात्रा पर बेथ्यून की ओर चल दिये।

पच्चीस तारीख़ की सायंकाल को इन लोगों ने अरीस ग्राम के निकट होटल में अपना पड़ाव निश्चित किया। यहाँ पर एक विचित्र घटना हो गई। होटल के निकट पहुँचकर जब आर्तगान थका-मांदा अपने घोड़े से उतर ही रहा था कि ठीक इसी समय एक अपरिचित अश्वारोही होटल के पीछे की ओर से घोड़ा दौड़ाता हुआ उसके सामने से होकर निकला। आर्तगान स्वाभाविक आश्चर्यवश उसकी ओर देखने लगा। वह अश्वारोही तीव्र वेग से घोड़े को दौड़ाता हुआ पेरिस

जानेवाली सड़क पर चल दिया। वह अधिक दूर न गया होगा कि हवा के एक तीव्र झोंके से उसका शिरस्त्राण शिर से हटकर नीचे गिरा; परंतु वह इतना कुशल घुड़-सवार था कि पृथ्वी पर गिरने के पूर्व ही उसने झपटकर हाथ में ले लिया और फिर शिर पर ढक लिया। इस शिरस्त्राण के उठने से उसका चेहरा एक क्षण के लिये साफ़ दिखलाई देने लगा। जैसे ही आर्तगान की दृष्टि उसपर पड़ी, वह आश्चर्य से चौंक उठा। उसके चेहरे पर क्रोध की लालिमा दौड़ गई और वह बिना कहे-सुने पागल की भाँति अपने घोड़े की ओर चढ़ने के लिये लपका।

"क्या है? क्या है? एँ! दौड़ो! दौड़ो! देखो, मेरे प्रभु को क्या हा गया?" आर्तगान की विकृत चेष्टा को देखकर प्लेंचेट घबड़ाकर यह चिल्ला पड़ा।

तीनों मित्र आर्तगान की ओर झपट पड़े। अथास ने आर्तगान को वाधा देकर कहा—"कहाँ जा रहे हो? यह तुम्हें क्या होगया है?"

"वही है! यह वही है!" क्रोधोन्मत्त आर्तगान ने उत्तर दिया, उसका मस्तक पसीने से भीग गया था।

"वही! वह कौन?"

"वही पुरुष!"

"कौन?"

"वही नराधम! जिससे मेरी जब कभी भेंट होती है, तब मैं किसी न-किसी विपत्ति में अवश्य फँस जाता हूँ। जब पहली बार मेरी इससे भेंट हुई, तब म्लैडी जैसी दुष्चरित्रा मायाविनी रमणी से मेरा साक्षात्कार हुआ, दुबारा उसकी खोज करते हुए तुमसे युद्ध मुझे मोल लेना पड़ा, तीसरी बार जिस रात्रि को मुझे यह दिखाई पड़ा उसकी सुबह ही को मेरी प्राणाधार कांसटेंस उड़ा दी गई। आह! आज मैंने फिर इसको देखा है। मैं इसका आज अवश्य पीछा करूँगा और इन सब

घटनाओं का बदला लूँगा। तुम लोग भी घोड़े पर सवार हो। इसका पीछा करके उसे उपयुक्त दंड दो।"

"मेरे मित्र!" अर्मस ने शांत करते हुए कहा—"यह याद रक्खो कि जिस दिशा में हमको जाना है उसके ठीक विपरीत दिशा में वह गया है, उसका घोड़ा ताज़ा है, हमारे सब थके पसीने से सराबोर हैं। क्या उसका पीछा करके अपने जानवरों को यात्रा के लिये निकम्मा बना देना चाहते हो?" इस पुरुष को जाने दो, आओ! चलो। उस रमणी का उद्धार करें।"

"महाशय! महाशय।" होटल स्वामी जो अश्वारोही की खोज कर रहा था, यह चिल्लाता हुआ होटल से निकला—"यह आपका एक काग़ज़ यहाँ गिर गया है।

"आह! वह निकल गये।"

आर्तगान ने एक गिन्नी उसके सामने फेंक कर कहा—"यह पत्र हमें दे दो।" उसने पत्र आर्तगान के हाथ में रख दिया और चला गया।

पत्र में केवल एक शब्द लिखा था। वह शब्द था 'आर्मेनटियर्स' आर्तगान आश्चर्य विमुग्ध नेत्रों से इस शब्द को देख रहा था। अथास देखते ही चिल्ला उठा—"एं! यह तो म्लैडी के हस्ताक्षर हैं।"

आर्तगान ने कहा—"यह किसी ग्राम या नगर का नाम मालूम होता है, इस पत्र को बड़ी हिफ़ाज़त से रखना चाहिए। न मालूम किस समय पर यह काम दे! बस, अब यहाँ रुकना ठीक नहीं। अपने-अपने घोड़ों पर सवार हो।"

एक क्षण में ये चारों मित्र घोड़ों पर सवार हो बेथ्यून की ओर रवाना हो गये।

४६

यह देखा गया है कि अधिकतर प्रचंड महापातकी बहुधा अपने पूर्व निर्दिष्ट भाग्य-विधान के बल पर संसार की विकट-से-विकट बाधाओं पर उस समय तक निरंतर विजय पाते चले जाते हैं। जब तक दैव स्वयं आगे बढ़कर उनकी पाप-प्रवृत्ति पर अंतिम चेष्टा की मोहर नहीं लगा देता। यही उनके नाश की अवधि होती है। इस संसार में उनको पश्चाताप का अवसर नहीं मिलता। अंतिम काल तक उनको अपनी कामनाओं पर अपनी चेष्टाओं और प्रवृत्तियों पर अटल विश्वास रहता है। कूटनीति, परपीड़न, षड्यंत्र, पाशविक अत्याचार आदि नारकीय कृत्यों को वे सफल जीवन के गौरव-चिह्न समझते हैं। उनके मस्तिष्क और हृदय इतने पतित हो जाते हैं कि मरते-मरते भी उनके मुँह से पवित्र आह नहीं निकलती।

म्लैडी का चरित्र ऐसा ही था। अपनी कूटनीति के कौशल से वह फ्रांस और इंगलैंड दोनों राष्ट्रों की आँखों में धूल झोंककर साफ़ बचकर निकल आई। विजयोन्मत्त म्लैडी ने हँसते हुए फ्रांस देश के बोलोन बन्दरगाह की भूमि पर पदार्पण किया। जब फ्रांस से जाते हुए

वह इंगलैंड के बन्दरगाह पोर्टस्माउथ पर उतरी थी, तब उसका वेष एक अँगरेज रमणी की भाँति था, जो राशेल से फ्रांसीसियों के उत्कट अत्याचारों के कारण इंगलैंड भागकर आई थी और वही म्लैडी जब आज बोलोन पर उतरी, तो वह अँगरेज़ों से सताई हुई फ्रांसीसी रमणी के वेष में थी। म्लैडी के पास सब से अच्छा पासपोर्ट था, उसका अतुलनीय सौंदर्य, अमीराना वेष, और निर्लोभ होकर धन लुटाने की उदार प्रवृत्ति इन गुणों के चमत्कार से मार्ग में उसको कोई वाधा नहीं हुई। वह निःशंक होकर अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच गई।

बोलोन पहुँचकर उसने एक पत्र लिखा। पत्र में लिखा था।

युद्धक्षेत्र
राशेल

"सेवा में

श्रीमान् धर्म-धुरीण धर्माचार्य महामान्य रिचलू,

श्रीमान् अब निश्चिंत हो जायँ, बकिंघम अब फ्रांस नहीं आवेगा। इसका यथेष्ट प्रबंध हो गया।

म्लैडी डी०—"

बोलोन—सायंकाल, तारीख़ २५,

पुनश्च—

श्रीमान् की आज्ञानुसार मैं वेथ्यून के धर्म-मंदिर जा रही हूँ। वहीं रहकर श्रीमान् के आदेश की प्रतीक्षा करूँगी।"

म्लैडी उसी सायंकाल को वेथ्यून की ओर रवाना हो गई। रात में वह मार्ग के एक होटल में रुक गई। रातभर विश्राम करके सूर्योदय के पहले ही वह चल पड़ी और तीन घंटे में वेथ्यून पहुँच गई। वहाँ कार्मेलाइट धर्म-मंदिर का पता लगाकर उधर रवाना हो गई। धर्म-मंदिर पहुँचकर प्रधानाध्यक्ष स भट की और उन्हें धर्माचार्य का

आज्ञापत्र दिखलाया। धर्मदासियों ने ग्लैडी को ठहरने के लिये एक कमरा दिया और उसके लिये भोजन का प्रबंध कर दिया।

ग्लैडी के चेहरे से अतीत की सब छाया लुप्त हो गई थी, उसके नेत्रों के सामने उज्ज्वल भविष्य के सुंदर दृश्य नाचने लगे। उसके हृदय में धर्माचार्य की सुखद प्रतिज्ञायें आशाओं की सृष्टि करने लगीं। धर्माचार्य ने जिस काम का भार उसे सौंपा था, उसकी पूर्ति वह कितनी सुंदरता के साथ कर सकी है, इसकी सूचना पाते ही धर्माचार्य अत्यंत प्रसन्न होंगे और इस विजय के उपलक्ष्य में वह उसको मालामाल कर देंगे और उसके विलासमय जीवन में बाधा उपस्थित करनेवाले शत्रुओं का विनाश करेंगे। इन विचारों से ग्लैडी के मन में स्फूर्ति का संचार हुआ। उसके हृदय की नित्य नवीन रहनेवाली विलास भावनाओं ने पुनः जागृत होकर उसके रूप में चमत्कार उत्पन्न कर दिया।

भोजन के बाद धर्माध्यक्षा अपनी नवागंतुका अतिथि से मिलने के लिये आईं। ग्लैडी पहले ही से इस सुयोग की ताक में थी। उसने सोचा कि प्रधानाध्यक्षा को अपने प्रति आकर्षित किये बिना उसके यहाँ ठहरने का उद्देश्य सिद्ध नहीं हो सकता। ग्लैडी जैसी चतुर रमणी के लिये यह कोई कठिन बात न थी। ग्लैडी ने हँसमुख बनकर, विभिन्न विषयों पर नाना प्रकार की मनोरंजक बातें करके अपने विनोदपूर्ण ढंग से उस पर अपने व्यक्तित्व का प्रभाव डाल दिया।

धर्माध्यक्षा एक कुलीन वंश की लड़की थी। उसने राज्य-दरबार की रोचक कथाओं में विशेष अभिरुचि प्रदर्शित की।

राजधानी की प्रेम-कथायें राज्य के प्रांतों में बड़ी कठिनता से पहुँच पाती थीं। धर्म-मंदिर की पवित्र चहारदीवारी के भीतर तो उनकी पहुँच एक प्रकार से असंभव-सी थी। धर्म-मंदिर के निवासी संसार के कौतूहलमय जीवन की सरसता से सदा अनभिज्ञ रहते थे। अतः धर्माध्यक्षा के लिये ये कथायें रहस्यमयी कल्पित कहानियाँ-सी प्रतीत हुईं।

ग्लैडी का जीवन प्रारंभ ही से ऐसी परिस्थितियों में बीता था। उसके मस्तिष्क को रचना, उसके विचार और उसके भाव-जागृति की सृष्टि प्रेम, ऐश्वर्य, और विलासिता के वातावरण में ही हुई थी। उसने धर्माध्यक्षा को प्रसन्न करने के लिये अत्यंत रोचक ढंग से दरबार की रहस्यमयी घटनायें सुनाईं। उसने बतलाया कि दरबार के लार्ड और लेडियाँ, राजकुमार और राजकुमारियाँ किस प्रकार विलासितामय कुत्सित जीवन में निरत रहते हैं और सनकी राजा लुई किन-किन प्रेम-क्रीड़ाओं में व्यस्त रहते हैं। चतुर ग्लैडी ने बकिंघम और ड्यूक के प्रेम-व्यवहार और गुप्त-षड्यंत्रों पर भी कुछ-कुछ प्रकाश डाला। ग्लैडी इस ढंग से बात करती थी कि धर्माध्यक्षा भी कुछ बोले। वह उसके विचारों की थाह लेना चाहती थी ; परंतु धर्माध्यक्षा चुपचाप रहकर ग्लैडी की बातें सुन-सुनकर मुस्कराती जाती थी। ग्लैडी ने इस निमित्त कि धर्माध्यक्षा भी कुछ बोले दूसरे विषय पर बातचीत करनी शुरू कर दी। धीरे-धीरे अनजान में किसी विषय के संबंध में धर्माचार्य की बात छिड़ गई।

परंतु ग्लैडी यहाँ पहुँचकर रुक गई। उसको चिंता हुई कि बिना यह जाने कि धर्माध्यक्षा राजा के पक्ष को पसंद करती है या धर्माचार्य के पक्ष को, इस विषय पर बिना सोचे-समझे बातचीत करना भय से रहित नहीं है। परंतु ग्लैडी परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाना ख़ूब जानती थी। उसने उक्त दोनों पक्षों के बीच का मार्ग ग्रहण करके बातें करना प्रारंभ की। उसने बड़ी चतुरता से एक स्पष्ट ; परंतु अत्यंत विनोदपूर्ण कथा कही, जिसमें उसने धर्माचार्य और मैडम एग्युलन, मैडम डीलार्म इत्यादि अनेक रूपवती भद्र महिलाओं की प्रेम-लीलाओं का अत्यंत सुंदर ढंग से वर्णन किया। धर्माध्यक्षा ने इस कथा को बड़े ध्यान से सुना, कुछ उत्तेजित भी हुई और हँसी। ग्लैडी ने मनमें कहा—"ओह कथा में तो यह बड़ी दिलचस्पी ले रही हैं। यदि

यह धर्माचार्य की अनुयायिनी है, तब ०. इनमें इतना धर्मोन्माद न होना चाहिए।

तब ग्लैडी ने उन घटनाओं का वर्णन किया, जिनमें धर्माचार्य ने अपने शत्रुओं को असह्य कष्ट दिये थे। इनको सुनकर धर्माध्यक्षा के चेहरे पर क्षोभ के चिन्ह दिखलाई दिये। इससे ग्लैडी यह ताड़ गई कि धर्माध्यक्षा राजा के पक्ष को पसंद करती है। यह निश्चित हो जाने पर ग्लैडी ने अब वार्तालाप का ढंग बदल दिया; परंतु उसी विषय को जारी रखते हुए धर्माचार्य के दोषों का समर्थन करनेवाली घटनाओं का अधिक वर्णन करना शुरू कर दिया।

धर्माध्यक्षा से अब अधिक न रहा गया, उसने कहा—"इन घटनाओं से तो मैं बिलकुल अनभिज्ञ हूँ; परंतु सांसारिक जीवन से नितांत अनभिज्ञ होते हुए भी हमको इस जीवन का बड़ा कटु अनुभव हुआ है। यद्यपि यह अनुभव हमको प्रत्यक्ष नहीं हुआ तथापि हमारे धर्म-मंदिर की कुछ धर्म-सेविकायें ऐसी हैं, जो धर्माचार्य के भीषण अत्याचार की शिकार हो चुकी हैं। उनके द्वारा बाहरी संसार की हमको कुछ-कुछ झलक मिल गई है।

ग्लैडी—"आपकी धर्म-सेविकायें? ओह! मुझे उन बिचारियों पर दया आती है! वे सचमुच सच्ची दया की पात्री हैं?"

धर्मा०—"आपका कथन सत्य है। वे वास्तव में अतीव दुखिता हैं। उनमें से एक को तो बड़ी-बड़ी यंत्रणायें दी गई हैं। अनेक यातनायें उसे सहन करनी पड़ी हैं! परंतु तिस पर भी यह नहीं कहा जा सकता कि धर्माचार्य इस विषय में पूर्ण दोषी हैं। संभव है ऐसा उनको किसी विशेष उद्देश्य से प्रेरित होकर करना पड़ा हो। यद्यपि वह रमणी देखने में देवी-सी जान पड़ती है तथापि हम सदा चेहरा देखकर ही किसी के चरित्र का निर्णय नहीं कर सकतीं।"

ग्लैडी ने सोचा कि इस बात से संभव है, मैं किसी नई बात का

पता लगा सकूँ। यह रमणी कौन है ? इसका कुछ-कुछ अनुमान तो मुझे हो रहा है, आगे चलकर और भेद खुलेगा, इसलिये इसी विषय को जारी रखते हुए उसने कहा—"यह तो सच है ; परंतु यदि चेहरे पर विश्वास न करें, तो फिर और किस वस्तु पर विश्वास किया जाय। मुख ईश्वर की सर्वसुंदर रचना है। हृदय के भावों की झलक चेहरे ही से मिल सकती है। किसी दयनीय व्यक्ति का चेहरा देखते ही मेरा हृदय तो करुणा और समवेदना से भर जाता है।"

धर्मा०—"तो क्या तुम निश्चित रूप से कह सकती हो कि यह रमणी सर्वथा निर्दोष है ?"

ग्लैडी—"आह ! धर्माचार्य सदा अपराधियों ही को दंड नहीं देते। अनेक ऐसे निरपराधी धर्मपरायण व्यक्ति हैं, जो उनके हाथों अगणित व्यथायें और निष्ठुर व्यवहार सहन कर चुके हैं।"

धर्माध्यक्ष को इस उत्तर से अत्यंत आश्चर्य हुआ उसने सोचा—क्या यह रमणी धर्माचार्य के विरुद्ध है। इसी लिये उसने पूछा—"क्या आप धर्माचार्य की विरोधिनी है।"

ग्लैडी०—"हाँ ! और इसका कारण है। मुझे भी उसने अनेक कष्ट दिये हैं।"

धर्मा०—"परंतु यह सिफ़ारिशी चिट्ठी ?"

ग्लैडी०—"यह इसलिये है कि मैं यहाँ बंदी जीवन व्यतीत करूँ और अपने जीवन की अंतिम घड़ियाँ गिनकर यहीं जीवन-लीला समाप्त कर दूँ।"

धर्मा०—"परंतु तुम तो भाग सकती थीं ?"

ग्लैडी०—"यह इतना सरल नहीं है। मैं लाख भागना चाहूँ ; परंतु भागकर कहाँ जा सकती हूँ ? क्या संसार में कोई ऐसा स्थान है, जहाँ धर्माचार्य की विशाल भुजायें न पहुँच सकती हों ? और फिर

मुझ निस्सहाय अबला को भला कौन आश्रय देगा ! क्या आपकी उस धर्म-सेविका ने कभी भागने का प्रयत्न किया है ?"

धर्मा०—"यह ठीक बात है ; परंतु हाँ ! उस महिला की बात दूसरी है । वह तो प्रेम-संबंध ही के कारण यहाँ अब तक टिकी है ।"

म्लैडी को रहस्य की गुत्थी कुछ सुलझती हुई दिखाई पड़ी । उसने एक निश्वास लेकर कहा—"आह ! तब तो वह सुखी है । मेरी भाँति नितांत दुःखिनी नहीं है ।"

धर्माध्यक्षा का हृदय पसीज उठा, उसने कहा—"तब तो आज मैं एक और दुःखिनी अबला को आश्रय दे रही हूँ ।"

इसका उत्तर म्लैडी ने एक शोक-पूर्ण उच्छ्वास लेकर दिया । धर्माध्यक्षा क्षण भर कुछ सोचती रही, उसके मन में एक नवीन प्रश्न उदय हुआ, उसने पूछा—"आप किस धार्मिक सम्प्रदाय को मानती हैं ?"

म्लैडी इस प्रश्न का अभिप्राय समझ गई । उसने तत्क्षण कहा—"मैं, मैं तो कैथोलिक धर्म की अनुयायिनी हूँ ।"

धर्माध्यक्षा के चेहरे पर प्रसन्नता झलकने लगी । उसने उत्साहित होकर कहा—"तब आप निश्चिंत रहिये । यह भवन जिसमें आप बंदी के रूप में भेजी गई हैं आपको स्वर्गीय स्थान मालूम होगा । यहाँ आपको किसी प्रकार का कष्ट न हो सकेगा । हम यथासाध्य आपकी वेदना को कम करने का प्रयत्न करेंगी । मैं आप से उस रमणी की भेंट करा दूँगी, जो आपकी ही भाँति अनेक कष्ट सहन कर चुकी है । आह ! आप उसको देखकर प्रसन्न हो उठेंगी । वह सचमुच देवबाला है । अत्यंत भोली लड़की है ।"

"उसका नाम क्या है ?" म्लैडी ने आतुर होकर पूछा ।

"वह यहाँ किटी के नाम से प्रसिद्ध है ?"

"किटी ! क्या आपको ठीक मालूम है कि उसका यही नाम

है ?" ग्लैडी किटी के नाम से चौंक पड़ी। वह जिस स्त्री की कल्पना कर रही थी, वह कोई दूसरी रमणी निकली। किटी तो उसकी पुरानी परिचारिका रह चुकी है, वह यहाँ कैसे और क्योंकर आई ? यह ग्लैडी के लिये अत्यंत आश्चर्य की बात थी और फिर किटी तो कभी धर्माचार्य द्वारा सताई नहीं गई, धर्माचार्य तो किटी को कभी जानता भी नहीं था। यह क्या रहस्य है ? ग्लैडी की कुशाग्र बुद्धि भी इसको न समझ सकी। इसीलिये अत्यंत आश्चर्य से ग्लैडी चौंक पड़ी थी।

ग्लैडी के आश्चर्य करने पर धर्माध्यक्षा ने प्रश्न किया—"क्या किटी को तुम जानती हो ?"

अपने आश्चर्य के भाव को छिपाकर ग्लैडी ने उदासीनता प्रकट करते हुए कहा—"नहीं ! मैं तो बिलकुल अपरिचित हूँ। यह नाम अत्यंत विचित्र है, इसी पर मुझे आश्चर्य हुआ।"

ग्लैडी ने विषय बदलते हुए पूछा—"तो उस देवबाला से कब परिचय कराइयेगा ? उनसे मिलने के लिये मैं बहुत उत्कंठित हूँ।"

"आज ही सायंकाल को आपसे उसे मिलाऊँगी। आज आप चार दिन की यात्रा करके यहाँ पहुँची हैं। थक गई होंगी। कुछ घंटे विश्राम कर लीजिये।

धर्माध्यक्षा चली गईं। ग्लैडी को नवीन चिंताओं ने आ घेरा। यहाँ आकर उसे बहुत-सी नई बातें मालूम हुई थीं। उन्हीं पर सोच-विचार करती हुई यात्रा की थकावट के कारण ग्लैडी पलँग पर लेटते ही सो गई।

तीसरे पहर को एक अत्यंत सुरीले स्वर ने उसको सोते से जगा दिया। जब उसने नेत्र खोले, तो सामने धर्माध्यक्षा एक सुंदर महिला के साथ खड़ी मिलीं। वह प्रसन्न होकर उठकर खड़ी हो गई। वह बड़ी देर तक उस रमणी की ओर घूरती रही; परंतु उसको यह जानकर अत्यंत आश्चर्य हुआ कि उस रमणी का चेहरा उसके लिये

बिलकुल अपरिचित था। उसने अपनी स्मृति पर बहुत ज़ोर दिया; परंतु उसकी याद में यह चेहरा कभी उसकी आँखों से नहीं गुज़रा था। यह किटी नहीं है, इस विषय में तो वह निश्चित थी, तब यह कौन रमणी है ? यह प्रश्न बार-बार उसके मनमें उठा; परंतु इसका उत्तर वह न सोच सकी।

ग्लैडी जिस भाँति आश्चर्य से उसको देख रही थी, उसी भाँति वह भी बहुत देर तक ग्लैडी को देखती रही। उसकी चेष्टा से यह स्पष्ट प्रकट होता था कि ग्लैडी उसके लिये बिलकुल अपरिचित है।

धर्माध्यक्षा ने दोनों का एक-दूसरे से परिचय कराया, इसके पश्चात् वह किसी कार्यवश वापस लौट गई।

ग्लैडी और वह रमणी अकेली रह गईं। दोनों में बातें होने लगीं। उस रमणी ने कहा—"आह ! आज आपकी जैसी सहचरी पाकर मैं कितनी प्रसन्न हूँ ? छैः महीने से मैं यहाँ एकांत सेवन कर रही हूँ। यहाँ का जीवन बड़ा नीरस है, विनोद की कोई सामग्री नहीं। अब आपके साथ तबियत बहल जावेगी; परंतु मुझे दुःख है कि आपका साथ अधिक दिनों तक न रख सकूँगी। न मालूम मैं किस समय यहाँ से चल खड़ी हूँ।"

"तो क्या आप कहीं जानेवाली हैं ?"

"हाँ ! मुझे आशा तो ऐसी ही है।" रमणी ने प्रसन्न होकर कहा।

"मेरा ख़्याल है कि आप भी मेरे ही समान धर्माचार्य द्वारा सताई गई हैं। यह समान तत्व हमारे और आपके बीच में मैत्री-संबंध स्थापित कर सकेगा ?"

"अवश्य ! मैं तो अत्यंत प्रसन्न हूँ, मैंने धर्ममाता से सुना है कि आप भी मेरी ही भाँति चिर-दुःखिता हैं।"

"ओह ! अब उन कष्टों की चर्चा न कीजिये ! मेरे साथ बड़ा

विश्वासघात किया गया। यह हृदय दुःखों की आग से झुलस गया है ; क्या आप भी परित्यक्ता हैं ?"

"नहीं ! मुझे तो अपने प्रेम के कारण कष्ट सहने पड़े, मैं एक स्त्री को हृदय से प्यार करती थी ! आह ! उसके लिये मैं अब भी प्राणोत्सर्ग कर सकती हूँ।"

"तो उसने आपकी कुछ सहायता नहीं की ?"

"अब तक मेरा यही विचार था कि उसने मेरी ख़बर लेनी छोड़ दी। परंतु नहीं ! यह मेरा अन्याय था। अभी दो-तीन दिन हुए मुझे इसका प्रमाण मिला कि वह मुझको नहीं भूली। वह मेरी मुक्ति ही की बराबर चेष्टा करती रही। परंतु आप बिलकुल स्वतंत्र मालूम होती है ? यदि आप यहाँ से मुक्त होना चाहें, तो मैं इसका प्रबंध कर सकती हूँ।"

"आप मुझे कहाँ ले जायँगी ? बिना धन और सहायक मित्रों के मैं कहाँ भटकती फिरूँगी ? यह फ्रांस देश तो मेरे लिये बिलकुल अपरिचित है, मुझे तो कहीं आश्रय भी नहीं मिलेगा ?"

"ओह ! इसकी आप चिंता न कीजिये। आपको धन और जन की कमी न रहेगी ? कहीं-न-कहीं आश्रय मिल ही जायगा। हमको परमात्मा पर विश्वास रखना चाहिए। हर्ष की बात है कि मेरे कई शक्तिशाली मित्र मेरी सहायता को आनेवाले हैं, उन्हीं की सहायता से आप भी मुक्त हो सकती हैं। मेरा अभिप्राय यह नहीं था कि मैं मित्रों से रहित हूँ। परंतु ये मित्र चाहे कितने ही शक्तिशाली हों, धर्माचार्य की शक्ति के आगे कुछ नहीं कर सकते। धर्माचार्य से तो फ्रांस की रानी भी डरती हैं। मेरे पास इसके प्रमाण हैं कि रानी ने अपने उन मित्रों को भी छोड़ दिया, जिन पर धर्माचार्य की क्रूर-दृष्टि पड़ गई थी।"

"परंतु मुझपर विश्वास कीजिये, संभव है रानी ने उनको छोड़

दिया हो, हमको सदा वस्तु के बाहरी रूप ही को देखकर नतीजा नहीं निकालना चाहिए। आपत्ति-ग्रस्त व्यक्तियों पर रानी सदा कृपा रखती हैं।"

"आप ठीक कहती हैं। रानी स्वभाव ही से दयावती हैं, उनके हृदय की दया का अक्षय भंडार सदा दयनीय व्यक्तियों के लिये खुला रहता है।"

"तो क्या आप उनको जानती हैं?"

"आह! ऐसी आदर्श-चरित्रा देवी को कौन नहीं जानता? परंतु मैं स्वयं उनसे परिचित नहीं हूँ, उनके कई मित्रों द्वारा उनके उज्ज्वल गुणों को सुनती रही हूँ। मैं उनके डी० पुटेंज, एम० डुजार्ट डी० त्रिबली इत्यादि अनेक मित्रों को जानती हूँ।"

"डी० त्रिबली! क्या आपका डी० त्रिबली से परिचय है?"

"भली भाँति, मेरा उनसे घनिष्ठ संबंध है?"

"आह! तब तो हम दोनों का पुराना संबंध निकल आया। जब उनसे आप परिचित हैं, तब तो आप उनके तिलंगों को भी जानती होंगी?"

"हाँ! मैं लोविग्नी, कोर्हिबरान और फ़िरोज़क इत्यादि तिलंगों को जानती हूँ?"

"क्या आप अथास को जानती हैं?"

अथास का नाम सुनकर ग्लैडी का चेहरा काला पड़ गया, वह अत्यंत घबड़ा गई। उसके मुख से एक भयप्रद चीत्कार निकल पड़ा। भय और आश्चर्य से ग्लैडी तीव्र-दृष्टि से उस रमणी की ओर देखने लगी।

रमणी चकित दृष्टि से देखती हुई बोली—"यह आपको क्या होगया! आप तो रुग्ण मालूम होती हैं? मेरे किसी शब्द से तो आपके हृदय को चोट नहीं पहुँची?"

"नहीं ! मैं भी इस व्यक्ति को जानती हूँ। मुझे आश्चर्य इस बात पर हुआ कि जिन-जिन व्यक्तियों को मैं जानती हूँ, उनको तुम भी जानती हो, यह कितना सुंदर संयोग है ?"

"मैं केवल इन्हीं को नहीं जानती, अर्मस और पार्थ को भी जानती हूँ।"

"ओह ! कितने हर्ष की बात है, मैं भी इनको जानती हूँ। परंतु मेरा इनसे कोई विशेष परिचय नहीं है, आर्तगान के मुख से मैंने इन लोगों के नाम सुने हैं।"

अबकी बार धर्म-सेविका की बारी थी। जिस भाँति म्लैडी अथास का नाम सुनकर भयभीत हो गई थी, उसी भाँति उसके मुख से आर्तगान का नाम सुनकर वह चौंक पड़ी। उसके मन में यह विचार आया कि म्लैडी आर्तगान की प्रेमिका है, इसी कारण इतने यत्न से उसका नाम अब तक छिपा रही थी। आंतरिक भय और वेदना से उसका हृदय तिलमिला उठा। ईर्ष्या की तीव्र ज्वाला उसको जलाने लगी। उसने आश्चर्य-युक्त दृष्टि से म्लैडी की ओर ताकते हुए पूछा—"क्या आप आर्तगान को जानती हैं ?"

"हाँ ! मैं जानती हूँ। परंतु आपको इतना आश्चर्य क्यों हुआ ?"

"आश्चर्य ! आश्चर्य क्यों न हो ? आप मुझे धोखा देती हैं ? आप उसकी प्रेमिका हैं।"

म्लैडी समझ गई कि यह रमणी कौन है ? अब तक दोनों रमणियाँ अपने-अपने दाँव-पेंच से बातें करती थीं। बातें करने की कला में दोनों निपुण थीं, अपने रहस्य को छिपाकर दूसरे के हृदय को थाह लेने के प्रयत्न में दोनों कुशल थीं ; परंतु म्लैडी जैसी धूर्त रमणी उस समय योरोप भर में न थी, दूर-दर्शिणी म्लैडी ने उस मर्म स्थान पर चोट पहुँचाई, जिसकी वेदना को वह सहन न कर सकी और शीघ्र ही खुल गई। म्लैडी के हृदय में प्रतिकार की ज्वाला भभक

उठी। उसने उत्तेजित होकर तिरस्कार व्यंजक ढंग से कहा—"मैडम ! उसकी प्रेमिका तुम रह चुकी हो ?"

"मैं ?" आश्चर्य से आँखें फाड़कर रमणी ने कहा।

"हाँ ! हाँ ! तुम मैं तुमको जानती हूँ, तुम ओनैसी की पत्नी कांसटेंस हो !"

कांसटेंस अत्यंत भयभीत होकर पीछे हट गई। वह अवाक् होकर भय और आश्चर्य-युक्त नेत्रों से म्लैडी के मुख को घूरती रही।

"उत्तर दो ! तुम इंकार नहीं कर सकतीं।" म्लैडी ने डाटकर पूछा।

"हाँ ! मैं वही हूँ ? हा ! हम दोनों सौतें निकलीं।"

ईर्ष्या की भीषण ज्वाला से जलती हुई कांसटेंस के चेहरे पर कालिमा छा गई। रोष के उद्वेग में उसने कहा—"मैडम ! चुप क्यों हो ? तुम क्या कभी उसकी प्रेमिका रही हो ?"

म्लैडी ने दृढ़ता से कहा—"नहीं ! कदापि नहीं !"

कांसटेंस ने शांत पड़कर कहा—"तब तुम क्यों चिल्ला पड़ी थीं ?"

"क्या तुम नहीं समझ सकीं, यह तो बहुत सीधी बात है ! आर्तगान मेरा मित्र है, उसीसे ये सब बातें मुझे मालूम हुईं।"

मुझसे तुम्हारी कोई बात भी छिपी नहीं है। मैं जानती हूँ कि तुम सेंट जर्मेन से भगाई गईं, आर्तगान और उसके साथियों ने बहुत खोज की ; परंतु तुम न मिलीं। इसीलिये जब मैंने तुमको यहाँ देखा, तो मैं आश्चर्य से चौंक उठी। उस रमणी को जिसे उसका मित्र इतना प्रेम करता हो, जिसके संबंध में उससे घंटों वार्तालाप हुआ हो, यहाँ इस अवस्था में देखकर कौन आश्चर्य न करेगा ? अहा ! कांसटेंस ! मैं तुमको यहाँ पाकर अत्यंत प्रसन्न हुई हूँ !" यह कहकर म्लैडी ने आलिंगन के लिये बाहें फैला दीं। कांसटेंस ने म्लैडी को आलिंगन किया और कहा—"मैंने बड़ी भूल की, मुझे क्षमा प्रदान करो ! बहन मैं उन्हें बहुत प्यार करती हूँ ! मैं उन्हीं के गुणों की चिंता में तन्मय रहती हूँ।"

एक क्षण तक दोनों रमणियाँ एक-दूसरे से लिपटी रहीं। यदि ग्लैडी के शरीर में उतना ही बल होता, जितनी कि उसके हृदय में घृणा थी, तो इस समय वह कांसटेंस को अपनी भुजाओं से पीस डालती। परंतु वह ऐसा करने में असमर्थ थी, इसीलिये उसने हृदय में उमड़ती हुई घृणा और प्रतिकार की ज्वाला को दबाकर मुख पर मधुर मुसकान धारण करके कहा—"आज कितने आनंद का दिन है। मैं तुमको पाकर अत्यंत प्रसन्न हुई हूँ। इतने दिनों से अपने मित्र की प्रेमिका से भेंट करने के लिये मैं लालायित थी, वह कामना आज सफल हुई।"

कांसटेंस ने शोकपूर्ण स्वर में कहा—परंतु मेरा दंड कल समाप्त हो जायगा। कल सायंकाल को शायद मुझे वे दर्शन देंगे। अहा! कल इसी समय मेरे अतीत जीवन के सब दुःख नष्ट हो जायँगे।"

इन शब्दों से ग्लैडी चौंक पड़ी—"कल सायकाल को! क्या तुमको कोई सूचना मिली है?" उसने कहा—"हाँ! वह स्वयं आयेंगे।"

"स्वयं? आर्तगान यहाँ स्वयं आयेंगे?" ग्लैडी ने आश्चर्य से पूछा।

"यह तो असंभव है। वह तो इस समय युद्धक्षेत्र में होंगे। युद्ध-समाप्ति के पूर्व तो वह यहाँ आ ही नहीं सकते।"

"मेरे प्रेमी आर्तगान के लिये कोई बात असंभव नहीं।"

"मुझे तो विश्वास नहीं होता।"

"विश्वास! यह पत्र देखो।" आह्लाद और गर्व के आवेश में सरला कांसटेंस ने ग्लैडी के हाथ में एक पत्र रख दिया। ग्लैडी ने पत्र पर दृष्टिपात करते ही विस्मित होकर अपने मन में कहा—यह लिखावट तो मैडम डी० कैवरीस के हाथ की मालूम होती है। आह! मुझे इस ओर षड्यंत्र का संदेह पहले ही से होता था। ग्लैडी ने अत्यंत उत्सुकता के साथ पत्र पढ़ा—

"मेरी प्यारी सखी,

तैयार हो जाओ। हमारे मित्र तुम्हारे पास शीघ्र ही आवेंगे और

जिस बंदीगृह में तुम अब तक गुप्तरूप से रह रही हो, वहाँ से शीघ्र तुमको मुक्त करेंगे। अतः यात्रा का सब प्रबंध पहले ही से कर रखना।

हमारे हँसमुख गैस्कन युवक ने अत्यंत वीरता और साहस का काम किया है। उससे कह देना कि उपकृत व्यक्ति उसके अत्यंत कृतज्ञ हैं।"

इस पत्र के नीचे पत्र लिखने वाले का नाम नहीं था।

म्लैडी जो कांसटेंस के भोलेपन पर मन-ही-मन हँस रही थी, मुदित मन हो बोली—"हाँ! हाँ! यह पत्र तो विश्वासोत्पादक है। क्या तुम जानती हो कि आर्तगान के किस वीर कार्य का इसमें निर्देश है?"

"नहीं! यह मैं नहीं जानती; परंतु मेरी धारणा है कि शायद उन्होंने धर्माचार्य के किसी नवीन षड्यंत्र की सूचना राजमहिषी को दी है।"

"ओह! ठीक, निस्संदेह यही बात है।" म्लैडी गंभीर चिंतामें पड़ गई।

परंतु इसी समय घोड़ों की टाप का शब्द सुनाई दिया। कांसटेंस के शरीर में बिजली-सी पैदा होगई, वह हर्षोत्फुल्ल नेत्रों से बाहर की ओर ताकने लगी। उसने कहा—"अहा! वही तो नहीं आ रहे।"

म्लैडी आश्चर्य के सागर में डूबी थी। उसको आज इतनी अज्ञात घटनायें आकस्मिक रूप से मालूम हुई थीं कि वह क्षण भर के लिये किंकर्तव्य-विमूढ सी हो गई। कांसटेंस के हर्षोद्गार ने उसका ध्यान तोड़ा। वह उत्सुक नेत्रों से बाहर की ओर देखने लगी। यदि इस समय आर्तगान ही सचमुच आ गया, तो वह कितने संकट में पड़ जायगी। यह विचार बिजली की भाँति उसके मनमें दौड़ गया। इस भय से उसका हृदय धड़कने लगा। माथा पसीने से भीग गया। परंतु इसी समय कांसटेंस पुकार उठी, वह नहीं हैं! यह तो कोई और है? परंतु हैं! वह इधर ही क्यों आ रहा है?"

यह सुनकर म्लैडी उठकर खड़ी हो गई। उसने देखा कि वास्तव में एक व्यक्ति उन्हीं की ओर आ रहा है। जब वह व्यक्ति कुछ और आगे बढ़ आया, तो म्लैडी के नेत्र चमक उठे, वह शीघ्रता के साथ

कपड़े पहनने लगी ; परंतु कांसटेंस पर अपने भाव प्रकट न होने पावें इसलिये उसको बातों में लगाये रक्खा।

"क्या तुमको विश्वास है कि यह वह नहीं है ?"

"ओह ! क्या मैं अपने हृदयेश्वर के पहचानने में कभी भूल कर सकती हूँ ?"

"परंतु वह तो इसी ओर आ रहा है ?"

"आह ! वह देखो उसने धर्म-मंदिर में प्रवेश किया।"

दोनों क्षण भर चुप रहीं। इसी समय द्वार खुला और धर्माध्यक्षा ने प्रवेश किया। आते ही उसने ग्लैडी से प्रश्न किया—"क्या तुम बोलोन से आ रही हो ?"

ग्लैडी ने सँभल कर कहा—"मुझे कौन बुलाता है ?"

"एक पुरुष ; परंतु वह अपना नाम बतलाना नहीं चाहता। वह धर्माचार्य के पास से आ रहा है।"

"तो कृपाकर उसको यहाँ भेज दीजिये।"

कांसटेंस भय की आशंका से चिल्ला पड़ी—"आह ! ईश्वर ! क्या फिर कोई नवीन विपत्ति आ रही है ?"

ग्लैडी का ध्यान इस ओर न था। अनन्यमनस्का ग्लैडी को कमरे में अकेली छोड़कर चली गई। ग्लैडी कमरे में अकेली रह गई। उसकी उत्सुक दृष्टि द्वार की ओर लग गई। एक क्षण के पश्चात् द्वार खुला और एक पुरुष ने कमरे में प्रवेश किया।

ग्लैडी हर्ष से चिल्ला उठी। यह व्यक्ति धर्माचार्य का बायाँ हाथ डी० राकफ़ोर्ट था।

"ओहो !" ग्लैडी और राकफ़ोर्ट दोनों चिल्ला पड़े—"क्या तुम हो ?"

"कहाँ से आ रहे हो ?" ग्लैडी ने पूछा।

"राशेल से ; और तुम ?"

"इंगलैंड से।"

"बकिंघम ?"

"वह या तो मर चुका या मरनेवाला है, इनमें से क्या हुआ यह निश्चित रूप से नहीं बतला सकती, प्राणांतक आघात लग चुका है, यह सुनकर ही मैं चल पड़ी थी।"

'ओह !' राकफ़ोर्ट ने मुस्कराते हुए कहा—"कितना अच्छा सुयोग है ? धर्माचार्य आनंद में डूब जायँगे। उनको सूचना दे दी है ?"

"मैंने बोलोन से एक पत्र लिखा है ; परंतु तुम यहाँ कैसे आये ?"

"धर्माचार्य अत्यंत व्यग्र थे। उन्होंने मुझे तुम्हारा पता लगाने के लिये भेजा है।"

"मैं कल ही तो यहाँ आई हूँ।"

"कल से यहाँ क्या कर रही हो ?"

"व्यर्थ समय नष्ट नहीं किया।"

"इसका तो मुझे विश्वास है।"

"यहाँ आकर एक रमणी का पता लगाया है।" जिसको रानी ने बंदीगृह से उड़वा दिया था "

"क्या आर्तगान की प्रेमिका ?"

"हाँ ! मैडम कांसटेंस, जिसके ग़ायब हो जाने का हाल धर्माचार्य को आज तक न चल सका।"

"अहा ! यह तो बहुत बड़ा आनंद समाचार है। निस्संदेह रिचलू अत्यंत भाग्यशाली है। परंतु क्या वह तुमको पहचानती है ?"

"नहीं !"

"तब तो वह तुमको अजनबी समझती होगी ?"

म्लैडी मुस्कराई—कहा—"मैं उसकी सबसे अधिक विश्वासपात्र मित्र हूँ।"

राकफ़ोर्ट आनंद से फूल गया। उसने हँसकर कहा—म्लैडी ! तुम अत्यंत विचित्र हो ? यह चमत्कार किसी अन्य रमणी में नहीं है।"

"आर्तगान और उसके साथी उसको लेने आ रहे हैं। उसके पास रानी का आज्ञा-पत्र है ?"

"क्या अब उनका इतना साहस होगया ? मालूम होता है, उनको कारागृह भिजवाना पड़ेगा।"

"ऐसा अब तक क्यों नहीं हो सका ?"

आह ! यह धर्माचार्य की दुर्बलता है। वे इन लोगों के विरुद्ध कुछ करना ही नहीं चाहते।"

"या कर नहीं सकते ?"

"यह भी सत्य हो सकता है; परंतु वहीं तक, जहाँ तक वे दया के अक्षय भंडार हैं।"

"ख़ैर ! उनसे कह देना कि दया छोड़ें। उनसे यह भी कहना कि डावकाट के पथिकाश्रम में हम दोनों में जो बातें हुई थीं, उन सबको इन चार तिलंगों ने सुन लिया था और जैसे ही तुम मेरे पास से गये, उनमें से एक मेरे पास आया और ज़बरदस्ती मेरे हाथ से वह अधिकार-पत्र छीन लिया, जो तुमने मुझे प्रदान किया था। इसके बाद उन्होंने लार्ड डी० विंटर को मेरी इंगलैंड-यात्रा की ख़बर दे दी। इस बार भी उन्होंने हीरेवाली घटना की ही भाँति हमारे उद्देश्यों पर पानी फेर दिया। इन चार तिलंगों में आर्तगान और अथास ही सबसे अधिक भयंकर हैं। इनका तीसरा साथी अर्मस मैडेम डी० कैवरीस का प्रेमी है, इसके विषय में बहुत अधिक चिंतित होने की आवश्यकता नहीं और चौथे साथी पार्थ की तो हमको बिल्कुल चिंता ही नहीं करनी चाहिए, वह मूर्ख, बातूनी और निकम्मा है।"

"परंतु ये चारों लोग तो राशेल में होंगे ?"

"मेरी भी यही धारणा थी; परंतु कांसटेस के पास मैडेम कैवरीस का एक पत्र आया है, जिसको उस मूर्खा ने मुझे दिखा दिया है। इस पत्र से यह पता लगा है कि ये लोग आज या कल में यहाँ आ जायँगे।"

"ऐं ! ग़ज़ब हो गया।" भय और आश्चर्य से राकफ़ोर्ट चिल्ला उठा।

"धर्माचार्य ने तुमको किस लिये भेजा है।"

"उनके आदेश हैं कि मैं तुम्हारे ज़बानी या लिखे हुए सब संवाद डाक द्वारा उनको भेजूँ और नवीन आदेशों के अनुसार हम और तुम यहाँ की कार्य-विधि का संचालन करें। यहाँ के किसी अन्य निकटवर्ती स्थान में तुम्हें रहना होगा ?"

"तुम अपने साथ मुझको नहीं ले चलोगे ?"

"नहीं ! इस विषय में तो आदेश स्पष्ट है। युद्ध-क्षेत्र में तुम पहचान ली जाओगी और तब सब किया-धरा मिट्टी हो जायगा।"

"तो मुझे यहीं कहीं ठहरना होगा।"

"अवश्य, परंतु यह मुझे पहले ही बतला दो कि तुम किस स्थान पर रहकर धर्माचार्य के समाचारों की प्रतीक्षा करोगी ?"

"मैं यहाँ तो ठहर नहीं सकती, न मालूम शत्रु कब आ धमकें।"

"यह ठीक है। परंतु यह तो बतलाओ कि क्या यह रमणी अब योंही हाथ से निकल जायगी ?"

म्लैडी मुस्कराने लगी। उसने हँसकर कहा—"तुम यह भूल गये कि मैं उसकी अभिन्न-हृदया सखी हूँ ?"

"ओह ! यह मैं भूल गया था। अच्छा, तो मैं धर्माचार्य से जाकर यह कहूँगा कि······।"

इस रमणी के विषय में वे निश्चिंत होजायँ। इसका अभिप्राय वे समझ जायँगे।"

"और कुछ तो नहीं कहना है ?"

"बस यह समाचार ही शीघ्रता से उनके पास पहुँच जाना चाहिए।"

"निश्चिंत रहो, मैं अभी लौटता हूँ, परंतु कुछ देर अवश्य हो जायगी; क्योंकि मार्ग में मेरी गाड़ी टूट गई है।"

"गाड़ी ? गाड़ी की तो मुझे ज़रूरत है।"

"तो मैं किस पर जाऊँगा ?"

"घोड़े पर।"

"घोड़े पर ? अच्छा तो यही सही, और कुछ ?"

हाँ ! और भी कुछ है। गाड़ी के साथ अपने नौकर को भी भेजना होगा, शायद धर्माचार्य ने तुमको अधिकार-पत्र भी दिया होगा ?"

"हाँ ! मेरे पास अधिकार-पत्र है ?"

"इसको दिखाकर धर्माध्यक्षा से कहना कि एक मनुष्य कल या परसों यहाँ आकर म्लैडी को ले जावेगा, यह याद रखना कि धर्माध्यक्षा के सामने मेरे साथ बहुत सख़्ती का व्यवहार किया जाय। "उसकी दृष्टि में मैं धर्माचार्य के हाथों सताई हुई दुःखिनी अबला हूँ। कांसटेंस का विश्वास और सहानुभूति हस्तगत करने के लिये यही उपाय मैंने रचा है।"

"आह ! म्लैडी, तुमको विधना ने सराहनीय बुद्धि दी है। अच्छा ! तो मैं तुम्हारी कहाँ प्रतीक्षा करूँ ?"

"देखो ! सोचकर बताती हूँ ; हाँ ! वही स्थान उचित होगा, आर्मेनटियर्स ! वहीं मेरी प्रतीक्षा करना।"

"आर्मेनटियर्स ! यह स्थान कहाँ है ?

"यह सीमा प्रांत में लीम्स नदी के किनारे एक क़स्बा है। भय की आशंका होने पर मैं शीघ्र ही नदी पार करके फ्रांस-राज्य के बाहर हो सकती हूँ।"

"यदि ऐसा ही करना पड़ा, तो मुझे कैसे मालूम होगा ?"

"तुमको अपने अनुचर की तो आवश्यकता है नहीं ?"

"नहीं।"

"आदमी विश्वास-पात्र है ?"

"निस्संदेह।"

"तो उसको मुझे दे देना, उसे कोई जानता भी न होगा, मैं जब जाने लगूँगी, उसे वहीं छोड़ दूँगी, वह तुमको मेरे पास पहुँचा देगा।"

"अच्छा ! तो तुम किस स्थान पर रुकोगी ? मैं नाम ही भूल गया । उसका नाम है भी विचित्र ।"

म्लैडी ने मुस्करा कर कहा—"परचे पर मैं नाम लिखे देती हूँ, वैसे याद भी रखना, वह नाम आर्मेनटियर्स है ?"

राकफ़ोर्ट ने परचा लेकर अपने टोप में रख लिया ।

म्लैडी कुछ सोचने लगी । कुछ याद करके बोली—"एक काम और करना । धर्माध्यक्ष से चलते समय कहते जाना कि मैं स्वतंत्र रूप से इस पाई बाग़ में घूम फिर सकती हूँ, मेरे इस काम में वह बाधा न पहुँचायें । क्या मालूम कि बाग़ के गुप्त-द्वार से ही मुझे भागना पड़े ?" यहाँ की स्थिति बड़ी संकटमय है । हाँ, मुझे कुछ रुपए भी चाहिए हैं ।"

राकफ़ोर्ट ने पाँच सौ स्वर्ण सिक्के निकालकर म्लैडी को दिये ।

आध घंटे बाद राकफ़ोर्ट घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ धर्म-मंदिर से निकला । और पाँच घंटे बाद अरास होकर गुज़रा ।

हमारे पाठक यह जानते हैं कि अरास में आर्तगान ने इस अश्वारोही को पहचान लिया था और इसी स्थान पर म्लैडी द्वारा दिया हुआ परचा उसके अधिकार में आ गया । अरास की इस घटना ने हमारे तिलंगों की यात्रा-प्रवृत्ति को उत्तेजित कर दिया था ।

५१

रात कफ़ोर्ट के जाने के आध घंटे बाद कांसटेंस ने कमरे में प्रवेश किया, ग्लैडी मुसकरा रही थी। कांसटेंस ने प्रवेश करते ही कहा—"तुम्हारी आशंका सत्य निकली। जो सोचा था, वही हुआ, आज ही शाम तक या कल धर्माचार्य के आदमी तुमको लिवा जाने के लिये आवेंगे।"

ग्लैडी ने विस्मित-सी होकर पूछा—"तुमसे किसने कहा?"

"मैंने उस आगंतुक दूत के मुँह से स्वयं सुना है।"

"आह! मेरा दुर्भाग्य, ग्लैडी ने उठकर द्वार बंद कर लिया, तब कहा—"उसने बड़ी अच्छी चाल चली।"

"किसने"

"उसने धर्माध्यक्ष से अपने आपको धर्माचार्य का दूत बतलाया है?"

"तो क्या वह धर्माचार्य का दूत नहीं है?"

"नहीं, यही तो उसकी चाल है।"

"तो वह और कौन है?"

"मेरा भाई?" ग्लैडी ने अपने स्वर को धीमा करके उत्तर दिया।

"तुम्हारा भाई?" कांसटेंस आश्चर्य से ग्लैडी का मुँह ताकने लगी।

"हाँ! वह मेरा भाई है परंतु देखो, यह भेद किसी पर प्रकट

न हो ? यदि इसकी सूचना दूसरों को मिल गई, तो हमारा और तुम्हारा सर्वनाश हुआ रक्खा है।"

कांस्टेंस बोली—"ओह ! कभी नहीं।"

सुनो, सच्ची बात यों है, मुझको छल, बल और किसी भी उपाय से छुड़ाने का विचार करके मेरा भाई यहाँ आ रहा था। मार्ग में धर्माचार्य के दूत से अकस्मात् उसकी भेंट होगई। मेरा भाई उसका पीछा बराबर करता रहा। समय पाकर एक जंगल में उसने दूत से धर्माचार्य के गुप्त संदेश-वाहक पत्र माँगे; उसने इंकार किया, मेरे भाई ने क्रोध में आकर उसको वहीं तलवार के घाट उतार दिया।"

"ओह !" कांसटेंस काँप उठी।

"क्या किया जाय, इसके लिये केवल यही एक मार्ग था। ख़ैर ! दूत से सब काग़ज़-पत्र लेकर उन्होंने यहाँ अपने आपको धर्माचार्य का दूत प्रकट किया। अब दो-एक घंटे में धर्माचार्य की आज्ञा से मेरी निवृत्ति के लिये सवारी आने ही वाली है।"

"मैं समझ गई। तब यह गाड़ी तुम्हारे भाई की है ?"

"हाँ ! परंतु एक नवीन बात और मालूम हुई। मैडम डी० कैवरीस के हाथ का लिखा जो पत्र तुमको मिला है, वह एक जाली पत्र है।"

"यह जाली है ?"

"यह इसलिये कि जब वे लोग तुमको लेने आयें, तो तुम ख़ुशी से बिना किसी संदेह के उनके साथ चली जाओ।"

"तो आर्तगान और उनके साथी नहीं आ रहे हैं ?"

"आर्तगान और उसके साथी तो राशेल में हैं ? यहाँ कहाँ से आये ?"

"ये सब बातें तुमको किसने बताईं ?" कांसटेंस ने घबड़ाकर पूछा।

"मेरे भाई को राजसैनिकों के वेष में धर्माचार्य के कुछ ख़ुफ़िया मार्ग में मिले थे। वे तुमको फाटक तक बुलायेंगे और यहाँ से ज़बरदस्ती पकड़कर धर्माचार्य के पास ले जायँगे।"

"हा ! ईश्वर ! अन्याय और अत्याचार का क्या कभी अंत नहीं होगा। आह ! मालूम होता है मैं पागल हो जाऊँगी। भगवन्, दुःख के ये दिन कब बीतेंगे ?" शोक से विह्वल होकर कांसटेंस यह करुण प्रलाप करने लगी। म्लैडी के एक-एक शब्द पर उसको अगाध विश्वास था। उसकी बुद्धि कुंठित-सी हो गई। वह म्लैडी को अपनी सबसे अधिक हित-चिंतक रमणी समझने लगी। शोकातुर होकर उसने कहा—"प्यारी म्लेडी ! अब इस सर्वनाश से तुम्हीं मेरा उद्धार कर सकती हो। बताओ मुझे अब क्या करना चाहिए ?"

म्लैडी ने सांत्वना देते हुए कहा—"संभव है मुझे ही धोखा दिया गया हो और आर्तगान अपने साथियों के साथ तुम्हारी सहायता के लिए सचमुच ही आ रहे हों ?"

"मेरा इतना सौभाग्य कहाँ ? इतना सुख मेरे भाग्य में नहीं है।"

"ऐसी स्थिति में केवल यही प्रश्न रह जाता है कि कौन पहले आता है ? यदि तुम्हारे मित्र पहले आगये, तो ठीक है; यदि धर्माचार्य के दूत पहले आगये, तो तुम्हारे फाग्य फूट जायँगे।"

"हाँ ! अवश्य ! परंतु अब क्या करना चाहिए, यह बताओ ?"

इसका तो बहुत सरल उपाय है, यहीं कहीं हम लोग छिपकर बैठ जायँ और इसकी टोह लेते रहें कि कौन लोग पहले आते हैं ?

"परंतु छिपा कहाँ जाय ?"

"यह तो कोई कठिन नहीं है ? मैं रुक जाऊँगी और जब तक वे लोग न आ जायँ तब तक हम तुम दोनों बाहर गाड़ी पर छिप कर देखते रहेंगे।"

"परंतु मैं तो यहाँ से बिना आज्ञा कहीं जा भी नहीं सकती।"

"इसका भी उपाय मैंने सोच लिया हैं। जब मुझे लेने के लिये बाहर गाड़ी आकर रुके, तब तुम मुझे पहुँचाने के लिये फाटक तक चली आना, बातें करते हुए हम तुम दोनों गाड़ी पर बैठ जायेंगे। मेरा

संकेत पाते ही कोचवान घोड़ों को सरपट दौड़ा देगा, हम लोग पल भर में धर्म-मंदिर की गारद की पहुँच से बाहर हो जायँगे।"

"परंतु आर्तगान यहाँ आये तो ?"

"यह तो हमको मालूम हो जायगा, मैं गाड़ी के साथ आनेवाले नौकर को यहाँ छोड़ दूँगी, यदि आर्तगान आ गये, तो वह उनको हमारे पास पहुँचा देगा। वह आर्तगान को अच्छी तरह जानता है।"

"यह उपाय सबसे अच्छा है; परंतु हम लोग यहाँ से थोड़ी ही दूर जाकर प्रतीक्षा करेंगे, अधिक दूर न जायँगे।"

"हाँ! अधिक से अधिक तीन मील तक, बस इससे ज़्यादा नहीं।"

"परंतु जिस समय गाड़ी आई, यदि उस समय मैं तुमसे दूर धर्म-मंदिर के दूसरी ओर हुई, तब क्या होगा ?"

"हाँ! अच्छी याद दिलाई, तुम बराबर मेरे ही पास रहना। आज का खाना हम तुम दोनों साथ ही खायँगे। धर्माध्यक्षा इसके लिये तुम्हें अनुमति दे देंगी।"

"प्यारी सखी! मैं जन्म भर कृतज्ञ रहूँगी! मुझे जन्म भर तुम्हारी जैसी बहिन न मिलेगी। अच्छा, तो मैं जाकर शीघ्र ही अनुमति लेकर आती हूँ।" कांसटेंस जल्दी-जल्दी क़दम रखती हुई चली गई।

कांसटेंस के चले जाने पर वह चुपचाप बैठकर, अपने साधनों को व्यवस्थित करने लगी।

म्लैडी भविष्य की बात सोच रही थी। वह समझ गई कि इस रमणी के विषय में भयंकर तूफ़ान उठेगा। जिस परिश्रम और त्याग के साथ उसके शत्रु इस स्त्री को हस्तगत करने के लिये प्रयत्न कर रहे हैं, उससे यह साफ़ ज़ाहिर है कि वे लोग एक तहलका मचा देंगे और जी जान से उसको छुड़ाने का यत्न करेंगे। ऐसी स्थिति में आर्तगान अपनी प्रेमिका की रक्षा के लिये शत्रुता को तिलांजलि देकर म्लैडी से संधि करने पर तैयार हो जायगा। इस दृष्टि से म्लैडी के लिये कांसटेंस को

आज अधिकार में कर लेना अत्यंत महत्वपूर्ण आवश्यकता जान पड़ी। कांसटेंस उसके साथ चलने के लिये तैयार है। अब उसको लेकर अर्मेंटिनयर्स पहुँचना रह गया है। वहाँ पहुँचकर उसे यह आसानी से बताया जा सकता है और वह इस पर विश्वास भी कर लेगी कि आर्तगान और उसके साथी धर्म-मंदिर नहीं आये, जो लोग आये, वे धर्माचार्य के आदमी थे। इस प्रकार इस नई चाल में कांसटेंस फँस जायगी। तब वह सरलतापूर्वक उसको धर्माचार्य के पास पहुँचा देगी। इन बातों को सोचती हुई ग्लैडी बाग़ में टहल रही थी। बाहर भाग निकलने में कौन-सी सुविधा है, बाग़ का गुप्त द्वार किधर है, इन सभी बातों को जानने के लिये बाटिका का विधिपूर्वक निरीक्षण कर लेना आवश्यक है, इसी विचार से ग्लैडी अत्यंत तीव्र-दृष्टि से बाटिका में घूमकर देख रही थी।

लगभग आध घंटे बाद कांसटेंस मुसकराती हुई आई और कहा कि धर्माध्यक्षा ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है। दोनों ने बैठकर साथ ही भोजन किया। भोजन समाप्त हुआ ही था कि बाहर गाड़ी की खड़खड़ाहट का शब्द सुनाई दिया। ग्लैडी का हृदय हर्ष से उछल पड़ा। उसने हँसते हुए कहा—"कुछ सुनाई पड़ता है? यही गाड़ी मेरे भाई ने भेजी है।"

"हा! ईश्वर!" एक अज्ञात भय से कांसटेंस का हृदय काँप उठा।

ग्लैडी तुरंत रवाना हो जाना चाहती थी। उसने विचारा कि यदि देर की जायगी, तो संभव है हमारे जाने के पहले ही शत्रु आ पहुँचें और तब सब किया कराया मिट्टी हो जायगा। उसने कहा—"अब देर न करो, जल्दी जाओ और अपना सामान लेकर तैयार हो, हमें यहाँ से शीघ्र ही चल देना चाहिए।"

"सामान! सामान के नाम मेरे पास मेरे प्यारे के प्रेम-पत्रों के अतिरिक्त और कुछ नहीं है।"

"अरे ! उस अमूल्य निधि को अवश्य ले लो, चलो जल्दी करो।"

कांसटेंस इस बंदी-जीवन से मुक्त अवश्य होना चाहती थी। ग्लैडी की सहायता द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति का साधन पाकर, वह अत्यंत प्रसन्न हुई थी। परंतु जिस आतुरता के साथ ग्लैडी जल्दी कर रही थी, वह ढंग उसकी आंतरिक इच्छा के प्रतिकूल था। आर्तगान आज आनेवाले हैं, मेरे चले जाने पर वह विमुख न लौट जायँ, यह भय उसको शीघ्र जाने के लिये निषेध कर रहा था। वह प्रतीक्षा करना चाहती थी, उसके नेत्र और उसका हृदय यह बता रहे थे कि वह शीघ्र ही आनेवाले हैं, वह प्रतीक्षा के आनंदमय अनुराग में डूबी हुई थी।

ग्लैडी के आग्रह से विवश होकर जब वह चली, तो उसके पैर नहीं उठते थे। एक अज्ञात भय की आशंका से उसका हृदय बार-बार सिहर उठता था। वाध्य होकर उसको जाना पड़ा।

ग्लैडी जल्दी से बाहर गई। वहाँ राकफ़ोर्ट का अनुचर उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। ग्लैडी ने उसे सब आवश्यक बातें समझा दीं। उससे कहा कि तुम बाहर फाटक पर गाड़ी ले आओ, यदि इसी बीच में तुमको राज-सैनिक आते हुए दिखलाई दें, तो शीघ्र ही अपनी गाड़ी लेकर वहाँ से हट जाना और मंदिर के पीछे की ओर से गाड़ी घुमाकर जंगल के दूसरी ओर पास के गाँव में हमारी प्रतीक्षा करना। मैं बाग़ के गुप्त द्वार से होकर तुम्हारे पास पैदल आ जाऊँगी। ये आदेश ग्रहण करके अनुचर चला गया।

कांसटेंस लौटकर आई। ग्लैडी ने मुस्कराकर कहा—"प्यारी कांसटेंस ! आओ, देखो मैं यहाँ सब प्रबंध कर चुकी हूँ। अब कोई दुबिधा की बात नहीं। अहा ! कितने हर्ष की बात है, इस बंदी जीवन से आज हम मुक्त हो रहे हैं। प्रसन्न हो जाओ ; परंतु, ऐं ! तुम्हारा चेहरा मलीन क्यों है ? क्या आज विश्राम करने को नहीं मिला। आओ ! चलो चलें, परंतु नहीं चलने के पूर्व एक-एक प्याला स्वच्छ पी लेना आवश्यक है, यात्रा में कष्ट न होगा।"

कांसटेंस ने मुस्करा दिया ; परंतु उसका हृदय बैठा जाता था। ग्लैडी ने बोतल से उलटकर प्याला भरा और कांसटेंस को दिया। उसने प्याला ले लिया और होठों तक लगाया ; इसी समय दूर से आते हुए घोड़ों की टाप का शब्द उसके कान में पड़ा। कांसटेंस का हाथ रुक गया, प्याला होंठ ही तक लगा रह गया, उसके कान शब्द की ओर लग गये और उसका सारा ध्यान उसी ओर खिंच गया। शब्द धीरे-धीरे निकट आता हुआ सुनाई दिया, अब घोड़ों का हिनहिनाना तक स्पष्टरूप से सुनाई पड़ने लगा। उसका हृदय प्रसन्नता से धड़कने लगा। प्याला पृथ्वी पर रखकर, उसने ग्लैडी से कहा—"यह शब्द कैसा है ?"

ग्लैडी का ध्यान भी इसी ओर था। उसका हृदय भय से काँप उठा ; परंतु प्रकट में स्थिर चित्त-सी होकर उसने उत्तर दिया—"ये लोग या तो शत्रु हैं या मित्र। तुम यहीं रुको मैं अभी देखकर बतलाती हूँ।" यह कहकर फुर्ती से ग्लैडी बाहर चली गई। कांसटेंस भय और हर्ष के असमंजस में जैसी बैठी थी, वैसी ही बैठी रही।

शब्द निकट ही आ रहा था। वे दिखाई इसलिये नहीं पड़ते थे कि सड़क के निकट ही एक मोड़ पड़ता था। क्षण ही भर में शब्द इतना स्पष्ट होगया कि टापों के द्वारा घोड़ों की संख्या की गणना की जा सकती थी। ग्लैडी ध्यान लगाकर सड़क की ओर देख रही थी। सूर्य अस्त नहीं हुए थे, ग्लैडी की दृष्टि सड़क के मोड़ की ओर थी। सहसा उसे राज-सैनिकों की पोशाक और धातु निर्मित शिरस्त्राण की शुभ्र चमक मोड़ पर दिखाई दी, उसने देखा कुछ तिलंगे घोड़ों को बेतहाशा दौड़ाते हुए चले आ रहे हैं। उसने गिना, सब आठ थे। सब से आगे सफ़ेद घोड़े पर तेज़ी से जो सैनिक चला आ रहा था, उस पर दृष्टि पड़ते ही ग्लैडी एक चीत्कार कर उठी। आर्तगान सबसे आगे आ रहा था। इस समय ग्लैडी की दशा विचित्र हो गई, उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं।

कांसटेंस ने ग्लैडी का चीत्कार सुना, उसके हृदय में मानो

किसी ने ज़ोर से घूसा मार दिया, अत्यंत व्यग्र और चिंतित होकर उसने पूछा—"ग्लैडी ! ग्लैडी ! क्या है ? क्या वे नहीं हैं ?"

"नहीं ! ये तो धर्माचार्य के सैनिक हैं। अब यहाँ एक क्षण भी रुकना ठीक नहीं। यहाँ से भागो, जल्दी भागो।" कांसटेंस ने कहा—"हाँ, भागो, भागो।" वह भागना चाहती थी; परंतु उसे मालूम हुआ कि उसका सारा शरीर पत्थर का हो गया, उसके पैर पृथ्वी में धँस गये। उसके हृदय की गति रुक-सी गई। अंधकारमय भविष्य की आशंका ने उसकी शक्ति को नष्ट कर दिया। वह हत-बुद्धि-सी खड़ी ग्लैडी की ओर करुण नेत्रों से ताकने लगी।

अश्वारोही ग्लैडी की खिड़की के पास से होकर गुज़र गये। ग्लैडी ने कांसटेंस को हाथ से बाग़ की ओर घसीटने का प्रयत्न करते हुए चिल्लाकर कहा—"आओ ! भागो ! चलो ! अरे ! यहाँ खड़ी क्यों हो ? जल्दी-जल्दी पैर उठाओ। अभी समय है।"

कांसटेंस के पैर इतने भारी हो गये थे कि वह ग्लैडी के आग्रह से दो क़दम चली; परंतु फिर रुक गई, पैर उठते ही न थे। जब ग्लैडी ने फिर बाँह पकड़कर घसीटा, तो एक कदम चलकर वह ग्लैडी के पैरों पर गिर पड़ी। ग्लैडी ने उसे स्वयं उठाकर ले जाना चाहा; परंतु बहुत ज़ोर लगाने पर भी कांसटेंस उसके उठाये न उठी।

इसी समय ग्लैडी ने सुना कि उसकी गाड़ी घड़घड़ाती हुई भागी जा रही है, फाटक के पास कई बंदूकें दागी गईं। ग्लैडी हद से ज़्यादा घबड़ा गई, उसके वस्त्र पसीने से भीग गये। कांसटेंस को निर्दयता से झिझकोरते हुए उसने चिल्लाकर कहा—"तुम चलोगी भी या नहीं ! बोलो।"

"हा ! ईश्वर ! तुम देख रही हो, मैं अत्यंत अशक्त हूँ। मुझसे चला ही नहीं जाता। तुम अकेली भाग जाओ, मेरे लिये व्यर्थ ही संकट में न पड़ो।"

"तुमको यहाँ छोड़ जाऊँ! ओह! नहीं! कदापि नहीं, असंभव!" सहसा ग्लैंडी रुकी, उसके मन में शीघ्र ही एक विचार उदय हुआ, वह तेज़ी से मेज़ के पास आई, अपनी अँगूठी के गुप्त स्थान से कोई वस्तु निकाली और ग्लेडी के मद-पात्र में उसे घोल दिया। तब काँपते हुए हाथों से वह पात्र लेकर कांसटेंस के पास आकर कहा—"इसे जल्दी से पी डालो! अभी दो मिनट में तुम्हारे शरीर में स्फूर्ति आ जायगी, इस दुर्बलता का नाम भी न रहेगा।"

कांसटेंस निश्चल पड़ी थी, ग्लैंडी की ओर ताकने लगी। ग्लैडी ने वह पात्र उसके ओठों में लगा दिया, वह उसे पी गई।

ग्लैडी ने वह पात्र मेज़ पर रख दिया और भीषण हास्य के साथ यह कहती हुई फुर्ती से बाहर हो गई—"आह! इस प्रकार का बदला मैं लेना नहीं चाहती थी, परंतु मजबूर हूँ और कोई उपाय ही नहीं था। जो हो सकता था, वही हुआ।"

ग्लैडी के इन शब्दों को कांसटेंस न सुन सकी, वह जीवन से हताश होकर बेहोशी की दशा में पड़ी थी, उसमें सोचने-विचारने की शक्ति का लोप हो गया था, यह क्या हो रहा है? वह क्यों पड़ी है? शत्रु उसके साथ क्या करेंगे? इन सब बातों को सोचने की बुद्धि नष्ट हो गई थी। वह चेतन होते हुए भी अचेतन अवस्था में, जागतेहुए भी स्वप्न की सी दशा में पड़ी रही। सहसा उसके कानों में किवाड़ों के खुलने का शब्द पड़ा, उसे मालूम हुआ कि कमरे के बाहर बहुत से लोग बोल रहे हैं, बड़ा कोलाहल हो रहा है। इन शब्दों में उसको एक परिचित स्वर सुनाई दिया। उसके शरीर में अपूर्व स्फूर्ति दौड़ गई, चेहरा चमक उठा, वह उठ खड़ी हुई और चिल्लाती हुई द्वार की ओर दौड़ी—"अहा! आर्तगान! आर्तगान! क्या तुम हो? इधर! इधर!"

आर्तगान द्वार खोलकर कमरे में प्रवेश कर ही रहा था कि सामने से पागल की भाँति दौड़कर आती हुई कांसटेंस को उसने देखा।

असीम हर्ष से उसने यह कहते हुए कांसटेंस को अपनी भुजाओं में लपेट लिया—"कांसटेंस ! प्यारी कांसटेंस" इसी समय द्वार खुलने पर बहुत से लोग कमरे में घुस आये।

यह मिलन कितना सुंदर था, इसका वर्णन करना असंभव है। विमुख दिशाओं से आती हुई जिस प्रकार दो उत्ताल तरंगे परस्पर मिलकर एक हो जाती हैं, उसी भाँति इन दो प्रेमियों के आनंदमद से उन्मत्त हृदय एक में मिल गये। क्षण भर तक आलिंगन पाश में आबद्ध दोनों प्रेमी कुछ न बोल सके, केवल निश्चल नेत्रों से एक-दूसरे की ओर ताकते रहे। नेत्रों द्वारा हर्ष की प्रशांत धारा एक-दूसरे के हृदय में प्रवाहित हो रही थी। स्वर्गीय-सुख के दिव्य-रस को दोनों पान कर रहे थे।

यह दृश्य देखकर अथास ने अपनी नंगी तलवार म्यान में करली। पार्थ और अर्मस ने अपनी-अपनी पिस्तौलें जेबों में रखलीं। रणोन्मत्त राज-सैनिक शांति से इस अनुपम दृश्य को देखने लगे।

क्षणभर बाद आलिंगन पाश से मुक्त होकर कांसटेंस निःशक्त होकर कुर्सी पर गिर पड़ी। बिस्मित-सी होकर उसने कहा—"अहा ! आर्तगान ! प्यारे आर्तगान ! तुम अन्त में आही गये ! तुमने धोका नहीं दिया !"

"हाँ कांसटेंस ! आज हम फिर मिले हैं !"

"तब उसका यह कथन कि तुम नहीं आओगे, निरर्थक सिद्ध हुआ। मैं अभी अपने मन में यही प्रार्थना कर रही थी। मेरी इच्छा भागने की होती ही न थी ! मैं यहीं पड़ी रही ! अहा ! आज मैं कितनी सुखी हूँ।"

इस शब्द ने सबको चौंका दिया। आर्तगान ने आश्चर्य से पूछा—किसने कहा था कि मैं न आऊँगा ?"

"मेरी सखी ने ! जो शत्रुओं के अत्याचार से मुक्त करने के लिये मुझे अपने साथ ले जाना चाहती थी। वह तुम लोगों को भूल से धर्माचार्य के चर समझकर भाग गई है।"

"तुम्हारी सखी ! कांसटेंस, तुम किस सखी के विषय में कहती हो ?" आर्तगान का आश्चर्य बढ़ता जाता था।

"वह, जिसकी गाड़ी फाटक पर खड़ी थी। तुमको अपना मित्र बताती थी, जिसको तुमने अपने सब रहस्य बतला दिये हैं।"

"उसका नाम ? उसका नाम बताओ, क्या, क्या भूलती हो ?"

"उसका नाम, हाँ ! मुझे याद है, धर्माध्यक्ष ने कई बेर मेरे सामने लिया है, रुको, रुको ; परंतु यह क्या ? ओह ! मेरा शिर क्यों चकराने लगा। मुझे तो दिखाई नहीं पड़ता ?"

आर्तगान ने उसे गिरते हुए रोक लिया। उसके शरीर पर हाथ रखते ही वह आश्चर्य से चिल्ला उठा—"मित्रो ! मित्रो, दौड़ो, ऐं ! इसके तो हाथ शीतल पड़ गये। हाय कांसटेंस ! कांसटेंस तुम्हें क्या हो गया ?"

सब मित्र घबड़ाकर दौड़ पड़े। कांसटेंस आर्तगान की गोद में अचेत पड़ी थी, उसका शरीर नीला पड़ गया था। अर्मस झट पानी लेने के लिये मेज़ के निकट गया ; परंतु अथास के मुख पर दृष्टि पड़ते ही वह भय से चिल्ला उठा। अथास मेज़ के पास खड़ा एक ग्लास को बड़े गौर से देख रहा था। यह वही ग्लास था, जिसमें म्लैडी ने कुछ मिलाकर कांसटेंस को मद्य पिलाया था। इस ग्लास की तह में कुछ तलछट पड़ी रह गई थी। उसी को देखकर अथास के मुख की आकृति भयंकर रूप से विकृत हो गई। चेहरे का रंग उड़ गया, मुँह पर गहरी कालिमा छा गई, अथास ने एक गहरी सांस कहा—"ओह ! असंभव है। नहीं ! नहीं ! ईश्वर यह कभी सहन नहीं कर सकता।"

"पानी ! पानी, अर्मस, पानी ;" आर्तगान ने चिल्लाकर कहा।

"हा ! ईश्वर ! इस निष्पाप रमणी ने तो कुछ नहीं किया। यह बेचारी तो नितांत दोषरहित थी।"

इतने में उसने धीरे-धीरे नेत्र खोले। आर्तगान उसके शीतल

ओठों को बार-बार चूम रहा था। उसके हृदय की अवस्था विचित्र थी। भय, शोक और आश्चर्य ने उसको हतबुद्धि बना दिया था।

अथास ने जब कांसटेंस को पुनः चेतना-लाभ करते हुए देखा, तो उसने पूछा—"मैडम ! यह ख़ाली ग्लास किसका है ?"

"मेरा !" मरती हुई रमणी ने धीरे से उत्तर दिया।

"परंतु तुम्हारे इस ग्लास में शराब किसने उल्टी थी ?"

"उसी ने।"

"उसीने ! क्या उसका नाम तुम भूल गईं ?"

"नहीं ! नहीं ! हाँ ! याद आ गया ! म्लैडी डी० विंटर।"

"म्लैडी डी० विंटर !" चारों मित्र चौंककर एक साथ चिल्ला पड़े।

इस समय कांसटेंस के मुख की कालिमा गहरी हो चली थी, उसका शरीर ऐंठने लगा, वह निःशक्त होकर हाँफ़ती हुई पार्थ और अर्मस की भुजाओं में गिर पड़ी। आर्तगान मार्मिक यंत्रणा से छटपटा गया, वह मूक आश्चर्य की प्रतिमूर्ति बना अवाक खड़ा रह गया। तब अवरूद्ध कंठ होकर बोला—"मित्र अथास ! यह क्या होगया ! तुम कुछ समझे ?"

अथास ने आँसुओं को आँखों ही में रोककर कहा—"आर्तगान ! मैं सब कुछ समझ गया ! होनी बड़ी प्रबल है ?"

इसी बीच में कांसटेंस फिर चिल्ला उठी—"आर्तगान ! प्यारे आर्तगान ! तुम कहाँ हो ? क्या मुझे छोड़कर फिर चल दिये ! आह ! मैं अब बच नहीं सकती।"

"कांसटेंस ! प्यारी कांसटेंस ! मैं तो यहीं हूँ ? हाय मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता। मैं तुम्हें अच्छा कर लूँगा ! घबड़ाओ नहीं, प्यारी मैं तुम्हारे ही पास हूँ ?" आर्तगान के आँसू बह रहे थे ! वह रोते हुए कांसटेंस के निकट गया। कांसटेंस का चेहरा धीरे-धीरे निष्प्रभ पड़ता जाता था, वेदना से उसकी आकृति बिगड़ गई थी, शरीर

छटपटा रहा था। वह हाथ पैर पटक रही थी, आर्तगान से यह न देखा गया। वह ज़ोरों से रो पड़ा। अथास भी आँसुओं को न रोक सका। आर्तगान चिल्ला उठा—"मेरी कांसटेंस को बचाओ! अथास! इसे बचाओ! हाय! पार्थ! अर्मस! दौड़ो, बचाओ।"

अथास ने रोते हुए कहा—"व्यर्थ, अब सब व्यर्थ। इस विष की कोई औषधि नहीं।"

"हाय! कोई औषधि नहीं। बचाओ, बचाओ, आर्तगान! एक क्षण के लिये, आर्तगान, प्यारे आर्तगान!" कांसटेंस बरबरा रही थी। उसने अपनी सब शक्ति को एकत्रित कर आर्तगान के शिर को दोनों हाथों से पकड़ लिया, आँखें खोलीं और क्षण भर उसके मुख की ओर देखा। कांसटेंस के नेत्रों से एक ज्योति चमक उठी, मानो उसकी आत्मा आर्तगान के नेत्रों में प्रवेश कर गई। उसने एक अंतिम साँस ली और इस श्वास के साथ उसका निष्प्राण शरीर आर्तगान की गोद में गिर पड़ा।

"कांसटेंस! प्यारी कांसटेंस" चीत्कार करता हुआ आर्तगान मृत कलेवर को लिये हुए अचेत होकर गिर पड़ा। पार्थ रोने लगा, अर्मस अश्रुपूरित नेत्रों से आकाश की ओर देखने लगा, अथास की अवस्था विचित्र थी, वह स्तम्भित-सा होकर अपनी भुजाओं से क्रास का चिन्ह बनाये खड़ा था।

इसी समय एक मनुष्य कमरे में आया, उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही थीं, वह अत्यंत घबड़ाया हुआ था। वह चारों ओर विस्मित नेत्रों से देखने लगा। कांसटेंस का मृत कलेवर भूमि पर पड़ा था, आर्तगान अचेत था। शेष मित्र अवाक् होकर उसकी ओर देखने लगे।

उसने एक उद्भ्रांत व्यक्ति की भाँति कहा—"मैंने धोका नहीं खाया, यहाँ आर्तगान मिल गया, ये उसके साथी अथास, पार्थ और अर्मस हैं।"

ये लोग जिनका नाम लिया गया था, आश्चर्य से आगंतुक की ओर देखने लगे।

आगंतुक ने फिर कहा—"महाशयो, आपकी ही भाँति मैं भी एक स्त्री की खोज में हूँ, वह शायद इसी मार्ग से होकर गई है; क्योंकि यहाँ पर मुझे एक लाश दिखलाई पड़ रही है।"

तीनों मित्र पत्थर की मूर्ति बने खड़े थे, यह मनुष्य उन्हें कुछ परिचित-सा मालूम होता था; परंतु वे यह निश्चित न कर सके कि इसको कहाँ और किस स्थिति में देखा है।

आगंतुक कहता ही गया—"आह, आप लोग मुझे नहीं पहचान सके, मैं आपका ऋणी हूँ, आप लोगों ने दो बार मेरी जीवन-रक्षा की है। मैं स्वयं अपना नाम बताता हूँ। मैं लार्ड विंटर हूँ, उस स्त्री का देवर हूँ।"

तीनों मित्र आश्चर्य से चिल्ला उठे। अथास उठा और कहने लगा—"श्रीमान् लार्ड! आइये, हम आपका स्वागत करते हैं, आप तो हमारे ही दल के हैं?"

लार्ड विंटर ने कहा—"मैं पोर्टसमाउथ से उसके जाने के पाँच घंटे बाद ही चल पड़ा था। उसके पहुँचने के तीन घंटे बाद बोलोन आया, सेंटओमर में जब वह पहुँची, तब मुझसे केवल बीस मिनट का अंतर रह गया था। विलियर्स पहुँचकर वह लापता हो गई। जब आप लोग उधर से घोड़े दौड़ाते हुए निकले, तब मैं उसी की खोज में था। मैंने आर्तगान को पहचाना, आवाज़ें दीं; परंतु दुर्भाग्य से मेरा घोड़ा अत्यंत थक गया था, तुम्हारे साथ-साथ न आ सका, गिरता-पड़ता अब चला आ रहा हूँ; परंतु मैं देखता हूँ आप लोग भी देर से आये, वह दुष्टा हाथ से निकल गई।"

"आह! वह देखिये, जाते-जाते वह यह कर गई!" अथास ने उँगली से मृत कांसटेंस और अचेत आर्तगान की ओर संकेत किया।

"क्या दोनों समाप्त हो गये ?" लार्ड विंटर ने पूछा।

अथास ने उत्तर दिया—"नहीं ! आर्तगान अभी बेहोश हो गया है।"

इसी समय आर्तगान के शरीर में हरकत हुई, उसने आँखें खोलीं, निश्चल नेत्रों से वह देखने लगा, वह समझ ही न पाता था कि यह क्या हो रहा है ? पार्थ और अर्मस की भुजाओं से अपने को छुड़ाकर वह फिर कांसटेंस के शरीर पर "हाय।" कहकर गिर पड़ा।

अथास उसके पास गया, मृत शरीर से अलग करके, उसे हृदय से लगा लिया। आर्तगान फूट-फूटकर रोने लगा, अथास का भी गला भर आया ; परंतु उसने अपने आपको सँभाला, और तीव्र-स्वर में कहा—"मित्र ! अधीर न हो। सांत्वना ग्रहण करो, मृतक के लिये स्त्रियाँ रोती हैं, मर्द बदला लेते हैं। उठो ! कुछ पौरुष दिखलाओ ?"

इन शब्दों ने आर्तगान पर जादू-सा प्रभाव डाला, वह चौंककर उठ बैठा और चिल्लाकर बोला—"हाँ ठीक है, बदला, हाँ ! चलो ? बदला लें ?"

अथास ने इस अवसर का लाभ उठाया। प्रतिहिंसा की ज्वाला ने मित्रों के हृदयों में अपूर्व बल का संचार किया, सब चलने के लिये तैयार हो गए।

इसी समय धर्माध्यक्षा ने कमरे में प्रवेश किया। इस विचित्र घटना ने उनकी स्वाभाविक शांति और धैर्य को नष्ट कर दिया था, उनके चेहरे पर व्यग्रता झलक रही थी। अथास ने आगे बढ़कर कहा—"मैडम ! हम इस भाग्यहीना रमणी का शरीर आपके पवित्र संरक्षण में छोड़े जाते हैं। वह स्वर्ग की देवी थी, संसार को छोड़कर स्वर्ग चली गई। अपनी बहिन समझकर आप इसका अंतिम संस्कार कीजिये। हम कुछ दिनों में लौटकर इसकी क़ब्र पर अंतिम प्रेमाभ्यर्थना करेंगे।"

आर्तगान अथास की छाती में मुँह छिपाये फूट-फूटकर रो रहा था। सब के चेहरे पर विषाद की भयंकर कालिमा छाई हुई थी।

अथास ने कहा—"रो लो, आर्तगान! ख़ूब पेट भरकर रो लो। तुम्हारे हृदय में प्रेम और जीवन है; आह, यह मेरा हृदय शुष्क नीरवता से भरा है। क्या ही अच्छा होता कि मैं भी रो सकता।" अथास के स्वर में अथाह वेदना की झलक थी, नेत्रों से नीरस करुणा टपक रही थी। उसने अपने मित्र के शिर को स्नेहपूर्वक छाती से हटाया और एक अपूर्व वात्सल्य-भाव से उसको कमरे के बाहर ले चला।

सब मित्र अपने अनुचरों सहित बैथ्यून नगर की ओर चल दिये। नगर की सबसे पहली सराय में आकर ये लोग रुके।

आर्तगान ने कहा—"क्या उस स्त्री का पीछा नहीं करोगे?"

अथास ने गंभीरता से कहा—"थोड़ी देर रुककर। मुझे अभी कुछ प्रबंध करना है।"

"परंतु वह फिर मिल नहीं सकती, हाथ से निकल जायगी।"

"नहीं, ऐसा न होगा, इसका उत्तरदायी मैं होता हूँ।"

आर्तगान को अथास के शब्दों पर पूर्ण विश्वास था, वह नीची गर्दन करके चुप हो गया। सब लोगों ने होटल में प्रवेश किया। पार्थ और अर्मस आश्चर्य से एक-दूसरे का मुँह देखने लगे। अथास के सारगर्भित शब्दों का अर्थ वे कुछ भी न समझ सके थे। लार्ड विंटर यह समझे कि अथास ने यह बात आर्तगान को सांत्वना देने के लिये ही कही है।

होटल में पाँच कमरे ख़ाली हैं, यह निश्चय करके अथास ने कहा—"अब आप लोग अपने-अपने कमरे में जाइये, आर्तगान को यहीं एकांत में रहने दो, वह रोते-रोते सो जायगा। अब आगे के सब काम का भार मैं लेता हूँ, आप लोग निश्चिंत हो जायँ।

विंटर ने विस्मित होकर कहा—"उस स्त्री के संबंध में जो भार

है, उसको मुझे अपने शिर पर लेना चाहिए। वह मेरी संबंधिनी है, मैं उसका देवर हूँ।"

"और मैं उसका पति हूँ।"

आर्तगान समझ गया कि जब अथास ने यह भेद प्रकट कर दिया, तो वह अपना बदला अवश्य लेगा। पार्थ और अर्मस के चेहरे पीले पड़ गये। डी० विंटर ने समझा कि अथास पागल हो गया है; परंतु अथास की मुद्रा अत्यंत गंभीर थी। उसने कहा—'आप लोग जाइये, मैं अपने काम में लगता हूँ, आर्तगान वह काग़ज़ का टुकड़ा ज़रा मुझे दे दो, जो उस अपरिचित की टोपी से गिर पड़ा था और जिस पर किसी गाँव का नाम लिखा था।"

"अब मैं समझा। यह नाम उसी के हाथ का लिखा है।" आर्तगान ने यह कहकर वह काग़ज़ अपनी जेब से निकालकर अथास के हाथ में रख दिया।

उस काग़ज़ को हिफ़ाज़त से अपनी जेब की भीतरी तह में रखते हुए अथास ने कहा—"आज मुझे साबित कर देना है कि न्याय और ईश्वर का अस्तित्व अभी शेष है। शैतान उसको मिटा नहीं सका है।"

५२

इस घटना से अथास को जो असीम वेदना उत्पन्न हुई, उसने इस असाधारण व्यक्ति की मानसिक शक्तियों को और भी अधिक विकसित कर दिया। उसकी बुद्धि को स्फूर्ति और उत्तेजना मिली। उसने जिस दृढ़ता और साहस के साथ ग्लडी के पता लगाने का उत्तरदायित्व ले लिया था, उसी की चिंता करता हुआ वह अपने कमरे में चला गया। होटल स्वामी से फ्रांस का एक मानचित्र लेकर बड़े ध्यान से उसका निरीक्षण करने लगा। मानचित्र से पता चला कि वैथ्यून से आर्मेनटियर्स को चार रास्ते जाते हैं। यह देखकर उसने फ़ौरन ही अनुचरों को बुलाया।

प्लेंचेट, ग्रीमांड, यैरीकान और मास्कटन आदेश पाते ही उपस्थित हुए। अथास ने समझाया कि वे लोग तड़का होते ही चारों मार्गों से अर्मेनटियर्स रवाना हो जायँ। प्लेंचेट चारों में सबसे अधिक चतुर था, उससे कहा कि तुम उस मार्ग से जाना, जिस पर वह गाड़ी, जिस पर उन्होंने बंदूकें दाग़ी थीं, गई है।

अथास ने इस काम में इन अनुचरों को ही नियुक्त किया; क्योंकि वह जानता था कि ये लोग पता लगाने के कामों में बड़े सिद्धहस्त

हैं। दूसरी बात यह कि निम्न श्रेणी के होने के कारण उनपर कोई संदेह नहीं कर सकता है। ख़ास बात यह थी कि वे लोग म्लैडी को पहचानते थे और म्लैडी उन्हें नहीं पहचानती थी। इन चारों को आज्ञा दी गई कि वे ग्यारह बजे के लगभग एक स्थान में एकत्रित हों, यदि म्लैडी का पता मालूम हो जाय, तो तीन व्यक्ति उसकी निगरानी करते रहें, चौथा व्यक्ति बेथ्यून आकर अथास को सूचना दे। इन आदेशों को सुनकर वे लोग सोने के लिये चले गये। इसके बाद अथास कुर्सी से उठ खड़ा हुआ, तलवार और पिस्तौल ली और एक काले लबादे से अपने शरीर को ढाँककर होटल के बाहर हो गया। रात के दस बजे का समय था, गाँव होने के कारण बेथ्यून की सड़कों में सन्नाटा छा गया था। अथास निःशब्द अंधकारमयी गलियों को तेज़ी से पार करता चला जा रहा था। मार्ग में इक्के-दुक्के जानेवाले आदमियों से उसने एक व्यक्ति के मकान का पता पूछा; परंतु इस व्यक्ति के नाम में न मालूम क्या विचित्र प्रभाव था कि जिस किसी से अथास यह नाम पूछता, वह सुनते ही काँप जाता था। उसके चेहरे से भय, आश्चर्य और घृणा के भाव टपकने लगते थे। किसी भी व्यक्ति ने अथास को इस विचित्र व्यक्ति के मकान तक पहुँचाने का साहस नहीं किया। किंतु अथास इससे निरुत्साहित न हुआ, वह बतलाई हुई सड़क की सीध पर चलता गया था। इसी प्रकार कई गलियाँ पार करने पर सौभाग्य से उसको एक भिखमंगा मिल गया। वह अथास के सामने आकर भीख माँगने लगा। अथास ने उसको एक गिन्नी देकर कहा कि मुझे अमुक व्यक्ति के मकान तक यदि पहुँचा दो, तो तुम्हें और धन दूँगा। फ़क़ीर पर भी इस नाम का विचित्र प्रभाव पड़ा, वह अत्यंत विस्मित होकर भयाकुल नेत्रों से अथास के मुख की ओर देखने लगा। पहले तो वह बहुत हिच-किचाया; परंतु सोने के सिक्कों की आशा ने उसके निर्बल प्राणों में

साहस उत्पन्न कर दिया। वह बिना कुछ बोले अथास को पीछे आने का संकेत करके एक सड़क पर आगे-आगे चलने लगा। कई टेढ़ी-मेढ़ी तंग गलियों को पार करने के बाद वह एक गली के मोड़ पर रुक गया। उसने चुपचाप दूर ही से सघन अंधकार से ढके हुए, एक छोटे मकान की ओर उँगली से इशारा करके बतलाया कि वह घर यही है। तब वह शीघ्र ही अपना इनाम लेकर वहाँ से भाग गया।

यह घर एक गली के किनारे सब मकानों से अलग था। इस मकान का बाहरी रूप इतना भयंकर था कि इसके पास तक किसी को आने का साहस न हो सकता था। अथास निर्भय होकर उसकी चारों ओर परिक्रमा कर आया; परंतु यह न जान सका कि इसका दरवाज़ा किधर है। अंधकार के कारण उसे कुछ सूझता ही न था।

अथास ने कई बेर गला फाड़-फाड़कर आवाज़ें दीं; परंतु कोई सनका तक नहीं। वह अब कुछ-कुछ हताश-सा होने लगा। परंतु उसको विश्वास था कि यह घर आबाद है। उसने अत्यंत उच्च स्वर से कई आवाज़ें और दीं। इस बार उसके फेफड़े थक गये थे, वह हाँफने लगा। वह निराश होकर लौट जानेवाला ही था कि एक ओर द्वार खुलने का शब्द उसको सुनाई दिया। वह चौंककर आवाज़ के सहारे द्वार पर पहुँचा। एक व्यक्ति द्वार पर खड़ा हुआ झाँक रहा था, उसका शरीर लंबा था, चेहरा पीला था, जिस पर झुर्रियाँ पड़ गई थीं। काली-काली सघन दाढ़ी मूँछों ने उसके चेहरे को और भी भयंकर बना दिया था। उसकी छोटी-छोटी आँखों से भयंकर चमक निकल रही थी। द्वार पर खड़े होकर अथास और उस विचित्र व्यक्ति में कुछ देर तक कानाफूसी होती रही। बातें समाप्त होने पर उसने अथास को भीतर आने का संकेत किया। द्वार बंद करके दोनों मकान के भीतर गये।

यह व्यक्ति अथास को अपनी औषधि-शाला में ले गया, जहाँ

पर अथास के आने के पूर्व एक कंकाल की शुष्क हड्डियों को लोहे के तार से बाँध रहा था। अथास ने देखा कि कंकाल में अभी सर जोड़ना बाक़ी है, सर अलग मेज़ पर रक्खा हुआ था।

कमरे के सामान को देखकर यह स्पष्ट प्रकट होता था कि इसका निवासी प्राकृतिक-विज्ञान का प्रेमी है। वहाँ अल्मारियों में सजी हुई बोतलों के भीतर भिन्न-भिन्न आकार-प्रकार के सर्प रक्खे हुए थे, विविध प्रकार के भीषण जीव-जंतुओं के कंकाल उस शाला की भयंकरता बढा रहे थे। इनके अतिरिक्त भाँति-भाँति की पत्तियाँ, जड़ी-बूटी तथा बनस्पतियाँ जिनके चमत्कारी प्रभाव के कुशल ज्ञाता उस समय योरोप में इने-गिने ही थे। दीवारों, छतों और कमरों के कोनों में टँगी हुई थीं। उस घर में न कोई कुटुंबी था और न नौकर, वह लंबा मनुष्य ही इस घर की भयप्रद निस्तब्धता में अकेला निवास करता था। इस शाला में एकांत रहकर वह विचित्र औषधियों, वैज्ञानिक सिद्धांतों और अद्भुत कल्पनाओं की सृष्टि किया करता था। उसके विचित्र रूप, विचित्र विलास और विचित्र व्यवसाय के कारण उसके विषय में बैथ्यून में अद्भुत किंबदंतियाँ प्रचलित हो गई थीं। लोग कहते थे कि वह मृत-शरीर में प्राणों का संचार कर सकता है, हवा और जल में बिना प्रयास पैदल चल सकता है, उसके वश में भूत, प्रेत और कई जिन्न हैं।

अथास ने लापरवाही से सब पदार्थों का निरीक्षण किया। तत्पश्चात् उस व्यक्ति के संकेत पर उसी के पास कुर्सी पर बैठ गया। तब उसने अपने आने का कारण उसे बताया और अपने उद्देश्य में सहायता देने की प्रार्थना की। प्रार्थना को सुनकर उसकी भौंहें तन गईं, माथे पर सिकुड़न पड़ गईं। भय और घृणा से वह पीछे हट गया। उसकी विरक्ति देखकर अथास ने अपनी जेब से एक काग़ज़ का टुकड़ा निकाला। उसपर किसी के हस्ताक्षर और मोहर अंकित थी।

इस पर दृष्टि पड़ते ही उसके चेहरे का भाव यथापूर्व हो गया। अथास की प्रार्थना को उसने स्वीकार कर लिया। अथास का काम हो गया।

अथास ने उस व्यक्ति को अभिवादन किया और वहाँ से चल पड़ा, उन्हीं गलियों से होता हुआ अपने होटल वापस आया।

प्रातःकाल सूर्य निकलते ही आर्तगान अथास के कमरे में आया और असीम चिंता और उत्कंठा के साथ पूछा कि ग्लैडी के विषय में अब कौन-सा उपाय काम में लाया जाय। अथास ने शांति और गंभीरता के साथ उत्तर दिया कि धीरज रक्खो, ईश्वर सब प्रबंध कर देगा।

इसके कुछ देर बाद धर्म-मंदिर की धर्माध्यक्षा ने कहलाया कि मृत शरीर की अंत्येष्टि-क्रिया दोपहर को होगी। विष देनेवाली रमणी के विषय में उन्होंने बहुत अनुसंधान किया; किंतु उनको कोई पता नहीं चलता, यह अनुमान किया जाता है कि वह बाग़ के गुप्त-द्वार से ग़ायब हो गई है; क्योंकि वह द्वार खुला मिला है और उसके पास ही से रेत पर किसी के पद-चिह्न दिखलाई दिये हैं।

निश्चित समय पर लार्ड विंटर और चारों मित्र धर्म-मंदिर गये, शोक-सूचक घंटे बजने लगे, मंदिर के द्वार खोल दिये गये और गायक-चक्र (Choir) बजना प्रारंभ हो गया। मंदिर के मध्य-स्थान में कांसटेंस का मृत शरीर नवीन शुभ्र वस्त्रों से सुसज्जित करके लिटाया गया था। उसके दोनों ओर कुछ दूरी पर शोक-सूचक चिन्हों को धारण करके मंदिर के निवासी लोग बैठे थे। सब की आकृति से मूक व्यथा के चिन्ह प्रकट हो रहे थे। धर्म-भाषण को सब लोग बड़े ध्यान से सुन रहे थे।

मंदिर के द्वार पर शोक की जीवित-मूर्ति आर्तगान हृदय की असीम वेदना को छिपाये बैठा था। कांसटेंस के कलेवर को देखकर उसके हृदय की व्यथा नेत्रों द्वारा उमड़ पड़ी। रोते-रोते उसकी हिचकियाँ

बँध गई। अथास ने जिस दृढ़ता और साहस को उसके विरह-विह्वल प्राणों में फूका था, शोक के तीव्र प्रवाह में वह सब बह गया। उसकी कातर-दृष्टि सांत्वना पाने के लिये अथास को ढूँढ़ने लगी ; परंतु अथास वहाँ न था।

प्रतिकार की चिंता से व्यस्त अथास बाग़ का निरीक्षण करने चुपके से खिसक गया था। बाग़ पहुँचकर उसने अपनी तीक्ष्ण दृष्टि से देखा कि खिड़की के पास से किसी के हल्के पद-चिह्न रेत पर स्पष्ट दिखाई पड़ते हैं। यह चिन्ह कहाँ तक गये हैं, इसी का पता लगाने के लिये वह उन चिन्हों का अनुसरण करता हुआ फाटक के बाहर आया और वहाँ से जंगल के भीतर चला गया।

इन चिह्नों का अनुसरण करने से उसके संदेह पक्के हो गये। जिस सड़क पर गाड़ी गई थी, वह जंगल के चारो ओर घूमी थी। अथास इसी सड़क के सहारे कुछ दूर चला गया। वह देख रहा था कि रक्त की बूँदें जो राजसैनिकों की बंदूकों के फ़ायर द्वारा आहत घोड़े अथवा साईस की चोट से बही थीं, मार्ग की भूमि पर टपकती चली गई थीं। लगभग आधे मील की दूरी पर, फ़ेस्टुअर्ट ग्राम के निकट तक इन बूँदों का पता चलता था। कुछ दूर आगे चलकर उसे घोड़ों की टापों से खुदी हुई भूमि मिली, यहीं पर बहुत-सा रक्त भी पड़ा हुआ दिखाई दिया। अथास ने देखा कि हल्के पद-चिन्ह यहीं पर आकर समाप्त हुए हैं, आगे उनका कहीं पता नहीं चलता। इन बातों से अथास इस परिणाम पर पहुँचा कि गाड़ी इस स्थान पर आकर रुकी है और ग्लैडी यहीं जंगल तक पैदल चलकर गाड़ी पर सवार हुई है। गाड़ी की लीक आगे स्पष्ट दिखाई पड़ती है।

इतनी बातों का पता लगाकर अथास होटल वापस आया। यहाँ प्लेंचेट बड़ी उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा कर रहा था। प्लेंचेट ने अपनी यात्रा का वर्णन कह सुनाया। इस वर्णन से अथास का अनुमान

सच निकला। अथास की भाँति उसने भी उसी सड़क का अनुसरण किया था, उसे भी मार्ग में कुछ दूर तक लहू के निशान मिले, उसने भी उस स्थान का निरीक्षण किया, जहाँ गाड़ी रुकी थी। परंतु वह अथास से आगे गया था। अतः फ़ेस्टुअर्ट ग्राम के होटल में जाकर उसे पता चला कि गत रात्रि को लगभग आठ बजे एक आहत व्यक्ति एक भद्र-महिला के साथ गाड़ी से यहाँ उतरे थे। गाड़ी आगे न जा सकी थी। उस व्यक्ति ने अपने आहत होने का कारण बताते हुए यह बतलाया था कि कुछ डाकुओं ने उसकी गाड़ी पर आक्रमण किया था, मुठभेड़ में उसके भी चोट आई। वह व्यक्ति गाँव में रुक गया; परंतु वह भद्र-महिला गाड़ी में नये घोड़े जुतवाकर आगे रवाना हो गई।

प्लेंचेट ने उस साईस का पता लगाया, जो नये घोड़ों के साथ गाड़ी पर गया था। उससे मालूम हुआ कि वह भद्र-महिला वहाँ से आर्मेनटियर्स चली गई। प्लेंचेट इतना पता लगाकर फ़ौरन चल खड़ा हुआ और सुबह होते-होते आर्मेनटियर्स पहुँच गया। आर्मेनटियर्स में केवल एक होटल था। प्लेंचेट नौकरी तलाश करने के बहाने वहाँ गया। वहाँ उसे मालूम हुआ कि गत रात्रि को १२ बजे के लगभग एक महिला यहाँ आई है और उसने होटल का एक कमरा भाड़े पर ले रक्खा है, उसने होटल-स्वामी से यह कहा है कि मैं यहाँ कुछ दिन रुकना चाहती हूँ।

प्लेंचेट को इससे अधिक जानने की आवश्यकता न थी। वह शीघ्र ही उस स्थान पर आया, जहाँ तीनों अनुचर मिलना निश्चित कर चुके थे। यहाँ आकर उसको सब अपने-अपने काम में मुस्तैद मिले। उसने सबको भिन्न-भिन्न आदेश देकर म्लैडी की निगरानी करने के लिये होटल के प्रमुख स्थानों पर नियुक्त कर दिया। तत्पश्चात् वह यहाँ समाचार देने चला आया।

प्लेंचेट का विवरण समाप्त हुआ ही था कि इसी समय अथास के अन्य मित्र भी आगये। सबके चेहरों पर शोक की कालिमा छाई हुई थी। आर्तगान ने आते ही पूछा, अब क्या करना चाहिये? अथास ने कहा—"ज़रा और धीरज धरो, स्वयं ही सब व्यवस्था हो जायगी।" इस गंभीर परंतु असंतोषजनक उत्तर को सुनकर सब अपने-अपने कमरे में चले गये।

रात के जब आठ बजे, तब अथास ने यह आज्ञा दी कि सब घोड़ों पर ज़ीने कस दी जायँ और मित्रों को यह सूचना दी कि सब लोग तैयार हो जायँ। प्रत्येक मित्र ने अपने-अपने अस्त्र-शस्त्र साफ़ करके रख लिये और होटल के बाहर अपने-अपने घोड़ों पर जमकर बैठ गये। सबके अंत में अथास आया, जो चलने के लिये सबसे अधिक उत्सुक दिखाई पड़ता था, आर्तगान से कहा—"मित्र धीरज रक्खो, अभी हमारे दल के सब मनुष्य नहीं आये हैं।"

सब लोग बड़े आश्चर्य से इधर-उधर देखने लगे; परंतु उनकी दृष्टि में दल के सब मनुष्य उपस्थित थे, यह न समझ सके कि अथास ने किस अभिप्राय से यह बात कही।

इतने में अथास के लिये घोड़ा लाया गया, वह धीरे से उस पर बैठा। घोड़े पर सवार होने के बाद उसने सब मित्रों से पुकार कर कहा—"क्षण भर आप लोग मेरी प्रतिक्षा करें, मैं अभी लौट कर आता हूँ।" यह कहकर उसने घोड़ा दौड़ा दिया।

कठिनता से पंद्रह मिनट बीते होंगे कि सामने से दो अश्वारोही आते हुए दिखाई पड़े। एक अथास था और दूसरा एक अपरिचित व्यक्ति था, उसका चेहरा नक़ाब से ढका था और वह शरीर पर एक गहरे लाल रंग का लबादा ओढ़े था। लार्ड विंटर और तीनों मित्र असीम आश्चर्य में होकर एक-दूसरे की ओर देखने लगे; परंतु वह व्यक्ति अथास को छोड़कर सभी के लिये अपरिचित था। भिन्न-भिन्न

विचार सबके मन में उठते थे ; परंतु सब चुप थे, बोलने का साहस न कर सकते थे। कितनी भी दुविधा किसी को क्यों न हुई हो ; परंतु सब के मन में यह विश्वास जड़ जमाये था कि भय करनेवाली कोई बात नहीं हो सकती ; क्योंकि अथास बहुत चतुर, दूरदर्शी और लगन का आदमी है। उसके काम में हस्तक्षेप करना उचित नहीं।

जब हमारा यह मित्र-मंडल बैथ्यून के होटल से रवाना हुआ, तब रात के नौ बज चुके थे। सब लोग अपने-अपने विचारों में तल्लीन, चिंता और शोक की मूर्तियाँ बने हुए, घोड़ों को सरपट छोड़े, निस्तब्ध अंधकारमयी रजनी में उसी सड़क पर चल दिये, जिधर राकफ़ोर्ट की गाड़ी गई थी। प्लेंचेट अपने घोड़े पर मार्ग बतलाता हुआ आगे चला जा रहा था।

५२

आज की रात्रि अत्यंत अँधियाली थी, काले और घने बादल छाये हुए थे, कभी-कभी बिजली भी चमक जाती थी।

यात्री-मंडल निस्तब्ध अंधकार में अपने घोड़ों को दौड़ता हुआ चुपचाप शांति के साथ चला जा रहा था। फ़ेस्टुअर्ट की बस्ती के बाहर जंगल से गुज़रकर यह यात्री-समूह बाईं ओर मुड़ गया। ये लोग मार्ग में पड़नेवाले ग्राम-वस्तियों से हटकर बाहर ही बाहर जंगलों से होकर जा रहे थे। घोड़े सरपट दौड़ रहे थे, मानो उनको मालूम था कि अभीष्ट स्थान तक पहुँचने के लिये उनको यथासाध्य शीघ्रता करना चाहिए। स्वामियों के उद्देश्य का महत्त्व, उनकी अविराम गति से स्पष्ट जान पड़ता था।

मार्ग में कई बेर लार्ड विंटर, पार्थ और अर्मस ने लाल लबादे-वाले अश्वारोही का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयत्न किया; किंतु उस अज्ञात अद्भुत व्यक्ति ने बिना ज़बान खोले, उनके प्रत्येक प्रश्न का उत्तर केवल शिर झुका कर ही दिया। उन लोगों की जिज्ञासा और भी बढ़ती जाती थी। बहुत प्रयत्न करने पर भी जब उसने ज़बान न खोली, तो उन्हें चुप हो जाना पड़ा।

रात की भयंकरता और भी बढ़ गई। भयंकर आँधी आगई। जो कुछ देखने में विकट, महान्, अद्भुत प्रतीत होता है, वह सब शक्तिशालिनी महा-महिमामयी प्रकृति के इस तांडव नृत्य में उपस्थित था। प्रकृति के इस रुद्ररूप को और भी भयानक बनाने के लिये सघन मेघराशि ने तुमुल गर्जन आरम्भ कर दिया; परंतु प्रकृति का यह भीषण स्वरूप आरोहियों की गति पर किंचित्मात्र भी प्रभाव न डाल सका।

फ्रोमेली गाँव के निकट पहुँचते-पहुँचते घनघोर वर्षा होने लगी। राज-सैनिकों ने अपनी-अपनी बर्सातियाँ पहन लीं, अब केवल तीन मील का मार्ग तै करना बाक़ी था। आर्तगान ने अपना टोप उतार लिया, और मित्रों के विशेष आग्रह करने पर भी बर्साती नहीं ओढ़ी। वह इस शीतल जल-वृष्टि से अपने हृदय की भीषण ज्वाला को शांत करने का व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था।

अब यह लोग आर्मेनटियर्स के समीप आगये, होटल से उनका अंतर केवल आधा मील ही रह गया। जब एक जंगल के पास से गुज़रने लगे, तो सहसा वे चौंक पड़े, एक व्यक्ति जो अब तक अपने आपको पास के वृक्ष की आड़ में छिपाये हुए था, बड़ी शीघ्रता से निकलकर बीच सड़क में आकर खड़ा हो गया और उसने अपने मुँह पर उँगली रखकर कुछ संकेत किया। अथास का घोड़ा आगे था, इस व्यक्ति पर दृष्टि पड़ते ही वह पहचान गया। वह ग्रीमांड था। अथास ने पूछा—"क्या मामला है ? क्या वह यहाँ से चली गई ?"

ग्रीमांड ने सर झुकाकर स्वीकारात्मक उत्तर दिया। आर्तगान दाँत पीसने लगा।

अथास—"आर्तगान ! ख़ामोश ! इस काम का भार मैं ले चुका हूँ, ग्रीमांड से मुझे प्रश्न करने दो।" आर्तगान सहम गया।

अथास ने ग्रीमांड से पूछा—"वह कहाँ है ?"

ग्रीमांड ने लीस नदी की ओर एक हाथ फैला दिया।

"यहाँ से दूर है?" उसने हाथ की प्रमुख उँगली को झुका दिया।

"अकेली?"

उसने संकेत से हाँ कहा।

तब अथास ने सब मित्रों को संबोधन करके कहा—"मित्रो! वह आध मील के अंतर पर ही लीस नदी के किनारे है, उसी ओर हमको चलना चाहिए। ग्रीमांड! मार्ग बताओ।"

सब लोग ग्रीमांड के पीछे हो लिये। मार्ग की ऊबड़-खाबड़ भूमि तथा अनेक नालों को पार करते हुए वे लोग आगे बढ़ते चले गये। इस समय तूफ़ान का वेग घट चला था; परंतु आकाश में बादल अब भी छाये थे। बिजली चमकने पर सैनिकों ने देखा कि वे नदी के बहुत निकट आ गये। उनको मालूम हुआ कि उनसे अधिक से अधिक दो सौ क़दम की दूरी पर नदी के किनारे एक मकान है। वृक्षों की आड़ से हटकर जब वे लोग सामने मैदान में आये, तो उनको उस मकान की खिड़की से कुछ प्रकाश की झलक दिखाई दी। यहाँ आकर ग्रीमांड रुक गया और मकान की ओर उँगली से संकेत करके बताया कि यही वह स्थान है। सब लोगों की दृष्टि खिड़की पर जम गई।

इसी समय पास की एक खाई से कूदकर एक मनुष्य उनके पास आया। यह मास्कटन था। उसने भी उँगली के संकेत से ग्रीमांड के समाचार की पुष्टि की। अथास ने पूछा—वैरीकान कहाँ है? उसने धीरे से उत्तर दिया—"मैं खिड़की की निगरानी कर रहा था, वह गृह-द्वार की निगरानी कर रहा है।" अनुचरों के इस व्यवस्थित प्रबंध से सैनिक-गण अत्यंत संतुष्ट और प्रसन्न हुए। सब लोग घोड़ों से उतर पड़े, अथास स्वयं खिड़की की ओर चला और शेष मित्रों को घर के द्वार की ओर जाने का संकेत किया।

घर के चारों ओर दो या तीन हाथ ऊँची कच्ची मिट्टी की खाई

बनी हुई थी। अथास उस पर चढ़कर खिड़की तक पहुँच गया। सौभाग्य से खिड़की में दरवाज़े न थे, भीतर की ओर केवल आधे परदे पड़े थे। अथास दीवार के सहारे खिडकी के भीतर शिर डाल कर झाँकने लगा। कमरे में एक लैम्प जल रहा था उसी के प्रकाश में उसने देखा कि एक सुंदरी रमणी काले वस्त्र से अपने शरीर को ढके हुए एक कुर्सी पर बैठी हुई किसी चिंता में लीन है, वह अपनी कोहनियाँ मेज़ पर टेके थी और दोनों हाथों पर शिर रक्खे हुए थी। उसका मुख खिड़की की ओर न था, इसलिये अथास उसका चेहरा न पहचान सका; किंतु उसके ओठों पर हँसी की रेखा खिंच गई। शरीर के अवयवों से वह पहचान गया कि यह म्लैडी है।

इतने में एक घोड़ा हिनहिनाया। म्लैडी ने चौंककर खिड़की के बाहर झाँका, अथास पर दृष्टि पड़ते ही वह एक तीव्र चीत्कार करके पीछे हट गई। अथास ने यह देखकर कि वह उसे पहचान गई, एक छलाँग मारी और पलक मारते ही कमरे के भीतर पहुँच गया। म्लैडी द्वार की ओर भागी और किवाड़ खोलकर बाहर निकलने लगी, परंतु वहाँ यमदूत की भाँति आर्तगान खड़ा दिखलाई दिया। म्लैडी चीख़ मारकर लौट पड़ी। आर्तगान को ख़्याल हुआ कि कदाचित् वह भागकर निकल जाना चाहती है, इसी आशंका से पिस्तौल म्लैडी की ओर ताना; परंतु इसी समय अथास ने हाथ उठाकर मना किया और कहा—"आर्तगान! पिस्तौल को रोको, इस स्त्री के साथ न्याय होगा, अभी इसकी हत्या न की जायगी, कुछ देर प्रतीक्षा करो, मित्रो! भीतर चले आओ।"

यह आक्रमण म्लैडो के लिये इतना भयानक था कि उसका मस्तिष्क चक्कर खाने लगा, आँखों के आगे अँधेरा छा गया, पैर काँपने लगे, वह धम से एक कुर्सी पर गिर पड़ी। दोनों हाथ कुर्सी के दोनों ओर लटक गये, उसके मुँह पर भयंकर मुर्दनी छा गई, सारा शरीर

पसीने से तर हो गया। कमरे में जितने मनुष्य खड़े थे, वे उसके पापों का दंड देने के लिये उसे भीषण यमदूत जैसे दिखलाई देने लगे। वह समझ गई कि उसके पापों का आज अंतिम अनुष्ठान होनेवाला है। म्लैडी इतना शीघ्र मरना नहीं चाहती थी, हताश व्यक्ति के समान उसने एक ज़ोर मारा, वह हुँकार मारकर सँभलकर बैठ गई; परंतु लार्ड डी० विंटर पर दृष्टि पड़ते ही उसने एक भीषण चीत्कार किया, और आश्चर्य तथा भय से उसकी ओर आँखें फाड़-फाड़कर देखने लगी, और काँपते हुए स्वर में बोली—"तुम! तुम क्या चाहते हो?" म्लैडी की आकृति भय से इतनी विकृत हो गई थी कि लार्ड विंटर काँपकर पीछे हट गया। यह देखकर अथास दृढ़ता से आगे बढ़ा और गंभीर स्वर में बोला—"हम चाहते हैं, शार्लाट 'बेकसन' को, उसको जो पहले काउंटेस 'डी० ला फ़ीरी' थी और जो बाद को म्लैडी डी० विंटर, शेफ़ील्ड डी० वेरोनेस (अर्थात् डी० विंटर के बड़े भाई लार्ड डी० विंटर की पत्नी) बन गई।"

"क्या मैं! क्या मैं! तुम चाहते क्या हो?" भयभीत म्लैडी ने भर्राये हुए स्वर में चिल्लाकर कहा।

"हम चाहते हैं कि तुम्हारे पापों का समुचित निर्णय हो, विधि-पूर्वक तुम्हारे अपराध प्रमाणित किये जायँ। आज की इस गुप्त न्याय-सभा में तुमको अपनी सफ़ाई पेश करने की स्वतंत्रता दी जाती है, विरोध में जो कुछ तुम कहना चाहो, वह सब सुना जायगा। आर्तगान! पहले तुम्हारी बारी है, तुम अपना अभियोग उपस्थित करो।"

आर्तगान आगे बढ़ा और अत्यंत गंभीर होकर ऊँचे स्वर में उसने कहा—"ईश्वर और मनुष्य के समक्ष मैं इस स्त्री पर हत्या का अपराध लगाता हूँ, इसने कांसटेंस बोनैसी को कल रात्रि में स्वयं अपने हाथ से विष-पान कराया है।"

यह कहकर आर्तगान, पार्थ और अर्मस की ओर देखने लगा। उन दोनों ने एक स्वर होकर कहा—"हम इस घटना के साक्षी हैं।"

इसके पश्चात् आर्तगान ने फिर कहा—"ईश्वर और मनुष्य के समक्ष, मैं इस स्त्री पर हत्या का दूसरा अपराध लगाता हूँ। इसने मेरी हत्या के निमित्त एक जाली पत्र के साथ मेरे पास विषाक्त मदिरा भेजी थी; परंतु दैवयोग से मैं तो बच गया; किंतु मेरे स्थान में ब्राइजमाँट नामक सैनिक उसको पी गया और उसी समय उसकी मृत्यु हो गई।"

"हम दोनों इस घटना के साक्षी हैं।" पार्थ और अर्मस ने उसी ढंग से कहा।

आर्तगान फिर आगे बढ़ा—"ईश्वर और मनुष्य के समक्ष, इस स्त्री के विरुद्ध मेरा तीसरा अभियोग यह है कि इसने 'बैरन डी० वार्डीस' की हत्या के लिये मुझे उत्साहित किया; परंतु सौभाग्य से मैं इसके कलुषित कर्म में सहायता न दे सका और चूँकि इस घटना की साक्षी देनेवाला और कोई नहीं है, मैं स्वयं इसका साक्षी हूँ। मैं सौगंध खाकर इस घटना की सत्यता का समर्थन करता हूँ।"

इतना कहकर आर्तगान, पार्थ और अर्मस के साथ वहाँ से हटकर एक कोने में जाकर खड़ा हो गया।

अथास ने डी० विंटर की ओर देखकर कहा—"अब आपकी पारी है। लार्ड विंटर ने एक पग आगे बढ़कर गंभीर उच्च स्वर में कहा—"ईश्वर और मनुष्य के समक्ष, मैं इस स्त्री पर ड्यूक आफ़ बकिंघम की हत्या का अपराध लगाता हूँ।"

इसपर सब लोग भय और आश्चर्य से चिल्ला पड़े—"ऐं! क्या ड्यूक आफ़ बकिंघम अब नहीं हैं?"

लार्ड ने कहा—"हाँ! इस कुलटा ने उनकी भी जान ले ली। तुम्हारे गुप्त संदेश पाकर मैंने इसको गिरफ़्तार कर लिया और एक अत्यंत विश्वास-पात्र और स्वामि-भक्त सेवक की सिपुर्दगी में इसको

रख दिया। इसने अपनी माया से उसके मस्तिष्क को बिगाड़ दिया, उसके हाथ में एक तेज़ छुरी दे दी और ड्यूक की हत्या करा डाली और कदाचित अब तक उसको भी अपने किये का फल मिल चुका होगा।" पापों की इस अज्ञात तालिका को सुनकर, सबके हृदय काँप उठे।

लार्ड डी० विंटर ने एक क्षण रुककर फिर कहा—"यहीं पर इति नहीं है, मेरे बड़े भाई लार्ड डी० विंटर, जिन्होंने इसको अपनी उत्तराधिकारिणी बना दिया था, केवल एक घंटे में भयंकर स्थिति में तड़प-तड़पकर मर गये। उनके शरीर पर अंत तक जीवन के चिन्ह बने थे। इस रमणी ने उनको भी विष दिया था।"

उपस्थित सैनिक भय से चिल्ला पड़े—"ओफ़ ! ग़ज़ब !"

"जिस स्त्री ने बकिंघम, फ़ैल्टन और मेरे भाई की हत्यायें की हैं, उसके विरुद्ध में न्याय की प्रार्थना करता हूँ। मैं यह सौगंध खाकर कहता हूँ कि यदि मेरे साथ न्याय न किया गया, तो मैं तलवार की धार से स्वयं न्याय करूँगा।"

इतना कहकर लार्ड डी० विंटर आर्तगान की पंक्ति में आकर खड़े हो गये।

मलैडी अपने दोनों हाथों पर शिर रक्खे हुए, आँख बंद किये बैठी थी। हत्या किये हुए व्यक्ति उसे सामने खड़े-से दिखाई दे रहे थे, मस्तिष्क में भिन्न-भिन्न विचारों की क्रांति मची हुई थी। उसका शिर बड़े वेग से चक्कर खा रहा था।

अथास काँपता हुआ स्वयं आगे बढ़ा और कहने लगा—"न्यायाधीशो ! अब मेरी बारी है, मैंने इस स्त्री को जब यह सुंदर कुमारी के रूप में थी, पत्नीरूप में ग्रहण किया। अपने प्रिय कुटुंबियों की प्रबल अनिच्छा का विरोध करके मैंने इसके साथ विवाह किया था। इसको मैंने अपना प्रेम दिया, समस्त संपत्ति दी और दिया

अपने कुल का गौरव; परंतु एक दिन अत्यंत आश्चर्य के साथ मुझे मालूम हुआ कि यह दाग़ी गई है, इसके बायें कंधे पर "पापिष्ठा" शब्द अंकित है। ओफ़! यह चोर निकली, कुलटा और पापिनी प्रमाणित हुई, इसने मेरे कुल को कलुषित कर दिया, मेरी मान-मर्यादा को मिट्टी में मिला दिया...... ।"

अथास अपने वाक्य को समाप्त भी न कर पाया था कि ग्लैडी तनकर बैठ गई और आँखें तरेर कर बोली—"झूठ! सफ़ेद झूठ! मैं चुनौती देती हूँ कि कोई यह प्रमाणित कर दे कि अमुक न्यायालय से मैं दंडित की गई हूँ। कोई यह सिद्ध कर दे कि अमुक व्यक्ति ने मुझे दाग़ा है?"

ग्लैडी की इस सफ़ाई पर सब चुप होकर एक-दूसरे का मुँह देखने लगे, केवल दो व्यक्ति स्थिर चित्त दिखाई दिये, अथास और रक्त-वस्त्रावृत्त अपरिचित व्यक्ति। ग्लैडी की उत्तेजना जब कम हुई और उसके मुख पर संतोष तथा विजय की हास्य-रेखा अंकित दिखाई दी, तब वह अपरिचित व्यक्ति आगे बढ़ा। ग्लैडी के सामने आकर उसने अत्यंत गंभीर और शांत स्वर में कहा—"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मैं दूँगा। न्यायाधीशो! अब मेरी बारी है।" आर्तगान और उसके साथी आश्चर्य और तीव्र उत्सुकता के साथ इस अद्भुत व्यक्ति की ओर देखने लगे। ग्लैडी के कान में जैसे ही इस व्यक्ति का स्वर पड़ा, वह भय और असीम आश्चर्य से चौंक पड़ी, उसके चेहरे का रक्त सूख गया, भर्राये हुए स्वर में वह चिल्लाने लगी—"यह मनुष्य कौन है? यह कौन है? अरे, तुम कौन हो?" ग्लैडी आँखें फाड़-फाड़कर टकटकी बाँधकर उसकी ओर देख रही थी।

वह व्यक्ति धीरे-धीरे ग्लैडी के निकट आया और उसने अपने चेहरे की नक़ाब पीछे उलट दी। सब लोगों की आँखें उसके मुख की ओर झुक गईं। ग्लैडी ने धड़कते हृदय से उसके मुख को,

काली-काली घनी दाढ़ी मूँछों से ढकी हुई पीत आकृति को एक निमेष तक देखा, तब वह अपरिमित भय से चीख़ मारकर यह कहती हुई उठकर पीछे हटती हुई चली गई—"ओह! नहीं! नहीं! असंभव वह नहीं हो सकता। यह तो प्रेतात्मा है? वह नहीं? ओह! यह वह नहीं है।" म्लैडी दीवार तक जा लगी, वह हाथ से दीवार को खरोंच कर ढा देना चाहती थी, जिससे वह वहाँ से निकल भागे; परंतु यह देखकर कि वह भाग नहीं सकती, अपनी आँखों पर हाथ रखकर खड़ी रही। उसके सब कपड़े पसीने से भीग गये। मस्तिष्क में एक भूचाल-सा आ गया, अतीत जीवन की कलुषित स्मृतियाँ जागृत होकर उसके हृदय को मसोसने लगीं। उसकी मुखाकृति भयंकर रूप से विकृत हो गई।

इस दृश्य को देखकर उपस्थित साक्षीगणों का हृदय दहल उठा। सब चिल्ला पड़े—"तुम कौन हो? अपना परिचय दो।" लाल वस्त्र-धारी व्यक्ति ने अत्यंत शांति के साथ मुस्कराकर कहा—"मेरा परिचय इस स्त्री से पूछो, तुम लोग देख रहे हो, यह मुझे पहचानती है।"

"लिली का घातक। लिली का घातक!" म्लैडी ने भय-पूर्ण भर्राये हुये गले से कहा। वह दीवार से चिपटी हुई हाथों से उसे गिराने का प्रयत्न करने लगी। जघन्य पाप सजीव होकर उसके नेत्रों के सामने प्रत्यक्ष घूमने लगे।

इस भयावह स्थिति को देखकर सब लोग पीछे हट गये, केवल वह अद्भुत व्यक्ति दृढ़ता के साथ जहाँ था, वहीं खड़ा रहा। भय-विह्वल म्लैडी के पैरों की शक्ति लोप हो गई, वह करुण चीत्कार करके पृथ्वी पर गिर पड़ी और हृदयवेधी कातर-स्वर में कहने लगी—"ईश्वर! क्षमा! क्षमा!" इस दयनीय क्रंदन से आर्तगान का हृदय द्रवित हो उठा; परंतु वह अपरिचित निश्चल चट्टान की भाँति खड़ा रहा। कुछ क्षण तक चुप रहकर उसने कहा—"न्यायाधीशो! मैं यह पहले

ही बतला चुका हूँ कि यह मुझे पहचानती है। निस्संदेह, मैं ही लिली का घातक हूँ। मेरी कथा यह है!" सब लोग विस्मित नेत्रों से उसकी ओर देखने लगे, उसके प्रत्येक शब्द पर उनके कान लगे थे।

लिली के घातक ने अपनी कथा इस प्रकार कही—"यह स्त्री किसी समय अपने अनुपम रूप और लावण्य के लिये अत्यंत प्रसिद्ध थी। कौमार्य-अवस्था में इसका सौंदर्य अप्रतिभ था, इसके रूप में मदिरा जैसी मादकता थी, उस समय यह टेंप्लीमार के धर्म-मंदिर में देवदासी का काम करती थी। उस मंदिर की धार्मिक क्रियाओं को संपन्न करनेवाला पुरोहित एक नवयुवक था, उसकी प्रकृति अत्यंत सरल और हृदय अत्यंत धर्मपरायण था। इस स्त्री ने अपने उन्मादक सौंदर्य से उसके हृदय में एक अग्नि प्रज्वलित करदी, अपने विमुग्धकारी प्रलोभन के दृढ़ माया-जाल में उसे फँसा लिया, ओफ़! उस समय यह ग़ज़ब की सुंदरी थी, इसके नेत्रों में विचित्र ज्वाला थी। उस ज्वाला से यह देवताओं को भी भस्म कर सकती थी।"

"इन दोनों का प्रेम प्रचण्ड वेगवती नदी की भाँति बढ़ने लगा। पवित्र सौगंध और स्निग्ध व्यवहारों से दोनों हृदय बँध गये; परंतु पाप का अवश्यम्भावी फल सदा सर्वनाश है। इसने विश्वासांध पुरोहित को भाग चलने की प्रेरणा दी, उसको सिखलाया कि इस बंधनयुक्त जीवन को त्याग कर आओ, मुक्त जीवन के आनंद का उपयोग करें। प्रेमांध पुरोहित मान गया। धन की कमी को दूर करने के लिये दोनों ने मंदिर के स्वर्ण-पात्र चुरा लिये और भागने के उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करने लगे; परंतु दैवयोग से इस चोरी का पता धर्म-मंदिर के संरक्षकों को लग गया। भागने की तैयारियाँ कर ही रहे थे, तभी दोनों गिरफ़्तार कर लिये गये।"

"आठ दिन तक जेल में रहने के बाद इस रमणी ने जेल-संरक्षक के लड़के को अपने सौंदर्य और यौवन का प्रलोभन दिया और वहाँ

से भी भाग निकली। नवयुवक पुरोहित को दस वर्ष के लिये कठिन कारावास का दंड दिया गया। मैं उस समय उस लिली नगर का घातक था। उस अपराधी को दागने की क्रिया मुझे ही सम्पन्न करनी पड़ी। न्यायाधीशो ! वह मेरा सगा भाई था।"

"तब मैंने यह प्रतिज्ञा की कि जिस रमणी ने मेरे भाई के चरित्र को भ्रष्ट किया, उसके जीवन का सर्वनाश कर उसको मैं स्वयं दंड दूँगा। मैंने इसका पीछा किया, पकड़ा और बाँध लिया और इसके कंधे पर भी वही चिन्ह अंकित किया, जिसे मुझे विवश होकर अपने भाई के अंकित करना पड़ा था।"

"जिस दिन मैं लिली लौटकर आया, उसके एक दिन पहले ही मेरा भाई जेल से किसी प्रकार भाग गया। उसके भागने की साजिश का मुझपर संदेह किया गया और उसके स्थान में उस समय तक के लिये मैं जेल में ठूँस दिया गया, जब तक वह लौटकर न आजाय। मेरे भाई को पहले इसकी कुछ भी ख़बर न थी। वह सीधा इस स्त्री के पास गया, दोनों भागकर बेरी नगर पहुँचे। वहाँ पर वह एक मंदिर का पुजारी बन गया और इसको अपनी बहिन प्रसिद्ध किया।"

"जिस ताल्लुक़े में वह मंदिर था, उसके स्वामी लार्ड की दृष्टि इस पापिष्ठा के सुंदर रूप पर पड़ गई। वह इस पर मुग्ध हो गया, यहाँ तक कि उसने इससे विवाह का प्रस्ताव किया। कुछ दिन तक यह वहाँ रही; परंतु यह तो किसी एक पुरुष के अधीन सदा रह ही नहीं सकती थी, ऐश्वर्य और विलास का कुछ काल वहाँ बिताकर वहाँ से भी भाग खड़ी हुई। इसके बाद यह काउंटेस डी० लाफ़ीरी बनकर एक दूसरे लार्ड का सर्वनाश करने लगी। यही अथास वह पूर्व काउंट डी० लाफ़ीरी हैं, इस पापिष्ठा के पूर्व-पति हैं।"

सबकी दृष्टियाँ अथास की ओर झुक गईं। अथास ने सिर हिलाकर इन बातों का समर्थन किया।

लिली के घातक ने कुछ दम लेकर कहा—"इसके बाद मेरे भाई को मेरे जेल जाने की घटना का हाल मालूम हुआ। मेरे त्याग से उसके हृदय में पश्चाताप के भाव जागृत हुए। अपने पतित जीवन पर उसे घृणा हुई, धन, सम्भ्रम, मान-मर्यादा, गौरव और सुख सब कुछ नष्ट होने पर वह इस पापिष्ठा का संग त्यागकर लिली वापस आया और असीम शोक और दुःख के आवेश में उसने आत्महत्या करली। मृत्यु के उपरांत जब वह पहचाना गया, तब जेल-संरक्षकों ने न्याय की मर्यादा स्थापित करने के लिये मुझे बंदी जीवन से मुक्त कर दिया।"

"इसी अपराध को मैं इस पर आरोपित करता हूँ, इसी कारण से मैंने इसके कंधे पर 'पापिष्ठा' शब्द दाग़ दिया था।" इतना कहकर वह चुप हो गया। कमरे में भयंकर शांति छा गई; परंतु उपस्थित सैनिकों के चेहरों पर प्रतिहिंसा के भीषण चिन्ह झलक आये। क्रोध से सबके मुख तमतमा उठे। म्लैडी का हृदय यह देखकर दहल उठा। अथास ने शांति को भंग करके गंभीर-स्वर में पुकार कर कहा—"आर्तगान! इसके लिये तुम कौन सा दंड निश्चित करते हो?"

"मृत्यु-दंड!" आर्तगान ने उत्तेजित होकर कहा।

"लार्ड डी० विंटर! इस रमणी के लिये आप कौन-सा दंड निश्चित करते हैं?"

"मृत्यु-दंड" लार्ड डी० विंटर ने उत्तर दिया।

"पार्थ और अर्मस! आप लोग निष्पक्ष न्यायाधीश हैं, आपके विचार से इसके लिये कौन-सा दंड उपयुक्त होगा?"

"मृत्यु-दंड" दोनों ने मिश्रित-स्वर में कहा।

म्लैडी चिल्लाकर पृथ्वी पर गिर पड़ी और दोनों हाथ जोड़कर न्यायाधीशों की ओर भयातुर, करुणापूर्ण दृष्टि से देखने लगी। उसकी दृष्टि में क्षमा-याचना की हृदय-स्पर्शी पुकार थी। अथास

अपना हाथ उसकी ओर बढ़ाकर कहने लगा—"शार्लोटिक्सन काउंटेस डी० लफ़ीरी ! ग्लैडी डी० विंटर ! तुम्हारे इस कलुषित लोमहर्षण पापाचरण से इस लोक में मनुष्य और परलोक में ईश्वर दोनों संत्रस्त हो उठे हैं, यदि तुम ईश्वर की प्रार्थना करना जानती हो, तो प्रार्थना कर सकती हो ; क्योंकि संसार तुम्हारे जीवन से मुक्त होना चाहता है, तुम आज मरोगी।"

इन शब्दों में दृढ़ता थी। इनको सुनकर ग्लैडी ने अभिमान और गर्व के साथ अपना सिर उठाया और कुछ बोलने का प्रयत्न किया ; परंतु उसका गला सूख गया था, ज़बान तालू से लग गई थी, वह निशक्त होकर अर्द्ध-चेतन अवस्था में फिर गिर पड़ी। उसको अनुभव हुआ कि किन्हीं शक्तिशाली हाथों ने उसके बालों को पकड़ लिया और उसको अत्यंत दृढ़ता और निर्दयता के साथ घसीटते लिये जारहे हैं। इस समय ग्लैडी पूर्णरूप से अचेत होगई थी।

लार्ड डी० विंटर, आर्तगान, अथास, पार्थ और अर्मस उसी के पीछे कमरे के बाहर हुए। सब अनुचर भी अपने मालिकों के पीछे हो लिये। वह मकान, वह कमरा, वह द्वार सब वैसे ही खुले पड़े रहे। उस निस्तब्ध, निर्जन, घर में, ग्लैडी के हाथ का जलाया हुआ लेम्प अपनी टिमटिमाती हुई रोशनी से उसकी शोक-स्मृति को प्रातःकाल तक सुरक्षित रक्खे रहा। वह घर मृत्यु की अंतिम विभीषिका के स्मारक स्वरूप बहुत काल तक अपने पूर्वरूप में बना रहा था।

५४

आधी रात का समय था, चंद्रदेव उदय हो चुके थे। सामने ही कुछ दूरी पर लीस नदी का शुभ्र जल हिलोरें मार रहा था। चंद्रमा की किरणें तरंगों के साथ नृत्य कर रही थीं। नदी के दूसरे ओर सघन वृक्षों की कालिमामयी पंक्ति थी। बाईं ओर एक प्राचीन विध्वंस मिल की चिमनी पर बैठा हुआ उल्लू अपने कर्ण-कटु स्वर से कभी-कभी निस्तब्धता को भंग कर देता था। दाहिनी ओर सड़क के पास कुछ सूखे वृक्षों के ठूँठ खड़े थे, जो बटोहियों पर आक्रमण करने के लिये तैयार खड़े डाकुओं जैसे मालूम होते थे। रेत पर पड़े जल-कण चंद्रिका की मलिन आभा को चमका रहे थे, पेड़ों से टूटकर गिरी, भीगी पत्तियों से विचित्र सुगंध निकलकर चारों ओर फैल रही थी।

भिन्न-भिन्न भावों से चित्रित प्रकृति के इन विविध रूपों से जीवन और मृत्यु का अद्भुत सम्मिलन प्रतिबिंबित होरहा था। ऐसे ही समय अनुचर लोग अचेत ग्लैडी को भुजाओं में लटकाये हुए ला रहे थे। घातक उनके पीछे-पीछे आ रहा था, उसके पीछे और सब सैनिक थे। सब के चेहरों पर हर्ष और शोक, भय और तृप्ति के विभिन्न भाव झलक रहे थे। सब चुप थे और धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे।

दो अनुचर ग्लैडी को नदी के तीर ले आये। शीतल वायु के

स्पर्श से म्लैडी को चेत हो गया था, उसके चमकीले तीव्र नेत्र वर्णनातीत भाषा में बोलने का प्रयत्न कर रहे थे।

जब म्लैडी जल के समीप पहुँच गई, तो उसने धीमे स्वर में अनुचरों से कहा—"यदि तुम मेरी मुक्ति में सहायता दो, तो तुम दोनों को एक-एक सहस्र मुद्रा मिलेगी; परंतु यदि मेरी मृत्यु में सहायता दोगे, तो मेरा बदला लेनेवाले पास ही मौजूद हैं, वे तुमको मार डालेंगे।" दोनों काँप उठे, ग्रीमांड हिचकिचाया, मास्कटन इधर-उधर देखने लगा। अथास ने म्लैडी को बोलते हुए सुन लिया, वह दौड़ा हुआ आया और कहने लगा—"इन अनुचरों को बदल दो, उसने इनसे कुछ बात की है, ये विश्वास-योग्य नहीं रहे।" शीघ्र ही प्लेंचेट और वैरीकान बुलाये गये और उनके स्थान पर नियुक्त किये गये।

जब म्लैडी नदी-तट पर पहुँचा दी गई, तब लिली का घातक वहाँ गया, उसने म्लैडी के हाथ और पैर दृढ़ता से कस दिये। इस पर म्लैडी चिल्लाकर कहने लगी—"तुम लोग डरपोक हो! निर्दयी घातक हो! दस पुरुष एक अबला की हत्या करें? ईश्वर तुमको इसका बदला देगा।"

अथास ने तीव्र-स्वर में कहा—"ईश्वर! तू ईश्वर को मानती है? तू अबला है? तू तो मानव जाति से भिन्न नर्क से निकाली हुई राक्षसी है, धीरज रख! तुझको उसी नर्क में भेज रहे हैं।"

इन शब्दों से म्लैडी हताश होगई। भय से कातर होकर वह ज़ोरों से चीखने लगी। उसका करुण-क्रंदन नदी के कल-कल शब्द में और आकाश की अनंत दिशाओं में विलीन हो गया। वह कहने लगी—"ओह! यदि मैं अपराधिनी हूँ, यदि मैंने सचमुच कोई पाप किये हैं, तो मेरा अभियोग न्याय सभा में होना चाहिए! तुम न्यायाधीश नहीं हो! तुम घातक हो! तुमको दंड देने का क्या अधिकार?" लार्ड डी० विंटर ने कहा—"मैंने तुम्हारे लिये अफ्रीका निश्चित किया था, तुमने वहाँ जाना क्यों पसंद न किया?"

"क्योंकि मैं मरना नहीं चाहती, मेरी अवस्था अभी मरनेवाली नहीं है।"

"ओह, मैडम। क्या उस स्त्री की अवस्था मरनेवाली थी, जिसको बैथ्यून में तुमने विषपान कराया। ओफ़! वह मर गई।" आर्तगान ने क्रोध, शोक और प्रतिकार से प्रेरित होकर कहा—

"आह! मैं धर्म-मंदिर में प्रवेश करूँगी, वहाँ देवदासी होकर रहूँगी! मुझे जीने दो?"

घातक ने उत्तर दिया—"तुमने धर्म-मंदिर ही में रहकर मेरे भाई का सर्वनाश किया था।"

म्लैडी ने मृत्यु के स्थान में विविध दंडों की प्रार्थना की; परंतु इन निष्ठुर प्रत्युत्तरों ने उसका बोलना बंद कर दिया। अब उसको पूर्णतया विश्वास होगया कि मैं अब नहीं बच सकती। वह फिर भयोत्पादक चीत्कार करने लगी। घातक ने अपने कठोर हाथों से उसे दृढ़ता से पकड़कर उठा लिया और नौका की ओर ले चला। म्लैडी यह देखकर चिल्ला पड़ी—"ओह! ईश्वर! मुझे कहाँ लिये जाते हो? क्या जल में डुबोकर मारोगे? अरे हत्यारो! दुष्टो! नारकीय घातको! क्या इस अबला पर तुम्हारी डरपोक तलवारें नहीं उठ सकतीं? हाय! क्या मुझे मारने का और कोई साधन नहीं है? आह! मुझे जल में न डुबाओ! आह! ईश्वर! ईश्वर!" म्लैडी फिर बेहोश होगई।

यह क्रन्दन इतना करुण और हृदयभेदी था कि आर्तगान, जो म्लैडी के नाश के लिये सबसे अधिक उत्सुक था, इस आर्तनाद को सुनकर द्रवीभूत हो गया और खड़ा होकर कहने लगा—"ओह! मैं इस भीषण दृश्य को नहीं देख सकता। इस स्त्री की इस प्रकार की मृत्यु के विषय में मैं अपनी स्वीकृति नहीं दूँगा म्लैडी ने ये शब्द सुन लिये, वह चिल्ला पड़ी—"ओह! आर्तगान! आर्तगान! याद करो, मैं तुमसे कितना प्रेम करती थी!"

आर्तगान ने उसकी ओर पैर बढ़ाया। इतने में अथास उठ खड़ा हुआ और नंगी तलवार से उसका मार्ग रोककर तीव्र-स्वर में बोला—"आर्तगान! याद रक्खो! यदि एक क़दम भी आगे रक्खा, तो द्वंद-युद्ध बिना आगे नहीं बढ़ सकते।"

आर्तगान सहमकर एक ओर बैठ गया। अथास ने घातक से कहा—जाओ। तुम अपना कर्तव्य पालन करो?"

घातक ने उत्तर दिया—"जैसी आपकी आज्ञा। मैं पक्का धर्मनिष्ठ हूँ, मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मैं इस स्त्री के साथ न्याय कर रहा हूँ। मुझे पूर्ण विश्वास है कि धर्म, सत्य और न्याय की मेरे लिये यही आज्ञा है।"

"यह उचित है।" इतना कहकर अथास म्लैडी की ओर बढ़ा। उसने गंभीर स्वर में कहा—"मैं तुम्हारे अपराधों को, जो तुमने मेरे साथ किये हैं, क्षमा करता हूँ। मैं क्षमा करता हूँ, अपने नष्ट भविष्य के लिये, नष्ट गौरव के लिये, नष्ट प्रेम के लिये और उस उद्देश्य-विहीन, हताश जीवन के लिये, जिसमें केवल तुम्हारे कारण मैं डाल दिया गया हूँ। तुमको शांति-मृत्यु प्राप्त हो।"

इसके बाद लार्ड डी० विंटर ने आगे बढ़कर कहा—"अपने भाई, लार्ड बकिंघम और फ़ैल्टन की क्रूर हत्या के लिये मैं तुमको क्षमा करता हूँ। स्वयं मेरी हत्या के लिये जो तुमने प्रयत्न किये हैं, उनके लिये भी मैं क्षमा करता हूँ। तुमको शांति-मृत्यु प्राप्त हो।"

आर्तगान ने अपनी पारी से, आगे बढ़कर कहा—"मैडम, मैंने अपने असज्जनोचित्त व्यवहार से जो तुम्हारे क्रोध को उभाड़ा, उसके लिये मैं क्षमा चाहता हूँ और साथ ही अपनी प्रेमिका की हृदयहीन हत्या के लिये और अपने प्रति तुम्हारे क्रूर प्रतिहिंसा-भाव के लिये तुमको क्षमा करता हूँ और तुम्हारे लिये हृदय से दुखी हूँ। मैडम! तुम शांति से मरो।"

"आह! सर्वनाश! सर्वनाश! मैं मरूँगी।" म्लैडी कातर-स्वर में बरबरा रही थी।

वह सहसा चौंककर उठ बैठी और अपने चारों ओर दृष्टिपात किया, उसके तीव्र नेत्रों से भीषण ज्वाला की एक लपट निकली।

वह देखना चाहती थी; परंतु देख नहीं सकती थी, उसने सुनने का प्रयत्न किया; परंतु सुन नहीं सकी। वह बोली—ओफ़! मुझको कहाँ मारोगे?"

घातक ने उत्तर दिया—"नदी के उस पार।"

घातक ने उसे नौका में डाल दिया और जब कि वह उस पर स्वयं चढ़ने जा रहा था, अथास ने उसके हाथ में कुछ स्वर्ण मुद्रायें रखकर कहा—"यह तुम्हारे कार्य का पुरस्कार है। इससे सिद्ध है कि हम एक न्यायाधीश की ही भाँति कर्त्तव्य पूरा कर रहे हैं।"

घातक ने कहा—"यह उचित है; परंतु इस स्त्री को यह भी जान लेना चाहिए कि मैं अपने व्यवसाय को पूरा नहीं कर रहा; किंतु अपना ऋण चुकता कर रहा हूँ।" इतना कहकर उसने वह धन नदी में डाल दिया, नदी की उत्ताल तरंगों में जीवन-मृत्यु का वह विनिमय-शुल्क तुरंत विलीन हो गया।

सब दिशायें सघन कुहरे से आच्छादित होगई थीं; आकाश, नक्षत्र, चंद्र, उपकूल किसी ओर कुछ भी दिखाई नहीं देता था, जो भयावह दृश्य उपस्थित होनेवाला था, उसको संसार से गोपनीय रखने के लिये मानो प्रकृति ने प्रयत्नशील हो सघन कालिमा का एक अभेद्य परदा डाल दिया था। नदी के तटपर खड़े न्यायाधीश मरणासन्न आत्मा की सद्गति के लिये भगवान से प्रार्थना कर रहे थे।

घातक का ध्यान नौका-संचालम में लगा था, उसकी दृष्टि बचा कर ग्लैडी ने धीरे-धीरे अपने बंधन खोल डाले और जब नौका पार आकर रुकी, तो वह पलक मारते बड़ी फुर्ती से बाहर कूद गई और एक ओर तेज़ी से भागी; परंतु दुर्भाग्य की श्रृंखला से उसके पैर जकड़े थे, वहाँ की भूमि गीली और चिकनी थी, कुछ दूर चलकर ही वह फिसली

और घुटनों के बल गिर पड़ी। वह समझ गई कि अदृष्ट उसके विपरीत है, दैव उसकी मृत्यु चाहता है। उसने फिर प्रयत्न नहीं किया, यह उसके जीवन की अंतिम क्रिया थी, भयकातर दृष्टि से उसने अपने चारो ओर देखा, उसका शरीर अवसन्न पड़ गया, मस्तक झुक गया, स्वयं ही उसके दोनों हाथ परस्पर मिल गये। बिना चेष्टा के वह प्रार्थना कर रही थी।

इसके बाद मेघों में हृदय-कंपी गर्जना हुई और बिजली चमकने लगी। उसी क्षणिक प्रकाश में अथास और उसके संगियों ने देखा कि घातक की भुजा धीरे-धीरे उठी, विद्युत-ज्योति तलवार की शुभ्र-धार पर चमकी। तब वही भुजा पूर्ण वेग के साथ नीचे की ओर घूम गई। इसी समय एक छपाके का शब्द हुआ और उसके साथ ही एक भयावह चीख निकलकर आकाश के अनंत शून्य में विलीन हो गई।

घातक ने अपना लाल लबादा उतारकर पृथ्वी पर बिछा दिया और मृत कलेवर के दोनों भागों को उसमें ख़ूब कसकर बाँधा। भार को पीठ पर लादकर नौका में वह पुनः वापस आ गया।

नौका नदी की मध्य-धारा में पहुँच कर रुक गई। घातक ने अपने भार को ऊँचा उठाया और यह कहते हुए नदी के प्रवाह में बड़े वेग से फेंक दिया कि "ईश्वरीय इच्छा संपूर्ण हो?" उत्कट रूप से लालायित उत्ताल तरंगें घुमड़-घुमड़कर कलेवर के उन टुकड़ों पर अत्यंत वेग से झपट पड़ीं और पल भर में उनको अनंत जलराशि में छिपा लिया।

इस घटना के तीन दिन बाद चारों तिलंगे पेरिस आगये। उनकी छुट्टी अभी समाप्त नहीं हुई थी। उनको देखकर सेनानायक त्रिबली अत्यंत प्रसन्न हुआ। उसने हँसकर पूछा—"सैनिको! इन छुट्टियों में तो तुमने ख़ूब आनंद मनाया होगा?"

अथास ने सबकी ओर से उत्तर दिया—"यह यात्रा अत्यंत आमोदपूर्ण और सफल रही।"

५५

इस घटना को हुए एक मास बीत गया। राजा ने बकिंघम की मृत्यु के आश्चर्यजनक समाचार को सुनकर छठी तारीख़ को राजधानी से राशेल की ओर प्रस्थान कर दिया।

रानी यद्यपि यह जानती थी कि जिस व्यक्ति को वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती है, उसका जीवन विपत्ति में है तथापि जब उसे उसकी मृत्यु की सूचना मिली, तो सहसा उसको विश्वास न हुआ। वह भयभीत होकर बार-बार यही चिल्ला पड़ती थी कि यह ख़बर असत्य है, उसका पत्र अभी ही मेरे पास आया है। परंतु जब लैपार्टी जो इंगलैंड में चार्ल्स प्रथम के आदेश से अन्य व्यक्तियों की भाँति रोक लिया गया था, लौटकर आया, तो रानी को इस हृदय-विदारक समाचार पर विश्वास करना पड़ा।

राजा यह समाचार सुनकर अत्यंत प्रसन्न हुआ। खिन्नमना रानी के साथ बनावटी प्रेम-प्रदर्शन करके, उसके हृदय की ज्वाला को बढ़ाने में वह प्रसन्न होता था। साधारण व्यक्तियों की भाँति राजा में भी उदारता और सहानुभूति की कमी थी।

राजा फिर उदास और चिंतित रहने लगा। उसको युद्धक्षेत्र में पुनः लौटना बहुत बुरा मालूम हुआ; परंतु अपनी प्रतिज्ञा के अनुरोध से इच्छा न होते हुए भी उसको राशेल लौटना ही पड़ा। उसकी दृष्टि में धर्माचार्य एक नेत्ररंजक भुजंग था और उसकी दशा उस पक्षी की भाँति थी, जो एक शाखा से दूसरी शाखा पर प्राणरक्षा के लिये बैठता फिरता है।

इन चारों मित्रों की मुखाकृति को देखकर सैनिक अत्यंत विस्मित हुए, उनके चेहरों पर कालिमा छाई थी, नेत्र शोकपूर्ण थे और शिर झुके हुए। अथास कभी-कभी गर्व के साथ अपना सर उठा लेता था, उस समय उसके नेत्रों से एक ज्योति चमक उठती थी और उसके ओठों पर मुस्कराहट की एक मलिन रेखा अंकित हो जाती थी; परंतु पल ही भर में वह फिर किसी गहरी चिंता में लीन हो जाता था।

मार्ग के एक नगर में राजा ने पड़ाव डाला, चारो मित्र राजा के शाही खेमे में पहुँचकर स्वयं एक एकांत होटल के निर्जन कमरे में आकर विश्राम करने लगे। वे न तो किसी आमोद-प्रमोद ही में सम्मिलित हुए और न उन्होंने मदिरा पान ही किया। उनका जीवन अत्यंत सादा और उदासीन हो गया था।

एक दिन जब राजा मार्ग में शिकार खेलने के लिये ठहर गया और हमारे मित्र अपने नवीन स्वभाव के अनुकूल एक सड़क के निकट होटल के कमरे में एकांत धीरे-धीरे वार्तालाप कर रहे थे, तब सहसा एक अश्वारोही वहाँ आकर रुका, कमरे में प्रवेश करने पर उसने अत्यंत खोजपूर्ण तीव्र दृष्टि से इधर-उधर देखा, सहसा वह प्रसन्नता से चिल्ला पड़ा—"ओह! आर्तगान! क्या तुम यहाँ हो?"

आर्तगान ने गर्दन ऊपर उठाई और इस नवीन अतिथि पर दृष्टि पड़ते ही उसने हर्ष-ध्वनि की। आर्तगान के सामने उसका पुराना शत्रु म्यांग का वही अपरिचित मनुष्य था। आर्तगान ने म्यान से तलवार

निकाल ली, और द्वार की ओर झपटा । इस बार व्यक्ति ने भी युद्ध को टालना न चाहा, वह घोड़े से कूद पड़ा और आर्तगान की ओर अग्रसर हुआ ।

आर्तगान ने कहा—"आह ! महाशय ! आज तुम अंत में मिल ही गये । इस समय तुम बचकर नहीं जा सकते ।"

"मेरा भी यह इरादा नहीं है ; क्योंकि मैं तुम्हारी खोज कर रहा था, राजा के नाम पर मैं तुमको बंदी करता हूँ ।"

आर्तगान ने आश्चर्य से कहा—"क्या ? यह तुम क्या कहते हो ?"

"मैं कहता हूँ कि तुम अपनी तलवार मुझे समर्पित कर दो, इस समय विरोध करना निरर्थक होगा ।"

आर्तगान ने अपनी तलवार की नोक को झुका लिया ; परंतु उसको और भी दृढ़ता से पकड़कर कहा—"तुम कौन हो ?"

"मैं राकफ्रोर्ट हूँ, धर्माध्यक्ष रिचलू का अंगरक्षक । मुझे यह आज्ञा है कि मैं तुमको धर्माचार्य के पास ले चलूँ ।"

स्थिति को बिगड़ते देखकर अथास ने आगे बढ़कर कहा—"महाशय राकफ्रोर्ट ! हम भी धर्माचार्य ही के पास चल रहे हैं । आप कृपा करके हमारे इन वचनों पर विश्वास रखिये कि हम सीधे राशेल ही जायँगे ।"

"परंतु मेरा कर्तव्य है कि मैं आर्तगान को शाही गारद के सिपुर्द करूँ ।"

"गारद की पूर्ति हम कर लेंगे, आर्तगान हमारी निगरानी में रहेगा । आप विश्वास रखिये, वह भाग नहीं सकता ।"

राकफ्रोर्ट ने पीछे की ओर एक शंकित दृष्टि डाली । उसने देखा कि पार्थ और अर्मस ने पहले ही से द्वार घेर लिया है । वह समझ गया कि इन लोगों की बात उसे माननी ही पड़ेगी ।

यह विचार कर उसने कहा—"महाशय ! यदि आर्तगान अपनी

तलवार मुझे सौंप दें और वह स्वयं बचन दें, तो मैं आप लोगों के अनुरोध को सहर्ष स्वीकार कर लूँगा।"

आर्तगान ने तलवार उसको देते हुए कहा—"यह लीजिये मेरी तलवार' मैं बचन देता हूँ कि मैं राशेल पहुँचकर स्वयं धर्माचार्य के पास उपस्थित हो जाऊँगा।"

"यह व्यवस्था बड़ी उत्तम है। मैं आप लोगों के अनुरोध को स्वीकार करता हूँ, मुझको आगे जाना है।"

अथास ने कहा—"यदि तुम्हारी यह यात्रा म्लैडी से मिलने के उद्देश्य से है, तो जाना व्यर्थ है। तुमसे अब उसकी भेंट नहीं हो सकती।"

"क्यों? वह कहाँ गई?"

"राशेल लौट चलिए, वहाँ पहुँचकर तुमको सब हाल मालूम हो जायगा।"

राकफ़ोर्ट कुछ क्षण तक किसी गहरे विचार में पड़ गया। कुछ देर सोचकर उसने अथास की बात मान ली और उन्हीं लोगों के साथ राशेल लौट पड़ा। राजा ने उसी दिन कूच कर दिया। दूसरे दिन तीन बजे के लगभग ये लोग राशेल पहुँचे। धर्माचार्य राजा की प्रतीक्षा कर रहा था, उसमें और राजा में युद्ध-क्षेत्र के संबंध में घंटों बातचीत होती रही। दोनों इस बात पर बड़े प्रसन्न हुए कि फ्रांस का विकट शत्रु बकिंघम जिसने सारे योरोप को संत्रस्त कर रक्खा था, दैवयोग से अकस्मात् मृत्यु को प्राप्त हुआ। राशेल-निवासियों को अब आत्म-समर्पण के अतिरिक्त और कोई चारा नहीं रह गया। धर्माचार्य ने राजा को फ्रांस की इस गौरव-शालिनी विजय पर अनेक धन्यवाद दिये। इसके उपरांत वह अपने ख़ेमे में वापस आया। इसको यह सूचना मिल चुकी थी कि आर्तगान बंदी कर लिया गया है। इसलिये वह अत्यंत व्यग्रता से बंदी के आने की प्रतीक्षा करने

लगा। थोड़ी ही देर में आर्तगान ने अपने मित्रों को बाहर छोड़कर भयरहित हृदय से धर्माचार्य के ख़ेमे में प्रवेश किया। रिचलू दीवार के सहारे एक मेज़ के पास खड़ा कुछ सोच रहा था।

आर्तगान को निःशस्त्र आते देख वह मुस्कराया और कुर्सी पर बैठ गया। तब उसने गर्दन उठाकर निर्भीक युवक की ओर तीच्ण दृष्टि से चण भर देखा और गम्भीर स्वर में बोला—"सैनिक! तुम मेरी आज्ञा से बंदी किये गये हो?"

"मुझे भी यही सूचना मिली है।" आर्तगान ने धीमे स्वर में कहा।

"क्या तुम जानते हो कि तुम बंदी क्यों किये गये?"

"नहीं! केवल इतना जानता हूँ कि जिस लिये श्रीमान् ने मुझे बंदी किया है, उससे श्रीमान् स्वयं अनभिज्ञ हैं!"

रिचलू आश्चर्य से इस धृष्ट युवक की ओर ताकने लगा।

"क्या? तुम्हारा क्या मतलब है?"

"यदि श्रीमान् कृपा करके पहले यह बतला देंगे कि मुझपर कौन-कौन अपराध लगाये गये हैं, तो बाद को मैं भी जो कुछ मैंने किया है, श्रीमान् पर प्रकट कर दूँगा।"

धर्माचार्य ने किंचित् क्षुब्ध होकर कहा—"जो अपराध तुम पर लगाये गये हैं, उनसे तुम्हारी अपेक्षा बड़ों-बड़ों के सर नीचे हो गये हैं।"

"कौन अपराध?" आर्तगान के स्वर से धर्माचार्य अत्यंत विस्मित हुआ।

"तुम पर यह अपराध लगाया गया है कि तुम राज्य के शत्रुओं के षड्यंत्र में सम्मिलित हो, तुमने राज्य के भेद प्रकाशित किये और अपने सेनापति की नीति में रोड़े अटकाये हैं।"

"और ये सब अपराध उस स्त्री द्वारा लगाये गये हैं, जो इस देश

की राज्याज्ञा से दाग़ी गई, जिसने एक विवाह फ्रांस में किया और दूसरा इंगलैंड में, जिसने अपने दूसरे पति को विष देकर मार डाला और जिसने मुझे विष और शस्त्रों दोनों के द्वारा मार डालने का प्रयत्न किया।"

धर्माचार्य आश्चर्य के असीम सागर में डूब गया। उसने चिल्ला कर पूछा—"सैनिक! यह कैसा प्रलाप है? तुम किस स्त्री के विषय में बातें कर रहे हो?"

"म्लैडी डी० विंटर के संबंध में? उस पापिष्ठा के विषय में श्रीमान् बहुत कम जानते हैं, तिसपर भी श्रीमान् का उसपर अगाध विश्वास है?"

"ओह! यदि तुम्हारा कथन सत्य है, यदि म्लेडी डी० विंटर ने यथार्थ में वे अपराध किये हैं, जो तुम उसपर लगाते हो, तो न्याय से उसको उचित दंड दिया जायगा।"

"उसको दंड दे दिया गया।"

"किसने?"

"हमने।"

"क्या वह जेल में है?"

"वह मर चुकी।"

"मर चुकी?" धर्माचार्य ने आँखें फाड़कर आर्तगान के मुख की ओर देखा; परंतु युवक के गंभीर चेहरे से कोई उपहास के लक्षण दृष्टिगोचर न होते थे। तिस पर भी उसको विश्वास न हुआ, उसने स्वर को ऊँचा करके फिर पूछा—"क्या? क्या वह मर चुकी? युवक! क्या कहते हो? स्पष्ट कहो।"

"आह! उसने तीन बार मुझे मार डालने का प्रयत्न किया; परंतु मैंने क्षमा कर दिया। आह! धर्माचार्य! उसने उस रमणी की हत्या की, जिसको मैं प्राणों से भी अधिक प्यार करता था, उसे यह सहन न हो सका। तब मैंने और मेरे संगियों ने उसे पकड़ लिया,

उसका अभियोग किया और सर्व-सम्मति से उसको प्राण-दंड दिया गया।"

आर्तगान ने धर्माचार्य को पूरी घटना का विवरण सुना दि।। यह हृदय-विदारक वर्णन सुनकर, धर्माचार्य का वह हृदय जो कभी नहीं काँपा, भय से दहल उठा।

इस वर्णन का उसके मन पर इतना गंभीर प्रभाव पड़ा कि जो चेहरा अब तक ईर्ष्या, क्रोध और प्रतिकार की भावनाओं से उत्तेजित और मलिन था, वही धीरे-धीरे शांति, संतोष और सहृदयता की आभा से चमक उठा। वह कुछ देर तक किसी विचार में लीन रहा, तब शांति और गंभीरता के साथ बोला—"सैनिक! तुम स्वयं न्याया-धीश बन गये? क्या यह नहीं जानते कि बिना राज्याज्ञा के जो दंड देता है, वह स्वयं दंड का भागी है? तुमने हत्या की है!"

आर्तगान ने शिर झुकाकर विनम्र स्वर में कहा—"श्रीमान्! मैं सौगंध खाकर कहता हूँ कि मैंने इस तुच्छ शिर को श्रीमान् के विरुद्ध सुरक्षित रखने का एक क्षण के लिये भी विचार नहीं किया। श्रीमान् मेरे लिये जिस दंड की व्यवस्था करेंगे, उसको अंगीकार करने के लिये मैं सहर्ष तैयार हूँ। श्रीमान् इस सेवक को मृत्यु के भय से कभी विच-लित न पावेंगे।"

धर्माचार्य युवक की वीरता पर मुग्ध होगया। उसने कोमल स्वर में कहा—"युवक! यह मैं जानता हूँ कि तुम अत्यंत साहसी हो, परंतु मैं बिना यह कहे नहीं रुक सकता कि तुम्हारा अभियोग होगा और तुम्हें दंड दिया जावेगा।"

आर्तगान ने दृष्टि उठाकर स्थिर और गंभीर स्वर में उत्तर दिया—"श्रीमान! मैं इतना कह सकता हूँ कि मुझको स्वयं धर्माचार्य ने क्षमा प्रदान की है। इसके उपरांत धर्माचार्य क्या आज्ञा देते हैं, उसको मैं सुनना चाहता हूँ।"

धर्माचार्य अत्यंत विस्मित हुआ। उसने कहा—"क्षमा! मैंने क्षमा दी है?"

"हाँ! श्रीमान् ने!"

"तुम प्रलाप करते हो?"

"श्रीमान् स्वयं अपने हस्ताक्षर पहचान सकते हैं।"

आर्तगान ने धर्माचार्य के नेत्रों के सामने वह अधिकार-पत्र रख दिया, जो अथास ने म्लैडी से छीन लिया था।

धर्माचार्य ने वह पत्र हाथ में लेकर धीरे-धीरे पढ़ा, उसमें लिखा था।

३ दिसंबर १६२७

"जो कुछ इस पत्र-वाहक ने किया है, वह सब मेरी आज्ञा से किया है और राज्य के हित के लिये ही किया है।

—रिचलू।"

धर्माचार्य इस पत्र को पढ़कर कुर्सी में पीछे की ओर लुढ़क रहा। वह गंभीर चिंता में पड़ गया; परंतु उसने आर्तगान को वह पत्र नहीं लौटाला।

आर्तगान यह देखकर कुछ भयभीत हुआ, वह सोचने लगा कि कदाचित धर्माचार्य यह चिंता कर रहा है कि इस युवक को किस विधि से मृत्यु दंड दिया जाय? यदि ऐसा ही है, तो देखा जायगा। इसको भी मालूम हो जायगा कि एक वीर-हृदय कैसे जान देता है।

रिचलू का सोचना अभी बंद नहीं हुआ था, वह सोच रहा था और साथ ही उस पत्र को उंगलियों से बराबर मोड़ता जाता था।

अंत में कुछ समय के पश्चात् उसने अपनी गर्दन ऊपर उठाई। आर्तगान के मुख की ओर कुछ क्षण तक ताकता रहा, उसने देखा कि युवक का मुख विरह, वेदना और असीम यातनाओं के कारण जो उसको सहन करनी पड़ी हैं, पीला और शुष्क पड़ गया है। उसने सोचा

कि जो युवक अपनी उमंगों के बीसवें साल में पदार्पण कर रहा है, उसके हृदय में न-जाने कितनी आशायें हैं, कितना साहस और कितनी शौर्य-मयी शक्ति है। इसके विपरीत जिस रमणी का बध इसने किया है, वह कितनी भयंकर थी, कितनी कुलटा और कितनी पापाचारिणी थी। उसकी नारकीय प्रतिभा से वह स्वयं भी कितनी ही बार भयभीत हो चुका है। वह इस भयंकर सहकारिणी से सदा के लिये बिल्कुल मुक्त होगया, इस कल्पना से उसके मनमें सहसा आंतरिक प्रसन्नता हुई।

उसने धीरे-धीरे उस पत्र को फाड़ डाला और एक दूसरे काग़ज़ पर कुछ लिखने लगा और उसपर अपनी मोहर लगा दी। तब आर्तगान से कहा—"युवक! यह लो, तुमसे लेकर जो आज्ञा-पत्र मैने नष्ट कर डाला, उसके स्थान में मैं तुमको यह दूसरा आज्ञा-पत्र देता हूँ। इसमें नाम के लिये स्थान ख़ाली है, तुम अपना नाम लिखकर स्वय उसकी पूर्ति कर सकते हो।"

आर्तगान का शोकाकुल हृदय भयभीत होगया। उसने काँपते हुए हाथों से वह पत्र ले लिया और उसे धीरे-धीरे पढ़ने लगा। उसने देखा कि धर्माचार्य ने इस आज्ञा-पत्र द्वारा उसको राजसैनिकों का उपनायक पद पर प्रदान किया है। असीम हर्ष से उसे रोमांच हो आया वह धर्माचार्य के चरणों पर गिर पड़ा। धर्माचार्य ने स्नेह-वात्सल्य-पूर्ण हाथों से उसे स्वयं उठाया। हर्षोत्फुल्ल नेत्रों से कृतज्ञता प्रकाशित करते हुए उसने कहा—"श्रीमान्! मेरे जीवन पर श्रीमान् का पूर्ण अधिकार है, मैं श्रीमान् का जन्मभर कृतज्ञ रहूँगा; परंतु मेरे ऊपर श्रीमान् ने जो असीम कृपा दिखलाई है, उसके मैं सर्वथा अयोग्य हूँ। मेरे साथ ऐसे तीन मित्र हैं, जो मुझसे कहीं अधिक योग्य और महत्त्वशाली हैं और······।"

धर्माचार्य ने बीच ही में रोककर कहा—"आर्तगान! तुम एक साहसी युवक हो, तुम्हारा हृदय अत्यंत सरल-पवित्र और उदार है। जो पद इस अज्ञा-पत्र द्वारा मैं दे रहा हूँ, वह तुम्हारी भेंट है, तुम जिस

प्रकार चाहो, इसका उपयोग करो ; परंतु यह याद रक्खो कि यह पद मैं तुम्हीं को देता हूँ।"

"आह ! श्रीमान् विश्वास रक्खें, यह मैं कभी नहीं भूल सकता।"

इतना कहकर आर्तगान ने अत्यंत झुककर अभिवादन किया।

इसी समय धर्माचार्य ने राकफ़ोर्ट को आवाज़ दी। राकफ़ोर्ट द्वार के निकट ही बाहर बैठा हुआ सब बातें सुन रहा था, शीघ्र ही आकर उपस्थित हो गया।

धर्माचार्य ने कहा—"राकफ़ोर्ट ! देखो, आज मैंने आर्तगान को अपना मित्र बना लिया। आज से तुम दोनों मिल जाओ और इस नवीन मैत्री का हृदय से स्वागत करो। मैं अभी लौटकर आता हूँ।" यह कहकर चतुर धर्माचार्य इन दोनों के वार्तालाप की स्वतंत्रता की रक्षा करने के लिये बहाना लेकर कुछ देर के लिये वहाँ से खिसक गया।

राकफ़ोर्ट ने मुस्कराते हुए आर्तगान का स्वागत किया और दोनों गले मिले। राकफ़ोर्ट ने हँसकर कहा—"हम दोनों अभी फिर मिलेंगे, क्यों न ?"

"अवश्य !"

"इस भेंट के लिये अवसर मिलेगा।"

"अवश्य !" आर्तगान ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

इसी समय धर्माचार्य ने द्वार खोलकर पुनः प्रवेश किया।

दोनों व्यक्ति एक दूसरे को देखकर हँसे, दोनों ने हाथ मिलाये और धर्माचार्य को अभिवादन करके ख़ेमे के बाहर हो गये।

अथास ने आर्तगान को आते देखकर, प्रसन्न होकर कहा—"हम लोग तो प्रतीक्षा करते-करते ऊब गये थे।"

"लो, मैं आगया। केवल मुक्त होकर ही नहीं, प्रत्युत पुरस्कृत होकर।"

मित्रगण अत्यंत विस्मित हुए और कहने लगे—"पुरस्कृत ? पुरस्कार में क्या मिला ?"

"सब बतलाऊँगा ; परंतु अभी नहीं, सायंकाल को भेंट होगी।"

सब लोग यथास्थान चले गये।

इस निश्चय के अनुसार सायंकाल को आर्तगान, अथास के पास गया। अथास उस समय स्पेन की ताज़ी मदिरा का आस्वादन कर रहा था। आर्तगान ने उससे अपनी बातचीत का सब हाल कहा और अपनी जेब से वह आज्ञा-पत्र निकालकर उसके सामने रख दिया और कहा—"प्रिय अथास ! यह तुम्हारी भेंट है, इस पर स्वभावतः तुम्हारा ही अधिकार है।"

अथास मुस्कराने लगा, उसने कहा—"मित्र ! अथास के लिये यह बड़ी चीज़ है ; परंतु काउंट डी० लाफ़ीरी के लिये यह अत्यंत तुच्छ है। इसको तुम अपने ही पास रक्खो, यह निधि तुम्हारी है, उफ़ ! तुमको यह कितना बड़ा बलिदान करने पर प्राप्त हुई है ?"

आर्तगान अथास के कमरे से चलकर पार्थ के पास पहुँचा। पार्थ एक अत्यंत भड़कीली पोशाक पहने शीशे के सामने खड़ा उसके ज़री के काम की शोभा को देख मन ही मन फूला न समाता था। आर्तगान को देखकर उसने प्रसन्न होकर कहा—"अहा ! प्यारे मित्र ! आओ, ज़रा यह तो बताओ कि यह कोट मेरे ठीक बैठता है ? इसका ज़री का काम मुझे बहुत पसंद है।"

आर्तगान ने मुस्कराकर कहा—"मित्र ! यह कोट तुम्हें बहुत अच्छा जँचता है ; परंतु मैं तुम्हें वह कोट भेंट करता हूँ, जो तुमको इससे अधिक पसंद आयेगा।"

पार्थ ने विस्मित होकर कहा—"कौन-सा कोट ?"

"उपनायक का।"

आर्तगान ने सब हाल बतलाया और उसके हाथ में आज्ञा-पत्र रखकर कहा—"मित्र ! इसके रिक्त-स्थान की पूर्ति अपने नाम से कर दो और उपनायक के पद पर आसीन होओ।"

पार्थ ने बड़े ध्यान से उसे देखा और फिर आर्तगान को लौटालते हुए कहा—"आह ! यह वास्तव में मेरे लिये बड़ा सुखकर होता ; परंतु अब तो मेरे पास समय ही नहीं है, बैथ्यून से आते समय मेरी माइकन के एस मनुष्य से मेरी भेंट हुई थी। उससे मालूम हुआ कि मैडम काकनार्ड का पति संसार की संपत्ति से असंतुष्ट होकर स्वर्ग के धन को आत्मसात करने के लिये चला गया है। उसकी पत्नी पति के इस कार्य पर अत्यंत अप्रसन्न होगई है। पति की अनुपस्थिति में उसके धन की उचित व्यवस्था करने के लिये उसने मुझे बुलाया है। उसके अनुरोध को टालने में मैं असमर्थ हूँ। पेरिस पहुँचकर मुझे वहाँ अवश्य जाना होगा। ऐसी दशा में तुम्हारा प्रस्ताव मैं किसी प्रकार भी स्वीकार नहीं कर सकता।"

आमोद-प्रिय पार्थ की इस उक्ति से निरुत्तर होकर, आर्तगान ने वहाँ से चलकर अर्मस का द्वार खटखटाया। अर्मस बाइबिल की धर्म-मीमांसा में लीन था, उसने उठकर आर्तगान का स्वागत करते हुए कहा—"प्रिय मित्र आर्तगान आओ, ज़रा इस बात में सलाह दो कि मनुष्य ईश्वर के अस्तित्व पर विश्वास करता हुआ भी दुःखी क्यों रहता है ? मेरी तो धारणा यह है कि वह सुखी होने के लिये सत्य मार्ग का अवलंबन नहीं करता, तुम्हारा क्या विचार है ?"

आर्तगान—"मित्र ! यह विचार अत्यंत सुंदर है। तुम सच्चे सुखी किस प्रकार हो सकते हो, आज इसी की व्यवस्था मैंने कर दी है। लो, सुनो।"

इतना कहकर आर्तगान ने अर्मस से भी अपने और धर्माचार्य के बीच की बातचीत का कुल वृतांत कहा। इसके पश्चात् वह बोला—"मित्र ! यह पद तुम्हारे ही उपयुक्त है, इसको ग्रहण करके तुम सुखी होओ।" कहकर वह आज्ञा-पत्र उसके सामने रख दिया। अर्मस ने अत्यंत विरक्ति से उसे आर्तगान को लौटालते हुए कहा—"आर्तगान ! तुम भूलते हो, सच्चे सुख का यह साधन नहीं है। मनुष्य उसी समय

तक दुखी रहता है, जब तक वह संसार में अधिक लिप्त है। मेरा यह विचार बहुत पुराना है, इसके अनुसार कार्य करने के लिये मैं बहुत काल से सोच रहा हूँ; परंतु इधर कुछ ऐसे झंझट आ पड़े कि इसको कार्य रूप में परिणत नहीं कर सका; परंतु अब समय आगया है। मैं धर्म-मंदिर के उपासक के रूप में कहीं जाकर निवास करूँगा। वहीं मुझे सच्चा सुख मिलेगा।"

अर्मस के इस धर्म-भाषण से क्षुब्ध होकर आर्तगान अपने कमरे में लौट आया। उसका मन उदास था और हृदय असंतुष्ट।

युद्ध समाप्त होने पर जब सेना पेरिस लौट आई, तो एक दिन ऐसा हुआ कि पार्थ, अर्मस और अथास ने अपनी-अपनी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। त्रिवली ने अत्यंत शोकपूर्ण हृदय से उनको विदा दी। उसी दिन रात्रि को आर्तगान ने उनको एक भोज दिया। आर्तगान के होटल में इस मित्र-मंडली का यह अंतिम भोज था। यद्यपि इस भोज में चारों मित्रों ने प्रसन्न होकर खूब मदिरा ढरकाई थी, तथापि सबके हृदय एक आंतरिक वेदना का अनुभव कर रहे थे। इस भोज का उत्सव रात भर होता रहा। रात को जिन पड़ोसियों ने उसमें आमोद-प्रमोद के उच्च अट्टहास सुने थे, उन्होंने उसको सुबह होने पर बिलकुल नीरव पाया। सब राज-सैनिक एक-दूसरे से अत्यंत विस्मित होकर पूछते थे कि वह अपूर्व मित्र-मंडल कहाँ लुप्त हो गया? अथास, पार्थ और अर्मस कहाँ चले गये? इसका पता हमको आज तक नहीं लगा, आर्तगान के विषय में हमको इतना मालूम हुआ है कि वह अब लोवर के राज-महल के निकट एक-दूसरे होटल में रहने लगा है।

समाप्त